

Printed by Kantilal Joshi at the Sarika Act Printery, 14, Anand Nagar, Sion Trombay Road, Chembur, Bombay-400071.

Published by Vadatal Managing Trustee Bord, Swami Narayan Temple, Vadatal.

## पत्मञ्चलात्तवति तपनो वाति वातः समिन्धे बहिर्धने धरणिरुद्धिलेक्षने नेत्र बेलाम् ।



धोऽयं श्रीवान् निखिलजगतामन्तरात्वाऽवर्ताणं धर्म रक्षत्र दिश्चतु कुञ्चलं स्थामिनारायकोऽयम् ॥१॥

वैराग्वे गरिकभूमा भगवति वहजानन्दरूपे परिमान् इक्षण्यानमनिष्ठा नवति निरुषमं सर्वमेतद्धि पद्ध ।



पद्माङ्गिय्यन्दसाराः युतिजुतसहजानन्दपादारविन्दः इन्द्रैकालम्यभाजः स जयति ग्रुनिराद् निष्कुलानन्दनामा ॥१॥



## भौक्षामिनासम्भो विजयतेतराम् । अन्थकर्ता निष्कुछानंदसुनिनुं जीवनचरित्र.

अक्षान्वानुप्रवेगान् स्ववश्वष्यमयम् सन्मनःप्रप्रदेण यशानाभिष्ठितेन प्रशासमुपनयम् वासना बुध्यपर्याः । विःसीमानन्दसिन्धौ भगवति रमते सामिनारायणे यः सद्वन्याविर्ममे यः स जयति सुनिराट् विष्कुलानन्यनामा ॥१॥

( वेमचे उन्न वेगवाडा हन्द्रियोरूप अश्वी निर्मंड मनरूप राषोधी अने निर्मंड वृद्धिरूप सार्थीधी पोताने वद्य करीने न निष्ट्रत थाय एवी विषयवासनाओ निष्ट्रच करीछे. देवी अनवधिकातिश्चय आनन्द्रना निभिक्ष सामिनारायण अगवानमांज सदा रमेखे. वेमचे सारासारा प्रधी कर्या छे. एवा इनिराज निष्डुलानंद नामना इनि अधकारी वनतें छे ( )

भा संबद्द करेखा समय बंधो वैधान्यमूर्ति वदोमूर्ति स्वानमूर्ति क्रम सहुरुधे निद्यासानंद-मनिर जुना जुना किन्यो कर रचेता है. आ पूर्व पुरुवनो कना हाथ सीराष्ट्रदेशस्त्रांत हातार देशमां मगरनी समीवनां होसपाट मामसां वयो हतो. तेओ शातिय विश्वकर्मा (शुकर मुतार ) इता. केमचा विवासं नाम सामभाई हर्ता. वेओ अन्यसिक शुमुता विस्ता अने सत्तेवालधका इता. तेवने रामानंदस्त्रामीना गुरु जास्मानंद मागवा समर्थ वचन-सिकियान्य समाधिनिक्रने गुरू कर्या इता, गुरूनक समवाई अवन 'सतीपुर' मामसं छोता इता वरंतु वे गाममा पत्रा जलका जाने गुरु करर निष्यारण वह क्रेयुक्ति रासता ते वदि सहव बवाबी "गुरोर्पत्र परीवादो निन्दा वावि प्रवर्तते । सर्वी तत्र पिवा-तस्यो चन्तरुथं वा सरोऽन्यतः" "सत्या देशान्तरं सुसं" आ स्पृतिवचनमां कहा प्रसान पोताना पूज बामतो परिसात करीने शेखवाटको जावीने रहत हता. व्यापी गुरुतां देवनम् मक्तिनिता होनामी गुरुना आक्षीनीदमी "वसा देवे परा मक्तिर्यमा देवे तथा गुरी । वसीते कथिता सर्थाः प्रकाशन्ते महारमनः" जा रचनमां कका प्रमाणे सहास्ता धमभाइने वर्ष मानारि अर्थो प्रकास शम्या इता. यने प्रकार प्रकार गुरुर एतं वरदान वारेतुं के 'तमारे को एक समर्थ गरावद्गाक तुत्तापुरूव व्यवतार होते वाने पत्रां नहावानी करी सद्भवदेकामतवी पत्र सुमुक्षकोने जनसमार क्रमच करी मोटी पीर्वि मेलवमें' बा परदान पारण कार्र केटलेक दिवसे संवत् १८२२ मां हेमने तां पुत्रसानी प्राहुमाँच विवाने. पुत्रतं 'हास्त्री' एवं सार्वक नाम पत्रत्यं. (बातातं नाम अमृतवा हतं. सरसंगि-

वीयनमां 'हातु' नाम छन्तुं हे) छाछजीना जंतरकरणनां वास्त्रावस्मानांवीय वायमे प्रते हव वाभिकृषि, वैराण्यनी दीवता, जास्मक्षाननी छरकर इच्छा जने परमेग्नर वसे अनन्य भिक्तिया हो जन्मसिद्ध—स्वामाविक हहां. अने देनो चपयोगी यमनियमादि, यमादि जने अववादि गुणो पण जन्मसिद्ध हता. पोहानी इच्छम नदि छतां पण धैवाय गुणव वास्त्रावस्थामांव पिताय पाणियहण कराष्ट्रां हतुं (पत्नीहुं बान कंद्रा हतुं वेनच जहनून पहिम्ना हती.) वाद्याविद्याना एकंपास पद्धी पोते व्यवहार कार्यमां प्रवस्त्रों छतां जनकर्मात्राची पेठे वास्त्रावस्था जातानां पेठे परमेश्वरप्रयाग हती.

एक समने देओ गुरू बहुवाबहार शीरामानंदरममी के वे पोहासा पिहाना गुरू आत्मानंदर्शीना प्रथम शिष्ण पण हता हेमनो दर्शन करणा सोड एका. पूर्वसंस्थर के सहुरू-समागमध्याम् हेमने दीम वैराग्यनो काम पदी भाने साथी दीमा वदन करी गुरूसेवामा रहेगानी प्रार्थना करी. गुरू रामानंदरमाभीय आक्रमीनी क्ष्माहर्शामां क्या परमादंश केवी विरक्त दक्ता बोहने दीमानी ना पानी अने आमहर्थी घेर पाम मोक्ट्यर. जने वहर पत्ने वोसावी ग्रेमाने का परमान आह्मं. (वे बीजिय दीमानानवी सक्य कर्ने हते) वहरी हेमो आसो दिवस क्रविदिस्थकमोदि सुरुकार्य कर्मा छता क्या पत्निय वोहाना समन्नी जल गाड दूर बावेका माद्रा माने जहा अने लो खेला परमाक्त सामा विश्व मुद्धामी के ने पाछल्यी साधु वह गुजाठीहानंद असभी प्रसिद्ध वचा इहा हेमनी साथ मन्नी आसी ग्राही ग्राही साधु वह गुजाठीहानंद असभी प्रसिद्ध वचा इहा हेमनी साथ मन्नी आसी ग्राही साथा परमात्माना बन्ना जनन निहिश्तासमां व्यवदि करता. अने मन्नी भागी साथ समागमा मादे ग्राह रामानंदर्श्यमी साथेका पत्ना दिवस व्यवदि करता. वेनने साथीय १८४३ मां पोहाना माथित दर्शिनी दीमा (अहमान) आप्मा इहां. पछीची हेओ ग्रामानंदर्शिने वेद्यायकार आजीन सेवा करता हता.

क्यारे श्रीहरि कोजमां मुक्तानन्य मुनिने मक्तवा अने समाधि विगेरे अठीकिक अद्भुत क्यारे बताववा साम्या अने तेथी तेम ने महिमा रामानंदरवामियकीश्य अधिक वामोग्यय संभव्यवा साम्या के आजीने मास्त्रांने हो रामानंदरवामिनो हव निश्चय होवाथी ठीक नहि सागवाथी वर्जिनो महिमा ओस्त्रो कराववाना आश्चययी स्वामिनी हो आया सोजमां वर्जिना वर्षेन करी आववानी अने मुज नहि आववानी विगति करी. स्वमितो सर्व भेद (पोताने वद्यवजीवा अवतारक्ष अने श्रीहरिने श्रीकृत्वचा अक्तारक्ष्य) जावना हता पत्र प्रवास करवानी प्रसंग नहि आववाभी करेसो नहि पत्र आ वसंग आवता वयो भेद खुद्धो कर्मो अने सास्त्रजीनो भ्रम निवृत्त कर्यो. श्रीविनो वहिमा से प्रथम सामक्रको हतो पत्र गुरुवणनवी सुद्ध वयो अने श्रीविनेत्र सर्वकारण अवतारी अगवाय मान्या. शुद्धी व्यामा वर्त होत्रमां परणा वाषीये गहर कंटे व्यापात साथे प्रणान करों.

हसम वएता वीवित एवं वरदान आप्तुं के वैरान्यमां प्रकृती समान वसो. वीविपासे
केटलां दिवसो रही तेमलां ऐतार्थ प्रशास कोए एक निवास करी पोताने गामे गया.

हारपती लासकी सुदार वीजिनुंज जनस्य मजन करता. व्यारे रामानंद स्वामीय वीदिरीने
वर्मपुर सांप्यानो महोत्सव जेतपुरमां कर्ये सारे पण देशो क्षेत्रा समागव साद आस्या
हता, अने बीजिने मेटवां पोतेज कारीगरीयी करेली मजूस वया दामचीयो वर्षण करों
हतो. जा समये पण वह मसमा वएका प्रमु वीजिय देशनी वर्शना करी हती. ज्यारे
प्रमानंदकाची स्वधाय प्रशास वएका प्रमु वीजिय देशनी वर्शना करी हती. ज्यारे
प्रमानंदकाची स्वधाय प्रशास हारे पण कामगी मुतार जीजियासे आनेता. एवी हते
हतोक हासवादि प्रसंगे वीजिनो दर्शनादि स्वधा लेका व्यावता जने पाणा जना, एव

(समय बाधवां काळवीने ला १८५६ मा पुत्रस्त्रानो बन्य पनो हतो हेर्नु माधवजी नाम इतं. महसंगित्रीयवर्मा 'रामजी' नाम सन्त्रं हो. तेओ संव १८७४ मां विकान दर्शने गढवामां जाक्या, श्रीजिए तेमने हार देंडा जाव्या अने निता प्रशादीनी पाज जमाद्याची महत्यारीने महामण करी. एक मास रही येर जवानी तैयारी करतां गोपाला-वंदस्थानीये दर्शने नवा. सामीए कहां के निष्कुतानंदगुनियासे जह प्रकान करी आशीर्वाद बेळवी चेर बाओ. रहींची बाधपत्री हानियासे गया. मुनिय संसारनी असहरतानी यह बोब करी जारी यह छोवानी समस्य करी. बोते हुनावतार होवाबी तरद समती गणा. जोने कोपाडानंतु सुनियासे आधी साध बनानी एच्छा बतानी. सामीय का प्रस्त है भगवां सुराहां कारी मोविदानंद बाब पारमुं क्षेत्र हेमने जीवितां र्शंन करण छन् तया. पत्नी जीविष १९वं के था कोण हे ! सामिए कहुं के निव्युत्वानंदमुनिना सेवक हे. बीजिए प्रसम बहुने बहुं के-सिंहना हो सिंहन होत. नहींथी बहुं के होता पासे 🕻 बहुते हे हुनने बाधमां बहुतीने सके लांसुची पंडवद बनाम करवतो. बीजिना करेवा 🕻 प्रवाणे सो इंडवत कर्या लारे छेवटे राजी बहने बाबका वाछीने बद्धवा अने आशीर्वाह आयो. पष्टीची योपाधानंदस्ति चासे रहा. योपासानंदसामीय सारंत्युरमा रनुमानशीनी मिता करी खारे गोवियानंदकासीने दश नैकिक मधायारी जालीने तेमनी जसे बारती क्रमाबी इंडी. वनी रीडे हेजो वन वैराम्बादि शुने करीने विवाधकी अन्यून इता. बीजा इसमो बन्ध सं० १८५९ मां इतो हेर्स पदानशी नाम इतं. ने मृहस्थानमां रक्षा इता है हे एक सहभी सरसंग्रे हता.)

एम केटलोक समय गीठतां एक समये मनवान् श्रीहरि हरिजनहितार्थे विनरता विनरता सोरठमां यह हालार देखनां हेकनाट याने काळजी सुतारने तां प्रधानां. सासजीए अनन्त्र भक्तिनावनी नीजिनो असामारन आविषय सत्कार करी जलभ्य साथ वह स्वान्त

पुष्ट कर्यों, भक्तवश्य जीविय एवं केमने वर्ष निवास करी शंव इरिजनोने केसची संव १८१० वा भाष धुदि रंपभीए वसंतनो करसव कर्यों,

केरवाच दिवस छोने जीहरिने विकट कच्छा देवमां विचरण करवानी इच्छा थर्टा टास्त्रीने क्यूं के-समास जेवो कोड सासे बच मार्गलो बोमीवो सोभी लानो. सा वनस्थी बीजानी क्षोप न करता पुष्टकम करवानी जने जीविनी देवाविकने दुर्जन समीव संवानी समय गाप्त वएको जानी पोतेश श्रीजिसाचे जवानी एचछा करी, कच्छानी विकट वाटतुं विशान होवाची वच्योगी मातुं तैवार कराव्युं अने एक बतकतो पाणी भरी छीतुं अने विषय समये मीजिसेवामां काम जागते एव जानी बार कोरी पोरना सकती कारतामां गुप्त रीते पासी तैयार यह मीजिसाधे पास्ता. आ समये मीजिसाचे छाजधी सिवाय बीजुं कोड् हतुं नहि, भागेंसी जागढ चावतो एक भुक्या भीसारीय दीनवाची विका मागी. सामारधीत एकाल बीजिए हेने निरपक्षेत्र मातु अपात्री एइने वास्त्रीने निरम क्यों, आगळ क्यर चालतां सुंदारा होत्ये बच्चे, बीजिये हो साचा साध अप-रिशर जानी कोई नाम कीशुं निह एक ठाळती हुवारनों वस विगेरे उपास्त्री कांत्र कहां मदि महत्वाथी देमनी सात करी चौर कोची चछा परवपर व्यन्त सहरे चौरीने वीजिए क्यां के-'छतं नाल छतां का तमने कातुं वधी मादे छंदवां व्यावदतं गयी' यस क्योंने वासजीय पगरकामां सानी धेरे पालेखी बार कोरिको बक्तवी. रोने अर्ने शजी बक्तवा कोर डोको कास्त्रा गया. एवी रीटे निकिक्षण बनो बेचे प्रित से एवा अपेरिट दिल करनारा शीजिए सासजीने निर्धिकचन कर्या. एटी सासगीए गीजिने क्यां के-क्ट्रार वहने निद्यक्ते जाहार जपावी हीयों जाने चोरोंने कोरोंको अपानी हीयी हवे क्लांनी कावीने अब जमशो है देना बनावमां बीजिय क्यों के तमारे माने मोर्ड विज्ञ आवनाई हतुं के परवासं अमोए शटालपुं हो, एम सोमारीने वचनविश्वासी शासनी राजी बचा. एवं को मार्गर्भ प्राप्त भिनोद करता आता पासतो वाकेल करसना महारणमा एक महापूरुप मञ्ज्या तेमचे जलती जाचना करी तेथी शीकिए मतकतं जल अपानी रहने सामजीने निर्जन कर्तो. भागन वासको सामजी मुकार त्यांची वह पीका वासवा प्रस्था है लारे श्रीजिए कारा शमुद्रमां भीठी बनावेची पाणीनी देर बतायी. तेथी सालजीय अञ्चल हैं करीने वतकाव भरी तीथी. वोबी बार बता शाम करी तेक काले तथास करतां साथ क्षेर पाणी जणानं, एव यहाहेकथी रण क्तर्या वही मार्गमां वावेडा एक तहावना बांडा क्षर बाधस्त्रज्ञ गुस्तके गावी क्एसर ऑहरिए सोड बाधीने विज्ञाम कर्यो. श्रीजिना पगरकां विनाना कोतज परणकमजमां पत्रा बांटा पावा इता हे छातजीए कारणा अने हे प्रसंगती बीजिया परवक्तमामां रहेलां सोळ चिहोता दर्शनमे साथ गान्या, बाब बोबो नियस गया पछी गाँजिने प्रसम जाजीने पुछतुं के-वार्गमां महेला बहापुरूप करेब हुता है

वाने बान जान मौद्धे केन गर्ने ! सक्तवस्तार समनाने कहां के-मार्गेयां महेला महापुरूत रामानंत्रवामी इस अने वसारे माटेज साथ यम भीतं वर्ने इतं, आ सांधवी छाउती बा राजी बचा. कार प्रधाने बोर गुरुविक्य प्रसान विजीव करता करता बाराज चातार्थ आभोद्र गांगरी मान्त्रेक भारता. कार्यको भारति गार्था गयता क्रमे अभावत वरता गाजिए सेवक ठाउजीर कहे के-माममांत्री किहा गाजे साथी. सराजीय कहे हे सिशुकने बाह्यं अवाबी रीशं अने चोरोने कोरीयों जनवी रीधी हमें सिहा मानवानी कभी गई. जो बानवा कर हो जा समजा कम छोको गर्ने जोजनेहे वे नारी क्यात करे. त्यारे जीजिए कमें के तमोने कोइ जोज़ज़े नहि एम करीए हो केम ! एम कहीते एव मुहुर्तमां कारुपी शुक्रपनी मुंछ अने चोदकी कारपी नासी अने बख्दो कदावीने एक बरेपीन अने अक्टबी बहेरावी अने वीक्षा आवी निव्यक्तानंद जान सक्तुं, वर्धावी एक होती नावी हिनने गावनं विद्या वाग्या जोकस्या. वाती कानेसा विद्यालयी हिन्द रखीर करी अभे को कहानुक्तो अलेबी जल्बा. वशीधी जीविष्ट मुनिने कहा के-दुवे कांद्र बीजी इच्या होत्र को बोको अने तुक समानंदस्त्रमीतुं 'व्यारे जरूर पढते को बोकाबी कदर्ति' का बचनतुं स्वरम के के लिंहे हैं वे लोकवी शुनिए कहें के-गुरुते बचन बारा कारणमां हे ते तमीर प्रकार कर्नु अने हते मारे कड़ी एन इच्छा अवसेव रही गयी, हैं कृतानं वयोग्नं एम करीने अनन्य मसिनी आर्थना करी. नीजिए तवास्तु करीने तेश व्यमना वेसने क्योश करना रहेवातं करीवे केमनी विविध्यक्ति व्यमीने 'स्मर्दक' वामनी वंच करवानी जाता करी जीवि पोते भुजनगर स्थार्था, जनरूमी नातीनो केटलोक कंछत बीदरिया निकट परिचयमां व्यायेका स्वामीएक वक्कवितायणिया प्रकरण ५४-५५ तथा १३४ मां जा राते करों के-"हरि करी पूर्णी मोटी मेहेर, आव्या यक्त ठालजीने घेर। एक सेवक संगे सहने, चाल्या रचनी वाटे वहिने । आव्या समुद्र समीपे क्याय, पढ़ी सांग्र रहेवा नहि ठाम । लागी प्यास मे पीढाचा प्राय, सुक्यो कंट व बोलाव गाम । लाग्या कांटा ने कांकरा वच्छी । अति बाकर्मा परिवा दक्षी । एइ महिले न मन्त्रं द्रास, बालो बालह्यं कहे श्रीह्रस । एन कही उल्या अविनाद्य, एक सेवक छे पोतानास । तेतो पासियो पीबा जपार । प्राच तववा थयो तैयार । बंदे आवी रहा ज्वारे प्राप, लारे शेलिया स्थाम सुजान । सुनी दास को जविनास, पियो कड जो होप पियास। कई दास पियास छ नारी, केम पिताप खाउँ जा वारी। करे नाय नथी खार्ड और, पीवी जळने रहे घरीर । खारे विभासी दासे से चीर्ज, बाले गंगाजक वेचं कीचं । पीतुं पाणी ने गर विपास, एम उनारियो निवदास । ग्रह तने पुरुष अलीकि, नया मोहन प्रस विलोकि । वडी आंची चाल्या सुसकारी, वर्ष केवं इतं एवं वारी । वर्ष्टी स्वांची बाल्या वह नामी, आवी मळ्या राजानत्व

सामी। जोइ राजीने पुछे छे जन। कारन पाणिनां पुरुष कन्यों, तेतो नावजी में न कन्यों। वर्षे सार्व केम पारी। तमें केने नम्या गुसकारी। करें नाय जन मन जत्य, मन्यों पुरुष ते इक्त प्रमाण। कर्षे सार्व ते मीई में करी। तारी व्यासनी पीठा में जानी। पछी मन्यपा रामानंदकानी, तेने वास्या अने विश्व नामी। केनी करी औहरिए सार, तेई नाम सासजी सुतार। पड़ी तार्व वक्षी जायों अन्या, पर्छ जनता मन्यपा। दिन दीव पीते तिथा पसा, सी दास तेने जोड़ इस्ता। इवे परमहंस दक्षा प्रहों, पीट दुःसना दरियानां वही। एन करी गुनिस्वा दीवी, पीते कच्छ जावा इच्छा क्रीवी। वसारी, पनाने वसारी क्री केम क्री क्रियान दरियानां करी।

वोशने ने बौहरिती जरूरव लाम वदी हवा रीक्स्म्य वदी हेर्नु चार प्यां करम क्रम्य कर्नु हो. सराम क्रोम—"आज आवियो आनंद अंग, हमंग हने जिता। विति मण्यो मोटो सहसंग, रंगे रेनाकी गति ॥ १॥ मति मांच में क्यों विचार, पर संसार हेना। हेना सुख समागमतार, नवी क्रोह संग केवा॥ २॥ जेवां सस्यां आगमे दर्भाण, तेना साचा संत मण्या। क्रम्या जेवी प्रसद प्रमाण, बद्धवी बहुत हज्या॥३॥ हज्या जितना पासा हुनित, चिच तिनां चोठ्यु सहं। सर्व नियुक्तानंद के रीत, त्रीत मारी तेष्टं वहं ॥४॥ पर ॥१॥ यह जित मारी जगमांच, सहाय श्रीहरिष् करी। वर्त्त मनगमतं मारे जान, हमन साखेणी रही। वर्ता हती जगमां गुल साब, नावे ते निवारी दीधी। तेह नियुक्तानंद नित्य पाप, हर संशारी एह ॥" हतादि,

जा कथा उपरथी श्रुनिनों औहरि ब्रह्मेंनों केनो यह अन्तन अवन्धि ब्रह्मा क्या विश्वास क्ये केनी वैदान्थनी निरम्भी तीमक चिमेरे गुनों अने श्रीजिनों एन साथी ब्रह्मेंनों तेपीज केनो अति अनुपार वे स्वापने सनसाय हो, श्रीद्रि एं० १८६० व्य सामग्रुनि पंचनीय होसावता वर्तनों उत्सव करी आयोह पदार्थों हता अने लांज साथीने दीसा कारी हो नेथी साथीनों दीसाजन्य पत्र आज सासमों हे वस निक्रित शायहें.

प्रसाहंसर्था महत्व कर्यो वही भीतिनी आगावी हुनुसुकोने क्यरेश भाषण क्या देशोगं साभी विश्वमं इता तेनसे तथ लाग वैदास्य निःसहसा निय्नरिमहता अने साधुता भरेती शासीय सरल जसरकारक वपदेश हैजीशी तेते देवकां क्या होत्रो जीविना प्रस्तानत क्या हता. येते क्यारे साधु क्या सारे स्ववर्ग, तय, त्यान, ग्राम, वैदास विशेष गुनो अञ्चयस वदाहरणीय अने कम्या दुर्वंग एवा हता.

व्यवहारमां गोधनी सारी स्थिति इती, वहां द्वःश के क्याचि व इती त्य केयळ ग्राम वैदान्त्रनी तीवसाचीय सानी वचा इता. वे कोइ मसंग क्यर घोतेश सम्बन्धमां क्युं के—"संतो सांचलने सानी वारता, नयी श्रीधो का ग्रुपने मेखरे । जननीनो والمراجل والمراجل والمراجل والمراجل والمراجل والمراجل

तारी कर्तुं, व्याप इसी हूं वकते। असे नाम वस्त वस्त नाम ने मंतरे, हारों इसे इस दारों । शांच वर्डान पूछता वने, कारों हूं कारणारण, महीन । ज्या पन पाम ने कारों, कार्यों हर्ता पर्य । असे कारों कोकर्त हर्ता, हर्ता वाला जिसे में तर, वंतान । है।। वाला पिडानुं सूचण वहतुं, क्याने नाह मार्थ । वेशप नेवा जोहा करता, यके मके नेवारण, मनान ।। पा।। वस्तुं वाली आहि भाष्यों हूं, इस करी पिचारों । हुने वस्ता वस लंडाके, मच्यों नहि वर्ता हाता, साल । पा। वस्तुं वर्ता हाता, साल ।। पा।। वस्तुं वर्ता हाता, साल ।। पा।। वस्तुं वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता । पा। पान वर्ता वर

वर्त क्षेत्रकी बालबार कर नेव वैक्त क्षेत्र के कि दे हैं वादि असरि वार्ति की उपापि, बहुत बहिन्स अवादि बीट का नहें उपापि। करों काह ने करों इसरा करों है बहुत होगा। करने में से बहुत बंधनाया, बीट बया मन्य बादक में है बादि । कि कि बहुत में के बहुत बंधनाया, बीट बया मन्य बादक में है बादि । कि के बहुत में के बादक है है बादि । कि । अहि करत में अहि बया में के बेव विकास । हमें हमारा इस मंग्या, जन करना के है बया में है बादि । कि । वादि में हमारा के बादक में बादक में बादक में के बादक में के बादक में के बादक में बादक मे बादक में बादक में बादक में बादक में बादक में बादक में बादक माम म

वनी कर समय ग्रेनमा कर वर्ग पड़ा नहना जाना मार कर 'मन महन न प्रमार मंगार, की ने केन पर्तिकः । यमन वर्ष मन उनके वर्ग आप्ता मंगार । की न केम रिजिल, की नेन् ।। है । जेन पत्रम म परिणां, की। पत्राम पाप । पत्रम पत्नी ने उपरे, माने समकते हाथ, की नन् ।। है ।। प्रामानमा मुख्यां, के कीई माने सम्म । मान पानने विमारे, मानू होने हनूर। की नन् ।। है ।। प्राप्ता नद् कीए पत्नी, विपादिक को बान । भेतरनों केम उनर, नाम र्राष्ट्रम पान, का नन् ।। हे ।। नमारी विचारी के की, माने समकती बाक । निष्कृत्यनम् निष कर्षे, मुख्यों मरापुढ पान, की न की समकती बाक । निष्कृत्यनम् निष कर्षे, मुख्यों मरापुढ पान, की न की समकती बाक । करना केशनी

क्षेत्रं का जान केरान्यती वृत्तिक होताची चीजाओती कानकानी वनी काहक विश्वास बाहत है ने बाहत कार्य का जाननी सकत्याहर्षक "'बजारी वार्ष् जावमां रही रही वह रहीर" क्ष्मारी मान काची क्या 'ब्रांजी क्याची क्यावमां, वेजी केताचा मकत' का वर वी परिश्वर कम कथा। को समये करण्यक साधुनीय क्षेत्रश्रीणी सहज र असूची कावनी वीता समय कर्म है। तन लाग करावानी की क्षिणी सकता वर्ता सर्वय लाग करीरीची कम को र वक जान करायी सकता है क्या की कावी क कम कर्म के "पाड़ी आपो नवारी वाहरे बारी घोटार्जानी पावजीर" क्या रहे वेगावनी कामीराध्य मंत्रीजी किंग्युविची सहज क्या करान की नवार देशन के नवार की क्या की नवार के नवार की

वीनाते केनी वर्ष दशक हो। ने वर जान वैभागती वह मार्थ 'ज्ञान वर्षायों जोतिए' 'जननी जीती है गोपीकहर्ता' 'हूं बनहारी क् वैमान्यते' 'त्यान व टक्को देशान्य विना' हन्याह नहम कर पहा हकता है। वीजा पर कर हन हन्ने पहे वैमान्य हरी सेविए, वेसे बजुना वाप' 'तीन वैमान्य नहीं रहते, ताबे मी मी मापन' 'जोह जोई में बोपू जीवमा, त्याम बहानी हर्गिने बनह' 'त्याम मार्व का नपनी, वानी वसे विज्ञान वनहें 'तथी नगने निधि मुखनी, तप विना विशेषने जायरे। बचुने वनक करवा, नथी करी वीजी उपायर' हकती हथनों हे

'नानी देश निरम प्रति, देशां भयानीने दुःसारण। निर्धा त्यामी होए ने टकें, बीजाने संबद रूप' 'माटे सत्र मत्रे नण बायरे, अर्थु के तो जा मेदिर मायर' जा भीतुमना कालो मुख्य पाटमान मिराने के समय वर्षाकानवन् को बाता एवं आग विद्यान का नाम वंदानके सनुगुन पाण्ड सवार्थन नम्प्र पानमामा मिरा काला निर्धापन सन् देवालिया प्रति पान महानानक स्वाधिन नम् आग देवाला प्रति प्र

एक समये कामीन निर्माष्ट्र निर्माणिक अलीन वीजिए तरहा महिन्छ वहात करवानी विचार कर्षे जा विचार महिन्स जलकार्य जावना करेना हटी तहानी तहम चारना तथा च रचा जवन कराय जलकां बीजिए देवने पाद्या वीन्यरण क्षत्र ने बाद वंग राजी आ एक एक निर्माण वैद्यानमुं स्ट्राहरण है

पत्र नमने व्यानीन अगरमा गर्यावरूपको विश्व हुन पत्र वाकीन सन द्रियो ने सनीन स्थानी क्षित्र अगरमान स्थान को स्थानमान वाद्व प्रान्त का अगरमान स्थान स्थान का अगरमान स्थान स्थान का अगरमान स्थान का अगरमान स्थान स्थान का अगरमान स्थान स्था

कि पहुना-वीतिए। सरवाना केशा प्रकारक १६ वचनकृतस्रो आस्तानश्युनिक

पूछला प्रभाग स्वयमां कार्यक्षना आग वेग्यापनी अप्रध्ना करी के क-"वनी पृष्टियों प्रसांक विश्वपाने प्रवन्ती होग के अर्थन्यकाल देश है आग माक्ष्मा ने मान नगन करें कार्य में मान मान्य प्रकान के प्रभाग करें कार्य क

वया प्रश्नाचे क्यांकिनी क्षत्रुवय क्षत्राच्यात्व आर्थ्यात्व विद्याद विद्याद वृत्ति क्षत्र त्रवेतृत्विने क्षत्र क्षत्र देवतु क्षेत्रकात्व एवः वैशाणमूर्थ के त्रवामूर्थि वृत्त वयु इतु क्षता निष्णाय निर्वोत्त वि क्षाण् निर्वात निर्वात विद्याद निर्वात निर्वात निर्वात विद्यात विद्यात विद्यात विद्यात विद्यात विद्यात विद्यात विद्यात विद्यात व्यक्ति क्षत्र व्यक्ति क्षत्र विद्यात व्यक्ति व्यक्ति क्षत्र व्यक्ति क्षत्र व्यक्ति क्षत्र विद्यात व्यक्ति व्यक्ति क्षत्र व्यक्ति व्यक

वर्तन होने कादीय भा संपत्तावने आध्य विद्य अने बहुत्यों वे वर्णन प्राप्त वनो प्रमुख्ये प्राप्त करी करवा है कान्यवर्ग विरुद्ध प्राप्त है वर्णन कर्णन कर्णन

Maria de la companya del companya del companya de la companya de l

がけがかが नभाभ सर्वत्य साल सुधानिसमा व एवं र होत भी माधारण पृथ्विना माणमने एक उप बाममा आभी शक, बजी जुरा हुता विकिथ छन् छ।स पुण विकास प्रेमी एक्स छै डेभी क्षांना बन्धने पण एम आपनास छ न्त्रामोनी कविता पण बहु केह छ कविताम। अनी विकासक अल्पेसे नेनी अन्यत जीवामा आदमी नथी। रहाना पत्र सदुनी अर्थप्रदर्शक मास स्रोक्त्रमाद्व अन अर्थमधी। आपस्रो छ परे परे परनासिस एक जनुपर जोतानी ज पछ. बच्ची स्वामीए के के विश्वतनु वर्णत कर्युं से है जाने मूर्निशान हराकार हो थ वेशीज रीने वर्णस्य से स्थानीय स्वकाब्यको वैसम्ब तप त्यागनुं अने नदुवयोगि साधननुं विशेष वर्णन कर्युं छ स्वासीने दिल्लाभाषा उपनंत कच्छीभाषानु एव आन दमु, देदे भाषामां कोला कारत कीरीनो पण मही आहे हैं

## स्वामीए जदा जदा विश्यो उपर करेला इन्हो-

		_			7.4	
	सन्दर्भिनास नि	- 10	<b>भे</b> डगीता	१३ गुजराहक.	13	विश्ववितामधि
	वसद्य	4	पुरुकोत्तमधस्त्रञ्	१४ शोगठपरी	₹०	पुष्प दिशामणि
ŧ	मार्गतिक,	*	मकिनिधि	१५ इरिवियस्य,	2.8	संब्रह्मकृतावृत्ति,
P	<b>गणन</b> निधि	10	हर्ययकाश	१६ ६ सिमृति	9.9	वृत्तिविवाद,
4	इ विकास विकास	11	<b>क</b> स्याणिकर्मव	া ও আমেণিবিদয়	9.1	शिकापत्री पद्म-
Ą.	भीरभ्याम्यान,	13	मनगत्रतः	१८ अवदारविकार	iPi,	हवा विगरे

## प्रन्थोनी संक्षिप्त समीका--

भक्त चिंतामणि—स्वभीर रचेता वंदोमां बोटामां बोटो सर्वादेपरिएवं सर्वातम जा भन्य हे आ मंत्रमां सक्तविकासिक समयन्त् प्रत्यक्ष औद्दिली सक्तविकासिकाय अङ्ग बालोकिक अस्तित अपार दिश्य वरियोन् वर्गन करेलु होवाबी विकार करनारा अस्त्रीत चिनामियम् मनोध्याने पूर्व करनारी दोकारी हेतु नाम सार्वेष आध्य है। आ अर्थ स्वानीएड १६४ वकाणनो "अक्तनियामणि बंग क्यो, सदसर्गाने मुखरूप । तेयां परित्र प्रगटनां, जित्र परम पावन जन्तर ॥ बीजा प्रंच को बहुज हो, संस्कृत प्रकृत मोच । यन प्रगट उपासी जनते, आ जेशे क्यी गीजो कोष ॥ देमां द्वीरव महाराजनी, बळी वर्णस्यां बारमकार। यन मंत्रारे सोमरे, इरिसृति देवा सोहार॥" हताहि सवार्थ संवयादालय बद्धान, छेपटे रूप छे के "छे आ मक्तिवासणि नामरे, ने जे जिनके ने भाग कामरे । देने गाय भुंचे के जा प्रेयरे, तेनो प्रश्न पूरे मनी-रधरे । मुख्य संपत्ति पामे त जनरे, रध्ये जा प्रत्य करी जन्मरे । जिले जिलवे असे लमावेरे, तेने जिनिय तार न आवेरे, अल्या करणी कवा करादेरे, बाव मुन्त हैं द:स नेडे आदेरे ॥" इयादि आ अपना १६४ बकरको हे, दोहर को गई मन्द्रीन है ८५२७ के अवसनो १०० मां काफ सेहरेन औद्दिनो कमचार आविमीनदी अंतर्धन

सुधीओं क्रमाध्यास क्षार्वकोत्से हिच्य चारतान् अपूर्णस्य विसा सदाव सराम करन मान्य है। पत्नीनो ५ प्रकामीमा स्ट्रिंग्यने जाहन भारत प्रतिमा सामध्ये क्रेन पानत व अमकी वर्षी पूर्वमाना प्रचन होने वर्ण यु छ पात्र के ए प्रकारोधी कही अने मा प वेंद्री हरिक्षण कई कार्य विष्कृत्यादि क्ष्मान वक्षा छ पताओ १५ वक्ष्मीया हरि अन्तरेती रेजनार मामनार प्रातिका सन्तरेता करा शुक्रका सामावधी सावी है। सामोज का अपूर्व प्रवासकी कामारे कारकार कथा रहणमा कथा कमाने कह प्रार्थियों करना करा मुख्याच्या भन्ने अवय वह त्या है वे स्वत्रमा अध्यक्त भागे अन्तर बयना बंशजी एक पूर्वजेंग्नी बार संभाजन नवजा प्रजे वेदवाना वयानी साथ स्थापि नारा कर्या व भागवानपत्र नी भागनावान्य कार्य स चानना प्रयानानी एडिए हैं) हा समहत्वार्थ को रामां कोट क्यूबार भार बाजी शकाय है कमके वा रीजामां सारी समह करवाली रिकाम हती नहि, सामीय ने बहु तार्थ अधिया हांहती कर्यों अफाव हा वसीओं ३१ प्रकरणीयों बीजिए अर्थान जान जिनने अन्यन्त सामान्य विनाद वरपानी वर्णक्या है। क्रेश करण सनन्त्री हैं। प्रीकार क्रीकिन विवे सरकार वर्षे क्रायुक्त है। वर्गादि बनायी माथे वेजनामां इ. अवंधी चारणवर्गाह परने वेशाह वासानुगर बना कर परमप्रती अञ्चलने भागि का जाया आ। सबद एक कञायाव करे आहे जाता वंशोद्धां व मन्द्री आने क्यों अपूर्व के पश्चीओं र एकाओबी तो रेक्स्पानवर्णन, बीकिनी अधायगदनस्वत्त्व, अर्गवनेत्व भीगद आपनी, अधायगवन, विद्योदन स्वेन, संद्यो संक्षेत्रमा विकार क्षेत्र कंत्रमहिला कराव सन पूर्व करों के जा बंबनो समरोहत व्यापी सुरीना कर्नो, वैशान्त, कान, अधि अने नेमां कावोगी सर्व स्वयन्ते का निरूपण कर्ष है भा समहाकते कर्न रहत्व साहित्य समझना बाट वा वन पुरशे है एन बहीय नेवरं के तथ्य अधिकारो किने अनवाक नकी आ वंद स्वाधीय गढकाता रहिने र्धे १८८७ मा मानी पुदि वरोहणीय अपूर्व कारानु रोत्य संबन्धे अन सस्त् है

दान्देश जा वंद स्वाभित आयोह गांवे पेश्वे रीक्ष वादी जाते करेंगी वीकिशे वालावी क्षेत्रवेदेनों करों के था कादर व्यक्तिय वश्वे आरम्भां कर्षाक-"आरे आहा वने करी, यह बात विम्नारण काव है हवा करी कर्यु हरि, श्रीकृते श्रीवहारात्र । कर्यु पूर्वे मन पुषायुं हर्तुं, क्यापारिए करी प्रीत । प्रधारव वसदहनी, वे कर्याके तेहने रीत ।। तेह तित हरवर्षे वरी, ते करेंग्वे करी विम्तार । वे मुणी सद् वावदी, हरी वाल तेत ने नार ।। वस श्रीकृतेवी वे मांभाजी, वर्ता प्रश्नकरी विचार । तेम कर्यु ते हर्त्यु, केर वाहवी नहि सन्तर ॥" इन्तरि आवा वननी वीकिश ते मांभ विकार करा तत्त्व । हर्त्र, करा वाहवी नहि सन्तर ॥" इन्तरि आवा वननी वीकिश ते मांभ विकार साथ हर्त्य वाहवी नहि सन्तर ॥ वस्तरि वाहवी नहि सन्तरि । वहारि । वस्तरि । वहारि । व

भारत किरक्र कर पामा अध्यो और प्रत्य पर सर्व केंग्र से समामानवी सीव भार च्या इत्यो करावनो स स्वध्योग कर वर बन्यको क्यार संसारमी क्या ह सोन् अने केटा हत्त्वत पापकर्मोन् वयु भाइत स्<sup>ति</sup>धान वर्षत कर्य हो के केना सांस्थानानी पाचक वेतरक प्रत्य भवर विकार सर्वाई भा वच तरक पुराक्ते अनुस्तरे कव्यवानी वीतिनी आक्रा हरी नेदी ने बनाचे सक्या है, पर दे गर्नी क्या शहर मारे है नेनाची चेट होड़ विक्रम अर्थ क्या क्ष्मेंच्यो है। सम्पन् अप्त क्या गुजानुसूचक राज्यों है। क्षा संक्रमी सुनिक्त चरत चरत चयन्त्री अरेजी हो। अन्यन सथन सर्वता वह परिचयन देनी आर सब करीय स्वामीत और अब दानी मनस्वयन्त्रं यह प्रमान का कवित्यक्रिकी नियुक्ता और वीजा मधी करकानी अध्यक्ष करि हती जा सब १८६० मां सर्वे कर्जे के व्यवस्थित । करवां जन एक पोत्र है। या मनश्री वर्तन्या विश्वो---मराम्यवाय, वेच करवान् कारण, स्टब्स कामोन्ड विकास अनुस्तानी दुवा, एकाई बीर्टाक केसी एकेवरमध्ये रका, 'गर्भवाम' नवीदिविद्ध' का वचनने व्यनुवार वर्ष दू सनी वरेकाल गर्भेशमञ्ज्ञानी वाधिकता, गर्भेड् वाधी गर्भाष्ट काला वर्षाका ईपरभावन्ती कारी वर्तनाची बीवरिक्त राजेवासची जिल्लेन, दोर्गजनकर प्रावस्थान वर्णन, वास्तावस्थानी पुरत किरि, वृभवकामां करनां करा नवा भोगर नां गु.सो, वृद्धावनामां कृत्ववृत्त्व, नभा आर्थनस्वाधि ए ता, पानी पाणियाने नमपूर्वेनु कावर्, भवानक वसकृतेनु भागभाव करवजन, मार मधी बीचन देशनी काही सम्मुरीमां कर कह करही सादी कर दिवस रही कमपुरीको सद जन्, कार्य लोना सहलपूर्वक कीवनी अन्तरि सनकारी प्रवास का व्यापिनी समयसम्बन्ध, तीर इंच्यती प्रकारिक वेद, शन्तरि प्रवित्सक्य वी क्षेत्रने मुलाइ अनी प्राप्ति, रेश्मानी नीकनी वसपुरीयों जना कारीयों आवसी इ सह भारत पूर्व जान भारत क्यान, अबद्धार आहलां सार्यना पूर्व यूरी समस्य हुन्छ न्या इवकी, कोड कुम्मो एक वर्षमुकी कुल्य भीतवी समयुक्ति सामग्री समयुक्ति क्यार सवानक बनाग्यवाने वर्गान्तु भारत्, भारत्यकान काश्चने त्रवास करते सामा बनाग्यी भगागाम आहेती हुन ही तथा पाता त्य पाती प्रकार प्रधानमा आप्यानी होते. कर । प्राक्षा, कारोनी स्पृति कर की का पीन हु कि आधनों असला हु की, पनसम्बद्धान वर्शिक्तर अध्य शुक्रकोण कर वर अपूर्ण स्थानकार्य न्यून साथे पुत्रावर्णन, पाधानुसूक नन शास्त्रि नन नरक्षा पहलू, नरकना दूज कोष्ट्रण पती चौरणीयां क्रम शांक नाता द कान् पापन, मनुष्य दोसिया रचा रच ।। इनमां अन्यकी दुवेदमा, कुसरा स्थाप करी स्टलम करवाची ह असी किर्मन, राकृतम अने **व्हारमा कुमानु स्वस्त, कु**मामो वना जनवीं तथा वेशी दूर रहेवानी कोच, मन्त्रेनु सक्तर तथा प्रश्नम करना पूर्वेस समन्त मधानमनो विवि, इरि इरिजन मलनाभी र वयशक्य विक्रो हासनी निर्देश करे 

करणानी प्रति, के रिजा किर्याक भावती नाम उपनी अध्योत साम प्रेम्भाव । विगय कार्यो, कृष्णावनारणी विभावता भावता पामका दृष्ट्य कीर्योग्नी अधिकाय देशना आध्या है अञ्चारको दृष्ट्या किर्या अध्याप कार्य हैना अध्याप है अञ्चारको प्राप्त कार्यकारी पर्य भूष्यार्थिना दृष्ट्य प्रदेश, इन्ह्या का जिस गाव विभाव की वि

पुरुषो सम्बद्धाद्धाः -- भा पुरुषः तमन्त्रः प्रयत्न पर पर प्रयम पुरुष् तन्त्र बीरहरिका अस्तिकाल प्रकार । प्रकार कराइ तथा सुजान्त्व जान के आ राज्य आसिन वत "आ तन्त्र प्रमृत्युर प्राचीर, लाली प्रमृत महिला इर आणीर । नाम पृथ्वीतन इकामरे, कुर्वाक्य कृष्टिया जिल्लार । कुर्वाक्य काम दवासरे, यह अभिन्यदेशाः बाहरी" जा की शहरी प्रचानी है जा बन्धनी दश्य नवर & 6-अन्दर्शिक बरेसमा मुक्त-अस्परदित माध्य अस्ति है अने स तथा मुख्य साध्य बाराज्यलान है। ते आहा-रम्यजानपृथ्वियोते अस्ति । माध्ये "माहातम्यज्ञानपूर्वम्य सरदः सर्वते विवदः" भारती विकृति योग्य व यस यो वृत्ति तत्त्वत् । मोद्रविकम्प्यन योगन कृत्यन नव सञ्चयः' इत्य ति रूपनकी सिद्ध प्रयू छ अस वपनाम्थ्यां एव अ वान पर पर करी स माराज्यकार विजानी धरिक भवन क्षांने होत का विज्ञानिनी माणाद क्षांचा सन् वर्ग प्रकारको "कारकोत्।" 'सर्वकानिक्य' 'समानिक्य' विको वंगोमां स्थानीक स्रवित्न निकारक पुरस्का कर्ष हे क्या अव अब अस बागानकातान नी अन संवयांक निवारण कर्ष है और उसी केंग्र आनि बादरम रक्ता मार्गक मान धरनो र समनी १ रेग छ। अस्तरम वक्त नना प्रकारको प्रथम प्रभूत पामनु वर्षम करी तुल सहन्त, शिष्ट अध्यारमूर्ति मनुष मानकार सामूच स्वार्षक् स्व कि स्वतिकार कामान्य न् नियनम करी नेनी कुल्या करेकी केल पान कुराजी सर्व रूपने सन्त अनुसार पारण करनाची सुन्दन भागाई ने आनासना नामन हर गुज दिल्ली केन्द्रवे अन देवना अवचन पानमा सर्वे परापर ( बनुस्ती मने आचार्थी बहु क्यों क्य क्यों इस नहीं कुछ विगरें } में माराज्य आवशान करते. प्रयक्त भीर्यक्ता हिम्म परिको नेवना सरवानर हिन्सभी, नेमण प्रस्तान बार उन्हे क्यादो ( दोनाजो रहेन, असे, दियान, महाजने क्यादले, क्लो कर्ना, कसर असेक् कर्ण, अपरंगे करानी सूर्णियो साधि, स्वांत प्रशास्त्रा, आषानी सारण, अधा रचान्या, करणार्वतितृ दिनोहे अध्यादीऔं बागुओं करी आहीं, विश्वपतियाओं करी अपनी दिन्हें हैं। कर्ण ने सर्वनु पत्र का राजव ज्ञानवानु करे छ। दुखामां पुरुषोत्तम बीटिर जान नवता में को। सक्याने में कार आवर प्रथम पार्च न सर्वेतु क्रम्यायकरी सारा रच प्राप्तवन करे हे बीजाबीन बारराज्य बालवान व करत नेते पुरुषानवान संस्थानकारी ह 

उने बारीचा - भा तो अक्षा अक्षर का तीन तीता है। बारनत पेन वर्षण पूर्व है अस्य नमा करों साह करते उसक व उसकानी और बनी हकार करों भा कह मार्थीय करों है। भार अध्ययन मध्यो ए क-माध्या कुम्म देन कर अधि की 'यमर्थेच इत्तरे नेनेच सथव.' 'असवा स्थनन्यवा सक्यः' 'असवा सामवि-बानानि' 'अक्या मुनेत्व अमहान् गानपुचराच' 'शियन्त्रमञ्चा अक्या इतिहत्त्व-हिरदनम् इनारि कारने समान जय नय नीय योग दक्ष पान पुण्य अवहित होत्। क्य जनी काश्वय अस्ति क्या जा कार विजानी होता हो तम यस विजाना करोतर, पुर विनाम भी तम करे एवं विनाम कुछ जरी मूच करी से कोट विनाम की त विवर्णाद गुल्चे क्या विवर्णने आन्त्राज्यक्ष होत्तन्य अभी अर्थ आवर्तनेनु क्या क्या अस्ति व वरी है 'मृद्धिनी गुलवलाया हैये सेकवर फराय । हुन्ये पन्तिक सन्मसंस्थ्यका वर्षात विशेष्णपः' 'विवादिर्वतम् माण्यानम् कि सतम्' 'रानवक्त्यारीमः प्रपन्नाध्यापनेवर्षे. । अयोजियाविकेकान्तेः कृष्यं मन्तिः वाष्यतः 'निवादिवकुण-युनान् हजारेंद्र चार विज्ञान करण प्रात्मकान कर का विज्ञानी पान केंद्र गुरूप प्रकास व छ 'भेषामृति अकियुदान वे 'झाने प्रथानमृद्यान्य' था ववना स्थाप अयन करेड़ साटनी इक्ट दशा देश अलानी अन्वको धारिताने सम्बद्धियाओं अव्यन्त दी व होत है जेती हेंग्री बेहर 'या दीनियविश्वस्ता' विषयेश्वनपारिनी र त्रासन्त्रात्रः मा वे हरपाचापमपत् । या ६० छ जारी धरण्य असारायः संक कार राज विष धर्मन करी है 'श्रम पुराप्त रामित यामा केन विचारभवन' 'पुटिएं भाषत स्वामपत्रपताम् 'सिन्युट् सेन कामरान्' 'न विशेषतीवाश्योधन्यं बस्ताः मुस्ताव" 'पन्यभ्रमे दक्षिण परमहते अपनित' दक्षा'र केन सम्भानमां नहीं। देश कर भन्तर अपनेत्र होत् क की प्रमुख्य कि एन हो। अध्यक्षणी बाद बांच्य भनी कुनेन क्ष प्रता वर्ता वर्ता एक दुर्वक अ कि.सा.त्यस्यद्वास्य त्योदान्यसर्वार्वितः । न्यार्थाः धीवनायानी पृथ्ये विकार वायर 'रास्ट्रनः वर्शनि व बहान्या सुर्वनः' 'कविन्यां वृद्धि सन्दर्भः' 'कर्राट्रपर्वाच महासूत्,' आवी मांग्र भन्न चवा पत्नी तन कहा The state of the s

पत्रकारी कारण के बाद पान करेंचा र पूजा पत्र विकास करेंचा है है है कुष व कर्राति, कर वर्षक नाग कार। यह दिना करे एत् जब नायन पुत्र पीचा होत्र अभीत विकास का यह समानत लगान विकासिक विकास है। यह विकास दुरह नाम, क्यानो से पान का प्राप्त । इन विकास इनक गय, अर्थ रह दिकारो वाने ।। बहनो क्षण बीर करने या ल गुरुगह विशा निहर । कृष्ण कृष्ण कर ले पूछ, वर्ती क्यू विकार व विकार भी कर्ता तेल हैं। जा जा नेती के प्रकार कर्ती के इवहजार है क्या दिन हुन्य कारी । वीन प्रती कार्यात प्रतना कार्य यह दिन कार्य । ईस पत्नी क्रम्य पारकमाँ राजन राग राज असी मानक करी महाच मानना सा दिन रियु पाकारीती । बीकरी रीज प्रविद्ध करोड़ । ब्रीड का बीड़ विकास । इंजाइ राजद करा केंद्रीजी मन, महत्त्व र १ व अंदी कारण बाद महत्त्व के बीर्जानी, बाद भार भारत भारत दह परिना अन् । भार साह सामा । भार नाम मान मान 'अर्जर समान, जान कथ भरूज समाज। । अर्थ और जन जानायर, यो नय कलायर हान । किन्द्रनारून्य खडी प्रतन, यह बटा बसवान 'बन बनार व सही प्रत नेम मेनाव है आहेत. जान काम नह मध्या जब बात क रह हरीयाँ है व लई शाम भवीता, अन प्रवीध नाम नन । यन प्याप हे भवीता हुआ प्रदी प्रतन पूर् TRIME NICE MERRY TER AR SE NA CA . THE TH PIETR MIL पण में पू पनी कालक ( कि कुनान-इन) नाच कर है, क्या हुई (तीनी नाम दे । काई वर विस्तरती परण हकानी, बकना राहित एउन बात र नक बन्द कना विस्ता कर नेंद्र प्रदेश में क्षेत्र रहा। है ना बच्च छड़ प्रमान, यह मानव वान्य वन छै। यह विना है जिन न रेड्ड कर नाम है सन मान था । 'तन परनी बान विना विकार में यह विकास । वह दिना सामना म बज, अन्य प्रशास कीर देह देश ।। इंगार्ट का महामंत्र पुरु कहारा अने हेरे पह ही बच्च महीन पुरुष पारण ही स्व १ ५३ ना बेलाना हुर्दर हात रिवन का करा ना करा है। का कन्नदर का जान नवक बाराय करों केंद्र के की अधून न नवा तक करने क्षेत्र हम न प्रकार के न

विकास विक्रिया स्थानिक वास्त्र का स्थान का कुन का कार्योगी का स्थान स्थान का स्थान

भगवान तो पाननम् हे पानको ने भग नाहर पा अहत्व भगवति । भगवा व पानने वर्णपाति भगन्ति परनासूम्ये सरावस्त रहा । सार सर्वकानमा वावनम्यो वाच भारती। भर वयनो मुता से के 'यः भागविधियाम् त्य कर्तने कामकारकः । न स सिद्धिया क्षांत्रं व गुल व को गृतिक्' 'धवि: स्मृतिक्मियाता वस्त्रकृषक्षण कार्वे । आजा मही मम ह्या म महत्त्वी अर्थ पार्ट ॥ इयार रचना करता आ मुख्य दूरा आर्थांग प्रत्या पांचवानी मानी पर्या प्रान प्रशासना प्रकार भवा वह सूर्व ३ व मुख्य अवदर राज्यनि दव अध्यक मृत्य एचा लक्ष्मा होत्सी किन्त्रज्ञ स्म १व क्या जाया बिह कर्यात न क्यू ते क-'सीट्रे भाषानु होत सनसी, तो हरिन्यनमां हमय है व निष्यकानद करे न सोपीए, बातमन् स्थन क्या नवक अध्या प्रवास काराधी बहा अनमें भ दर्त ने क्य अब बद्धा अब नी बुहरानि हुन्दु नहुन जाता परेन सीवा लक्ष्यत गरियक्ष विशास नेवा आक्ष्यानीकी सिंह करात ने कम है के 'नहि पासे बाधर सर मुला, रही हरिक्चनर्था विद्यार ।' 'मंत्री क्यनद्रोहीनो क्यी नहिर' 'क्यन नेशी वाले मुख अहारे इकारि आहा कवाराम सन्मतात्व व वृत्य दन से अन अला व्यवस्था अञ्चलकारम । वृष्टे कारे अस समारमनो सक्त की सम्बन्धम करे हैं। कवार्थ एक आशा परंदे हैं। आ कार क्या सन् असन् ( बहुन सहस्र) से असने कहेता पूर्व करना शुक्तश्चन कर बनन साथ रहा है है। किन्न का है के बहु शास-अन्य माया है। कड़ियर' 'सर पाना ने संस्थानों, रह इंग्रिक्तन इयुप्रमें 'ज्यान के उस्त जानाओं । रमना न विक्रमनी राम्स' 'मर मार श्रीधना ने ये मदश, करती इसंग्रेती मंग क्षी दन्यांत आ वस स्टब्संग कारण भ वा भने रसवन् रहान कथाओरी स्याधिक लोकरण कर्यों है। कार्यनिमानकाल लक्ष्यों नहीं एक कीर्य कार्यन करानी पत्नी सन्धानन अनुपान कार है जा बचना पर पहला है अने १३ वह है धनक काराओं ट परत है। ज प्रवार के राजना पूनन संदूष्ण कहा प्रचार आहेर अने मानी केला स्वयं पालका ते सिद्ध भाव छे

 सकर सार्वभूनो वर्षि सन को पान सार सरक कालार कासका है नवर रव वर्षि मुक्त के अने की का बना भग है। जानानू दिश्ल विकास स्रोत ने प्रमान कर कर्यो राज्य का दु के जिल्हान का का मान्यमा छाउनक है। वर्षा का प्रकार स्रोत है। विजय है 'मूर्र सक्ता करही, माना नारमां मार्ग 'स्रोत्यक हैंगी होंग विकास 'प्रान्त महारे काने नहि मापतिरें '

वैदान्यान व्यक्तित प्रशासे कर्या है अन्य है अन्य व वहां न वही करी क्षापूर्ण व्यक्ति हाति है। पूर्व नवी मार क्या बाल केता है । वे करना प्रकार में परवास्वद्धि हो हन्। कि कोर्ज्यरबाटकार्ज "दिवयनी दिर्शनक हुए एक विकास किलाहा दिल्लाका सुदर्भेगः' 'या व्यवस्थानोः यद अपर्यनस्य आध्यक्षत्र । इदि या वा इति स्था लावास व वर्गाचवा "दि साध्य्यकान स्टब्स्यान ( वर्ग धने) बहुरियाख्यन वैशासक विशेषकारमधी कर के अन्त है पर के किसाना जब सक्का पूर्ण सरह गई। माराव कार्याचा प्रश्नाती एक मानुषी रेकाव ए जा का अन्य व द कि वि में भारत भारत भारत भारत है। mirm quara munt numer uren uner fara ere ur an fe fa um fareau इत्याकार नेपानी कीत हुन वैश्वास्त्र न का जा का कावान प्रतिवार का द्वा हुए। उन्ह बाढे एक विकास थि, वाची असन्दित करता घर र तम प्राष्ट्र वैशास्त्र दिलायाँचा, क्यी क्यों की बं कोई पर ।। "निष्कृत पट दिनार विका अर्थित अने मध्य है स 'मानी देशान के मनानिनि 'मार न व महायन, मह निर्देशकारी निवन र वा व दिये रेक्सचूं, विषयमुखानं कोट विकि अहा बेराव्य करी मेनीय, प्रव बहाना कर्य । वर्षक्य मुख्य व वर्षायण, बाद करी यन कार ।' 'नेव देराव्यकाननी वर्तन, इतिहानि विका देने कहिं 'ना नि निहित नी देगान है, कर हानी करते 'बहर देगान बिना करेब, बंधे राष्ट्रका हमान । बेगाव बच्चा दिश विकास. राजा हाज मीच हरिने हाँ 'जो चरा तो आगे धरज्यों, सुद्ध नैराज्य हम सम्बन्ध । नी क्षेत्र करी क्षेत्र विकास, निया सम्बंद निरुद्धान ।। 'नीस केम्प्रेस नही क्षेत्र, आहे बोध्य माध्य ।" 'संब वेगाव ना उपने, जो हमा कर कार्याय । कार्या नर्ना प्रक बक्क, वेराज्यकान सुनीयाँ 'मान्य पारी अपन शह वेराज्यकीर । हाँ करे हरत वैरान्यनी बढाइरें इत्सदि

सर वचर साम ननी मकन है नह जनमां हराव तो हक है सर किताना वर्षेत्रवह करनी चर्च का निवस्तावक राजना जर्म गई पर सुमन सूच है अन जहानाव वह दू सन् मूच है। मनवहन प्रकट नगरानाना है क्या सर्ग्या का पान वर्ष है। धर्म क्या करामुख्यान, कर्मान्त्रवान अने सहस्तानुस्थान रहित कर्मा विक्रियों से समर्थ सामा चनने सन्दर्भ क्या क्यो सही सामा धर्म क्या व्या प्रत से करने मध्यम विद्व दर से पन किया कि नेत्र वर्ग विद्व वर्ग नवी कर पन विद्य करने पर्यक्ष मध्यम कृष्यम्थितः कार्यम् नद्दम कृष्यम्थितः कार्यम् पर्यक्ष परित्र पर्यक्ष परित्र पर्यक्ष परित्र परित्य परित्र पर

वचन काराज्य सामान्य से साम काराजि वानसे स्थाप सन होता है। तर वानस्था काराज्य काराज्य

क्या प्रभाग सब मामजी निर्माह को अन्य मा जो साथ बरणा पूर्व करना क्या काराज्यां काचा भवता बाहरकर प्राव्यक्ति शुद्ध सवाराज्यों प्राच्छे कालग्राह्म विका काराय जब सिद्ध करी सबी बार का एक सारको कर सर्थन हो सबी हेनी काराय कत के उ 'कार्य अल्लेक्टर्स कराय' 'शियं मन्त्री विस्तृतस्थाः' 'मध्यक्षमी वर्डि नदेव सहसी नगरा है स्वीव जापने विना 'मना वर्गमान वया .. बाजा रानि विनान-न्द्रियप्यति 'नियं वागरनसम्बद्धा प्रस्किति नेष्टिकी 'वद्गानस्था वर्षिः कार्न 'पोनि: कापूनवामवा' 'कामक्रीक कवन कि व क्रोनि पुंताब' 'प्रथम वातरे व वर मानून हती वीचडावमपाइतम् 'म नेवः हेरचितृवान् 'कानि नरिक्त्यादवस्य हैं 'कामझन है देनवा कामझान्यक्कावनः' 'व रोजवान वां वीतो । अधारक वे कम्बूष्ट नर्वसङ्गाता है कव्य 'कम्बूज दिनोहर । नीतारी विकान मध्यक् प्राप्तके हैं सनामहत् 'तुल्याम अवजावि' 'त क्रमकानि नीकानि इजेनादव माधवः' 'उपामीन महासूनीन्' 'तवाचि इतने यन्त्रे वैद्ध्यप्रियदयन्त्र' 'माना वर्षाचरः प्राप्ता बीरहवान्तु सक्रकाष्ट्रं 'तता हावक्रवान्त्र मन्त्रु सक्रव वर्षद्रवान' 'मन्त्री दिवनित्र पशुनि वर्षत्रकः नवृत्तिकः । दश्या पान्यवाः मन्त्रः यन्त्र भारतारमेश वर्ष 'हाजी त्याः वेश अ अत्यु' 'ज्ञाहरमाज्ञास्यामे अञ्च के: मार्गिक्षीमा 'मापने इटर्च वर्ष' 'नेत्रं मानिमारहरूकमा वरीयमा शहर है। विषय निर्मादकार्या न प्राप्ति कारत् । कार

माना सन्तर्भ वक्षणे एवं वक्षां के कृतानुगङ्गतहोहः वहन्त्रन-पनादेन है है

वकतमा वताः' 'तिनिधवः बार्यकताः सुदृदः मर्वद्दिताम् । अज्ञातप्रकाः आन्ताः माधवः माञ्चलकाः' 'विष्ण् अन्तरः साधर्मन्याः ब्रह्मान्त्र-तृत्वपुणयः । विरन्तः आस्य-निष्टाच वे में करना वर्षातिका" 'यारान्यकेर्यक मस्तुष्टः वर्षाचने। विक्रीहराः हरिपादाश्रयो। नोके द्वितः माध्यनिन्दकः ॥ नो यमो स्वदकोषकामादिर्गतनः सुर्वा। कृष्णांत्रिज्ञानः साधुः सर्वत्यम्: यसरञ्जनः' हन्यानः आ वयनान अनुसार स्वती करके-'बीजा गुजरान की बजा महत्र, बज वर्डि गढे हरिना महत्र । निप्तानर ज्या संत संबन्धे, अनन्त्रना पाप बढना 'आस्त्य उपहे अनुभवनी, तथे माना संय अनने संगे । उत्तरे केन पायानको, चिन रेगाइ आप इतिन रंगे 'द्रम महा अर्जन उल्लेषना, नभी उपाय की हो नाम किना । नेम संसारमानार पार करना, जायो संत असर हात बन्धा ॥ 'जेम चितामधियां चीर मोदनी, रहम मर्व रहीते , तेस माचा मैनमां समग्री, बही दर्मी ने भा है ॥' 'अन्य सेनने आयुं उपमा, वर्षे नदी जो एक । माने रहाने मह सच्ची, कहे कवित्रन कांच । सर मार नेगी श्रीपर्या, संश्यव नहि मीच ॥' 'सुन्ह अंतरे माचा वंत बीगरे' 'संत विना माची कोच कहे, जारा मुलर्ना शह । इया रही छे जेना हरूमां, नहि एटशां धार ॥ विस वननीने देवे देव छे, मदा गुजने साथ । अगोगी दरवा अभेदने, पाय ६.८६गा कार । जैस अमरी मारे मार परकी, एलटावा एकपनुं अंग । नेम संग रचन कर् कहे, अल्परा जापको रंग । जाको संग क्या से महना, प्रीत जरून उप्त । निष्कृतानेद निभव कर, आए पर निरशाय ॥ 'माचा संतर्थी मर्ग गर्गा, केट बीरोनो करता एका संबंध मेहता, अवसर ब्रावियो है आह ॥' इन्सार्ट

सनानो आनो प्रदिशः १० वर्ष्ट अगर नना सक्य विश्वकी से जिस पटन कमें इस कीडी, चंदन मिलमों बायछे । नेम भीडींग्ना संबन्धकी, संग कन्या-मकारी के वासके.'

वह पकरने तमंगे 'नर्ग विद्वातनं विद्वात करा, गईनं तमर त्रह्यरायक । यन रक्त कर्म करी, अवना कामी नागणक । वटने नवत वर्म वर्म मसंद्र्या, ममाराजी मनानन रीते 'सूनी करारे जन जगमां, वह वगरी जो रहा 'साम्य जाम्यो जाव जाक्यों, कोटि क्यों कन्याक । उधारों स रही एटनों, बास्या तह वक्ट वनाक । क्ष्म कर्म क्या करानों, जेमी महिया महाराज । निष्ट्रमानेह करो जिन्नों, नागी गयी के जाजे हलाहि,

हुँकाओं भा वश्रमें काविष सर्वासम सराव्य वक्षर वस्त नती सूर्तित वर्षण नेते में में व किसी वस्त्रम्य स्थानित स्थान स्थान का वश्रम्य स्थान स

धारिकालियि-भाग कर की मानका भनिकोड किथ-भ्रष्टा है जार करे अस्टि नी मदन है आहरोतामां तो तेवीना रहावची प्रमाधान के अने कमर्तान करते, नेती तम रक्षा रक्षाची है। आ गय ने अस्तिन् कर्यन्त करते अस्तिन्त वर्ध नेतास साराज्य कान मानमान्य विन्हें केटबाक सम्बन्ध । गर्यार्थिको सरम्बन्धन्यन्त्री विकास कर्यं । आ क्ष्मनी प्रस्थाने करना स क भरतान्य असल करनाना अनक वसकीना भाष्य मुख्य साथम है. वरे समान केंग्र नदी पीजा ने बनो अंठ है। संग ही सानी होत की मन्त्रियों की। विस सरवत नहीं आने और मन्त्रि करवानी करे हें "अपूर्ण-इतनीराम्यभूकानुष्टां तुः केडस्पूर्ते । जनन्यस्थितं कार्यातस्थ्यतेश्वास्तिकः हि हे ॥ सुरुवादि वाचा नामी वन्तानकारपतिता । न शोधने तवा मनिर्धार्वादगतिता तुनाम् ॥ देशकानन्यभागारः क्षित्रेयम्यम् वर्षे । यमादिवर्जितः मिकामिरोधने वर्षियथा ॥ पुका धर्मादिभिः मा तु कापि विशेषंतपदि । अवना नानिभूषेत हामार्थर्यं राष्ट्रिय ।।" "स्वर्षाद्वान्त्रीयस्थान्य अन्येक्ष्योत्त्ररः" 'दोष्टक्ष्यस्य स्था मन्त्रिय गरीयमी 'प्रायेण मन्त्रियोगेन जोपायो विवर्त 'जुनारानेव नोक्रिक्त वंगा नि.भेगमेरदयः। तीवेच भक्तियोगेन' 'न पुज्यमानक प्रक्या प्रमस्याधिना त्मनि । अरकोऽस्ति झिरः कथा" 'धरान् मनिक्षता सध्यो इनेशः सर्वदक्षित्रय' 'म-ये पना अन्या तुनेश मगरान्' 'ध्य से नारापणः मदा' स्वारं

भारतम् हेन स्थानस्य स्थानस्य विकास प्रत्योगी स्थान्ते, अस्तिम् एव स्थानी भारतम्य अभिनाम् से जेन मोटा मोटा (पदी) सने से भारतम् एटीन तोरीको सुराना । १९७९ सम्बद्धाः स्थानस्य स्थानस्य

ΒŲ

क्ष विकासी भी कुर मा किया कामानामां में किया जा एक दिल्ला का साथ राजा है। अस्तान कवा वर बोक्स पान्य अन्य भाग भागी अन्यतुष्ट्रम क्ष्यपु कारण भाग भाग भागी मानव करीचे अन्तिम एवं जिल्हास मानजी स प्रकल से 'मेर्च झानी जिन्यपन्त वक्षभनिर्दिशिष्यम् । 'स सन्या करीन च सन्तोक्षादिचन्त्रयम् । अच्छान्न सन्या पूर्णाः कृतो ज्यानार्थाप्रविद्वतव् 'दीयमान व गृहन्ति पिता सन्यस्य ग्रामा' अर्थाः भाषित हुनेन को स 'नगरान वातना हुइन्ट। सुन्दि स्टार्टन स्टॉर्ट्स वा म अस्ट्रि योगायां जान्यका करणेक्य ( वर्षकार में ) क्षत्र का जान्यकारी अध्यक्षण है। 'ब्रुक्ट्यूक्यीयू नार्जीक इंग्रेस्कान्त्रका है ते 'या च पोज्यधिवारेब' 'तककाधिवयनो वी' 'मनेवा लक्ष्यकार स्त्र-वर्षा', भारत' वर प्रतिका क्ष्यतकाला का कर्वा है से सरक 'सदा हुन्द्रिय शब्दनाद' एक काल भूतक वर्षि किरवड के कार कहा वावनी वर्षि करकानी करते 'बाहुवा करवीएमारन से युक्ततमा समा' 'बाहुवान अपने पी भी न के पुन्तनमी कर " 'बाद मां धांना बादन " 'कान्यनेव हि जावन" भाजना कर-मारि यस प्रवार ( मानवा) क्या के 'शहा प्रतिका प्रिकार' अ वो अन्त जन् र्'भा,वद अवस्थानुभार निकारत्य निर्देश्यम स व शहर पहल दरवी 'सन्यानुपूर्वा' 'दीपन' भारता अकृता ' जिन्हा के व्यवस्थाय को क्षान वर्षी होते ने एवं की स माधना करते मारम हे 'मान्यमायम 'न शहीपत्रमें प्रामी महर्मम्बीहतालांच' 'पार्शकर्मान्य सा जर्ब व समारच पर्नाइट ।' हजार

वी से स्वयंत्र वाच्य स्वयं स्वयं विश्व कर विश्व क्ष्यंत है 'राहरिया प्रत्यक्षात्रम्य प्रत्ये मृतुल इत्युवस्यप्य 'हें सी प्रवेदस्य 'प्रत्यक्तों सह प्रयादनस्यात्रात्रं वाच्य 'प्रत्यते वी सं भाषता विश्व है 'प्रदेश स्वयं प्रत्यते 'विषयं सीम्यन पीमन स्वयं स्वयंत्रित्र विष् 'मृत्या सं यं वेदान्यं हायः वर्षो स्वर्षहः' वी स्वयं क्ष्यक विश्व है सन्त प्रत्य सं यं देशान्यं हायः वर्षो स्वर्षहः' वी स्वयं वयः प्रत्यक है आती वाच्य विश्व परि दृश्य है 'इत्युव्यक्ष्यक्तियुं हुम्ये सिद्धिं सापने' 'स्वेदक्षक्रमम्पितः' 'द्वित्यां विष् स्वयं ''द्वेतिश्वां प्रत्यान्ते', प्रत्य स्वयंत्र स्वयंत्र क्ष्यं क्ष्यं स्वर्थे हिंदिं स्वयंत्र क्ष्यं स्वयंत्र हैं स्वयं क्षयं सं वयं स्वयं क्षयं क्षयं व्यव प्रत्य विष्णाव्यां हिंदिं स्वयंत्र वृद्धियोगं में स्वयं व्यव क्षयं क्षयं स्वयं व्यव क्षयं क्षयं क्षयं व्यव स्वयं स्वयं व्यव क्षयं क्षयं स्वयं व्यव स्वयं स्वयं क्षयं स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स्वय

भारते अस्ति अनुस्य रहत्तोत्र वनी अस्त वर्गः वनुस्य रहता दुवेनस असी सन्य भारतस्य आस वर्गः वर्गः वर्गः वर्गः 'दृतेनी बानुसे देशे' 'तुरहवासी सुतने शुदुनेनम्' 'तरस्या मुदुननिवर्गः' 'दृतन बानुसे अन्य' 'सरस्या सनी दुननवय

والمقاربين والمؤمل والمقطول والمؤملية والمؤمل والمؤمل والمؤمل والمؤمل والمؤمل والمؤمل والمؤمل والمؤمل

e a and their more with any granted, the foreign engages

pried auflige teller men fie mir ... igfe erm ne gt. एक बर्ग-इ बान्धवर्ष कहा। मन्द्रि प्रश्न प्राप्तकी, क्षत्र प्रश्ने पर प्रश्न प्रश्ने वाद क्या वर्ष करवानी माने बाव तर हो। बरत्व वर्ग, बार बार प्रकृति भीकर जात बक्त बाद करत प्रति हार कार्य एक ब्रार्थ हुई। वहा erath fich ume aft eine in fein eine fant gem efrafig fen हत्याह नाइ अब क्ष्म हार्थ इक्ष्मन आने न्यन नहीं संदूष । वेष प्रतीन हार्थ सहारताकरी, व समाने मुख्य कियार भिन्न क्षताकरी प्रार्थन पार्थन मुख्य करे मुक्ताच एक क्षेत्रे समाहत कावनी हुवी हुन्छ तहन कर करान्य आहे गर्नक इतर यह आता 'मने पर विश्व सत्तर कर दिवस बांद सामाना' आती साहित मान्या पत्ता पार्वा का वर्षि कह बहित 'हरू वान हर वर्षात का क्या दर्व दर्श 'जिल्हाम बांच राजना 'त वांच वांत दान जिल्हामती वर्तनीहरू के मुख्य प्राणकी । एवं एवं एक्यापु क्षेत्र वादी वान विद्या प्राणको अभी वश्य तम वसर्ति चरवणम् अस्य करवा को बांद बादालय बहित । यरी रद देक कहा संगरे, में कर नाँद करा कि "सिन्क्कर बाबनी बर्ज़ार समझी मुख बराम हैं 'मार्च) वर्षक कामाजनी नर्ने दिशक ग्रंड है । कीनी माधन वर् दर, एक वृत्रों करों कोई बाद के " करी अनुषय कार्रन 'तेन वांक बान्तवां कार्य क्षेत्र वाक्ष वालाकती, वर्वती सहवी काल जिल्हाका है ने विका के ते, जिब रेक्कको समर्ग अस्त्रकानी जन्म करी क्यू बाव हुटी विरक्षण । वेश वृद्धि बाही नार करी के नरे नुसनी बान' वंश कृत मनवा दिखारी, वाची वर्षक करा मुख्यकारी 'जब प्रदार करी जावजी, वर्षकता कता है जेर' प्रसर पहुनी वांक बांव मानीती, हैए बांकन कार बांद राणीती असरती. वर्ति मारवर्त मारवी नार्त क्या करी किया कार्यी अपने अप वरकत रहतू, हान बारीन हारू । नवा विकासी के काला नवी सामन कन पूर्व पान वनको सफर मनता 'मन को रचन गानना करो, कहा प्रतिमान क्यां 'पनी कता करती बाहुत्वती अक्ता कृता हुनु बाहुद है। एतुर हरिए हुन्द कार्ट्स हरियुं 'जर बच्चन करा नगकन के नेर बच्च करते के कालानमं नांना निर्देशी बरणां व 1' 'बनुष्य रात कर बनवर्ग बनता दिवद विवय । बानव देह वांचा क्या नहि वन्य रहती ए हार । वार्ड अस्ति बालवर्ती यन क्या करे करी । जिल्हाबाज्य सरकतन् जनी बातु करत् पूर्व 'तम दूरत पर देह वह'

मर्थन कर्ष अनर्थमां, कटो कमाकी श्रं करी' 'बाटे माहारान्य प्राणी मनुष्य तनतुं, कर्ष्युं समझी यत्रह कार्य' 'मजो मन्ति करी मगरानारे संती' 'तेम मक मगरानना' वित्रवाने प्रमाण । पत्र विना कीर्युं न मजे क्षान्ये, ते मान्य संत सुजान' 'एम अनत्य अन्त नगरानना' 'कृष्णक एम कृषा करी, ममे ममे करेग्रे नंभावना । नित्य नजीक रही नावारी, पत्रे पत्रे करेग्रे प्रतिपादना' 'मान्य बन्तनी भीवित, मदा सर्वदा करेग्रे क्षाप्य' 'भिक्त के महत्वद्वसूख्य' 'मन्तिकद्वय भगवान' 'जेजे पूर्या अन्तार, ते बन्दनी मन्ति बोहन' प्रमाण

द्या प्रमाण प्रक्तित सर्वत वर्णन वर्ण नेनो लेख महिमा करों है से मिलास्थानी वर्णिया कर्णन वर्णन वर्णन क्रिया कर्णन वर्णन वर्णन क्रिया कर्णन वर्णन क्रिया कर्णन क्रिया कर्णन क्रिया कर्णन क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्

**द्विक्ट्योम्:**—अस्ते प्रक्रम बीटरिज बक्टी क्रमान ग्रेश हे, देशी अन्तर्वे । समितान है अस्ति किनो सामस मोह साधनोनी कालो समाचेल पर जानके साम, जाजब, बर्चान, स्वास, निश्चन, सक्तपनिक्का, का सर्व क्रम्यून' जाने सकतीत वर्ष है। सर्वे सापनीयांची क्यावर्वद्वती सभा करी एक अनवानमांच क्यावर्वद करदी है। जाती गृह र्गामनाचे हे बहुन परम पारव करा हेम परमास्त्रा है तेन देवती शामिनी जुक्य वपाय क्षम प्रामानवाज हो. नेची भार हपायनी जादि लेक्स है। बाम जारे माधिनुं अभिन-नर्जुं है बाटे सेवा जामी हुक्य दवाय हे तेचूं बाय का मुख्य दवाय है क्या (ट्रापीड़ा कांत्रमुगलां समय अन्य अन्यती अवेजी कांत्रिकता अवे काक्ष कर है. बीजा दशको नी नेवार वजी, बहुके सिद्ध करवा पहेंछे जले जानी तैयल निद्धम के, जा कथन निर्वित मुक्त सुमान सर्वाधिकार सने जविर सर्व कान्यों जापनारों है अगलायनेत राजका मानवा देन वस के सरस्वमानि करे हैं। करने दोनाना रक्षणमां कोइस्य क्या गाँइ असवाची वात्मक वर्तिय सरावासनी मधीवे वर्ष 'आरे हैं। हमी व्यव स्वाव की बीजी की हमनी' र्वी यहा विश्वासमूर्वेच वार्वेन्ट करनी नेते अपनि को के - अनन्यसाध्ये सामीष्टे क्ट्राविकासपूर्वकम् । तदेकीपायता पाध्या प्रपत्तिः सरमागतिः', सर्थना वकार परो हे के—'हुं अपराध्यादया भारतभूत अक्रियम अने संस्थाति हुं। तको सरमानवस्था वरित्रकारम् कपसञ्चातम् सन्तरसञ्च को 'अद्दूष्णस्यकारामासामयोऽर्किकनोऽमानिः। लमेबोपायभूनो मे बदेनि क्रार्थनामितः ॥ प्रम्थामितिनयुका ना व्येष्ट्रीनयपुत्रः तार्म, अर्थ-समाजनी इस्ताल वनातुं मधी धानु देनी मान बोनानी मर्च बार प्रके 

विकास स्थान कर विकास स्थान स्

الله المساورة المساورة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة الله ا مراجعة

असर्वेष्ठ क्षामान होताची क्षत्र कलाता सहये तरा लाग रूपां होतु सर्वेष्ठ सर्वञ्च अस्त भाषतारा पेत्रजी प्रथा पर्धा तमा केर्याच अपूर्व प्रवास प्राप्त पर है स्ट्राण-सिद्धांत नथी अर्थ साधनो परमाधानी प्रमाणकारा सामित साथ है ने प्रसान उपयोश' भा वश्यमनुष्यां सिद्ध वर्षत 'यो विद्यमनि कामान' 'संपन चिहिनान हि नान्' 'मर्चक्रमेंफलप्रदः' पूर्व नाव व बीत क्यू मंदी का (परजा सक्यांप्रदेश है पर है 'का क्यापि है नने क्यार्गित आग्ने कर का स्कृति है देन क्यार्गित कर्यु भाषा अकल्पनेत्र पुण्यपाप कार्ड कर्मयोग्यां का आज्ञाना प्रत्येत पण आग्रहानी वस्त्रामात्र हो मुक्त रक्षणनी संस्थानम छ। मार पुरुष रक्षणन्त्र भटाविक तर कर्म को सर्वेद का सम्मानात्वा करा को भी कारण कहा करा आप आप हो हो हो हो है को हा स नायज्ञको बरमाजनी अज्ञा पाउछ जरर बरमाज नेजा हो छजोड अवस्य ४१६ का आजे संपृति बाजी वाको संस्थान को गाँउ प्रमेश पुन्तपानी निवृत्ति बाजनी अस्तानाती निरम्भि निरम्भि क्रमार्गन्भि हे ने अभियन जनस्थानि जानामध्ये समस्य पहुने रोजन् का आपी है तो कोण अकार करें तेन हैं <sup>9</sup> मार अध्या मधन संग्यानकार अ स्वास्ता श्वा अनोनी शकाने वाच्यात सभी आवा सामाओं कालातनी कार्यन करीते नेपन र्वेश्वर बम्मान्य हारा है। अर्थेयकार अञ्चल, जन्म क्यान रहित, सम्मारणय राज्यकरी अलग जब परमेका अने पेश्यास वद अन्यतः प्रामेका अन्य प्रवर सामान केन प्रमान न कार्य के अने के संवोधन पर न अस्ते । सुवान काल्मने संे अध्यान साम जनी । अभवा सभवन्यत क्यो <sup>है</sup> सम्बाद हो। समर्थ सर्वन्न अभवन्यत है साहे सरक्षात्रके वासम बहुने क्षेत्रानुं कर आयेष्ठ आयो श्रीक्षता सर्वोत्तम स्वकृत सुका जिल्हाक राजनार्थं कामानां वर्षक्तो के 'बुजुभूर्वे खरणयहं प्रपत्ते' 'सर्वेशयोग्यांकराज्य वासेके बार्च बार्व 'मानेव के बरचनने बाया मेर्टा नर्गन्त में 'तमेव बार्च गुन्त सर्वनावेज' 'विकित्र नो प्रनन्यगनिः सम्बद्ध क्याद्यक्षेत्र धम्बे व्यवे' 'प्रमबं क्यां प्रयक्ष है ध्यान-बोगविर्धार्थनाः । तेपवि सुप्राधिकान्य पालि वर्द्धभवं वरम् ॥ अनुन्यक्षान् प्रकार-दिकन्याचगुणमागरे । परे प्रश्नवि असमीते शुरूपोप्ने पर्यमिदिकुत् ॥ प्रशासित्र-द्वेपालामाध्यम् प्रमारकमः । नदि प्रमादमं विष्योगन्यदारकाप्रवारमं 'अद्यक्षि वर्वरति प्रयमाय महत्त्वयम् । देवो जारायनः श्रीमान् इदान्यभयम् स्कृतः ॥' 'कालमायायायकर्मयमद्वाभयावतम् । श्रीकृष्णदेवं प्रत्यं प्रयमोद्धाः म यात् श्री 'शरकाणनपापपर्वनं सम्बन्धिता च नदीवसदूषम् । अनुसन्यतुते हि सन्यने' इत ५ का स्थानमां वीजानी संस्थान अनेक विद्या । — वर्गमन्द्र'न्यास स्थानकर्यु मार्गमां सदन माधिकार सभी, अमुक्तमा सं, भा स्थापमा तो सपन आरिकार है। वे बर्ज वे के 'प्रामिन्छन वर्ग निर्दि बनः वर्ग प्रक्रियनः।

पुन्ते होरे प्रश्यमाभयत् । यसभ्यतियः प्रहाः विषयमन्त्रतामया । वर्षं वर्षं वर्षेत्रन्मनेपातारमञ्जूत्रम् 'त वार्षिमेदं व दृतं व निर्मं व गुणं दियाः । व देशकानी नायमा पासी प्रथमपेशते' 'सां दि वार्षं व्यवस्थित्य केपी स्पृः वार्ष्यं पानपः ।' 'किरातश्यानभ्रमृतित्यः,' अनुपाननो विचार कान्यं एव प्रथम भरित्यः विचार पानवं कार्यः वार्ष्यः विचार पानवं करित वार्षाः विचार वार्ष्यः विचार वार्ष्यः वार्षः वार्यः वार्षः वार्षः वार्षः वा

वीजो विशेष व के के-भाग प्रश्नांनी वरमार्थेंड कामा वरके अने कांनार है-हैं मानृष्य कारी परंथे, केमके बीगमार्थना देनपागान्त् व्यक्तिकम कारणा कार्यु परत ने 'आवयाणानवापि दर्श' आ स्वात तिस्वत सर्व स आ आकार्यने कर्य बार कार्याची नेने स्वस्य विद्या वह आवसे ने रामकहतीय कर्य है के 'तहुदेव वर्षाय तवासीति व यापने। अध्य सर्वभूनेश्यो इटास्थेनहुने यम' 'आनानामध्यु फलदा सकृदेव कृता सुर्ह्ये'.

वीजो विशव व हे के-क्यंबोर्गाद उपायमां निमायकाने 'जन्मकाने प्रमाये स्मान मृतवा कनेवाम् । यः प्रपाति' का वपनयी अवकाने आवानना स्माननी अवेशा पर्णाती है निक्षी समाद्रित पान जा उपायना समावना वासनते अवकाने गाएक को का वर्षो नेनी संपेशा नवी, कमक आने तो क्यो आग समावनने भोगी दीजो है एउने तेने कहा संस्थायम् रहतू नवी परनु आवानज पने संसाध नहा है कहा है के- 'दननते सियमार्थ मुक्कार्यकार्यमधिसम् । अद्दे स्मार्थि सहान नयामि परमां गतिम्'.

न्यासना विगेर मार्गना सामपनी सकित कमना नाम वावस यह सारध्य करने सोगन्य विना विनास वनु नवी 'अवस्थांत्र मोक्स्यं कृतं कमें भ्रमासुनम्', जा स्यायितस्य ने पारच्य कर्मनो क्य नाम बावस, केवके जान नो सम्याननी क्या केम पारक्य से 'अत्योनामामु कृतदा' 'हमानामपि क्यन्तर्ग देहान्यरिनशिवी' या पद एक विशेष से । अधिक्रिस्तास्थान एक अस्तिमां क्षाने नेय प्राप्त सम्यानमां प्राप्त कृति से अपित्रिसने तो एक सम्यानमांत्र स्थायकृति से, केसक स्थानमां क्या स्थायकृति करवी स्थित नवी, जा पत्र एक विश्व से । बीजा क्य स्था विश्व में स्थायकृति करवी स्थान नवी, जा पत्र एक विश्व से । बीजा क्य स्था विश्व में

भा दरायमां को निक्ष बाव से हो हैने येगानी आत्मा परमा-मानी राम किया परमा असम में समझाना हैने वायसे आ मानो साम, परमान्याना पाममून्य से 'दामभूना: स्मा मेर्डे सात्मान: परमात्मन: ।' 'दान्यदाम्यं हुरे: ब्याच्यं स्थावं च सदा स्मा ।' 'स्वत्यपारमाने सम्भानं स्थापित्वं ब्रह्मचि स्थितम् । उभयोगेष संदत्थी । व परोप्तमिनने सम्मा स्थानं स्थापित्वं ब्रह्मचि स्थितम् । उभयोगेष संदत्थी । व परोप्तमिनने सम्मा 'परमात्मा स्थानं, ते चान्यने स्थाप सानेस ने पामण्यानी ।'

नाम अने नाशीनी ध्वता है सार्व कांस्त्रुपामा आमानना केवल सामना प्रतापशित कांक्याओं नवस्त्र कांक्या के 'नामोणारणमाहारूचं हरे: पश्चन पूत्रका: | अजा-सिकोट्डी वेनेव स्वपुपाआद्युच्यन 'ध्यात्रमाहारूचं हरे: पश्चन पूत्रका: | अजा-सिकोट्डी वेनेव स्वपुपाआद्युच्यन 'ध्यात्रमाहारूचं हरे: पश्चन पूत्रका: | अजा-सिकोट्डी वेनेव स्वपुपाआद्युच्यन 'ध्यात्रमाहारूचं हरे: पश्चन पूत्रका कांक्यों के 'क्षात्रमाहचं विषया कांक्यों के 'क्षात्रमाहचं विषया कांक्यों के 'क्षात्रमाहचं क्ष्या स्वपुणा स्वपुणा स्वपुणा कांक्यों कांक

विकारिकारण स्थानकोशस्य विद्यास्य 'सम्बाधनसम्बद्धनायाः विद्यालयः वृद्धनायः ' तमुख्य

क्या अने वा भाग वे प्राप्त के प्रवासन में 'मर्बनमान परिन्याल भाग देश भागतन अपन वचनपुरका का जो चलको छ 'नमकाननी एड आहारे कह कह को माध्यमां केट्टे माध्य है. यस धरीय वसकाय साबी वाच है. अने न आधारी व्यक्तिहरू जोहरू प्रकृतिक क्षेत्र होत हर कीई' 'कुल्याच वा एक क्याराजना वाजक इर्शनम के न बार नगराननी कह हार नन व बरासन्त्री प्राप्ता के ने रह इर्शन वासरी कर कारासमा सकत् रक्षण के ने नाव कापन नर्ग अस्तिहा करीन राज्य में कर व संस्थान वन व कल्याच के जन म माधन के ने ती क्याजनी वसकता कर हैं 'बन केन अनुन हता नन नो क्वार करवानुं वह हुनु कार वृद्धियात्रव ने। वगर-व्यवस्तु राज अस्तिश्चय राज्यवृत्तीहरू । यद वा सञ्चयात् हो र ने। मान्य जनवर्षी हता इरछ । मृतिव्यक्तिमा धर्म नजन ननी विता नहि एव व्यवस्थानी प्राप्तान नवनी नहि भा काना होई पर्व व्याना करना कान नहीं 'अन्तिहरू बनाराजनी अध्योगे करता कर यह प्रतिमारको नार हे' 'यस इस्टरना वस विना ना क्षेत्र माधन मिट्ट धर्म नदी। मार कीमा नाधनना करन नतीन मक्से बराबानमी उपासमानुं वस रामाई' 'बाटे कुड़ियान होच तुन सम्प्रानिहात रह दर्शन रामको नो म नहीं परान्ता का स्टब्स रहत 'नगरान महना सामी है। मणकमार है। प्रित्यावन के भारतहरूपण के गता नगरानती केरना वेना हरणवां विधान नहि ने नार्थक हैं। 'म बार रह विधास रह बनी बाला मेन बारकार्ती तथा करहा तथ है रथा कराई बाट विश्वामी एक शह के 'गढ़नी गर्जी होता ने बनावात को जाता है होता ने बाहनों प्रश्वामन और कटनाव हेव छ क्रमकानम् व्यक्तं होत् नव्यव जारकं क्षत्रं के जारकं रून यन यन सम्बाह अस्थ को है में इस बगरानमी हुआ। तम भारते प्राप्त है दीन कीई प्राप्त नहीं . 'अन करा है बनकाननी पर आधर ने अने होय नन बहा बनव वहें है क वार्ती पह नेत्रम ने ह अमसी न्यानी सन्तानी समराज दिना वीतान न साम 'संप मंचमां कोर मनानि साथ जोंहें 'आज है करीश साम है करीश सम क्रम दीकानुत कर राज्ये क्या बाग्यानन् कर व राज्य से व वर्ष 1 क्या

कारना वक्तना का रहण वक्त ह ह का कारना रक्तनी समझान छ-'तेष माधन नो कहिए, नेवा बायकत हुन्य । तेन बतान न सब ता, जाब जनम सहन्य । नारे वज राजी बच्चानीनु, नहां जिन्य नान नांचन । पनिनवायन विकट् छै, ने मना नारे कहे होई रीत । यह विकास जानर राजी, तम बीनुं बच । वेह वासी

उत्तर है, करी भाग बहरत । भन्नत प्राध्य दुरवर्ग, वह इस्त्रानी वसाय । यस त्रम के जनमी, ने काम करण करणावाँ 'माक नामें निवाद कर्या होते दिवसमें बरते और । जायना निवय दिना भनि गई भूतर्थ योगे 'बारे यह बरायावन, मान्यां करियामांच नेट विना अचनक हाद्याः, अन्य नवी उपार्च 'विधन चढ व्याकृत का अनि वर्ष की उत्पन्न विकायन नावनी करो मानवी विवास 'तबड वाची ए प्रध्यम, स्वय वासी सह वय । किंदुमानंह ए वास्ता सदी निर्वाचन 'निका वर्गाचा वस्तानवार, जाहर वस्त्र कापूर । केती कर है। बादर्जात, समे बाजी सन्त्यो प्रत्य । तम सनी वट बदाराजन्त, साधननी बधनवी ना'य । भरी मोधी वादि वन्तेवनति, उत्तरे नहि बालक कार्य 'हर्ल्या बोदी राजना, सु वे अलग करवी नहिं। एक महिन बीजर्च, महामहत वर्ष रहीं आगम करता महत्त्वज्ञान, वर्षे बालान अनुस्तर । प्रेष्ठ तना वर्षे हे, नन बाजता करी ध्यात' 'में की मन मूं किया बन है, कर समाने ने की बहरूमें । देश बाद नव वह वर्ती, मुद्दी समय जलपूर्व 'हमल वृत्ता वरतकार प्रतर्भ' जल जह नहि हो। दर्जर वत-' 'क्य करता बच्चां, कह ने जो भवता होता। 'तिन्युद्धानर नांनेत रहते हरिश्राकाक्षण मार्च 'है।टह होन स्टब्सं, वे क्यूके लहत्त्व । नुन प्रांता प्राह करती जाने बहुत बार । बाटे बोरो दानरी जन प्रदर्शनों प्रताब । निवृत्यानर व करती, अंतरपादि उत्तर 'बच्च वर्गमी वगरानवी जोत्य जनन जानी । क्य विना वीली करना चोचटो कामाची । इतिहत्तव देवा वदी, व वटाइरी गानी । समर्थ समझता व्याधीय, जोती होत बोकार्य 'द्वारा वर्धा देन वर्षा, कालन के शिक्षकात । जबान प्रामयक्त भागते की ते कही काम स्वरात' 'हान हहा-लना दोपन, स्थार वृत्र बणबीतन । जिल्हारान्य हरियानन, पान नहि होर वर्न 'य जुने प्रस्ती करणी, जुन लिवमारूच्य क्रमरीख । आप अपन्य प्राप्तर, नेना गुनी इत्र क्ष्रीम् 'प्राच ना प्राप्तामन्, धान इत्या मंत्रक घाड । निकृताना निक वाक्षत्रं, गुव्यत्मेन व वा गेड' 'बान ए वान वृद्धि दियो, जिया इतिप्राचन होता। किया जानां काइनी, नभी जायना नोर्स 'कार वर्ना करन बहासक्त्री, नाम निवदर्गण्यने ब्रोम । वेव काने कान बाक काँड, इस विवस्त बसोमची ब्रोम । को बिहुतित बिहुति के कर राज्यों उपराद । जिल्ह्यानेर व साजा, है जुल राची करास्त्रको 'प्रथम वा'य यातानी होएन, यही सनमा यटीन बान । वर्ष न बाव जावब, जेरु कर इस बसरान' 'चन जीवन जनरील के. जनक जननी नवान । निष्कृतानद कर नव नव, निष क्रांची निरान' 'दानानां वाची नव स हर, करे बीट करी बर्टिवाट । अवगुष्ट म नुद मनना, वेस मननी माटव कर्ड والمتاسات المراور والمتاسلين أوا ما ما ما ما ما المتاسلين الما المتاسلين والمتاسلين والمتاسلين والمتاسلين 'बाटे असमर्थ प्रत्येश, समर्थ श्री-काराज । वर्ष समाति अन्ते, शृक्ष्यं क्रांच्यानं , बान है 'बार्ट बीटरिना श्रम्क दिना, कारत कोड न कर्य 'क्रब का तीरच जीव-वेर, भरे वन का प्यान । अर्थ न मरे क्टबीर, हेरी का विनानी बाने किस बहुन करहरी, क्याने नीकर्नु होत । ने नी नीमी उन्हें इने बाक्टा, क्या बाक्टर विना न दोन थीर' 'चना नवर्ष थीर्थार, है है भारे ने ने नवा। हकी बनानी वायरो, निरुत निश्चन वार्ष 'कड़ बनवां कन्तु, वर्ष वद हरिन् कर के' 'नाध्य विकार हु हर, आवे ह्या प्रसावे एड । स्वय करनी बहाबहुती, बावे नुष बहर 'परिवन पारन इस्ता, तहा हरिना के तहारी। यह गयी परिव बाचा, नदी उत्तर बानी बानदी 'तह वर्षिका अज्ञायन वर्षाद, बजी नाम बची वरपार' परित्यापन नाम हरिन्, एची पाल्या अनुस उद्वार' 'अप तम ही में बीम कान, क्रारिशि दिवे स्त्री कान । निश्वकानेद नागरणना, नाव नाय समानी अन् क्यों वह बांद्रज्, वह बीजाने बड़ी बाहा । वह वे बहजानर ही, हंती बान करें नार हैं 'अनवरा के बनवी, जब बर के कर पूराच । नेर सब तब नान नाती, भग केली । बाद मुहाम "जभव इद्यमम एकिम्बादकः रीकावृ को एका । भार फिल्ट बाई स्थापका, मुखदापि करना लेकार' 'यना है धारिक है, पह नेनी के नन मात । नेह बिना दिनांदमां, एतं हत् दोण बहाराव निवार नेह नेटन नव, एक परम परम के तीन । नेजी पाराक्षा तार नहीं क्यांत शीक फर्जू मार्थ प्रवास हाम कार को प्रवाह माहान्य करता 'बारश पर निर्वाहने, में हाहून वनाचे करी । महार में मंकरजी, ने नरन तर वादी नरी । क्री के बहुना समन्त्र, वा वंदमां वर्षा वर्षा । हापान दिवन वारते, वर्षा'य रहत वारकी । करपर-नाद नावती, कानु वार्ती के कर शर्म । बीध कवानी क्य रक्ती, कई बीक ब गही क्षांत । हिन्द नहित हानाई, करी कानरना नहीं हर । बामड रूप वार्गनाई, बहुद मानी कर । क्यूं वड चनक्यान है, वृति आवशे रुग्ने कि । को उन करश बनती. या होता हो महिन्दाई इन्योर का यह कर करान धारकर करवान है। बार बाब १८१८ मां पुरुषाच्या मानानो पूर्विकाए पूर्व करों के अन करान साम ११ पर है. ४०० परव है

कृत्या प्रशास — हर वर्ष हुई मान्या र राजाप र भ गरित । कर्यु वर्ष हर प्र क्षण वरण या मेनवर्ष विकाय क्षण के साथ प्रशास क्षण के हर नहीं हु के भागान के व्यक्ति क्षण के साथ प्रशास का के हर नहीं है क्षण के साथ प्रशास का के हर नहीं है क्षण कर का के साथ प्रशास का के हर नहीं है का स्वाप के क्षण के स्वाप के के कि का कि का कि का कि प्यान करवानु काम करतः अन नम देवृतीय नमें वृद्धि राजवानी सम्बर्ध में स जब बारमा हृदि' 'परित्वस्थित इता वृद्धीक वेदम' 'हराबद्धे मु पन्यवे' 'हृदि बोधावितादिन वृद्धारित' 'मुक्तान्यशि' सहत्वे वर्षितादिताय' 'हृदि माधिवद्धे' हमान् कमान

जनःकाणना जननगर पूर्णनवस्थी पार प्रकार से १ पता जनानः प्रतिहेर से अने चंचु अर्थरक संच आर्थरहरा क्यान्य प्रार्थित है यह अर्थरकार बहरारि प्राप्ती क्ष अन्य बोक्परि क्षानिकृतीना क्रमारि जलारों क इत्तिवीना आराधमस्त्रवी केया काल क्षेत्र क्षीवर्णाट प्राप्तन रोग्नी पन क का समझा समारों हुई बन्द की हर बर्ग्ड बाद नहिं से लगुड़ बाद (आरमनेत्र दिवनो को छ ) दाद इंग्डियोनी हुटि बहुर्जि नेत्र मोच क्षत्र क्यूनमां हेनु के नेपीय बहुद बहुत मान काक्यूनेक हुई कादार करवानी कावत्रकरण करहे दे कहे है के- भारतात्रादी समाप्रदिः" वन एवं बनुष्याची क्रमचे क्रमचेक्योक्योः । क्रथाय विश्वामाष्ट्रि हुणवे जितियये सन्तः 'क्रमुण्डकम्बरमञ्जलक केन्स्टबरम्बना जिलः । जनस्थनम् समृत्वे वर्णनानीरः बहुरव् नार्थ बनी वनः सरे कारणमाधनन्ति वन्त्र हन्द्रियश्चित्रो वीश वर्ष व संपनः" 'वार्थ वस्त्र अनी वस्त्र प्रापं वस्त्रेतिकृषाणि व । आस्वानमान्यना बच्छ व जूपः सम्बसंत्र्यनं 'यहे हि वभीन्द्रपाणि तम्ब वदा प्रतिष्टितां 'सर्वे-न्त्रियम्ब द्रेयानि 'इन्द्रियाच्येश नशीचि द्वेतच्यानि इगजनः स्वयन्त्र सन्दर्भः वयः' 'अवीयुक्तमिरं वर्षे वन्यां विधानुष्यक्रमि । इन्द्रियाच्येर लेपस्य नपी वर्गति वान्त्रकः । इन्द्रियाच्येर शम्बर्व कम्बन्धवस्थापुर्वते । निगृहीत्रविमुहानि वार्गाव सामाच च । हिन्द्रपाचां प्रमानेच होत्रमृष्यस्यमेश्वरम् । मध्यरम् तु नान्येव त्याः विदिवसम्बद्धान् । सम्बद्धानम्बद्धाः नित्वानामेश्वये योजियमञ्जले । त न सर्पः कृतीप्त्रविष्यते विजितनित्रकः 'विविधे त्राक्षते हे कावः कोपालवा होताः 'क्क्यने व्यवस्था कृत्या कृत्यमा' 'त जनद्भिमान्तुतिन विष्योगेन्यमां कृत्य । वर्ष बंगति ही केन्यं व क्यों स्टांग्डर्व इकारि

इतिहास प्रवासको प्रश्निक व्याक्ति व्याक्ति हो स्वरक्ति करते "वान्ताने हिंदि विद्या प्रवासको प्रश्निक विद्या प्रश्निक विद्या प्रवासको प्रश्निक विद्या विद्या प्रश्निक विद्य विद्या प्रश्निक विद्य विद्य विद्या विद्या प्रश्निक विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्य वि

का कवाओं हमतो क्रांच इंटिट्रवा हा नवी रीत बहारता वरावची क्रांच बार्य प्राप्ते क्षी क्या अंत्रज्ञान वर्षस्यां वात्रस्य स्थान स्थी का वचन निवस्त कृत्यामा वजने Errer, mit feine, seiner mit mienmen fein fi entres neuer merein nab. वैद्याल काम कामना तिरीनाना केता काह भागा हो देव विधवनिवासनी सारक करी. वैदार्थ बाद क्षत्र जिस्स सिंह प्रशास वृष्य हेनु मध्यस्थान के करावी को सरसाहरण बाब होत्रम विकासी जिल्ली काम के बैराएन कर अन्य माध्यक्षण बनानी स्कारत बाब अदि मध्ये नवालाय तो जिस्सामा रह है नेवी एक विकरी शिक्षकते काम कराया नि पद विषयो सकी हान्त्रियन नियममा करिन, विषयो विभा हन्द्रियो रही प्रकार सभी बारे नेसेन अस्त्राज्ञा सम्बन्धनात्म शह प्रस्तृति विवसानी अवशित स्वतनी रह बनाव भाग नामें किया हो जिल्ला मध्य अस्य असे कोंग की सन्तानी विकास किया है। (तप्ता प्रकारभारी बाक्के वे सब कार्य करू केरू 'बारवासेन त की नेव! वैद्यानेव व रायन' 'कामान्यनि को गयो किरको प्रकाशकान्यनि 'व वर्णन आन्य-वेतान्यना हरू भिनवनुभद्देव्यने 'भियन हरपहन्धि छिचन्न नवस्त्रवाः । श्रीयन्ते काम क्यांचि मध्यम् एष्टं बरावर' 'विश्वसम्मन देश वृत्तीन महितव बायपु केशसहः' 'कन्त्र जवास्य हिन्दन्ति वनोध्यासबुद्धकिथिः' 'बङ्गसम्बद्ध न बाध्यः सङ्करोष्ट्रगः हि ने 'चेनः इधारयनि मानद्रति इधय कि न क्योति पर्या 'पाम देव कर्मन करिया वर्षाः क्रमानन्ते वरात्मन्तं 'अस्याय्ययम्बर्धारम् व कर्मपरम्) वत । भर चंत्रपि हामाणि हुनेन निराहमवाप्यामि' 'वाणी गुणानुकवन' 'य ने बनः क्ष्मपदार्यकृत्योः' 'प्राययो यव वर्ष भूमो क्ष्मियोगाः वर्ष वेनुनिहत्त्वः । न वक्तमारिकामाच क्रमान क्रमान क्रमान क्रमान क्रमान क्रमान भीनको निर्मा अनुहार देखाव विजय कर क्यानी होते अने क्या कार विक्र भाव हा बनी दुर्शन नवी चने, ननी से बराव न रक्षा वर्गक — निर्दे कन्याबाहरकाँ धन रर्गति तात कच्छति' स्टबरि

वा हान्त्रविज्ञवकार्य व्यावस्थान्य है के हक्षाकृष्टमान्य है क्यो विकार करते वयन हैक्येंग कृषायी प्रण हम्माराति व्यावस्थान्ते भगवं विवार व्यावस्थान्त व्यावस्थान्त अने दुर्वहर्तिमा बाह्यर एक भारत्यक क्या पृत्ये वयन हिर्देशीनीयर जिल्हास्य वर्षे भारतायी व्यावस्थान्त्रक पृत्यप्रवास कार्यो, क्यो वर्षे वर्षे व्यावस्थान्त्रक पृत्यप्रवास कार्यो, क्यो वर्षे वर्षे व्यावस्थान्त्रक प्रथमान्त्र कार्यो को वर्षे व्यावस्थान्त्रक प्रथमान्त्र कार्यो को वर्षे वर्षे

कामान अपन कर जान्यासक आवान कार्यन्तक अन्य अन्य कार्य करते वर्णनीय वृद्धियोषे में 'योगक्षक बरकायक'

um mit uneb mien einem mas pumminen mun ner frein erra & बार्स मार्थने हुई हुबरन करण एक इ.क.म. दिस्ताह जना इ.क.र कलाका व.न. व.व.रे.नी एई हु वेश्याः पारः प्राच्यारं का वृत्ति केवर परम काले प्रकारतीर करतः 'प्राच्या को कि विकास करहा ना रूप सर्था 'वासन है प्रत्याने सामध्यता सर्थान से । क्षाचार वर्ष वायानोह परिवर्त है। एक करना है अने करना है त्या कारत्य र विक्रे स्था विकासकी एक र है भारत्य प्रवृत्त क्ष्यू है ह बीकर्त करें। एका की अलगात - 'सम कृषि किया भगवार है, में बहील बारती क्यां चिरव न्यूचा रशन राय, रमना नाना नंद , दर्शन व वय वनार्ग 'नवां त श हरके अगर्जन, से नवजी ने लजान । साहित साहितसां हरि, व हरहा कहि निरमान 'बरिया प्रत करणनी चंच होडिय है बेहान्य' 'बन बेकन व र कहा, वृद्धि निवयन। यह । चित्र राज्या चित्रशी त ह ने सफ नह' 'में में पहार्थ क्षानमा, बाब क्षा क्षेत्र क्षाया । क्षत्रीयुक्त प्रतिकारी अनुस कर आनुस करते हुन्दि हते क्यों नहीं 'सन् करणनी जानह, सभान नहते एक । जोतन कर व नव, नहीं मीयके मंत्र' 'काम बान कर नोजने, मंद कान वसका कर वस विवयनी प्रतार, बहु करने वह सुद्र' बेगान बाद नियम जेट मुनमस् अल्बकान् 'कर वसन विकरी, कहे भूजनो बच्च । हेर कमार्ग कार्यान कार्य विकासी क्रम हैन्द्र बाद नियमत्, कारण मनते मंग कान बारकार दिना, कीती राजि मुंचता वान । नेदि क्याने त्याराचे एक दिश्य कह राग' 'नव वाच कर निस्तार, कर रह करे करी रीत । क्षेत्र नीह सरीमंत्र, जोट सहत्रं प्रीत । व बोरी क्याची कर्तन्त्र, कारची मान्य कीय। हानी बना सामादी, मान्य को होंगे बीची क्षेत्र सका बनावारी, बारोड़े हर शह । हासी तब देश हर, ज्यारे इस वहाँ 'बहन र हन बहारत. बोह कर निष्कार्य 'बार्ट हाँगबळ हेव, प्रशेष धार आगाव । बाह्या बनावया. वादी बाद में इर्च 'एक क्रमी क्रम बनमां, राग्ने दरा विकास । वाद्य समर्थ बनने, का रह हरिहाल किया केवा विकासनी कार है, बहुसक-प कहाया है है। कर एक क्रमान, ने न पूर्व नक्कार्य 'एक विषय क्यार्व, क्रम्य राज्य बहाराज । केन को कान के सीरिका, ने म कर कान जनाते के उस अने नांकरी, करते क्षेत्र कराम । क्षेत्रस वर्षि भोडामध्य, बाध्ये हत्य एक्टव्यं भीत्र कारी उपलब्धे. करि कार व हात । बीमहतानर प्राप्त विना, क्षत्रक न रीट्रा कार्य कर्नार

नार नरको के के कामानों मुख्य कराव सम्पूर्ण सामानकृति है, हेरी सिर्दिकों इस्किनी सुद्धि करीके, वेजी सुद्धिमां जब मास्ति इत्तिकाना सम्पूर्णनी हुद्धि करीके 'बारारश्रदी स्वार्त्दा स्वार्दा भूता स्मृति । स्मृतिस्ते स्वय्वधानां विश्व-मेश्च ' भर भूतिन भा सन कर छ भर संबंधी स्वार्थ को छन वृद्धाना भारतिकी सुद्धि करने अंगण न दशकी है जा सब १८५६ में अन्तर सुद्धि स्वार्थिय स्वयन्त्रमां रहित सन्त्रा है अन्तर १५ वस्त्र है

धीरकामधान-भन्ताव देश भरता तथा दृश्या दृत्य अल्लो स्व कला व राम करते मार अलोप जीरत रामची करवाल सालवं है है अलाव करा क्यांदिक काह यू में भारते अकरा नहीं पन्यू काम्यानम नेजी प्रशासा सार यू मा आपती, पन रेक के पुलिका सुनमें हि से काम बच्च विस्तान नेना तम करीयरे कांचर कराड़े आर गुड़कारमां क कर्त बाह्य भाषा अन्य अन्य अन्यान अन्यान शुद्ध वाला बनामार इ.स. आरस्ट कती क्षा म पान प्रमान क्षा इच्छ । नेन सक्षम तो यूजा भारती यूजाती प्रधार क्यों के बाबन को अवक निर्देश कर का प्रजीभी कार्य क्षाप्त होता के रोक्स कर म र परिनी पन्यु हतीनी सन्य सकरकता विकास काले हैं। एन पनी सकिया हु जी बारवार में हु अब वेपर कि के राम्बर राजियी सहस बरी परिवार में कान्ये ही सत-वानन हरत नाइ में भनी पपर नगवान अभिजय समाव कई जावक कन करी रापानी पड़े तेन बहुत पह अवश् अभी अस दिनानी पुत्रकारण देव के दिना हमरी पुत्रक करणना क्या अध्यन्ना राज्य अध्यक्ता अनव अक्राप्तनी कावी कमावनी। वहरी और्वाय मवान्त्रे के नवा प्रकृतिकार कांग्रे क्षेत्र नेमां क्ष्म कुल्य का कावा है से अबी नेवा सार हरते अन्यत्र अस्य अस्तरान् प्रत्येश पुरतुत्र पाक्षकर्ती अधिकात सुन्त अस्तरा हारे दुल अहरत कर देस प्राया भक्ति परमा कायकी निकरण करते देस कामान क्षेत्राची प्रशास वृक्ष बाय लगा का बादना स्टेग्स्स्य बलास संधी नेस हुई जिल्हान बन्धी गाँउ में कुरून सामना पन नवा। सत्याद स्वयं साम्बद्धन प्राप्त है सामादिक्षा धारवान्त्रजी त्यूरि यम प्रचार रह ते हैं। फुलारिय झटा दू क्याँकि कायना वरी छ-'विषदः मन्त् नः प्रथम् नद्र नद्र नगहुरो । अवनी द्रष्टेन बन्नाटपूननेस्ट्रप्रमा मार भेजा पुरुष हामसा चात्र पार्या क्षेत्र ध्रावदांक क्षावदी ब्रोह का सक्ताव रद्वनम्तम् 'दरिदं भानि अने श्वी दिनकृत्या करेति है । समधाराविकवाणि व्यक्तय क्या विना' 'बारुवर्ष। करूनं द बाना किन निरास्कन्' 'बब्बान्बर् मि उपमि नम्य रिनं हराध्यस्य । बार्स्स्य विकासिन नदा वर्धन र सिनः । नन इ क्षेत्र मन्त्रमा यदि यो न परिन्यतन् । ने प्रमादं परिन्यामि यः मुर्रशि इत्रेयः' 'क सदक्रमभाक्तिका' कटक-पन्तदानम् । अ पाके क्रमम् क्रिया पाक्रमध्यक्ति शब्द 'अन बसरानके के बन्द राय नेन के के क्र प्रकारनी हुन्य आवित्र के इ खना देनाम कार कम भाषा लगादी कोई नदी बनो पर बचायन व पेशाना The first of the last of the first of the first of the first of the last of th

क्यानी पीरण बीरान वर्ष हुन्य वरन्त कन वार्त क्षेत्र कीर पुरस् पराणा रहीन इति तथ जनानी पीरणन क्षातान क्ष्याना हरवायों रहीन कारा कर का नी क्षातानतीय हुन्छा के क्ष्य प्राचीन क्षातानाता जन्त होत्र तन बारन रही जन्म अन्य करन एक हुन्य कराव कर कर्या की प्राच प्राचित की विशेषण क्षाता निर्मा 'मूर्ल के हुन्ये क नवानारों के नाजानाजी का क्ष्यातित की विशेषण करावता कराव स्मृतिक क्ष्यादीयों ने के हुन्यक प्राचन है

का संवर्ध अवस्थी संवर्ध प्रकृति होते अवस्थानी सूत्र, अवस्थि वर्षिक्षी वेरेरक में र पान राज्यार अनुस्थार माध्यूर्ण कन कालामान कर है ने अस्ते दिवादी अञ्चादिरती वैदानिय अधारामा आस्वांत्राची अधारणक अधीराताम प्राप्त तम बच्च विभीत्रण । सम्बद्धसम्बद्धम् स्मान् स्थानम् । वै कर्म्यः सामान्य न् प्रद्यान्य जिहीन जिल्लामार्ग्य हार्यन्य आकृत्रान्यमा अन्य हे एव एर हार्याचन जात. हे हुव क्षां का में स्था के कि का जीता एक हुन ने बार की अपना का वा कि का member upe mieferem ft fo etompte fan meefang mone fu e guer क्लान रव भारत अने दूर्व का भारत हुन दिश्वी स्टब्स वर्ष है अने पन पन पास कारवाची पावा करता अभी अने कामानाम रकती वरी रका करे से किन लई त्रकार्यकारी स्वाप्ता रेकान्य अञ्चलानी सामान सामन सन्तरे नेवी सन्तर्या स्वयः मान, वेकेप्रांत, कालकृष्टीता जिल्लाम सावजनता मुत्तीरता महा करे करा विक्य, एक, कम अक्रवर्ष, देशक, क्यानी विक शुच विद्वा की एवट क्या बर्कती क्यों के काकिन रचना-'निक्यामन पुरुष्ट प्रन, चरी चर्राण चान करे वर्णी । सम्बन्धन स्वार स्वारी, राजेके होत्र नेत्यमी "उन पट्ट प्रथम पांसर, नेव कृतके व क्षत्रान्तिक । मुन्तद्र सन्न वर्ती भवत्रिक्त, राज्यत्र सवर वर्णवर्ति । प्रेय कड जनती पुरन, बर्बर् करी जनत । जन जानके निवासनत, के रूप साम थाय करते. में देश हुन्य देशा करी । यह मुन्दे हुन्या प्रदेश, न चार्च नांद्र करद हों। जेन प्रत्य विश्वनी जैन्दि, होन प्रति करती कमाननी। हराति दिव दर्शिन, हादका प्रकृषि बाहर क्षेत्रकी 'बाहर काम दृष्टि न दिए । एवं निवासनती का'न कराह चीरहीर' के हो बाबद होने बादपी 'नवना है विकासीह, बडी काही वंतरे वीरण 'हम्से बंबर सारवा, देवां नांबर बीबहरराव' एम बनायसे उन हरिया, जाते बावसे सहज्ञान के भाव कर शायान करना करी को अधिक स्थान 'ब द बाजुर बनवानने, है जो इट्रम करने 'शाव करने वस्त्रवार, ब द तुम हों ही बोज्यूनों ! नहीं जीवट बहना चीहरि, अब बारे बुगवांव बर्ब्यू 'दिका बंधे हरिक्यनी, हरि नहते हरका शतुर । एवं वाने वन वन्ति कर, नेवी चीहरि रह पूर्व 'मत्यकादी संग क्षेत्रद्व नह, यह बीट केवीर बीटांसीय मना' 'करूब والمقاولين فيدار والمراولين في المراول المناول والمراول والمراول والمراول والمراول والمراول والمراول والمراول क्रमेरी मार्ग मरागावती, नहीं गई वटी क्रीड मन झूग । तेन क्रेन गून गई क्रांसी दूरन, नमनम करनाम नूगां 'नम क्रांस विना क्रांड करनु, मन मम नवीं आवनी । एक ममझी मंदर मही, नो मर्नंड मंत्रि वाच मगनि' क्रांस विना करों क्रेम स्वा, मह विनयी मृत्ती नम विचा 'मार्ग्ड हुं करायद्व, क्षेम विकामसंत्रिय के मून । दशा मां ने दगा करी, केशी नमची बाच विद्यान' 'पान्य दे निय कार्ग्ड, क्षेम दिवस अवक्टान ! जना संकटन नहन क्रांस, वाची नचीं क्षेम कार्म 'पान्य मंदर महीं 'पान्य मंदर महीं क्षेम मार्ग्ड कार्म करीं 'पान्य मंदर महीं क्षेम कार्म कार्म कार्म कार्म में मार्ग्ड मार्ग्ड कार्म कार्म मंदर में मार्ग्ड कार्म कार्म कार्म मंदर में मार्ग्ड कार्म कार्म कार्म कार्म मार्ग्ड कार्म कार्म कार्म कार्म कार्म कार्म कार्म कार्म कार्म मार्ग्ड कार्म कार्

प्रशिक्षकृति — बीर्टारेनी मुध्यतो समग्री धामक पृथ्य राज्यी पन स्पृति करके स्थाप विकास करहाती अभूषण कर्न मानती है। विस्तृतीह स्थानक मान्य है और बहुई। सामानती (रामधूर्य नवर नवस सूत्र अवहे अने सीकार्यात्त्व र च न मार्ग्य वह बोकार्य इन्द्र साथन सान्यु हो। स्थूनि चनामा अंगनी पुद्रिती उत्तर हो न एक स्वाप्यापनेची पान्तर पान्यर पान धरनी कुलारि पारवता अगयानाने स्ट्रिंग वरी ने प्रण करूप हा अन् नारी दीज़ कह कर कर प्रविध नहीं नह भए फरमन है। सनकारनी म्युनिवी िहरू के स्था का का कर बाजायों तथा प्राथमक्त्री प्रशास कार्यक जिल्हा है। ह्या कार्ति । स्पृति राज भवेक वाजा विकासात । जनस्थाना सतने यो सा ध्याति निकार । नमार स्वभा कार्य काम कर दिव्य कार्य कामानुकिनायन् 'ध्यक ज्ञानकाः नदा 'इविस्तृतिः वर्षात्राहियात्रकान् 'वयु जानुवास्त्रहरः' 'कानन्यः करत दिल्ल देवार या न जार्यावन है 'तर्वसम्पति कृष्णस्य प्रविद्या विकास बद्दान्ति श्रम नना'न व' 'नमा चिनान्यना विष्त्र पार्रमना मराका नवन् 'भानव्यः व्हिन्दरम्य सानाची समरान नृत्राम् 'बानप्या मन्तर्याः निर्दरपानिनयाः' 'नवार-मनेषु कालच् बावान्यार' 'जन्त्रकात् व बावक वार-पुनश करहरम् । यः इकान म महार कानि 'शुभ-एक-सम्मापन विज्ञायकामानि स्वाचि व सहन्दति न । फिरमन दर इनरकार दिन्द रामानिष्ट्रचना न बनाय कन्यन 'बमनानना व्यवस्था प्राप्त र पूर्ण राज्यों न स केंद्र बद्रण नामन क्या नवी पन नवी कार बंग्री क्षांत्र क्या कर्या 'जब जो केंद्र कार्या और देश्य अने यन क्या जो क्याजी अवदात रमृति पर भार ते। तम अमराजना पापनी प्राप्ति पाप 'यनमा वगराजना हे पारित कर पहिमान महिन निकासका न यह प्रकारित हासह धन प्रमासनी है वरिवरणी ज्ञान्त विश्व बन्द पृष्टी सन्तु 'च्यी रिव प्रथमी रहत् तथा समस्यना व्यवस्त्री उपायना कार्या गया वर्णनानना अस्त्राव्यामनं अस्य क्षांत्रन कार

नवा नामस्थान हर्ष्युं व चार वानांव जीवना प्रतिद्वय कृत्यानान अवे से अने जैने एनु नित्यन प्रेण्हाते वो यह पादे तो नेतो वीद अगरानना पापने कर्म पाने, बाटे एसी वे अमार्ग सर्वे चरित्र किया नवा नामस्थान ने कल्यालकारी के.' कारतो अदिशा को कंग दिश्वता केया देखनो वस बोच प्रयाण प्रतिद्व के, बाते कर्म के के किन केन प्रवास हुएके पानः प्रवेद्धतेन्, भा व्यवस्थान का अपन्य दुकानो श्वास्त्रों के-'प्रयाण बाह प्रगापने, राज्ये हरपामांय । जेगी जेम प्रवासीकी, अना गई उत्पाप ।। चरित्र भई भिनती, स्थान चारे यन । कार माना कर्मन्, व्यापे निद्दे विचान वसारि व्यक्ति क्षण्यता आह्मान व्यक्तियि विकान वसार वर्षण क्षण कु का कंगमां तो केशी विश्व क्षणित कार्य नेतो वकार स्थितको वसार जाम गुण क्षण की सार्वादका वर्षण पूर्वक क्षणित क्षण क्षण विवास कि

कोस्त्रपदी—कार अन्य परमा कार विभाग कार्यमे कोस्ट पर धापछ का परेग्या सन कार्याम् राष्ट्र स्वरूप परेगी कार्यामे आग क्यो सनसम्बाद कार्यामु कार्यो प्रसंद कार्या कीर्योगो दवा अनोनी कहिया, वैश्यम, कार्यकाम, क्या, पने करे रहुपयोगी सन हुन्द क्यान्याक का संग सनदारी स्वरूपी अनेबी स्थित्ने हैं

समार्ग समा - जा संबंधां कर क्रमण है के-क्रमीर ने मन्त्रकों, नेवां ग्रेस्ट वीचने ल संपन्न, जिल्लाम ( सीपने अनुबुक्त वर्षकार ) अने साल्ड सन ( प्रक्तिक वर्षकार )ने राज्यना ने प्रधान ( रीपान )को कनेरी को रीपानोंने परमार विकास करेन रोपानी र्माद प्रति पुरारम क्षे पार्वास्त्र कर करावने सरक कर है है स्मादि संस् विषया क्रमे नमानी प्रत्यक कान्या कान क्रोच मोजाहिक दोषीयच सराएक बोजाबी करावते अन्य निवस्तान है ने द्वीन प्रशंक विवस विकास भीत्रत क्ष्मा क्या वेशान क्षम इस रेज्यब्दमर्गदृष्ट वांच कोमाजी विकास बी हरको क्यावक्षे एक बळजी विवाद बर्ख क्य जीरवाजी प्रतिका कांग्र, सरक अन विषयमकारका अन्य द्वार नहींने शेश्रण प्रदर्शी अने कालको वर्गिक र काली वर्गिक पन निजनतने प्रदेश काल्युं संधी, हेब्रां हुने कही महान प्राप्त होनानी नगानन पान्छे अने निवासन जगननकारण साथ कार करे के का भी अपने मार्ने को हो जो नी अराक्ता थी पुर को है देशी किह विकिथारः कृष्णः यत्र वाश्री धनुषेरः । तत्र श्रीविक्यीः धनिः" मान्नी कहा त्रवाले शुरुक्तमा कर है परवर्षायकी देनाओं परावस व यानने देने जीता परावस कर परावस नाथी जनस्वर्थन समाधी निवयनने प्रत्ये जायके यम नेनुं विश्वासमानी सम्बन्ध विश्वा-रबं 'व इयोग्कार्टिक्शियरूपं वजनि सनविषये । . निर्म इटानि कायम्य छित्रं तुमन् केच्या:' भाषां कका प्रकार करते विश्वास करते क्या करता है अनुकृत पर्वराजी शर्वि काली बोहरामी गुजावरचे रहेकाडी कर्यात आकर्त हैने कर-(जो रहेश) हे डे जियमनती सरपोप वर्षा नदायनी नेन्य पद प्रपर्न कारण प्रस्ता 

पुरुक्षण क्षत्र हेन्द्रस्थरत्वन करार वार्याची अस्त्रजनी विजयनान प्रयान कर वेसकानु बहुत केवी एक समय मन्त्रे मामनी सम्बन्धनी कृष वर्ती निकास स्थान करता-कारको सर्वाकित हुए कही जीविकी साथ अध्यावश्च अन्य कारको साथा जीव वस मोरी मीत सर्वेद क्यी जीवम्य राजास्य कानुवार प्रवास मध्यक्ती निधित सहने हैथाराच्याक्रम अपने सिद्ध करता आपू अपक छ। जिल्लाने कानक सनन् राजन ,कारबार, कर्य नेथी अपन्य प्रामानगुरू मध्य है। एकत्र मानना अनुकृत करिकृत्य कृतियावधी सेव कर्नात भा कक्षण काक करावन का कर्न म । ०० वक्तावन करने अवस निवसन के भारी बीच अनी भार परन्य कर कथानी कर सब भार करें पर कथा १३ क्वास्त्रकृते कार्य कर्ष्यान्वरमा वदाराज्याची प्रवासक करा करानी स्वित आप करते के मोद्धारमानी हरवा, ह मह द्वारहण अपने अध्य है मह द्वार जीनमां 'मर्श-द्रवाणि जेपानि' 'काम पच्छा मनी परछ ' इडिसेश करक कर दिवन नन क्षा 'पुरित्येश्व: बार क्षाचा' का मुल्या करना क्षाप परम परमे प्राणिकी करने कर बानु करता 'पुरुतास को किश्चित्वा काहा मा बाग गृति।' आ भूविता जिनकाना सकता संपद्धवी करो स क-पालना संपनान हथा अल्बन अगि न रच पालना, व हुन आरबी जानकी, जनमें राजी प्रत्यकी इत्युद्धिन अन्य प्रत्यका जन विचयान प्रयास जानों बालक में हभी भागाने पुढ़ियन मार्गन नाम जान भाग गामनी राजा क्य जिनसभी म हाव तो दुव दुन्द्रियोगय आधी यह पर बहि अने रचान युमनादा साली हुए आज हो पुरिवर्ग लागभी अंप्यूज गण अने भनकती राष्ट्रिय जिस्हासर राज्य को कार हर्न-हरावय अच्छे यह बरेंगु अने माध मार्थ यह प्रायक ने प्रायक के पितान-नारशिकाल मनावनस्वाचारः । मोद्रायना कारमात्रोति नदिक्योः कार्य वर्द । जारी (14 इन्द्रियां बाह्य करवाना पुरुषान्यसभी सवस करून के तन्त्र विना कार सामें किन्न बना कही। प्रवासकार प्रकार साधानका अर्थ साधानको साधानक का प्रापक, सरमाहर एक क्यां पुरुवयवा सवस रावध न्याट लहान काछ 'इसम: लाहर्ग केवे पृति श्रानिक: बरायाम: । बहुत यह वर्तन्त देवे तह महायहतू, दश काव्यविक श्राटमा क्य पुरुवनीत प्रकारक करी है। कावानारमां कीर अन इन्द्रियो रहत नेत्री दीव वित्रव्य होताची सात्रव हेंपून के करना भार न करी प्रवत्न क्षत्र इंट्रिकार्ड कर हेंप्सची करन ब्राह्म जीवनी आया कम् करना समर्थ मनी मारे करना प्रश्यक्त कर नहीं बर्धा रहत क्षेत्र पानेश्वर भारत्व के हा एक द्विता क्षत्रकाथ दिवायन जा वर्ष श्राक्षताय स्थ्य प्रक १३ कन एक एक उक्त प्रकार नाम के 'जान स प्रक् क्रमान के उपाय के तेन मानवान बान को तो केरती क्रमानन अर्थ माध्य के र मर्न पुरस्तवसम्पर्धा सध्यममा आदन गाउँ पुरस्तवस है तह सन्यानन सभ वर्ष माध्यक्ती की है माध्य हैं। 'बार देन परमपर इन्छ रे मन कोइक देशके 

विष पुरस्कारन राज्यपु एक हिन्द नाटार बहुन बनापु नहिं 'बायानगरमां जीव राजा से दोवल शंक बहुन बम हैं। 'न के प्रवाद अस्टियों ने अंत करण ने पर्ने बीताना हृदयमां वन कहा उपाय करतां 'नम और युव जो राजनार्ज जाल्या विना कायानगरमा हुक्य करना क्राप ने समायी सम क्राप नहिं 'जेनी कीरे नेतमहरू के नजीब बेर यह एवं निश्चय गामता' 'तम एती बगरान महाये करे के-'बार्क संक्रमविक्रम्यने वट है। अने महागु है है बार्ट करें धावास है जा बार्कान बराकन करी सहाय करते कह होते कर रहते हैं। स्वांत आ करन स्वक नार्थ भर करवर भर करा है। 'सीटा बहाइन बडी हरी, पूछे हरी अनियम ! की यो निजयन जगमी, महादर्श मन ६ए निजयन ६६ महि अपरात, बीट जने वनकार । राष्ट्रती भी केन कर, अने केन की राष्ट्रमधार () नामंदारा प्रमापक्षे, मर जो नपटो कात । जनर बीज उपाय घे, रह न करिय मात्र , मेन महार महायथी. हरिकृषा क्य होत्। क्यु उद्ध्य करका। यह व भाष्य याव ॥' 'नगरवाही नग्य चिन, गरे न समर्थ राज । कुलने विराजी आप नम मानी वचन महाराज । सूच होचे मह अरंगन, अरंग कर कह आचा । योह नहि होच कापने, गई व सपा-नुष्य ॥' 'जिल्लाम बेट्री राजपर, जयज्ञप होर अपकार । एक असन विना अवनि, होता है स्म देशन । होता प्रकाश रक्षमां मिट नदि लेपालक ॥ अजी है क्षेप वरकानन, त नजी यह वनसंग । भानी नहि जिल वनसी, की इच्छी सुख वस्त ।। 'बीन न कन कमामां, तिरने महत्त महत्त्व । गृत्यान्य मी गान्यि है, लवपर मीचे मारित । मी गुरु महातानद दी, यह तुर बच दूर । यह अचार व बाह्यती, महज्ञानद प्रश्न सीय ॥ दाय होनी हथा वर्ता, प्रतिया यन जीराण, बरन मुनी के तेर नची, अबर दीड़ी जिस्सान । मानी मुख्य प्राथमी, जिस्सन बेने नाम । करो नको मस्त्रमा, न कर्या तुल इसम ॥ नीति पटावी नवमी, प्रतिति हरी उभाष । प्रकृतका प्रतासकी, मननु कादणु भूट । महत्रानदकी सहायंथी, निते कर्या नियाद ॥' रन्यार मा धन दिन्दी बागाना से स ना नर नेप्स से सन रायोधी वह अने वर्तम्योपी अने हरवास्य माह सदारती का वाय संच दे दे करे सा बादन बासमां संपूर्व कर्यों हे.

मुख्याहरू अर्थ कोरन दुसन दिव बन्दा पन लगुन कोरने दिव बनो नवी
मूखनेन सम्बन्धन मुख्यीज असल बन्दा अने समुख्यी सरस्य बनके ज्ञानमां
कृतकार का पुत्र है अने सन्दर्भ कावना समुख्यी अरह दूस सराईन करना
'गुष्पा: कृताब्वान' 'गुष्पा: कृतेन्त्र दूसम्' 'गुष्पानीम्बन्धानि' 'गुष्पानीमित्रा'
'गुष्पा: पृत्राब्वान' 'गुष्पा: कृतेन्त्र दूसम्' 'गुष्पानीमित्राच्यानि' 'गुष्पानीमित्रा'
'गुष्पा: 'गुष्पान स्मूहणीक' स्वार्' 'गुष्पान कियनी वक' 'निगुष्पः केन कृत्यने ''
'दीरुशीनद्वाहरून चेनुः कृत्यन क्रमीचकृत्यने ' स्वारा प्रत्य सर्व वस्तुआको सुनाह्यन
कृत्यन क्रमीचनामान क्रमीचकृत्यने ' स्वारा प्रत्य सर्व वस्तुआको सुनाह्यन

विकार के मुक्त रक्षाच्या रहमान्त्र के एक के एक के एक के एक पि जारावास्त्र । अन्यान और कह करत गुन्न है नेमरे शुक्तालुक विकायिक जिल् है कह करत पुक्रवार अने वह जार मार्गा हुए हम अना कावनांच कोइन पशु आती तीचु मर्चा पण नना उत्तर मान-क्षेत्र अने बाद दर्वती अन्तर करता अन एट रहेक्ट क केर्द्रन कपू यह जी ह उसी का नेती करत आजकान कर कर करत कानत कानक कर है 'दि वा लाह काहिएनी-पूर्वाने की का नोहें, महं अन्याचराय " एति वित पूर्वनामारि मने भू का ने बणती सर्वे चरतुक्री अन्त तना सु हत्वे दिवादिय अन्त शुक्रासुध अव छै। जास हुकायुक विचार क्षां करते जान अधी, पानु कवालय सार द हो के बाद पुरा ही वेध्याना मूल साथ meinen mit auch urmen grunder men fi a nie fachn under meinen fempige मना" अने 'मा हाई यदा नम्ब गुजान् गुजीन हुने च नन्द्रमंदरी बनर्घ 'जधना अर्थ ने पाया ,यहारा ध्रवश्यान्त्रमणभदीधरावरा." भहा असी दशरानगरी का वस्त्रमा करत प्रम न महत्त्वातामा प्रकार में अब प्रमुखी के प्रकार होता के नर चायाची विक प्राथिति का यह है जो जन्मका है। अन्य प्राथमध्या जर्तर भाषज्या राज्य सामन्त्र पर भी जिन्देन असे निवन्त है। लगी हिन अनुस्य हर एवं जो अन्यान असे नयना अन्तरी केवामा प्रकार पाप ना मार्थक हा अन्या अनु आस्त्र भाग गाँउ का उसक मुख्य में ऐक्से दुर्वासी है। ए ११ करों एक में राव क्षेत्र के जातरजना करान कार्यन विभाग राज्यों केनना राज्यानी में एक बहुन पहीं हुँह तो पर पान नेजी पार परन करेंग्रे अने कर्न अवस्था के काव करी अने सहाज कराता अने काम गुण्डापन से अन्द्र गुणा सवा-राज करणा अने र मुक्तिन करणान करण करक नार अर कंपन सुम्मकुरहरू नाम अरम् छ वे मार्थेक के भारतार्थ का बस्ववेधा स्वव है 'गुण विज शाधिन्य ना गित्र, जिल्ला न जनगुष्प छेड । शृष्ट पुजार यह जनायां, गुष्प बहारत मान । अवस्थ अनी सूच रहे. नर्गद्द नेनी मन्धान ॥ स्वार्तान हे साहित अन्यानक आदर नहि, सुब मुलह ननमान । गुलबाहक भगरान, क्षेत्रिया क्या देव है, अब काक उर्द क्या देन । मुख गुणस सुन्त उपज, जनस्य द ना कनका दो न्याय दान दिनम, नो रहे न संप्रय रेखा, गुन विन मी गर्ना कहा, होए ह नाकी हरकाय । सार्टकी मोच न की अप, समझ गहेना बनवाय।' 'एका गुन भागी नहि, जान विक्रय गाउँ। वर पर गई राजारमें, पेट मरनक कात । रीजवन्य दरवार मुती, में भायों है वरणात्र । भाषा उद्घारन भाषात्र, जाय गरियन्तिकत्र । पायरकानदक् राज्यम्, बर्दिक नियम क्रमान अवस्थित भग पत्र हि से भागाना उ

इतिविध्यत्रण मोधनो भरे समा सर दो पराव धरपानना एक नाम परिशेषु व्यव बीनना'र हो केस त्रेस स्वापन्दि बरना घरदा रक्ष स यह सावत्र क्षान वेराव्य क्षत्रे भूष्य बनोज क्षावहें केस अनुसा सावसन बोजीय कारीय पुरंग दृष्टि कन स्वाप्त المائية أحائما أبرائي أبيانية المهارية - "بيا - " والمهارية واليال البرائدة بيان المراد اليائية بيان البراي طيري

निर्मात वक स्थान कर्म जाया रम भावत ने वह हं क- 'हुजाच्युक्त' हूं अवस्थित वृद्धा मिन्दिर्म दिस्त विद्या है स्थान के 'अधित्य विद्या है सिन्दिर्म के 'अधित्य विद्या है सिन्दिर्म के 'अधित्य के 'अधित्य के 'अधित प्राप्त के सिन्दिर्म अनुसा । हिस्स्त्या वित्र वह निर्म्दिर्म के सिन्दिर्म अनुसा । हिस्स्त्या वित्र वह निर्म्दिर्म के सिन्दिर्म अनुसा । हिस्स्त्या वित्र वह निर्म्दिर्म के सिन्दिर्म के सिन्दि

कार और विकास - अमाराजने दिनवस्था समाना समानी प्रात्ना । वस्ती है भारती राज्य करवाम ओक्टोकानमां मुख्य कालार र करी है जल नमा प्राथ र मृत्य है, जर सब्दे हर्ववस्थितायां काष्ट्र बचाते । साथ-तथा वदार प्रदेश ने में स्था प्राची संदूर्ण करी है। एक्सनको मुख्य कर्य करो जेवन के अवन प्रमुख समर्थ लार्स न् कारण, रेममा रूपनाची एका हुन विवास गुली, बिजूनि-अवर्ष कारण्या कि र नजपता. पूर्वक देवती जनगरना कानी जन पाकती 'प्रश्नेत वाता प पिता खरेरे 'मन नाव बद्धि पोप्रकपर्य नक्षत्रे नदि नवेब माधव "बायक्यपराधानामानदे कि क नोप्पानिः" का क्यानीयां कता काले अधिकन समस्यादि समसर्थ (सर्थन् अपन्यान दरी बाजानमें प्राचनक प्राचेना करती. आ जर्च स्थित परी इसकी रूह अध्यो-'कामबं तुंब प्राप्ते का बोद' 'आयी हुंब बरवमें हूं नाव, हरि करी देन हरी है वय हुन्य । आध्यो हं अनाथ हुंब दरनार, मेर बन आयी बील जा मारार्ग 'कुको तंत्र बढ़ है अल्बजाधार, विश्वंशर हरि करे हुद श'र । करो केच हुद नरीओ कतान, रच्यो नहि तह मरियो रायह या नम दिना कर किये गर, कार्न्स क्रमती कारणे कार । इसी इ समयन तु इतकार, फीडाया कर हूं बोद्धार' 'स्त्रांस्टो स्वास्टो श्वास्टा स्टाम, बरुदी बरुदी दूर्व स्वास्त्र । साथ देव मानको नहि निरान, कथन बेटा केन पुदिन कार्न 'साउटरवार करी जो में सब, है नकरमां जान तो करात्या त्याच । अने करी सुरक्षा अमारो उपाय, प्रयान हते न्हें तो करायो नदाये 'बाबी यह अयतकी, मुंबी हॉर हरिजन । दीन प्रांची  हानों, उनक को तो कनकों 'मूका उत्तर क्षेत्रत सकता काला 'डान्य हेम अल्ब बारी भून सूच नहनाकी काता सकता किरत' 'दर' हुद क्षेत्रकों सामा होता, इस किम करी राजों राज होता का होई पन हुई केंग्रीजों कार, उन्हें ने कि करी क्षेत्र नियों जोगे 'राजीज राजिज हानकि हो राज, नक्ष्तीक तुंत्रों के जो नात । कर्म जेस आण जनकर्ता हुइस, इस हुकि समार्थ क्ष्रील सामां कर्मा कर्मा

मुन्याणितिर्णयः व्याद्धातः असे गाँव वृष्ण पदी वर्ष गान्य तर् वर्ष के । गान्यति अय कृत्यः तेर विकारो कृत्याच कृत्यः वर्षो वर्ष्य वर्ष्य गान्यः जिने गांध से गोर्शा विकार, ज्यू कृत्याच व वात्यः वर्षाः कर्णाः नेवादः वर्षाः जिने गांध से गोर्शा विकार, ज्यू कृत्याच व वात्यः वर्षाः कर्णाः नेवादः वर्षाः गार्षाः वर्षाः वर्षाः स्वादः अस्तर्यः वर्षाः विकायम् वर्षाः से वर्षाः वर्षाः कर्णाः स्वादः गार्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः से वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षाः वर्षः वर्षः वर्षाः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर

अस प्रमाण प्रमुख जानवन्त्रों प्रमाण के नक्षण केलय स्थान स्थान स्थान सामन्त्री स्थ केल'बाड़े प्रमुख प्रचार प्रमाण र, कांगी केला महत्वे स्थानकार । केली हुई हुडी इसकी सामर, मान्यु स्थानाम प्रमुख सम्पाण हुई हुई हुई हुन स्थानका, बेंद्द उद्वर्शिया वर्षह ग्रह, '

सन वर्ष कर वास्त्रकारी करवान हा तम इस्तानी पण करवान हा न ता है। पर्कीद कोचनवानी हा तेन करवा है। पूर्ण्या विद्युत्तानों देह देवरे, न इस्तानी करवा करवा प्रकारण करवार करती के करवा कर्त हो करवाण सावह, दीए को सन्त्री करवा पर्की सावस्थान करवार है जा न कर्त कर्त स्वरूप्त

भवाश प्रतृत्ववावाना पराध्य वही तमाग कुलाव का भागा वर्ती ह गुणमाण हो व को वन्त्र भागावाची कम्बान वाच प्राच्या सहस्व मंत्रन केहिर, यद कात्रन मुचारी केहिर नंद के वन्द्र भवन ज्या या गणना कुरमावाची काव नवी वन गुण्डी में व के दें। व वन्त्र को भनुः क्रम्या क्रम्यापकृत्यन न जिन्हा नाग्द्र सन्ताम्

वर्ष अवस्त्राती अन्य समाना (चारत कारो पान वर्ष), कार है। बनुष्य पश्च पश्चीमां अरूप जन्म अपन्तः पानवः, त्यान वया भागा अरूप स्तर्भ कारोप्तां अ कोई अपन्त वर्ष्य पानुको वर्षभावकात क वर्षभावकात भागा कृत पर कार वीत कार्यभावका प्राथ प्र पश्चीनुष्यः पाने साथे पार्वभावकातः। सिर्मा कृत्यनिकाम पानित् वर्षभावे पर्दे 'क्यारत असम भरावर लेहरे, प्रश्न प्रकट मध्ये वर वेहर' 'आन समकृष्णाहि अवनारत, वेशी पह बचा अवचारत,'

पत्रक्ष प्रमुख्या परि तेना स्वद्यां हु हु हु बोहा नी मारी प्रधान वर्तन् । अने मारी व होय ने न वानुं भा पान मुस्य कुशनी है 'मेन्द्री स्पर्य निजयनमुं, रहे हिरी आजा अनुसार', यक्टना सकता सन हाय नवाप पत्रना होता होता हो नेनाची एन व स्वामनी आजा नवी मार नेवानी सम्बाम हर्गा दुससा आजानक हम्याणनु स्वयं अने ननी प्राचिना पुष्य हथायों वश्यां हो सारे वसाने नाम है जर अने सम्बाधना नेम व यवनाम्त्रमा वर्षायों हो जाना १८ निर्वत है

अवनागर्विनाभणि—संविध अवनागे वृद्धिक दिवाम जनम् वितित करते आक्तार क्ष्मी वर्षाय नाम छ आ छोटा मनमा है। क्षेत्र वा से एक वह योग इसे एक वह संविध के के कर एक एक स्वतान तेमना कार्यस्थ वर्ष्य वर्णन छे आमां क्यों एक संवेत है के कर भागमे अनमा यान्यों अवदार की जो सर्वम लग्ने करी कर छ तेन जो कतो संकेत कर कर अवदार के विधारमां एक व्यक्ति अवतायी कर्य है 'आदी मध्ये जेने अवनाग्, वर्षा अगमित बाझे जपार। यह सर्वना कारण जेट, तेनो स्वामी महजार्बद छहां.

चित्रचित्रामणि—भाष्यमा भगनाभग्यामा तृषद चरवदमयमा हिला सीव चित्रोतु रिक्ष्य द्वारामे चित्रमध्यम् भवे सर्वती यति चर्चती है. भाषय हिली भाषामा से १६ चोरायो हे सदय यहते पाने है

पुष्पणिमामिता—भा भवता को। भगविष्टी भी की विशेष दुःखने वर्षपन करनारी पुष्पी को ते 'नगरान मार त्यां क्यारनो आ सर्व नेवार राजेनां हर पुष्पी अर्थण कर' व्या अन्यना भाष्ट्रकृषी पुष्पेनु चिनन कोन्दु क्यायंत्रनो हर पाणाद्योनी भा स्थु संग के. जा पन दिस्टी अस्थानं से आ अथार एक एका है ने स्वय द्वार दर्शाक्ती है.

स्वासाक्त्रमाण्यां—गुभागुन सम्मां विश्व कानावी सुधानुन कल कावते नारे तेने मानवानी मध्य जामान नेवारि वार सम्भु तेना गुन्यांन कल्याचे वर्षन वा बंबतां १ व वोरावी वर्षुत सेवटे अध्याप क्यावते के 'हम निस्नद्रन विश्वकारे, वक्ट वीमहजानेद्र। स्व सक्त्रमें स्व सम्बंद, सदा होत आनद्र,' का वंब १८८३ वा वश शृद्धि व वीते सक्ताते अने दिन्दीभाषामां से

विश्वापत्री भाषा आ मन्त्र भवेषात्र भवेषात्र सने श्रीवरितावर अने सनोत्तर आ सन जमार समारस्वतरमां कृतेशा प्राप्तियोगे द्वार करी आर्थानक स्वतार्थको पटोचादया सारे वस्य इंग्यन्ट्र बीर्याय कर्यो से वर्षात्र क्षान्त्र क्षान्त्र के क्ष्य समुन्यत् सनेवां मारमानमना । वशीयं निर्मानमा, अने वर्ष क्षान्त्र ने निर्मान क्षतिः त्र वार्याणानु अवस्य भूकि सीर्व स्वतरशोपके है कि किस पत्र विषय स्वयं सेन् वार्या के साथ प्रस्त मा बीर्वरनी वीक्षी सूर्विक स्वृति पत्र विकास जेनु पत्र अवस प्रतिदेश कार्यान करात आता २१० कार्यों के आ सेन् ही होने वाली सो विकास के निवास के निवास के महा कार्या के बहुत अवसा के वार्या अने कुन विकास के के मुख्य के वार्या के अवसा कार्या के कार्या के स्वास के कार्या के साथ अने कुन विकास के के मुख्य के वार्या के अवसा कार्या के कार्या के साथ के मुख्य के वार्या के कार्या के साथ के साथ के साथ कार्य के साथ के साथ के साथ कार्य के साथ के साथ के साथ के साथ कार्य के साथ के साथ के साथ कार्य के साथ क

मृति तेमनी वर्तावान विशेषणमाँ १६० भी १९४ मुधी ग्रामना विशेषणमाँ, १९५ थी १९८ मुधी ग्रामना विशेषणमाँ, १९५ थी १०५ गुधी मधना मीवीना विशेषणमाँ, १९४ वी ११८ मुधी वर्षणा विशेषणमाँ, ११४ वी ११८ मुधी वर्षणामाँ, ११४ वी ११८ मुधी नामणांना विशेषणमाँ, ११४ वी १४६ मुधी नामणांना विशेषणां माणांना विशेषणां माणांना विशेषणां माणांना विशेषणां माणांना विशेषणां माणांना वर्षणां विशेषणां माणांना वर्षणांना वर्षणांन अलेप् किसन वांत्रभाने पनि अस्ताना बाटे हो भावनानी अस्त परते की केने कृद्द वैराज्य है के केती शुकरेण अवस्था प्रकार मेशिया अर्थर्टर विक्ते मोराओप अन्यास कथेते हे हर पारती (पुण्डी) भोडावती आनेवा विना प्रान को व नहि बाटे वित सामाननी स्तर्थ जीन सरोप समहिष्ट समा गया भक्ति कान विवेक वर्ष विशेष क्य मुनान कानेना आवर्त कार वह क्रोमहे विवादमा हेय बनियाने भाग सम्बद्ध परंगदी होबाहदायां आयु हे तेन समेश्वित्रम् वित्राने भानरक्षण अवट अवत अववट, देश अने निवस्त्रणी लगार, हृत्यमा औटरिक्रण करती, सब इस विवेद-दिक्रण साब्द स्टंब-मे हुछ, बायमा नियम्बर क्य मोरी, वाचे जिल्लाका भीत, अस्तव परमण क्यां पुछो, वेरापक्ष चारती विका योगवी मुक्तीलिंग करवी जा क्लेजा विकास बार वर्डमानस्यी चार الإسكام المطابع المطابع المكاملة والمطابع المكاملة على المكاملة والمكاملة والمكاملة والمطابع المكاملة والمكاملة وا भागिता काल देशका अन्न भागिता अध्यक्ष काल कार्य लोकाहित्य वह उन्न कार्य कार्य करना का बहुन करावना है वह नेन कार्य अने आवक्षी भाग अर्थना अर्यना अर्थना अर्यना अर्थना अर्या अर्थना अर्थना अर्थना अर्थना अर्थना अर्थना अर्या अर्या अर्थना अर्या अर्थना अर्थना अर्या अर्थना अर्या अर्या अर्या अर्या अर्या अर

वृति है। विश्व क्षेत्र कराव व्यव प्रवाद पूर्व विविध सार्थ कोईनेर कोती कार्यायय-स्वाद है सेन सा दिन्दरीन करावन सा वर्ध की वास की है। सेनी संक्ष करावन सामने कृति के के सा संवदावन सर्वकी किसावनमं कर्य है। सेनी संक्ष करावन के हवार सेटनी है। या संवदावन सर्वकी क्ष्मुवाविद्योंने स्वयोगी सान्याध्यक्ष व्यक्ति केटने साविध समूदिन कर्युंग केटने की मा कोइन सबी मादिस पर साम साने सर्वतावाय है। सन्दार नेयन साहित्यम समय क्ष्मे सर्वय सर्वया कार्याय समया साहित्यमं स्वावीय सामग्रीमां साहदय बीडिन्न के हैं वार्य प्रवे सने सर्वाय समया साहित्यमं है। स्वी कि स्वावीय या संवदायमां कार्यायमा साहित्यनो महासंबद करीन कीडि सने स्वावीय सन्दार कर्या क्ष्मा कराव कर्या है।

 वार बन्यानी हिरोज्य के तथा विश्वति ने भागु तम न्यून सामय तो कर्ना हरी तथा वीति हिरोज्ये हुन्या हरा भने हैं विस्तान में तो इसद पत्र पति है पति है। अ बादन की स्थानिक में तो या बहिंद मने इस्तानी हिरोज्ये, माने प्रोनित में तर बहें हों। इस बार में भीय अनुप, बीपा जेते हैं जादिन अप। वांच प्रिस्ता शीने निराम, बाधिन बेहुं हों विपास। बाजू बनकता वनहिमां लेके, वह पून ने हार ने बेहें। करों रच्यों बदी पृतियान, एवं हिरोज्य में हा महाराजा। पत्री पर्यो पृत्यह मुजाले, सीने वर्षने वर्षने पत्री प्राप्त पत्री वर्षने वर्ष

प्रवर समाज स्वाधीय आध्यमुजर्गन, किन्दर्गन असे जारत सिक्ष पर वर्गानर्गननी सरकारमां मोटी महत्ता मेमनी सं अने सत्मक्षमां व वच मोटी सर्वत साधीव परवार क्यों है विश्वत दोशानुं जीवन सन्दू, साहितक, सामायद अरे इ कन वर, महन, वैसान विमेर सुमूखकाई जिलेकन कोन्द्र होवाची है समयभी देवनी क्याने इनाव जोड़े: वतीन बची दंश कानु देशक कार्योंनी दिवार कार्य नेवता श्रेक्ष कि भेदम कार्यों की अल धान्येत्र कर्या इते एव करीर देशां सेशाल महितावर्गकरे व्यवसाय नथी साधुराना मुलोमांती कार अवशेष रमु वर्दि स्रोक्टरवरणमां एक विश्वमण विवश्वमण इनी वेची क्षीति हैसने क्यापि कार्यमं देश्या हता। हैसने प्राध्यार व्य अञ्चलकार वाकी नेमा क्य कोई करूक आवशा रीचूं अभी वरमईम्म्हा वडी मामवर्थन वंदी यन दीवर्वात कर्यों करना इना संक १९०२ जो छंडो अब बन्धिनिय करी हती उस प्रसान दोन कुरकारण वर्ते कते गीबीने एक कुरावे करीने संच १९७४ मां वीचरध्या रहीन आकृतिनक्षम सीची इती स्थानीय का मूर्ति उत्तर ८२ वर्ष देव सकते देने योग जीत वर्णवास्त्र, काल अने कुछ होता सन्ते अति देशसी अने मीम्बम्'तं इस जाना मुन्ततः कराजनी भूषिकर करी सामी से कातु कहानों कामोनी मोटी भागान नात सर्वायकणी कारी गया थे, जेबी कामी कवारी गयी एमनी नशन उपसार सारणमां नदा रामनी र आपणे सास करंक्य है.

> अनवानुकृत्वा इविश्वकरीयो कन्नेक्सातास्य विरक्तम्ति । तञ्जकितिअवतियोधस्ये ते विष्कृत्वाकस्यवे सर्वाधि ॥ १ ॥

> > बाध्वी इरिजीवनदाम-बदनास.

## बीकानिकरायमी विश्वयदेखाय ।

वृत्ती हेवर क्षणी करू जो अन्तर राज्य विदेश क्षणान् हुए । पृथ्व वर्ष करणाः पृष्ट या अन्तर राज्य विदेश करणा ।

## निवेदनम्—

to there are not to be a fire to be a second by the second and the second क्षाने के क्षानी करता करें के राज का प्रत्या के पर्व है है । यह का हुने केवल प्रत्या करता है के का अन्या करें को प्रकारकार निर्माह स्थित निर्मा संभागी हुन्या पान्ने स्थीती हैना प्रहार करते. क्षत्री प्रथम क्ष्मणार्थे क्षेत्रमण्डले अन्तर्भक काली क्ष्मणाल क्षमण्डले समार्थित काली क्ष क्षेत्र क्ष्म है। जो क्षेत्र प्रथम क्षेत्रमं इराइए है। क्षेत्र केंद्र मिन्न स्वयं क्ष्मका क्ष्मका क्ष tion of all last on any any quantities toyone grains agin in the and the cost for or from the organization and that or treated it break price. à à pelacite à priv à deplier à appeir à diff afant sà se plus क्षती करेंचू केवानी वेदानांतानी ब्यायानी प्रतासानी करें औरपार्थीय काव्यक्रीय कार्याक के . केवले एक his are more makes makes are no tax all the pass age note that it para agric forth primer to the and along grow therefor affiliations to a prophenic हरूके कर्ष क्षेत्रीयों एकर्ग वर्ष्य क्षेत्रीय क्षेत्रक क्षेत्रकों एकर्गक पूर्वादी के तेती. क्षत्रपुत्र dies with the world style more with oil yestforten weter and wit arriver क्ष्मीन्त्र करवान्त्रे क्षत्र बन्द क्षत्र क्षत्र काला केला कावकर्त क्षत्रेल बन्दि वर्त कावकर्त हुन् क्षात्रिक्त कर प्रकारों के ता ने वास्त्राचन क्षात्रिक स्वापना है हरते विदेश विदेशकों क्षा pali duli, alternaturari Standar Berrill B., ar beta Ball districari acquellichese product it do not tell aprovement things it supply applying the first tell and हुत किराई क्या क्या कर्ष कर्ष क्रिकेटकार्य है। स्थानीय १०६० मी १९०३ हुनीया हुना हुन् the first and the said in the said transfer that the gas gas gray they extend the है कुछन कर देनों के के में अपने के अपने के पूर्व है है जान है है जान है कि जान है कि का है कार करने गन्त राज्यन का जान कर के प्राप्त के दिल देख के के उसे का का अपन केवरे हिर्देश स्वृतिक कर्न क्रमान संबद्ध करि प्रकारक क्रमीक प्रमाणकार्यक क्र समय factories with dealers desp. That was springeries and party spring day is they families and बर्ग करों करों क्षेत्र है है न कामना कर्त करें करों। बल्लीओं नहरू करों। केश हैदसाई म 👔 कामाने क्षेत्रप्रदेशमान्त्र क्षेत्रक त्याक्रमी मानेक दत्तर तेत्रने क कृत्य अन्तरना रोजन्त हुन्त कोरती व्यवस्थान हरता रचका वर्षा 'प्रयक्त पुष्टित कोर्या वर्षा वर्षा वर्षा हो स्वयं क्षेत्रों केव्यों क्षेत्र करानी केरे पुत्र वर्गा अगूर तक विभावकर विरोधनकी प्रोधकन्त्र करा कर् Object and the by the sale and the sale by the sale party and है कर बहें। देव के प्रकार करने प्रकार के अपना के अपने के किए हैं का कार्य कर है है है है है कि अपने कर है क्रुपेन्द्री कर कुनक प्रकार्य के अपनिवेद सम्बद्ध के अपने क्रुप्त के प्रकार करते एक क्रिप्त पर करते है प्रवास हिर्देश करको हरकारको अस्तित काल होगा और संबंध होनाची कोनावरको साथै हेना arrest all mater and on our flow and dell at any ments until specif & indown meligio Afrikatelli, m. f. interest, m. p. neap. field and p.

तर प्रथम विकास कृतनी कार्यक्तनकातानी का श्रीवाकातान हता। कि प्रकारमध्यम् एकाओस्पर रूप को दें कार्यको को का जार है रुपने

and a tolerate and the test of the test and the test and the test of the solutions and the test of the होएडिहोनची अञ्चिद्ध रहीगड्ड होय अच्या अन्यथा कोइ धहगह शयुं होय हो मुझकाने सुवारी वांची हेराती दिनति है. जाहुं सर्वोद्या सर्वोदयोगी का काव्य जानी तेना साव्यालां स्त्रीयन अंदर्शकोच कर्या दिना सुप्रतिद् तिर्णयसागर प्रेसमां सारा कामछी उपर मुक्तोमित स्वीन टाइपीधी अने तेमा संवक्तीनी रंगित छन्दि तथा प्रथमी मुख्यप्रतिपाच अनिहरिनी श्राणीय इंदित समिनी निवेश करावयी है, अने तेलुं स्मर्णाय विकाकर्षक बॉयसींग काम कराव्युं है था। क्षर्य हो। ओबा उपरची मासम प्रदर्श एटले विशेष विवेषमनी कार नवी

निरेश्क—**हरिजीयनदास** शास्त्री.

## प्रंथोनां नाम तथा पत्रसंख्या-

*					
संद					पृत्रसमूर्यः
१ पुरुषोत्तमप्रकार	ī.	4400	+***	****	90-9
२ लेहगीता.	4000		(141	****	201-608
३ वजनविधिः	84.74		рш	pjes	१०५-१३६
४ सारसिद्धिः	0416	****	II M		650-600
५ मक्तिनिषि-	rett	ante	++19	4444	808-505
६ इरिम्रळगीताः	4161		1477	4155	3-3-634
७ ह्दयप्रकाशः	4000	-	<b>#FIR</b>	40.00	650-548
८ चीरजाख्यानः	pper		par	6441	२५५-१९८
९ हरिस्यृतिः	****	arti	1361	****	566-558
१० चोसठपदीः	ны	4544	6175	end	३२५-३४०
११ मनगंजन	HNI	****	4449	****	\$86 <del>-\$</del> 86
१२ गुणब्राहरू	117-	****	1457	****	३५०-३५५
१३ हरिविचरण-	+1+1	1441	1781	4414	₹46-300
१४ वरजीविनयः	1411	+44=		eeste	वेक्ट-वेटप
१५ कल्यागनिर्णय	Te gree	4++=	*1**	MILE	\$24-815
१६ अवतार्राधेवा	मणि-	4444		1489	850-855
१७ चिह्नचितामा		6144	6141	FIRE	844-868
१८ दुष्पचितामप्	Ţ.	[444	4447	pett	854-860
१९ रुप्रश्चनावर	Test.	ын	8144	****	\$56-645 800-068
२० चमदंहरू	4614	4414	IPM	1444	४२९–४९१ ४९२⊶५०१
4.4 41.11.11.1	***	1481	+100	****	402-480
२२ जिल्लावती ४	त्या.	104	pendi	**	404.41.9



श्रीसारिक्षरायमो विज्ञपहेतराम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत—

काञ्चसङ्घहे

## पुरुपोत्तमप्रकाशः।

नेश-अक्तिपर्ध सन अहिरि, सहजानंद सुकरूप । दिनप सहित बंदन करं, पायम परमा अनुष ॥१॥ चिनवि चरण मच्चवंद छटा, लखि वर जमिन शनाय। वंदूं विम विनाशकर, प्रण विपन अजवार ॥२॥ श्वामिकारायण सुन्वद, प्रगट विदित जन सर। जिविच ताप अज्ञानतम, किछमधा मन कर पूर ॥३॥ आपी वाणी रस भरी, विमक्त मिन अविनाया । परण पंदी आहर करे, पुरुवोत्त्रसम्बद्धाः ॥४॥ वोषाई—रचुं संब सगर गुण जुलारे, कृषा करो इरिजन सुक्तरे। आ प्रंच प्रगटपर जाणिरे, लेक्यो प्रगट महिमा वर आधिरे ॥५॥ नाम पुरुवोत्तममकावारे, पुरुवोत्तम महि-मा निवासरे । पुरवोत्तम परम व्याखरे, तेज मक्तिपर्मना बाखरे ॥६॥ ए 🕏 दिव्य सदा साकाररे, एमा महिमानी बार व बाररे। वय यो'ने जन नाणी विचाररे, एवा अगम श्रीधर्मकुपाररे ॥७॥ अने जिसम नेति नेति कहेरे, अल्प बुद्धि पार केम लहेरे। एना बर्जकमळ परतापरे, कर्द कंईक बमायनो मायरे ॥८॥ तसुं दिश-मात्र ते विचारिते, कृपा करज्यो संत सुन्यकारिते। ज्यां रे'छे सदा सुलकारिरे, बरणबुं थाम ने मृतिं संमारिरे ॥९॥ श्रीगोलोक पाद बोझाररे, अक्षरभाव के बृरिनुं साररे। कोटि रवि कवि लिकन अनेकरे, तेमचा तेजिय अति निरमकरे ॥१०॥ ए छे परम दिव्य अतिश्वेतरे, सचिदानंद रूपनिकेतरे। जेने प्रसपुर कडे असूत था-मरे, परमपत् आहि अनंत नामरे ॥११॥ जेने के छ लग विदाका-

さいかい しゅうしゅう しゅうしゅう しゅうしゅう しゅうしゅう しゅうしゅう しゅうしゅう しゅうしゅう しゅうしゅう

क्षेत्रा क्रक्टर कामाण गुण विकृतियुं साथ गर्गी १ विकसी ६ वर्गी: ७ स्थान

सकार: दे

बारे, एमां सद्याय भीतरियो बासरे। ए श्रीकृष्णतुं अक्षरपामरे, बरम पावन पुरुष कामरे । १२॥ एमा सदाय अहिरि बिराजेरे. निरन्ति कोटि काम सबि लाजेरे। ए छे पुरुषेत्वम अधिरापरे, बासुन्य नारायण के बायरे ॥१३॥ परमारमा परम्य नामरे, ज्ञा हैबार परमेश्वर इयामरे । कहे विष्णु वैद्वेडपति व्यामिरे, ए छ बन जेन नामना नामिरे ॥१४। ए के अक्षरपर जविनाकरे, सर्वेदनी त्रियंना निवासरे । कारणकारण कळा विकासरे, अनरजामि नि-र्गुण सर्वप्रकादारे ॥१५॥ ए छ व्यतंत्र सर्वाचाररे, एवा अस्तिय-र्मना कुमाररे। अनन कोटि नुन्त ब्रह्मकपरे, तेमने प्रपान्या योग्य अनुपरे ॥१६॥ अनेन कोटि ब्रह्मांडवी जेंडरे, क्यांन स्थिति स्थ कड़िए तेहरे। एवी लीळा जेबी अति साररे, एवा वर्मकुवर किर-शारहे ॥१ आ माया पृत्रच कुनांन अनाहिरे, प्रधानपुरुच महत्त्व आविरे । ए आदि अनन वाकिषाररे, एना बाक वर्ग क्रमाररे ॥१८॥ अनन कोटि ब्रक्सांच्या जेवरे, लामी राजाधिराज छ लेवरे । सदा किशोर मूर्नि शोभा पामरे, परम पायब पूरण कावरे ॥१९॥ देखि कोटि रनिपेनि लातेरे, मेच नबीन इयाम छनी छातेरे। अक्तबन्सन सहा अय हारिरे, एवा वर्मक्रंबर शक्कारिरे ॥२०॥ ाति श्रीसङ्क्षानम्भूव्यामिष्यणस्यसंसद्धानकाम्भूविषर्विते पुरुषेणसम्बद्धान बारको अथमः जकरर। ।(१।)

१ वक्ताम १ व महर, १ इकाइनी व्यक्ति पूर्व आवा नेपवाला. व मेन

आसूर रचा मोर्टर, इतिसंदिया अतिक्रते जोईरेशणम रमाने श्रमिनं जनंकारो, पर्या नित्र इच्छाए अपान्ते । अः रस अलंकार ने विज्ञायरे, इतिनुं स्मणीय अप लदायरे। दिश्य जमायिक जन्नि-रामरे, इतिमें कर मदा छविषामरे ॥८॥ वरे प्रदेश ग्यारे किरणा-हरे, को वा वामे हम ने धर्मकारहे। क्या मूचन वाहन जेहरे, करे प्रकृष शामि नारे नेवरे ॥ माना पुरुषकाम मोरासी, करे अन्त-नाचे लंगीकाररे। स्वया अलंकार देशकि रीयरे, अल्प्लाच ज-नाये गीनरे ॥१०॥ दोटि कामननि छवि छात्रेरे, वृदिनुं वसर्व तरा जोड़ लाजरे। इतियां दिच्य शमाने आहि, लाज नहिन चामी-कर दोदि ॥११॥ इरियां अमृत्य आयुष्य जोईरे, १वा सुर वर भूमि सब मोहरे। परण कुंदस सफराकाररे, सहारेजनको संचा-हरे । १२॥ जिस्ति मात्र बाल्या बास्मवारो, बन्या हवि वाशि लग-न मोजाररे । शोधानागर गोजाना पामरे, अकरण्यास दीवर्षप् नामरे ॥१३॥ रममप गुर्गाकर मे्चरे, महामुख्य करे जेनी सेवरे । सर्वे सुव्यवस सृतिवे आणिरे, सदामुक्त वारे पर जाकिरे ॥१४॥ जोई करण्टा गुलरारि, रमा राषा बरे संबदाति । निज चंबम-ना रमा प्यारीरे, सेव क्यर पहुंचे सुकुमारीरे ॥१६। शुं मूं वर्णवृं रमना एकरे, अन्य बुद्धि विचार विवदरे । शहकार्यस्य वार वहि वाचरे, शक जारद जिल्हा जिल्ला गावरे ॥१६॥ एवा कृष्ण समझ इस देवारे, शुन्त प्रभूत प्रकोहत वेवारे । अप योजन मोजन विकास करे, कुनाबिध क्रीकृष्ण कृताकरे ॥ आ वाले सुंदर नजननि वा-लरे, लाजे जिल्लाने राज बराखेरे। यह शरका जाहने अनरे, पाये आर्नेष क्यिर धाप पनरे ॥१८॥ एक दिव्य विधेव दीनानाचरे, भेटे भूजा सुनिने भरि पाधरे। सदा बसब वेपन प्रतिपासरे, करे वरित्र ने दीन इयाजरे ॥१९॥ वा'नो अध्ययशसना वार्धारे, असं-कप मुक्तनका एक नामीरे । सन्। स्वतन स्वताद विसाति , सर्थी-परि श्रीप्रति छ। तेते । इका इकि श्रीनात्रात-दृश्याधिवाणव्यानाव्यवस्थितुः शानम्बन्धानिक पुरतानसभक्ताना वे दिनीक प्रकृतः ॥३ ।

शेश-कोर्ना शाम सुन्य सदर्व, तमा तमन चनद्रशाम । केंब्रे-

क्षणान् । भारतः १ मृत्यः १ मृत्यः स्थापः । नाम्यः । नाम्यः

वेंद्रचे विद्योग्यन, परमपुष्टच अभिनाम ॥१॥ राजन मध्यस दिन्छ अनि, किरीर मुनर कारीय । अनि चनुगरप गुनर हे, का जा स-रक्ष वर्ताय ॥२॥ जामा रक्ष वेषूचे अस्ति, कीरतून स्पादिक पीन । इप्रतीय सरक्रमधनि, सांग्राम क्या अमाणिन ६३॥ गणमानि स्थ कीपसूच, पक्षा विशेषा लाम । वर पोम्बर मानिक बच्च, कंचन क्र-जिल प्रयान प्रशा कंक्न - एकि क्यांका कुमरजी कोहि, रक्का सुका-लको बन लंदीरे । एको मुगर गयों से आवरे, दका को बंसे सुक्तीना वाधेरे ॥५॥ कर्षे केमर विशव भागरे, वच्ये क्रेड्रम बहुक नामरे । को ने अधर अक्न अवाम है, कुम मर्थ नी दिवक कि मानहे ॥६॥ कारत बानुनचु ते कथकरे, पान पूजिन अवण जयबरे । तेनी गांवकि स-रचा प्रांतिनरे, अभियामां ओचन चंदरे विकरे 8:30 वेथे वर्षे अबून अविवासारे, को कम विका निजदासरे। मिर्गाय केला नुम व शायरे, नेवने कान रनक एक जायरे १८॥ शहे ने नवर्ष की-श्यून धनिरे, शोका सरम जोवा केवि वशिरे। वह सरम सुर्गायमा-बर, एवं शिवक चर्च धुमवायरे ॥९॥ नेवं चरच्यांचे सर्व जंगरे, जिल्ला लाजे कोटि अवगेरे । पवि योग्याने पत्ना प्रचानरे, पुर-बोक्स पूरण कामरे ॥१०॥ कालोनु सूला कविशावरे, बांच्या बाह्य शो वे सुक्कामरे । वश्य मंत्र अधिन बाह्य राजेरे, जीव बोटि रवि काशित लाजेरे ॥११॥ कर वीचि कामक कवा को करे, केंद्र बीडि कोड़ क्या सो नेरे । पर पनरी मोनियी काकारे, को ने राशीय वेक क्यांबारे ॥१६॥ जोइ कोचा अंगोअंगनवीरे, थयो वृश्वित हतियो वर्णारे। ब्राइकेर बामनी राच बेलीरे, जाई ग्रई वे चंपा चंथेलीरे ॥१३। कंदे बनकी बहुता ने मुनरे, पांच पारिमान प्रमुत्तरे। नव कर्ज के.सर संचितिरे, बुलविश युलवाबदी जितिरे ॥१४॥ एवा पुरुष शुराणि साररे, राजनां व आणे चार वे पाररे। एवा भूषण राजि अति आहिरे, पुत्रे राधा रमा सुकूमारीरे ॥१६॥ पवि क्रोबाने करना इयाकरे, बार ने कलातका अनिवासर । वहि कर वर वेचु सुराहीरे, वरि कापर मधूर स्वरकारीरे ॥ १६ ॥ करे मधूरे मधूरे स्वर मानरे, शक्ति अवन एका बुनिस्पानरे । सत स्वर सरम पन प्राथरे.

a ment a mental a fram and miner a ment a ment. a dent

a street.

والمراجع والمراجع والمناول والمناول والمناول والمناول

तक्ष्वीचा मुर्गना विश्वास है ॥१ आ नाम कास मान गानि जाणिते, वाबिका सुरनिता सेंद्र आणिते । आरोहि स्वतोहि लेखते, जानाहै स्वाई के छहे ॥१८॥ छो राग ने बिलका रागणिते, छनिश्वा के छे कि अणिते । नेना माम तिनु व्यर नाम ते, वस भ्रवण कव रमाल ते ॥१९॥ एम वेणुमां गांच विद्वारीते, सुन्य आपे श्रेमित्थातीते । एम गोंच शोधीना नाथते, भीदामादि सन्या छ माधते ॥२०॥ इत जीवा नाथते जीवा नायते स्वाद स्वाद छ माधते ॥२०॥ इत जीवा नायते नायते । वस नायते स्वाद स्

रेका-चक सुद्रशाम आदि जे, आयुप भूर्निमान । दिष्य देवे सेवे सदा, प्रमुपद बरम सुजान ॥१॥ जंद सुनंद श्रीदामवर, वाय-भानु शशिमान । ए आदिक असंस्थ गण, रूप गुण शीमवान ॥ मा स्थान प्रभुपन भीन करी, थार्यन परम ध्वीर । राजन सदा समीपमा, बहा सुबट रजपीर ॥३॥ कोटि वंह रविसम गृति, वव मीरद तद माप । निरम्मि नाथ शो बादिशि, जार्नेत् वर म समाप ।। क्षेत्रमं-अनंग कोटि कम्याजकारी गुजरे, तेले जुक्त छे मूर्नि मकगरे। वर्ष काम ने वैरास्य आदिरे, जननिधि सिद्धि आणि-माविदे । । ए आविक ऐश्वर्ष भपारते, संग्रे प्रभुपद् करी पह प्याररे । मूर्तिमान वेद च्यारे नापरे, इस्ति परित्र कीर्ति महि-मापरे ॥६॥ बासुदेवादि व्युव अनुपरे, केशवादिक बोबीक कपरे । बाराबादिक बहु अबलाररे, ए सर्वता इरि घरनाररे ॥आ एका श्रीहरिकृष्ण भगवानरे, पुरुषोत्तम कृपानियानरे । आ जे ऐश्वर्ष मर्व के बायरे, तेजे जुक्त बका इतिरायरे ॥८॥ मुवि धर एकानिक धर्मरे, तेने प्रवर्णावयो ए छ मर्नरे। बद्धिकाखमने महिरे, धरो बार अनि बु:लहाइरे । १॥ कवि दुवामाने बारे करीरे, सुवि ध-गठ्या मनुष्य ननु धरीरे । निज वकांनिक मन्द्र जाणिरे, धन्ति पर्म उपर देन आणिरे । १०॥ विक मरीच्यादिक कापिराजरे, इरिना एकालिक अन्त्र समाजरे । अमुरगुर वृषथि आरिरे, ले-मनी रक्षा करवाने मुरारिरे ॥११॥ अस्ति धर्माद्विके द्यासरे, सुन्य आपना परम कृपालरे । निज धनल बनावे करिने, असुरगुक नृपनी मह इरिट ॥१२॥ एमनी नाक करवाने काजरे, क्रमा भागी विना है ا هن استاب است وقول

gerre 4

महाराजरे। करवा नाडा ने सर्व उपायरे, निज बुद्धि बजे मुक्तरा-यरे ॥१३॥ प्रक्रि क जिल्हाजे कार्यकाररे, पारणी अपर्य वृद्धि अपा-रहे। नेनो करवा अनियो नायारे, करवा सुविधा सर्वे निप्तवासरे ॥१४॥ निक वर्षा स्पर्धादिक करीरे, बल्लि स्वी वचनवय चंतरीरे । करवा अनेक जीवनी उद्धारते, इच्छा करि परवा जवनारदे ॥१५। जिल्लाम प्रमाहवा सारहे, देवा अव्यंत्र सुन्द बदामरे । इर धारी क्रमात्र गवि टेकरे, एका परम इयाद्ध छ एकरे ॥१६॥ करवा करणा व किसच्ये भारीरे, दीतवंपु दया दिन पारीरे। मोटो अर्थ विवासी के पहरे, करवा अभय मारी वर लंदरे ॥१३॥ एस पूर्ण पुरुषोत्तम रायरे, विधी कील शृंदायत मांगरे। अकि वर्मने आय्यु वयनरे, सन्य कीचुं ने जनजीवनरे ॥१४। कोचास देश अयोध्या प्रांतरे, वधु बगट चया करी व्यक्तिरे । धर्या जर विवद् श्वयंत्ररे, परम श-वन परमानंत्रहे । १९०॥ भी नारायण कविकपरे, वपर धर्मर ने परम अनुपरे । थया अन्तिधर्मना बाखरे, श्रीहरण अन्त प्रतिपासरे ॥६७॥ इति धामहजातम्बन्धातिकस्यवस्यानेकक्षत्रकृत्वस्यमुनिविश्विते पुरसान-नमकासमध्ये चतुर्थः प्रकारः ।।४॥

नेवा—अस्ति धर्मने भुवने, थया प्रकट पृश्य प्रमा । आप इछाए आविया, केने नेति कहे निगम । १ । सुंदर देश सरवारमां, धरैया छवीनुं थाम । नियां प्रभुति प्रगत्या, पृथ्योत्तम पृश्यकाम ॥१॥ मंत्रन जहार सावशिकामा, वैद्यहादि नवमीने दिन । ने दिन जीवन जनस्या, अन्ति भय हारि अगतन ॥१ । वर्मन चानू विशेषि संव-गार, प्रन्तायक अर्क अन्य । शूर्ह्यक पुष्य नक्षत्रे, सोमवार ने मुन्नस्य ॥४॥ गंग्यां—वृश्चिक लग्न ने कीन्य करवारे, घोग शूक्यां दृश्य वृश्यारे । इटा पहि कही राष्य जानारि, सुन्य संजमां सुन्तिनां मानारे । १ । ने सम्बे प्रगत्या प्रशासानरे, करवा अनेक जीवनां काजरे । वर्षामे विश्वेष वाजां वलाविरे, करे दर्शन विमान छ।विरे ॥३॥ सुन्यनितां गाप वधाही, अति मोद मरी सनमाहिते । मंद् सुगेष दिनस्य वायरे, वायु सुंदर जन सुन्यदायरे ॥ अ। व्यां घोषि रवाने अपनरे, भाष जयत्रय वान्य प्रवारे । करे पुष्य वृष्टि पूरं-

e frem und. a mennen a gnammt w famter,

देररे, वर्षसुगधि सुमन सुद्रस्र ६८॥ शांडव वृष घोडे जिल ताबरे, गांच गांधवं अध्यक्त गावरे । धवा विर्वृष यज्ञ हुनार्शवरे, इयां निर्मेश जननां सनदे। १॥ एव अवदे पान्या भानदरे, नेस धुमि मशन जनवृद्दे । बाद परचर महस्र वचाईरे, हरन भरी सानिमी सनमांति । १०॥ रखो भौदियो जानद छ। हो, प्रभु पथा-रिया भूमिमांहरे। करवा कोटिकोटियां कम्याकरे, याने वधार्या परम सुजागरे। ११॥ मान नान पाध्याचे आवंदरे, ओह पुत्र ने पुरुष चर्डे । सरोहर सुर्ति सरमासीरे, थाये सनमान जन भार्तीरे ॥१२॥ जेज जुरेछे जगणां अधिनेरे, नेमां अस जिला लेखे प्रतिनेरे । नुष्य स्तार्थक्षम सुष्य देवारे, ब्रोधिकर परण पाट नेजरे हैं।। अगोअग कोमा छे अनुपर, बल जिल छवी सुलकपरे। जोड सक्त करे जब जन्मरे, एवि क्याकी मृति से रन्यरे ॥१४॥ तुर्वे हेने के जब हुन्दिर, नेवा अंतरमां जाये बितरे। पती विवापी बन व विसर्दर, सुनां बेठां सवाये सांबरेरे ॥१५॥ एवी सूर्ति आज अलीकिकरे, परी पहुनी टाळवा बीकरे। सङ् भक्त प्रत्ये सुख देवारे, आवे अक्षरपति चया एकारे। १६॥ दिन दिन प्रत्ये जो इयाकरे, वर्ष निष्य चंद्र जेम बाकरे । मृत्यहाले जुल्ह के इमेकरे, वह को वेले बालुके वेपरे ॥१ आ बने नहि राजि रहे चर्चरे, नेणे वन वृद्धे सहरकुरे। सुम्बद पूर्ति बहाराजरे, आच्या सीने सुन्द बेबा कामरे हैं देश मोरे आग्वे आच्या मगवानरे, वेबा मी जरने अभे दानरे। जेम आध्याचे पामशी धारीरे, नेम नारके मर ने ना-रीदे ॥१९॥ सह जनने करवा है सुन्तिरे, वधी राज्यवा कोइने दुर्जिसे। सह जीवनी लेबीत संबाहरे, यह अर्थ आध्यात इयान्दरे ॥१०॥ पृति भी भद्र ज्ञान-दण्याधिन्य प्रवासन्य दण्याक्षिक्षु नात्रन्यमुनिविधिन्ति पुरणा नवस्य स्था-अध्ये वंजनः अकारः । ५।।

रेवा—जनिव जनक जननी घरे, रचा दया करी कांग्रक दिन। रच्या जन्या करि रीत्यहां, अक्ति पर्यते भुषत ॥१। मां बाखभरित्र वह कर्यों, वर्धी आठमे वर्ष आप। विनायकी ने पानिया, उपनीन अनि निक्याप ॥२॥ जन वर्षे नयासिने रक्या, नान भुषत श्रीअविनाता।

THE REST RESTRICTION OF STREET

करी प्रभूजी क्यारिया। जह कर्यो कम्माहि काम () । साम कर्य बन बेडियु, बकतो बाएस कर्षी विकार । जे अर्थ का जबनार हे, ते कर इने जिस्पार ॥४॥ भेगले-वृत्ती कोती गोपाल स्कीरे, करी एनी इच्छा पूरी बळीरे। सबया सक्जी पूरण कामरे, नजी तम राया अध्यरचामरे ॥५॥ वर्धी अवलब्धे वर्धन वचार्यारे, वह जो-तीने सुद वधायारे। जोगी नव लाल जोड़ जीवनरे, बचा नाव नि-रस्थिते मनवरे ॥६॥ नेपण सब नश्चि निर्धाररे, अवर्थ गया अक्षर श्रोहाररे । एव श्रीच पद्धारचा आहरे, करे बच बंबचे महाराजरे usi जेळे जीव आवेडे वजरेरे, नेने वामना निवासी बरेरे। इस्ते त्वरको कोइ बेहचारीरे, थाय अध्यरना अधिकारीरे ॥८॥ वर अधर ने जे जासुरते, वामे प्रमु वेले प्रचपुरते। एम जीव जन्मना जेवते, पासे आक्षरपामने नेहरे ॥ भा तीर्थ क्षेत्र पुर बच सामरे, कर्या केल धरिजवर बामरे । लांका जेले निरक्ता बनइपामरे, नेने पामिया अध्ययपानरे ॥१०॥ गिरि सुकामां के नेव बनारे, कंड लग्ड तर संबनारे। नेनुं कर्पं व करण कल्याकरे, बोने सची प्रगट प्रयाकरे ॥११। विज्ञानुर्ति प्रवार महाराज्ञरे, कर्या अनेक जीवनां काजरे। एय बद्धारमा बहु जनरे, जाय्या मोरदमा भगवनरे ॥१५। सोर-उदेशे सोपासलु नामरे, मय लीचे शो ने लोग नामरे । निया जन-वेली जाबीरकाररे, करी वह जीववर इचारे ॥१३॥ वस क्वारिया शाल-भाषारे, वर्णी संभारियो मुक्तमायरे। करी सुरुव ने जीया संभार्थारे श्रुवि मुक्तवी संबद्धी स्वार्की है ॥ । । । । । । । व्यादे नाथे कर्यु विवयन है, आध्या वर्षा हता त्यांकी जनरे। आधी जनवा महाराज संगरे, मुन्तमंत्रक अनि उपरंगरे ॥१५। भाग्या पाये ओडी जुन पायरे, बेरेण्या विजनि करी मूल वाजरे । बाध्यां इरवर्ग वयने जीरर, जोह बोनीया इयाव सुधीररे 1.75 । युनि सर्वे सुन्ती हो नमेरे, नवे करे राजि थया अमेरे। एछी मरीच्यादि मुनियाधरे, रचा प्रकृ पास जोरिक कापरे ॥१ आ पछी मुनि कहे बहाराजरे, जेम की नेम करिए आजरे । त्यारे माथ के' लारवा जंतरे, देशोदेश करी पुटि-वंतर ॥१८॥ अहिंसादिक नियम पढापोरे, अन्य मर्णनां जातां बळावोरे। बिक अब जक देशे हे तमनेरे, ने सह बालि वामशे

The terminal control of the land of the la

आसने रे तरणा सरका स्पादन करी पण को पायरे, लेनी जकत करीचा हूं स्वापित । नधारा ने सारा से सन्देलके, लेने भण्डो कहं पह से लरे [[२०]] हों। होंग होनार सन्दर्शास्त्रपालकप्रकर्भवय निष्युत्वकर सुर्विकारिक पृथ्ये-स्वाप्रकार्यको वक्षः प्रकारः [[६]]

नेदा-वळना मुनि बोलिया, शुंशं घरत्विय प्रतमात्र । अनी वेर्षे अजन कराबिए, कथी देवें पराविए रथान ॥१॥ वे दि रीते असे बर-लिए, केवो राम्पिए पञ्जि वेच । केवि रीते वात करिए, केवो आधिय वर्षद्वा ॥६॥ जनमा जे जिल्लामु जन, वरनारी वर्षे अपार । है दि वरने कम्यावर्त, विक कविए वारीने विर्धार ॥३॥ जुक्तने वादिनी अस्ति, अस्ति करे परस्पर बान । दुर्श स्पूर्ण द्वारा द्वाराधी, आप बरने भागनी थान ॥४॥ चंचर्य-सार भर आगे निर्वाररे, केंद्री बान करी अनि व्याररे । पुरुष प्रयोजहाँ वह पेररे, करी बेजादेश ब्राम बाहेररे १८॥ अको रहन्य पुरुषने के हुरे, दारा समयकी पूर रे'डांरे। आज मोर्वती असे सांशिवरे, वाधि मोरे मोरे लोट वस्तिरे ।.६॥ प्रधा भूष्या नवया नव जोहरे, नेणे व्यति नाज वजी न्दोहरे। जिन मोहिनी जोड मन मोहारे, नेणे जोगरका पक भोष्ट्रे ११ आ होत अहम्या सप निवासीरे, धर्मा ब्रष्ट हमी भाग्यता-कीर । जोइ माहिनी कपने असुरूरे, मेणे वेले थया चक्रपुररे ॥८। पराक्तर अपि नपीधनरे, बीचा अञ्चलका ओइ मनरे । एकन्छती वसे तलगांहरे, जेने भामिनी भाग व कांहरे ॥९॥ देखी सुंदरीने दिने हुन्यारे, जेले क्षाच प्याच निंच मृत्यारे । ऋषि सी धरि अपनी सगरे, जोड़ तर्न जन कर्यु भंगरे॥ १०॥ जान्य पर्यन निरमी संदरीरे, इछा वेडच वरवा करीरे। देवगुर मृत्या दिशा वीतेरे, जित्र अनुत्र केषु कव जीतेरे ॥११॥ ववाति शुंदरी सुल आजारे, मार्ग्य जीवन पुत्रने पासरे। अधिक ने दीर्घनमा जेगारे, पह आरा विज्ञा कई एवारे ॥१६। यर असर नारीने संगेरे, कीप रमा नहि शुद्ध अगरे। जोती अनि नपती सन्यामीरे, बनवासी निराकी बदासीरे ॥१३॥ हाला छ।ण। चन् सुलाणरे, कवि को-विद नारीना वंचागरे। घर पंक्ति प्रशील पुराणीरे, जेबी सुपा

<sup>ा</sup> चर्ना, व सामानी द की

समान छ वार्थारे ॥१४॥ द्वांच जक्ष जननमां जेनोरे, नारी न मळी लांकिंग नेनोरे । क्यीबर मुनीबर मनरे, दरी विन्तंभी वसे बनेरे ॥१४॥ जाने एनो संग छ एकारे, भारे देक्कवेडी बन्च नेवारे । मारे एथी जगारी लेकोरे, विश्वं केंद्र पर ने सुने केंजोरे ॥१६॥ नभी एवं करण कांद्र कामरे, नमें को ने न भागे धनदगावरे । जेके कही नेने असे करियरे, नमें बन्द दिश्वापर परिपेरे ॥१ आ नन सनमा सुन्दें त्यागिरे, रेंद्र्यं बन्दनमां अनुरामीरे । जेह नमें मोकन्या छे भारे, नेमां कमर न रान्तिए कांद्र ॥१८॥ एक अन्त्री करी नमने समर, दीन पारजो दीनवेधु नमेरे । असे कच्चों ने समारो आकारे, मारा आन्यनि नम समेरे ॥१९॥ एक बोल्या सुनि सन्दु मिलारे, लीपुं सर्वे प्रमुए स्थानिकरे । पछी दक्षि बोल्या अदिनाबारे, भन्य निरमोदी सारा दासरे ॥२०॥ १६ अध्यक्षानस्कानिकरणकानोत्रक्षानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकानोत्रकानिकरणकाने स्था ॥१॥ ॥॥॥

रोश-भीदरि के' संग मां बळो. एवं। करवी वधी प्रपाय। जेले करिने अक्तर्तु, चंपन समने थाय (१४) एकी रीतने राजदूर्, जेह रचा व रेको कोच । जानामां पत्र बोधनां, कियां केस के बिक योग हन। अंग अमीरिक अवनार है, नेस कारू समीरिक रीन ! सह उपर जिलामिक, बाँख पकी परम पुनित हो।। से रीत बर्ड से हरे पती, अह रही यह सायपान । एव मुनिवंशकते आगळे, भीमुलं कहे भववाज ॥४॥ भागां —रे जो प्रवास प्रधानरे, वारी विचारी सह मुजायरे। प्रवास के सहने पायरे, बची करी बीजे कांप बार्यर ॥६॥ जोको विधविष जो विचारित, अर्थ अर्थ छ व अनि भारिरे। नेमां यह में जियानो लागरे, यही कचोछे करी कि-भागरे ॥६॥ अप्र प्रकारे नजनी वारीरे, नेम यन नजन् विचारीरे । कोई देश काम किया सगेरे, एथी अलगु रे'यू अब अंगरे ॥ अ। सबु जान तो जन एवं पंछरे, भन जिया ने नधी ब्रह्मां हरे। एवं वसी करी निरुपारों, करो बरदिन कुपयी मोक्षारदे ॥८॥ असे राम्य तो अबर एटलारे, चीन प्रथम म पीडे नेरखारे । कंपा कीपीन मे करिपटेरे, घटनां तो राज्यती अमर्थरे ॥९॥ नेपण अध्विने जीरण

1 48 4 mide unt nitrmg wm. g meju

ले जोरे. एवी रीप्पे बाह मुनि के जोरे। अस सामिने असली सरमा-होरे, रमे रहित सहित अलगावेर ॥१०॥ मर्वे बेखवी जेळ ते करीरे. जनजो एकवार भाव भरीरे । एम रही सह मुनिरायरे, करजो देश परदेशके मांघरे ॥ ११॥ करतो पुरुष भागळे पानरे, जेम हे नेम बढ़ी साम्रान्दे । ग्यारे निम पारे जानो जनरे, के जो करे वन्द्र भाजनी ॥१२॥ परे बन्द बन्दे व्यानते, जेवा सुमिए हे अगवानरे । परमां प्याम भाषी बकाकारे, मेले भगव भाषी सबे हामरे ॥१३॥ आपे हेणको अक्षरपामरे, देनि बावको पुरण सामरे। वय अनंत जीव आवारीरे, जाड़ो अबंद याथे बाद बरीरे ॥१४॥ तेता सभी बीजा जे जनरे, करने भाग करीने भजनरे । तेनी बामको ए बाम जापरे, एको मोटो के बाज प्रवापरे ॥१५॥ वसी श्रम जब नमने से देवारे, आशी अपर श्रक्षर पर लेवारे । जेव पा-वना अमे रेजगरे, लह जाहां ने पाम मोसगरे ॥१६॥ वपी जोबी जीवती कार्जारे, रीत का बारती होच प्रकारे । क्यारे जरबं होच बोर्ड का'नरे, बंदि बाल बाबव लोड काकन्यरे ॥१ अ। जेको जान सके तेनी में देरे, लोचे डाल्ड के बनी बनोरंदे। एनी आफ बोटो के जननारहे, बहु जीव करवर अवदारहे ॥१८॥ तेनो सर्वे आयोजो तम करते, ममझी रही मनमां मधनते। निर्भय निःशक वै सह रे फोरे, वानो प्रमम्भ सम करी के जोरे ॥ १९ ॥ एक सुनीने कर्ष सहाराजेरे, सुल्यानर गरीव विवाहेरे । बाच्या नेर्य देवेया आ वार रे, परम सनेही प्राण आचाररे ॥२०॥ इति भीतर कातन्यवानिकाय-द्वापाने वृद्धिका स्वाम्ब्यूधिवित्रित वृद्धान्यम् प्राप्ते प्रद्धाः वदारः ॥८॥

रोश-पनी मुक्तने आपी आगन्या, नमे करी देवायदेवा। जेन कर्ष लेख पर्वजो, रामजो साध्यो वेष ॥३॥ वटी सुनि परवर्षी, जेम हाल्यां हरियां वा'ल । जारे वा'लने भरवा, सह सक्र क्या हे सुजान ॥भा वर्धी केले बसुजीए, पर विवासिय वर्ष । वसु जीव जेस प्रदूरे, बारे करने तमें तम ॥ भा बंधावें बहुवेरे करी, संदर सत्वापत्त । के क्रमें अन्न अमन्त्रं, ते वामे काम गति तरत ॥४॥ जन पवित्रहे। काही हेने जनने जमाहेरे, वरी वान आशंह वमाहेरे ॥५॥ शुवि 

वकार १०

नान रखीनान भाषरे, पत्नी यम ना रहे सम्मन मांगरे । एम सदा मन बांच्यां बहरे, लेह सामगणा जाम बहुरे ॥६॥ सोम मरंगरोज जगनाईरे, सदावन माणावनमाईर । मेचपुर पोराजि पांकदीरे, अस अपने प्राप्तिकार्य चाडीर तथा जांमवाची वे नवेनगररे, प्राप्तक भेख ला भोजन करते। फणेशीन जाणी जेनपररे, जमे जन सरपार रहेन हरे। तम को दक्ष माइक्ष पारिया विदे, अभी बोले अंके अन वाजीरे । मालेक बार्ड ने मेथांक मध्ये, जेनकपुर स्थीनगर मादि ॥ । लह आहि तहमें आपे अधरे, जेह जमें ने बाय परवनरे। नेणे नजे विज् भन्न इयामरे, जब मुक्ते पाम पर्म पामरे । १०॥ एम अनेक जीव उद्वार्थारे, अय हास्त्री अय तस नार्यार । नाये व सार्य नाथने प्रवरे, क्यों अन नार्या जगनरे । ११। जाव्य अग्रमां अवशे से अग्रेर. आहो धामे ने धाले बादवरे । यम जब दर्या बहु आगेरे, अस्या दिल अनि अनुवारोरे 1, १२।। शकी बेह्य वे शुक्र वळीरे, जन्मा पह जन प्रभादि मळीरे। लेख में भाष लाल बनारेरे, प्रम जमाना। ज्ञा आधारिते ॥१ ।॥ जे जे जन्या ए जगवर्तु अकरे, पान्या परम प्रांत वाबजरे। एम बेंजी कीपीले जो पार्टर, बनामोडीन माहि जापा बहरी (११४) जे हैं जीव पाशीया सबन्धरे, नेवा छोबाविया सबन बन्धरे । जान बनाये जकारचामरे, सन्दर्भ यो नाहिया पनद्यामरे ॥१८॥ केवा लोगा वृति गुन्दा बाकरे, एवी लाज बाववी आही आकरे। आ समामा जेनो अपनारर, नेना भारपनको नहि पारर ॥१६॥ लागे करी नवी नवी जायर, नोयंक्त ए वाथे व जवायर । कर्न पार के सुम्बनी सीमारे, जब से जसे जे आप नेमारे ॥ । आ में केसे जे आवेष जानदरे, समस्य आमी सहजानदरे। सिंप वर्षन मुखिनां मानीरे, सह वर्षा ए पामनां निवासीरे ॥१८॥ एवा बगुहास्यो बोले प्रमापने, नेजे उदास्यित कर आपने । एको कर्या अमीरिक कामरे, मेरेचे रिक्षा नहि महारामरे ॥१९॥ मध्ये हजीचे कांचे व की पूरे, मून मेर्चाने सुन्द न सी पूरे। शामे मून्य मारी प्रता करीरे, अज्ञान बमन मुपने भाग भरीरे । २०॥ इति भीमद बावन्युवर्णन-चरच्छात्रात्रात्रकृतिरकृत्रात्रात्रकृत कर्तवन पुरशालमञ्जूषाकृते जन्म, प्रकार ॥१॥

रोहा-वेमे करीने प्रशासकी, परिजने न पूरि होसा। संवि न

والراعاء الماماء الماماء الماماء الماماء الماماء

वाचया व्यामीने, अनि रहि गयो जनगोच ॥१॥ वस्त्वादिक मोर्चे क्यों, असंस्थान अवनार । कारण दिक्तिन वर्षा क्यों, नव वर्षा निरंपार ॥भा अस अवसर्ग जानजो, श्रवनार वर्षाचे वर्षेषः। सर्वे जीवने सुन्य भारता, होये व होये ए एक ॥३॥ सेवदने संबी सुच लेर्च, केंद्रं भवा प्राचकाम । एम म मान्यू साम साम, मारे मार्टिया प्रमृत्याच ॥४॥ वंश्यर्थ-मदा मोटा मन्यय अवनावरे, यक रचा ने जळ मोशाररे । मानविष् तेने म लखापरे, पण धने अज्ञान व जायरे ॥५॥ अञ्च अञ्च अवर जानुवन्तरे, तेल पूलेस सु-र्वाच क्यरे । जनार चंदम गुरवनी मासारे, तेचे इति हो क्या सुमा-बारे ॥६॥ कर्या कांचेक जीवनां काजरे, वडी बवार्या वान वहा-राजरे। कच्छ बहुरम कृषा करीरे, आज्या जम अर्थे तम परीरे ॥ आ में अर्थ आरथा अधिमाशारे, क्यों ने तमे तेथी समामरे। वस जीवने क्षर्य व जाय्यारे, जावी देव दावद समझाय्यारे ॥८॥ वर् वाराष्ट्र वामसे तीपूरे, वृषयीनं ने कार्व कीपूरे । तेने वय वीजां वह अधीरे, सुख व लीचुं संदिते वधीरे ॥ मार्सिह इद वरकाम नगरे, चारी प्रदारिया विकासनरे । एवं कांचे नया नयं-काररे, केम संवि वाक मरनाररे ॥१०॥ बामनजीप चपुने चारीरे, बीधी बुबबी विंड बबारीरे । बली बाले बांच्यो बहुचेररे, बडी बर दर्श वसिया चररे ॥११॥ परशुराम करे बगर वहरे, बरी बकाब वृत्रवी सहरे । तेमां सहतो न पया समासरे, सेवी सुन्द न वासिया दामरे ॥१९॥ राजकर परी पया राजरे, कर्या मोटां गोटां यह काजरे । तेलरे लमाणां नाम्यां उक्तकरे, देव बावय जानव जानरे ॥१३॥ क्या वीय दाम श्री पासरे, पृत्रि पुरी करी अपि जापारे। र्श्व जापिन जोक्तिमन थापरे, राक्ष राजाने केम पूजापरे ॥१४॥ ह-क्लावनारमां कीवा करीरे, वह नागी ए जक्तार वरीरे। ने छे कान पुराणे प्रसिद्धहे, लची च्यामणीए बहुवियहे ॥१६॥ दियां संवक्षते सुन्य जारीरे, संबी सुन्य पाण्यां तर वारीरे । यथ एसमा प्रम व रकारे, वर्ण राजजविशाल बचारे ॥१६॥ स्वारे सबुने सकवानुं सुन्तरे, न रशं वर्षे दामने दू:नरे। दुव दलकि वे अक्ताररे, प्रयो-अने पुत्रवी ओकाररे ॥१ आ तेलो करिनिचे क्यारे कामरे, पाछा 

والمراجل والمراجل والمراجل والمراجل والمراجل

वयारे योग। ने यामरे। यह आहि वह जवनाररे, नेनो अवनारिता निरमाररे ॥१८॥ वस सर्वे रीने सुन्यकारीरे, नेनो पुर्वाणम अव-नारीरे। नेह योने वयामां आजरे, जहारपायना वामी अवाराजरे ॥१९॥ आरे सर्वे रीने संस्था जेवारे, आज अनवेनो वयाचे एवारे। मह जननी पुरवा दामरे, आच्या आपे कह वनद्यामरे ॥२०॥ १व नीमराजनामानियाणस्थानोक्यनियुक्तनस्युनियिग्विडे पुरवेनस्थयक-भने वसनः प्रकारः ॥१०॥

रेश-पुरुषोक्तम प्यारिया, सर्वे अवनारना आयार । अगणिन जीव भा जगनना, ने सन्त्री तेवा सार ॥१॥ श्यूच सुध्य जे जखे क्षके, जि<sup>यां</sup> जियां रका ता जन। तियां वियोधी नारिया, आसी मस्तिपर भगवन ॥२॥ कोष्ट प्रकारको प्राणधारी, पानिया मे प्रमण । ने जह सम्बीया थया, जया जक्षरे मैं हाद अने ॥३॥ जेन निकेने कारे करी, रहे बढ़ि अणुए अंचार ! तेम सहज्ञानद सूर्यथी, जन वास्या सुन्य अवार ॥४॥ भागां--वह अवनारमा जे दासरे, नेनी पुरी करकाने आवारे। वर्षे कर जनाकिक प्रदेश सहने पुत्रवा सेववा जेवरे ॥६॥ सह लोकने आवियो लागरे, अध्यो महत्त्वम लेवानो बागरे । अल्पादिकता स्था'ना गुक्राहरे, सेवी सुख तेवा वनवाहरे ॥६॥ ते सहुतुं वचित्रं कारो, हावा भोटानुं एकत्र वाररे। वियो ॥ आ जेवी समृद्धि जेवी सामगरिते, तेवे पूजी पलव वाजे परिते । अकात बारत मुचले जाब भारि, पूजी करा पूज एक कर करीरे ||८|| जल इस जेसे काई मजेरे, पूजी पूजान जात सपलेरे। कुद्रेस कानुरी कपूर केसररे, अपर्य जगर चंदन असररे ||९॥ पर बान्य क्षार में बाहनेरे, गाये गवा शहियी सदनेरे । बादी लेख कर्मु-धरा बळीरे, संज बलन बधरणां बळीरे ॥१०॥ गादी निक्या जोछ। ह ओसिसेर, जेजे आवशी ने आज हेबारे। कमळनात बीवां बोबी बानरे, लह राजी पावा भागवानरे ॥११॥ वृष वथ वृत्ती मही बळीरे. ची नोस क्षांकरा नकीरे । श्रिद्ध लांच मे न्यारेकरे, एव जादि क्स्यू जे अनेकरे ॥१६॥ पानविधी सर्वीत सोपारीरे, जापेकन ऐसा तर्ज

<sup>5</sup> मुद्दे व तेल. १ सम्बद्ध क केवरी, क क्वांत

सारीरे। एक जादि जमवामां जेवरे, जावे प्रसम कृतवामां नेवरे
॥१ हा। जेजे सुद्ध वरनु सुन्वदाहरे, नेने आवे सर्वे सेवामांदि। एवो
जाजनो से अवनाररे, अबु जीवने सुन्व देनाररे ॥१४॥ इन्हीं मही
वासे रहीयरे, यम कृती स्वर्धी सुन्व रुपेरे। एम सहुने वह सुनमरे,
वया वोने ने कृत्व ब्रह्मरे ॥१५॥ सर्वे अवनार में जे संदोवरे, आग्यो
अक्तनो व रान्त्रि वोचरे। सम्ब्र कन्त्र वराष्ट्र वरसिंगरे, नेनो मनुस्वर्धी विज्ञानि अंगरे ॥१६। सजाति विना सुन्त व जावरे, मारे
वरमस् अक्तने आवेरे। धरे वरनम होय जरेवारे, नोचे वहुने म होये वयदेवारे ॥१०॥ विध अक्ति व सांसक्ते वानरे, वेह्य साह करे वान वातरे। बादे आ जे कियो अवनाररे, वाोचि सारमणुं वर्षु साररे ॥१८॥ सीने सुगम अगम निह अशुरे, सर्वे आगमे निगमे वर्णुरे। थया यवा वोने कृत्वेकासरे, युरी सर्वे जीवनी हामरे ॥१९॥ नोचे वस्तुं विचार्युंग्रे एसरे, वहु जीव ने बहुरे केमरे। वर्षे वर्णन दोच निवाहरे, नेने वरमे परम थाम मार्वरे ॥१०॥ इति वीमहण्यक्त

गेश—मोटी में र करी हरि, क्यारिया प्रकाशमा । अनेक जीवने आकरा, पोतानुं करम बाम ॥१॥ इयाजियि वया करी, जीव जक्तना उपर जोर । तान एक जीव तारका, चारि क्यु पर्माकियोर ॥१॥ जहोतिया ए वपायमां, रक्याधे राज अधिराज । अमितने अभय करका, सींपवा सुन्य समाज ॥३॥ वधनुं मेनपुं प्रजा रवर्षानुं, इरकाननुं राक्युं वान । जे जन निरन्ने वाधने, ने पान सुन्य निराज ॥४॥ चोवनं—एइ अर्थे करेखे क्यापरे, निर्म नवायका मनर्मायरे । आजे सी जन दरकान करेरे, माने अभावे माम जीवनेरे ॥५॥ लेतां व्यापिनारायण नामरे, धाये माणी ते क्योकामरे । केये नाम निरन्यारे, कर्म मासि वामरो ते केरे भोशा मारे मोटा करम व माने वारे, कर्म जायि निर्मे केरे निर्मे क्यारे । क्यो निर्मे क्यो निर्मे केरे निर्मे केरे निर्मे केरे क्यारे । क्यो निर्मे केरे क्यारे । क्यो निर्मे केरे निर्मे केरे निर्मे केरे निर्मे क्यारे निर्मे केरे निर्मे केरे निर्मे केरे निर्मे क्यारे निर्मे केरे निर्मे केरे केरे निर्मे क्यारे निर्मे केरे निर्मे केरे निर्मे केरे केरे निर्मे क्यारे केरे महाने वासरे होतीरे । जो सभा साम् सुन्यकंतरे, अनुनरहिए आये आवेदरे ॥४॥ सह जननजा नाम दरेरे, सुन्य कारिय जनरमां आवेदरे ॥४॥ सह जननजा नाम दरेरे, सुन्य कारिय जनरमां

करेरे । सङ् सुनिया वर्ष जन मनेरे, जाये बोन बोनाने सुबनेरे ॥९॥ रालदि समिरे जामी संगरे, तेले राजि रहेते अलंगरे। करनां क लीखानुं किंगवबरे, लेके बाबे करण बाल अवरे ॥१०॥ एका समैया परमो परमरे, करे एक बीजापी सरमारे । नेमां कैक एजे केल रुपरकारे, सीने आजंदना यन बरसरे ॥११॥ जिला नवी करे बाब बीळारे, लागी वही करी वह अंकारे। मंत वह सन्यामी समोहरे, अने काम लोज वहि मोहरे ॥१२। जोई एवाने जन्मना जबरे, सबू के के करी करव भग्यरे । संग औहरिने दरवानेरे, जामे नहामोरो आनंद अनेरे ॥१३॥ एवा जन सगनमां जेहरे, पाण्या सक्तरपासने तेहरे। एको कर्यों थोटी क्यकाररे, यह जीव करवा भवपाररे ॥१४॥ यंत्र वह गयां नीजां चाररे, वरववद वास्तां वर-बाररे। जीव संचननीय कीव जायरे, बगर मनु ने क्वनी मांपरे 9१६0 भाग बाको सङ्क्षायंत्र तथारे, वेडो वक्षवंत विकासो बजोरे। क्यारे प्रगटिया प्रमु गोनेरे, जोवा नजरे आक्या जीव जोनरे ॥१६॥ वर्ग वर्णनोक ने वानाकरे, दिश नेने हु किया इया-करें। तेने छोडाच्या वंचयी छेकरे, गया ए यम वासे अनेहरे ॥१ आ बेसे राजा मादियर कोघरे, छोडे दविकानना वंध सोघरे । नेम वंपची कोक्या वर्ष अवदे, योने अगटी जीनगदनदे ॥१८॥ अवा मोटो प्रमाप प्रमरापीरे, रीम मीनम स्वारी प्रमापीरे । अब अपर नदि विजो कोचरे, तेनो जेम करे नेम कोवरे ॥१९,। सीना नाथ निर्यमा लामीरे, सी पामनचा एक वामीरे। नेनी वरसंद जान बळियारे, भया सुनी जब जेवे बळियारे ॥६०। वने वीवहरावन्त्रवानि-चरमञ्जानोवकविष्युक्तसम्बुधिकिरविते पुरुषोचनवकाशय-वे हार्थः ॥कारः ॥१२ ।

क्त-देशोदेवाधी आहे इरवाने, नियवारी सद् तरनार ! आविने निरम्ब नावने, तेले निये सुन्त जपार ॥१॥ समेव समेव सुन्त हेवा, करमब कर्या अनेक। इया करी दीनकंपूण, तील निर्मय करवा नेक ॥२॥ तेहम अर्थे लान छे, जीव मोकववा निजयात । जाव्या कारम व करवा, वले हेने करी पनक्पाम ॥३॥ परना बारे अनेक रीते, करे बवाय आहुं जाय। उपांत्र्यां करमब समेवा कर्या, कहं तेने जाममां नाज ॥४॥ जेकां—सद्वृती और्य करमब सांग-

रोसरे, पचा जब सां बंका अनोतरे। पड़ी नोझे करी पह सीकारे, व्यक्ति क्यांना जन वह मेळारे॥५॥ अनकारे आहत उत्सवरे, बरी नार्या जीव के भवरे। भटी आहेरे आठम भजावीरे, करी टीटा आजाबद्र आधीरे ॥६॥ संयपुरता तथसब माहरे, द्वित जमाडी करी अलाईरे। पंचाळात्रो समेपो असिद्धरे, आप्यां सुन्य सबुने बहुविधरे ॥ आ अनगढ जई सहारतजरे, करी तत्मच कर्या बहु काजरे। धोराजिनी लीका प्रथपन्यरे, ओई जन प्रयास सगनरे ॥८॥ करियाणामां उत्तर की बोरे, बहु अनवे आर्नर दीधोरे 1 गरवानी सो नहि आवे गणतिरे, यो तो उत्सव कर्या छे जतिरे ॥९॥ कारियाणीना केटलाक कहरे, यां तो लीका करी वह वहरे । सारंगपुर के साथ गायरे, करी प्रश्मव सार्य संख् कामरे ॥१०॥ बोटादमां लीका पह बनीरे, असि अजाबिक हुनावानीरे। लीव कियों सह अने लायरे, पुरा कर्या है अन्यता आयरे ॥११॥ ताम-बकानी लीक। अन जाणेरे, मारो ममेपो सुंद्रियाणेरे । करमवनी बान हां कहते, आप जिरन्दि सुन्ती धर्या सहरे ॥ १०॥ काळुवलाव मोडबी नेरारे, क्यों सुक्रे अध्मव कई बेरारे । यदिकाण्यमां महाराज भाषीरे, अति बुनाकानी त्यां मजाबीरे ॥१३॥ जेनसप्रमां जसन कीचारे, केई जनन बारणे लीपारे। असदावादनी चोराजी किपिरे, कर्युं को करे काम परिवर्षित । १४॥ आहराजको अवकट की धोरे, कजीमणे कने लायो लीपार। सिद्धपुरनी समेश सुद्रारे, कर्पी अलबेने आनद्भग्र ॥१५॥ भइवन विपक्ति न दरा कारवारे, अया समैया पोते त आव्यारे। राजाधारी सीळा वही द्वान्ते, जियाँ जन सक्ष्या इता लास्त्रे ॥१६॥ यहनासजी लीळा बन्गणीरे, सची लन्दर्ग में व कवाणीरे। बडोदरामी पारूपम अहरे, नार्या अव बरकान दुईरे ॥१ %। सुरत प्रधारि इताम सुंद्ररे, मार्था वरकान कई नारी नररे। पर्मगरमां धरियो मुगडरे, कर्या वासदे उरसव अबटरे ॥१८। एट रीन्य बीते वर्णे गामरे, समे संत लह अर्था इयामर । एम पवित्र करी इपकीरे, लागी शीव काडि तीन नवीरे ु इयामर । एम प्रतित्र करा प्रवार, नामा जाव कराड राज स्वार है ।१९॥ अति आतर जनने प्यान्त्ररे, ब्रह्ममंदिनम् बार अपार्क्तरे । सबु जाओ भाषामां आ समेरे, लाखि सब्द्रशानंत्रे हुवसेरे ॥२०॥ १वि जीवहराकस्थानंत्रशास्त्रवस्थिकश्रीवद्वातस्यवृशिवरिवते दुवरोणनवकातः राजे वर्षोत्शाः प्रकारः ॥ १३ ॥

रेवा-एम अनेव प्रत्मव कर्षा, कर्षा बळी गामोगाम । जापी इरवाय जापनुं, अन अर्था पुरवासाम ॥१॥ देवा प्रदेश प्रधारिया, जनहेते जीवन प्राण । परमारथ अर्थे करी, अगव्या प्रयास शाजान ॥भा इपाळे एपा करी, वरी मुरति संगळकर । जेजे प्रसन जब पासिया, ने भया शुहुमक्षय ॥)। बन्धशिन्य क्षय साथमुं, जाको कल्याचना छ कोट । जेने निकर्ण नयमे भरी, तेने ना रही कई भोट ॥४॥ बंकई - जेने जोयां वरण दवाखारे, मोने विन्यु सहित शोभावरि। एव जबना अयोडामा रेन्द्ररे, जोई विदेशे में बेबेन-भेषरे ॥ अंगे वन आंगळी बळी वेलीरे, वाच्या वास वस्य कमाई नेजीरे। जब जोवा के जेले निहासीरे, जोई क्लामी कोचा कपार्थारे ॥६। पुरी पेनी पीकी पेली दामेरे, ननो भे'ना छे अक्षर वामेरे। जानु एवं जोवा जेवं झांबीरे, पूर् कांद्र जोर वर्दे राजीरे ॥ अ। करि लाई मोर्छ मन जेनुरे, वर्ष अभरमा घर तेनुरे । जोई माथिन नवनां भरीर वसी वर जायुं बेसे करीरे ॥८॥ नम स्तन निरम्पिया जेनेरे, क्यों बाम अभरमां नेनेरे । छानि हैयुं जोयुं जेने हेरिरे, वाच्या प्राप्ति ने बाम केरीरे ६९॥ कुल वहनां वे जे बमलुरे, ने जोई करी लीयुक अन्तरे। जना भुजा जई जेने हमेरे, नेत्र पाम्या पाम कारमेरे ॥१०॥ यह देवनियो वह स्वाळीरे, कोणी कताह जेने निहार्टारे। कांचा केटन जोई सन मोदरे, हाप हुए-क्षीय विश्व श्रीयूरे ॥११॥ ओई जे जने रेक्स क्यार्टारे, पाम्या बन्धमां न भाग्यशार्थारे । पांचपांच जागळी प्रवरते, जिस्मि तसु देरवां सुद्रारे ॥१२॥ वन निरम्भि हरमको परने, जाको प्रकामी में ने जकारे। कर सुंदर जोशे के सारते, जिल्ले करम सुलजा देजारते ॥१६॥ कंड माजा क्ये एक निन्दे, दावि होड दान अ अवन्दे। 📑 जिहा गामिका क्योज सारारे, जीवे परम सुणना देनारारे ॥१४॥ दाचा दानमां विंदू जे इपामरे, जे जुने ने वामे सुक्यामरे । वासे

والمكمة فبالماك مؤمؤها فالامتراء المراها والماكم الماكم الماكم الماكما والماكما والماكمة والماكم الماكمان والماكم الماكمان

र मनिवचरी से कॉर्नाइक जानमीतृत्वी करनो सन्द्रा करक.

नित मोरो जोगो जेगरे, व्यरं कर्य जाना नंगरे ॥१६॥ आंवयो वांच्यो इन्द्रीर आर्जारे, आत वर्ष रेक्या जे क्याधीरे। मनवर नातु हे क्यादुरे, जेवे जोगुं मुल मरसादुरे॥१६॥ वजी केवा जोगा खेन इयासरे, ने सच्च वांधिया वाच वांधरे । जेवे नव्यश्चिमा निश्चया नावरे, ने तो सी जम प्रमा समावरे ॥१ अ। एवा सर्वे अगे शुलकाः शिरे, जेवे जोगा नेनां आग्य भारीरे । एवी म्रानि संगमनवरे, वव्यशिमा स्थि सुन्य अस्परे ॥१८॥ मधी एमां अम्यस अणुरे, शुं हं कही वेचाई चलुंचलुरे । सूर्ति सनोवर हे मरमाजीरे, प्रकामों न जवाय एने आर्जीरे ॥१९॥ जान अनुपम हे जो अक्कारे, वह सब्द्री हे जो सपलरे । एनो सर्वमा कारण आप्यारे, ने कोई लामी सव् आर्थेच कांच्यारे ॥१०॥ इति जीनवायश्यात्र वांच्यात्र वांच्यात्र विकास कांच्या वांच्या वांच्य

रोहा-अगजीयम जम कारणे, योने बगरिया परवस । सुन्यदा-वक जन सहुना, दूरम पुरुषोत्तव ॥१॥ सुंदा मूर्ति सोपामनि, अनि क्षाकी रंगरेत । अनुवादन बहाराजनी, प्रदी शोजाए अरेन ॥३॥ एवी मूर्ति अवसीकिने, कही कोण न करे दीन। जन जुने के सांची करी, तेतुं चोराई जाय चित्र ॥।॥ जे जे किया सगरीया करे, जन थरे तेतुं द्यान । ते ते जाये इरियाममा, विक दान निद्रात ॥ ४॥ को गई-के के रीने जोपा जनपनिते, ते ने गामिया परम बापिते । सुनां जागनां दानण करनारे, तेन पूर्वत अन्तर पोसनारे ॥ ५॥ मा'तर अमे अंकर वे'हतारे, बळी जालहीपर जहतरि। खेन पहेंची अंग ओक्नारे, दिया जीवन जेले जमनारे ॥६॥ जन्या जे जायगा जेने चेररे, बाल वाक सुदर सारी देररे। तंब कोच्य मध्य मोजनरे, दिया जमना जेले जीवबरे ॥ आ एवी मूर्ण से जब ओईरे, पाण्या बरम बामने सोहि । जोगा जीवनने बूल्या जनेरे, कुंकुम बस्तुरी सुर्मेषि चंदनेरे ॥८॥ जंगे विशंवर वाषावारे, वृत्तांजन ने विहा राटांचारे। गोदबी वे चाहर चोफाखरे, दिया ओरंने टीनइपाखरे ॥९॥ घोती तुवकि युवे रंग रेटरे, कशि कमर दूमाल केंटरे । जंग-रची सुरवास जामरे, जोई कैच गया इरिपामरे ॥१०॥ क्यली

ا مازار، او موسول. استاری از موسول ا

सोनेरी क्षेरियरे, किनलायनी हैये चारियरे। बगती जरिनी चोर क्रमंत्रा बाळीरे, बक्रमो यह बांमरी बवाजीरे १११॥ बोरि बोकाड साल इसालेरे, बगली गर्म पोसनी बमालेरे। पाप कमुपी सोनेरी सारीरे, वांचि बोकानी लिये वर बारीरे ॥१२॥ सुगर कुरुक मनमां बारेरे, होपी केवबा कुलनी संबादरे । गुंजाबार जोपा करी बाधरे, नेनो जन गया दरियामेरे ॥११॥ नोरा नजरा ने बंदनरे, दार कुनमा जोषा अवक्रणरे। भोती परवाळी ने कपूररे, नेना अति-कोर से बार परदे ॥१ता बंद वीटि के कहां श्रीवादेरे, बोहपां पुण सोबार्य वे कारेरे। एक जादि आयुवन वारीरे, वर्षा अगे एवी क्षवी चारीरे ॥१५॥ जंब जन करेंग्रे चिनवनरे, ने बायग्रे परम पाय-बरे । बेटर बाट बाट ने पलगरे, जोपा सुर्मि होनिये प्रमणेरे ॥१६॥ सांगामांची गानी चाद करे, यह मंत्रे आसन सम्बंदे। गोलवान वंशि बेबोमेरे, कुना पर मेजी आदि बोमेरे ॥१आ मंदिर संदय इकिया चार्रेरे, नंबु राषटीये वह बेरेरे । अटारी अगापी और जांगकरे, दिता निया वता भाव वकेरे ॥१८॥ गावी बेंग्य आदि जे बाहजो, गज बाज बेटा जोपा जनरे। ते जब जाये ब्रह्ममां ल-वाईरे। तेवा संवाय करको मां काईरे । १९॥ एव श्रीमुखे कयं ते संभारिरे, बान समीधे सारी विचारिरे । ने नो गुडी वधी जराबा-रते, मह विके प्राणी विश्वारते ॥२०॥ इति तीमह शकरावामित्राणका-क्रम रक्षणिष्क्रमानस्त्रमृतिकर्णका पुरुष्तग्रहक्षमान्त्रे वृष्ण्यमः प्रकार । १५॥

रेश-- नम कर्यु नृत्या करी, वरिजनपर करी दिन। अंत्रे वं तीव्या करी, ने अन जिनवारी जिन ॥१॥ जनम करम जे माहेरों, ताचे सामिन्ने संभारे भाष । ने जन जकर जानजो, मध्य प्रापना वामि होच ॥२॥ धर्मा कांद्र अरवट्ट मधी, आणी लेको जन जकर । अन्य प्रपाप जन्ममा करी, पारी नियो परन्यु वर ॥३॥ भनजन वार वनरवा, जाना भागां परित्र से साम । माहे सीने संभारयां, इस करिमुले कहे सहाराज ॥२॥ भाषां -- ए से बान परन्या जबीर, वारी विचारी सन्द्र तर्वारे । जोना मुक्तने मध्ये बहाराजरे, सह वर्ष घोनानरे समाजर ॥३॥ क्षाया मुनिए वनु परकाररे, सहर

متسئم تماييات لملماءة

<sup>।</sup> क्लेक

क्षाम १६ ]

लई बोबका क्याबारेरे। करे स्कृति सूचि कोबी बाधरे, वची रीखे संभारे जे नाथरे ॥६। एमा विमयन छ जो वक्ते, ब्रह्ममां ने लई आचा केपुरे । बळी सकता मुस्टिन सहाराजरे, हेना घरण छानिये मुनिराप्तरे ॥ १॥ दली जमादना मुनिप्तरो, भानाशास्त्रतां हर्द भोजनरे । प्रेम चिरमणा चाले जाधरे, हई लाइका अलेबी बाधरे ॥८॥ बाबा करनां जमारना जोरंते, न्वी सूर्ति सवारो विचालोंकी। आवे गुलमां लाडु अलंबीरे, आवे सुल मभारे ए छवीरे ॥ ॥ बेना हरी पूच दोचररे, होजी साथ हमि चाने चटरे। लॉह साबर देना पोता अधिरे, कवी मूर्ति राज्ये कर परिरे । १०॥ वस खंबारमां चमद्यापरे, निधे रामशी श्रम पापरे। पत्नी विनयो बरकरी बालरे, जीतां सरको बाको जिल्लाकरे ॥११॥ वसर्व बोलकुं राम कुं संभारिरे, कोडे लाज लाकी सुन्दरशिरे। अंग इका-बनां अधिनाकरे, कह बसे दरबना ने इन्मरे ॥१२॥ इति कनुमांदि संबारनारे, जांपा कार्नि कारिन नापनारे। चक्रमी चौकाल के रजापरे, एवा संभारि राज्ये प्रवर्धिर ॥१३॥ १०व सनुमाहि श-विवादीरे, संबारमां मूर्णि सुन्दरादीरे । बाने पंचे शु वाम पर-बरे, बीनल कायाय बेबी जीवनरे ॥१४॥ दीना नीरं निर्मल नापरे, वेट बचर करवना हावरे । यीना वर्षे कारकंश मारीरे, एवी मूर्नि रान्दो पर पारि ॥१५॥ योमामामा ओरंज कामबीरे, परी छनरी जिल्ला वर्जीरे । एवं संगारि इपाय शृक्षकारीरे, वापे अक्षरपाय अधिकारिर ॥१६॥ देवे हार अपार सहितरे, राजे इतिस्ति हेने बीनरे । सुदर चादका महित ककारो, आर्बु ब्रक्समेशीय जापा मारदे ॥१ आ क्रेजे रीन्वे कोगा अब जेकेरे, करी नीर्थ जिल काल लेगेरे । जेजे गय चिनचेछे जनरे, तेने वामे अधार वंशनरे ॥१८॥ एको मोटो में जा जननाररे, सर्व रीने ने सहूने चाररे। वनस्थाम मामनी ए अर्थरे, करवा हरि सहुने समर्थरे ॥ १९॥ नेव सहु जनने सुम्ब देशारे, प्रभु प्रमध्या था समें क्यारे। आप्यो यह अन्दे आनद्रे, मुल्यदायक श्रीमहज्ञानद्रे (,२०)। ही बोबद ग्रन्थमानिकाक-कमस्त्रकाम्बद्धाम-रवृधिविश्वते पुरुषोत्रकप्रकारका प्रेष्टक, प्रकार: ॥१६७

անունակարարին նագիրիականականական հավարդակականականը հավանականականությանը։ - Հայաստանի անգանականականության հավարդականություն հավարդականության հայաստանության հայաստանության հավարդականությ

المالية الوالية لم<mark>المالية أعا</mark>لية الوالية الوالية الوالية الوالية والوالية المالية المالية المالية المالية

रोक-वळी संस्वारका श्रीहरि, जेबी दिने सोपा होय । सुक वाबारी संपत्ति, एइ जेवी वीजी विक्र कांच परे॥ अन्य विजा जन जुन्म व जागे, तुना जाये वहि चन नोषे । बीत व बीते बन्दि विना, तेव बाच विना सुच बोच ॥६॥ इच्छे सुच कोइ अनरे, ते शंभारे संदर इयात । जे संभारे सुन इनजे, बजी पायिये पान बाम ॥३॥ जेम रविमंदछे रजेनी नहि, कविमयसे नहि लग नाए। नेस सूर्ति बहाराजनी, इस्य सर्वे सनाय ॥४॥ केवर्य-वची सूर्ति अति सुचकारिये, असूने राज्यी हुई अंबारिये। वेटा दिटा दिशी अजवाळरे, इसि मेनाव दहे दवाळरे हि॥ जोवा कर्रका सूपने नेप्रेरे, एवं किना प्रकाश बीप्रेरे । सक्तमक्रीन सुरति जोबीरे, जोई विकासीह क्रोबीरे ॥६॥ बसन कतुत बसम बसंतिरे, वे'याँ होत सनुबंध अतिरे । तसनी दिसा होये सन्ता सगरे, रंगसिनी अर्था अबि रंगरे ॥ आ बान्ये विश्वकारी बारि अरिरे, विज्ञान पर हुने इतिरे । बळी जांचे गुनान लान बजारे, संबारे ए समी सोपा-सकोरे ॥८॥ एक मूर्नि बारमां पररे, अकामो से जापानुं जवररे। वसी रंगिवनी चर्चा रंगरे, जेवा जांचा इना सचा नगेरे ॥९॥ मा'लां नहीं यह में लगावंद, पुत्र कृता में सागर बाज्येरे। लेकी पर्या सरवे तीरघरे, जेमां ना'या आंहरि सवरघरे ॥१०॥ एवी वर्तन मजीके जेनरे, काई बीक न राजवी तेनरे। वरि निर्पूछ सर्वे वामरे. तम प्रदे जाको मिजवासरे ॥११॥ बळी समारका मन्दा माधेरे, वक्ता बना भूका योगा बाधरे । वरी दान सनीविक असिरे, शबी नाकरी ने बजी नमिरे ॥१६॥ लेने सांग्य कवान ने तीरर. बारियो करार ने सहावीरेरे । छतर चनर अवद्यागरियरे, एवी सुनि संतरको परिचर ॥१३॥ वटा भाषा आंचनी छोपकर, आसो-बालव विवर बहेरे । विवन बढीन ने बोरमदीचेरे, बीजां वह तद बोरवियेरे ॥१४॥ अंजे वृक्षं केया दिया वाधरे, स्वां त्वां संकारण सम्या साधरे । एवं अंभारतां अशंतिकारं, बाच ब्रह्ममां से परवंकारं ॥१६॥ एव अनेक विशे आ वाररे, प्रमानुके कम्यानन् वाररे। बन्दी बेटा होत अने जागरे, फुलवादी बादी वह बागरे ॥१६॥

<sup>1</sup> mm. 2 trift. 3 mm. \* ment.

वन वचनव एवं आदिरे, दिटी शूर्ति सपासी शयजादिरे। वसी राजा रंडने सुचनरे, वांड सावृक्तारने सहनेरे ॥१०॥ जोचा लोक वरेसने वेगरे, वसी ब्रद्धानमामां वह वेगरे। एम व्यांत्रपां जोचा जसपितरे, वहा सनोहर वृत्तिरे ॥१८॥ कालां संभारतां पनइपा-सरे, सरे जालाने शयकां कामरे। इस मोपुं कर्युंचे कल्यालारे, सह जालाने जन मुजालरे ॥१०॥ जेने आ मने पान्या जनमरे, वधी कोष के वानुं तेने समरे। जेम पारसने कोष पानरे, तेनां मर्चे संबद वानरे ॥१०॥ १० व्यांत्रात्रक्तात्रियालवनकोषकिष्ट्रात्रस्तुनि-विश्वित पुग्यंत्रवाद्यात्रको सम्बद्धाः वदारः ॥१०॥

रेक-एम अनेक रीन्दे बजी दरमां, जे संवारे सुंदर इपान। ने नव हुर रामको, अर्थात अधारपाम ॥१॥ बाताकारी मारी जुरति, वरी जात देवा जावंद । एड शुनिंती स्पृतिये, तथा देव सनना बुंद ॥ भा सुन्वदिषि का संमानमां, सब का कालो जरूर । जुरित श्रीमहाराजनी, दर बारवा जेवी वर ॥।॥ जेवजेव कोषा जनदी-हाने, नेमलेण संचारे संग । सर्वे आचरणवे संचारणां, पाने सुन्य आर्थन ॥४॥ कोर्ल्स्—वसी संभारका प्रवस्थायरे, पुरक्तिम पूरण कामरे। केने देना फुनडांनी माखरे, केने देना बमादिना पाजरे ॥५॥ केने देला बच्छ ने परेणारे, केन क्या वंत्र सुम्ब देणारे। केने जनकण कोडी क्षेपारे, दिखे बाव देखिने हुम्बियारे ॥६॥ केने आपे थे योजा परेणां जारीरे, केने आपेछं बाद बनारीरे। एका दीनवंप वे दणादुरे, संभारमां वाये जो सुन्वादुरे ॥ अ केने मखेले वायमां पालिते, क्रवे समय करे जरण आहिते । क्रेंबे मिठी वाण्ये बोलावेरे, कड़े गयुं जेवुं एवं आवरे ।।।। केने लक्ष इसे निहासेरे, जोड़ जननजा नाच टाकरे। देने बेमारे प्रमुत्री पासरे, देन माथे दरे इरि हामरे ॥९॥ वदी सुरनि अंतर चारिरे, सुनां चेठां हाने हे सं वास्ति । हे सी अक्षरना अधिकारीरे, वाझे निके करी वस्तारीरे ॥१०॥ जाको आच अंग वे मध्येरे, सुली क्या द्याम संक्येरे । अंक जीया जनमें आधाररे, नेमें बड़ा बने बच्चाररे ॥११॥ इसना े जोया जनने आपाररे, तथा बड़ा कर कर करों है। बढ़ी गाता इसता समता भोगरे, दिश जोई है ता बड़ी स्पोगरे। बढ़ी गाता

امان امان استار المان الما المان ال

أعلمك والمراج المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع

बाना ने करनारे, कानु करनां लटकां करनारे ॥१२॥ मीर श्रीर सभीर पिनारे, कामन करना ने भीन परेगारे। एव जेजे रीले जने जोगारे, निरम्धि नाधने नवले सोखारे ॥१६॥ नेनो पानिया परम प्राथितरे, करी अक्षरपाममां गनिरे। जाज अनेक रीले वाविकासरे, जोई सुन्य पाम्या वह दासरे ॥१४॥ एवो मोटो महिमा मुर्तिनोरे, नवीन सुन्व पामवा जिस्तिनेरे । कही कहीने कई जे वर्षरे, भरेड बाहारूप सूर्तिनपुरे ॥१५॥ नोचे जवारच से जेयरे, के'ला के'ला व के'बाप लेकरे। आज बगटाबी प्रनापरे, नार्पा जनेब जीवने आपरे ॥१६। भार्मार्थ सन्तुपी हे स्वारीरे, वावरीहे समर्थ सम्बद्धारीरे. । अनंत वी'वाका अक्षरवामेरे, सम्बद्धायस अधिन-इपामरे ॥१ आ वर्म एकांनिक ते वावियारे, नित्र आजिनमां ने व्यापियोरे। अनुर गुढ क्वनी कियो नाबारे, निज सामर्थिए अविनाकारे ॥१८॥ पुरुषोत्तम योने वधारिरे, निवा जनेक जीव बजारिरे । आप सामर्थि वापरी पणिरे, जोई वटि करणी जीपन-जिरे ॥१९॥ जाज वह जब तारवा आस्यारे, जावी कामी सरजा-नंद का प्रवादे । जे जन समारको सहजानंदरे, ने जन पामको परन वानंत्रे ॥२०॥ इति शेसद्यानम्बनाधिवरणवयप्रसद्यभेष्यसम्बन्धानिकारिके पुष्पीत्रमञ्जूषामुक्तान्दे अल्यानः पद्धार । १८॥

<sup>।</sup> काबु. म सूर्य, म कावित व सहार, भ संकर,

नेनो थया सङ्गी सरसरे ॥ आ जेने मळीया हैयामां पानिरे, नेने वेता से अक्षर जानिये। जेनी काविसे वरणे सामिर, नेनी सामित बची के बाबिरे ॥८॥ जेने बाचे दाच मुक्यो बाचेरे, तेनी बळी बेठा मुक्तमाधेरे । जेने जांचना जाण्याचे जरकरे तेन रच नहि जरन बरकरे ॥ शा अंके अकार बोक्यांचे अगेरे, बयो स्पर्ध पह ब्रमगेरे । जेंचे चोक्रपूंचे तेल कुलेवरे, अनिमारी सुगंपि भरेकरे ॥१०॥ जमे बोक्यू तेन बीजनगुरे, एव स्पर्धाणुं अग जावगुरे । एव स्पर्धानुं कुछ को पासरे, जार्च ने जब अकार पासरे ॥११॥ वळी वपरायमां बाधनेरे, वयो स्वयं नेनो शायनेरे । जंग कोली जवराच्या बीरेरे, श्वदर्यो द्वाम ने माम पारिटरे ॥१९॥ बचा वे'रायमां भया लाहरे, मे आचनार सुचनी धरमरे । चरच्यां चंदन मसीयागररे, सारी सुच्चक कानु केसररे ॥१३॥ कर्षी कुकुमनी चांत्रभीरे, आवे करी वृश्चिमके अलोरे । बाला वे राजनां श्वर्ण प्रयोगे, कुंडल करनां कर अधिगयोरे ॥१४॥ वाजु बेरचा चौचना बाँचरे, बुका करिये लागना पापरे । पूजा करनां लगांणुं दंहरे, तेनी पामका पाम अव्यवरे ॥१५॥ लेलां हाथोशाय बळी लाळीरे, त्यांत्री सुंदर धूर्ति क्याळीरे । बन्धवित्वा त्यक्षेत्रां वाचरे, तथा लायांच वह स्वाचर ॥१६॥ एवरे रवर्श पुरुषोत्तम श्रणीरे, मधी के बाली के अनि वर्णारे । स्वरूपाँ बरकारविंद वाववरे, संदू जनने पूजेले जनरे ॥१ आ स्पर्धा क्या ले बूजवा जेवरि, बुक्यां बंदन शंग थारी लेवारे। बुक्या बार ने वे र-का दैयेरे, केथी अभारवासमां जैयेरे ॥१८॥ केके वस्तु स्वर्गी हरि अंगरे, तेनो कन्याणकारी जेम संगरे। स्थापर अगम जस स्था केंदरे, वर्षा दरिमवर्षे शुद्ध लेंदरे ॥१९॥ शर्या वन्त् ए मंगलका-रीरे, खारे पुरुषोक्तमनी रीख स्थारीरे । बारे अने स्थारी परमक्तरे, तेने परण पाम है सुगमरे ॥२०॥ इति जीनहज्ञकन्त्राजिनसम्बद्धीयक निष्युन्तानस्यमुनिध्यत्वितं पुत्रपायमणसम्बन्धे एकीनविशः प्रकारः ॥१९।

तेता—अकात वसन भ्यन, बाहन बामन तेह । पुर्योक्तमने श्वर्शनां, वयां शुद्ध सहुणनेव ॥१॥ माधिक ने जमाधिक वयां, वयां शुक्रमण गुकार्थन । स्पर्शनां परज्ञकाने, सह वर्षा परज पुनीन ॥६॥ वृक्षी रीत्वे जनिनाशियो, कर्षा अनेक जीवनो जदार । शब वामे

पो'चाहिता, जनवेने भा चार ॥३॥ इरवा स्पर्ण दयाक दई, वर्ष् बोरि कोरिनं कल्याम । तेम परव परमादि वदी, प्रमान्य पर विधान ॥४॥ चंच्यं---दिचा परमाहिता वह वालरे, हवा करीने बीवद्यालरे । भोजन वह भाग्य मान्यवरि, जाप्यां जेवे सजबी जान्यन दि ॥'-॥ पृथ्वि आर्थ साथ नाम दियेरे, जन नगन भन करी लियेरे। बजी जाये मुख्यांकी पायरे, शहर जोजन ने बजी सायरे ॥६॥ के के अब समादि ए पान्यारे, लेली कर्ने मनापने पान्यारे । बचा विजय अब देश राजीरे, पाच्या प्रवासीहीय आव्याचीरे शक्षा बची वेच पानि विधेन है, मेह जे जनने दिचेनहै। मेह जन जाते प्रकारों नहे, नियां पायको सूच कनोमहे ॥८॥ इंडी बडी इच में के चुनरे, आच्या बोनाला अमेन नर्नरे । जे हे अमेन बनावि शानिरे, लामि जमना रोनाने के बा निरे ॥ ।। ने बमारीने परनारेरे, जाको जक्तरे अवर्थन आवरे। बसी चल मुख इस दिवरि, जेजे अने रापोदाप निवरि ॥१०॥ नोता कांच कावर केनदीरे। अधेन ज्ञानकी जेताने जातीरे, जानेची ने बजी जोकानकीरे। वेशी जुला ने मोनरी बज़ीरे ॥ ११॥ जेजे बग्त बोनानी जमनरे, अर्थि जिन्ने जापि आपेनरे। एवी पानानी जे परमादिरे, जनक रीननी जे वृत्त आविहे हुर्श्त केले परिषया के यह अबहे, नेतो पी ला के ब्रह्मसद्भवे । चना चान्त्रेति शन परवेशिरे, दर्श सिंपोद्या सन्या क्यां वे(कारे ॥१३६ वीच यह जन्म कामरिमोरे, सभी ग्रद्धि वसी सकाई नोरे। पोले असि आपी जे जीवनरे, लेग लिपि इन करी जनेरे ॥१ ८॥ लेवां भारत मधी के वा लाग्यरे, यह ब्रख्यों न मार्च जारवरे। बळी हरिजांक्स अस्थासरे, जाप्यो बाब जानि विज्ञासरे ॥१५॥ ने जनवास्ति वान को कहरे, जे शांधि सुन्य वासिया सहरे। एव वह रिक्या मुख्यामरे, वामी वामीया प्रकन्नों ने वामरे ॥१६॥ पीने योगानी प्रमादि हरि, अंग शीव प्रवाशिया करि । दश्या स्परण मे ब्रमाद्रिरे, जेजे जब पाम्या रायजादिरे 🗗 आ नेनो प्या अक्षरचा वासिके, एम प्रदार्थ ज्ञावि अविकाशित । वे वि विविधे अध्याना-हरे, जावा जीव सप्तने व माहरे ॥१८॥ वय अनेवने जो पदाचारे,

والمالم المالم المالم المالي أي المالي المالية المالية المالية المالية المالية المالية المالية المالية المالية

१ हकार १ हर १ कामारी

المائد المائد الدائد المائد المثمائد المائد المار المارات

आप प्रमापे पर वनागाँदे । श्रोटा बोटाने वर्षे हुटीरे, मीने संबंधे अपनि बोटीरे ॥१९॥ एकां कृपानुं काम व रहारे, मीने ए पाम सुनम वपुरे । बेल्पा मोश्रमा श्रोधी वापटारे, नार्या जनमा जीव सामदारे ॥१०॥ ६० अध्यवज्ञानस्वनीवर्यक्रमवर्षायक्रम्यूर्विदर-विते पुरुषोचयक्रमवर्य विवर्धनमः प्रदार ॥१०॥

रोहा-एड रीने अगलिनने, नार्या रोनाने प्रमंग । ने वो पास्ता राजवासमा, सहवे करी शुद्ध अन ॥१॥ जेजे अववे जानजो, भयो अविद्वितो सर्वत । तरम नेव आधिनना, सुद्धि गाग अववत ॥२॥ अनियो सामर्थि आ समे, वायरती व क्यों विवार। प्रदार सने अस्थिया, जब नारवा जग जायार ॥३॥ सुव्यविधि सहजार्वस्त्री, क्षीचि हुन्का आणि प्रमा। अर्थन जीव उदारिया, एव पोनावे वसंस १४॥ केमनं —बोटो परमाप सूर्तिनकोरे, कवी बोटो वे रही-नपी बनोरे । इब पोलाने संगाने सनरे, आव्याचे जे मुक्त जननरे ॥।। तेव द्वारे बदार्था जे अवरे, तेवन चया बास बास्तरे। स्था-क्यां करी मुक्तनी सक्तिके, करी काम जे अने सांधर्जीये ॥६॥ सुधि वान जागी अनि सार्थिर, नेनो हेने निधि हैये पार्थिर । पछी जि'स वारी मधी मनेरे, रका जेले जन वचनेरे ॥ आ लेनो नन नले लेह कारेरे, आये बाच नेक्याने त्यारेरे। नेवि जाये ने योगाने पामरे, थाय में जब पुरजकायरे ॥८॥ क्यी जेने आप्यूं जन जसरे, कंद नुस पान पून्त क्रमरे । एक आपनार जेव अनरे, जाप धाममां थाय पावनरे ॥१॥ वटी हाच जोडि वाचे लागेरे, किछा नमाविन वेसे जानेरे। सुने भदापं चान संनतीरे, बहुपेरे सुपृद्धिवंतनीरे ॥१०॥ सुची वात लिये गुल हैयेरे, तेयच बामना निवासी कहि-वेरे। बळी संबदे कोड सवायेरे, जिस्माबी जाणि रूच आपरे ॥११॥ तेजी जिल्लामांति योगे भन्नीरे, करे संगतिण मा प वळीरे। एकी रक्षात्रा करवारर, एका जब दकार्या जपारदे ॥१२॥ वळी सन ज्ञानि पीलवंतरे, जान माथे आज अन्वंतरे। स्वारां बतब पर ह संग जित्रहे, वाची आह चरावी अविवहे ॥१३॥ नेनी पश हा ें बोबा माधेरे, करे सहाई तबाह माधेरे। एवं पक्षता में लेनावरे, आप के जब पाम मोमार । १४३ वर्डी मानां पीनां मंत जोईरे. الأوالية والرواب المناسات والمائم والمائم المائم المائمة والمائمة والمائمة والمائمة والمائمة والمائمة والمائمة المراجعة والمراجعة و

लियो गुल के आवा न कोईने। जोई वर्तनुं ने बठी नेशरे, सुणी सारो लाग्यो उपवेदारे ॥१६॥ जेने वा पित लागि मन वानरे, राक्यों निंम वह रखीयानरे। लेने तम सुट तनकाळरे, जाने तेववा दीनद्याकरे ॥१६॥ नेने जाने अक्षरमां वासरे, महासुख वामेछे ने दासरे। कर्यो संननो दश्वा स्परकारे, वाया जिहाए सनना जवारे ॥१७॥ नेपल थामना छे अधिकारिरे, वारी वान स्थिति विचारिरे। वान श्रीधुव्यं श्रीभावेत्रारे, नथी वीजे ने व्यापे स्थारिरे। वान श्रीधुव्यं श्रीभावेत्रारे, न में मांभवपुछे मारे कानरे। जाज जीव अनक परकाररे, लह जावाछे जो पाम मारेने धारेशी एम सने कर्युं ने महाराजेरे। राजी वहने राज अधिराजेरे। ने ममाण लक्ष्युं छ हरि, वधी मारा हैपानी में कर्रेरे ॥२०॥ वि वीमहानान्यव्यामिनव्यवस्थानविक्तान्यमनव्यामित्रारं पुरुष्णममप्रवासक्ष्ये व्यापित्रार प्रवास ॥२१॥

रंग्ट्-अध्युक्तपी खुणी सामग्री, नधी के बानि ने कोए रीन। कड़िये हैये सभाप बढ़ि, छ वरी आजनी अगणित ॥१॥ एक पूर मकाको सञ्जे, एक चाक्षि करे चीनज । एक सेम चलाळे दूधकी, बरमाबी संदर जळ ॥२॥ एड एकपण करे पटलं, सहने मरको समास । आर्था अनेक शिन्छ, आष्या उद्धारका अविनाधा ॥३॥ जेव स्वाका बाळे शहाशहते, शहाशह बनाचे मेप। शहाशह समारे न कि. उतार वाय वाय करी बेम ॥४॥ व्यव्य-एम अराज तार्याचे अपाररे, गुणागुण न जोपा लगाररे । जेम मोदो सन्।वती होयरे, तो मुख्यानुं मुल न जोयरे 🎮 तम आज मदावत कोईरे. बांच्यं के तारचा जीव कोट्यरे। पश्च पंची पंचर वर वारीरे, टिया आप सामर्थिय मारीरे ।।६। देव दानव भून भैरवरे, एवं आदि उद्घारिया भरवरे। बीट पन्म पर्जन प्राणिरे, मार्घा अमिन िन्दो आणिरे । अ। जेजे आ सम् जनमांचे जीवरे, वया सन्संग संबंधे जिन्हरे । केन एक काप विकासिकरे, शक्के पीड़ा ने जिल्हों-कनिकरे ॥८॥ नेम चहु चिनामिण होपरे, नारे दुन्नी रहे नहि क्रीयरे । संत संत्यामी सतमित बहुरे, एवे मक्ये पामेले सम

<sup>ो</sup> सर्व - १ महावारी.

मोदुरे ॥९॥ चिनामणि चणिपणि इत्रि, नेनी दान जानि नपी करिरे । बादे इरि इरिना जे दामरे, नेथी पान्यां के ब्रक्तमी ले वामरे ।१०॥ एनुं आवर्ष जानो न कोपरे, समर्थथी शुशुं न होपरे। समर्थ सरव परकारेरे, करे लेले जोजे अन भारेरे ॥११॥ लेनि कोण आदी करनाररे, या होय घणिनो घणि निरंधाररे। माटे सह वाजिलेको सहरे, आक एम उद्यार्था छ करेर ॥१२॥ जेम द्रवा स्परको परमादिरे, आपि लायां नर नारी आदिरे । तम इरिजन लागी गुर्दारे, लेथीवण सदारियां कर्दारे १११३॥ बळी आ समे घरियुं जे नामरे, तेने जपनां जापे अध्यरधामरे । नीलकंड नाम घनइपामरे, सदा सर्व सुन्वनुं पामरे । १२॥ जेड् नामे पाने सुन्व सहरे, पर्वु नाम अनुपम कहरे। सहजानंद जानंद सुम्बदारीरे, एव नाम जपेके वर वारीरे (१६)। स्वामितारायण वारायणरे, अजि के थया पाम पारायणरे । लेमां नारायणमुनि नामरे, पाम्पा कंड् सुन विकासरे ॥१६। इरि इरिकृष्ण कृष्ण के नरि, नर्धा अपार ए नाम स्तरि । एका भाषना भाषी जे स्वामीरे, ते छे अभ्रत्यासना पापिरे ॥२५॥ सहना निपना सहना नाधरे, सहना लागी सुलनी भीरा-धरे । एयु माम जरे जन जहरे, पाम पूरण सुमाने तेहरे । १८॥ हाल हकम ए जास नवोरे, आज असल वहनी वर्षारे। बाको सर्वे वकार के वनोरे. नथी अधन आज विजा केनोरे ॥१९॥ कोइ मां दियो विजानी ओहरे. जमां जाने जाणो जन सोहरे। सरा-लरि ग बाम कोटी नर्थारे, पारेगारे शुक्रहिये जो क्रपीरे ॥२०॥ इति क्षेत्रक जानस्त्राति परणकम्बसे वृक्षातरकु अन्तरभूनि विरुपित पुरुपाणमध्यासः सन्य इतिहाः प्रकारः । ३२ ।

रोश -पुरुषोश्रम पथारिया, वह जीवर्जा करना काज । सर्वे सामर्थिमहित येथि, आज आविया ब्रह्मराज ॥१॥ अनेक उपाये करी हरि, कारी भावतिसे ककी संघ। या समे जेवी जन्म है, देने आविमय् पणु देव ॥२। वासना दरका स्वरकाथी, क्यांचे पहुनां क-म्याण । श्रिक्षोकमा जीव नारवा, यह सदार्थुतं वाणि ॥३॥ पार उनामां परिश्रमनिना, पेकि नामस्पियं नाव। अं जने जण्या जिल्लाी, में निराह्मा अब द्रियान belt पोषाई एको नामनी छ परनापर, والمرابعة والمرابعة

पत्य जे जन जरे आपरे। दुर्ण पुरुषोत्तम शुल्यायरे, नेणे पर्यु सहजानद् माधरे ॥५॥ सहजानंद् सहजानद् गायरे, नेनो अधार पाममा आधरे । सहजानंद बाम जेने मुलेरे, लेनी प्रमापुर जाकी सुलेरे ॥६॥ अंह मुखे ए जाम बचाररे, तेना वामि वया अववाररे । सहजानंद नाम समस्तारे, वधी परिभाग पर उत्तरतारे ॥ आ सद-जानंद बाम जे पद्तेरे, मेनो परोच्या ब्रम्मन्त्रेरे । सहजानंद सबजानंत गामारे, वधी बढण एन पाम जामरि ॥८॥ सबजानंत् सहजानव कृष्टियरे, जाले एथी परवयद सृष्टियरे । जेने सुलंह ए छे रहमरे, नेने व रहे अब अटबरे ।(९॥ सामिनारायण शबदेरे, प्राणि बाल करें के बेट देरे । सहजानंद बाम शुक्य कानरे, तेने जाव्युं के प चाल पानेरे ॥१०॥ सहजानद ए नाल मांनकीरे, जाये पाप पुरवर्षा वर्डारे । शुनि लामिनारायण वापरे, सर्घा दर्ग जीवरा कामरे ॥११॥ काल ए बामनी अभव पहिरे, तेने अक्षरपंत्र प्रचरी-है। माधिनारायकनी कीरनिहे, मुखि रहे नहि पाप रनिहे ॥१९॥ मा-मिनारायणनी जे कथारे, भूजे जाये नहि जन्म नृथारे । जामिनारा-दण माम पर्दर, मांश्रद्धनां आचे सुन्य सदर ॥१३॥ तंत्र आह्य वे वसी सोकरे, सुने अने वीचे हवानोकरे। मानि वास वासिया-में जेंदरे, सर्व कम्यामकारी से नेदरे ॥१४ता स्वास प्रसासे समरे नामीरे, नेती क्यापि जाये सर्वे वामीरे । रहे रमवाए रेक एजोरे, थारा अलंब उथार नेनारे ॥१६॥ नेनी पामेश परम प्रापिति, वधी पर तेमां एक रिनरे। एको नामनको परमापरे, कथा महुपी भ-पिक अमापरे ॥१६॥ जाने अजाको जपको जरते, वरमपामन पामको तेहरे। एकु आज प्रधानको पारे, करता वह जीवने अवपाररे ॥१ ॥ सकार के तां सर्वे हुन्य पामेरे, एकार के तां हरिपाम पामेरे। जकार के तां जपजय जाकारे, मकार के तां निर्वत प्रमानोरे ॥१८॥ इकार के तां जपजय जाकारे, मकार के तां निर्वत प्रमानोरे ॥१८॥ इकार के तां ज्यामा वहिन्दे, पाने पाम सहजानद कहिनेते। व्यामनारायक माम साररे, जेकी जीव नर्याच अपाररे ॥१९॥ कतिआवां कर्युचे पांचरे, रेपुं नारायक परायकरे। नवी एकी वान कलिअगमां कर्युते वा'करे, रे'युं जारायण परायणरे । वधी एपी बान

٣- الما يركب أبر أن أبر أن المراج أبر لما مركب البلادية والمراجعة والمراجعة والمراجعة والمراجعة والمراجعة

क्षीय औरिते, सर करे प्रयास कोई कोटिरे ॥२०॥ इति बीला मानन्दला-विचायकश्रमनकविष्यु-राजस्युविविश्वते पुरसंभगवासासको प्रयोगिसविवया प्रकार: ॥६३॥

रोश-एम आज अविजाशिये, कर्यु सीवुं कम्याम । जे जडे वहि मोटा जोगिने, ने वण अमे कर्षु वाल ॥१॥ इंड इंग्या विना दामने, आरपुं बाल अधिनाता। शोप सन सान्युं नहि, धर्यु वहि देवुं हुलाम ॥६। वर्णी प्रथमक आर्गा, बहसोकाम करनाम । वेह शासन दासने, का वा कोटिक निवाल (१३) राजनवर्षी प्रवोधनी, उरस-बना दिन एक्। अन्य ने क्वे सह जावजो, कर्च श्रीयुक्त करी सर्वेष्ट ||प्रा| भागां--- असेपण आवर्षु प्रकारे, भाषी ब्राम ने कृष्ण कृति। मन महिन विरम्भको बेलरे, अनिमुनी पात्रो भी नेजरे ॥५॥ एव कतुं भारे अविनातारे, मुलि राजि थया सह सामरे । पठी उरसप रवर गहरे, जना सावदा की घटी लहरे। आ पूर्व पश्चिम पनार दक्षिकरे, बाल्यां उत्सवपर नगभजरे । सुच्यो समेयो अवजे जेवारे, करी नाम नेपारी नेकेर (१अ) आष्या बायर बरमान नामरे, न्यामी पूरी पुरुष ने बामरे। वर्ता वांलय वज बानावरे, आस्पा करवा सहवे निकामरे ॥८॥ आष्या क्या जे जब अपारे, वृश्याय हर-वाने वर वाररे। में सहने इरकान दिवरि, जने वंशे निरमी सुख निवरि ॥ भा बेठा सीट सेवे महाराजरे, सीवे दरवान देवाने काजरे। कवा भावे आपे दवाखरे, निय सह जननी समाखरे ॥ १०॥ वे री संदर क्या सोनेरीरे, जोपा जेवी कोचा लामा केरीरे। वेरि पांच जामी अरोजेरे, मीनम भारिको एम मधीबोरे ॥११॥ कमि कमर मोनेरी सालेरे, बांच्यो सानेरी रेटो बालेरे। बर्या छोगा नेमां कुलबरि, लटके लोग सोपा मुलनारे ॥१२॥ कडे कवक कुसुमना दाररे, जीवे परवाळां ने अपाररे । पातु कातु कुंद्रस कानरे, शीने भाग परेणां सोनानेरे ॥१३। यह बीटि कर कहा हो नेरे, जोई जननको सन लोबरे। हैपे द्वार ने हीम साकवीर, मोनीमाबा को ने बळिबळीरे ॥१४॥ एकां बन्द्र घरकाने वेदेरिरे, जुबे सङ्क जनने बाली देशिरे । जन जोई एकी सुरुतिरे, देवे देन बांधेंग्रे जा अतिरे

r ftrit

होश-वळ्युं बालसे विचारियुं, उत्मव करका अनेक। सङ् जन मन्त्रे स्रोमटा, समझाप सहते विवेद ॥१॥ वरसी दरम देव करि, आये हरवाने होय बार । एवी कर एवे मागन्या, मारा अपने जिल्लार ॥६। अन्यस रहेको उल्लाब एड, मधी एक वे बरंगजी वाल । मार्ट उपाप कोलो कर, लेकी काल सह रकीपान ॥३॥ मंदिर करावं घोटां काति, सूर्तियो बेसारं सांच। सुगम सह बरवारवे, कुत्रे स्वरको लागे वाच ॥ता पंक्षां—जियालिय दर्जन अमे देवेरे. बढ़ी समेचे असे आधियेरे। एक अवाय महि समेचेरे, दर्शन विना हासे जब हैयेरे ॥ वा बाट सुर्वियो अनि सारीरे, करी प्रवित दियो वेसारीरे । लेने प्रजे मेच प्रधारीरे, साधी गृही पत्नी नरवारीरे ॥६। वस वासमे कर्यो विचारने, सांक्यां महित कराया ने वध्ने । असदा-बादमां करावि सहिरते, निर्मा बेमारिया बेह पीरते ॥ आ वर नाग-चन सुम्बराइहिरे, पपरा विकरानी भोगकीरे । हे ते दर्शन करती क्यरि, सोटा भाग्य मानवां जो नेवारे ॥८॥ (शेम - मेमलमूर्वि महत्रम्, भीगहलात्त रहाम । स्थमागर संभाव ४४न, रह निरंतर क्षम ११॥ मेर्स देवे मधाई साता. गाम बनान विशेष । अब छाया क्ष पूल करी, गणवंत पुत्र क्षेत्र ॥१॥) बरवाल महिर आदर्युरे, हैं विनो सप्तृती राज्य कर्षुरे । जब महिर खंदर सागरि, कर्य बोलम ह विन्यानों ज्यारावे ॥१॥ पृश्य दिशामां महिर श्रवरे, मांच मुर्वियो हैं विन्यानों ज्यारावे ॥१॥ पृश्य दिशामां महिर श्रवरे, मांच मुर्वियो है सब इरजरे । सन्धीनारायभ जागो ओक्टरे, यनो बेसायी श्रीरण-कोकरे ॥१०॥ वकार विदेशे वर्ण अगति है, यासे वीतात्री जुरति है। इक्तिक देगवांकि राधक्तकारे, जोइ जन वर बाद प्रश्नरे ॥११॥ वसी चोतानी भूर्ति वेमागीरे, तेतो सङ्गी व वह सारीरे। एव सूर्ति संतक्ष करते, सङ् जनने सुन्त व्यवस्थ ॥१२॥ वत्या आसी बरनाल गामरे, वर्मनद्वे कर्य जिल्लामरे । निर्मा वर्षोक्य जाने क्रमरे, आवे प्रस्तवं करे दरपानरे ॥१३॥ प्रस्तव विना एक आवे विनेरे, जावे अनेक जब हरवानरे । जेजे हरवान करे कोय शासरे, तेली वासे प्रवासी न वासरे ॥१४॥ एवं वार्यु से वर्धनंदनरे, लेनी कोण करे कही अनरे। जेनी हुकथ वाछी व करेरे, नेनी जेम बारे नेज करेरे ॥१६॥ आज अवागांत्रे वार्युक्त एयरे, केन् केरवर्ष करको देवरे। बाटे ए बाटे कश्यान जानीरे, कर्च श्रीमृत्य क्षाय बचानीरे ॥१६॥ वधी वान का बढाई साबेरे, साथी तवनां कीर कंकर वार्करे । बारे वह राने नारवा आजरे, आज बाध्याणे वेते सहारा-करे । १ आ नाम। आचीने जीव अनेकरे, बरमाने को बाबयो बसंकरे। जोचा बन्सब सबैगा जगेरे, करी कियुं से कारज नेवारे ॥ देश जेने बरी वंदिरनी सवारे, बन्नी पूच्या सन मुक्त जंबारे। बरी पश्चि कति अने अवेदे, तेने तृत्व कही कीण आवेदे ॥१९॥ वर्त कम छे अक्षरकामरे, वामी बात्रों ने पुरचकामरे । एनी वान से साबी सक कीरे, जीवन्त्रभी में जो सांसर्कीरे ॥ २०॥ की नीमहास्थानकावित्रकः कमक्तिकद्वारकृतात दमुनिवित्तिवी पुरकोशसम्बद्धासम्बद्धे वव्यविश्वः वकारः ॥६५॥

देश- चन तथ्यन वर्धनिरे, बर्ताने वास्त्रवार । ठीव वार ठरा-विया, जम तारवा जीव अपार ॥१३ रामनीमी एकाइयी, धवीक-जी जो वावन । आने वर्गानित ए समे, शहू जम करे दावान ॥२॥ संस् धवंत सी करें, बळी भेळा होय अगवन । नेन् दरवान करती, वाले वरम पर अगंत ॥३॥ बळी मनोहर पर्तियो, परिस्मां भूदर सार । जे निम्ने नपनां भरी, ने वाली जाय भवपार ॥४॥ बोबाई- वन्न पन्य पाम बरताकरें, सारो बाव्योगं सर्वे ताकरें। जेम प्रदिर साम सुंदररें, तेम सुर्तियो वनहरें ॥६॥ निर्मे जम सन्त धायरें, वृद्धिहर्ति हरियुक्त नापरें । जन अम्बद्ध नाये गोम-

Marte #4

लीरे, किया नाच्या पोने जनपनिते ॥६॥ करे ओरा देरीमा एपाँगरे, निये प्राप ने बाब रावनरे । अति अमृत्य अविता श्रीयरे, बेठा वरि करी क्यां समावरे ॥ आ संदर सार्व क्रोमें वे नगवरे, जियां ओपा धनोवर जावरे। नियां जावली एक क्याधीरे, बेटा संनयति वार वार्खारे ॥८॥ आंचा वेले चारेलेके जलांचेरे, जिया हरि बेला विद्योगेरे । येथे वे'यांना मोनेरी पररे, वशी मार्च पर्यों तो गुग-हो ॥१॥ एकी अबेंग्रे के सर्वे आर्थरे, नेवां बचार्य आये मार्थरे। धन्य कृष अनुष ए केंद्ररे, जावत जाय आये संग सहरे ॥१०॥ पन्य जुमिका जारच अधिनरे, यह प्रशिवरणे अकिनरे। परंप परंप ए को'री बजारते, जियां हरि क्यां बहुवारते ॥११॥ वस्य वर ओसरी जांगजरि, जियां राजां बयां अनुनकति। पत्र्य राज्य वादी पर्व-कावारे, जियां जन्यां संय स्थलारे ॥१२॥ ( सापु अनेबी सुनर-के जिहे, संबद्ध कियों ने रोटली कि जिहे। दुववाय ने दूरी के जार है, इरिये हाथे केवाँ वारंबाररे ॥११॥ आता बंबर ने मानपुरारे, रम बढ़ी इब बोलिया बढ़ारे। कर्या बंगलमां बंब बाररे, जन्या संस बयो अंजेकाररे ॥ १४॥ ) एवं भावि बीजां बच्च स्वावरे, जियां जस्या हत्या जनवानरे । पूर्व कर्षे स्थल ए संमारिते, एकएकवी कल्या-नकारिरे ॥१३॥ भारे भाग्य हे ए मुसिनमारे, रम्या राज राजी महि समारे । अंत्रे जब जायगा ए जोशीरे, नेनी चनि सीटी चीट जोकरे प्रदेश लेके जनन्य नाम अवार है, नेनी विश्वे जानी विर्या-हरे । प्रथमों ल जावान निमारणीरे, एवी पनइयाने सनी पजीरे ॥१५॥ बहुनेरे क्याकांक बाररे, अक्षरकारे जावा आ बाररे। यह रील करी बहुनाबीरे, आच्यां सुन्य राजी नवी जामीरे ॥१६॥ जे अर्थे अक्षरची आच्यारे, भंगे मुगन भरवे लाच्यारे । तनपर के लेक् करवारे, कर्ष ए बाम बहु जन लरवारे॥१ आ केंद्र करवी दर्शन आवीरे, केय पुत्रवी पूत्रा मानीर । कैय ओवजी सावीने वापरे, लेनी वई पुरुषा है सनावरे ॥१८॥ वेटा मानेची बहादी बीफरे, हरी देशको बाममां शिकरे । अवदय करवानुं इन् ने वयूरे, पास्या भाग साम सरीलपूरे 67%। तेनी पुरुषांच्या प्रवासेरे, यह पढ़ा-

रिया जन आपेरे। इसि घरते ने द्युद्धं न बायरे, लेनुं अस्थार्य न मामो दांपरे ॥२०॥ वर्ष सीमहत्रातम् वर्णन्यसम्बद्धानम् वर्णन्यसम्बद्धान विविविधे पुरुक्ते समामकासका वे विदेशः प्रकारः । १६॥

रोहा- वरवादी बान वरनावती, कोट विकासी किंपिन। गार्व रीनि गरवालकी, क्रियां उदारिया कमिल ॥१॥ वर्णुयणुं वनद्याम जियां, रही क्यां भागांत्रक काल । लगेन जीव वडा-रिया, बहा निजयकं बहाराज ॥१॥ वादी सुरापी वेलकाशी, ससी । आये शासकाई लेगा । एवा अय पदारिया, आपी आये क्यतेक ॥३॥ वळी कासव समया जलि दर्श, नेमां आदिया जेते जन । ते जनने क्य नारिया, दई वोले दश्काय ॥४॥ वोलई—कर्षा करमाच अनि अचाररे, जगर्जीयन अगभाषाररे । अग्रमी अग्रमी बस्तवरे, क्यो अवजन तारवा अवरे ॥५॥ वसंतरंबसी वे कुन-दोलरे, तेरि रंग वकाम्यो अनोनरे । शयबीमी वकादकी मार्दिरे, नेदि जीजा करी शायजादिये॥६॥ आधमी वस्सवे जाव्या दामरे, राज्या चोमासामा चार सामर। जिला मांचा जाना संग साथरे, जन जोईने चाना सनाधरे । आ ना'ना भीनम करना सीमारे, भळी बळी बोले संग भेळारे। गाना बाला आवला बनारेरे, अन समाचना तेव वारेरे ॥८॥ जमी साचे जमावना जगरे, भारत भाग्यनां बच्च व्यंजनरे । इंता दही दूव ने ब्रावटरे, सारा को सना मोनेरी परेरे ॥९॥ बहुवार धगलामां कामारे, एम अष्टमी उत्सव करमारे । अक्रकोट वयर आवे दामरे, मेने वटी मळे अविनाकरे nt • ॥ द्वार कलारी वृषेशी दियंत, जन नमानी ससल्य कियेते । पश्री पुछे सुन्य समाधाररे, एम आपे सुन्य अधाररे प्रशासकी अनेक भाषानां अकरे, करी राज्यां जे भरी चार्तनरे । तेनी पंकि करी विरुव्यति, जबी जन अनमां बुलश्यति ॥१५॥ निज क्षांचे जमादेशे नापरे, मुकी जन माचे इरि हाधरे। एम आपेछे सुम्य अलेलेरे, तेनी नर अभर सी देखेर गरेश। एवं उत्सवको इना जनरे, सेना आस्य वानी बन्यबन्धरे । बन एमां तो व श्रीय मंत्रारे, केंद्र सर्वन्त्री अंके ए सीबारे ॥१४॥ तेनो प्रश्नमों ने अवि आवरे, जादी विकान

ला समान्तरे । नेमां सड़ो बरको यां कारि, परिष पथा करी करमांदिर ॥१५॥ वसी बसनवंश्वशीए वालेरे, यह सम्बा रंग्या'ना नुमाने हैं । बोने अही गुमानशी कोजीरे, बांबी रंग्या हमा संग रोबीरे ॥१६॥ एक सभा संनारे जे जबरे, बढी समिति करे चित-वनरे। नेने अक्षरपामनुं बचने, जाको प्रवृत्तिको आ बाररे॥ १०॥ कीर कंका राणे जब कवरे, बक्ष सहजाबंद अगवनरे। बाज वह जीव मारवा सारवे, दर्श अन्तवेत प्रवाद इजादरे ॥१८॥ जीव आरोड्रां जावा के लहरे, सुन्ती करवा के सुन्य वृद्धि। इसे जीवने कावार्त्र बीजेरे, का अर्थ् काका रीजे क्षीजेरे ॥१९६ वर्षा वहि वरे केले केररे, बाजि करेवराकी बेरवेटरे । इसि अनावे अवाले 'क-भारे, जावा जावी गयाचे लोगसरि ॥६०॥ की विज्ञासन्त्रासन्त्रास्थितर-वक्तकत्रे वक्तविक्तात्रक्ष्य्यविकारितं पुर्वाचनकाम्बन्धे वसर्वितः प्रकारः ॥ ५ आ।

रोत-गामिये वस्ती शवदृत्वी, जीव वदारिया अपार । ते ने वे व आवे हेमलां, वसी बाय नहि विश्वार ॥१॥ जिल करे नवामका, क्रमद वाचे अहानिका। जोई अब समन सबे, वसी स्नूत व साबे क्षेत्रा प्रथा अभेक आस्पने मोजने, जब जमारे जीवन प्राम । पछी जनावे जगपति, जसे संत सह सुजान ॥१। सत्तर्ववय पदी सी-वृदि, मरी नयने निरम्भे जन । तने तरत तैयार छे, वृदिगम नांदी सर्व ।(ता) योगर्थ-एम अनेक रीन्वे प्रदासामरे, कर्या वहवह जीवनां काजरे। बळी करवा बहुवां कन्याजरे, शुद्धं करियं द्याम सुत्राकरे । ।। कयाँ कुनाशाविना सथैयारे, नेका कोइपी न जाय कै'वोरे। सक्रवा संग इति वक्त सङ्ग्री, आश्या बीजायम जन पहुरे || काले के दी अंबर अमृत्य है, जा में वायना वेचवर्ग कृत्य । हैव शार अचार गुमानीरे, काले अति सुंदर अजाबीरे ॥ अ एकी जुरित सब आचनरे, हमे जबने साचे जीवनरे । हाचे तह योगे बीचकारिते, जाने रंग मोरगनां बाहिते ॥८॥ वसी वपर माने शुकालरे, तेले सच्या पाच रण लागरे। माले सच्या ने रंग मोरंगरे, तेज रंगाय बालानुं अंगरे ॥ भाग युनाननी मही सोबीरे, वाले अमनर रमे होलीरे । एका दीवा जेने इस अर्थि, तेली मया अच-

जक तरीरे ॥१०॥ एवी लीका करेचे महाराजरे, तेनो मह जनमा सुका काजरे । के वो सुकाबों जे सामारकारे, नेज संमार्शमधु नरकारे ॥११॥ एव सह जनने सुम्ब धावारे, चाल्या रंगे रमी नाथ नावारे। नाचा नाथ साथ सन्ता सहरे, एवं समानी की बान कहरे ॥१०॥ ब्रोजे सच्या बच्चे पत्रइयामरे, जोयर जेले वेल कर्ष कामरे। ब्रोजा वह प्रकारमी वनीरे, एवी रीने रम्या हुनाकनीरे ॥१३.। वर्णी आवी राजनीती दवीरे, संबारमां सहने सुन्तनुदीरे। बदया जन इजारी इजाररे, सलसंगी कुमंगी अवाररे ॥१४॥ तेनो सहते दरवाद थयरि, इर्यान दिना तो कीय न रखारि । जीवा जेलेजले नयने नावरे, तेनो सर्वे वयाचे सनावरे॥१५॥ तेनो अवनांदी वहि अमेरे, वस इयाने वार्युष्टे था समेरे । जब अक्तना लाखा काजरे, वर्षु रण लीपुंछे बहाराजरे ॥१६॥ बाटे ब्रह्म स्वरका ब्रहनेरे, ब्रह्मओं से जाबाचे लईनरे । बळी एकाव्यी कविला बंदरे, दीयां दर्जन योने करी पठेरे ॥१७॥ लाजो लेजे लोके शीघो लावरे, जिर्कि नयने अमोहर मावरे । एवं वर्षांचने बरलायेरे, जाय अक्षरपाममां आयेरे ॥१८॥ एव सोर्यु कीपूछे सहनेरे, आज नारवा जन वहनेरे। नपी कोना नरमा ने सारारे, अकरमा जायके एक पासरे ॥१९॥ कर्मी चालतो मोश बारगरे, भूमियकी ब्रह्ममो'ल नगरे । आवे जंग-काळ माच आपरे, तेवी जापछे जिल्ल मनावरे ॥२०॥ १७ वीमहण-क्रम्बाभिकरणकाष्ट्रस्ट विष्णुकारम्बुदिविद्विते पुरुषोत्तका स्तराक्ष्ये कहाविकः PRINCIPAL INCOME.

देशा-एय उत्सव करी हरि, करिकरि निये दरशान । अनेकने सुक्त आपना, अनि पोलेंग्रे नरसन ॥१॥ अदा मनोहर प्रति, करि- सुक्त सम्भानंद । सन् जनने सामद्वे, जाने आपं मारो कानंद ॥१॥ के'री आप्या बहु ले'रमां, जिन मे'र करी मेंरनाम । दुःचीया शिव सुन्धीया कर्या, बळी वावी कर्या पुरुषनान ॥१॥ भाग्य मोरो ए मुम्मिनां, जिर्चा हर्यो कर्या हरि चान । पान्त वर्ष ए इथवी, हिर बरणने प्रताम ॥१॥ भोगदं— धन्यपन्य उत्तम हर्याररे, जिर्चा थीले रक्षा करी प्याररे । दस्या अस्या जम्या जिर्चा नाधरे, जन्यो महामुक्तनो अस्य साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा सहामुक्तनो अस्य साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा सहामुक्तनो अस्य साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा सहामुक्तनो अस्य साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा सहामुक्तनो अस्य साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा स्वापालका साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा स्वापालका साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा स्वापालका साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे, जिर्चा साथरे ॥१॥ घन्य ओरका घन्य कोसरीरे ।

इरि बेटा सभा करीरे। दिये इकांट वीने कामकरे, जेने नेतिनेति कें जिनवरे ॥६॥ एवं मुक्तिकालों मोटो जास्परे, जभी जानजी ए कथा साम्परे। कथी चोक बळी हां बचाणुरे, खेन वैद्वंड सब सबू आणुरे ॥ आ चरण रजे अर्था अरपूररे, स्वरको रज करे दुःच दूररे । नियां वादी तजे कोई प्रायदे, नेयम वामे यह विश्वापरे पटा। स्रोय अस समान अवनीरे, क्यी क्या स्परक्षे कवनीरे । वस्य केरी कजार ने हाटरे, बन्ध बन्मल गंगानी काटरे ।। शा बन्ध शहपुरवा वर कर्मारे, कर्ण अंकिन जुनि के सपक्षीरे । वन्य वादी बुक्रमी कांचरे, वृति स्वर्श विना नथी कांचरे ॥१०॥ धन्य कन्य नाराय-जहत्ते, सह प्राणधारी मुख्यप्रहे । क्या सीम श्रेष क्या सकारे, कर्या वृदिष परित्र संपद्धारे ॥११॥ चन्च वेहानदीना घाटरे, कर्या वंच पवित्र शा'वा साहरे। निया के के कव जावी मा'बारे, नेतरे अंतर बाच्य शुद्ध थायारे ॥१२॥ ना'दो जिरमध्य जल जेवरे, परम वामने वामके नेवरे। जियां ना'याणं जन जीवनरे, एथी नथी बीर कोय पायनरे ॥१ ॥ पुरुषोत्तम स्परवानी जे पस्पूरे, म ससे क्यांन्ति करे ने अस्तूरे। वह देवा वह नाम घररे, वर्षा स्वर्दित विश्व सुंदररे ॥१४॥ जियांजियां दिवयां वालमरे, वर्षा वर ले वैकुंड समरे। स्पर्शत जास्ये लागे कोच नवरे, जाच प्रकाशे न नेतृ कार ॥१५॥ एम बारी काच्याके अस्तिवादिरे, करवा बहुने वामना वासीरे। निजवजने बनारे करिरे, वह श्रीवने नारेखे हरिरे ॥१६॥ मह साथ विचरे बसुधायरे, बीओ अर्थ अथी एवे कांगरे। अर्थ एक श्टारमा प्रामीर, आध्या इयाम ए कामे लियो जाणीरे ॥१आ सारे जियाजियां इति रचाते, जेजे व्यानके बोने इति गयारे। तेनो स्थानक कम्यानकारीरे, अंत्र ओयां ने रामवां संमारीरे ॥१८॥ ए छं शोपका इनकी दोलकरे, सह मानी संजो बात सन्धरे। इरिन आधर छ आज भनिरे, कराववा वानानी भाषतिरे ॥१९॥ एज अर्थ करवांचे लिट्टरे, जीव नारवांचे वह विट्टरे । एवं साद आख्यां आ पाररे, तेना निश्चे जाणी जिल्लाररे १६०० १थ श्रीन-ह्याक्रम्भावि राज स्वास्थवस्थि कृतान्त्युविवर्शनः पुरुषे नमाधासस्य एको-वर्तिका प्रकारः । २ १तः

د از برا برا برا برا برا برا در از برا برا برا براید ایراید از برا در ۱ مازید از براید از در ایراید ایراید ایر

रेश-वक्रमुं वानमे विचारियुं, आंदि मंदिर करीए एक। आंदि बेमारिये जुरनि, अनि सारी सहची विशेष ॥१॥ नववे नहाराज कर्चु रका, एक जाकेछे सब्द अन । मारे भट्टिर कराविए, वर आवी करे इरवान ॥२॥ जुरुति हुन्ते अनुष्यानं, क्षत्रो कोटिनं कल्याण । एक बलाव बनाय के, एव बोलिया इयाब सुत्राम हो। सुनी संत राजी बचा, राजी बंधा सह दरिजय । वर्ण कोई वंदिर करा-वना, अनि वनावई भगवन ॥४॥ वोत्तई—कर्ष व्यान मुहुने वरि इ।वरे, नियां इंत्रण इनो संगावेरे । ताली वार्व रायो वर्षि कर्यरे, एम जाने शहिर जान्यूरे ।: ।। शांशी करनी वर्ग नैपाररे, बजी वजी नागी महि बाररे । कर्यु मोड्र बहिर वे बाजरे, करावियं हेतेशुं हवाकरे ॥६॥ वयं संदिर पुर जे वास्रे, माहि जुरति वय-राबी ने बाररे । गुमलागर जे गोपीनावरे, तेनी ववराव्या दोनावे हायरे ॥ आ राजासदित गोले अनिमारारे, के जुने तेने सामेछे प्यारारे । एनो बासुदेव अगवानरे, जे सुवे ने वाचे मुननावरे ॥८॥ ए के सोपीनाचनी खुरतिरे, एनो सुंदर को लेखे जिन्हें । एवी भूरति एव वचरावीरे, सुंदर मंदिर सादं बनावीरे ॥९॥ वांध्यं वास इवासे सब बाजरे, में र बरीने बाने महाराजरे। बंब देवाने बरवा कन्याभरे, वर्ष काम ए इयान शुजानरे । १०॥ जेजे जब करे इत्यापरे, भारति जोई थाये मगबरे । करे इंडवन वरणामरे, नेनो वो'लाछे परम पासरे ॥११। वजी सब कर्व ने वपनेरे, निरक्या मोपीमाथ से अवरे। नेतो पामको जक्तर पामरे, वाको जन ते पुर-जकायरे ॥१२॥ एव इया करीने इयाक्षेत्रे, क्यों कन्याच बहुनां आ कालेरे। कोड भाग जभाने बाज अंतरे, आने हरि नेहना नन न केरे प्रदेश आचे करी करे के अगनिरे, तेनो पाव परम पाय-निरे । जन यन बाहर यमनेरे, बामण ज्यमादि पूप्पा अनेरे ॥१४॥ फल कुल आदिक जेहरे, देने करी आपे जब नेहरे। कुलुम हार लोगा ने गजरारे, चाजू कातु कुंदब गुछ व्यारे ॥१६० जापी माभवे जोडिया हाडरे, तेलो धई चुक्याछ समाधरे । बाय सेवा ने सर्वे जो रीनेरे, कर्षे अस देने पोने बीनेरे ॥१६॥ कर्षे काम प

والمراسا ورايرا وقورا والواجز وأواجز والماد فواجه والمادي والمناط والمادي والمادي والمادي والمادي والمادي

<sup>1</sup> helberere.

बोई बहाराजेरे, सह जीवना कल्यान काजेरे। एम बहुबह कर्यां इसायरे, जीव हाई जावा बान नांपरे ॥१ आ सेनो आहर है जाहु जासरे, वधी वामना एन विद्यारामरे। जाने वांधी बाम बनांप-नांरे, कई बार अवार मोशनमारे॥१८॥ बार वर्ष ने आमन बाररे, सह बाने अवज्ञा बाररे। मारो आववानो अर्थ शियरेरे, व्यारे जीवने संकर रियोरे ॥१९॥ नवपुर मिर्टरची अवाररे, कैव जीवनो वर्षो पहाररे। जाये विये रहे खुवी रमेरे, आवे नाथ नेवना अंग क्रमेरे ॥१०॥ एने बानहज्ञानकातिकालकावकोरकनिकालकावृतिकिर्यने प्रमोत अवारकावकात्र विवे प्रमोत अवार। ॥१०॥

रोश-अच्छो व जाय नवपुरती, बाबी आ'त्म्य ने महिनाय। त्रियां संग इतिजय सब्द भवी, वसी विरुष्ये वाच सदाय॥१॥ सन-संती कई आहते, क्यां दर्शन गरहे ताम । दर्शन विना कोय हे-वार्यो, मधी रक्षां पुरुष ने बाव॥२॥ अवस्य बबवा जववा जियां, वसी आप्यां शतीमां वर्ष । ने वरण विसे विनवनां, जानी जावे जम्म ने मर्ज ॥॥॥ बहुपर परमादियो, अजि ईयां मधीछे जबर । तेनं बसानं बोलवं, एथी बीजो कोण जसूर ॥४॥ योगरं पती जीतवरी एनं कार्य, तेनी जायके की संनावरे। बजी जेने कर्य जगनानरे, वर्ष सांभक्षणो तेनी वानरे ॥५॥ सोरव देवावासि जन कांग्रेरे, कराबिये अदिर प्रकाराजेरे । जोई जीरनगर वाई जान्यरे, दिही देवस करना भारवहे ॥६॥ जावर्ग जा जारवे महिर धापरे, तेनहे बोटो वर्ष विवायरे। मोडुं बोबर लीरच बसी मोडुरे, जियां आचे अनुष्य कारानकोपुरे ॥ आ तेव सबूबे थाये व्रशानरे, तेथे करी तरे वस अवरे। बळी देशमां सारा सलसगीरे, अंदी श्रीत बनुमां अस्तीरे ॥८॥ सामी रामानवृत्तीना शिष्परे, वेने हरि जजें इमेरारे। सह सिद्ध समाधिसंपत्तरे, अदि अनेच जानो ए अमरे ॥ १॥ वळी मर्गव अमे एवं बेकारे, नहीं नमा वर्गाने वेचरे । जोई पवित्र देश वावनरे, पणुषणुं भानी गर्थ अनरे ॥१०॥ पणी नोभी रचा लोश गायरे, करवा अनेक श्रीवनां कामरे । करना बहुवहु असे बातरे, सुकी सह धाना रक्षियानरे ॥१४। वळी हेवा-

a libraria.

क्षता परतापरे, बाव समावि रखे संतापरे । समाविये सुन्नी तर बाररे, बा'वे समाधियी कोइ वा'ररे प्रत्या कोइ सरपुर अक शोकरे, कोइ रही जाय सल्यमांकरे । देने कैमास में बहीयगरे, कोइ देले छे छुन्त जिरकरे ॥१३॥ देले लगे कृत्यु ने पानाकरे, एवं देखावना ननकाखरे। कोइ देखंचे गोनोब बाबरे, जोई बारेचे पुरणकामरे ॥१४॥ कोइ अक्षरचाम अवलोकरे, जोई मीरचकी ने व सुकरे। देनो पर वे पोलानुं समरे, देने बाद पास्पर जनरे ॥१६॥ एको प्रगर कर्यों तो प्रमापरे, सी अब करवा निक्वापरे । रखा ए देवार्या अबे क्युरे, सबूदे दर्शन वर्ष अब मनुरे ॥१६॥ नेव देवा-लांगी वर्षे दासरे, अन विना क्यांछ बदासरे । बारे लंदिर वाच क्य सार्थरे, क्यां वह के नमने जमार्थरे ॥१आ बारे कीरणगढमा जरि, करावुं अंदिर सुंदर सर्दर । वधी संदिर करवा काजरे, बोक-ल्या के मोटा सुनिशामरे ॥१८॥ कथीं जादर थावा देवलरे, अनि सरस जनुर अकथरे। वयुं वीकाक दिनमां नैवाररे, व्यानी वयार्था माण आबाररे ॥१९॥ संतो जुनियो सारी सारीरे, सारे वाचे ह विष् वेमारीरे। एवं जूर्नियो व्यक्तिमापरे, के'ला केले केले व के-वापरे ॥१०॥ वर्षे बीसहवाकन्याविकायकस्य वेकविष्युक्तकम्युविधितिको पुरक्षेत्रकरकालयको एकविका क्यारः ॥३१॥

रेश-वर्गी संदिरमांडी व्यक्तियों, ववरावी करी वर्ष होता।
शुक्कारों ने व्यक्ति, अति वारी सुदर वोश्वित ॥१॥ स्वयमा संदिस्वा वजीहर, जोया जेवी से जोड़। त्रेमे करी वयरावियां, शिक्सस्वा वजीहर, जोया जेवी से जोड़। त्रेमे करी वयरावियां, शिक्सस्वा व्यक्तियां ॥६॥ पूर्व दे हे वयरावियां, रावारम्य कृष्ण कृषाम।
व्यक्तियां विश्व वारवती सुष्टकः । त्रावाति वृष्य वजी, समी
वयरावियां, जिल वारवती सुष्टकः । त्रावाति वृष्य वजी, समी
वार्षावियां, जिल वारवती सुष्टकः । त्रावाति वृष्य वजी, समी
वोशे कि अनुव ॥४॥ वेषादं -गुंदर व्यक्तियों सरबी मारीरे,
वोशे पदिरमांय वेसानिरे । जोया जेथी मृर्क्त जुनेगहरे, जेले जुने
वेशे लाग रहरे ॥४॥ वशी वोशे स्वर्ति व्यक्तियां है, वार्षावि शुनेवहः
वार्षारे । करवा अनेक जीवनुं कल्यावारे, कर्तु काम स्वाम सुजावार्षारे । वशे कल्या क्रिन व्या भागिरे, वार्षा हर्षारे सो वर्षाविरे । वशे क्रिन क्रिन व्या भागिरे, वर्षा वार्षी वार्षा अभ्या
वार्षारे । वशे क्रिन क्रिन व्या भागिरे, वर्षी वार्षी वार्ष अभ्या

इनारे ॥ आ अभी योनं जलाविया जनरे, जावे वीरकियुं अनवनरे। करिकरी केरचे जोदबरे, दिये बोच माने कोए एकरे ॥८॥ अनि हेन है हरिजय वाचेरे, बादे अवादके कव हाचेरे। एव अवादि-रचा जन क्यारेरे, मक्या सबू संतने ने बारेरे ॥९॥ नबी वर्धरे संत वाचे पच्चारे, पळता जाच रेपनाचळ चळारे। एव हरे करे करे कांहरे, सञ्च जनने से सुन्यहरहरे ॥१०॥ संदिश कराय्य के बहाराजरे. सबु श्रीयमा कम्याम काजेरे । बोइ जाबी दर्शन कर्शेरे, लेलो अवार संमार नरवारे ॥११॥ एव बोटो कवी वयकाररे, वक जीव नारचा जा चाररे। पांचम देशि करचा पुनिनरे, कर्य प्रदित लाई शोजिनरे ॥१२॥ वजी संत्रवे जापी जागम्यारे, रेब्रे विश्व जाहि बाच्या विवारे। वरवोवरच एक जासरे, करवी भा वदिस्वाहि वासरे ॥१३॥ एकी जानस्या जापी इपांबरे, तेती जानी तिथिने बरांबरे। बळी करी के बेलनी बालरे, लेके सब बचां रक्षियांतरे ॥१४॥ कहे बा देश के बहु मारोरे, शहू अब बनमा विचारोरे । हैपाँ रामानवृत्ताची दे'लारे, जीव बहुने मानवदान देनारे ॥१५॥ सीरड देवानरे सर्वे सामरे, तेलां चने में पूचन ने बामरे। ते सहने ब्रकार थयरि, कोइ दरकान दिना न रखाँदे ॥१६३ वळी अमेरण जो होरदेरे, सरवे कर्या जीए सारी वेदेरे। सबू आजेडे जमने जनरे, वसी भवां के सबने दर्शनरे ॥१ अ। जेने जवके अकार्य नामरे, नेनो रामनो पाय पायरे। बळी जा भूरति जे बेसारीरे, ते जिरुवाने जे वर बारीरे ॥१८॥ तेवे बीद राजी ओइए बाबारे, जाने बचानी ने वर्ष बंदारे। एव वारीने आच्या क्षीप असेरे, सन्द वानायो सां जब लगेरे ॥१९॥ जा बारनों जे अबनाररे, एको व बाये बारव बाररे। बधी जाक्या ने कावड़ां क्यांधीरे, जन जाकड़्यों सी बन-क्षांचीरे ॥ १०॥ वर्षे जीशहजाकावृत्वाविकामकसम्बद्धेकालिक्युक्तकाव्युविकिर्द्धके पुरुषोत्त्रवाचाचावाववे इत्त्रीयाः शकारः ॥३२॥

रोवा—पनी बाल बालमें करों, वहीं वृति हैये वर्ण हेता। सुनी बनन मुनि धया, बची सलमगी समेत ॥१॥ आधार्य पास्या सह अंतरे, एवां सुनी बानावां बेच । आणुं जीव बदारवा, आप्या

१ संबोध: १ वर्गके

बार्व इयाम सुम्बद्धमा ।। भागचारी जे अवस्थि, ने सदुवे नेवा लवाम । एवं आग्रह परमां, वन्तो बनो करे परस्पाय ॥ १॥ जोई बहाराजनी भरती, वाप कोडी कहे हुनिरात । जेव कही तेव करिये, के को क्या करी वृति आक्र ॥४॥ योग्यं—सारे माथ करे सुको संगरे, आज लारका जीव जनगरे । बारे जेवजंग जीव गरेरे, एव करपुछ सहने सरेरे । ना बादे क्योदेशमां देशकरे, मांदी सारी चुर्नियो सपळेरे । एव मूर्निमां दुर्घम करहारे, नेनी अपार काशी वद्धरपारे ॥६॥ जाको एवं बचाय के आरीरे, सह जुबो अवमां विचारीरे । मारे कष्णमां मंदिर करचुरे, बाव माधीन चार वनरचुरे BMI एवं सुनी सन साम थारे, वर्ष श्रामां मंदिर लहरे। मादी वेदायी जरवारायकरे, कव्यटेश तारवा कारवरे ॥८॥ वसी प्रोक्क अंदिर कराबीरे, लेमर्र जूर्ति सारी वयराबीरे । एको करियो एइ वचायरे, जेंथे करी अब सुनी वायरे ॥९॥ ( बोरतीयनोहर वृतिक-कारे, योने औरती वर्ष जांत वसरे । जीव अनंत वहारचा काजरे, आच्या को धनीवार छन्न समाजरे॥) करावियुं र दाज संगराजेरे, वह जीवने तारका काजेरे। वसी बाच के वहंद्रं अमेरे, करको थाय तो मंदिर नमेरे ॥१०॥ वर्णी संन ओई आई जारवारे, देशो-देश देश करका लाग्यारे । जेजे देशमां देवळ पर्यारे, लेले देशमां अब जे स्थारि ॥११॥ नेनी कत्सव सबैया वाधरे, जावे सबु धरवाने साथर । करी दर्शन बसुझ वायरे, तुले लाध्यनारा-यक सावरे ॥११॥ सेनां काधिमारायक मामरे, बाव शह सह वर कामरे। व्यक्तिमारायण बाम जेवुरे, अधी कीर्य बाम की। एक्रे ॥१३॥ मादे जे अवदो ए मामरे, लेला पासको ध्रक्षर गामरे । एमा ए नामनो परनापरे, प्रगटाच्यो वृथवीपर जापरे ॥१४॥ यह प्रकारे करचा कल्यामरे, माथे पारियुक्ते निरवामरे । मारे केंत्रे कियाओ करेंग्रे, तेमां अन्त जीव नरवरे ॥१५॥ एव जीव जगनना सहरे, क्यों मारचा वयाच बहुरे। वह चयाचर्या के जानी गगारे, में सह क्यों मारवा वयाच बहुरे। यह वयाचार्य के जावी गगारे, में सह अवचार वयारे ॥१६॥ यह अर्थ जांच जावियारे, करी वह जीवपर देशारे। आज जक्तना जीव के कहरे, नयी वस प्रमायभा नहरे। ॥१आ अशिकामधी वायरीके जाजरे, जावी पुरुषोक्तम सहाराजरे। अववार बचारे ॥१६॥ एव अर्थ जांच आविचारे, करी वच्च जीवपर الا بالمهابية ما بيا يراميا و المرابية والمرابية والمرابية والمرابية والمرابية والمرابية والمرابية والمرابية و وي सबू वार सहुवे सरेरे, जाज एवी सामर्थी वायरेरे ॥१८॥ जेजे जाजवो तेने वजाजवारे, विज्ञा जन तेष्ट्र श्रुं सामग्रेरे । तथी वात जेवडी ए वातरे, एम जाजेने संग मामानरे ॥१९॥ तेनो वर्षे वर बजावीरे, जोजाजोजी को विगति वाबीरे । तेनी वनीति म परे केनेरे, मा'ने जातीकिक सुन्य तेनेरे ॥१०॥ इति बोज्याजनकानियाक-कारनेवस्तिक्षकान्युविविद्याने प्रयोगनवश्यासम्बन्धे प्रथक्ति । स्वारः ॥११॥

रोश-वजी श्रीवृति के' संग लांगजो, मोटां करावियां सहित। तेवां वेमारि जुर्गात्वो, श्राति सारी संदिर ॥१॥ अंते वेको संदिर क्यी, तेते देवाने आक्यां काम । इने शरने देवाने जाते. एक र्वजाविष् सार्व वाम ॥२॥ वेशी वरेशी वर्षाव करे, नेवां बजाववा वकी पाप । एक्ट संदिर एक करमूं, एक कोल्पा श्रीवृद्धि जान ॥३॥ भाग्य समावया भागमां, प्रोतेरे नांपिए पान । तेलां वेसारिये मूरति, अति शोजित संदर दयाम ॥४॥ योगर्थ-एड बंदर संदर साकरे. जिया कार्येष्ठे लोक इजावरे । निया विशे करवे एकरे, सार्व सहबी बची वहांकरे हिना एक बाबे करी निरवाररे, पूछप् पुंजानाई वे ने पाररे । सुन्ते पुण्यवाम पुंजानाइरे, करिये वर्दिर वालेश कोईरे ॥९॥ वर्जी सनसमिने कई इचानरे, की नी बोलरे वांधिये वासरे। सह बोनो हुइ भावे करीरे, एवं वृतिजनने कहे इतिरे ॥ आ स्वारे इत्याने जोका इत्यरे, धन्यवन्य कहे लहा साथरे । काने भारत बोड़ को अभावरे, करो महिर तो यह सावरे हटा। विदियों जोने सदाराजरे, रहे संनवी सद समाजरे। हरता करता इर्चान पायरे, कति कोटो ए तरन के बायरे हैं। वनी एनी बीजे कांद्र सार्थरे, दर्जा अनि बहुते लगावरे । दम कोल्या सनसनी सबूरे, सुकी बाब राजी बया बहुरे ॥१०॥ वटी आच्या छानियाँ बरवरे, अंड बरव अवअय इरवरे । कर्या निरंधव वापी वानीरे. क्यों कान ए न्यी के वानीरे हरू। कर्या प्रकारों नगा निवासीरे, राजी भई आपे अधिजाकीर। पत्नी कर्स सह याई आहरे, रेजिंग विदरती संया वर्षि । १२ वर्षी पूर्तासाह के पविषये, अनि वाचा वे कहना विकरे । जेने जन्म सुन्य नाम्युं क्षेत्ररे, पंचविषय साथे राज्य बेरदे ॥१ ।॥ अन्न पत्र वे अन्यूष अंहर, कर्य हरिक्सपण नेहरे । हि الإرامية والميامة ماسامة ماسامة ماسامة والمامات المامات المامات المامية والمامة والمامة والمامات المامية والم وا वनां अनि वन्तर इंपनिते, करी इति व वर्ण संपनिते ॥१४॥ वन्य वन्य अन्ति आह्यानीते, नेथी जनि अधिक वाईयोनीते । एवा अन ओह अद्धावानी, वहु राजी जया अगवानते ॥१५॥ वीठा इतिजन ठावका दिकते, एक एकवरी जो अधिकते । वधी वोज्या इयाम सुन्वता है, कर्णा जित्र जनर जाहिते ॥१६॥ सह संवासोई नमें ते जाते, आलो सोटा वरमार्थ के ओरे । यांधी उद्धारण जान्तु कोहिते, एनो नवी कमाणी कांद्र वोहिते ॥१ आ विज्ञां कोटिकोरि करे दानते, ना'वे जीव उद्धार्ण ज्यानी वायते । जेवी अनम मरण दृश्च जायते, वामे अन्यवद् श्वामी वायते ॥१८॥ एनो वास्या वासो आहिते, समु सुवो सम्मा विवारीते । एव वोने वोस्या वर्षाकते, इर्णकाम जे दुवचो सम्मा वासो है। एवं स्वाम को वास्या वर्षाकते, इर्णकाम जे दुवचो सम्मा वासे ॥१९॥ नके सांभक्तो सी मर जारते, जमे क्योंके जे जा विवारते । एवं सुवी इरक्या सम्मा जनते, समुद्रावक स्वामी वन्त्र वर्षाते ॥१०॥ इति औत्यामनस्थानवस

शेश-वर्ण असवेते आगत्या करी, मंदिर करवा मार । इपां मंदिर करवे, जियो असे वार्डाण वाट ॥१॥ सनि वक्त छे आ मुस्तका, बोरा करववाळी सरवर । ओएं सामान्य आनं नधी, सन सने जानतो जकर ॥२॥ जियां वेसी असे समिया, वसी सक्तो वोतियो सन्दर्भ । असे विचारि जीवर्मा, कोण आवे आ मुस्ति तुन्य ॥१॥ आदे मिदर आदि आरंभो, अति वरे आणि आनंद । वादो सरस सन्दर्भी, एम वादि या महजानंद ॥४॥ वेपरं— वर्ण आवृदि होपूरं, पणी मंदिरतं काम छीपूरे ॥४॥ वाप सन्दर्भ नाम पूर्व लान्येशुं कीपूरं, पणी मंदिरतं काम छीपूरे ॥४॥ वाप सन्दर्भ नाम पूर्व लान्येशुं कीपूरं, पणी मंदिरतं काम छीपूरे ॥४॥ वाप सन्दर्भ नम स्वार्थ, वाले प्रार्थ हिमा सुदार्थरे ॥३॥ ओह मंदिर माम वपारं, मासंसर्ध कर्ष के स्वार्थ । इसे वेपारिये जो स्वर्थिते, राधा इत्यार्थ कर्ष कर्ष कर्ष । इसे वेपारिये जो स्वर्थिते, राधा इत्यार्थ कर्ष कर्ष कर्ष । असे प्रार्थ कर्ष कर्ष कर्ष । असे विद्रार्थन वालेरे, मदन-संदर्भ प्रार्थिते ॥८॥ वदनमोदननी ले मरितरे, तेनो सुंदर चोनेरे

<sup>1</sup> MARKETON

व्यक्तिरे । क्रेक्के विश्लो वयणां भरीरे, तेनु सम चित्र निये परिरे ॥९॥ एवी जुरनियोके कति बारीरे, वित्वक्रीने वक सामे प्यानिरे । केवनमुं क्या लोहे सनरे, स्वारे बीजा व सोहे केम जनरे ॥१०॥ योगासामर सुन्वनी व्याणीर, एवी अर्थन वधी जो बन्धाणीरे । जोई जोई क्रम क्रम लो क्षेत्रे, प्रया सञ्चलोहत जो क्षेत्रे ॥११॥ क्षा सन्ते-हर जे भूरतिरे, मेनरे बंसारी करी इन वर्तिरे। कर्षी मोटो प्रमाप वृत्त इतरे, सबुने कराच्यां कोजनरे ॥१०॥ क्यों समैयो वह नारोरे, शास्त्री मेनी सबने प्यारीरे । जम्या रम्या सन करी रीनरे, परि-पूरण पया सन्द्र प्रीमेरे ॥१३॥ जाणी जम्या में इतिब दायरे, संग सर्वे सनसंगी साचरे । के की। कश्यक्तर वाविष्रे, तेनी अस्पा विना वहि रहाँरे ॥१४॥ अध्या सङ्ग दरसवर्त अवरे, एवी समैपी क्यों जनवबरे। अंत्रे अभिया जब जब एवरे, यथा शोक्षावाणी तम तेहरे ॥१६॥ वसी क्यां जंगे दरवानरे, तेली थया परम पाय-बरे। क्यो क्यों मोटो क्याररे, जगतीय तात्वा वा बाररे ॥१६॥ मुत्रनि वेलारी सारी संदररे, जनिकोशित बदा मनोहररे । विज्ञान कती पुरवा जावारे, मृति वंसारी धांतरे वासरे ॥१ आ करवा अवेक जीवमुं कल्याचरे, आव प्रवादी मोक्षमी व्यक्तरे । आवे हेवी पर-देशी दर्शांतरे, निरमी पूर्णय प्रतिक करेरे ॥१८॥ अंकेंत्रेचे जीपा नपण नाथरे, वकी वाचे साम्या जोती इच्चरे । नेनां सरी नयां सर्वे कामरे, बसी बामको परम बाधरे ॥१९॥ वम इच्छा करिसे वरि आपरे, जीव मारवा आव मनापरे। वह जननी करवी के साररे, वर्षो करी आक्याचे विश्वाररे ॥१०॥१व बोनहवानव्यानिवस्थक मसमयक्तिरमुनायम्बर्थावियविते पुरस्थितवासम्बद्धाः वेषातिसः वकारः ॥ १५ ॥

रेश-वारी कीहरि के सह सांकतो, वहुवहु वनाव्यां मंदिर। अंतर जीव वदारवा, कर्षु काम अनाम अविर ॥१॥ सुंदर वहिर सार्ग क्यां, क्यांची क्रिंगिये मनोहर। वय महनमाहन मारा मनमां, अनि सारा लागेड सुंदर ॥२॥ नानो देश निरस अनि, देशांचिमांनिने हुम्बरूप। निर्मा सामी होच ने हके, बीमाने सक इक्ष्य ॥३॥ मारे मारे ए महिरपर, पणुष्युं रहेंडे हेन। प्रम्यपन्य

a maile.

वह अंतने, जे हमां रहे करी बीच प्रश्न चंच्यां—सारे वचने जे हमां रहें छेरे, सुन्य मुक्त बारीरे लहें छेरे । एक बने करवाने राजीरे, बधी राजी करीरको माजीरे ॥८॥ एइ संस बीजर संस जेवरे, बरोबर सानं केंस तेवरे। बोच बरोकर बेबू ज्यारेरे, खारे तर्म वर्ष घर भारेरे १६६६ पण पूर्व ज्ञानको सा कापने, खेब लाग वा'लो सुने बोचरे। बारे संजेशेने नय यापरे, एवं छे जो ए सदिर सांपरे १९आ एवं सनने जमावतो नंदरे, जारा सुन्यने पानको नंदरे। बीजा जन्मना जमाने फोकारे, मोचे आचे वृद्धि एमी जोकारे ६८॥ एवे पूजी जोबादे अपररे, बळी गांचे लागे जोबी कररे, तेलो जब आवे जक्रकों न है, सन्द मानकों के बारों को नहें अर्थ केंद्र जन सारा राजी-पालारे, रहे क्षाप कोबी कना सामारे। एथी लग बीजा कोण सारारे, एका सन माने सुने व्यासारे ॥१०॥ वेदाविकानी नो दिया म शमरे, के कोई धलिएकी भागमा अधेरे । एवं श्रीमुख कई बळी क्कीरे, सत्य सम्बं आणजो सांबर्कारे ॥११॥ जेवो सननो पत्नी सनकारो, नेवा जुरिनमां हे जमन्यारो । जेए विश्वधी वेटी ए जुरिवरे, नेह दिवकी चर्च सुन्य स्वतिरे ॥१२॥ क्षेरमां क्या वयो समासरे, वेशी वर्षनी क्या करी बामरे । जियां इसा कांसवामां कररे, निया वर्ष प्रवेतियो सुबरदे ॥१३॥ नेनो सब्बयोहन प्रमापरे, लड्ड शुक्तियां क्यांचे आपरे। नेन्द्रे अत्योग्न बोलाया अवरे, बीजा-ने तो जनाये नहि जनरे ॥१४॥ एक जाके क्षत्राके से सनरे, दशके सदम्योद्देशन दर्शनरे। नेती आ मोद गरनोष महिरे, धोरा सुलने वासे सदाहरे ॥१५॥ जाने बाजाने लंको से गामरे, लेको अस छ पुरुषकामरे । भाष सहित करती भागवरे, तेर्न प्रकामा से से सहनहे ॥१६॥ लेक् सादवे पोलेरे पायरे, वह आवर्त करवा कामरे । देवी बर्दकी जाभी लां बहुरे, करे हरियां इंजान सहरे ॥ र आ पूर्व पश्चिम रक्तर वृक्षिको, भाव लांधी नकाई नमभक्तर । सामी जोजवधी भागे अनरे, करे सहसमोहननां एअंतर ॥१८॥ नेतरे अविक्या पायको जापर, जादा वगर वन् प्रमानते । नेवां सदाय बाको यां कोषते, इति यारे ने शहां न बोपरे ॥१९॥ बारे ए सुर्शन हारे

1 02354

करीरे, आवो वहु जीव अब तर्रारे । तेव मार्व कर्युज वदाराजरे, अञ्चलपद् प्रवादका का ओरे ॥२०॥ इति सीवद्याकक्ष्याकक्ष्याकक्ष्योक्ष विकासकारमुभिनितियो पुरुषेन्। स्वासकारकारे परविकाः प्रवास ॥ १६ प्र

रोहा-एव अनेक प्रकारमां, क्यूबड् क्याव्यां कर । क्याव्या करका कारणे, क्षमवंभे आणी था बार ॥१॥ जान सक्ये संग संबन्धे, वर्णी संस्थामी संबन्धे सोच, सांच्यत्रोगी सम्सगी सबन्धे, सेच पानवां सन्त कोच ॥२॥ सदिर कृति संचन्धे, कर्या कन्याणमा प्रवास। ए अहिली वसंग प्राणीने, पाय तो अवपू:व्य जाव ॥३॥ जेब अस वर कारी भाषणुं, करे कंशानमें कोरियनमें । एम समाम है लारे जीवते, एती सई आधारत ॥४॥ जोवर्ड-एस बहुबहु परकाररे, वाले जीव लायां जा बाररे। बहु इरि करी वरमार्थरे, तार्था जीव बावरी सामध्येरे ॥'-॥ बळनो विचार अयोग्ने वावरे, काचुं जाचुं वर्षु केव जातेरे । बंध्यांमारां बराज्यां सदिश्रे, नेमां शन्तिया संन सुचीरदे ॥६॥ वस लेलो संग हे जो लागीरे, बसी देव सकते वीक-शानीरे । समन विना अहिर केन रे बारे, वान वय ए केन बेसबारे ॥आ अंब लागी है जिया वन नजारे, देव सुचनी निरामी बनारे नेचे महि जावाय जारगरे, नथी बान ए बनवा लारवरे १८६ जारे क्या कर एक क्थीरे, तो राज्ये क्यार एती वशीरे। वशी सरवार देशकी संविधिरे, तेज नेवाकी जावका विधिरे ॥१॥ स्वाच्या इतपूत्र कोने स्विरहे, अवध्यक्षात् वे स्पृतिहरे । नेने आपे कर्ण जावारतहे, करका कह जीवना कारणर पर्वा जाय्यां वेंकी प्रदिश वे हेंचरे, केमां कोइन व बाय ह्रकारे। साथु शत्मगीना गुद कीचारे, देख क्लार वृद्धिका वेंची दीवारे ॥११॥ कहे सबस्य ने वेदी रेजीरे, सारो सबून पपट्टा इजारे। लमने मानको पुत्रको जहरे, बोटा सुम्बने बामको तेवरे ॥१९॥ अस यह आवको संबरते, बहु बाह्य वे बची धररे। यम पुरु दम जम देवारे, मेमो अन्यव पामने सेकोरे प्रश्मा एक कार्यद में लावको प्रश्नरे, एका परधारी में गुक-बारे, बजी रचगवता पामाने पेररे, करण सेवा वजी मारी नेररे श्रदेशा बळी करका सनमान नवृदे, मारे करतुंचे करवाच नेतृहे। वस आचारण्यी कम्याणरे, धारी सङ्ग जीवनु सुआणरे ॥१६॥ आसी الماسية وفي मोशनो छेट्टो परायरे, एवं प्रवरंत नथी कांचरे। सूर्ति काचारज वर्म वाखरे, रेंचो कल्याच ने वहु काखरे ॥१६॥ जंजे एने कोई जासरकोरे, तेनो जबर अवज्ञक तरकोरे। करको दर्याच ने गुज सेकोरे, वळी वो घ्य प्रयाचे काई वेथोरे ॥१ आ अद्धा सहित संवा वरे सोईरे, वळी राजी थाचे एने जोईरे। एवा जब जेजे जगमी-धरे, तेनी करवी मारे सहायरे ॥१८॥ मारी इच्छा छे इसर्जा एवंदि, परम अपनि सहूने देवीरे। मारे मोशनुं मोर्ड हाररे, जने वयाहितुं छे था थाररे ॥१९॥ आचारजधी वहु बहरवारे, जानो सम्बन्धर वाल करकोरे। एम श्रीमुखे वहुं श्रीजियेरे, जब श्री सक्त जावी लिजियेरे ॥१०॥ इति श्रीसहज्ञाक्त्वाविक्तवक्तववेवश्रीच्य-काक्तवुत्रिविक्तियेरे प्रकालवक्तवक्तवेवश्री व्यक्तियः क्यारा ॥१७॥

रोहा--- एव ओटर आचारजनी, वनीयणी कही वनहपात । एह द्वारे अनेकने, आपर्युष्ठे आज निज चाम धर्म चामप्रजिये एन वारिष्टं, अन बद्धारका ने श्रवार । वार वशास्त्रा नागीने, वह कर्या आने वरकार ॥२॥ आचारजधी अनेक जननो, अवस्य सर्को वर्ष । एम जारे जा समे, बाबरी अनि सामर्थ ॥३त वर्महुखने जे जनुसरे, लागी गृही वर कोइ वार, वरिश्रम दिवा ने वासकी, अवार अवनी वार ॥४॥ वंकाई-अधवारण वर्षा है जे अमेरे, तेनी रीत सुणी तियो तमेरे। वधी जन्य जाचारज जेवारे, जाय अदा करना सेवारे ॥'-॥ लावो लावो एम वश्री करेरे, घन लंबा वर-करनां सेवारे ॥ ।। वाबो नावर एम वधी करा, धन तथा वर-विष करेरे। विषे चन ने नाके त्रियंगरे, ने केम कर जीवना मिय-तेरे ॥ इत प्राच जानार जा महिरे, एक वान समझवी सहिरे। आनो त्रिया चनना नाकु नवीरे, तेनी वान किये छीए व्यारे ॥ आ असे वांधी दिवीछे से रीनरे, तेमी रेंछे करी जानि वीनरे। विषय अवाय करने सेवारे, चन वान्यादि आवशे देनारे ॥ ८॥ तेनो संनोच सहिन संदोरे, चन कोर्ने दुःल म देशेरे। एम वरनदो एह आपरे, कन नहि कर कोर्ने मंनापर ॥ ९॥ निज संवधि वरनदो एह आपरे, केरि म वंक्षेत्र म अहे अंगरे। कोर् चपर रोच व राखेरे, वजी कोर्ने कर्लक नहि मालेरे ॥ रेशा केनी जमानी चन वहि करेरे, जुढी साम्य एम महि भरेरे। चडनो जायन नो जिए करेरे। लियं यन में लाके जियनरे, ते केम करे जीवना विच- वाली व्याक्तेते, करण केर्नु व काइका जाकेहै ॥११॥ वृक्ति शाबे कोइनी बारकरे, नहि देखे बर्मादाना कमरे । सह वचर राजको बचारे, रे'बा ए एके जे गुज कचारे ॥ १९॥ कम कम कवर इसाहरे, तेनो रामको नहि पर बांदरे । देखा अदेखाई वे जमकरे । राजी अहि सुदे पोतानी जवारे ॥१३॥ वहि राग्वे बोइपर रोपरे, एव वर्षों सदा बदोवरे। एवा द्वान तुल से अवारे, आव्यो एवाने अमे अधिकाररे ॥१४॥ महना शुर करी सोंधी नावीरे, रीत शक्तके ए रायजादीरे । वर्मवंदी वर्म वावशेरे, सारो उपवेश सीने आफ होरे ॥१६॥ एती कर्यु के कल्याच सावरे, एवा क्यू सम्बु के जमा-करें। कांके का बुं के बचुनुं कारजरे, नवी राजकों केर कुछ रजरे ॥१६॥ यह आचारजधी अवाग्दे, वह जीवनो वाको बढाररे । यमा वहि वहे काई केररे, बीद के बरावा वर बेररे ॥१ आ एक जनपर हेन करिरे, आप हच्चाप आक्याचे पुरिते । नने सांची नारके शाणीरे, लेबी गति लेके कोण जाणीरे ॥१८॥ वार्ष धर्मसूने वाव देवारे, सञ्च अनने वारणे संवारे। अनि असमर्थ अवि अंगरे, वी वि व बार्क सुरपुर लगेरे ॥१९॥ लंगे लेकी जावा सक्षर वामरे, एउँ वार्य के की वनद्वामरे । तह साथ आव्या के बावरे, जीव नारवा निज बनापेरे ॥१०॥ इति बीलहजातन्त्रातिकरणकाकंक्कतिन्त्रवाकन्त्र-विविध्विते वृद्यांन्यसम्बद्धान्यको अञ्चितः प्रकारः ॥६८॥

रेचा—एव बही रीन कल्पालमी, आ समानी जमलित। ते सीप क्षण कांगली, जाने वलाम परम पुनित प्रशा पह रीतकों जे आवी तथा, ते अपा प्रशासाय। तेनो तम व्यारे तथाने, खारे वामने प्रश्नुतुं वाम ॥१॥ तेह वामने वार्याने, पाणी व वले जन कोष । एवं जार्या ए पाम छे, लां सुन्ते वसे जन सोप ॥१॥ ने वामने वार्याचे वारिष्ं, देवा अवामनं ओ सुन्त । जीव जानना जोहने, थ्या आली टाळवा ए वाशामां ओ सुन्त । जीव जानना जोहने, थ्या आली टाळवा ए वाशामां वार्या—आरा वाममां आववा सहूरे, एवा कर्या वयाप में बहुरे । मर्वे वयाप कियाछे सारारे, तेमां तरहो जीव अवारारे ॥१॥ वन वेमो छे जा जे व्या-वरे, वह जीव नरको आ सांपरे । वर्धवंदरी आचारण वार्यारे, गुरु करी वादीए वेसायारे ॥६॥ काम कर्यु छे एव सांबरे, जन कान्युं हे बहु अवादरे, कांग्रे ए के पर्यमुं कुळरे, आरे ए वानमु वेहूं भूजरे । आ जो के समार्थ कृत्य समापोर, लेके लूल्य बीजूं केय बाधारे। बारे विकारीने बान कीवीरे, यर्च सकतीने मादी वीवीरे BCII वर्गवंदरी ने पर्ममा रेजिरे, जपमे बानमा पम व देवरे । पर्म पायको ने प्रकारकोरे, अवर्तनी रीन रकायकेरे ॥ १॥ जाय आयो वर्ष राज-कोरे, यर शारीयां विका के प्राच्यांचे । जानी स्वीका वर्ष स्व-बीरे, के की शुजवा जुजवा वर्षारे ॥? •॥ कोंजे वेदाले वर्षती मावीरे, के को वर्षती रिति के अवस्थित नेवं की रहेके वर्ष वारीते, लागी पूरी गर में से नारीरे १११० चर्न असने के बहु वा'लोरे, एम करेंके वर्षनी लानोरे। वर्षवाका साथे देन जारेरे, एव वानो कहे बारे बारेरे ॥१२॥ अवर्थि माचे बारे अवेष्याहरे, रे छे राज दिवस प्रव बांदरे। जनमी जनमी जेव मननिर्दे, नथी समित गुरे जो स्निरे ॥११॥ पना दाचनुं सक व जावरे, धर वह सार्व करी सावरे। शक्तीना दाचनुं से पार्जारे, नवी विना ने जशुद्ध साजीरे ॥१४॥ एनुं चंदन दूसा ने दाररे, चनी सेना सचे करी प्यारे। ताने अप-वंग क्षेत्रा साजरे, नेजो सर्व गर्दाई हुं साजरे ॥१५॥ पर्यवामा जावे अस सकरे, वह बालू काने ए शकारे । वर्णवानमुं कम इस पुन्नते, के दिये में जाणुद्धे अमूनरे ॥१६॥ बादे वर्शवासानी के व्यक्तिरे, मेनो शुने ममें हो जिल्हें । बारे वर्तवाचा जीव जोहरे, बचां हे से जानारम दोवरे १,2 आ २३ अवर्ष वृत्ति जानारकोरे, वर्ष जपने सर्गंची बरकारे। वर्मवन्नीती नाहिये वंत्रीरे, वजी का वर्ष वर्ष बेचिर ॥१८॥ सारे एपी नरको जपाररे, विसे आणजो ए विस्पा-रहे । बच्च काम नगी कन्याचरे, वाको विजे ज्ञाणी विश्वापरे ॥१०॥ वर्गी हुन्या है जो समार्गारे, वर्षु वाक्षी आस्था असे वार्गरे। एक बोरूपा कीवृति वर्गावरे, सुकी बान निविधे जो नन्तिरे ॥२०॥ पन जीवन् प्राचन्त्राधिन। यक्ष्मभ व वक्षिण्युकानम्बुधिनिर्दिः वृत्रयोगन्यप्राचनने क्कोनवस्तारिकः त्रकारः ॥३९॥

रेश-आहे सन् वर्षकृत मानजो, सम् करतो एती सेन। अस्य अन जेना पर वर्षि, ए ए जानजो जोश देव ॥१॥ एक ब्रायम ने आणो जन्म जनि, वजी का'ने अमार्थ हुई। एने सेन्द्रों की जन राजार करवार स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान लबो, पानको सुख अनुव्य ॥५॥ अनवदिकत कान वक्को, वजी क्षेत्रमां एवा चरच।ए हे जवारी जागम्या, सर्वे काळवां क्ष्यकरण ॥३॥ सम कर्म क्यमे सामजो, एसा गयी संशाय भगार । एवं द्वारे बारे बानेकरो, भाग करवरेके चढ़ार ॥४॥ केनई-मारे सी रे जो एवे क्यांदे, व्यागी श्रृष्टी सह एक अनेरे । रे'जो वर्षवंतीने सम-नेरे, बनेवारे को कोचे सब सनरे प्रश्ना एवं कहे तेन सब करजोरे. पुल्या विना तो पण व घरजोरे । हाच जोडीने रे'जो स्पूर्ण, करी क्षांपण पोनानुं पूररे ॥६॥ विचा गुण पुढिने वजेरे, एने व्यापणा वहि कोह पक्षरे। खाली राजी ने कवि कोह क्षेपरे, तीच एवं जानजो समु कोयरे ॥ आ बाद विवाद करी बदवेरे, पर्ध बोकको मां कीए इनेरे। एनी कान क्यर बाल आचीरे, केदि वहकी मां सुन्ते बाजीरे ॥८॥ एवं होन्ते हठावी हरवीरे, पोनानी सामाई व करबीरे । योने समझी योगाने जवीचारे, एने समझको माँ शुचे बीकरे ॥१॥ जेम ए काळे तेम बळाजारे, एवा काम बाजमी मज-जोरे । एकी जानजो सद्ध आगञ्चारे, वर्तनो मा दोवे क्यन विवादे ॥१०॥ एने शक्ति राज्यको को तमेरे, तो नवपर राजी बीप बाबेरे। एवं राजी राज्यको से अभरे, लेके बावनं कर्या परसगरे ॥११॥ कांजे जाबारे डेवाजे व बेरे, तेलो वबीण होय ने शीवेरे । बीजा क्रम प सर्व व सबेरे, जोका समुख्यने जोकाई रहेरे ॥१२॥ एक समझनी बान सुर्यारे, अनि मनि व राजनी वंशीरे। वयन द्वारे बच्चा अने प्रवरि, तने केर जाजको वा नेमरि ॥१३॥ अने एवा ए के अमर्जाहरे, एम समझो सद नाई आहरे। एथी अने असमा स है'यहे, क्या रिविये दर्शन हैयहे । १४॥ जेजे जनने काप समा-सरे, तेती अने करी रथा पासरे । वो'र पारणे सनमान अहरे, लेली अमारी सामग्री वर्षरे ॥१५॥ देवा वरदेवी कुलावे आपरे, तेनी जाणी जवारी प्रवादरे । जियां जाय तियां जय जितरे, नेनी अमे रका वदी रीनरे ॥ १६॥ एक समझे लड्ड सुजागरे, अम विना न होप कम्पानरे। वर्षक्ती आचारण मांपरे, सदा रखोई नारी इंटबायरे ११ आ अति वर्षवाका जोई जनरे, रे'वा वानी नयुं वार्व सबरे। बारे एवे पुत्रे हैं पुत्राचीरे, तेनी अपर अब सब आणीरे ॥१८॥ एमं जेले कर्षु समझानरे, तेले आरं वर्षुत्रे निदानरे । एम जाली लेजो सह जनरे, एम वोलिया श्रीमगणनरे ॥१९॥ सुली जन सम धनन वयारे, पत्त्रपत्त्व सामी केचा रचारे । वडी शह-ए आचारज संख्यारे, तेलो सोटा सुलावे लेवारे ॥२०॥ इति जीलहज-वल्लानियायककत्त्रेयकनियुक्तमन्त्र्वभिवादिते पुरशेषवनकाक्ष्यले प्रभारिक। प्रधारा ॥४०॥

रेश-एव जाबारजनुं जविकशम्, श्रीमुखे कहुं वयद्याय । एवं द्वारणी समेकने, करवा से पुरणकाम ॥१॥ यजा जीव एवं एव-न्वपी, बदारना के जा नार । नानारी जे सक्तां, ने सनुना प नारनार ॥२॥ एव विका बची लागीची, आज वकारका से अनेक। तुमां वस अमे रही, जनपार करना छ छेव । ता लागी ने समझो संत्र ने, एमा समे करी परवेश । यह जीवने तारहां, आपी प्रक्रमध अवदेश ॥ शा कोकर्-वर्ष दृष्टमां करी रका पामरे, तेम संतमां ग्रंड कहे दवामरे । लवें रीते सनमां रहुत्र, एमां रही वपत्ता इबाईरे ॥६॥ संत कोले ने केको ह कोल्हो, संग व सुने हुंचे न लुक्दे। संग बान खेळी कई बानरे, एक सनवां को साक्षानरे ॥६॥ सन जुने ने जेको हं जरेगरे, सन लुगा पड़ी हूं सोपरे। संग जाने ने अंको हूं आगुरे, संग जोई अनि अनुरागुर ॥ ७ ॥ संग जाने ते अंको हं जन्दे, संग असे ने के जे हं अपूरे। संग दु जाने हं दू जा-मोरे, एवं बात सत्य अन आमोरे ॥८॥ सन हुं वे हु ने बळी सत्तरे, एक श्रीमुखे कई अगर्थन है। सन अत्यक्ती बारी शृहनि है, एमा केर नपी एक रनिरे ॥९॥ जंनरजामीयले रहे एमरि, बाटे नपी बपाला ए कंग्नोरे। संकाम स्वयन चयवासरे, तता करण जाणी मूने पासरे ॥१०॥ मारे अन्यत्र एमां रहं हुँहे, स्मारी राज सुबुद्धि बहुत् है । बजी केले में निवा स्मान्यारि, मेमां रहि कर्ज अन मान्यारि तरेरें। बारे सन बांका धून बहरे, चिवार्ण बाबदां कहरे । एने अस जड श्रवर आयेरे, लेली लक्बी बढि लग सावरे ॥१६% लासी वाचे मे आदिया हाथरे, लेको शह थाय छे समापरे । ओई रीन व राजी जे भावीर, बळी गुल से संवता लादेति॥१३॥ के वी संवती ए बहु सागरे, करा कम्याणना करनागर । एटलीज गुल कोर الإيرانية من من المراسلة المراسلة المراسلية المراسلية المراسلية المراسلة المراسلية المراسلة المراسلة المراسلية م

प्रे'क्वरे, तेलो बचामों ले बास लेकोरे ॥१४॥ एवा संत्री बरे परंक्तारे, निर्म इसि हैपामां हुमलारे । बडी बिन्नत बरमबाररे, बरे क्वृति नेइ अवाररे॥१४॥ नेनो पामको पाम वामरे, बजी वाशे ले प्रज्ञासरे। अजि ए संत्रमें असे शिएरे, साचा संस्थी दृर व रहीएरे॥१६। मारे संत्र ए संत्रमें असे शिएरे, साचा संस्थी दृर व रहीएरे॥१६। मारे संत्र ए करपालकारी, जाज वर्षोधे वामतो वजीरे ॥१३॥ एव सांकोधे मोटो अवारोरे, जाज वर्षोधे वामतो वजीरे ॥१३॥ एव सांकोधे मोटो अवारोरे, जाज वर्षोधे वामतो वहां वोरे। एवो अनामी कोइ व के वापरे, जे कोइ का समामां रही जापरे ॥१८॥ संत्र देश परदेश करेधरे, सह जीवनां अब हरेधरे। एवां वर्षात स्था के बरशेरे, तेलो अवज्ञास पर कररहोरे ॥१९॥ एतो विक्र वसानी के बातरे, सह समझओ सामानरे। वहां शिमुके एम प्रवाराजरे, सावरम भावरे के बाजरे ॥१०॥ स्थ नीवरणवन्द सामिक्यव्यवस्थी वस्त्रवारिक। भवररा ॥४१॥

रेश-वळी बहु कोए संतर्ने, लंबने अञ्चलन । नेना अंतरपी कंपनि, बळी जानो जानो जजान १९३३ सेन सेन्याची सुन्य बसे, वसी दते तम अम तार । परम पामने पामिये, नेपम सन प्रताप ॥२॥ ने संग श्रीवृत्तिका, वस प्रणटना प्रक्षेत्र । प्रारा सक्तपर्य वासदा, वंच विचयवी पाम पश्चम ॥३॥ परमार्च अर्थे आविया, जिल लार्थ नहि सबलेशा। एवा पका भने पूमिमा, आवे सहने सारी वपदेश शेशा नेवर्ष-जाने ज्ञानदान जननेरे, कही वान-वर्ता वचनते है। दिनकारी से सहना सनेदिरे, जानो पर बचकारी एक्टिरे ।(-)। साचा संग समा सी अववारे, पदार के अपार अव-बारे। जेने शाचु मित्र समनोगरे, मुखे रू वे दिनमां व बोलेरे॥६॥ हानि वृद्धि ने सम विषमरे, नधी आप जरवे उथमरे । वर्ष शांक वे नै (। पे जिन्हों, भाग जपमान सम वित्तहे ॥ आ जर्म समन वे बार्ड ताबरे, एक बची लामनुं जेने आबरे। जन्मवीय बची जेमां है जरारे, एवा शंत ने सेन भारा जरारे ॥८॥ एमां रहेर्ग है राख दिनरे, सल मानजो मार्व वचनरे। अति पवित्र अतर पेलिरे, सरा रक्षोप्तं श्रद्ध संक्षिते ॥९॥ यका संतने इदिये रहते, कई जीवनां है

क्रमान हरू है

कन्याल कंड्रे। एड संग मन्ने जे जनगरे, करे बसमाहि वावन मन्दे ॥१०॥ एक संग के सका सहसारे, मुख्यमायक जम बहुतारे। जेवी ल भन करके ला'यरे, नेवी कांग्यकी केम भाषरे ॥११॥ जान नान ने समा सर्वधिरे, करे दिन एवं क्यूनिधिरे। एनुं दिन रहे धाँनु गांशिये, मा'ने कल्यानमा गाम माहिरे ८१२५ त्य शुक्त कुछ ने पुरुषते, यह वृद्धि साचा अंत समते । माना सन नेमां क्रमे है विहे, मकी जीवने अध्यवाम हैयेरे हैं। के अध्यवकृत तो एकुं के बायरे, काल सामाची भाषा म यागरे । एतु कोड विनास म का वेरे, के कोइ निर्मयने जय उपजान है।। । ।। एकु निर्मय यह विर्याण है, नेना देवारा सन सुप्राचरे । एका सननो अने आकारेरे, तेती संशे वते वरक्रोरे ॥१५॥ काको जनम साम अप राखीरे, जातुं वावे वजारता तासीरे। संग समागम वरतापरे, जार्श प्रसमीत अहि जानरे ॥१६॥ एक सञ्चने कहे श्रीहतिरे, सन्संत जहिमा भाव भरिरे। मोर्ड द्वार के ए मोक्षलपूरे, आत्म क्याकुं के अति पण्डे ॥१ आ कर्यु वह बकारे कल्यागरे, अनि अमिकन अधनामरे । यन सदुधी सरस संगवारि, राक्यूं थाडमे एती बालगरि ॥१८॥ एव वयाच्यां क्रमंत बाररे, वाले कल्याचर्या का बाररे । क्रेजे थारी आध्या इता वातरे, तेनी पूरी वई साधातरे ॥१९॥ क्यारे वर्तुचे पुर व कामर, लारे राजि बया चनत्यामरे। कर्यो जेजकार जीव तारीर, वक्ति वालये वात विचारीहे ((१०)) इति वीतहबाक्त्वाविकावकार्यः वेषक राज्यकातम् विविधि वृदयोगायम् वाष्ट्रविधि वकारः ॥४२॥

रेश-वाने वालमे विकारियं, वर्ष रह्मं काने । केने कांवे रहे नहि, वर्ष सार्व कर्ष धनद्दाम । १११ जे कांवे जांदि जाविया, व सरियो सरव कर्ष । अगाणिन शिव चटारिया, वालरी योतानी रामचे ॥ भा केने वसी कन्याजना, बहुबहु कर्या वपाय । कसर न राम्बी कोड़ वालनी, एन साथ मान्युं मान्यांय । १११ श्राचान प्रत मुल्लें, कर्ष थानानुं मोझानुं कांव । विभिन्न विना पानवा, जांब असर वाम ॥ ११॥ केन्द्र-कर्या कोरिकोटि वयागरे, असे आधी अवित मांधरे । अमार्थ भूगोनेने प्रसार, कर्युं कन्याल अभवनुं जगेरे ॥ भा संत संबच्छ सम्याम क्षिपुरे, लेजेवन अवस्त धाल ही पहे। बजी बांच्यां सहाजन चलारे, नेक्न बारणां कन्यान तनरि ॥६॥ वनी प्रयास भारका समाधिर, करावी विसराची प्रचा-थिरे, बची तगर वरी कंच बनरे, आप्तू गळाची पर बच्नरे ॥ आ बहु वेश तीये गाम के रेरे, नायां करी हरि करी में ररे । करी क्रमच बहु सथेवारे, नार्यो जीव आवे नहि बचारे ॥८॥ कर्या जनम ने बहु जागरे, नेपण जीव प्रद्वारमा काजरे । परयोगरंग क्यों बसी समारे, करवा जीव इकमो ने जेसारे ॥ शाक्यां करणाच सार्व वह चामरे, जीडाकुरजियां कामाठामरे । तेमां वेलारी सारी भूरतिरे, नेवल जीवना कन्याय वर्गारे ॥१०॥ वर्षा बाचारत महाराजरे, नेपण जीवने नारचा काजरे । वह वांधी कर्याणनी सरकरे, जाय वाले जीव वे नियवकरे ॥११॥ वर्ष वाल सरवे ए मोटीरे, तरवो श्रीय कोराय जो बोटीरे । एता वर्ष कर्य भयुं साक्ष्रे, इसे मानियुं तम अजार्थरे ॥१२॥ सारामारा कर्यात समाजर, केल्ट कल्याम करवा काजरे । कर्या वर्ष समाम बाररे, आधी मुलिए असे का बाररे ॥१३॥ केने सेवा न वाचे कुनानर, एम जानजो आज पुनांनरे । नेर्राण वर्ग रहि जाप समर, त्यार मार्नवर्तुं पूर्व मार्नमध् ॥१४॥ नेय अपे आव्यं अप रहते, लाद पनि-मवायम काम कहेरे । क्षेत्रवयु कहे है इया खरे, सेना क्षत्र म वर्ष कोइ का करे । १५॥ माडे सर्व ए बाय सन्य क्यारे, अब अवार बढ़ारी निधारे। सारो केरी फारपोंडे का बाररे, बहु जीव कर्या भव कारदे ॥१६॥ वळी कल्याणकारी जे बन्तरे, नवन पृथ्वीपर छे समक्ष्ये । वह नेदवे बाके कन्याचर, ग्यति प्रामके वह निरवाचरे ॥ अ। अमे देवे न हैने जो आंदरे, नवी राजवं कले काम कांदरे। सर्व करीने विश्वंत कामरे, एम कहेते श्रीमहाराजरे । १८॥ अंत क्यांचे अधे प्रवादरे, ते काइ आवी जाशे ए मायरे। तेने अंनका हे असे आर्थार, नेती आयुक्त तम नमार्थारे । १०॥ अन्य एव विसाय वे न मार्थर, ने जाना सुन्ययाने वेमार्थार । एना धनदय विकद् छ इसार र, पर्वात शह जीवन सार है ॥६०॥ १६ वीवहशान क्यांत्रप्रकर भागतीय कृतिक क्षान्त वृत्तां वर्णक मुख्यान व्यवस्थाता । प्रवेश

والمراج المراج ا

रोरा-वजी श्रीवरि वेने करी, बोटी कडी माइरास्पनी वाल । विका से रवर्ज करी, आ प्रचरी सक्तान 828 जियां जियां जबे विचर्या, बजी रक्ता जेते शाम । ने जबर जब जानजी, सरवे क्यांचे कावाम ॥२॥ नियां प्राची कोइ नव नजे, जाक्या विमा एवं ज्ञान । बच्चों व जाय बच्ची कोइपी, दवां वयवियां वर्ग जानव ॥ ॥ वर्ण अकित से अवित, बढी बहुबी स्पर्धेत रहा। ने जीतां व हाहे जालको, जे वे इच्छे छे ईश्वर जाज ॥३॥ चेत्राची-चन्नाजना हरवाँ प्रमान देरे, जब श्रमण भागके आपरे। जबनय हान्ती ए रजरे, बाव विश्लेष एमां शुं आधारत्रहे ॥१॥ अन भूषनमां ह्यांत्र्यां स्थाहे, नियां दिन-रजनी जे रकारे। एक वृश्चिकार्ता भाग्य वारीरे, यह पामकर सुक कारीर ॥६॥ एक क्षावितर नाम प्राच्छे, नेनी वाले वह विस्वाणहे। वर्ता गरी नद ने ननावरे, सिंधु द्वेष द्ववा वसी वावरे ॥॥ नियां कियां कियां जमे ना'यारे, स्परझूं वाली के लगारी कायारे। नेह त्वकां के काम प्राचीरे, क्रम कक्षारक मियो आणीरे ॥८॥ मेह महे मजे कोई लगरे, पाने असून थाने सद्वरे। यह क्रम्याकता जे प्रशायरे, वत् क्योंने आ जनमांयरे ॥१,। बान बनीबा वे कुनवारंटर, वृक्ष देती वन वसी झाडीर। एक आदि जायका अवारर, जिया रखा असे करी प्यार हे ॥१०॥ एको अ्वातक छ नी वेक्चरे, असि विका जानो अनुपरे । एड न्यान मुद्दे कोइ वेडरे, वामे अक्षरपामने लेडरे (१९) तम अनेक बकारे आओ, क्यों क्याय कन्यान कालरे। सर्वे तीर्थनां तीर्थ कही यहे, जियां सन सब मांचा छी या ॥१२॥ नियां अन कोड जह बांधर, घड पावन परममां आहार। प्रसम्बर्ग अंगु ज रेजिरे, परंप भाग्य सम तेनां के विरे ॥१३॥ एइ पर भंदभ परि जाहारे, नह पाम पापन पाहारे । संवति भाष्या सम नन व्यातीरे, अक्षा व्यवसमाह मुजार्गार ॥१४॥ सर्व पायरां पाय ण थियार, गणा सन सरिन अब जिनार। बीजां तीर्थ थास पह का बरे, चना असे रथा ने मूल्य मध्येरे ॥ की बाद हा समारह वर्णतर, मेने मृत्य आसे केल गंगरे। यने श्वडयां ना पायन पायर, वेती हरिजवनार का वेर ॥१६॥ धन अवनत्रवा में अवनतीर, कान नदी हो जाकतो स्पर्धार । आणो पुरुष्ध लघना स्परवार, नेता والمراجا المراء المالية والمالية والرائية والرائية والمراجة والمراء والمراجة والمراجل المراهوات الم सब्धारिको के जो सर्धरे हैं अ। सर्व पासना जे कोड पार्थर करों जमे नार्या कार्या कार्या है। वान काजनी के अनि सोटीरे, जेपी जीव नर्या कोटिकोटीरे ॥१८॥ वरावर क्यावर के अध्यक्षरे, से सब्ब कर्यु के सुभारे ! सब्द कान्या आप के कार्या मर, मधी वर हुं का ए कामरे ॥१८॥ एस के लि करी र जरसे वर्ष्यरे, अवस्थितिकार्य ज्ञावर महिर्द । स्वीसूची कहे एस कीवृदिक, सब्द बान सामजो ए व्यक्ति वन्त्री वर्षा बीव्यक्तिकार कार्या कर्या कार्या कार्या कार्या वर्षा वर्षा कार्या कार्या कार्या कार्या वर्षा वर्षा कार्या कार्या

भेदा—बजी बजी हो बर्ण है, बजी आ समानी बरन । कीव जन-नवा उपहे, बाज कमे छीए रखीआम शहा जानिये आदि जनस्मे, लां आये अभारे वाम। वे दे व शक्षिये कोहते, एवं हिये के पणी बाब ॥२॥ ते सरक मृति तपरे, की रामरा सुलवा समाप्त । अपारा बंगसंगती पान, राजी अधिका सल्याण कात्र । आ प्रशेषती केरो वहें, एवं कर वं बधी आ बार । सब जीवनों सामदों, आज कर नोते प्रजार, ॥४॥ केलाई--नेष्ट्र सार्व छापी दीवा चरणारे, जे उ भोटा सुन्धर्म बर्यारे । पान जिनवे फिन्ने सहितरे, वक्षी पूत्र की करी बीतरे ॥५॥ साथ प्रति प्रश्रा के सबरे, एका व राजी शाद समरे । नेने ज़ंतरे वादो प्रकाश रे, लेशे सुन्य वाडीकिक शामरे अधा तेले बानको पूरवकामरे, बली पामको श्रमीद पानरे । एवी जाजनको छ मनापरे, जीमुचे कहे आहरि लागरे ॥॥ सन्य मात्रज्ञा सी तमे अवरे, आ के अति विननां वचनरे। जाबी आपक्षं सूच अंतररे, राको भारे अवंसी भीतररे ॥८॥ बसी पुजवा वर मृत्तिने, आधी सहते करी वेले अलिरे । लेले पूजारे बेम चपारीरे, प्रा विभि शहर सई सारीरे ॥९॥ करी दला उतारको बादनिरे, करको पुरुष ने बळी निवित्ति है। नेव सुरित्या अ चे रहीरे, सर्वे चुताने मानश्र सथीरे ने lite | लेहां पूजा ननी अर्था प्रीयरे, पूछी वेहां सुन्य प्रथा रीयरे । ें जिसेन अनरवाका के जनर, नेती पूजा नेनां पू प्रसम्बर १८१३। यून प्रमार पर सुरमिसारे, ६ मा पामका सुन्तनी सीमार। पाम मरनियो ें बहु आगेर, भर संब पूज स्थाप्तारे ॥१२॥ भरेव वर्णा प्राच्या व ने वामरे, केबी सर्व संबद वामरे । विजी मुरनि ने जा जे सुरितरे, المراجعة ال

रेषा—वजी एक कई ज्यायमं, तथे सांवक्षजो सद् जर । कर्षी करवानने कारणे, अनि असे वई प्रसन्न ॥१॥ जेर ज्याये जा जीवने, सर्वे प्रकारे सेय थाय । भोटा सुन्दने भोगवे, आ लोक ररलोक मांच ॥१॥ लाज व जाये जा कोकर्मा, ररलोके ररम जानदा अर्थो ववाय एवा जाने, सह जानजो जनवंद ॥६॥ सत्व वामा सारां कर्या, अर्था अर्थे अनि अनुव।तेषां वांपी दशी रिलवे, वांचा वचा सुन्दर्भ ॥४॥ वोग्यं—त्यामी पृष्टिने नारवा अर्थेरे, वांच्या वचा सुन्दर्भय प्रदेशे नेमां वह प्रकारनी वानरे, स्वविधे असे साक्षानरे ॥४॥ कथा त्यामी पृष्टिना वसी प्रमेरे, स्ववृत्वे वाळवा माद पर्मरे । तिम जुज्यी नही जवांचीरे, वर्णाश्रम प्रमेनी कही संग्रावांचे ॥४॥ सन्दृत्वा प्रमेमा रेवारे, अने प्रथ कर्या कही संग्रावांचे ११॥ सन्दृत्वा प्रमेमा रेवारे, अने प्रथ कर्या कहे एकरे । दिज क्षांत्रय वैद्य वे चाहरे, तेने तरवा संसार समुद्ररे ॥॥ वळी वटु गृही वाजपत्यरे, संन्यामि आभव सुज्यारे। दिज वर्णना धर्मे विवारीरे, सर्वे अने कथा सुन्दर्शीरे ॥८॥ कम

हम समा ने मनोपरे, अपर्य सर्गंधी रें के अदीपरे। एक आदि धर्म अचाररे, कथा वावर्षमा निरंपाररे ॥९॥ क्षत्रीयर्जना वर्ष वर्णवीरे. कता सर्वे रीवना सुचवीरे । करवी सह जननी रचवाखरे, अनि दिल्ला वर्ष क्यासरे ॥१०॥ चारी विचारी घरणी पीरदे, काम पहे थानं जारबीररे । एक अधिक के क्षत्रीता वर्षरे, शब्दे जंबर राज्यता क्षत्ररे ॥११॥ वैद्यवर्णना पर्व के जंदरे, राज्ये भी यन वेपार तेहरे । लेनी बनाज बोरां बन करेरे, हमा क्वर नाव बरहरेरे ॥१२॥ एवी शिनं बरने बैदय बसीरे, एवी शिन नन्तियं सपनीरे। द्वाह सेवा करे ने समुजीरे, अल वर्ण कथा नेहनीर ॥१३॥ एम चारे वर्णनी जो शिनरे, असे समाबी मंत्र पुरिनरे । वर्णियमें बचा जे बमाजीरे, लग्ज संध्या से लियो जाणीर ॥१८॥ अष्ट वदारे जिया पन व्यागरे, विषयसुण साथे छे वैरागरे । भारे ब्रह्मपर्व कन पारीरे. ताने काचे करी प्रवासारीरे ॥१५॥ मृहस्याध्यमा वर्ष के बनारे, नेपन सर्वे सक्या नेड नगारे । बामप्रम्यना विविध सक्षारेरे, सक्या एक अध्याम अनुमारेरे ॥१९॥ एनेमरे संस्थामी आश्रमरे, तेनायण हजारपाछ पर्यरे। बारे वर्ण ने आधार बाररे, नेशन हजाछे करी विकार है ॥१ आ सहमां करपान करका मार्क्ट, अकि तान मानी छे अधारेत । वळी अति त्यागीना जे धर्मरे, तेएन सद्याएं करी अबरे ॥१८॥ नेव साम्धनां सांबळी नायरे, यह ने शुजनां छे सब पावरे । प्रवास्ति निष्कामश्चादिरे, बजी क्षिप्रापश्ची सबी विधिरे । १९॥ एक विना बीआ के जे अधरे, क्या असे कल्यानने अपरे। एम कर्म भीजीये जीमुलेरे, सह जनने नारवा सुलेरे ॥२०॥ हति बीताहज्ञानम्बाधिवरमकसभिवकनियक्त्रशनस्य मृतिविधिवि पुरवोश्यमकासः भन्ने पटचरवार्रिसः मकारः ॥४६॥

रश्— नदी अमारे जे आदारे, वायुं आविषुं बहुबहु। तेने इ.चा पर्स नहना, तेणे वासी वरा गति सह ॥१॥ मतीगीनामां जे सुबद्धा, राधवा विधवाना वर्ष। तेयात रही विध्या सहू, वाशिशं वाद जे पर्स ॥६॥ जे धर्म नोता धरा उपरे, बरनारीन। निर्धार। ते असे सगट करी, बहु नारियां वर मार ६३॥ एव अनेक रीनहां,

اراً المرابع الم

g angest.

الدارية في الدائد البرايدالد الدين المرايد الدارية في الدائد الدارية المرايد المرايد الدائد الدائد

अति क्योंके पक्कार। जीव जान्या जन्मवा जेंद्र, तेव करवा अव-चार ॥४॥ कोकार्-अति अति अति अर्थ में चवायरे, तेतो केता केता केता क के बायरे। जेजे कर्य जमे भा जगवारे, नेनी चनाया मीश बन-मरि ॥१॥ जेले अर्थे कराविया संघरे, जर जारीने नारण अर्थरे। बसी वह छंद कीरनगरे, अधक ने स्तृति के वावनरे । ६॥ तंत्रे वांक्ष सुने अने सावरे, तेनो अअरवायमां जायरे । कांग्रे अस्ति समारे नामेरे, मारे मो'बारे ए परम पामेरे ॥आ जेमां व्यामिनारायण वामरे, पदी कवा सुने वर वामरे ! एवी कीर्ति सांवयनो जनरे, बाय अति परम पायनरे ॥८॥ बसी यह से बाये अंकिनरे, नेने गाये सुचे बरी मीनरे । जेमां सहजाबंदचामी वामरे, जादे जे काय्यमां हामोठामरे ॥९॥ वनी काच्य के'लो ने सांगळलारे, चार व लागे बहासुम्ब सक्तनारे। बहा संस्थाय पह का बेरे, तेने मुन्य बीगुं केम आयरे ॥१०॥ बाच बसुनां अनल अपाररे, सबू आये अजे बरमा-हरे। क्या व्याधिकारायण के नारे, मधी बार अववार सेनरि ॥११॥ जाज ए नामभो के जननरे, तेज विसारचुं एक पनरे। तेनां बाब बारायक ब्लासीरे, जाकी ने बेटर वासमें वासीरे ॥१२॥ जेत हुचे एमो दबाररे, हेती जाणी पाम्या अवशाररे । मारे ए जामनी काच्य का'वरे, लेबे किव्यकी सुकवि आवेरे ॥१३॥ वसी क्यारा जंगतुं अंबररे, बहु स्वरकाम साद सुंदररे । एवं बसादिनुं केव पररे, क्षके रके क्षमें संबद्धि ॥१४॥ एवं बना जनुष्य अभिरे, वाच पुत्रनां बाम प्राथितरे । अनि माहारूम एतुं आनुरूपेरे, कही क्यांशी क्यों एक जुल्येरे ॥१५॥ के जे असारा सक्यारी वस्तरे, य शक्ते गोलतां करें ने अस्तरे। जनम अस संविधनी केंग्रेरे, छ ए कन्यानकारी नाजी किजेरे ॥१९॥ नेती राजीके समे जपाररे, सह जब अर्थ क्षा बारहे। बच्च किल्यानगी जिल्लारहे, राज्यी रूपरका वस्तु हरी ध्वाररे ॥१ आ स्वर्राक्ष बीज से बहु वरकारेके, अबी होय से अने समारेरे । तेनो सर्वे छ कन्यालकारीर, बारे राजीछ असे दिया-रीरे परेटा। एव अनेक प्रकारे आजरे, वह जीवनां करवां हे का जरे। आरथा छीए असे एव धारीर, सर्व जीवने नेवा पहारीरे ॥१%॥ रव कर्य जाने अधिकातारे, लेगी सांजबीचे सब शामेरे। सुनी الماسات المراسات الماسات المراسات الماسات المراسات المراسات المراسات الماسات الماسات الماسات الماسات सम् थयां परस्को, कहे ज्यामी श्रीक्ति परस परयरे ॥२४॥ रश जीन-इक्षाकरकातिपरमञ्ज्ञकोषक शिष्युकाकरमुशिकिषिये पुरशेषकरकातकथे जन-पर्यारिकः प्रकारः (१४७॥

रेश-वर्ण जोलं विकास जीवन, वसी रखा सर्वे काम । जनने सुराम वर्षे, से जे पामको वापान ॥१॥ जे आर्थ अने आविपा, ने भरूप सरियों भाज। पारी आस्मा'ता जे पानवी, ने करी निपूर्ण काल ॥६॥ बांधी बळवंत वीडिका, केले लारवा कोटावकोड । कर्ष दिन अनि जा लये, जमे राजी बंधी कोइ जोर ॥३॥ देरी अमारी लुक्त क्यो, गया सबू जनवा संनात । अनेक शीव बहुयाँ, बाज क्षमारे बरमाय ।(४) योगाई-करी कियुंचे सर्वे जो काबरे, एव विया-रियु चनद्रयायरे । के'बा रावन् वधी केंद्रे कार्रे, जावा मोझना जारण जांहरे ॥५॥ बहुबिय प्रयादियां बाररे, बरवा कल्याजने जा काररे। इसे प्यारं हूं मारे थामरे, के मार्थ आंक्या ना ने वर्ष सामरे ॥६॥ पूछी क्षेत्रे वाले इता अवरे, तेने के'छ एक अगवनरे। लह बारओं संगरे पीरते, इब विदि रहे था कारीतरे ॥आ बोटे पने दिने भाग जाहारे, अब केले भरको मां बांधुरे। जो राजी करवा होय बाब मेरे. रे'ओ एक केम कर्य लमनेरे ॥८॥ खाली एडी बमी नर बारीरे, रें जो सब सहना वर्ष वारीरे। वर्षवाकां जन हुने वांवरि, विज्ञारे जार्जुरी जरमां बमानरि ॥१॥ केलि बात ए के बाजी केओरे, किकावजी बमाने सह रे'व्यारे । किकावजी नांदि जाने रे'बारे, रही एमां महत्वे सुन्त देशारे ॥१०॥ रे'शुं सनसंग गाँहि महारे, इरवा सनसगती आवदारे। वन इसने जेम हेन्नेछारे, हेली क्रम सुक्तक लेकोछोरे ॥ ११॥ एवं नहि देलो हरे अमनेरे, साची बान कहुछ नमनेरे। एवी किये कहं अविनातारे, नेना शांधवीयं सब् शामेरे ॥१६॥ जानी भलामण अनि विधिरे, पर्धी करवानी वर्ती ने की विरे । गया अध्यर माममा आपेरे, जब वन् तच्या एए नापरे ॥१३॥ वय रही बारीरजी सापरे, पान्यां जेनरे बुष्ण जागायरे । रहे भारता केय करी भीरते, वधी सुकार्ता वयके बीररे ॥१४॥ पद्मी बालाबां क्यम संभारीरे, पन्नी वार पीरण प्रा चारीरे । के के बचारें के ने चचनरे, तेने हीने रखां सब अनरे ॥१५॥

والمناها فيا فيا والمناهدة في المناهدة والمناهدة والمناهدة والمناهدة والمناهدة والمناهدة والمناهدة والمناهدة والمناهدة

والمراب المراب المراب المراب المرابع المرابط والمرابط والمراب المرابط المرابط والمرابط والمرابع المرابط والمرابط والمراب

वीने ववार्या पोलाने पायरे, करी जीव अनेकता कालते। जेजे पारी आक्या ना पायपीरे, कर्षु काल ने हैं वे दालपीरे तरका पूर्ण जंबल सरिन आक्या नारे, संग समाज आती लाखा नारे। जह लंबे आक्या ना आहरे, सर्था आर्थ म रहां के हे कारे तर आ क्यो जनी-किक अवनाररे, वहु जीव कर्या अववाररे। एवं मुर्गन अजी थे जेनेरे, कांट्र आधी रही यहि नेनेरे ॥१८॥ एवी ए जानि जंगसका-रीरे, मेट्ट जेच रखा थे वर वारीरे। एवा जन अजे जेने जेनेरे, अक्या रामे आरे वाल नेनेरे ॥१९॥ नेनरे श्रीमुखे कहां नुं सो वाररे, निजे करावयुं मुं निरवाररे। वसी रखा से जनमान मां परे, अंग समे करे आये ह्या परे ॥१०॥ वर्ष जंभर जनमान मां परे, अंग समे करे आये ह्या परे ॥१०॥ वर्ष जंभर जनमान मां परे, अंग समे करे

रेका-एव रिने जमनेवडे, क्यों कंट कंट्रक काम। आपी जानंद काजिनने, वसी पुरी देवानी दान ॥१॥ वामाविक सूच वारियां, काविक देवती जांच । ने वसिद्ध जाने हे इचरी, नवी जाती छवाबी कांच ॥१॥ देवादेवामां वंदो दर, वळी वंदद चनावी वान । जे माचे पुढिनी पाधमा, ने सोवी करी माझान १३० जनर ने लगर मयो, अनेर नायी की अन । अगय ने सुगम क्यी, अनु की बोने कासन ॥॥॥ योगारे-आवी कवी अमीकिक कावरे, वही वयारिया निज बाबरे। बर्चा कारत लाखर्चकारीरे, जेवां आव्यांना वामेपी वारि ।(-)। एवी सांको नो साबी सन्वारोते, जीव नारवाने राज्य दा बोरे । बहु जानेव भाषत करीरे, भन्ने जीव नार्या जान करीरे ||६|| करी गया बोटांबोर्ट काजरे, जाबी जा केरे आवे नवाराजरे | सुब लेशि शया एक क्यानरे, ओई जनेन जब चया श्यांतरे ॥आ कराचरो बचावीने जेनरे, दही रमच रम्या बच्चेनरे। एवा जोजे म मसे लेगारहे, जेने मुने बुजारे इजारहे स्टा बीजा वह देव बना-क्यारे, तेती सहते वर्ष व जाववारे। कोइ रिक्या ने कोइ व रिक्यारे, एवं क्षेत्र अरथ व सिक्यारे ॥१॥ जानी वर्ष वेषता वेदरीरे, जान बराकृतिकी बर्जारे । जोत्य व राजी जेनकी बांपरे, जना जनाय्यो है आप इच्छापर ॥१०॥ वती रजन रुधी अलावीरे, शीपां जनने

s m mit mit but,

विजयान वालीवे । एवा रच्या व रसको कांग्रेर, सेव केनवे लोई जब सोयेदे ॥११॥ यवो जकत केनते केनीदे, स्वय समने लोई जब सोयेदे ॥११॥ यवो जकत केनते केनीदे, त्या समुने विजयान सेनीदे । वर्ष संपरिते समासकेदे, तेने विजी वार वय गमेरे ॥१ था जेन वाजियानी वाजीदे, तोव केन वाल कांग्रेरे । जाने जन्मी व वीठी व सांज्यीदे, तेने केन वाल कोंग्रे ॥१ था जन्मे वालीवे केनीदे, जाय सकेदी वाजी संकेदी । ११॥ जिन वालीवे वालीदे, जायो अंकि वाला कांग्रेरे । जानी संकेदि गया ज्यामदे, करी कवाणी विवास वालीदे ॥१४॥ जानी संकेदि गया ज्यामदे, करी कवाणी विवास वालीदे ॥१४॥ जुल कांग्रियो वाले अन्यामदे, करांग्रेरे वालीदे ॥१४॥ वाल कांग्रियो वाले वालावेदे वालीदे । ११॥ वाल कांग्रियो वाले वालावेदे, क्यांग्रेरे हिंद सायदे ॥१६॥ वाल कांग्रिया सीचा जांग्रेदे, क्यांग्रेरे हिंद हिंदी इसे संबंदे ॥१८॥ वाल कांग्रिया स्वासि वालावेदे । वाले देवा कांग्रिया प्रवादि, क्यांग्रेरे हिंदी इसे संबंदे ॥१८॥ वाले कांग्रिया कांग्रिया कांग्रिया कांग्रिया वालावेदे । वाले कांग्रिया कांग्रिया कांग्रिया कांग्रिया कांग्रिया वालावेदि । वाले कांग्रिया वालावेदि । वाले कांग्रिया वाले केन्य्रिया कांग्रिया कांग

والملها والمشروا ما يمله المال والمالمال والمالمات المارة ما ما والمالمانية ما مالمالمانية والمالمانية والمالم

नेनी बान व बेडी कोड़ चाररे। बोड़ के ना हरि बड़ लयारे, बाबो इते के के विकार स्थारि ॥६॥ कोड़ कांना के कांत्रज़ राजरे, मजू न होच बनर जाजरे। जोती के ना जोशकका परिवर, वधी कन्यान राक्युं के लिक्टे 1530 दिन के ना पाणमी के आरादे, आज बीच कन्यांचनो बारोहे । के ना नवी नव्या विना नवहे, क्यांची कन्यांच जानजो जबरे ॥८॥ के ना सन्यामी सर्वे बन्ता चायरे, नारे जबन अरुक लाव आयरे। के ना विश्व नय पुरावीरे, अनु सगर एवी भी लेहाँ आविति श्रीत जांगम के नामे अगम बागरे, भाज कोचे वजु मध्या-नरे । केल के नाके मेरबी जिडिये, आज बावे मुखान कील विदिये अरुआ अन्य के ना अन्ति क्यों के मुदे, की इ दरो कनवालम् वर्गरे मूरे के ना वे शांनि क्या जाने प्रकार, पान करायो शानी परिवासरे ॥११॥ के ना बारनि वस बंद बाबार, बुदिया दशी वाल बनाकरे। के ना बजावि शक्य लिख पन्तिरे, महि पांच याम वकी सम्बद्धि ११ शा के'ला मोचाजिया सञ्च एमरे, समाचय विवा तरे केवरे । शक्तानु-जना के ना एवं रीनरे, जीव नरके चक्रमंदिनरे ११६॥ वामी के ना कन्याच है नारेरे, लाओ समने यंच मकारेरे । जेव्यवारी के'ना वच जेलेरे, नवी मादिया महारे कोई बेलेरे ॥ ता मुख्य के ना आवशे जान्यतिहै, नेदि पञ्चारची कता करिरे । तथ यह बकारे पहुचति . बाद जोई रक्ता नर सबूदे ॥१६॥ एक कोइबु बार्व व रखते, यक बाद क्ये बीजं मन्दे। एवा निया मनीकिक अवनारहे, महना पार्था विकाशांधी बा'तरे प्रदेश बहु रखा सह बार आनारे, बीर मुनिद गुर शिष्य स्टेमारे। अवस्थितकी भागा ए जिरे, वो अस्तरस माण्या रेनिरे ॥१ आ नेमां पच्या लायत्या यरारे, परन्या आविषांना मेप मारो । जामि सरवे जुनवारी जुनते, कर्पतृत्वातिस पुःचर ॥१८॥ आपे आवि गया अवधारहे, जम प्रदुष्टवा आणि बारहे। अवज कला पनी व कलासिरं, बाचा इनामाने ाती लजानिरे ॥१९॥ त वदी गर्य स्था गर्म आहो, मा दी वान मनिना मन महिरे । अगम अपार का वे अकलारे, कहा केन पने एनी कलारे 1/20/1 हांत बायर भारतस्यातिकामकामकास्य विष्कृतस्य स्यानिको पुरुषान्य वर्णान्य । एका कत्तमः जनगरः ॥५०॥

होहा--- अवनारी अरूज अमापने, वंदू हुं वारमवार । अजर जमर अधिनादिति, जाई पारणे दार इजाइ ॥१॥ अगोपर अशोप जमा-विक, अलंड अक्षरातीत । अगम अपार अस्मिनापार, अपंच कर्मच अजीत ॥२॥ पुरुषोत्तम परमाम पुरुष, परान्तर परम आनंद्। वरमेश्वर वरमानमा, परण पुरणानंद ॥३॥ सुखद मरवेश्वर वामी, सरवाधार सदा सुन्दकर । अन विन आतंद्रमप, श्रीहरि सहजा-वेद्य ॥५॥ क्षेत्रक् —एवा अनेद नामना नामीरे, दक्षी अनन वामना वासीरे । एवा व्यासी से सहजानंत्रे, जगजीवन से अगवंदरे ।१५॥ तेनो आप्या इना आये आहिरे, जनि मेर आणी अस आहिरे। आबी करियां अनीकिक काजरे, धम्य चन्य हो श्रीमहाराजरे ।।६॥ बन्य परंच परंच कृपान्त्ररे, पन्य दीवना वंपु द्यान्तरे । बन्य वज् पिनवाबगरे, काव अवनारण जात्वगरे ॥आ क्ष्म दासमा दोव विवारकरे, बन्य मुधर अब नारकरे। बन्य आधिनमा अभय पर-तारे, भन्य सर्वेश सनाच इरतारे ॥८॥ पत्य समित प्रसादना हैवारे, धन्य कर्या गुना वककिरवारे । धन्य नोपारांत्रा आधाररे. आयी पदार्था जीव अधारदे ॥९॥ यन्य अक्तवन्त्रक अगवानरे, आच्या इता देवा अभ्यय दावरे । पत्य दुर्वसमा दृश्य हारीरे, पत्र्य संगमना सम्बद्धारिर ॥१०॥ शरकातम से सुर्वे अनुनार, मोटा मे र-वान के ननगरे। सर्व जीवनी लेवा संवासरे, जाव्या दला को आवे द्यासरे ॥११॥ करी वह जीवनों जो काजरे, वही वर्धारण स्वाराजरे। ज्या परण परमारधीरे, वर्ध एकांनिक न्याच्या अनिरे ॥१२॥ नेनो जेने वर्थां सन्वेपरे, नेना हृदिया से भववपरे। वर्ष रखां नेनो सर्वे वासरे, नन हृद वासका वर्ष पासरे ॥१३॥ ज्या मोटो प्रनाव प्रगरापिरे, नया मोधनो मार्ग वनावीरे। वर्षा प्रमाय प्रगरापि प्रनावरे, वही वाद्या प्रभा प्राप्त वाररे। वर्षा प्रमाय बान के जनगरे। सर्व जीवनी लेवा संवासरे, जाव्या बना को  बु:व्यवस्य ॥१ अ॥ चन्य चरणियर धर्म तथरे, बन्य काच संबंध तार्था जनरे । बन्य बन्य बामना बामीरे, बन्य बन्य महजानंत् लामीरे ॥१८॥ कवीं वरियरण परमाधी, नेमां के जीवजी सर्वी अर्थरे। पत्य राष्ट्री गया बढ़ी रीतरे, तेमां बदार्था जीव अमिनरे ॥१९॥ बन्य क्रम सर्वेता वजीरे, शहिमा मोरप्य व जाय वजीरे। धन्य धन्य विक्युने वारीरे, गया अनेक जीव बद्वारीरे ॥१०॥ १म क्रेस्ट्-ज्ञानम्बद्धानिकरक्षम् अस्य विष्कृतासम्बद्धानिकर्णनते पुरुषोत्तमस्यानामध्ये एकप-चारचमः वकारः (१६) (।

रोहा-ज्ञायज्ञय जन जीवनने, जयज्ञय जारपनिराय । जयज्ञय जगदीशने, जयजय कही जन गाय ॥१॥ जय कृपान् जय व्याप्त, जय दीरपंपु रुव्यप्तर । जयजय समर्थ श्रीहरि, जय सुव्यप्त ह्यान संदर ॥२॥ जय प्रमाच प्रमाद प्रचल, जय परान्पर परत्रका । जय-जय जनकारण, जयजय कहे जिनम ॥३॥ अपकारी प्रमुख्या हुपत्री-वर, जयकारी कियां केंद्र काम। जयकारी वारी जूरति, पूरी सहुवा हैपानी हाम ॥४॥ भोतारे-जयजन जनमा जीवनरे, जयजन मनु-जि नावभरे। जयजय जमहिनकारीरे, जब जन्म मरण बु:लहारीरे ॥१४॥ जयत्रय जनक जीवनारे, सुन्ववायक को स्टब्रेगारे। जय जनना जनेनी जेवारे, जब सदा इच्छोड़ा छुन्द देवारे ॥६॥ जवजब जीवन करवंदरे, जयजय सामी शहजानंदरे। जयजय सुन्धर पन-ब्यामरे, जयजय क्यां वह कामरे ॥ आ जय जे क्यां आवि कार-जरे, जोई जब बाव्याचे आचाजरे। भनि अलीकिक काम कि-परि, आश्रिमने अभयदान दिपरि ॥८॥ वह उपाय कम्याम केरारे, कर्या आबी आ असे पंगेरारे । तेनी लगा अंटला लगाणारे, कैंद्र रका ने केस के बाजारे ॥९॥ वह प्रकारे उद्धरमा प्राणीरे, लेनी लेवा ललीं एवानीरे । मांगोपांग अथ इति के वारे, नधी वालिक व्यास जेवारे ॥१०॥ जेजे दीठी आधी जाण्या गाँवि, तेने हसी थोडी पनी कांहरे। एक दिवसनी यात वर्जारे, सलता व सलाये सपळीरे ॥११॥ मधां वरच आंगणपंचामरे, भंपर एक दिन दोष मासरे। एटलामां कर्णा अंजे काजरे, सेवं कोण लग्ने कविशाजरे

। १२॥ भोषा भाषे देशो पर्युकाणीरे, सर्वे वाल केथी न के बार जीरे । आ से संध माधान्यको एजारे, नेमां कथो प्रमाप समुनजोरे ॥१३॥ नेनो सर्वे जाणजो सन्दरे, मधी अक्षर एकं आमन्दरे । वण पूरी मतीति जैने काथरे, तेने आगवय के क्रो को कोयरे । १४॥ एने सली सल्यानी मां वेजोरे, अने होय हरियां अदेबोरे। नेव अर्थ आ बान नहि आवरे, जेने सन बार्ग्य काचे वावरे ॥१५। जे बो'च पुरी प्रतीमि बाळारे, नेना वर्षाची बाच सुम्बाळारे। सुम्ब लेका साचा सनसंगीरे, मुक्तां के के का वंध वर्षमारे ॥१६॥ शाबी के बी सुनवी आ प्रथरे, तेना मर्थे सरवी जर्थरे । जा लोकमां आर्नव रे'-कारे, परलोके मोडु मुख्य लेकीरे ॥१आ बादारम्य कर्द्रुंगे अतिकी बोटरे, जराजदं जानो क्यी जोट्टे। रूजे अशेषियानी वह जो ररे, परिपूरणमां क्यांको कोटरे ॥१८॥ समर्पती हां हां व पहनरे. एव सह समजो सब बांपरे। एव सबझी सरवे सुजाकरे, वान वकी करीछ अमान है ॥१९॥ नेमें नक बाकी गई दूरी है, कोड बान म रही अपूरीरे । काम्या पूरण क्रमाबंदरे, बचा न्यांन के निरकु-मार्थेन्द्रे ॥२०॥ इति वीमहत्रातन्त्रवाधिकावक्तवसेक्कविकुमानन्त्रविकित-विते पुरुष्टेजनवकाक्षकाने दिवजातनका बकारः ॥ ५३ ॥

रेश—पश्यपत्य जा जवनारने, बद्धार्य जीव जवार । इया जानी वीनवंपुत्र, सर्वेनी नीधी सार ॥१॥ असरपत्त्रणी जाविषा, वाविषा पर्यना लान । जीने करीने प्रपारिषा, वैकने वर्षा नियान ॥१॥ असरानीन अगम जे, शुगम प्रपा धनक्ष्याम । अनेन अपपूत जविनाक्षी जे, पर्यु स्वामानन नान ॥१॥ अन्वंत्र अवस्य अपार जे, ने प्रपा मनुष्याकार । अमर असर असाय में, ने ने भीधी मोजी सार ॥४॥ गग नामेथे—असेच असरानमा, अगोवर ध्या गोवर । असर अनुष्य अनिषया, ने प्रपा प्रयाम सुदूर ॥१॥ अनोन जमेन अगम क्या ने प्रपा प्रमा वान । मेनिनिन नियम करे, ने जो लीधी से स्वास ॥३॥ वाना प्रया प्रमा श्री अनोक्षित आये नियम प्रमान वाना । स्वास अस्त अस्त । अस्त वाना प्रमान ॥३॥ अनोक्षित आये वानी करी, आप्या अनोक्षित सुन । मान नानना मनमां, प्रया असीक्ष भूम । मान नानना मनमां, प्रया वानी करी, आप्या अनोक्षित सुन । मान नानना मनमां, प्रया वानी करी, अस्त सुने, परी प्रयारिया भगवन ।

सवद वय वसमां वस्ती, ते जोषां सर्वे जीवन ॥१॥ केकेकारज करियां, वाने वक्षी वर्ष भांच । लागी गृडी नेमां ववया, तेनी करी बोने सा'य ॥१०॥ अनेक श्रीय बद्धारमा, करिया देश विदेश । निः र्भव कर्या वारी बरने, आसी बलाव उपदेश ॥११॥ वास तीरव धरा वपरे, जोपा ने जीवन प्राच । देवी जाशुरी जीवनां, कर्याने कोट कम्याण ॥१ मा कलि जुनानुं स्टब्स काहियुं, अनजुन बरनाध्यो सीय। शुद्ध वर्षमां सन् रहे, जशुद्ध व आचरे कीच ॥१३॥ मन्द्रप पशु-धर्म भासनी, ते शुद्ध कर्या वर नार । सन असन ओळणावियुं समझावर्षु सार असार ॥१८॥ एच इन प्रगट करी, प्रवर्गावर्ष इपनी माँग । किम बार्यो वर नारीये, कलिमक व रस चर्याय ॥१५॥ विक भागपारी कर्यों, तेनो योगाने मनाय । जे अरवे आपे आ-विषा, ते अर्थ सारियो भाग ॥१६॥ केके कारण करीयां, जीवना कल्यांक कात्र । ध्यान वारचा समाधिये, सुन्ती क्यों जन आत ॥१ आ रीन अलोकिक लोकमां, देलादी दीवदपाछ । सुन्दी अंगरे सीने कर्या, पन्य पन्य पर्मना पाछ ॥१८॥ वन्तव समेप मेळा कर्यो, समर्मेगी बळी संग। इरका स्परका वह आपनुं, आपियां सुन्य जार्थन ॥१९॥ जुनाचे जन जमाविया, येते सई परवान । शर्मन कर्या संग सहने, दृति द्रकानदान ॥१०॥ इति जीनहजनक कावियरणक्रमसदेरकविष्कुस्त्रमस्युविदिर्श्यते दुवरोत्तवप्रकासमध्ये विवयस्यनमः शकारः ॥५३॥

रेश—आत ले'री आदिया छे के'रमां, में र करीचे महाराज ! अहस रहवा अल्बेनडो, कवां कईकनां काज ॥१॥ दृ:च काव्यां वृथ्वी हरसनां, सुन्धी कर्या सह जन। जस्ममो'से तेने भोकण्या, वोने वहं बरसन ॥१॥ पूरण ज्ञव्य चचारीने, भागीचे सर्वनी भूच । आ समामां जे आविया, राक्षियां तेहनां दृ:च ॥१॥ पत्य पत्य पावन वृथ्वी, जेपर विचर्या नाथ। चरण अंकिन जे अवनि, सदा मानेछे सनाथ ॥४॥ यम सम्मे । चरण अंकिन जे अवनि, सदा मानेछे सनाथ ॥४॥ यम सम्मे चर्या देश मोह शेराने, जियां रखा अवि-नाश । चर्य पत्य पास नगरने, जियां वर्षों वाने वास ॥४॥ पत्य पत्थ वारि वहनि, सांया नाव्या पत्न वंड । पर्य पत्य श्रीन

समीरने भारपदारकी आ बचाँड ॥६॥ घरप पाय बच्य बच्य केवने, जेने 💆 लोपा जीवन । परंच धरण मेपना सेपने, भीरता आहपा महन्त IIM पन्य पन्य वाशि सुग्ने, प्रद्रं पामिया आर्नेष्ट्र। देव दानव मुनि मानवि, सुन्ति कर्षा शहु बूंद ॥८॥ ज्यावर जनम कावर, सहवी लीपीए सार । स्थूज सूक्ष्य जीव जगमां, उतारिया अव-पार ॥९॥ भोगी कर्या सम्मां हना, आविष् अक्षरपाम । आप बनाचे उदारिया, करिया परणकाम ॥१०॥ वेरो व कर्यो वर्षनां, र्यंत पत्ने पनदगाम । शुद्ध करी सन्द्र जीवन, आधिम् पाम ईनाम BEER कोट उपाच्या कम्याचना, भाग्यना चौरुपा अंबार । जुला भागी मृत्या जननी, जमे क्यों अंजेक्टर ॥१९॥ हंका दिया जने जिल्ला, इयाचे सहते उपर। बब्ब ब्रनाच जजावियो, बुंज गाम मे यरोपर ॥१३॥ वृदद रीन का विन्यमां, बरनावीधे बहुविच । बाली बानरे बारे देवामां, बसुवनानी बसिद्ध ॥१४॥ जाबिकारायन स-हुने, नकि लेवराष्युं नाम । मजन कराबी का अवलां, आधियं अधारपास । १५॥ संभक्षाच्यं पद्धी अवने, सहजानंद माम सोप । के दो सुणदो ए नामने, तेने पु:न्य कोय नो'य ॥१६॥ एम अनेक जामय कर्या, पोतानको परमंग । अन्बंद पाम नेने आपियं, सह करी शुद्ध अंग ॥१७० अधनोक्यां सुन्य जापियां, आधिनने आ बार । अनेक प्रकारे अंतरे, सुली कर्या वर भार ॥१८॥ वडी जुडी बाम्यां रोकडी, पहि बचारानी बात । अमल चर्या सह उबरे, अस मक्याचे साक्षात ॥१९॥ ओदिएयाई कीद ओवरे, वंशे बगुब वर्षने मुख्य । जनम मरणान् जीवर्षा, रह्य निवि जरा केने वृथ्य ॥२०॥ वनि बीसहक्राभाग्य व्यक्तिवासक्षत्र वस्त्र में बद्धानाम् स्विति । विश्व विश्व व स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं चतुःपंचाहत्तमः अकारः ॥५४ ।

रेश—अमल भयों सी अंतरे, आवे अंत्ये अविवादा। देह नजावी इस्मने, आपेंगे अक्षर बरम ॥१॥ वर नारी निदास पयां, भागी वेडा सह सय। द्वारण लीपुं तंजे व्यामिनुं, वेने दर्श निर्भय ॥६॥ सहने उपर औदरि, दाको वेमार्थी सुंदर। भक्ति दरावी आ अवमां,

श वर्षुः व सहायुक्तः ३ दृश्यः क काराव्यो भ वक्तवावः ६ सेच

नायाँ कईक बारी वर ॥३॥ बीलय रीनने नावजी, बगराबी पूचवी वांच। सांसवर्ष मां मुं जे अवने, न्यूं कर्ष् आवी आंच ॥४॥ सन योग वयामवान-आनंत् आपयो अनि यणाते, आ समामां अल्बन, गुरुपोलम प्रगरीरे । असूनना सिंधु प्रकटारे, रंगदानी बाळीहे रेल: १० ॥२० विजयती बोचली पाणियोर, बजील घोडनगण; पुरु । विश्वविश्व वया वयामणारि, कसर व रही कोप; पुरु ॥६॥ कोट्य बहुत भावाईनरे, जिल्ह्यां जागित दोत: पुरु । हुन्य गर्यु पह इतनुते, आवित् गुल्ब अलीलः पुरु ॥ ३० । इत्र वास्त्रका चहावयी कल्याणनीतः, लहुन। अक्तरपर मीड; १०। घन्य पन्य जा अवतारनरे, जीवा राजी नहीं जोड़, पुरु ॥८॥ बहुने पार बहु उपरंदे, एकी चनाकी रीत: पुर । मां नी दित्री नो नी मांबकीरे, प्रगटाची पूर्वी पुनित्र; पुर । १९ । सर्वेश मामी के श्रीहरिरे, सर्वता काविया व्याम; पुर । सर्वेता नियंता वाषणीरे, वर्षेत्रां करियां काम; पुरु ॥१०॥ व्यासि-वारायण नामनारे, प्राक्षा वेसारियो जाप; पुरु । ए नामने जे भाषा-पारे, नेना ने टाजिया नाप; पु॰ ॥११ वार्या जे अक्षरवासनारे, नेने आध्योष्टे आनदः पुरु । अव्यव आर्थद् आपी श्रीवनेरे, काष्यां भारे अवसंद; पुरु ॥१२॥ जानां बळाव्यांचे लोट्यनारं, लही कराबीचे है म्बाट्य; पूर्व । वय कियां विज्ञां वारणारे, वे ती कियी अक्षर वाट्य; पुरु ॥१३॥ तम राज्यं जिल्हेकतुरे, वकाकी प्रणक्रमः पुरु । अपाद वृश्व ॥१३॥ सम राज्युं जिल्हेकनुरे, वकाकी प्रणक्रमः पुरु । अपाय है स्तुंतु आवरिरे, ने समु चयुं सुमनः पुरु ॥१८॥ स्रम्म महामानंद्रप्रीर, जाप चयानं प्रयोगः पुरु । पूर्वी दिशाय प्रमारिरे, खोटा मोटा है ने क्यां लगोतः पुरु ॥१८॥ अपादि मेचे आवी क्यारे, भारतं विज्ञां आक्रमः पुरु । पुरु वाल्यां ने पृथविषरे, भोषा चरतीना मजः पुरु है । ते । एका बीज ने चवेतुंरे, जनस सुमय कर्यु सरेयः पुरु । सह है जाने सुवाविषरे, देवा स्टारवा पाने साथ, पुरु । पुरु ॥१७॥ क्रमेना है जाने सुवाविषरे, देवा स्टारवा पाने साथ, पुरु । पुरु मार्थ । पुरु मार्थ । पुरु मार्थ । व्यवसान पुरु है । साथ साथ मार्थ मार्थ । पुरु मार्थ है जारे, पुरु मार्थ । पुरु मार्थ । पुरु मार्थ । पुरु मार्थ । प्राचित्र है । पुरु मार्थ । पुरु

Resolvented to the test of the काज; पु॰ । घणे हेते घनइयामजीरे, मळ्या अस्रवेटो आज; पु॰ ॥२०॥ कहीये मुखधी केटलुंरे, आपिपोछे जे आनंद; पु॰ । निष्कु-लानंद जाय बारणेरे, से'जे मळ्या सहजातंद; पु० ॥२१॥ इति शीस-हजानन्यसामित्ररणकमळसेषकनिष्कुलागन्द्रमुनिविर्धिते पुरुषोत्तरप्रकारमध्ये पंचपं-चाञ्चसः प्रकारः ॥५५॥

प्ररुपोच्चमप्रकादाः समाप्तः ।





धीलातिनारायणो विजयतेनराम् । श्रीनिप्कुलानन्दमुनिकृत— काव्यसञ्जूहे

## सेहगीता।

राग धन्यासरी—संगळ सृति छ श्रीसहाराजजी, इजजन बहुन श्रीवजराजजी। मे'र मुज उपर करो एवी आजजी, अंतर इच्छेछे गाबा गुण काजजी ॥१॥ ग्रष्ट—गुण मावा गोविंद तमारा, इच्छा ते मुजने अति घणी। चयुं परित्र लेहगीता, जेवी सनि गनि छे मुजनजी ॥२॥ स्नेहे कथा हवे सुजो सह, यह प्रकारे में पेकियुं। जप तप भीरथ जोग जज्ञ, लेह समान नव देखियुँ ॥३॥ दान पुण्य ने बन-विधि, करे भक्ति प्रवधा कोय । स्नेह विना सरवे सुनुं, जेम श्रोजन चूत बीण होय ॥४॥ नीर विना जैस सुर्फु सरोवर, सुरुष विना शियाँ फूल । तेम केह विना सनुं हदय, शुंधयुं चवेशे चंहलं ॥५॥ प्रेम पित हे दूखी जो भगति, कोइ अनेक गुण भावे भणे। चीर विचावान अतुर अस । चळी कवि कोविदने कोण गणे ॥६॥ लोह विना खुखुं छागे, कथतां ने कोई औं ज्ञान। देन विनातुं इद्य एवं, जेवी वर विनादी जान ॥७॥ सेह विना को मे नहि, इदय ते इरिदासनं, पंकर्ण नयननी प्रीत बिना, अमयुं शुं रहेर्यु उदासनं ॥४॥ नेहनां भएणे नीर यरसे, सामां गद्गद शिरा निसरे । कृष्ण कृष्ण कहेतां मुखे, बळी वपु विकारने विसरे ॥९॥ प्रीते विश वरणे सोंपी, अने खेह साची जे करे। निष्कृतानंदना नाथ साथे, खंहीने सदा संगे फरे ॥१०॥ कडवुं ॥१॥

५ एक जावने पश्री - २ कमध प्रवन मश्याननी

والمراجري والمرامر والمراجرات

सोहनी सुर्वि सुदर इपास है, हमें दरी दगठा। गोकुछ गामजी। मेरी जननो मारचा कामभी, भटबर नागर मदा सुच्यामणी ॥१॥ राष-सुन्धवा सागर श्रीहरि, जेने देनना दिल्हें हरे। सूर्ति जीतां मावकीशी, केलामां सन स्थितं हरे ॥२॥ केने कोई मोटी जनतुवती. अति प्रीत करी हैये हेनडाँ । लंह बाध्यो द्याम संत, सोपी तन मन पन समेनहा ॥१। वडी पहा पनी ने कुझ बेली, ररिशीयमां परवज्ञ थयां । भरिता सर ने बाग बर्ग जे, स्वेदमां सकुलाह रक्षां ॥दा माथो मोथी ने गंशकर्जाण, इति आस्माधी अविक कर्मा। सेह वांच्यो येम वाच्यो, प्रीत शीन अनि आवर्षा ॥३। भीनेनु जीवन जल जोने, जैस चकोर कोडी चट्छे। तेस बज जुनतीनुं जीवन जाको, श्रीवंद श्रीको बंद छे ॥६। जेम मोरनुं मन सक्रप् केपहाँ, क्रेम परियो कोडी व्यानको,। तेर घकी अधिक अमे, तार जुनती अनिनो ॥ अ। जेम अधिने भंगे आंगके, भीण मान्य ने पणुं छून। नेय कृष्ण मळे मन गळे, अने टके ते तनशुद्ध नरन (1८)। जेर वयणे निरम्धे नाथने, नेनुं हाथ हेयू केम रहे। ते छात्र सत्रे कृष्ण बजे, यदी लेहमार्न हे सुन्य ग्रहे ॥९॥ नटबर नागर सुन्यभागर, भनोतर भूति भदनती । नियम्हणानद् गोविंद् छवी, सुमान्युं जो सदयकी ॥१०॥ कहते ॥२॥

सुन्यत्य भूमि जोई जन गोवीजी, श्री हरि वरणे नन यन संविजी। जंनरती कृष्टि हरियां आरोपीजी, होस कुटूबनी नजा जेने होपीजी ॥१॥ हान—होपी हजा जेने होसती, अन सोहबड़ा पर सुंदरी। सोबन कीपी जिल्हा साटे, एवी खबल धीन हरिट्टां करी ॥२॥ हरनां करनां काम करनां, कृष्ण कृष्ण करे कामिती। धीन बचा पर्द प्रमदा, जानि जाने नहि दिन जामनी ॥३॥ व्यानां वीनां बोलनां, बढ़ी सेहयां द्युद विसरी। सुनांसूनां जाने सबसी, उठे कृष्णकृष्ट्या सुन्ने करी। ता वाटे घाटे बन जानां, मन नम मोह-नद्यं सक्यु। स्टोकसाज नेद्रविध विसरी, बढ़ी भाग ननतुं हे टक्टयुं ॥५॥ बढ़ी सब्बामां भणकार सुने, जाने वयने निरस्तुं सुं नाभजी। कुल्यांने बढ़ी एस जाने, बान कर्स्सुं बाना साथजी ॥६॥ अंगो-

१ वर्गको १ वर्गम ६ मावस

अंगे क्य गांची, पशिवर्ण यहं दीनमां। सामन ने हवे जु करे, जेने कृष्ण धिना नाथे बीज विकामां ॥ आ मरणाना मेकी गई वेकी, इन्स्मन दुना आसी अंगे। नेशे करी नवक्राम रक्षियो, मळयां प्राण कृष्णने समे ॥ ८। आप मत्त्रमु सन सक्ष्युं, रुक्ष्युं काणांकुत्रानु करन्। क्य लोह साथि सर्थे आवर्ष, अन्य म स्यु आवर्ष्युं ॥ ६॥ पीमनी रीनने क्रेसने प्रकृत, नेनो जिल्लाम् आसे नहि। निष्कृत्यानद् अपे कृषित, क्रेही जननो कोह सहि ॥ १०। क्ष्युं ॥ ३।

त्रीत करी प्रमादा स धररपर पर्दाती, जगना जीवन संग मोचन अहीजी। विसे रंग पटकी में पाळकी परीजी, निस्पाल नक्तो नेह यही वर्षाजी ॥१॥ राज-स्वारियं यहिषं धकायको, सन्। बारको इयामद्रां। वण दिवे बळी चिटने बनिता, रहे प्रदासी पन पामद्रां : ॥२॥ अर्थ श्रण वर्ती न हाके, वण दिटे बहुन बजराजनु । टोरिय वोशिये कोचे मुंदरी, लेख व काचे पाठी नामनु ॥३। माहोसाहि बळी गुग्ने, बाई इस्टानी ने क्यां इटें। कोइ बनावा कान मुलने, जो इं भुष्य कांडक महं सम । ता यन मुख्य बाद वेंश्थिति । दर्जी त्रवे प्रमुखी मेंहर । अण दिने अवयेन्द्रको, कीई वरी न दाक पीर हिला बन दिरु घशी बीने बसमी। जुनकुरूप एक एक जाय। प्रान गुनवन घर पहे, एम गरक लेहमांच ११६॥ एम करना आवि अवा-वह, जो देखे रसे हपाछने । पण नाथ नपणे निरस्ता विना, संही व को करीर सामाजन ॥ आ मांस विना श्वास रह, जन खेटीना हारीरमां । प्राण जेना पहला परवदा, नेनां नवनां अवाँ रहे नीरमां ॥८॥ जिन उदास निश्वास मुके, अने सुके दक्षि नीर नपणे। हे सन्या हे सुन्यकारी, एम वहे बळी बळी बयन ॥९॥ प्रीतनी तो रीत तहवी, जेनुं सन मोहनशुं पदम् । निष्कृतानंद लेही जननुः कारण वय जाये कलपुं ॥ १०॥ कष्टचुं ॥४॥

वद्यान कीर बनार कीलनी रीत छ जो न्यारीती, प्री॰ । जेहनी वंधावी नेवेर जावी, विज्ञान जावे लगारीती, प्री॰॥१॥ वद्रार कोही वंद्र बद्दनती, बच दिन्द वृत्य आगी। भीन खरी जावोरे जन्दना, प्राण नजे विज्ञ वारीती, प्री॰॥२॥ प्रीत पत्रम शालपरवद्यमां, वेल्यत रग देन

जारि। बालक संबी सहाम कालनो, सरे विष्वियु पोकारीनी; बीक ॥३॥ बीलिनी रीम प्रसिद्ध प्रतीजे, कीज मो कीजे विचारी। निष्कृता-वेद एका सोहीनी संगे, सहाये रहेडे मुरारीरी; प्रीकारण पद् ॥१॥

केंद्रने बका संशाय है श्रीहरिजी, आदे आवे सुनना भूपर देश भरीजी। लेको बेरिस अनने बेस कराजी, घरण घरण बेस सजात-वती वर्तात्री। १। राज-सरी पुरुष वेसमां अगे, अने रगे राति राजने । स्वेद्रसांग न काम कांगे, मेले मुस्ति स्थानक काजने ॥भा लाज पाननी लवर भूछी, वजी बल पेरवा विसरी । आम पण अंगे परे अवलां, एम शुद्र मूली लंहे करी ॥ ॥ पण जमारे जननालमां, अने नीर भर श्रीर ठाममां। एम सर्व अगे दाद वि-सरी, बळी जिल व रहा पर पाममां ॥ शा सुन विल वे सर्गा संबद्धी. बळी ए उपस्थी सब उनम् । जेत जुदे में एम जाणे, कर पत्र विक अस्तुं कर्य ॥६॥ बळी सोरस सपनां भोषिका, अन जुरे बाटानी बाटर । बमचा आवे मूने बालावे, एवं नमचे योहन माटरे ॥६। कमण तृष्टं केश हुटे, तेन शक न रहे संभाखना । बन्स छोडाने पेन्त्रे थांच, मेने व जाय बाळवा ॥ आ बळी भविषकी अनि वसके, अने है आवे इकाणे कुष । एण द्वार इनलां विका कोराणुं, नेवर्जा व हते कांचे द्वाच ॥८॥ लक्ष लाग्यो लाक्तिहार्त्, जंतर अवयं अववेत्रहा । रदी हेने प्रीते हर्जी ससी, जेस हक्ष विस्तृ बेटपर्श ॥ गान दिवस त्वं राति, अने भाति प्रेसमी प्रमदा। निष्कुटानंद नाथे सवधा. समनोच संदर्भ मदा ॥१०। करवं ॥०॥

बद्धी बजबिना वेसे परवज्ञ वर्षों, रित्तपानी विना रंच नव बादे रहीजी । कृष्ण वर्षों कृष्ण वर्षों जेने तेने पूछे जहंती, एम लेहनी सांकळी जूड भूली सहंत्री॥१॥ क्य--- जूड भूनि मां करी-रती, बळी गोबिंदने गोन पणु । भाषो रित्तपा भाषो वहा, निरम्नुं हु मुन्द मुजनम्नुं ॥२॥ बाटे पार पूछे बनिना, बळी बोह बनायों कृष्णन । नाथ विना नर्था रे बानु, पणुं दिन दान्नछे १९णने ॥३॥ बोद्धना ते स्वरी ध्वयर थामी, जांच्युं बानो सभारमा बनमां । शहर सन हुई जाये केहें, एम विचार्युं बनी सनमां ॥४॥ गोरम रमनी मरी गोळी, बळी जाय सभूगं मार्गे । एह मने वानि बासे, इयाद्धने देखवा हते। (०)। नाथतीने निरम्या विना, वयु दिवस त्राये दोयलो। व्यस्तीने नेटे स्थारे, कारेज सुख विन सोयलो (१९)। इस्मिल जोये सुख उपले, बक्की वालि बने वालिस्ने। जिल्हा यन ने न्यर पाये, स्थारे जुने इन्तेयर वीरने ॥ ३०। एक मील पायेने वेच्च प्रक्राये, बन्नी विरम्भा विल्क्या करे। वेमरोरिये वांधी प्रमान, वालसने वांसे करे ॥ ८॥ इयाच विनर कांद्र कांच व सुने, वसी कम न वने कोई। पियु विना वस प्रेमीने, बन्नी वीर्त ने बरामी लोई (१९)। लोडी अनन सुख क्यांधी, जेना प्राण पाने कांच हो।

निरुक्त अन्य अन्य अन्य जी विकश्य एकि दाच अ ॥१०॥ कर्य ॥६॥ इत प्रतिनाता देवन जोवा बळीजी, बान्यमे बगाहि बनमांचे वांसबीजी। सुवी सर्व संबरी मोहनने है समीजी, एक रही जावरी वय वादी निकलोशी ॥१॥ ११४-- निकली व वादी सुद्दी, गोपी येरीने बाली प्रदर्भा। देव नेदार्भ यदि यान्त्रं, प्रवास कांत्र है नेमा बरमी ॥६॥ नेहने विरय प्रपत्नी अगमी, बनी वियोग रोग कारयो पर्यु । आ मने हतो रही अमधी, अही अनारय एवं सूत्र-नम् ॥३॥ तम संदर्भ प्राप्ते पम्, पनिना कहे रही गांसकरे । पर्छी केन्द्र देश संदिरवाये, याण नो'ता पिएने पानवये ॥४॥ एव रीते वों नी अवसा, मोहनजी नगे है बद्धी। भी निक देवनुं जान जनी. अतिवादयदेष वामी बन्दी ॥५॥ बेमी जनन एव वारानं, विनय विका प्रकारी हारे। विद् विद्यारी प्राप्त रहे, ने लोह पाउ माने करे ॥६॥ हीनती तो रीत का थी, जेता जिनम माथे पान है। जीवन विमा जबर जेने, रेसर कार दूं प्रयोग है ॥ आ पन्य ए मारी प्रेम प्यारी, जेन बाला विदोमें तब त्यासिए । अन्य सुम्बनी आश्वा बेनी, सब सोह-नजी इं। हासिएं ॥८॥ एवा जनधी अर्थ पडी, बानम न रहे बेहचा । देने इक्या रहे बक्या, और अने होय कीय अवका ॥ शा हो जाये कैये हेन जो हैये. अने येम विना नो सक मरे। निष्युक्तानव सरवे : माधन, ओडी समना कोच करे (११०)। कहते (१३)।

जैने भंगे रग परियो लंहनोजी, श्रीते जो जिनमद्री प्राण सक्यो । जेहनोजी । अनरे भभाष व भाग तेने नेहनोजी, जो जीन रीते

र क्यानुकारी, १ वर्षी, १ हामको

\*

चन्द्र ५

पान चाप का देसनोत्री ॥१॥ ४ ल- देसनचे दुः ले करीने, दलगीर न थाये बलमां, वरव कृष्णे दोष हरिनो, परदे नहि कोह पलमां ॥२॥ गुण संवा बळी गोविकाना, जेने अनाब कोड जाव्यो नहि। सरवे अमे मुखकारी, हवामकाने समझी सहि गुरु। जेनो वर्ष वियो सही लीको, बढ़ी कोडी मोरामनी मोर्छीयो । बाट घाट वेरी बरमा, जेन लाज नजावी रंगे रोद्धीयरे ॥४। बेग नजाडि मेर जगारी, बळी नुषमां ने दी पनिना। तस्य नियां विस्म्बार किया, नोय म आपी अनरे असमाना ॥५। कोइ वाने भूरण वाथे, अवगुण न आस्पो अंगरे । दिनदिन प्रत्ये प्रेम प्रगट्यो, नित्य जिल्य वर्षो निर्मनरे ॥६॥ राम रचि स्थेन मचि, वसी विछोई गया वनमां। रोईरोई स्रोई रजनी, लोग सोम व पामी मनमां। अ। नाधनाय मुख गाप गानां, बळी वियोगे वित्रले घणी। शोधे हरियो दोष न परहे, एवी रीत ओ बीतनजी ॥८॥ बीतने मेंग पग परती, बजी पाछी न भरी जेले पेनियों । जे जिला साट बार्टी बारे, खरी बीत पूरण नेनीयों ॥९॥ आगी लगन भई सगन, बळी नगन कपर अन सुखती। निरक्तना-नंद अनेदी समनोत्त, कहे कवि जन कोण मुखनी ॥१०॥ कहवूं ॥८॥

कार पाड-संहते हे समान, नावे कोई खेडने हे समान। रागी वाती ने लपकीरे, बली घरे बन अह ध्यान; मावेका?॥ जोग जगन बहु जजनारे, नजनां तेनुं प्रते भाता। नजी घरवाम उदास करे कीय, बारे तीरच बन दान; नावेक ॥६॥ माला निलंक घरे करे करन, नव शिवा बधारी निदान। करे अटन स्टब निर्नर, बली करे संभाजना पान; नावेक॥३॥ स्टेड निर्नर नाधशुरे, शुं धगुं करनां हे हान। निष्कृतानंद स्नेही जनने, बश सदा मगवान; पावेक ॥४॥ पद ॥२॥

संद सांचले पर्नाणी के प्रमदानी, नेटने अंगरे महि कोड़ आपराजी। साह द्यामकीया समें दाना सदानी। इन्द्री मळी श्री हर्ने क्षी समयदानी। १। ११व—मुना सदाये सम्माण, जान अहरनिया राणीयरे। रथ राजी पन मानी, नानी गोर्थद गुण परेषरे। १०। वळी पनवाट घरे पार, डिपे द्याकृद्रशान दान।

१ कृषः के आंग

वाय जिरम्बी हैये हरमी, बळी रहे मने युक्तान ॥३। हरमां करनां काम करनां, हरि अचानक आधी मछे। मगन रे'नो भुन्य लेनां, एस प्रेम आनदमां दिन पत्रे ॥४॥ हमनां स्मनां जोचे अभनां, बळी बीने घटी घणुं सुन्यती। पत्रे पत्रे प्रेम प्राप्टे, ओनां करोभा भीहरि मुन्दती॥४॥ हाम बिलास हरिनी साथे, बळी के'बुं सुवयुं ने कानने। नाळी बळी हेवी नेहरां, प्रोटपुं हरिश्ं नानने ॥६॥ रात्र दिवस बीने रंगे, बळी अंगे आनद् अनि घणुं। संस्थर सुन्यती भून मागी, जोनां मुन्द जीवननणुं ॥ अ। विधोगनी बळी बानने, कांगे न्याने पण समझे नदि। एह रीने बीन बाधी, अंकनी प्रमुखं जावानुं सन कीथुं, एका एवी उरमां घरी॥१॥ घणा दिवस गोपी संगे, रंगे रिनेपा रसवस्त्रां। निष्टुत्वानंद केह ओवा, बाली के' बेगळा बसझं ॥१०॥ कह्युं ॥९॥

बेगको गया विना श्रीन न प्रिजायजी, बाल्यमे विवार्ष् एयुं अन सांगजी। अल्बेले मांग्यो पती पह उपायजी, अन्य आदिया तेह समे लागिजी ॥१॥ र य-नेह समे अन्तर आय्या, अने रथ लई दला सपने । राम कृषणने नेहदाने, मोकम्पी कंमासूर भूपने ॥२॥ आश्रीन सोक्यो आंगणे, नदरायने निरुधार । गोशी पद्धी टोके 🖠 मधी, बळी करेडे विवार ॥३॥ आ दिन मोर्थ आयो कोई, सर् 🖔 भुवन नथी जो आवियो। बाई गाम नाम पूर्ण एहनुं, आ दो अर्थे हैं रथ लावियो ॥४॥ बाई समी नहि ए बादु के कोई, नंद जमोदा गोपने । तिथे कांइक नर्य नियतको, तथे देखको दैयना कोपने ॥५॥ जानो नाई जुनो जैने, सुणजो नदी पत्नी नायही। वा'स्रो पई कोड़ वैदि बसे, आरुपो ए करवा पानरी ॥६। कोरे नेवी बाई कुरणने, पळी वात करो बालपवडे । हेन देखारी राज्ये संनाही, जे नजरे क्षेत्र वर्ष पर्छ ॥ आजजननुं जीवन जेही, तेनी जनन आसी किजीचे । विधन सापधी वांसी वस्त्, वाई ववादिने सीजिये ॥८॥ । एम आकृत्व रपाकृत्व भाग भवता, मांहोमांहि मनसुबी करे। भागी आवयो काळकरे कोच, रम्बे धाण बाई आयबा हुरे ॥९॥ वर्छी गाँधी-الإنجاعاء أعلما ماعاداء ارتهاء استماعات أعاماء أعاماء أعاماء كالمتاعات المتاماء المتاماء المتاماء الماء में ने नी अवन कारी, वाई अक्र एतुं नाम है। निव्युतानद्ना नाम साथे। कांद्रक एने काम है ॥१०॥ कहाई॥१०॥

जाच्यो अक्टप व्यवस् पासी वरीजी, कांडक कपर भीतरे आवयो भारीजी । कोरे जाई कृष्णने कांग्रस बाल करीजी, लेव नपी के ना हैपानुं आपकाने इतिजी ॥१६ सब-इति इनकर देवा केती, वसी बान वसी वस्तावता । यन अन्दर साथ एकांत्र बीधी, सेहती वाय विकास विकास । है। कोण अन्ते वाई देश करकी, क्या पहली वर्षी क्षांच । पूछो अर्थ वाक जीवक्षेत्र, ह्यूं के एका काई बनमांच ॥३॥ एम करना अक्रमा, बननो ने वर्ष आणियो । अक्रिकारीने नेट-बाने, एके इच जाई आकियो ॥४॥ एकुं सुकीने अवस्रा, अनि अस काणी अंतरे चली। जेस धाण रहितदत पुत्रका, एवी राज्य वर्ष गोपी नची ॥'।। महचरे कोइ पहे हचनी, यम शुद्ध व रही हारीरजी। इयाम संयोग्यानुं अवने सुनानां, बिंक नयने चाली भीरती ॥६॥ बनवली होने मधी, क्ष्टी बनिना कई केम करशा । जीवन जालां अंगरे आपने, बीरज कर येरे चार्य ॥ आ आध्यो अकृत काळक्ये, इसमां बाम सहते हाटशा । पछी लात्तुं से सुन्य सजती, ने समे समे पर्यु सालशे ॥८॥ गयुं धन जोचन दिन से, ने पासू नधी कोह वासती। एव जायजे वाक्षे अवता, हरि हीते वासती॥५॥ जिल् थन बाह्यं नाथ जालां, पड़ी ओडिस्पाटां रेड्यं अंगे । निरक्तनान-बना बाब साचे, इवे क्यांथिक रमझ रंग ॥१०॥ कर्जु ॥१०।

वही कह अवानक अधियोती, उपारे हरिवरने कंसे बोलावि-योती । अपूर्णनी महीनर हाथों कई काबियोती, आपने भी लेख एको जो लकावियोती (12)) एक—लेख लक्नां भूक्यों में बचा, अने अकल गई लागि उचली । जोक जोवि आलंखें कोबी, नागी जमन प्रश्व एकी बळी (12)। विवेद होय जो विधि मुंगां, तो गुं व करे कोए दिने । जोग केली देश उपेलि, नेनी मेरे अभी नारे पने ॥३॥ जन गमनु सुख केळवीने, बळी विशोह परहत बळतो । पारे भूरत्व मोहोटो आई, अभी करेड़ नुज टळनो ।ता जेस कल्यां-वरे कांड्र करियां, प्रचानकां रूचे परणावियां। स्थानं रमनां रोच उपने । तारे भागमां ने कांचे भुलियां ।ति। नेहमाट मुंने बखा \*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*\_\*

भार. रेशमा न एडती जापिये! हरियर न नाणों अमने, मो असन येहे न उप वियेतिशा होम अमारी हैया करी नथी पुरी करी नापने। वालाधी केम करेते केमळां, एवं। वेश पर्यर हां बलमायने ॥आ नयणे निरुव्दर्भ नाथम, जह मटके करी पांचण मन्द्र। नेहल ब्रम्मा भृत्य भारी, करि आहे मुंजन कळे ॥८॥ एटकी लोट में करमरे, मो पेगळे भन वस वाळीये। नेहमाटे माई कर्यु मुजने, उपा दलपी नम टाळीये ॥९॥ भृष्ण भिना केम करीने, नन्दी चिकट पनी बामडो। निष्कृता-नदनो नाथ चालमां, प्राण प्रीते दृश्म पामके। १०॥ कह्युं ॥१२॥

वन्नता अवयो -- अवृतो स जावतो र जिनय पानकारे, वाल्य असने नोपानं सार। नाथ। जन्नते अर्थु रे होप नियां नमनेरे, तो लेजो इपाधका असनेरे साथ; स॰ ॥१॥ भीन करीने रे पियुजी मा परह-रोरे, शक्षा धिनस असनेरे पास । अळगाने रे तरि अपीर सनि असनेरे, वण दिठे रहे अंतर उदास: स॰ । का जेस सणि विना कणिरे अवदिते आंधळोरे, वकी कोइ किए का भिनु पन। यस कृत्युण सृत्यु तेन सानपुरे, जेनुं कांद्र जातुं रहारे ओधन: म॰ ॥१॥ जळवासी जीपरे उवाळामा जीने सहिरे, असारे छे तम विना हरि तेम। नियकुलानदनारे खासीजी सुजाण छोरे, अजाण से होप तेने के बुं

विम् परिवाणिया सथूनी जावा सायती, रथे वेटा रसियो अंतरे हैं है उछावती। आपना वपरथी उनारियर भावती, पियु बिना धमदा है नहीं केटी लावती। ११ हाउ—लाबे लाने व्यक्ति, पियु बिना धमदा है यही निगमता। दिन जाना बढ़न जोता, बळी रजनी जानी एकी रमतां। १२। एक त्वा धाई क्यांथी भरपद, अन्तर मृते आवियो। है आज लेगा वावियो, जा रथ जोने लाविया। १३। आदश्कलना पृद्ध देंथा, आने भीय बहु मेरी भया। भागके भाग्ये अक्तर लेगा, वेटी केम नाम तथा तथा वक्त होग दरम विद्यानों ज होय घरतों, मेने घेंद व होय मनदां। निर्वय होय दरम विद्याना, यह घाम न होग नेना निर्वा स्थान होय दरमें। असे प्राप्त अपने हास होय प्राप्त पराप्त । असे व नेना निर्वा अपने, एम धार वोकत्र हो। आ मान नाम सुने संबन्धिती, बळी छोकती। साज म साव तो। मरजादा मुद्दी रथने हे संबन्धिती, बळी छोकती। साज म साव तो। मरजादा मुद्दी रथने हे संबन्धिती, बळी छोकती। साज म साव तो। मरजादा मुद्दी रथने हे

रोबी, बजी बालाने बाली लावजो एन जेड लाजमां बाई काल बतरे, में माजने हुई बीजिये। विनय रेजो जो बच जाये, मो लोकहुँ जावा ईडियरे ॥८॥ वेबने बाई नेम न रोय, जेना वाल जिनसहु सजया। लोकलाज वेद्रविधि कम, मेनो मेने करणां रचयां ॥१॥ एटला बारे आपने, राम्नो रिस्मानो रूप गेकीने। विष्कृतानं-बने नाथ सजनी, केस आहो विस्मानां मुकीने॥१०॥ कर्यु ॥१३॥

जा एड अपकारी अन्य पानी गईजी, नंद ज्ञांदानी अकन कांद्र न नई जी । जो लने आपने समझानिये कही जी, एने कोंद्र विचार अवर क्यों बहीजी शरा सब-विचार व क्यों बजवासीए. लेम बिहा पण कोड़ जब पण्यूं। केम करी रहे कृष्ण बाई, अपराय जापनं आची बरएं ॥२॥ आ समे कोइ मरे अचानक, तो कृष्ण रहे नह कारने । मारा वे का बरके चरा पण, बाब बरे तो जाई बारले ॥३॥ अन्य प्रयापे अलबलहो, बळी नथी है वा कोई रीतही। अही काई आजाम्य आवकां, चित्रु छोती चानवा भीवती ॥४॥ आ जो रचे बेटा रसियो, बळी लेडावियो यस ने खरो। प्रोडो बाई अहचे है याई, बिनमा विलंब जो मा करो ।८० बाई रोकी गलीये रचने, बळी बा'लाने पाछा बाजीये। मान करीने कहिये हरिने, पियु पीत लो वय टाकिये ॥६॥ एम रोजे मको बिटी बको, मेनी मानियी मर-जाहने । जीवर जानां मधी न्यमानं, यर नाय करे भववादने ॥ आ अर अवाये आ जनमारि, इने श्रीदरे शांति गल्डा । छात्रं हे ते सर भाग छन्, आज नेक चयाचु नाष्यम् ॥८॥ निंदक जन मर निंद्रा करे, बळी दरिक्रम पर साम्रमा । कृष्ण प्रणी माने कृष्ण प्रणी, लम के इंद्र मुख्य मुख्य माजनां ॥ ।। स्टाब्स मध्या वस्ती बन्दी के दो, नेनो सां बळी रेज अवले । क्ल बिक्युजानंदना नाधनी, बाई लोट्य न अमाने आपण ॥१०॥ बहर्ष ॥१४७

 7 T. T. T. 1. 1 7 T. T. T. T.

अभ्य ने दांसी थाये, एवं सेट् बिगा वस साम्बंग । है। दोक गुजन । एस केले, ऐ जलावारी सरावान । जाल लात ने क्यां वरी, सार्व सेंडिय हों गाने । है। तम साम ने केंद्र बीची, तेना देख्य धावा हेंस्नी । एवं की होंच आप लहन्दी, एस सरने छात्रामं सभी ॥६। तीनने भाग कर प्रवर्ष, मन सामान सने को । ध्वर करनां सम साचे, जन अने ए निम्मा । ६० एकि कर्च ने क्या माने। अने काला पदी पर भ्रवती । एक पार आवण मन्द्री, हदे राज्यों । सह सर्वा । आ एस पीरल दिया पत्र आवण मन्द्री, हदे राज्यों । सह सर्वा । आ एस पीरल दिया पत्र कि मुन्दा वर्षी ॥८॥ हुने । पाणपी । भग विना जिला ह्यां सुन्दरी। हं सब अने ने स साचे, एना वान सने से जरी । आ प्रेसनी शादिय प्रमुख, हुने बंधाओं वेड वापकी । एस कर्डने वालिया, विष्कृतानंदनी नापकी ॥१०॥ शहरी। १६॥

इत्विर हालिया मध्यो मारगेशी, जुने यमे जनशी अभी रही एक बरेजी। मध्ये व सर्वे प्रदेशहे जरु यह दोग होजी।स्थ जानी रसियाओं दीठों के दर असेजी ॥१॥ गर - दर खरी भी रच दीठी, वाडी बंद नंद रही जोई। उपारे नयले मार्च न दीडी, नारे बडी कुरविषे रोई ॥२॥ जंब बाज जानां करते, अनिवाय पीता उपले । एकी मन्त्रने पानी सोपीश, आने तन तम्यू के सते ॥३॥ शुद्ध न रही कारीरजी, सुन्धां लाई यही साजिजी। उठी व काँद अवनि पकी, पक्षी मूर्जा दक्षा देवभावती ।(४) इस गयो दक्षिती माधे, रहाँ केंद्र संद्र पड़ी पूचनी। जिस दोरी मुरी दारकती, भाग्य रहिया पुनळी हरी ॥ ता व शे अवस्था पामी अवस्था, बळी हपामळीची सथापना । बण वन्ते दरद ध्याष्ट्रं, स्टाट्यू सेह समायनां ॥६॥ एटका पछि अम् संस्थादी, अने उदी सर्व अपन्य। माहोसारि मन्द्री कती बहे जे, सामजी कता क्य बदया ॥ भारो आहो आहो पयु बाई, हरे भूपाने कैये भाकत्। सद्वमांती सभी आपणे, शु जोईने मन बान्दर्श हिंद्या घेर आनो बरण व पाने, आगी बानीने पाठि बन्ने । पछी पगर्या जोईने पिएजीनों, बारपार निर्णा रखपळे। 👊 रज छई

to the state of th

एई प्रसन्ध सुके, बन्दी बन्दी कर वह बदना । बेन्द्रा बन्द्रजी वांनी मारा, आप निष्कुलानंदना ॥१०॥ करने ॥१६॥

रत्यम कथा — वाई बीत करनां विनमहां, उपारे पीहाये पंता। ओवह एनुं एकोह न मळरे, जो भ्रमिय नमांदः भीतक ॥१॥ वाई वीन जले क्यारे जलमां, त्यारे उरे कोण ठामे। वक्तर दृष्टी भगी वंडपीरे, त्यारे क्यां सुन्य पामः श्रीतक ॥१॥ वाई वक्तरे दृष्टा पाम्यो दिनेजभी, विवृत्तपी नामयी। कोण उत्ताय हुने कीजियों, गज जलियों जान्हणी; श्रीतक ॥१॥ एम निष्कृत्वानंदना नापपी, पीहा आयने पामी। हो करिये हुने सामनीरे, आया उत्तर्यानी वामी; श्रीतक ॥४॥ वद्य ॥४॥

एवं बळी बिनना बिननी पाठी बळीजी, चरण न बाने परिवर्ध वहे रहीजी । अबर आभवन संभाळवा दृद्ध रखीजी, वायदो बा-लानो कोइ व वाकी कळाजी ॥१॥ वट-कळी व वाकी से कुरणे कर्ष, मेने विचारका वितना मळी। शुं कर्ष वार्व इयामके, प्रवादे आवका बजमां बळी ॥२॥ अनेन हती सह अश्वने, बिछ वही नहि नेह वळमां। कांद्रक कुडू माचु मजनी, क्यू एविने एळमां ॥३॥ एने क्यू नकवार मळश्रं, एमां कपर काइक हे सहि। एकवार ने कोण जाण कै.वे, एनो काई निरधार नहि ॥४। वाई अन्तां जामां जुटुं बोमवा, अने कोल बोल कुटा कर्या । नवशिमल्यी नाथ वाई, युगु छ विलोही ई गुरुमो अपरी (८)। हाथ व आवं हो रहि, मोई वेटी नरी मीर्स बजी। मिन कोराकी मन्त्र नहि नहीं, विशु गया परने हाधजी ॥६। , शुक्रत जुपो सह प्रक्रीत, अल्पे रोजी केर्य आवशे । योने वधारशे प्रभग्नें के, आपकार त्यां ने रायको (१५) तम सहित्याहि सळी बळी, प्रवस्था करे सवसां। एवं विद्यानी विद्यानी प्रतिना, प्रति महिन्ती गई भूषतमां ॥८॥ निर्पा मही मान्यण दूप देखी, पणी शोक करी है को सुद्रशा । इवे विशिष्ट जिना प्रकार आ विके कोल देने करी ॥१। अतर भीतने उपर केतिरं, त्यात येकनी पद्धी लावतां। निष्कुः लानद्ना नाधने वाई, काई सम लइने पंत्रावनो ॥१०॥ कहाई ॥१०॥

यानिमाने वेदना स्वापी विधाननीजी, पन्ड पीने पंचाने पण रोगे हैं रोगर्नाजी । को भनि कमना इपान गर्यागनीजी, भन्दी गई भामिनी हैं

जबकृति वै बोमनी भी ॥१॥ सब---भव वै बबनी भूकी वृत्ति, जेनी तरित नामी नानश्रां। रहे पदाभी वई निराशी, वन ओहे वहि वन मानदां ॥भा जेवने धीने विका चौराणे, अने ईवाद भागी जेना अंगमा । तेनु बरशुक विना सब बीजे, राष्ट्र नडि कोइ रंगमा ॥३॥ बोर्स्स माम बीचे तेवते, वित्याना गुणवान क्यी । अस्पक्षा काने : सुकता, दासे इत वे काच दू भी ॥४॥ जब सीवने नेक शीर विना, बजी शीरे क्षणुं सुन्य अब बजे । तेम प्रेमी अवने विवृ विना, जन्य क्याचे अनर असे ।(-)। केन् देवकाणे क्षण प्रोचं, भावधनके जिनर मेरियुं। नेहने ने जंब क्यांथी होय ननमां, जेन रन के कब केरिये ॥६॥ करे प्रशास भूके निश्वास, पासे नशी पियु जेवने । प्रसानवन गति होये अंगती, अस्य अन व अर्थ तहते ॥ आ एवा बायने पावि अवसा, प्रति विधारी असी विरचनी। चित्रचित्र बोकार करती, बच्चीं दिनव विक्रमें वनी ॥८॥ होडी मांस ने वाली मुम्बती, हरि जाना परम्बं हरि गया। अस्य स्वया ने प्राण वेशीनां, वजनां ननश्ची में रथा ॥ भा क्रमने विषय विषये हैं, बेसी व रहे राजीने । निष्कृता-मंदना नाधने, आणुं कोशं क्यारे करी सामीने ॥१०॥ कवर्ष ॥१८॥

वस वियोगरोग ने बिनाने बर्रावशोती, जेनो जान विनवशुं बावियोगी। जेने हपास नाचे केंद्रशे सावियोगी। बमदाना प्रेसनी बार यह नावियोगी॥१॥ राष-चार म लाखो वेस केंगे, बळी खंदरीना केंद्रने। वेसवण परवण परं, म कर्गो सभाज जेने देहनो ॥२॥ जल भरवा जाय जुनती, क्राळ्वल क्ष्में बोने च्या हिया हुन्ते सारी आस करता, हैयां नाच्युं रू अपर खंग्ययुं क्ष्मा हैयां कुन्ने आहा करता, हैयां रोजी मुजन राष्ट्रमा देन देखादी लोग लगा ही, हैयां कदमां हुने नाच्या ॥१॥ घशो बहानी प्रचा हते, कठी मानमां सभग्यता। कांच म जाने जन बीजो, यह प्रदेश मानमा छ॥ यवां त्युव सभारतां, बळी लव्य घरायते रोहन। यहांच जावता छ॥ यवां त्युव सभारतां, बळी ल्युव घरायते रोहन। यहांच को करे, लोधन लाव गुलालरे। केंद्र धरले डागेरमांच, जन वांचा माथे से बांचर मान गुलालरे। को भरे पार्थी, बळी प्रतिनार चांची बळे, रह आहु-रता अवस्माचे, जाने भोडन की प्रधार हुन्न ॥८३ पर गागर माना والمراجعة والمراجعة

কৰ্ম অনুসৰিয়া । উচ্চিক

वेर नो ती, विसरतो तथी वियोग वसी। मार व गणे वभी आंगणे, आणिये वाल विवादी पुनर्को है।। कोड ज्यो हूं शूं करूं, केने वियुद्धं पुरुष तीत है। विरकृतावद वधी के वानुं, जवारच जेवी एकी तित है।।१०॥ कडाई ॥१९॥

ए दिन आये यह दिल दामनांजी, मूनी शुद्ध मामिनी हरि सने हेन वांचनांजी। वियोग वित्रके क्षे पुत्र सने गांचनांजी, एम आहोतिका वीले पियुने आराधनांत्री । १॥ एव-अनवेस्यांन कारायमां, अभिष्याकुळ यांच विन्ता । आणे आर्थ दनमां शीवन इकी, एम अंगरे वह आनुरना ॥२॥ गोरम रम भरी गोन्हीये, सही वेचवानो सम हाई। वर्णी कुलकुलमां कामिनी, जीवनने मोने जई । है।। क्यों इसे काई कृष्ण कहीत, एवं बांटीमाहि पूर्व करी। ज्यारे भवर व वाम क्येक्सा, त्यारे वनकर विस्ते क्यी ॥॥ कहे साज वनमां कीता करतां, कहे आज वनमां राम रवियां। नेहज वनमां जीवन जातो, सर्वे स्थळ स्थावा चर्या ॥५० जेमजेस वर जुदे शुवती, तेमनेम कुरत सांभरे । विषय पापे धंग वापे, वधी जांचरिये आंसु हरे ॥६॥ सजन धोडा माने दारीरे, अमे माने पर्या एपांच । सदोगमां ए वय जनाए, यन विदोग विक्ले प्राच ॥ आ एव पुत्र वंत्री वय सरदे, पर्यु बोध्यतां संस्था परे। यस कृष्ण वसे स्थानांमाह. ने बनमां आंतरे केय जारे ()८() एम धन ओईन जुधनी, बळा सुबन आशी भागिती। राज विना कार काज व सुधे, जेने लागी लगन इयस्मनो ॥१॥ बाज स्वासनी कीन सामी, नेचे त्यामी न नर्ना आसा जो। निरकुष्टानद एक कोई बारी, पटी प्रेमन पाश और ॥१०॥ कपर्य ॥२०॥

वरता आकारी—प्राण परं जो धिनम दिना, बळी वियु वियोगे वेला जाजोरे। भगन परं ने हु मागु पु भनमां, गयुं वाई मारे वाजोरे। प्राणक (क्षित्र मिया निगमनां मियार जीन, लेने ने सून्य सभी कर्षा । पनदारी निपन नर रेलारे, लेन सून्य रिन कर्षा रेपुर प्राणक (क्षित्र कर रेलारे, लेन सून्य रिन कर्षा रेपुर प्राणक (क्षित्र कर गया पारि जनी मर्ग तो, मन गया परी मनीरे। पन गया पारि क्षेत्र जो, नगर गया पारि कर्षात्र प्राणक (क्षित्र कर्म क्षेत्र जो, नगर गया पारि कर्षात्र प्राणक (क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र कर्मा कर्षा क्षेत्र क्षेत्र कर्मा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कर्मा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कर्मा क्षेत्र क्षे

एम अच्छा अक्छाय अनि गणुजी, सन करे सोहद मूच जी-कालपुंजी। यस दीडे कांस्य अनर सुन्व वह अगुजी। बेसी निःभाम विद्यारे आर्थ्य प्रमुखी ॥<sup>३</sup>॥ क्ष्य—आपनी अवसूच परठी, अवका मुले एम उचरे । अही वाई कृष्ण विमा, हेन आपने एवं कोण करे ॥ भी जेति असन इसी बाई आपने, पियुमुक्तने वय विक्रमां। असना सन्यवे आंग्रस्था विवा, वजी अवेक कन्नवे इच्छलां ॥३॥ जबर व होती जोट इकि.ब. वसी स्वाय अस्याय वर्ष जानमा । शुन्त र अने समप्रधा विना, बळी विषय असूनवन बाकर्ना ॥२॥ एम विमन हती आपणी, बाई एडा अवर्का जानतां। हेन करी परि संदिर आपना, नेवं नरकर करीने ज्ञानना ॥'-॥ पनी आपने जनाव हर्द, जई बहेर्ता जमोदा आगळे। नोचे हृदये रोच वय चरता, करता प्रीत हेते बलंपसे ॥६॥ पराणे एने प्रीत कीपी, अलवेले आपने साधजी। जान कई भववोरियांती, लेलो हरिक राम्यां प्रही हाधजी ॥ आ सबे सबे एके सुन्त दियां, बळी नाहि-लाए लाव लवावियां। आयण समन् कीयु वर्णे, मान वर्डने सन ममाबियां ॥८॥ बळी आयणी अबळाइ भूबो, एवे बंधावियाना जामके। एवा गण जनगुण जाएका, केरलाक समीय कामके 🖭 जेजे देन कर्ष दरिये, नेमी कथे केब आवशे । इवे निष्कुणानंदवा जान निवा, बाई लाह कोल नहाबदी ॥१०॥ कहतू ॥६८॥

वळी वालव बालानी कथे वधी आवर्गती, अंते कांद्र करियुं एके आवशी वर्गती। अल्येन आविषुं मुख्य सममये अनिकी। आवले व जावयु मानिनी महा मुदमनिकी ॥१॥ यन-मुदमनि अनि आवशी, यन काळो करीने वोलावनी। कांद्र वालमी वाल-आये, यन हा करीने हलावनी। ३॥ वळा मही मधावयां वरम वराव्यां, वजी कराव्यां परनां कामने। कठल कोनां केलां देखां, वळी लेलां हुंकारे नामने। १॥ ग्राज्ञ व्यारी वार्टि देखां, वळी बाव्यव कड़ने स्थावनां। बटनी पेरे इत्य करावी, घेरचेरधी जोना आवनां ॥१॥ बटी हानी पर्द वार्ट् आवले, एने कालो जानीने कलावनी। अनरे आर एनो आवले, लेबायण नव लावनी। वन्दी हंग्द

والمرابطة والمرابط والمرابط والمرابط والمرابط والمنابط والمنابط والمرابط والمرابط والمرابط والمرابط والمنابط

१ सङ्गासः । क संस्थरकारीतः

कृषा बोली, बळी तस्वर कहेती नेहने। अनाहर बाई करनां एनी, नाम ने नव नजनो स्टेडने ॥६। बळी अलाह बाई प्राजीनी, जोने बलीए भूवधी केटली। अधी कहेवानी हेन प्रीजनी रीत, जेब एके करीडे पटली ॥अ। आफ्नारे अपरत्यनो, वर्ण् वाह म आबे पेकर्ना, नेम घोटव जोनां प्रशासनी, काई लेखूं न आबे लेखतां ॥८॥ एम बळी बळी जबजा, अवगुक परते आपका। अही वर्ण् कहीए केटला, गिराए एक गोविंद्यका ॥९॥ वाई स्थासरना हवा ह्यासने, सर्वे भूक गोवीजनत्वा। निष्कृत्यनंद्रना नाच साथे, राजी नधी कोइ रीते अना ॥१०॥ कहवूं ॥६०॥

बाई आयमार्थ एके अनिदाय देन कर्युजी, गोपी वे गोबास हैने न्यपाम परसर्वे जी। येनी मान मोरपने समुख्यम् देश पर्युजी, जीने वाई एनं जापनकरी शुं सर्वजी ॥१॥ तक सर्व वहि कंह द्यामनं, आपक अधिथी एक रति । केवल देन एक कर्षु एके, अस्पने व आपनु मुद्रमति ॥२॥ वाई अव क्रमा जेने मजे, बळी नेतिनेति निशम करें। मेरने जाण्या जार जुवनी, वी हुं अह आपक्षधी कोल छहे ॥३॥ वाई इंड आदि समर सर्वे, जेनी अहोनिया सामा करे। वसी प्राक्तिः कदिन वर्ष सदा, जेना पणनमां केरा करे ॥४॥ सरमानी कहे उत्तव कीर्ति जेती, पळी बारद गुण जेवा गायके। सदसक्तीयां जनवः जी में, बाद समरे जेने मदाय है ॥'ना सर्वे सुवन् वह सद्व सकती, अने भीतनी बन्दी रंग है। प्रणकामने क्षम उर्यान, बन्दी ओएक महमां शंत्र हो ॥६॥ क्रेम नदी नर ने कृत बाबी, अस्पूर जो होते भरी । यस वे।रिधि कोय वारिकते, सून न माने सुदरी ॥ आ नेम सुन सरवे सजरी, त्यां जनवेगाते आधारी। एका जानीने जनशी, रति कृष्ण साथे तथ करी ॥८॥ जेम सुरुषने कोई मिरांध सळे, पारस के जिनामणि। जिलासम ने ने गुल समझे, जेने शासक पुढ़ि छे पर्वा । १।। एस धर्ष वाई आपने, आन्द्रकी व प्राप्यां प्रते । विष्य लानदन नाथे सकती, नेह साह दीवीज रोहने प्रदेश कर्च्य प्रकार

वर्षा दोजी दह गया चाई छेह ती, जाणी जन शह आयण अति संबजी। सुरमति जोइ सचळानो देवती, जिया गुण जोह राजे لو الما ما الوائد ا

कारकार्त्र महाती ॥१॥ कम - विषये गुण जाकी इपामको, अनवेनी आपणदा आपरे। जोई जोईने ओए अने, भार वय ही हुं गरे प्रशा वाई असन अनि जहमनि, नेनो श्री समझिये केंद्रवे। जावा बोमी पालब मोली, तेले करी न गमी नहते ॥३॥ बारे पारे पनमा दिवरे, बळी हुट छेडे सरीए। एका गुण जाकी भावजा, कई देन तोडवंडे इरीए ॥३॥ मार्च जानमां जह जंगती, बळी नेथी कर नेवी सुवती । बाई एवा कुछमां प्रचर्या, तह व समन् स्वेद रति ॥४॥ कप रंग जग नदि जायने, बळी बीनमांदि बीलं नदि । एवा कठोर नदीर वनको जाकी, वंदलादीके नाम्यं नहि ॥६॥ बाई वनवरियो निर्मन करियो, बजी व्यक्तिकारमाचे एने जजी। एवा गुण जानी आपना, कई मेहमाद नेचे मजी 851 क्यां चारम वे क्यां च्यां, क्यां काच ने क्यां कंचन । तह आगळ वाई एक आपने, नेने मार्ग् तहि एतुं जब ॥८॥ देव जीने दोवज दहादा, धकत्रो हती वह सुन्दर्गा। वनदि वळ ने प्रिये वरवर्षा, इह गया दिवस दृःखतो । १॥ वजी अव-गुण ओपा जापणा, नाष्यो सदेशी वय नहीं मारते। विष्णुनार्य-इने साथे सजनी, विसारी वाई प्रजमारने ॥१०॥ कवई ॥२४॥

नराम धकानेक—मान्यो संदेशो मान्योगीरे, मुन्ती जोनां जो बार (२) आहां वर्षु रे आपने । आहां चर्षु जो आपनेत्रीरे, आण रहेंचे सामार (२) नाव्यो॰ ॥१॥ बाई मीन मर प्रम मुक्तांत्रीरे, पर्य १ तीन परमान (२) पिषु विश्वेशे प्रमहा । पिषु विश्वेशे प्रमहाणीरे, वारी रुधा देश वाण (२) मान्यो॰ ॥२॥ कुप्रनानां वार्ष् वासकांत्रीरे, सुदे बार पर मास (२) अवचे व आवे जो जनती । जवचे व आवे जो जनतीत्रीरे, जले तम भई निराण (२) मान्यो॰ ॥१॥ जीवव विज्ञा जे जीवनुंत्रीरे, एवो अनगरती वान (२) निष्कुत्रानंद्रना वाच विज्ञा । निष्कुत्रानंद्रना मान विज्ञान्नीरे, पंदर्व नव चर्षु वान (२) भान्यो॰ ॥४॥ वद् ॥१॥

अंगरताधीर अंगरती जाणीती, पद्ध प्रवे प्रवरिण पाणीती।
सुणो द्वान विन वार्णाती। पंधवता प्रवद्या जाने चार्य अवस्थानीती ॥१॥ शत-भवस्तार्णी अनि जब कात्रे, वसी प्राच-गनवन था वरी। ने सूत्र विना ए वार्शितीरे, केय निगमनी एवे घटी ||१॥ गटना भाटे बद्धवाती, नमें बात जई करें। वात की ! सम भाषजी नमें सह जनने, बद्धी हैं जो निर्धा वंच रानकी ! शा अव्यास्त्र एने बात वाकी, समझावाती बहुपेरजी । बटनी बरमारच करों बद्धव, नमें मनमां आणी में रजी ॥४॥ मर्वे वंदे सुजान की, बद्धी वर्णु कोवानुं काम वर्धी ! समझा कराते। सारिपेर, कें जो नावनं नमें करी ॥१॥ जेकी रीने बद्धी सुवनी, अनि सुन्य पामें सुंदरी ! उद्धवाती जह एटन्युं, बद्धी आवातों कारण करी ॥६॥ समुण जाकी एके केंद्र की थों, निर्मुण व जाकों बारीप । नेने धुर्जु नन नपीयुं, एके प्रमासकार्युं सनी सारिप ॥ आवात वालों, बद्धी कमस वर्धि रहे की ॥८॥ अने गयों वर्णों, बद्धी कमस वर्धि रहे की ॥८॥ अने गयों में बद्धी समस्त्री ॥१॥ एवी विदेश एमां विलंग व की जे, जाओं नमें बद्धी समस्त्री ॥१॥ एवी शिवे बद्धवाति, हेनेह्युं ने बद्धं हरि । निष्कुत्रामंद्रा वाधनी, वर्णी आक्षा एह दिश्र वरी ॥१०॥ कर्युं ॥१५॥

एवं जो आक्षा बद्धवे दिए परीजी, जेवी श्रीमुखे कविके जो भीदरिजी ॥ पर्छी अज जाबाने अर्थे रच आपयो फोनर्राजी, नैये विकास प्रवासी वंदना करीजी ॥१॥ सब-करी वंदना विकास बद्धव, कर जोड़ी बजा बजी आगमें । कुरने कहां ने करवें करें, वन अखते गये अंतर जर्ज ।(२)। जिल समार्थाने शील मागी, जुनो रच क्यर बेठा जई। खारे कृष्ण कई सुन्धे उद्भव, एक महेजी कई मे सर्व ॥३॥ वेद जजीदाने सामामामा, मणान कें जो पाप पत्री। पहला गुल अं। शिवास अने, यह न प्राथित एक प्राथी ॥४॥ वनुपरे एने बेर जने, पर्नुपन् करी जो जननने। अर्थ पड़ी अलगीन मुक्तां, जेव हेक जालने रत्यने ॥५॥ असनपणे असे हता अटारा, जिला राच जवनी लायता । भोग अपने कोइ व कर्य एने, सामू काइ करीने को जायतां ॥६।, बळी मो ठी कोनी मही चीता, व्याता समसान्त् मानवाती। अववद्यारं असे एपी धाना, नांप न आव्यो वर्गे अध्युक्तती ॥ ३३ एइ मान विनासी ओटन, मुखे उद्ध कथे नपी आदनी। असे न पई रोवा एइनी, एसी असने लटेंट है जिन ॥८॥ नेने हडीलटी तमे पाय हागी, बढी चरवमां शिश घर हो ।  वरी गोपीजनने जमारा, यजापणा धनाम करजो ॥९॥ दिखा जमावि वसी कर्वन, के'जो प्रणाम बजमाधने । कुतान है ने कुतान पुरुष्, निरकृतानेदमा नाधने ॥१०॥ कहतुं ॥१६॥

श्रीकरणे कहां ने अवने भौजदीजी, परी अनु वाये प्रदान नाम्या हजीती। परण विनवी चालिया बजमां चळीती, संस्था सबे आविया गोकुसनी मनीजी ॥१॥ व्यय-गोकुस गामनी गानीय आपी, बंदने मुक्त रच छोडियो। मन्दी नन्नी बन्दवारे नाग्या, बन्दी करपुर ने ओडियो ॥भा त्यारे बंद कहे कुनारच कीपो, प्रदेवजी अने जाविया । आज भारच जालुं जमारो, नमे आवनां पटे धर्या (E)) अरम कछ मध्यां जवारां, तमे क्यारिया मेवे करी । सम कुरून बंधव बंडजी, जबर अमने आयो नहीं ॥४॥ कुरास के बन क्रम्य केप मळी, बीरा करो एड कारणा। असे दोवे रंकने बसी, कर्षण करनाजी संभारता ॥१॥ एवं सुणीने वदाव वापे, लाग्या ते क्रमोदा बंधने । अर्थक्षण गुण नमारा, वधी विमरना गोविंदने ॥६॥ वळी वह पेरे प्रचास कथा, कहे बारीवर्गी वाचे जागजी। समारा भनुषदर्भ वचन, यर जोडी कृष्ण कहे मागजो ॥ अ असे कुदाय छीय असे, तेह तो पुरुष तमनने । जति स्तुति करी कहें, कृष्णजी बेड जने ॥८॥ एम बान करनां बीनी रजदी, वर्ण घरेपेर गोपीजन जागीयां। कृष्णकृष्ण करेनां कांद्र, मदी मनवा लागियां ।। प्रमुख सुची आवर्ष पान्या, आशो पत्रा सह हे संदर्ध। निरकु-लानंदने माथे कहा, देनो केम कहेवाओ एदने ॥१०॥ कहाई ॥२.आ

वही उन्हों अर्थ ने जानी रही जामनीजी, सुबन सुबनधी भेटी वह भामनीजी। नेर परे बबलो तब केनो जाच्या कामनीजी, अन्व-बेलो जाच्या जाची पामभामनीजी ॥१॥ शब्द — पामपामधी पाई लोगी, बटी तथ जानीने राजनो । रोजं बटी बटी बिना, मेल्यो वंधो पर काजनो ॥६॥ आबी जोगुं त्यां उट्टब दीता, पधी भेटी लेने भावद्वां। वधी प्रेसं करिने अमदा, पूछे बद्धवने उम्माबद्धां ॥६॥ दिखो सदेशो सुबनो, कृष्णजीए अमन का वियो । वयने मुक्या ने न आच्या, एको दिखो अभाव आवियो ॥४॥ साचुं करेजो स्टम अ-जारा, असे पुढ़ाई ए बक्षने। अम उपरे बद्धव एकं, करो केन मार्यु के

पूर्व स्थान स्थान विश्व विद्या प्रश्नान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

कुछने कहाँ में श्रं पण कहें। प्रति नमास इंगमी है, पार वई पेरे लहें। ॥९३ वज इंग करी हरि देयानुं, हास्य कर्युंगे अमने। निष्कृत्वानं-इना नाधनुं नमन्, ने मांबद्धा भी कहें नमने ॥१०॥ कहाँ ॥२९॥

बद्धव कर सुको मन्दे संद्रीत्री, केवा जाणी कृष्णाने करो समे बीन करोजी । समझ्या विना सुच्च ना'वे जो जाये भरीजी, जुडुं क्यी जुबनी बान अने ए व्यक्ति ॥१॥ राज व्यति कहं नोटी वर्षी, नमे समझ्यां अदि कांद्र संदरी । परापर जे ब्रह्म पूरण, नेने नमे जाणियो कार करी ॥२॥ एथनी करू ने नेक बायू, बळी व्योम श्रियुक्त अर्थ-कार । एड मजी यहनान्य माचा, एक पुरुषने आधार ॥३। पुरुष रहे परश्रामांकि, परश्राम रहे निराधार । लेड जे श्रीकृष्टन सुरति, तेत्रे जाणियो नम जार ।।।।। बळी विश्ववांति व्यापी रची, पिंड ब्राचांच्यां भरपूर । कृष्ण विना तो कोषे वधी, तेने वेलियो नमे इर ॥५॥ इवे एकाम चिन आणो, तमे वरो अंतरे प्यान । बाख कृति मेन्द्रो बाई, भीतर हे अगवान ॥॥ सन कृत्य निध्या करीते, अतर वृक्ति बाळीये। तो साक्षीकरे भरवमाहि, ज्यापक कर्न्स भाक्तिये ॥ आंक्य भीकी नुवा अवस्ता, तो प्रयेष क्याना गांकी हते। समाधनां हा थाओं उनां, एक किंगा अन्य वय अने RCT बेदा बेदांत वे सावयर्तुं, सुंदरी एड सार छ । एस समझे पाणी सुन्तियां, अंते एक निरंपार छे ॥९॥ देश बुद्धि बाई दूर करी, बळी विषय बासना परहरो । निष्हानानद्वा नाथे कहे, तमे जीग जुगते श्चं भादरो ॥१०॥ करमं ग३०ग

वज्रवाति तमे एहां वोशीयंत्री, अवने ए वयं तमे अणलीकि वंत्री। माई अमने पाधिनीने वीद वादोगो मुनीयंत्री, एने कंत्रे गिर को ने केले वोजीयुनी ॥१॥ वान—ग्राप्त वोध्यं ग्रने प्रवीण, एने विषया केने वेपार हो। कथ विषयोगी अंतर रोगी, तने भंसदी मनी ग्राप्त हो। वही नर कोई निर्माणी, सुन पिण दागनी वृश्वियो। तेष जोग एउने आप अंगले, धावान कोई एक व्यव सुनियो। ॥३॥ वही भवते नव जेने होण बांटा, तेनो एक व्यव करी उधरे। भारत व्यवस्था धाने, वही मनमान्या विषय करे। १४॥ पत्री

<sup>1 114</sup> 

े द्वी ११ आ ज रणात धरे, नेता कोईकत या पालता। जेस सांत्य ध्रियी येस कराइ, नेतो सहपी उत्तरन सालवा। १८॥ द्वामण तिल त्या जिलापाला, जेन प्रतिनि चर्ड प्रगटनवी। नेतो पण काप विदार गर्नो, नाई पाइन पर्दा नमा घणी॥ १८॥ द्वामण मने १ द्वामण त्या सार र शी।। का बोधनो। अमने वर्ष पर्दे त ए म, तथने के देव प्रयुक्तमी ला। अ वह सापने साध्य हवी, उद्युक्त पर्दे हान। आरखा विम्न आया विद्यु क्रिम अन्तर्य न इत्युक्तमा १८॥ बीजाने का जीन धरावी भार नमे ने भागी देस स्था। असे कंगालनी पर्दर, छेक न प्राप पिदेवा॥ ११ एवा अन्दर्श सार द्वाम, केम नाव्यो क्य विपनी भरी। निष्कृत्यने द्वा नायम् प्रोक्तमुं, ज्यान अस ज्यान करी। ११०॥ क्यमूं॥ ११॥

पदकरी असे लोग केर करीएजी, असे कृष्णकासिकी कापा-वर्षपर कम प्रतीए भी। नेपकी बीरा मर निष लाइने मरीएजी, गक्रभी उन्तरी केम वसीए न्यरीयाजी ॥१॥ सम्मन्यरीए व केरराये देशि भारी, कम मुकी कुकस योग प्रदेश केचन सुनीन कादय कोई, डोकाबे पण जब सहे ॥२॥ अणिरक्षत्री मान्या मुकी, शांध-लानो शकतार कोण करे। बादना चंदर नजी ननमां, प्रमा कोण भूजी करे । ३॥ अंबर अमे ओडबां मेटी, बळी काण घरे सुमनमेंन ातम किया मुकी अगजी, कोण करे मन्ति करी कर्मने ॥४॥ सीर व्यक्ति ग्रम व्यास् तजीने, नाये क्षोण आक प्रत्य पान। सेज पर्दसने परदर्शन, कीण खुदे जह महदान । है। जेंद्र मुखे अन पान पारणी, लेह एवं आवळ केम चावडाँ । भूषण विमा उद्ध असे, बीमुं अंतरे केव उत्तरहाँ ॥६॥ मीने पेनेम अंग पार्यक आपे, भृग मरे वि हांक भा सहस्रो । उद्वयनी सुन्द एउन्हें, हां नदि जानिये इपासना ह्या-त्यां ताला। आसी तन मन पाष्युत गहने, गक रति असे रानमुं नशी। श्रीकृष्ण कृष्ण के लो सरहाँ, यन मां र निर्माय अमधी ॥८॥ आ जिहा मो अस्य म अधरे, पण गु स गणी पारगुं कोह से हो। नजी ्यली बाली बांगळी करे काय, मोण कृष्य कृष्य एम बोलवी ॥९॥

المشريق والمرابية والمراجرة والمراب المرابية والمراجية والمرابط والمراجرة والمراجرة والمراجرة

s हार्थी र आक्रमी, ३ कार्मवरे, u क्ति.

जमी अवस्थान् अधर वर्ष, जेले हासे हिन्द्युं नेले दर्स्टयं परिष्णु लाः वंश्वा वाच साथे, अन मस्टियुं नेह मस्टियु ॥१०॥ कह्यु ॥६२॥

वर्गण केले—शीनाव वाचे पन प्रानियं, इद्वर ए विशा असे व रहेवापेटो । वालाने विशेष वीचे पन बन्धी, नेनो सुगन्य जायहा, शीन ॥१॥ सुना वेटां मां बरेखे सन्द्रणो, सुन्वारी इपाप सदस्येहो । जाना दीनां जटके इद्यं, अलवेला अन्त्रपायहो; शीन ॥२॥ द्र्यंत्र विशा से इन्हों द्राप्ते से, नेनो के व कहेवापेटो । अधर कोचे आवर वसनादे, वार्ता सुन्य वय भाषेत्रो; शीन ॥३॥ प्रेमना पाद्यभी पादी वद्य असने, पेरान वार्ष्ट धायहो । निष्कृत्यमंद्रमा नाथे भणी सन्दर्भ समने, पेरान वार्ष्ट धायहो । निष्कृत्यमंद्रमा नाथे भणी

बद्धव असे अंतरे बार्च आजरीजी, तेता बयाम सन्त्रावे खेहे करीजी । पीर अने अवसा मधी कादमी वरीजी, जगूब पुरू करवा जाविया तमे करीजी ॥ १३ राज — अधूक पूज करवा काले, ए सर्वेषी इ.स्के करावियो । काळहं तो कापीन गया ता, बळी मारीन पान नेवाबियो ॥२। धाण भवारः सर्वने ग्रह्म, अनुबेलोजी हाँ करदे।। वयो जवजानो अंत आणे, एनं कारज ने हां सरहो ॥)। साहि बहु बामान सार्थों, एवं आपी बारे मर बयने । पन पुर रहीने ब्जा रचेंछे, तेनी घरतुं वधी जिक्रमन ॥३॥ सारच दिना पार्ट मारे, अम प्रवर एके जादवें। असे अक्टाए प्रकृष एतुं, शुंहे ने आई कही हां कर्ष ॥६॥ अबद अवस्था होत अवकाता, नांचे वर नधी कोई भारता। भणी भाष्यांके बाइ बहु, केन एटल्ट्रे नथी विचा-रता ॥६॥ पाराधी वाधी मादे पद्मते, नेना मास वर्णने बाद जो । वती अवस्य अर्थ निक्त जाते, हां मारिन करती लाह जो एका नी तूं क्षित्रं मो मुं मा कहत्, के बीत करीने माण प्रत्या । उदयारी एवं अलबेलाबे, कोणे क्रीबायुं तो करवा ॥८॥ केने क्रीय क्रीय सामाने, त्रवादे अव्येक्षे ए इं आदर्ष । उत्तरवानी असे भाषा मेली, मा वानु अन निश्चे कर्य ॥९३ भ १र ल्ले घरडां अथे, रेडिं भाषा अमारी एडडां । निष्कृत्रानद्या माथ साथे, मधी परत् मोर्सु केर्द्रां ॥१०॥ कवदं ॥१३॥

वद्ववत्री एक्ती बान कर्डु कथीजी, कोई शेल कुरवसांदि जो

काचु वर्धाची । अमे लें विचार्य अमरता मनधी हैं, अर्थ सारी गया एक आप भारधीजी ॥१॥ राज अर्थ सारी अल्पेलको, अळगा आइने ए स्था। विपाने सब जिल्ली विल्ली, शरीता सुमधी मधा ॥६त जेम पुरवनी बास हाई वेगन्डो, अहि उत्ति आधी करे । तम फल्ट लाह लगे तजे नक, लेम कुरणाती पण एम करे ॥३॥ दाहक भनने जोड़ सुरा मेले, बिन लेज राजन रेपन करे। जेम निर्धन पुरुष परहरे गुंअर्था, गम असने मञ्चां बांधी १४% ॥॥। जेम सुका सर्ने परवरीन, पेन्हीने जाएंग भरानं । जेम भीका स्टर्डन तजे भुवन भीत, एवं। नेइ करे नंद्रवाल ॥५॥ विचार्थी जेम विचा भक्तीन. पर्की नजेरे विधानानजी । अस दक्षिणा शह पञ्जान तेम करेते एड कामजी ॥६। एम अमने परदर्शा, अल्बेल उद्धव आजरे । अमार्क सुम्ब शबर्व अधुर्क, ग्लेब सार्व एतं काजरे ॥ आ इवे चेंद्रे रही छंदेले छाती, दूर रहिने दियेले दू:वानी । धीत करी पाण है इतिमेनगा, पड़ी मानुं रहे इसे खुल जी ॥८। खुना बेटा स्नेह साहे, परंक्षके विष पणुं परमाने । उदयमी अंगरनी बाली, ले वार बीचु कीण कड़े ॥१॥ भरी कमी वाण भी वरे, मार्गात एवं भर्मनां। निष्कुन्दानंद्वा नाथे अपने, हाज्या स्रोक्त कुछ पर्मनां गेरेजो कवर्र गरेका

्डवजी एवं हतं एवं मनजी, जे कलपाबी कलपाबी नजावशं नगरी। ना डारडेतर नहाती कावी जनगजी, उपार एवं जापनोता अपने आयो दिनजी ॥१॥ ध्या—दिन देवांना जो दू सनो, वजी वण मोते तथां मारयां। नो अने के शिक्षांदिधी अपने, आणे भो-मां उपारता ॥५॥ अपानक प्यामासुर अपनी, पदी शामिषां करी रीत्रज्ञं। अकटायुर तृणायतं तथी, पहेडा प्रधानियां एवं शित्रज्ञं। ॥१। देवी भूषान अपरस्तरपी, अपने अल्डवेड उपारियां, वरसासुर प्रधानतर भीजा है, पक्षी बजनां विश्व निवारियां ॥४॥ विश्व निर्वाय पर प्रणानि, वती सारवासिनी एवं सार । अधारे कारवे सञ्ज्ञ । एवं द्वात्त्वक भी में दोष बार ॥५॥ बादी है। कोष्यो बजबस्ती।

ዜሚያቸውም የሚያለው እንደ መመር ነው እንደ መመር የሚያስመው እንደ የሚያስመው እንደ መመር ነው እንደ እንደ እንደ እንደ እንደ የሚያስመው ያሳቸው እንደ

b भवत १ कारि, ६ वरोवरः b संस-

अंधकार अभिने धयो ॥६। योर गर्जना सुणी धया यांथां, जाण्युं आज कल्यांन आवियो। त्यारे घरी गोवर्धन कर उपरे, बजनाध एकं बचावियो।।आ। उद्धव एकं अमने, अनेक विप्रधी उगारियां। आवुं दुनुं जो सनमां एने, तो योर्ध केम न मारियां।।८॥ वधी लमानुं उद्धव अमे, पीदा पीदी जे नेने याना। अंतरनी शुं कडीप उद्धव, तमे नथी अमारा अजान ॥९॥ कृष्णे कर्यु एवं को। न करे। उद्धवती कहं अमने। निष्कृत्वानद्वा नाथना सन्ता, यो त्यारे

बीरा मधी विसरती इदय एइ बारमात्री, दिल्डुं वांग्रेडे ए सुन्व संवारमांजी । विसरम्ं वधी बजी असने विसरमांती, वालाने देलाडीए क्यां हरि गायो जारमात्री ॥१॥ राव-गायो जारमा गोबिद जियां, तियां चढ्रपने नेडि गयां। पनिना पक्षी होने मकी सर्वे व्यक्त धननां देन्यादियां ॥२। इयां एके अधासुर मार्थो, इयां ब्रच्याजीय बन्स इरियां । इयां बेजी अब जमिया, इयां बन्स वासक बीजां करियां ॥॥। आ सात्रे एणे गायो वारी, आ स्वत्रे वायां एकं भीर। आ स्थले ए स्वान करना, सुंदर इवाम सुपीर ॥४॥ आ ठामे एले असने रोक्यां, आ ठामे मही अह लुटियां। जा ठावे एके अवर नाक्ष्यं, तेके करी मांट भारां कृटियां ॥६॥ इयां एवं बेज बगारी, इस रमाज्यां एवं रामनो । इस वजी जागी गया मूपर, त्यारे असे धयां उदासतो ॥६॥ पछी इयां जोयां एता वस्त्री, नियां लाभी अभवे एकी भारता जुनती सहित जाता जारवा, बळी बळगाडी नेने शक्त ॥आ इयां बचा कीया असे, इयां आध्या इता अल्बेल। इयो रास करी त्वियो, वडी तमाहियाँ गिरेन ।८॥ उद्वयने सर्वे श्रक देवारमां, अनि आंवरिये जांसु हरे। उद्भव असे केम करीए, एम कटी कटीने उदन करे । देश एवाँ सुन्द वधी दीधां गणे, जे पिसार्थों पण विसरे। निष्कुलानंदना बाध वियोगे, पापी भाग पण नव निसरे ॥१०॥ करवं ॥३६॥

क्षात वेकरा—बालीको विजोगी गगारे, हो उद्घवती अभने । वे विभाभी विजोगी गगारे, हो उद्धवः। वेक-अमने करी अनाप, वे वेक बाकी गगा भाषा। हवे केम आवे वाष, कुषरणाना भाष वपारे; हो उद्भार ॥१॥ वित्रु संगे पळपळा, कोय जब वहि छळ ॥ जनरे आवे से बज, देशो दूर रवारो; हो उद्भार ॥१॥ को ने अबे छई केम, जलवेने कर्य गम । अनर अस्त्रेक्षे केम, हुंगर हाहित्यारे; हो उद्भार ॥३॥ निरह्मानद्वी वाथ, जमारी ए मिराप हाथ । विमार् री अजनो साथ, दिलमां वाशी द्वारे, हो उद्भार ॥४॥ वद् ॥ ९॥

उद्भनं अंतर पन आवर्ष पःविष्ति, आपणुं दरायणपणुं देली गोपीने वासियंत्री । जावमं इतित हेन जुवती घर जासियंत्री, विधि ममदाने करणे उद्धवे किया मामियंत्री ॥१॥ वन्त-किया न नमाची बळी पंदना कीपी, पत्यधन्य बाई तमे पत्य हो। लेक्स्व साची तथारो, बळी तमे इतियां तन हो ॥६॥ तमारा मेमने वाडाले, बळी सर्व माधन न्यून है। यन धयुं इरकार नमार्थ, नेह बारां मोटां पुष्य हे ॥३॥ श्रीन नमारी बमदा, नेनी रीन शनी-सिक अपद्या । तमारी भीकृष्ण सामीती, कोवे कळाती वधी कका ॥४॥ परलुं नो आयुं को अमे, नमे गोपी वो गोलोक्सी। एवं किया को न कोच अरार्च, कोच की जे कुद्धि को कोकनी ग्रन्थ मोटो भाग्य मानाजी मारा, जे कुच्छे सुजने मोकल्यो । सुची सुआसम बाजी नमारी, बेमेड्रां बीली हुं छसवी ॥६॥ नमारी पद रत्र भागवा, वाई लभवायुं भादे सन् । तमारा दासन् दासपणं, एड आपओ जुनती कन ॥ ॥ नाई नाकक नृदिए है बोलियो. तेनी इत्ये व परशी रीय । कार्य बीयपुं कहें वे जेर, तेर दामनी हैं जिवारिए दोच बद्धा मा की नवारी मीन मजनी, बद्धी साको नवारो 🕹 लंड ! काचि मन्ति नमें करी संदरी, आयो पामी अच्छानी हेड ॥९॥ मे'र करो माना मूजने, आपी आजा ने शिर परं । निष्क्रमा-भंदना आप चासे, कही की अधानुं इने कर ॥१०॥ कहतूं ॥३आ

उत्थ उपरिया करी अनि विनित्तिनी, मानाजी मारी थे जो भोदी मिनिजी। सुर नव जाणे यह नमारी विनिजी, आयो मुने आशा जा र हवे जुनिकती ॥१॥ सब्द आर्र एवे जगदीया पासे, एवी आशा करो नमे। स्थारे सुंदरी कर्ष भाष बीटा, हाम्ये प्यारो राजी अमे ॥२॥ पठी सुवनभुवन गह भामिनी, साची भेट पूपर अरचे। मही मांग्यन गुप पुन गावचा, बळी सावीन बाँच्या रचे والمراجعة والمراجعة

॥३॥ कोहक कृत्मल्हो लाकी, कोहक तल वाजरी तल सांकळी।
कोहक घोती पंत्री पीतांबर, कोई लाबी काळी कांवळी ॥४॥ अपीं
रच लह भेटडां, लाबी बरतु बहु प्रकारती। अगर बंदन मरला
आपी, उद्धव करतो एका मरेरारती ॥५॥ कोहक कहे बरण हवे
घरतो, कोह कहे अगोअंग भेटजो। कोहक कहे हंपे हाच वांपी,
कोह कहे बरणमां लोटजो ॥६॥ कोह कहे जह बकी लेजो, कोह
कहे गाल माली नाणजो। ॥ कोई कहे हाच जांदी कहेजो, हरि
जसने पीतानां नाणजो। आजे जेले अंग हत्ने, रेखेने तेलें का विदे।
हेल पुणाचुं तब पूर्व, हैयानुं ने हाठे आधियु ॥८॥ बर्धा सह मन्ती
मणाय कथा, उद्धव कहेजो जह कृष्णने। द्यानिधि ह्या करीने,
हेजो कहेलां हरि रच्यते ॥९॥ उद्धवती स्तुति करजो, कर जोही
अमारी बती। निष्हानातंत्रना साथ आगळे, विपविध करजो
विनति ॥१०॥ कहते। ३८॥

वसदानों मेथ ने केम करी जाये कथोती, शुंदरीनों सेव देखी दिगम्ब प्रयोशी। पन्यपन्य अधी उद्भ एम करे रखोती, जोयुं केम जुनतीनुं अपार पार गय लखोती। १॥ यान-नार म लखो भेम करी, ओहजोह जोयुं उच्चे। अक्टिया विमान मुके, कोह कम करीन रे'तो क्षे ॥६॥ कोइक शुख निवास मुके, कोह आंखरीए आंख मरे। कोइक पहन करी कंषुं, गाढे करे रोवन करे ॥६॥ उद्भा कहे वाई एम म करों, नमें परो अंगर पीर। नमने इरि सुख आएओ, सोही नाच्चो मयणांनी नीर ॥८॥ त्यारे सुंदरी कहे अमे हां कहे, केम रहे मयणांनी नीर हारिया। तमे हमा जे क्या के'ता, तह कम पीरा नमें चालिया। ॥६॥ सार्व स्थानों सेवी इयामना, दरवा स्वरूच करो हरियरणने। अधारों माजिय पणन, के'जो अवार्य सरका करो हरियरणने। अधारों माजिय पणन, भागी कीम रथ पणावियों। अही कोड सुंदरीने पाये निवास करतां अथा विरुच्या । यारे सुरुण कहे अल आव्या उद्धा, हो करेखे अजवित्या ॥८॥ स्वर्ड मुक्त सुंदरीने पत्यों, अति पणो अतो-लजो। कोई एमं सनारे अजन्या मने, नमे पद्धानी सर्गु बोएजो

॥९॥ बद्ध कर्ड सुनो श्रीहरि, धन्यधन्य बजनी विरक्षिणी। निष्कु-कानंदना नाम के भा, जीने से दिन ने रेवणी ॥१०॥ कवर्ष ॥१९॥

१०० व्यक्ति । १०० [ वरहे ४० वर्ष के व पाननी नवर असीजी ॥१॥ हान -नारपाननी स्वयर मधी, प्रस्ता गत है अंगरी। होकनात्र काल लाग करी, राती है तथारा रंगनी ॥ गा केम वर कोई मान्क पीय, तेने तनत्वी शुद्ध विसरे। नेम नवारा लेएनी केके करी, एने बेड रका अब दिसे मरे ॥३॥ सामु बीच लड़ने बिक्यों ॥५॥ एवा निर्मन अंतर विना, सेड रम क्रोमां रहे। चारणी चिने लटक प्रीते, मेम सुपारक क्रांशक ॥६॥ एवा केह विना परिदने, पुरुष करेंग्रे सकलाय है। इसी पश् जेवी वन प्रीत वची, तो हरिजन होट कांचे बावछ ॥ अतितम विना प्रेमीना प्राण न रहे, अने रहे तो श्रीत न होय। जेस जना विद्योगे केंच न जीने, चल जीने दार्चर करेम दोष ॥८॥ लेम नम विना गोपीना प्राच न रहे, पण रहेबाछ एक रीम । जाले हमना वरि आदशे, एवं चिनवेते विकाशित गर्म वती केर दीवी प्रता कीवी, कष् यांता आपीछ वजसाधने। बळी कष् अगोअन सळतो. निष्कानानंदना माधने ॥१०॥ कड्दं ॥४०॥

बर्गण पोय-अलबेला आगळे उद्धवतीरे काँग्रे, धमदाना प्राण कोच जाणे केम रहेग्रेरे; उद्भवन । है। तीर विना नगणी में केदिये व धीर्ता, आंव्यवियेथी आंखु अरीप्रियी बहेले हेरारे; उद्वयक ॥२॥ रोहरोह कीपाधेर देवना रे डाल, नम विना कुपानिथि पहछे कंगालरे: उद्भव ॥३। समारा नियांग रोवे मणा नथी रानी, जुरीक्री जुबनीरे परीचे झांबीरे; उदबर ॥४॥ बाब गवानी पेर एनीर में दीती, बा'ला बपामणी सेली रे तमे मीतीरे; उद्भव (15))

क्षा क्षा क्षा क्षा करें

الواداءاءاء الراءلدال العاداداهامال

विष्कृतार्वद्वा वाधजीरे तमने, कहु कर जोडी जेर्नु अवार्जुरे अवनेरे; पद्धव ॥६॥ वद् ॥१०॥

भीवरि करे बद्धव एवं मन्य छेत्री, कुत्र साथे मुंतरीने अनियो आरम केजी। बेंच गेड सम्बंधी एड बर्जिमा बिरम्फ केजी। जनक करम एनी मुक्तिये सन छेजी ॥१॥ एक-सन एनी मुक्तमांडि छे, मेणे करी मनमुख्य स्थान है। दन जा हां करे पनिना, एने बन लीपो बैराम्य छ गरम काम काप ने लोग मोह, लेली विरह रहिए विक्रिया । आमुरनामा जनिने करीने, नम विकार नेटना रखीया ॥३॥ प्रकारका इतिष वनी, उदय आपी वहने मनमा । सन्धार संकारत काचे कावने, रहे सहाये वृत्ती प्रेममां ॥४॥ बीन वना वे बाज वना, जेनी चित्रपृत्ति मुक्तमां मजी। लेह पुत्र साथे करनां, नेले 🖟 बीजी कासमा गई बळी ।(०)। इच्छा बधी कोई एने अंगरे, गुज वरकः विवा चौदलोकती। चतुरपाती एकं बाहता मुक्ती, राजी अस्ति पूजे रोकती ॥६॥ सूज वियोगे विजनी विजनी, जज्यां सुन्य सर्वे नवरी। इद्वयंत्री एवा अब अर्थु, वा'तुं ते मुजने कोई वर्षी ॥आ हुंज कर बाक बेमीना, अने सेमीज साह लगा। बहुवजी लगां जनत्व मधी, सत्व मानजे ने मन ॥८॥ सुने च्यार छ पेसीनो, हंनो है वैधीजनने पूर्व करें। केइसांकले मांकल्यों हूं, जेले जब कई तेते करं॥ भा प्रेमीनुं क्य बाखवाने, ब्रावं क्य बेन्यु प्रेमी बासके। निष्कु-लाबंदनी माच करेले, एम बद्धवरी भागने ॥१०॥ कददं ॥४१॥

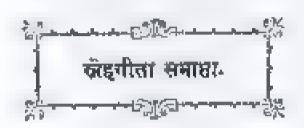
अकि बारी वे वह भावनीजी, जब मळी करें वे जुजरी जात-बीजी। वन देशनी भक्ति के बान पाननीजी, ने केम करी करें कोचे क्यी मुख बाननीजी। १॥ बच्च— मुख्यान नेनी क्यी बाती, इ कोचे क्यी मुख बाननीजी। १॥ बच्च— मुख्यान नेनी क्यी बाती, इ कोचे क्या ग्रामी पेर के। जबी जो अब आदरे, तेह क्यर सारी बेर के ॥६॥ कोह करे जे बुज साथे, तब मन करी कुरवाच। बद्धव बारे पन गृह के, बळी आणु मुं जीवन बान ॥३५ मुने मंनाकं कोदी जन, नेम संभावे हुं कार्याने। जरम परस रहे एकटां, जेम बीन के देश देशीने ॥४॥ अवर बीन अवस्य विका, बळी देवे हेन अनि बणुं। बद्धव प्या जन केंद्र के, नेह रे बा घर के मुजनगु ॥४॥ जेनुं अंतर खुखु हरूप एक, यळी नेह नहि जेना बेनमां। उद्ध- वजी हुनो स्तं न रहं, वर घरे स्वान दिनरंजमां। का जन नव तीरच जोग जज, अहमां ने कजनी जात्र छे। वनने चाय जन्म कहेवाचे, वन तेशुं मारो कांच दाल छे। क्ष्मा को वर निरासी चरण वपासी, समना रहित मुजने भने। एवा भन्म जन्म विरन्ध जेह, तेह वद्यपति पुजने रजं॥८। हुंतो वहा छवं मेमने, वह गोच्य जारा जन छे। लेह चिना ह शिय व रीह्नं, एव मानजे सन्य सन्त छे॥९॥ बज वनिना बेसरता, जीने अजित पुने जितियो। निरद्ध-सानहनो नाथ करेथे, वदय हेते हुं एनो चयो हिन्। कर्ष्यु ॥४२॥

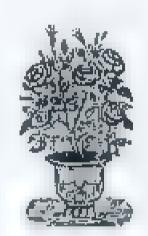
बन्धवन्य गोरिका लंदनी मुहिनेत्री, जेने अनवेनी समादेखे कतिकतिकी। जेवनो जपार काह ने अपार सनिजी, जेना जना नायके निन्ने निन्ने भूतिती ॥१॥ एक — सुनि नायके अना जेतेर, बसी सरायेणे जेने आहरि। पन्यपन्य साह एहती, वर्ता शाची अस्ति एके वरी ॥६॥ धन्यधन्य एक्नो प्रेम कवीए, धन्यधन्य एक्नी प्रीतने । पन्यपन्य देव एना दैवातुं, पन्यपन्य पहनी रीतने ॥३॥ बन्दयन्य भाव भन्दो एक्त्रो, बन्दयन्य एक्त्री सन्दर्भ । बन्दयन्य समजन एक्षती, प्रत्यपन्य एक्ष्मां कृष्यते ।.४॥ प्रत्यपन्य अंतर एक्ष्मां, करपधन्य एक्ना मनने । कन्यधन्य पुद्धि विका समितने, जे कर्य वर्षेण क्रम्यते ।(४॥ अवन वपन वासिका, परंप स्थला रसना नेहने। पान पाणि पत्र पहना, पत्रपथन्य एड्ना देइने ॥६। सर्वे अंग अनि रंगे, करी कृष्णवी अंग भगति । जिलोकश नोदी इरिश्चं ओडी, करी बीच अच्छ अदग अति ॥आ अवरोग वामी कृष्ण वामी, लाभी सदा समाबदने। दास रजी बानि बडी, मळी परमानदने ॥८॥ करी बीत पूरण रिते, जीती यह जवा हुवती। जवा जेवा उत्तम एवा, तुल वायक गृहका ने अनि ॥१॥ जून अविध्य पर्नवासकां, कोईए संद मुन्य नथी आयत्। निरकुछ।नंदना आधनीन, सेह विका नवी भावतं ।हेका बच्यु ॥ हो।

संद्र्णीया ने जन गार्राजी, सुणयां भय भावत उपजावशेष्टी विषयमी श्रीयमी रीय जो जणावशेजी। क्षेत्री जनने सुपःसम ने भावशेजी ॥१॥ राय—जणावशे रीय श्रीय बरी, दृशे दामक ते विषयमे । वर्षी कोदी जन सम्ब धर्मे, विषय दृशियम व्यवसे विषयम

॥भाषात्री देव इन्द्रिय सन प्राणनी, कोड कंपवानी रीत करे। नो सर्वे साधन मेली मनर्ता, प्रीते चिक इरिवरण घरे ॥३॥ अंतः-करण ने इंडीनी वृण्यि, लोणुय कियां मधी हो सनी। प्रगट सूर्ति विना चळी, अन्यव्यक्तं पक्ष वधी धो नती ॥४॥ सर्वे वासना त्यारे गळे, बचारे अळे अनोहर मुर्गन । स्वयंत्र अर्थ भाग पुर्ग, एम गाये सस्य निष्य सुरति ॥५॥ यमुपदती ग्रीत विना, विकार ते नव विसमें। बेह विना वासना व कहे, अन्य त्याये वीट देह इसे॥६॥ संह सानों लेही जनतों, श्रीकृष्ण साथे करजो । शेन रीने जो पंड वढे, लोगे दिलमांकि मां दरलो (१०)) कोहगीना संच गाया, इच्छा करी अभिवादा । विष्कृतार्वत्वे निक्षिण देश, कर्यो संच एक वकाका ॥८॥ एकाद्या पद ने चुंबाळील कवने, कही संदनी कपा कथी। वंच दोये कम जे बांचमें, छ बरण पुर्ग ओछां वयी॥धा लवें करके संद कथा, बरकवी विविध करी। इतिने सने हेने मोबकी, करतो बीम इरि माथे नरी ॥१०॥ संबम अवार बोनेरना, वैज्ञान्य हात् चनुरुवी । इतिजनना हेन अर्थ, लोहनीमा कही कर्पी **।(११) कवर्ष (१४४)**।

बर्गण क्षेत्र-- बन्यकस्य होड् दिरोसणि, बाबे माधन कोड् सथ-नोत । सांभवको लेह समान ने श्रं कहं, जब तब तीर्थ इत जोग जे। कोइ करे जो जक्र जनोल; स्वां∙॥१७ जपवासी उदासी वासी बन, कोह ननमां न परे पटन; सांव । कोइ कल पुत्र पप वानहों, करी आहार आणे तन अंत; सांव ॥२। पुष्य दान वाले कोइ धर्मने, रहे निमधारी नरनार; मां । सर्वे सुनुं एक कोइ विना, एको धपणनी परिवार; मार्च ॥३॥ जोगी धाषणा जागीपणुं राज्यता, नपी परक्या सही जिल नाप; साँ॰ । घ्यांनी भाषपा घरनाँ घ्यानने, जवी चाक्ना जक्नां जाय; मां• ॥२॥ जनि चाक्या जनवे जाळ-बर्मा, वृति भाषया रे'मा बळी सुन्धः सां । बीजां अवर माघन अनेक जे, एक स्वेग विना सर्वे द्वारप; सांव्याया कोटि कापा क्रेजाने करतां, इसि केने न आरया हाध: सां॰ । प्रेम यजा पह पियु पानको, सदा रसिया वजजन साथ, मांग ॥३॥ हेन वीते संदीना मंग, अलवेली आपेडे आनंद; सां- । बाली निष्क्रशानदती المارية ملك أمالية من منام المراسلة والمراسلة وأمران المارية المراسلة والمراسلة والمراسلة والمراسلة والمراسلة وأ १०४ % हेरीता । १३% नाथवी, लोहलवा श्रीसङ्जानंद: सांभळजो सेह समान ते हुं। ॥।।। पद । ११॥ इति श्रीक्षेत्रकातिकवर्गत्रवर्षक्ष्मासहज्ञानद्वामित्रिष्णितः तंत्र्यानिवरिकता श्रेहनीवा संपूर्ण ॥ नाथकी, केहक्या श्रीसहजानंद; सांभळको छेह समान ते हुं कहुं ।।७॥ पद् ।.११॥ इति श्रीमदेकातिकशर्मश्रवर्धकश्रीसहश्रानद्खामितिव्यनिःकुळा-







श्रीभारिकारायको विश्ववनेशसम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिश्चत—

काष्यसङ्गृहे

## वचनविधिः।

भवनाभी—समरो सुनद श्रीहरिदेवजी, जेथी पामिए आमंद अभेदजी। जेइ आमंदनो नाले केति छेवजी, तेइ सुन्त आपे हरि तनसंदजी। १।। अब—इरि इरली सुन्द आपे, जो वर्तिए बचन मांथ। मेली समनुं मननसुं, रजीए इपाम समते सदाय। १०॥ प्रश्म सुन्दने पामचा, रहीए हरिआज्ञा अनुसार। ते बिना मोटप्य नव मळे, जन लोधुं करी विचार।। १॥ भव बच्चा आ बचांदमां, धहा-मोटा कहे सहु करेग। ते भोटप्य श्रीमहाराजधी, एह समझवुं जन सोप।। शाहिर सूर्य समर्थ सहि, करे सर्वे खोके बकाजा। ते प्रसक्त करी परब्रह्मने, अंगे पाम्या एवरे उजास।। १॥ होष सुरेज्ञ ने शारदा, गणपति गुणभंदार। राम राजिये सनुमान हुना, अति भोटा उदार ।। ६॥ भूत भविषय वर्तमानमां, हरि राजिपामां जे रच्छा। देव वानव मानव सुनि, ते सर्वे मोटा थया।। शा मोर्चु शावानं होए मनमां, त्री हरिवणनमां हमेदा रे'ये। निष्कुलानंद कहे न छोपिये, बालमनं चनन केये।। ८॥ कहवुं॥ १॥

वचने करी छे वर्णाश्रमजी, वचने करी छे खागी गृही घर्मजी। वचने करी छे कर्म अकर्मजी, एह जाणको जन मने मर्मजी।।१॥ बाद-मर्म एम जन जाणिने, रहेवूं बचन माहे बळगी। बचन छोपी जाणे सुम्ब छेशुं, एवी अधिका करवी अखगी।।२॥ वचने हंदु अर्क करे, हरे तम करे मकाक । बचने हह पृष्टि करे, मानी वचननो मने बास ॥३। श्रीवजी शिरे घरी रहा, बीदस्तोक भूमिनो भार। बचने काळकरिक करे, उत्पत्ति स्थिति संहार।।४॥ वचने बांच्यो

Franker franker franker fan for traker for franker fra

सिंपु रहे, पाळ विनानुं पाणी वळी। तेणे करी शुं मुच्छ ध्या, गह आयं सरवे मळी। है।। बचन माहि बर्गनां, बच नोळी मोटप्य मळे। बचन विरोधी विमुख नर. नापत्रपमां तेह बळे॥६॥ वचने निष्टुति वचने मष्टि, बचने बद्द मुक्त कहिए। ते बचन श्रीहरि मुख्यां, मुख्यायक सरवे सहिए।॥॥ एम समझी संग शाणा, बनेले बचन प्रमाण ! निष्कुलानंद ते उपरे, सदा शति रहे इपाम सुजाण ॥८॥ कहवुं॥२॥

वनमां बरने संन जाणाती, देह येह सुन्यमां जेन हो भाणाती।
पन कर्म बचने हरिबोटे बंधाणाती। एवा जन जेह तेह मोश गणाणाती ॥१॥ गण-मोटा गणाणा ते मानवुं, कर्युं गमतु जेणे गोर्थिदनणुं। ते विना मोटप नच मछे, फरीफरी हुं कहिएे घणुं ॥२॥ शपातिये राजी कर्या, श्रीकृषण कृषानियान। तेणे करीने मोटप मछी, बळी पासियां बहु सनमान ॥३॥ कमजाए कृष्णने रिहरणा, रिह्मा अलबेटो अविनाण। तेणे करीने तेह पासियां, इरि उरे अबंड निवास ॥४॥ बुंदा वचनमां बरनी, कर्या प्रभुने प्रसन्न। तेणे-करी इरि अधिमां, रणां करी सुच सदन ॥५॥ अजबनिता बचने रही, बळी बांला कर्या मजराज। तेणे करीने नोसे तेने, नावे शिव ज्ञा सुरताज ॥६॥ वंचालिये पसन्न कर्या मभुने, आपी बीरी विधरी बीरत्यां। तेणे करी नने नम्र न थयां, बळी मक्त कांच्यां शिरामणि ॥॥ एक् रीने मोटप मळे, पहेला राजि करे परमुखा। निष्कृष्टानंद करें ते विना, ठालो पढे जाणो परिश्रम ॥८॥ कह्युं ॥३॥

मानी बचन मोटा पया कईती. जे मोटप कहेनां कहेवाय निहाती। है तह पास्त्रा वा नाने वचने महीती, ए पण मर्म समझयो सहीती है ॥१॥ गड—सिह सापित करी जिरसाटे, रखा बचनमां करी वास । उन्समनाइ अक्टमी करी, पह रखा दासना दास ॥२॥ मोटा सुचने एएमवा, बामचा कछ कटेवा । सेने वचनमां वनेनां, नधी कठण को। स्वलेखा ॥३॥ पामर प्राणी पाम्पा प्रसुता, रही हरि आजा- नुसार । आये अंत्रे मध्ये मोटा थपा, तेनो वचनधी निरंपार ॥४॥ सो वाननी एक वान है, नव करवी आज्ञानोष । राजी करवाने हैं सार्थानां स्वलंधार ॥४॥ वाननी एक वान है, नव करवी आज्ञानोष । राजी करवाने हैं सार्थानां सार्थानां

والمراب المراب المرابط والمرابط والمرابط

रचं पर, पण कराविये बहि हरिने कोष ॥५॥ मोरण मानि केम मने, बादी कारे बणनमां मुख । मुख पाधानुं भान ग्यं, थय मार्गु सो पणुं शुख ॥६॥ जनप शुखमान आगन्या, लेपेसे श्रीहरिनणी । परममुख केम स्वारंत, मार्ग् पाननो नेना घणी ॥॥ बभी नगर बरेशने, बर बाबरे नरनापशु । निष्कुलानद कहे नरशु । एण कर्यु एना हापशुं ॥८॥ कहवे ॥८॥

क्रमण वक्ष - निह पामे पामर वर सुन्तरे, रही हरि रचनधी विश्वन्तरे; निह । टेक-सुन्त पामरो संत सुजाणरे, जे कोच क्लेंग्रे बचन प्रमाणरे । धह रही बालाना बचाणरे; निह ।।१॥ कर्षु ध्वज-वह घट सनरे, बक्षे जेम बालेग्रे धवनरे । यम माने बालानु बचनरे; निह ॥५॥ जेम नरम मृण बदीनटरे, बारिबेंगे बिळजाप सटरे । तेने कीदने जावे संकटरे; निह ।।४॥ यम बचन बचा था रहेरे, तेनो मोटा सुन्तने लहेरे। निशे निष्कृत्तरनंद यम कहेरे; महि ।।४। यद ॥१॥

वचनहोतिनों तो भाग बच्चावाती, भी इतिने कोये बरने बचने प्रमाणाती। केमां तन मने भागूं बेरावाती, सुच्च मुकी शुच्च न हुच्छे अजावती। १॥ यह—अजाव्य पण इच्छे नहि, कामाने कारसों आपवा। क्या कारसे बारि मखे तो, कोण जाये क्य कापवां ॥भा त्यारे इमें वरित्र कोई देहने, बचा इमे बिरमें विपति। वरित्र बरते बचनमां, बच्च बरने पाने सुच्च संपति।।।।। बचनमां बसमूं घणुं, बरतवुं नर अमरने। मंक्रद्रममां भजा वरी, बोच्ची जावो बरावरने।।थ।। पण मोटी मौज मखे नहि, मोटानी मनती मुकतां। मुख्या मुख्यमंथी मटे, बदाना बचनमांथी बुकतां ॥५॥ एम समझी समझ, बरते हो चचन मांप। मोटामोटा विषेषे भनमां, रचे केर पहलो हांच।।६॥ बनी बान जाय बगही, जो छेरा होपाय बचन। हेले व आवे हाम्बहो, कही वह जथाय निरमन ॥आ। एह मन हााचा सननो, नव पहले बचनमां केर। निष्कृत्वानंद निश्चे करी, कहं च बेरसवेर।।८॥ कहतुं।।५॥

बचन बालानुं लोपशो मां केशजी, पटलो नो मानी केजो उपदे-वाजी। लोपनां बचन आधशे कलेशजी, देशन गरि पणी रहेशे हमेक्सी । १॥ एक-क्षेत्र स्वेत्री हेरान गरि, अति मुद्ध करदी निस्कार । आजा वरिती लोपलां, अवमां विवरहे मार ॥१॥ अवस्ति स्वारित कांगी वरि आण्या, जोपूं निज्ञमुलानुं करीर । जोलां सिन रित जब रही, बजी गई हैंबंधी धीर । ३॥ अण्यादित बाद उपस्पो, जे बराइलां मठ्यो नहिं। हे पांचसे मुखं प्रवादित्यो, नेक अति निर्देश धूर्व । १॥ एवाने वर्ण एम वयुं, मरजावा दरिती मेल्लां । बीजानी वकाल सबी, लेल अलेल्या लेल्लां ॥१॥ एवी अभग से आण्यान्या, अलंब दरिती आकरी । लेने लेपलां जिलाकां, कहा कोण बंदो दरी ॥६॥ सुल्वक्यी हे बुल्वक्यी, आग्यान्या भीमवाराजनी । आस्तुरी जनने अर्थ म आवं, से देवी जीवना काजनी ॥आ अस्तुरी विवरहे से आवर्षा, लेने आकानी आदी कर्यों । निर्देशनानद प्रवर्ते से आवर्षा, लेने आकानी आदी कर्यों । निर्देशनानद प्रवर्ते, जाक कापनुं परे पर्यों । स्वयुं । ३॥

क्षण काचे वाक गयुंके कथाईती, ते जालको जबर जन मन मांकि । तेनी जपकीर्त संधमां गणाईती, एथी नरमुं वथी चीनु काईती ॥१॥ शब्द नर्मा चीतु काई नरमुं, दरिवाकामां चाटपुं वदि । एका घर अबर अज ईका, सुन्य क्षांथी पाने मानि ॥६॥ महेवा बोक्त देवना, क्य मोळानामनी ओखर रहें। बोदिनीक्षणी प्रमार्थ, जोवाने इच्छा थाँ ॥१॥ न्यारे इतिये वार्ण चणुं दरने, वथी क्षण ए जोवा प्रस्तु । क्या सनो निशो समझ्या विना, दियवनने नव परम्यू ॥४॥ वधी पति इति कप मोतिनीनुं, भागम आवी दथा रखा । जिल जोइ शुद्ध बुद्ध भून्या, विवेक विना व्यापुत्त थया ॥४॥ निश्चिक क्षण ते नव वसु, धणुं जोयकळा मांदी स्थान जो । ते सम्बार्युके कामळे, साहु अन ए साचु प्रानतो ॥६॥ करी भवनुं वयन होती भवानी, वर्षा वभना अगनमां । त्यां अति अनावरे नन स्थानि, वस्तीनुषां आचे अगनमां ॥आ वचन सोपनां दुष्य सहे, देव सानव अति अति । निष्युत्यानद् न कीजिये, वचन स्थाप राई हित्य ॥८॥ कड्युं ॥७॥

हर है कोई करना अवर्ज़ अध्यक्ती, से जब होने वचन हरिय-जुनी। केंग्रे करी बाय कुल पणु पणुनी, पानी कुल सुल वडी धार

والمرابق والمراج المراج المرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة

१ क्षेत्र

करतं ६ ]

लकासणुंती ॥१॥ रण-लक्षामणुं मुख्य लहते, जब जीवे जे जगमाई।
चिक्रियक ए जीविनव्यते, काम व आव्युं काई ॥६। व्यास्थ्य एती
धुं रही, आव्यो दिवल्यका बांक्सां। मोर्पेशी नाली कर वृत्यतः,
वर्णी एरी संवाबी नाक्सां॥३॥ शुं वर्षु जब नव नीरमे, शुं वर्षु वजी
क्षोग जगते । शुं वर्षु विचा गुण ववायणपी, जो भ रणो दरिते
वजते ॥४॥ सुरगुव सरिलो विदे, वस्ती बीजो कोह वृद्धिमान ।
वीरती वर्षु विचोक्षीते, पर जावि गयुं अञ्चान ॥४॥ विचार विना
वचननो, लोव कर्यो लजा नजी। मार्च सेव वेजी गई, ने इरकोइ
केंग्रे इजी ॥६॥ जेजे वचन जेने कर्या, नेमां दे वुं सहने राजी थई।
जाजा क्षेत्रि वर्षुचर्या, समझो सहने साद व्यं ॥३॥ वीद क्षेत्रे संनावने, वचनपी वर्षा वा'र। विव्युक्तानंद च लोविये, वचन इरिनुं
लगार ॥८॥ कञ्चुं ॥८॥

वर्गन वर्ग-स्थव लोपि जाने सुन्य लेहाँरे, तेओ के जूं के बावे जो रे जूंरे; । रेक-उपारे विकास प्रारको र्वारे, वाचो बीज रहिन इथिबीरे । नोचे बहि वाच रीन ए नवीरे; वयन । १ ॥ उपारे धार्म सुमत्रेनी केज धारोरे, प्रांस्कृतक वाने जन धारोरे । नोचे ए वान कांड्र प्रमानोरे; वयन । १६॥ सुन्य वंदेशी वायसे वारीरे, प्रसाने प्रायस बस्तेवनां वारीरे । नोचे विमुन्य सुन्य रे वो हारीरे; वयन ॥३॥ गव बान प्रमान के वकीरे, तेनो कोटी व धाय कोड़ धकीरे । कहे विश्वकृतानंत् एम नकीरे; यनन । १४॥ वह ॥३॥

आहा प्रदेशी कार सुरपित्री, गीतम परमांचे करी गतित्री।
लेगे पृत्य पारची लंगमांचे लिती, रष्टुं नि सुण करीरमां रितिती
॥१॥ वाच —सुण करीरे बालुं रहे, लोगी अविनादित्री आयरणा।
बंधी सरबी जिया नती, राष्ट्री अवस्थाको विवेद विता ॥२॥
पुरंदर व क्षिपत्रती, भोगवपु ए भग्दुं नही। यन समरेवाना भनिसात्रमी, जोज्यती जवर भव रही॥३॥ एवी अपवाई जोए १देवी,
आच्छो बाद क्षिप रोपमां। वहां सहस्य भग वामी पुरंदर, रेजे
सदा सदोचमां। रश परचीचे वहणी पची राजे, तोष म भाग आवालोग। जवर बारी एकमां वन, थगो क्षित्रों कोष ॥४॥ वजी भूगां

در در ما مراس در در ما مراس از ما مراس در المراس از مراس از المراس از مراس در مراس از مراس ا दुःगने भोगवन, कयां कारकाः धनमांइ वास । स्याप्तां करी ननी भीरती, न्यांन्यां धावर लागी हाम ॥६॥ एम वचन लोगे जो लला रहे, नो कोण सन्ने धवनने । महाप्रमुनी मरजाद मुकी, सह नर्ने गमने मनन ॥५॥ मनमाने रेनां मोटव मळे, नो काण वेडे वचननु दुन्य । नियहत्तानय नो नर अमर । वने हरिधी सह विमुख्य ॥८॥ करतुं ॥६॥

भूमां एक भूपित नहुत्त राजनजी, ते पुत्ये करी पाम्पी इंद्रामनजी। सारे चर्यु इंद्राणी करवान मनजी, उनम्ल पर्यु चर्यु एम व्यवजी। १९॥ सार-व्यवज्ञ कर्यु विकट असि, तुं वर्ष मने वेले करी। स्वारे इंद्राणी कर्यु वरी हुं इंद्र्ये, इव केम वर नरने करी। १९॥ लारे बहुत्व अमले वर्या आपको, ज्यान्यरी न्यार नव परी। त्यारे आपनुं इद्राण्णिये और वर्यो, कर्यु आप्य कारे वाद्यं वही ॥३॥ वर्षा वाद्यं साम विक्राणों कर्या, पण काम वाद्यं नव ज्यार्थं। त्यारे शिविकाणे कर्यियाय ओक्या, तेर्यु पाप कर्य वर्षु ॥१॥ वर्षा इंद्रपणुं आव्यती सर्वा आक्या, तेर्यु पाप कर्य वर्षु ॥१॥ वर्षा इंद्रपणुं आव्यती सर्वा, कर्यु पाम कर्यं वर्षों। वर्ष्य क्रांत्रितुं कर्य और्ष्ट, इत्ये क्रांत्र्यं वर्षों। वर्षे कर्यों अपने १६॥ वर्षे कर्या वर्षों अपने १६॥ अपने कर्यु सम्बं आपणुं १६॥ असि श्राणी पद रखीयात्र रही, जे कोइ वर्षे इंद्रपण्णां। करे वर्षे को कर्यं वर्षों। वर्षे वर्षे क्रों वर्षे वर्षे वर्षे आपनात्र इति वर्षे कर्या वर्षे हिर्मे आगान्या, ए मानो बन्धनि स्वरंति । तिष्कृत्यात्र एने निरम्वर्गं, रहे नरि पाप पक्ष रति ॥४॥ कर्यं वर्षे स्वरंत्र पन निरम्वर्गं, रहे नरि पाप पक्ष रति ॥४॥ कर्यं निरम्यां, रहे नरि पाप पक्ष रति ॥४॥ कर्यं ।४॥ कर्यं ।१०॥

बचन आपारे बनेंछे अंहती, मोटा सुन्नने पामको भेहती। एक् बानमां निक् सदेहती, कोक परले के पूज्या कंग्य भेहती॥१॥ राष---कोक अलोकमां आवक, है को गनी कही रीत्रहां। बजन बा'लामां बा'लां करी, पसल बने राख्यां पीत्रहां॥२॥ बजन परळ्यां जो बिक-िस पहें, भी गहें अद्वापे करी। बजन लोपतां को सुन्य सह, मो घोळपुं पर सह परहरी॥३॥ अज्ञान परान भूपता भूगी, घर मळे (प्रशासने राज। बजन जानां जाने करें, जाने पाप एकी अकाज ॥उत प्रहादने कर्न जना पिनाचे, यन आपुं राज अध्यक्तर। माम केटीदे नगरित्रें, आजियी मां कर्ष प्रमाह हो। पन एकवां सुन्य

والمعاملات المائمات المرابط والمائمات المائمات المائمات المائمان المائمات المائمات المائمات المائمات المائمان

माम रहितन, मुक्त केम भोटा सुराने । लावी रचन सब लक्ष्ये, वन् यरे यणु विमुख्य । ३॥ अग्रह कयाची मच गेरवी, वनी आरी नटा रीमं काम हो। एथी मर रक्षिये आहवा, गर्चा मुक्त परिवा हराय हो ॥ अ), यह बचन नचे बचाइ झन्द्रे, तेने पापकाप जाली पर दर्शे । विष्कृता वद निश्चे करी, हरियणनमाँ पाम करो ॥८॥ कश्युं १९२॥

वचन विरोधिनी वद्याह कड़ीजी, जे जन वचनमांधी गया व्यविति। सन मूली यह मूले भुकी शकी ती तुने जे बर्ज ने जन दिवे हजी भी ॥१। राष-इसी हसी हासी करे, ओह एका जनम् अभि । करी कार्ट मुख मानमूं क्यारहं । करो कर इने पने कीचा ॥६। विचया नारी कर वदाई, सुन एक मार्ग प्रणी। वय प्रत्यानी सभी य योषिता, जे किए प्रवर मधी घणी। 👣 बजी बीजी वो पति पर-वंदा है, इयां खुन प्रवस्था है सान । बधी खबर गई लोका नजी, चणी केम भाषा रखीपान ॥३॥ एम चचन बहुवी बानानगुं, केप्र जब करेंग्रे काम । ने लाज जादी भा भरेकमां, वर्ता कदा शिवन इराम ॥६॥ शरामी जीवने शोप महि, देवे इर प्रतिश वचननी । आसुरी वित आपी अति, तेणे जीरी देखारे ओपनते ॥६॥ कती कामनुषानुं स्था काम कहां, उत्तां घणा गढ़ा पर बार्णे । एव आहा-कारी में इंदर्ज, ज्यां विमुख होच काज कारणे ॥ आ एक हरि-अन्य इम्बा करकी, विचार बारमकार । हर्दिका विमुख म चार्च, कहे निरक्तकार्यस् निरमार ॥८३ करवं ॥१ ना

जन करेड काम । ने ।
इसम ॥१॥ शरमी जी
जासुरी मित आपी व वामपुषानुं ह्यां काम ।
वारीनुं कुं वपने, क्यां जनने इसमा करकी, वि कहे निरकृतानंद निर पर्यार शेष्ट—मधे व रहीए बेगळा, हरिये । जारे बानमां, करी है। वो बचनने भारते । भी, वांस्ता लागे विस् क्यां नुं कामरे । कहे वि मेलेश ॥रा पर्या ॥रेश व्यान विस्ता म बहुराम भोज-सनो आयोगी हैन समारदे प्रयान है। असी विमुख्य धनी रहीए बेगळा, बरिये दिवस में रामरे । मना विश्वास करमा विश्व-लगो, बलबी जाये जो बानरे; सनोर ॥१॥ संतो विमुख विच जापे वानमां, करी देन अपारं ! संतरे रतस्यमां ने रमी रहे, न रते बचननो आरमे; संयोग । २॥ ससी सोवन व गर्न पछी संय-भी, कांटा लागे विष्यारे । संबंधियम न गमे वापनां, माने मो-कळ सुमारे; सनी । आशानारे करवानु छ ने वयाधी करे, पाय व कर्यान् कामरे । कहे निष्कृत्वानंद निश्चे नर, स वामे सुन्व द्वामरे,

वयन विमुख स भाषी कोईती, नर असर विमुखनां सुध्य ازی ایدار به استان استان از استان ایدار بازی ایدار بازی از ایدار ایدار استان ایدار بازی ایدار بازی ایدار ایدار ایدا जोहंती। मोटा बेठा मोटच बचन विना बोहंती, माटे हरिवचने
रहो राजी होहंती ॥१॥ गण-राजी वह रहो बचनमां, सोवको मां
बचन नगार। बचन लोचनां भोटामोटा, नाम्या हुन्य अवार ॥२॥
नारव सरिन्य नहि कोचे, बीजा महामोटा मुनिजन । नेचे वज न नयात्रियुं, लोच्यु बालानुं बचन ॥३॥ खानी वह जिया कर जो-यो, भोषी विचार बरवा कर्युं। वर्षन वल हज्यवा वरणवा, बेठ-मुं मिद्रांत एक दर्युं ॥४॥ खारे कन्या क्षेत्र वान कही, लवंबर रचीवा सवारमां। हच्छावर कन्या वरको, नमे बेठ रेंजो नेवारमां॥४॥ त्यार देव वाया हरियासके, बहुं मानवा कर अनुवने। बसी परस्पर इच्छवा, बाबा कर कुक्यने ॥६॥ त्यारे इच्छीने हरि बोलिया, बाबो जनसर्वर क्ष्य एव। वछी मक्षर सुन्य वन्यां बेठमां, कहो कन्या वरे निवक्रवानंद कहे ए निवन्युं, ने जने आण्डो सह जनश्रदा कहतु॥१३॥ निवक्रवानंद कहे ए निवन्युं, ने जने आण्डो सह जनश्रदा कहतु॥१३॥

बची एक बचनविरोधीनी बानजी, सनी बनिवना मीना साक्षानजी । आपे इंदिरा असे जानकी विक्यानजी, नेले वन करी आज्ञानी पानजी ॥१॥ राष्ट्—पान धा नेनी बाल कहे, जानकी बोसियों क्या। स्टब्स्य समारा भाइनी विस्ते, आओ बेडी रचा की, क्रम ॥६॥ न्यारे रामानुज कहे रामने, वर्षी जोपनार जिलाकमा । वचन मानी समन रही, कीद रहींछी कोबला ॥३॥ त्यारे वैदे-दीय प्रवन्तां, सहस्रतं स्वाकां पान । तुं आणे राम सरे वरे बुजने, ते व वर्ष कजीवा हुं शका ॥२॥ त्वारे रामानुजे हुई थारियुं, इंदिरा नोयं पण की न्यरी । पडी रामनी आव्य आपी था-लिया, केंद्र एकचा चेच जास्यो यही ॥६॥ सन्यासीकचे कर्य सी-मान, भाष्य विकासने आवर करी। ग्रही विकास के छोटीने भान्तीका, वै'लो आध्य आक्यभी मा'र विसरी ॥६॥ आञ्चा स्रोपी भीरामश्री, जिस्ता आपया जिसती यारे। तर्न रायण नेशी चालियो, बडी पानियां दःच अपार ॥आ विपन्ति वही वियोग पयो, रक्षां रामजीवी पळी हर । निष्ट्रनावद को गणन छोपनी, आक्षेत्र व्याच्याची अक्ष्य ॥ ८ ॥ क्ष्यमं ॥ १४ ॥

y which gran,

पत्नी सीना साद औररपुरीरजी, बांधी पात्र जनमां सिंधुनीरजी। कीची लंको केदी रायणमां शिएजी, वडी मीना नेटाव्यां महाना अधिरजी ॥१॥ शब-सीनाने बर्ख रायजीये, जेम होये नेम राजी वेच । आपी मधी नमे जमने, केर पावको मां क्यी नेका ॥२॥ त्यांनी विभीवने जाने करी, सजाच्यो संदर कानगर। नेत्री आच्या शब वासके, व्यक्ति रावे क्यों विराकार ॥३॥ व्यक्ता नोवीने व्यक्तियां, तेचे राजी व चया राज । च्छी बक्रियां अग अरप्यं, एवं करवे चयरं काक livit स्वारे द्वारच जादि देवला, महुए कर्यो सनकार । जारे रामक्रिये राखियां, शुद्ध आश्री सीमा बार ॥१॥ बचन होस्सां विकल क्यी, वालगररमुं व रहां सुन्य । एव आज्ञा पश्चिमि व वार्षु वचनवी विमूच ॥६॥ मोटावे एव जाववा, ओरच आजा जी जार्वा-वानी। छोटी सोटी जे आमन्या, ने सरवे हे वसा विवानी ॥आ बाजामां जार्नद क्यो, जावे वर विजेशने जनि । विष्कुणानंद वर्षे व कोचबी, आज्ञा इतिमी एक रनि ॥८॥ कड्ड ॥१५॥

क्की एक वारमा लांगको सारीजी, मीथी संकांपुरी रावणने आरीजी । वटी बर्छ रामे रामानुजने विचारीजी, वे'ला जानो विभीवनने वारे वेसारीजी ॥१॥ तक-वारे वेमारी दे ना कावजी, विसारको मां एवं वचनने । बळी बादंई नमने, बेसको मां रावन बासने ॥२॥ वडी वर्ड जोड़ लंडांपुरी, दीठी रावणनी रिवि जिन। नव विना वेडा मादिय, निर्धा तर्ने करी गई मनि । ।।। स्थानी सुरुष् बनाई सेनतुं, श्रीरामनुं अवने दरी। को देतुं बनाई ए कोल है, बारी कादो प सेना परी ॥४॥ एम बचन विमारतां, मनि रनि पर्य वय रह । वडी आसमधी बनवां, लादे आरे अनि भोउन यह ॥-॥ वसी जयोग्यानी वारता, रावे कई रामानुक्रने । जाववा सा देवां अस पामले, बळी पुछचा विवा गुप्तने ॥६॥ अचापुछचे दीची आयत्या, दुर्शमाने दर्शनमधी। ने वचन लोपाणुं जाणी रामजी, वर्ष ज्यारे मुनिसमा बनी ॥आ त्यारे कवि कहे वक्त्रप्रोहीतु, सुध्य स जोतुं पाएं करी । निरक्तमानन् वधी रामानुते, वान मन्य ए मानी सरी |K|| क्यवं ॥१६॥

क्रमण भोख । सनो आसंधि देश असारहे, ए हाज छै। संस्ते वाचनश्ली-

हिनो पणी नहि, पण्डे गुनेगारदे । संनो उपांत्रपा जाये त्यां जन मळी, बळी करे निरस्काररे; संनो॰ ॥१॥ संनो छेवा वचन जो है स्त्रोपिये, जिनि यह वनमन्तरे । संनी एक एकडी जेम टास्टमां, खोड़ वह जाये जनरे; संती । ।। कोइ सो कन्या परवाचे सुनने, वर्ती सरे मोटियाररे । तांच्या विजा एमां कोण रहे, तांचे भी एक शहरो: संती : || ।|| एम चचन दिना जा विश्वमां, बरते हे जे विमुखरे । निष्कुलानंद तेने निरुचनां, संन व भाने सुच्ये: संनो॰ ।।४॥ वट ॥४॥

विमुखतुं सुख अति दुःलदेणजी। मजरो नजर न जुवी एनां मणेजी। काने करी केदि न सुणो एनं के णजी, बहने न बढ़ो विमु-लड़ां बेजजी ॥१॥ तक बदने व बदनं विमुन्नडां, तेस स्पर्धापुं अहि पंजे करी । सर्वे बकारे समझी, पापीने सुकवा परहरी ॥ २ ॥ कोइ रीने कुपालनो, गुल गरी लाय को घटमां । तो पार पोने पामलां, लरी भारपं आण्ये जह तटमां ॥३॥ पण साकर संदर खांलगी, क्यांनगी व भकि लाक भोषंगरी। नेम इरिजन सारो खांसगी, ज्यानगी नथी सोवन क्रसंगनी ॥४॥ कोमविक वारीर खांसगी, ज्यांलगी वधी कोइ कपाळमां । तेम संत्रिशोमणि खां-लगी, प्यांलगी बा'व्यो विमुखनी जान्द्रमां ॥५॥ वास्यो स्रोत सारो स्थालमी, क्यांलमी वधी ववाणो वदलमां । नेम भक्तनी बलाइ व्यांलगी, क्यांलगी ना'व्यो विमुखनी वरजमां ॥६॥ तम मुक्तनी भोटच व्यक्तिमी, ज्यांहमी मधी पंच विषयनो प्रसंग । देव इंद्रिय मन प्रापाधी, अति रहेडे असमा ॥३॥ जेवा विमुख छे बारमा, नेवा विसुध से उरमाय । निष्क्रमानंद कहे न करीये. पनी विश्वास कांच ॥८॥ कावं ॥१७॥

विमुखनो संग नजी सनकाळजी, हैये जाणी इंटकाया श्वा-ननी लाळजी। बळगी अळगी करनां जजाळजी, जायजो अकर एक अस जाळजी ॥१॥ सर-जमनी जाळ जाणीने, तन सनमां राज्यो शास । भृत्येषण इरिश्निने, भव बेमर्च पहने पास ॥२॥ जेस राष्ट्रसमे राक्षेत्रा रविनं, अति नमे पाच तेज छीत। तेम

ቸው የመጀመር መጀመር ሲያመር ሲያመር መጀመር መጀመር መጀመር የመሆን መጀመር መጀመር መሆን የመርመር መጀመር መጀመር መጀመር መመር ነው የመጀመር መጀመር መጀመር መጀመር መጀመር

इतिविमुखना संगपी, वाप सनि अनि मस्तिन ॥३॥ प्रापृट् कत्प्रांन वरन्तिये, क्यारे क्या अवस्था आवाचा । जल सकोवाये स्वत्यी. तेम दिमुखपी मन्ति भाषा ॥४॥ जेम बायुना वेगे करीने, विचाइ-आये बन्दी बाद्यकां। लेल दिमुख क्वनना बेगबी, साथ जूमगुल आदि समझी ॥ ।। सीम विराण्य विना जण्ये, सुके एक मुके शारी-रने । एम कुमेग अंगमां आवनां, कारे मोटा मुनि थीरने ॥६॥ कडी कड़ीने कड़ीए केटलुं, रे'जो इतिविष्याधी बंगळा । वरमण्य तो वामको, बामको बळी रूच सपळो तथा निर्देश बाबा वरते, न करवी संग विमुक्तनी । निष्कृतानद निसं कहे, ए के प्रपाप सुन्दनी प्रदेश कराई प्रदेश

शिया सुन्यमाद लोपेडे बचनजी, का मोटा मुनि विचारेडे बनजी। तुरो अरुपुद्धिवासा अनगी, पोताबा सुलमां वादेशे विपनशी ॥ !॥ राज-वियम पारेक्षे क्या समझे, कारेक्षे बाता वेसवा तथी। तेन वकानुं भूं पुरुषुं, ववको जबर एवा क्वी ॥१॥ वह बुकी बीम वन्-हर्ता, जाण लाइ भागीण शुल्पने । यन परीक वणी पांटी सनाई, मरीका पानी बहु गु:व्यव ॥१॥ कापेचे सर्वती कंडियो, मान बाना भूयो वकतायसे। यस जानमे वर्धी आंखु आधिया, से इसमा बीजी बाग व्यापणे ॥४॥ चालेले चोरने सारगे, चराचंद बानेले क्षेमरे। एन क्षिण कवाकां एवं क्षेप्येसीयमां, त्यां कुक्तक रहीक केमरे ॥१॥ एम बाहि वेळी बचननी, केर राकेल कल कम मलको। कल तनुं करतेन धर्ने, देखे वंकर्ष दक्षशे ॥६॥ कांनी चर देर अवनार पाधी, अन्तीवयी भार उपादको । इसर धरको पालनां तो, पनी एनी पांच लावदो ॥आ बादे जोई विचारी जगदीशनां, विमुख रे जो मां बचनभी । जिल्ह्यानंद को माधना, घरमां अंघाद घार नची ॥८॥ कवर्त्ते ॥१९॥

लोजो का लगनमां जीवनां सुन्तजी, देहपरजंग भोगने। दु:बाजी । अन्न जल तृत्व जाहार विमा बेठके शुव्याती, नेती जन जानको इता दरियी विमुखनी ॥१॥ सब-दृति विमुखनी वारता, सांबको तो सर्व कर । नथी कथानी एइनो, बजरो बजर देखाडी

الماء استماما والماما والمتماما والماما والماما

بأوالم المالم المالمالمالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم

इडं ||२|| अन्यांतरे जन जानजो, हरिक्या न सांवदी कान | तेनो नर बांधर बया, एह इंड दियो भगवान ||३ | जम्मांतरे हरि हरि-जतनं, अब न जोयं नयने। तेने करी थया मांघछा, इने मुजे नहि दिन रेयेने ||४|| जिहाये नाम जगदीवानं, जमाने वन वच्यां नई । हे जन थानो पूचा वया, बोलवानी इने वंधी थई ॥५॥ जे जने हरिक्या मांचछी, कारी देवी कान्द्रंकानं कथी। ने जन वया नोनछा, इने बोली समझानी नभी ॥६॥ न्यूना यांगळा रोगी वियोधी, दुःजी दीन हरित्री जिते। तेनो पूर्वना वादधी, दुःज जोगवेडे दुर्यन १९॥ एह इंड जानो देवनो, ओमवेडे विमुख वळी। निष्कुनानंद व लोपिये, हरिक्यन थार्चु सांबळी ॥८॥ कद्युं ॥२०॥

वर्गा (तप्रावन)—समझीने समझरे, वांलो करो इरिनो बचन।
देशी वेशीने दृःचमां, शीद वराणे विवये जन; समन ॥१॥ जेने
दचने वियम विरमे, वाभिये वरम जानंद। एवां बचन के वहुएे,
तेनो कांदे स्रम्म अनिमंद; समन ॥२॥ असमर्थनी जे आगन्या,
सनाये व समाये सन । वज समर्थना वचनमां, रहिये राजी वह निवादिन; समन ॥३॥ जीहरि रिसदी सुच हैये, जिजवंते व लाय लोट। निव्युत्तानंद कहे व कीजिये, एवं तह चनरनी ओट; समन

विज्ञवं इतिवे लाख व वायजी, एपन जानयुं जन वन मांपजी।
जेपी थाय दू ल सुन मनें जायजी, एवो वन करने कोई द्यापजी
॥१॥ शम—उपाय एवो करने महि, जेने करी क्विजे जगदीया।
शाजी कर्यानुं रह्यं पकं, रून इतिने व करानो शिवा ॥२॥ इट करी इति
वयरे, कोई सेनक करे सेनकाई। ते संबंध नहि श्रीहरितनो, ए छे
हास जानो पू लदाई ॥३॥ सन गमनुं मुके वहि, करे इति इठावना
बोड । एना भन्द जे नगवानना, तेन कहियं क्याखना कोड ॥४॥
व करे गमनुं गोविंदनुं, निज्ञ गमनुं कराने नापने। जो सोडे गमनुं
एना मननुं, तो कोचे विमुन्नना सापने ॥५॥ इरकोई वाने इटकि,
वटकिन वानी निमरे। इन नोडी इति इतिजनश्चं, विमुन्दां नाम्यप
करें ॥६॥ एना जानम जनने, जाखन्या जोचे जगदीयने। तीहो नो

प्रवेश ६ शक्तिः ६ वृक्तं.

व रहे रीतमां, व्यक्ते तो काचे क्षित्रके ॥॥ वचनकोतीपी लागे बमभी, एका सेक्कवी सेक्काई। विष्कृत्वावद एकी भगती, अक्तवे व करकी अर्थ ॥८॥ कक्क् ॥२१॥

वृत करी इरिद्धां राधिका राणीजी, श्रीकृष्ण साथ जोल्यां रीका भागीजी। इनां कोलोके पोनं परमाणीजी, श्राम्यां श्रव्यांनियं। क्यां आहीर राणीजी।।?।। हाल—आहीरने घेर अवनर्या, रथां बीनवंपुची दूर। एकी सोटच मटो परी, नधी ओहती जनने जहर ।।।। एनो भन्न इनां भगवाननां, राधिका ने रमा समान । एने अहवे आविया, श्रीकृष्ण कृपानियान ।।३॥ चन भनि अवसाई आहंजी, श्रीहरिची लेवुं सुन्धा । एवं भन्न न करे भगवाननां, करे होय हरिची विज्ञान ॥४॥ वसी एक समामां वयाए, होना दीटा रामजीने रागं। विनांकी अर्च वाये पत्ना, चर्च समझ्यां निह स्क लेवा। धारत्वं तेवा परभवानुं, निघो वेदिनिनो वेच ॥६॥ त्यारे राम कहे हाकायणी, एकतां केन छो इंच कियां। त्यारे चामी त्यान गयां विनाकियानने, जेम चर्च तेम के वा रक्षां ॥ श्रा त्यारे प्रामित्र वर्षा जानी जटीएं, वर्षा त्यारी विधां नेहने। निष्कृतानंद एपं निपत्रमुं, अवसाहन् वस्त एवने ॥८॥ कावुं ॥६॥।

मननुं गसनुं शुक्ष मोटाने पामकी, वर्तनुं पहण पहँ दामना हामकी। तो सन मने मार्च केंद्रि अध्यक्ती, ओ रहे एको अल्बा अध्यामकी ॥१॥ गण-अध्याम गयो शाल्यो, मोटा आगल मेन-बुं मान। जोर कियो सह जीवर्मा, एमां आणो नधी कांद्र स्थान ॥१॥ मान मुक्त मान वर्ष, मान शाल्य पटिजाय मान। एम सम-भी मान शाला, मान मुक्त्या के अति नान ॥१॥ वेद्यारी पुली मानधी, निरमानी देंसाली सदाई। विचन रहे एथा बंगळां, नजी अस न आवे कांद्री ॥२५ माने करी मोटानणो, मपराच ने माने बनी। ते कथा सुलीके अवलं, विश्वकेत्र गुव्या ने शिवनी ॥५० व्यवकारी हिस्तान हरियो, नवी मानी केनं माने

وتواريها والماري المارية والمارسان الملطان والمارية والمارية والمارية والمارسان المارية والمارسان والمارية والمارية

punnt. bure. patreit. wure

भांती दोक्यजी ॥१॥ वन्त-दोक्य दियेष्ठं म्योक्य हासचा, वश्र

وي المراسات إلى المر م]

जा नोच चानोकमां वहे, जानो जका अंतुं काम। नेने लंगाचे केन जोडिये, जानी सदाय मुन्तनुं चाम।।३॥ विवाद करी केन वहिए, जिन वजन जकाची। जेने कमे दूने वृत्ते दुने दुने हुने को, ने नव म हेदिये वजनी ॥४॥ से बारनेपी वंग पुटिये, ने वंग म करिये वारणुं। जेने आधारे अधिये, नेने स करिये वारणुं ॥८॥ जेम कोए राने जजनर क्युं, वळी वारिशुं राने वर। ने जन एन क्यी जाननो, जे हुं जीवीका ने कह देर ॥६॥ एन संन साचे शामी वायुना, वळी करे भुजनी आचा। ने दिन बोचे पुष्प पाधवरे, को करनो नवी नवाम ॥अ॥ वस्त्र हुने सहाराजने, राजी संन संवाचे होए। निय्वजानंद कहे ए नहि बने, रुने हुना कोइने दोष ॥४॥ वहर्ष ॥६५॥

लंगने मौरिये सर्वे भाषणुंगी, रथी लंगराय व राज्यीये लचुंगी।
करिये नमतुं साचा लंगनणुंगी, नो संग लगंग राजी बाय पणुंगी
।१११ कल- नर्जुं राजी करी सनने, केंद्र वाधिया परम चाय। सन विमा भोषी मुखे सबसे, करो केंद्र मिरियुं काम ॥१॥ जेन नाय विमा नीरिविधिमां, मची नरणा लग्य पणाय। वेम संग विमा संमार नरणा, भीर इच्छे कोइ परमांच ॥१॥ क्षेत्र रथि विमानी रजनी, जालो वथी साधानी जकर। नेम लंग विमा जग्नम लंगानं, केंद्रि य वापे इर ॥४॥ जेम परमान विमा चतुंचरा, लग्नये सुकी रहे। नेम संग विमा जीव जननमा, कही सुख चयांथी नहे ॥६॥ सेमा सन्दां भोशिये, जोविये वापीमुं शीत। नेने सुख थायानुं वथी सुजनुं, विमाव जोये सैथे विस्त ॥६॥ कोडी मांच्य चाप आंच्छो, वसी इच्छे जावा क्षमें। क्षम जोवानुं रशुंचरं, जो भरे वहि वंशा कृतने ॥आ यादे साचा लंग संवीन, करिये राजीर जियान। निवकुत्वानय तो सरने, सुपरी जाये सर्व वाम ॥८॥ कक्ष्युं ॥१६॥

साचा सन जानो जगनमा बोराजी, बीजा बहु परोपर करे आधारोशाजी। वर्षा त्यां न्यापणे जगनवा जोशाजी, संग वधी नाजना बजापनियर पोराजी ॥१॥ गाम-पोरा बजापनपरमा, बाधे नाना समुख्युंच पना । एका साधु के बायणे संसारकां, अति ह्यार नाजामना ॥१॥ नाम पानने रहे बोळना, जिया पनने

<sup>1 199</sup> 

والمراب المراب المراب المراب المراب المراب المرابط والمرابط والمراب المراب المراب المراب المرابط والمرابط والم

ताके वर्षे । मान्हा निमक ने मुद्रा एनी, पारेडे पीरववापणुं ॥ ॥ बेच उपदेश कारता, करे साचा संतना सरमी। पण भरी मुंबाई भिनरे, नेनो कोणे पण नय्य परन्ती ॥४॥ फेलमां पह कवी रचा, रुपसनी ने बढ़ी बटाज घणी । तीर्थ बन निपम म साने, करे होड ने घमनणो ॥५॥ एवा साधु धई मंसारमां, एजायणे पापी मळी। प्रभुती बांधी मरजादने, फोडवा के त्यार बळी ॥६॥ एवा साधुन संबन्धां, पुन्य पुनर्ता परजळे। आपे जाट्य सोटी अनि, जे जनने व्या कळे ॥ आ बद्धा घोळा घोळवा परा, मारी लागे इयामकी गाय । जिल्ह्यामंत्र गाय प्रतीय, रण जर जरा न प्रजाप ॥८॥ कश्यं ॥२०॥

काचा शुद्ध संततो समागम चयांथीजी, योडे गुन्ये करी ए वाली नपीजी । जेणे करी छुटिये सहा दु:म्बर्मापीजी । जकर जीवना प साचा संगाधीजी । १॥ गर-साचा संगाधी संग छे, जानो जीव-ना जनमांप । भर सामरमा दुवना, साचा संग करेंचे सा'व ॥२॥ वा दें हे बसमी बेळानका, क्यारे जावे क्य बळी आकरी। ते समे साथा संग मगा, कां तो सगा छ भीहरि ॥३॥ तह विना जिली-कमां, नथी जीवने ठरवा ठाम । आचे अंखे करवे मानजो, सर्पाः समा, नथा जायन उरवा जाम । जाय जाय वरव मानजा, सथा महना पथी काम ॥४॥ ने संन शाणा शुभगुणे, जेमां वराष शुभ अव विशे एक । परवपकारी समा सहना, धर्म निपमवाका विशे के ॥४॥ काम कोच लोगे करी, जेने अंतरे वर्षी बलाय। निर्मानी निश्चिती निश्चिती, निर्माही कठी निष्याय ॥३॥ जनस्त्रोव जेना जीवमां, बळि जायो वर्षी अणुभार। एवा मंत्र बहुद जिरोमणि, जिलोकना नारनार ॥३॥ वर्षात्र में वालानणुं, होय पंच्यमां उपांत्रणी प्राण । निष्कृतानंत्र एवा संत्रमां, श्रीहरि करेंगे बलाण ॥८॥ कवर्षु ॥२८॥ परण्य पेक—भाव होते वज्यांत्रीय वाल ग्रे—संत्र साचा ने संसारमां, रहे हरिवचने हमेवारे । आपत्राज जो जावे बाकरो, लोगे वचन लाचे नहि लेकारे; संत्र ॥१॥ धन्यह पाने जो हरिवचने श्रीह ॥ श्रीह वाल ग्रीह लोगे महाराज निर्माणा ने व्यापार । स्वापार वाल जो वाल जो वाल जो वाल जाराज निर्माणा । स्वापार वाल जो वाल जो वाल जाराज जी वाल जाराज ज

करी, । सदा रहे हरि सबमुखरे; सब ॥२॥ बरजी व खोपे पहारा-

जनी, आने अमे दुष्य जो अनोहरे। सानित किथींग्रे साटे जिला-वे, जरी करी सन्धांप लोको; संबर्धाकी एवं एक अग रंग उनरे बहि, एक रे'णी के'णी टेक एक उन्हें। नियक्तानव कहे एका सन-में, ब्रह्माने धारो हु:ल्य हरते; सन्द शाला पद एआ

एवा साचा संत्रजो समागम सारोजी, जेथी जावे जानजो इ'न-बो जारोजी। अस पामपानी व रहे प्रपारीजी, पीजानी भए हे वह बढारोजी ॥१॥ कब-बढारो संग बहसानको, वहंछं कोड करको नक्षि । जाग बाच विष बहनि, ए विमूलची स्वारा सक्षि u सा नाओ किमाने वाले विज्ञती, बळी कुवे वहे वर कोच । शिया कारे जारे सुद्धिये, तीये विमुख्य कुल्यसम्ब मोग ॥३॥ एथी मरपू एकबार वह, वाडी पासीय जहनी बार । युक्त अनम अरुक जीवने, विमुख्यी बारमबार ॥४॥ देर देयर बोलबी, ब्लेड बाराधि नध-बार । एका स्पर्शना पापधी, विमुख्यतुं पाप अवार ॥५॥ वापी विमु-समा रचर्यानुं, क्यां जह योए सिट्डविव । राज्यि व रखे कोइनी, जेम नकी मळीनी प्रच ॥६॥ पूरण पापे स्पर्ध एको, पाये कोड पाणी वसी। अनंग जनमनं सुकृत सर्वे, विकृत्य रचर्चे जापे वसी ॥ ॥॥ एम सरदे प्रकारे समझीने, नजदो ने सम विमुखनो । निष्कुणानंद करें तो वासको, सारो दिवस सम्बन्धे ॥८॥ करवं ॥२०॥

वचनद्रोहीनो विद्यायाम करनांत्री, पार व आवे कोराकी कर-भांजी । सहादुःच पामिषे जनमनां सरनांजी, बाटे दिलमां रहीये एथी सादाय बरनांजी ॥१॥ स=- बरना रहिये अति दृष्ट्यी, जुने देली हैये बुगादार । सम्मे आदे तो प्राप्तपूर्ण, वावरता न करे बार ॥२॥ असे बीचे वार्ष आवे वस, वन नियं बीजाना प्रान । तम वि-हुन हुन भीई बरे, रम केरवे चारे जान ॥३॥ जेम भरी पंपूक वरीयातमां, कवि कवि ववि मुक्ते कानमां । जवादिने रहे असगी, का सामाने रोखे राजमां ॥। समझी सुवाका सर्वन, की सर्व बळी लई सोक्यमां । मानजो मने लेने मारको, अवद्य करवी ओक्बंसां ॥६॥ विकट अंटिव बाटमां, बेरी निये बळावडे । तेने कही कुशस्त्र रे'वानी, प्रशीति ने केम पहें। देश नेम वचनगांदीनो

विकास करे, राज्ये इतिविधुण्यमुं हेन । तेने सुण वाचा शीद पुण-वूं, जे वहची दृश्यने निकेत ॥३॥ बारे सर्वे अकारे समझी, वजी संग वचनहोत्तीनो । निष्कुलानंद कहे निर्मय वाचा, राज्यो सम संन निर्मोदीनो ॥८॥ कहवुं ॥१०॥

इरिविनुत्य वाचे इराधजी, जरके करके जरके कारे वाकजी।
वासे वरवक परने वेवाधजी, लारे पवको र वापनी वेवाधजी

हर्श करू-वेवाण ववको परनी, न्यारे क्रवकं लोग तुंबर्मा।
वारे लांक्य वयकको, वक्को नार क्यारे वंदर्मा हरा। काणी लोई जनविक्षणां, विमुख्य सोपंधे वयनने । यर वाचे आक मोजने, वस वक्को व्यवस्ता तमने हरा दीव वाचे क्रवे साम्रां, जन वसने विना रेंको वनमां। राम दिवस श्ववको, व्यरे विचारको वनमां।।भा विका क्षेत्राची सोच करको, केंको वयांची वयनमोदी पयो। संग वर्षु समझावना, जल हूं तरे देहनानी रको हरा। विधा लां क्षेत्र कर्ष, सर्व दूरवानुं तथी आवनुं। मोरानी वर्ष्या हरी क्षेत्र कर्ष, सर्व दूरवानुं तथी आवनुं। मोरानी वर्ष्या क्षेत्र क्षेत्र कर्ष क्षेत्र कर्ष दूरवानुं तथी आवनुं। मोरानी वर्ष्य क्ष्य क्षेत्र कर्ष क्ष्य कर्ष, सर्व दूरवानुं तथी आवनुं। मोरानी वर्ष्य क्ष्य क्ष्य क्षेत्र कर्ष क्ष्य व्यवस्ता हरिया वन्त्रकं, सुख विद्या क्ष्य व्यवस्ता क्ष्य क्ष्य व्यवस्ता हरिया वन्त्रकं, सुख विद्या वर्ष प्रव

वस्त्रहोहीती वाल सांभक्षीती, वस्त्रमा रे'तो सबू जब वसीती। वहिलो वाल वस्त्रको समस्त्रीती, के'वार्ग केम वसु वहि वे'लों
ले वसीत्री ११४ वाल—वसीवसी वाल वर्णवी, विमुखर्ता वालमवार।
ले सर्वे साची भागती, तुरी जानको भा जनमार ॥६॥ जानी हिल् दमावानती, सल असलती वाल वर्णवी। ले विमुख से पुरालसाँ, वर्षा कही काह ए वर्षा ॥१॥ केमे गया जनपुरिये, लेलो विमुख्ये वर्षाने कही। बारे समझु समित, मेलो वापीन परहरी ॥४॥ भोजा अनुक्तने भोजवी, वसी कांकि वांक्यो कोरमां। जीव विचार। शीवितव्य हारी, क्यार पापछे व्यक्ति बोरमां। जीव विचार। शीवितव्य हारी, क्यार पापछे व्यक्ति बोरमां ॥६॥ एटला मारे भोसकावित्रं, विमुखनं विचन वसी। सह जन ए सावचेन हैं जो, पित्रवानी वाल कांची सांससी॥६॥ जेम के लेम जनावित्रं, सर्वे वालनं करूव। हिनकारी के हरिज्यने, के विमुखने विचन्न ॥४॥ पूरण सुण्यं पापचा, हच्छा करो कोह वर । विश्वकुलावद हे जन-वे, जोइए जाणबुं जाटबुं जहर ॥८॥ कदबुं ॥१२॥

न्तान क्षेत्र—अस्त जोर्ने वजनारीनी, व कान के—जवान के जन्ते ते जानजो, नमतां ने निमुचनी नामरे। जास आविष्णं जनविंतकी, वह जाये वर्षनो नाचारे; क्यांत्रक ॥१॥ विमुच्च आवेडे पंति कारणां, जोस्वीने करे आगतारो। अन्यकर्षु यह साची वयरे, चानतां वारणे चोरहाररे; क्यांत्रक ॥६॥ व होय बाद एवो चटमां, वाचा वसी वच्चपी चांररे। विमुचनी बात वर वनरे, तो वाचे वायमाहि व्याररे; क्यांत्रक ॥६॥ वही अरक व रहे अव्यानकी, राजे क्यां-व्या व रे'वायरे। निम्हणार्वद कहे ते वर विक्षे, वानरे सरो चन-वृत्ती चायरे; क्यांत्रक ॥४॥ वर्ष ॥८॥

व्यक्ति पृत्ति वेका वाय क्यारेकी, वरतर वर करे वान स्था-रेकी। वं नो निस्त्यों क्वमधी वारेकी, सर्वे क्रमे सुन्य क्रम्यों ने बारेकी।।१॥ क्रम—सुन्य क्रम्यों सांकल्प रखी, निस्त्यों कंवमधी क्षारचे। केक क्याय क्यांना कर्तुष्टं, युक्तमें राजका क्षारचे।।१॥ इ बावा सापुण जाप कांचले, क्या राज्योंनो हुने रोकीने। क्या केण ब बान्युं के कोइनुं, क्षाव्यों कुं कंवसी कुकीने।।१॥ बहास्त्य कहिया बोरण देवाडी, जाकरी वांध्योंनो जारा जीवने। निस्त्यांनुं केंगुं क्षारणुं, कोण जाले कर्युं केम देवने ॥४॥ ठाकोडाय भारा डाकका, कोषा वांच्यांना जनि क्या। वासकामां सुने काववा, राजि बोंनी कांच क्या।।४॥ वज सम्यो जोहने हुं सक्यये, वाजो कोजनां कोण वह जाको। क्षाची जनन राजनां क्या, पना क्यां हुं मध्य क्यों। ॥६॥ जर्या राने वं विद्यों, क्यां इता ने पुलक कर्तने। सुना सुकी वं सहने कजी, क्षाच्योचे बांगुमां क्रिने ॥आ एम विद्युक्त करे क्यां, जावंशे ज्ञसनी मागवये।।या कर्युं ॥१३॥

वदी वहे विमुख सम्बर्धा, यणे पु:से यर्षु मुख्यु'तुं घरती। संगते म सम्बर्ध अब ने अंबरजी ॥ जाण्युं सलसममा ए के सन्त-रजी ॥१॥ सक-समर हे सलसंगमां, जावा वीवा सुव जार्खुं

<sup>1 1000</sup> 

बज । भुनुं अब बसन अहे शहि, वर्ष स्वीतकपू नुं सपने ॥२॥ शनी रमोपो मामोगायमा, क्ली आपको चेरचेर । जनम की जे जबी भवी, ने रामहाँ बहुवर १६३॥ एवं सुनी हुं बाद्या हुनो, सुनी सुन सनमंग मार्। इयाना आक्यो आंदलमां, यन गमनं न बाय कार्र ॥४॥ योष मरी पाणी सांख्यं, अञ्चलकरिका अधवां। भेई करेल आये वहि, क्रांति मुझयुच्य बार्य सम्मां ॥५॥ पत्नी महास्थ्य देशाही संदि-हर्ने, उपरावे हर पंचरा घर्षे । ह्यारे संमार धुर्वीने हां कथाणा, क्यारे रहाँ एनं ए कुर्जु ॥६॥ जाक्तं ब्याहां किहा लाबी बरहा, बरहां जिला तथा गाममां । लागा जहार बाली अध्यानची, कर द्वाची ओको साममां ॥ आ एव बोले जानागीया, इतिसेवामां सदा लोई। विषय पानव एका बहनं, सुख रखे ओमा कोई ५८॥ करने ॥१४॥

वजी दिम्प कहे हे देनी पुष्प भागोजी, यह तुने के बाजायां जनगरोत्री। नव यह जमना मर्चे सागोती, एको वपदेश सुने लेका व मार्गाजी । १ । सब - सारयो वृद्धि सबमवा एतो. उपदेश ने बारे जरे । जोको वहि के है जरमें, समग्री व रच्यो एवं संगे ॥२॥ पर्धी गोनी काक्यों में मान्यन गुरू, जेने अपि अप पेना केरको । आणे अल्लेने रहे एकती, जेवा बजब नामनी एरही ॥॥ एवी का शिया की मेंने बक्यों, लेनी करण केय कहि सके। दारी रहिये प्रशासना, प्रश्ली शेक्टिये महेलके प्रशासनाम प्राथन जाममा प्रश्ली. रकानुक्रीता अ क्ष्यकाम । याचे व पाचे पहको दहि, नेतो तल बार व रक्ते प्राप्त ॥'- : सर्वे नियम मनसम्बद्धाः, रखे द पने पुरा बळी । के बार नेने कहा कोष है, कही कियी है बानो सपनी प्रधा कारे वची हची वेशिये, मापु सुंदर भारा मरचा। अन्तरी असाप-तानी, बन्नो कोण करे में परम्या ॥ ३० एवा कपटी हरिननो, श्रम ते सारी वहि । निष्कृतानंद वदी पारता, के बानी हती ले कही ।।८॥ कवर्त्त ।।३५॥

चवद शालातुं भोषीये सचावजी, चापे बरतेले जे राचना चा ह-जी 🖟 भागी संगारी वचननी बास्त्रजी, बडी जियां नियां बाय हाका बाधारी प्रदेश वर-राम बाधा पायले वृतिविक्त, प्रवेतां

والوالوالوالوا والماداء المتحادل والمتحادث والمتحادث المتحاد المتحاد المتحاول والمتحادث المتحادث

वननपी भरत्ये। जियां नियां जवे से जुनियां, एयं करे से जियाका-रणे ॥२॥ जा लोके परलोके खावद, जेनी जवे जिह जरा जेटली। अवसी जे संदाह रही से, पापी परमे से तेली ॥३॥ लाप से करकार सकतनी, अलकनो लिप से सेल जो। एमां लोकी कारी बी ला-अने, वजी हां समझालुं सेल'जो ॥४॥ व्याज वंजाई लाइने पहसा, जंने जेह आपना परे। ते मोरंपी म जाले जे सानवी, ते पापक वलुं घोना परे ॥४॥ वंद घोगनी ना'पल करे, तेने दायो के दिये ब बेलानो। पूका पलासी पुरीचे तजे, तेने होटो पुरल केलानो ॥६॥ लंटाची सर्वे लुगनां, पड़ी नागो पह भाग्यो घलो। पत्रुं कर्युं ए जनागिये, हवे हायो के मोळो गणो ॥७॥ समो न पाच्यो साववी, आधी तक्यां जन्दुं पत्रुं। निष्कुलानंद ए नरने, कोइ पाच पूर्वेतुं आधी तक्यां जन्दुं । निष्कुलानंद ए नरने, कोइ पाच पूर्वेतुं आधी तक्यां आदुं । निष्कुलानंद ए नरने, कोइ पाच पूर्वेतुं

वस्यन कामानी—नाव पूर्वनां बगटे बाजीने, त्यारे स्के ने अवस्तो क्यापरे ! करवानुं से होय ते न करे, व कर्षानुं काम करापरे; वाप॰ ॥१॥ सुक्तमांही ते सुक्त म सुझे, दुःल्वमांही दुःल न देलापरे । लो-टाने पन लवं करी माने, साचामां साचुं न लेलापरे; वाप॰ ॥२॥ ए से वचनधी नियत्ति विरमे, ते वचन विषसम लागरे । तेह वचन् वधी जाय जमगुरमां, तेह वचनने अनुरागरे; वाप॰ ॥३॥ एम इनु-दिने उंधुं सुझे अति, बळी मोटा राजे तां न रे'वापरे । नियक्तना-अंद ए नरनुं देकाणुं, जा लोके परलोके न के'वापरे; पाप॰ ॥४॥ पद् ॥१॥

हरिआज्ञाये विवृत्त बहुया वयोमजी, हरिआज्ञाये रथा श्रां-ये रिव सोमजी। हरिआज्ञाये रका मुक्त भोमजी, ने होये निहे आज्ञा पर बक्तोमजी।।१॥ वक् बक्तोम पर बक्ते निहे, रहे सहु-सहुना स्थानमां। अति वस्त्र पर पत्रमां, रचा राज्या त्यां गुलना-वमां।।२॥ अन्या राज्या सत्यक्षेत्रमां, जिबने राज्या कैलाम। विष्णुने राज्या बैद्धंडमां, एम आप्यो भुजनो निवास।।१॥ इंज्ञे राज्यो जमरावनी, दोवजीने राज्या पानास। ज्यांज्यां करी हरिये आग्रन्या, तियां रक्या सुले सदाकाळ॥४॥ वजीनसे राज्या क्यीनसे राज्या क्यीनसे

१ बुंगभी, १ सामग्री, १ मिन्न, ४ सामग्री

न्दर, निरामकृत्त राज्या निर्माशियां। गोपी गोप राज्या गोसोके, राज्या मुक्त जमर समीपमां ।(या एम जेम जेने राज्या पटे, नेम राज्या छ करी नपम । जेमो जोपे अधिकार जेने, नेमो आप्योछे अभिनाता ॥६॥ एमो रखाछे सह राजी वर्ष, पोन मोनाने स्थान । लेज बचन नवी भोपना, जाणी समर्थ भीनगवान ॥आ एम समसी आपणे, रहीए आप आपने स्थानके । निष्कुशानंद कर्ष निर्मा, आप कुन्य अधानके ॥८॥ कहतुं ॥३॥

वह दृःल पामे थर स्थान श्रष्टजी, जियांजियां जाय नियां पामे कराजी। स्थान लोई थायछे स्था वर स्वष्टजी, एवं धान पुराजे स्वर्णी सुस्पष्टजी ॥१॥ वन- सुरुष्ट शालो सुन्यी, स्था स्थान-श्रप्टभी जे लोट। इंड इंडासने नक रखो, त्यारे गयो कर्मज बन्नी ओट ॥१॥ जब असानुं भावनां, ताले लोकसांय करामणुं। स्थान श्रप्ट भोम व्योममां, थाय हेराच च्युंपणुं ॥३॥ वहुष वरेश निज-राज्य तजी, १व्यपे बंसवा इंड्रने आमने । इंडासननुं सुन्य अरब्युं वित्तं, स्थापे समस्त्रुरमां जो सुन्य । सुन्य म जव्युं दृःच पद्युं, व्यति तटक्यो वंचे सुन्य ॥५॥ न्यानश्रष्टनो सर्वे डेवाणं, अनि अ-वादर थायछे । इंग ने अन्य केश बरा, जरा बकारा के वायसे ॥६॥ एम समझ समझीने, रे चुं सनुसन्न न्यानमां । स्थान तजी-ने जे अविद्युं, ने अधिन मधुंछे उपानमां ॥ आ जेन योगानो पियु वश्वरी, कोइ कारी वाय स्थानवारणी। निष्कुत्वानंद ए नार वरमां, पुरुष्टुं वेट बाळणी ॥८॥ कद्युं ॥१८॥

कोइ के तो एम केम दैं ये जियां दुष्णशी, धीते जो जाये तो वासिये सुष्णजी। एम कहे थे पर इरिना विमुण्डानी, तेनी कहूं कि-यां भागरो भूषाजी।। एम सुष्य भागवा भने पणुं, जाणे कि-यांक अह धार्व सुष्मियो। पण दुष्म चाने दुका वन सामाने, ते जियां जाय नियां दुष्मियो॥ शा भाग्य एमां केटां रहे, सुष्य दुष्प-मां धेनतः। लेने नथी नपासतो, विमुण्य वन विचार॥ है। केम याने कोइक क्ष्माणिये, होये केटी स्यमनी विद्यांच। ते केदि महि यह कोथनी, मर करे देश विदेश ॥ अम चोर चान्यो वन्नी चोरिये, जाने आवीक नहीं कही नाट। एक जाननी वधी जाये जीवडो, जे सूळी हनीचे ललाट। (41) एक जर अवागियो, आगेचे बचननी जो बाल । परसुन पोनार्जा करवा, धाय जेम नाथ इराज ।) है।। एम विमुन्त नर विकळ धई, भटकेचे भवमांदि जिने। यन करेंचे सुन्त मस्रवा, पण अळनुं नथी सुन्त रिन ।। आ एम स्थानक अंग्र जे ध्या, तेनो गया मुळ्या मुळ्यी। विष्कुतारंद विश्वे जानजो, जेम कर्म सुक्तानुं फुल्यी ।। ८॥ कड्युं ॥ १९॥

हरिबाझामां रचा के सापजी, जाणी अभुनो मोटो प्रनापजी।
तेने तो सनाणुं पापिये पापजी, तारे सुन्य बाबा को रच्यो जयाक्जी ॥१॥ बाय-जवाय एनो जवतो मधी, के वर्नेष्ठ वयनधी
बार। देव जवेब रोपमां बळी, एने गणिये केनी इतर ॥१॥ वैची
सासुरी जीव जनमां, तेनो आणे हे सबू जन। वैची बरते वयनमां,
सासुरी व माने वयन ॥१॥ बीजा तो विका वसु रहे, ठोपे नहि
बयन लगार। जियां जेने राखिया, तियां रच्या करी निरघार ॥४॥
देखवेडी कोटविये, नधी अवराणा ओरविये। बांध्या नधी वीजे
बांधणे, बंधाणा हे वयन दौरविये॥६॥ तेने देखवा दृश्विया, लेखवा
सुविया विमुन्यने। एवा समझं सह मरजो, पावि पूर्व दृश्वने॥३॥
साकरटेटीथी सारां लागे, जान दखां हंदामणां। स्वाया बेशवे व्यात्मे
करी, त्यारे लागवे विवधी भुंडां चर्या ॥३॥ आखुं अंस जिसे
बक्ती, लइ आय निज घेर बाट्य। भिष्कृत्वानंद एवं वर करेछे,
सानेहे तेमां व्यात्म ॥८॥ कवायुं॥४०॥

वन्ता जामानी—जोटमां दोट देवी वहि देनी, करी नैये जरान्तरी जाटपरे। वृद्धि जाये न्येकी अहधान्यने, ज्यारे वाम्या राज्यने वाटपरे; लोट । ।१॥ शानगार सोनाना सजी वारीरे, संदिए वहि मुखे भंदी महारे। मुख देखे लेखे ते लजामणुं, एव बीद जोये जाणी जहारे; लोट ।।२॥ करिंथी उनरी नंशीयर चही, मोटी बात मुखे व के वापरे। काही कटियंट कोइ करे पताका, तेना वारीरनी द्योभा जायरे; लोट ।।३॥ वृत्स योनानो पनि परहरि परो, कोइ

त संबुध्य व क्षाणी कु साथेशी, च पहेरे हुं बच्छा, च प्रवास,

المالية للمالما منا مناه المالية المالية

**-१**६६ वाचलविद्याः । नीतः

116

नारी करे व्यक्तिभाररे । निष्कृत्वानंद के' आप जन नेनी, बळी कोचे य करे वनिचाररे: कोट ॥४॥ वट ॥१०॥

केन एक प्रयोग पूर्ण वेचारजी, तेन परणावी जातवी नारजी।
है जह बांधी वेटां घरचारजी, तेनां एक वित्ताये क्यों व्यक्तियाः
हजी ॥१॥ हण-व्यक्तियार करी चलकी गई, मांवर्षु जेटतुं जह
घर। तेने इंपाणी नह समझावचा, खातो बोली सामुं बळावर ॥६॥
कहे हां समझी जिल्लामण देवा, तुं आबी अति वाही पहें। जबर
विवा जोट खोंखंडे, एकी अकत केन उठी गई ॥३॥ सामु जनसो
होर गोलज, इज़देव बीजां वथी करियां। वजद गानि जाति जागो,
एनो एकज के नथी करियां ॥४॥ केरवलीमां केरवली परली, वाहलो
कर्मो एक वित्तायो। एने उपर जायह जावो, वहो केन करोछो
वर्मो ॥४॥ इंप्याचे करी जाय चनाची, वज वाहे नाजोडो वाहने।
कर्में एक वहो बीजाने, तो तरत बले तेनुं करा। अस क्षेत्रां तो
कर्म को, नेनी वधी नमने काह क्रम ॥५॥ एक अधानणी वचने, हाइ
धनि साची वहं। निरक्तमानद करे एवां वित्रायने, लाज ने वाहन
वही हुई ॥८॥ कर्मुं ॥४१॥

एव वेयपाँवी वह वनकेमीजी, जिल्ह व करवी वर्णां सेनीजी!

क्यों वरत्य करीते जो वेजिजी, व करवूं काव कोइ विषयने
क्योंजी ॥१॥ क्य—केमी निवसने काव व करवूं, वर होय लाग जो
कावते। तोच वस्त्वाविचे निह तंत्रा वनने, आलिये जवाको
कावतो ॥२॥ वारेवारे जावी धारमा, मानजो सहने सवाती वधी।
ते स्वस्तरच्या सुच्याचे, हारवी निह कहं हावधी ॥३॥ वारीर कवाच
वर स्वार्डुं, वाच दुक्षुक वर तन। वच व देवुं क्याचा वाकते, तेनी
राचवी झाडी जनन ॥४॥ जेस द्वारवीरने संवास यांदी, लागे
वर्षां पाव वर्डुं। वच ज्यामां सारचुं पुते अस्तुं, आची व जेबुं
वीड्रं सुद्धं वर्ष् ॥६॥ एम अन्य धयो अगवाननो, वच रक्यों ते देववोज दाम। इन्छ नजाम्युं में व केसरील, जे व्याचा वास्त्यों मुखे पास
॥३॥ परनी वोजीनो गोमो वयो, वक्यों काच जोडीने हन्तर। राज
दिवस शामी राचवा, जिल्ह कालेव रान्ते वर १०॥ वनो अन्य

जनवानने, कही राजी करी केथ वाके। जिल्ह्यानंद के नादार वर, कजी वारीरमा सुन्यने कके 0८0 कवर्ष १४९ ॥

वका वह वापणे धर्मना हीकारी, विचय सुन नारं है में मन शिकारी। नेने करी सान जान पहले क्षीणारी, नोप वन मानेने समागितिकारी ॥१॥ जान—क्षीणपणुं एनुं दिकियुं, नेनो नवी जार्युं हैते कहियुं। कापने जानेतां जारेश नजी, एवं हजी नयुंने वजी इत्युं॥शा वरी दिवे दिवेनसां, बनी मेन्युं अवद्यं मोनीयुं। ने जाने ने कांचे वर्षु वची, यस पुज समृतुं बोनीयुं हो। मोदूं मूजी हैई करतुं, वाल्नो वर कारपर वही। नोप योगा सरिवामां बोन्सी, बरवेंचे भूत्वा सुम्मी ॥४॥ सुंदाबी बसुंबी सुनवी, पंते ने पांचे मनीयस वर्णा। से देवादेंचे देवोदेवामां, के जे जोने सुना कांच् के समा ॥६॥ एवं सेनी दीन सनसंगती, वजी है के कुनंबी शिक्षां। द्वित्रवान नजी कह्यो देवमां, नोप कुन्यो परेने विकास ॥६॥ वक्षे सक्ता चेका ध्वा, बंदेनसां बंदेन वजी। एवं विमुख विकुल मेना वह्या, करी हेन परस्व सन्ती ॥आ नेन नवमुलीने भोग जनमुलीमां, लाने कान्नवारी अजनममा। विश्वपृत्वानंब एवा वर्षामा, वर्षा क्रियोचे कोड़ क्ष्तामामा। विश्वपृत्वानंब

सकार तानवार व साथे लोकजी, वर काबी बहे कांकि वर कोकजी। सकार तानवार व साथे लोकजी, वर काबी बहे कांकि वर कोकजी। ११॥ श्रम—कोइनुं केन साथे बहु, वर्षु जेथे गोडल जेवलुं। तोम राजवा रोगीये केम, सूचे कावराचे मेरलुं ११॥ केम आवरचे भेंस पूछलि, जेस पवधी गज कालाविचे। केम लाभि कोजी बलाद लांचे, मेरे जीववाथी वा वाविचे ॥१॥ तेम आवने जोवी बलाद लांचे, करा कुर्मगयो जोम। तेमे साध्य की रहे वादीर लांदी, जेने वची कालाव रोग १४॥ जेम बंदमयोग वालावती, वशी वहि वगरवा आजा। तेम कुर्मगया करवेलयो, जालो वाचे वशी विवादास ॥४॥ केम अमोईनर कर जामची, लेती वही वशी कर लादची। वाराधी कर वहां वर्षु, ते विवादि जीचे वसी ॥६॥ तेम लगा कुर्मगर्ने पत्नो कवंदे, तेने वृद्ध वंधी आवी वसी। तेने सबबुं केम सुजाने,

<sup>1</sup> auffrei un. 2 unft.

+र्म गुचनविधिः । ऄ्रें}रे

[ मसर्चु ४५--४६

रानको केम मन्त्रत किरोमणि ॥आ जेम कोइ नाचे साझा सेरने, बळी करबी जिल्ला करका करे । जिल्लामध्येत् ए मरने, भर्यी जीव-बार्नु जाणो करे ॥८॥ करबुं ॥४४॥

पराण केति।—अहे सार शोधनां ने हां सकते, करनां कुलंगनो सम बद्धी। सुन्न त्वपने नहि आवं करीर नेरे, आवते हु:न्य अनीन सदी; सरे ।।१॥ जानी अगसम वन्धी शीराकणी, न्याप नांत्रे न्या केट सरी। एस कुलंगनो संग अंगमां उनकीर, केम रहे सनमांग नेले करी; सरे ।।१॥ जेस न्याप उनकी उनमुद्धी वावकी, नेले आपन वार्थि केस रहे। नेस क्यम विमुख्यां प्रश्नां आक्नारे, जे व के वार्य ने सर्वे कहे, सरे ।।१॥ एके आ नोक परनोक केप क्याहिया, क्य-राई गई न्यां आवी नेती। विष्कृत्वानंद कहे आक्ने अवसरेरे, पूक्ष करी वस पाक्यों केती; सरे ।।१॥ वह ॥११॥

वण वेते अवसर वलसे कामजी, राजी व वाय घीपनद्दयामजी?

तारे केम वासिये वरस पासजी, वल पासे वाय वहि सुन्त हामजी

||१|| तव—हास वधी कोइ हरवा, हरिआज्ञा विना अधुं जेटलूं।

ते जहस्ति वधी जालनों, कहि कहि कहिए केटलुं।।।।। वावें छे सेरनां झाहवां, करें छे असून कस्ति। आधा। ते आहने केस लेव रे'तो, जेथी वर असर पान्या नाचा।।३॥ वारी कुंबर नरनाथनों,

दिने वेसवा वायग्रे नैयार। तेन राजा राज केस लावजों, जाली

वोधि सुननों सारमार। ४॥ तेन भक्त पई भगवाननों, करे वलननी

जो वियान। वधी इच्छे सुन्य जावया, एवं केम बनग्रे वात ॥५॥

वहि वामे डेकालुं वरकमां, वीच करें पांचना पामनी। याम नहि

सक्ते पक्ता सक्तों, त्यारे एथडां आंच्य गुनामनी ॥६॥ जान जावद ते वान व माने, बर होय अनिवाय वेननी। समु केलां वसमु लागे,

तेने मुन्ने वहो वस रेननी। ॥॥ वारीर सुन्य बार्च सुधी वरने,

कत्यालमां वरने कामजे। नियहतानंद निरमाणी वरने, मधी

जात्यं प्रभुने पासके।।ऽ॥ कहातुं॥४॥।

त्रमुपाम बास करवा आचा जेशीजी, अनि मनि अवसी व जोये ' नेशीजी । जे सुव्यशीये बीच्य व लेबी केशीजी, बी गनि थाडी नपा-

ርላ እንደተመመመመው የሚመር ያመያቸው የሚያቸው የሚያቸው ያለቸው የሚያቸው ያለቸው እንደ ነገር እንደ ነው እንደ ነው የሚያቸው የሚያቸው ነው እንደ ነው እንደ ነው እንደ ነው

<sup>।</sup> सीरो. १ पनि.

सुर्ध नेनीजी ॥१॥ शक—नवासुं ए ह तन वने, की बाकी नायत वस्ती कित । अवनुं करवा के क्तावन्नों, अभी सक्तुं करवा भटा रित ॥२॥ करिता सुख कारणे, ततपर रहे है तैयार। इरिआकार्या क्षान्तां, का भागी वहें के बार ॥१॥ प्रमुखाकार्या क्यो कार्याः, वह कोववार्या कंन्से करी। वर्धी करी राम्यो वानो कोटियो, माधी वान वर्षे क्यो तकी ॥४॥ जेय होय कोई अति अमनी, आंकु पूर्व कोर वीतार। तेने वैसानकर क्यायतां, सह समझो के विया आर ॥४॥ तेम सनेक काम्य सांभववां, सर्वे तरकार्य कार्याः गर्थः। तेने अन्य सन्य क्युरेवाधी, कही अकान केम दन्ने ॥४॥ कार्या गोविंद्रनुं, जेना जीवसां जराये नथी। तेने आगे वानो वध-वेवानी, केट्नीक कहीए क्यी ॥आ धनमूनी केचे स्ती सुन्य थ्यरे, नथी केना वान वन्नी वांसक्ये। विष्कुलानंद निरम्हणी नरने, नथी जार्यु समुने वासक्ये ॥८॥ कर्ष्यु ॥४॥॥

प्रश्नास वास करवा विगयाति, वचन वादानां सर्वे मानवां सत्याति । सुच वृद्ध वक्षेत्र द्वारकी दिवस्थाति, मान अवमाने राजवी एक भागति । १॥ राज—मनि एक रिन वच करे, आवे कामाने कोरि कनेता । व्याकुल वहं विपक्तिमाही, नीपे नदि वचनने नेता ॥२॥ जेने सावित किथुंचे किया साटे, वरिमरणीयां वरी भटवा । यवा जनने ओहंने, वृदि नदि दिये वरण इतवा ॥३॥ वच देवजनिमानी दासनो, वाचि वात्रमने विद्यावास । जाणे चव केरेतां च्यमि नदि वर्षके, कांत्र क्यी वचनमां वास शता इरिक्चनमां पर्व वसमुं, तो लोकतां लेका सुने जदि । सुच्च सदा वदे वरिममां, एम कावित किथुं से सि ॥६॥ तेने वचनमां वरततां, वर्रवाणी करूच पर्व पत्र । अने लेखुंसे सुच्च आ सोकतुं, तथी लेखुं सुच्च भीदरित्रणुं ॥६॥ जेम वशुणानकी वरतुं वहा, नीली चार्यपर नजर से । पच्च काते करी कंत्र कावशे, तेनी लेने काच व्यवर से १ ॥३॥ तेम प्रदूषत वाधर नरने, विषयस्य वार्थ करी । निर्देशमानद निरम्मानी नरने, वृद्धमां सुच्च समाणे करी तथा करवा॥ दशा

वर्द्धा वयतहोदी प्रतिषंद् ती, यंव रिषयमारि शस्योष्टे जानद ती।

Martin and the first of the fir

१ मोको. १ स्ट्रीय.

वरतान देशये—तब के बुं वर'तुं के बानमने, ते बुं वा'तुं नयी बीतुं कांहें। वयमां रही तमे के तब करेरे, तेनो सुम्ब वामयो सवाई; तब ॥१॥ बारायम वयमपी विधिए, जादिर्दि ते तब जमूर। तेने करी रमापनि शिक्षियारे, आध्यो वर सारो सुम्कर; तब ॥१॥ बोनद्रीयमांही दुवि रहे, तिरम तुम्त के केएतुं बाम। अम राम विमा करे तब आकरेर, राजी करवा चतुं पमह्याम; तब ॥३॥ विश्व माने वहु सुनि रहे, हभेछे कोह देश दिव मान । सुम्ब सर्वे नजी वारीरमां, वां रका वालामां वेचान; तब ॥॥॥ यने म समसो कोह अनममानुं, तक्यों जेने वारीरमां सुन्य। वामरने वदीन म विग्रमां, के केह रक्षा वृद्धियी विम्रमः, तब शिवा म विग्रमां केते हारीरमां सुन्य। वामरने वदीन म विग्रमां, केह सुन्य करे, तेह सुन्य सर्वे जाजो सम्बन्ध। निष्कुतानंद एवं मय कारे. केली जाने काले काले श्रमां सुन्य। निष्कुतानंद एवं मय कारे. केली जाने वाचे व्याच अनुकः तब ॥६॥ वह ॥११॥

जंब शुन्न बसे, तेव सुन्न सर्वे जाजो समृत्व। निष्कुतानंद एवं नव करारे, केश्री आचे बुन्न अनुक्त; तप॰ ॥६॥ पर ॥१३॥ अलोग रोस रकाचे केशांजी, चीदने निपार रहोणो तेशांजी। अणुं एक भार नधी सुन्न एसांजी, बुन्नबुन्नक छे बुन्ननी सीमाजी ॥१॥ शक-शीमा छे सरवे बुन्ननी, वृति विमुन्ननो बसी संग ।

t ermit. I week.

शास्त्र प्रवासने मारगे, जाणुं जाहो प्रत्यों भोषंत ॥१॥ जेन शास्त्रों दिन आनंदनों, त्यां मुनो ओटंरो सुनरें । नेय जनमर आस्त्रों इतिकत्यानों, त्यां प्रह्मी जाणो प्रमृतरे ॥१॥ जेम भोजन बहु रहे जयाँ, क्यां जुकत्वे जमना जेह । नेमां नदी सुर मान्त्रियों, कहो केम समाय तेह ॥४॥ तेम सनुष्य देह जहा मांघामाहि, यसन बच्चां विमुख्यां । सुख्य म जाने आपने, एतो देवार छे दुःच्यां ॥४॥ हैल हामच हनुष्ट थया, जक्ष राक्षण भून पनित । ने सर्व विमुख्या संस्थी, वीजी कां जालको को। तित ॥६॥ जेनी वचनहोदीयी बात बचले, तेनी बचले वहि वेरी चकी । वेरी काने एक कंदने, आनो कोरि कंदे वथी नदी ॥आ एने सम एवां दुःच सके, खारे तेनां ने दुःच केवां कहिये । निरुद्धलानंद न कहिये वर्ष, एतो जनमां समसी स्विचे ॥८॥ क्यां ॥४९॥

विश्व ने वरी वाचे वैनावाती, क्षुण विशास वर्ण विशासकी।
वाक्षावाचे जानां रोकणे वरण स्थायकती। लारे सर्वे गुण्यतो समझे
नावाती ।१। तक—नान वक्षणे ने जाणको, वीवुं वर्ण वेशायते।
ने विशा वाक्ष विश्व वर्ण, क्यारे वरि लेगे विशायते।। १।। भून विन्न
नवे भोजन करवा, नथी विष्टा विशा वीतुं वजी। एवां सुन्य के
विश्ववाते, निवांके कालोधी सोवादी ॥३॥ क्योप वर्षायतं,
वस्त्वा के वायु जूनने। पार वार वजन क्षणरे, कर्षु रे वातुं कर्ष्य नने ॥४॥ साथ वाद निरज्ञ वंगो, वसको वसमा स्वानमां। अञ्चय अस वनार क्षणने, व्या तुर्णी रे वो व्यान समझां ॥४॥ एवां पुष्य भोगवाते, वचनहोत्ती विमुन्य जन जो। त्यं वधी वचारो पवनो, नेपार के मुक्तां तम जो।।४॥ वमणां नो जाने व्याव्या व्यार, विमुन्य वर्ष रक्षा वेगसाः। वस व्यापी घोटी कोल्यने, व्यारे प्रज्ञको वाचनी वक्षा ॥आ। भाज तो पर्युके भरपटुं, वर्णनी वाचाना वचनमां। निरश्रमानंत्र कर्षे वक्षी विमुन्यने, वाजे मुसवस्य वनमां ॥८॥ करव्यं।।५०॥

ने सार्व बरना रहे भी जब दिस्तानजी, रन्दे कीय बचन तोपी बाय बानजी। त्यारे तो जाजबू पणी बह पानजी, वर्षे केय रे में इरि रजीयानजी ॥१॥ बाज रजीयान केयरवेची वृदि, करीकरी ماما والماما والماما والماما

مامارها والواجاج الواجاء الماحاطان

विचारे वानने । सुन्य सर्वे परवारे पर्ता, आश्री जगजीवन कळीया-तन ॥२॥ वरि शाजी करवा वैदामां, मनसूची वह सनने । तन पन सुन्य सपन आती, राजी करे भगवायने ॥३॥ प्रसन्न करवा महा-प्रभुते, रहे नवमां बहुबहु नाव । बीजु जाये यर बगबी, लेनुं जराय व माने प्रवास (१४॥) सुन्य वर निरप्नेरमां, यर जाये समुखां सी : मर्खा । इरि कुराजिये काम न भावे, एवी विचारे वान वसी ॥६॥ बीजा राजी कुराजीय करी, बधी ब्याट्स वे ब्योटर बरी। बर्स्ट गमन् करवुं गोबिंदनुं, बीजानुं मुक्तवं परहरी ॥६। तेज समझु सन सामा, वर्त्ता तेज यह वृद्धियंत । तेज अनुर परबीण बाबर, जेणे राजी कर्या भगवंत ॥ आ करी लीधी एवं सर्व कमाणी, केव्ये व राव्युं करवं । निष्कुमानंद इरि राजिये, फरी व रखं पाएं करवं ॥८॥ कवार्य (%,१))

वचनविधि जा यंत्र है क्योजी, वनिवित्रुचने लागवी क्रुयोजी। जेने वे त्यों के कर महनी पूरोजी, नेनरे के वी जा कवि कारहरोजी ॥१॥ राज-कानुवाईमा ग्रंप कर्या, तमा बगोच्या विमुख्य अति । दीडा बु'विया विमुखने, खारे सनमुख की पाम्या गरि ॥२॥ एव कडी अभागिया, कोइ विमृत्यपणुं नजना अधी । वयनहोदीपणुं दर करी, हरि कोई अजना नथी ॥३॥ इरि अजदो जन हरिना, बानी मनमां मोटा सुव्यते । सदा रहेकं सनसंगमां, तरि बसे बास विमुत्तते । ४॥ विमुखधी रही बेगका, करी लेके पोनाना कामने । साचा संननी क्षीच नई, पामको प्रभुता पामने ॥५॥ जे पामने हाक सनकादिक, बन्धारोग्ने बारमचार । ले घामने पामचा, बामची सर्वे विकार ॥६॥ अवदय करवानुं एक छे, ने करी लेको कारज । छेद्री जिल्लामण सांभकी, नेमां कर महि राजे एक रज । आ पूरण सुनाने पामपा, एटलुं तो पारवं वर । निष्कुणानंद निश्व करी, ओहए आ बात जानवी जन्म ॥८॥ कष्टवं ॥५५॥

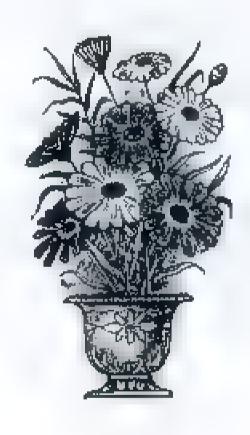
बर्गन पान-जरूर जानजो जन शीवमां, पामपूछ परम भानंदरे। जेरे आनंद आप नहि कथे, सदा सर्व सुन्दनु छ कंदरे; जकर ॥१॥ अच्छ अच्च एतुं नाम छे, अक्षर अनव अनुपरे। अं ए पाने ने

३ देवनाकां-

पाछी नव पहे, एवं छे ए सत्यखरूपरे; जहर ॥२॥ आवे नहि एके जिने छपमा, जहे नहि धीजी जेनी जोडरे । घोषमां न मळे संसा-रमां, जिलोके नहि तेनी नहीवहरे; जहर ॥१॥ महा मोदं सुख्य मानी मनमां, मोटा मोटा मुकी चाल्या राजरे । तेनो सुख मळके से'जमां, सतसंगमांही रे'तां आजरे; जहर ॥४॥ प्रण सुखने ज्यारे पामिणे, त्यारे मान्नी करवी जतनरे । सदाये रिविणे ए माच्यता, जेम रांक साच्ये रतनरे; जहर ॥५॥ गाफलपणे जो घणुं घरमां, जोतां जोतां यह जाये ज्यानरे । माटे ममादपणुं परहरि, सदाय रे'यं जो सावधानरे; जहर ॥६॥ छात्र अलक्ष्यने लह करी, बेठा कीए वेपरवाईरे । सामी सहजानंद सेवनां, कसर रही नथी काईरे; जहर० ॥७॥ सदा रे'यं मनमां मगन थई, केदिये न मानवुं कंगालरे । निष्कुलानंद कहे जीळकंड मळपे, ययां छीए निर्मय नियालरे; जहर० ॥८॥ पद ॥१३॥

रेश—आ ग्रंथ अति अनुषम छे, मुख देखाडवा दरपण। पण हमदी मुख जोइ हैंथे, लिये नहि छगारे ग्रण । १॥ देखी मुख दुःखियो धई, करे ग्रंथ मुक्तरपर रोष। जेम छे तेम देखाहियुं, ग्रंथ दर्पणनो चो दोष । २॥ इति भीनिष्डुखानन्दमुनिषिर्दिशो वचनविधिः समाप्तः।







आक्षासिनारायणे विवयदेवसम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत−

काव्यसङ्गहे

## सारसिद्धिः।

सम धन्नाधी—श्रीपुरुयोक्तम प्रसन्न करना काजजी, शुंशुं ओहर आ जीवने समाजजी। जेले करी रोझे श्रीमहाराजजी, पहुं शोधी सार है छेवुं आजजी ॥१॥ बाब—कोथी सार सर्वे तणो, है छेवो लाम लालच्ये करी । आव्यो अवसर ओळली, राजी करवा मीहरि ।।२॥ अहिर राजीए सह राजी, राजी कर्या कोड तेनरीश। शेष दिनेका ने धाकि सरेका, बळी कर्या राजी अज ईवाँ ॥३॥ जेम राजेंद्रने राजी करता, तेनी प्रजापण राजी धई। तेम प्रमुने प्रसन्न करता, कही कमी तेने बाानी रई ॥४॥ जेम महारवनी मो रमां, अन्य शखुं छे अति घणुं। तेम इरि शंझवनां सह रोझ्या, न रहां केनुं कुराजीपणुं।।(4)। जेम अनंत उर्दे उने अंपरे, पण अर्क विना रहे अपेर। तेम हरिसेवा विना समझो, छे निरर्थक नहि फेर ॥६॥ जैम सोसो घून्य सार्रा करे. एण एक अंक न करे जो आगळे। ते सरवाळी शानो मेलदो, जे करेखे काळप कागळे एशा तेम एक हरिने परहरे, बीजी करे चतुराह कोट । तेलो माधाफर चाडे मारगे, जेम जेम चाडे तेम स्रोट ।।८।। माढे अन्य उपाय अखगा करी, राजी करिये वर्षे रमा-पति । नकी निवान न च्किये, समझी विचारी शुम मति ॥९॥ निमे एम निर्णय करी, सरी करी सहये बळी खोज । निष्कुलानंद तो पामिये, मनसानी महाराजपी मोज ॥१०॥ कवर्तु ॥१॥

१ वर्षः, १ प्रथमः, १ महारः १ ब्रॉक्टः ५ ताराजीः, ६ माधानः

प्रभा प्रस्ता करें वा करें के उपायती, मुजबा मुजबा जा जग मांप-को । जेवी रूपि जबनी जेवो अभिवायजी, ते पिना पीर्ड करे नहि कांपाती ॥१॥ शक-करे नवि बीर्स कोइ दिन, करे तेम मान्यूं जैस सन । भति व पो ती बैगाय विना, वल समझे आदरे साधन ॥ ।॥ कोड़ कड़े जये हरि रीज़ड़ो. कोड़ कड़े नये ननकाळ । कोड़ कड़े नर्ग तीर्वेशी, राजी पाके रीमद्यास ॥३॥ कोइ कहे जोग अब करना, बसक बादी बरमचा । कोइ कहे जन नियम राज्यतां, और रि बादी सुराम ॥४॥ कोत करे करवल लिये, सिवे कमक्ष्युजाथी काम । कोह कहे पा व नदी पहलां, राजी नाय श्रीदृदि इयाम ॥५॥ कोइ कहे दिमाखे हाड गासे, बार्क हाबामके देव। नो जकर राजी बाबी जीवन, एव बानभी तवी संदेश ॥६॥ कोइ कड़े धन जिया लागे, लागे घर करे बनवास । कोइ कहे नेप केवा बचारे, कोइ कहे करे उदास ॥आ कोइ कहे विगवर अस सल्ली, कोई कई कम इस जसपान । कोई कई पर वयम पीलां, केम राजी व याच जगवान ॥८॥ कोई को मुले मुल्य प्रक्रिये, रहाँये अजवाज जहाेनिया । कोइ कहे रंज अगनि नायी, राजी करीये जगदीया ॥"॥ एइ विना बनेक उपाये, राजी करवा इच्छे हे राम । निष्कुनानंद ए अन्त भना, एक बकी वर्षा निष्काम ।(१०)। करन्त्रं ॥१॥

कोरक रच्छे राज साज रिदिजी, कोरक रच्छे सुरपूर प्रसि-दिजी। कोरक रूच्छे शुक्ति चड विधिजी, एम सुन्य भाद सीए दोर दिपीजी॥१॥ गाड-- एम दोर सुन्यसाथ दिपी, किथि मोटा सुन्यती भाषा। अरूप सुन्यपी सन उनारी, नित्य देश व्येष्ठे दास ॥२॥ सहेके संकट वार्गरमां, कल यजना सांपिछे काल। जाण्युं रिज्ञवी जगवीत्राने, पार्च जनस वर ननकाल ॥१॥ तेशसाथ मावेके ननने, रेके सम्मा मोटी भाषा। कैथे राजी कर्य कृष्णने, कैथे पार्चु सुन्य विलास ॥४॥ अहोनिया एचे अनरे, वरतेके कर्न्यर विचार। संके सहे समुद्ध संकटना, नाचे पामनां नथी हैथे हार ॥१॥ सवा-सनिक नर एम सुन्यसाथ, जनि जनि कोचे उपाय। मोटव रूपछेले सनमां, तेष विना नम न नवाप ॥६॥ मनि जालहे जान्यी, करे प्रसुने अस्त्र। पानी साथे सुन्य कार्यरम्ं, एवा पन श्रद्धानी अर ॥१॥ निर्वा- सनिक विना नरने, समु मागर्ना शुक्ते नहि। जेम वांकाकरे वर्ष वांकाकरने, मान्युं काशिये करवन लहि ॥८॥ एम नाना विषय नाव्या नजरे, मोटा विषय मध्यम मन कर्षु। इसो असावय रोग अंगमां, वळी विद्रोवे कमल कर्षु॥५॥ तेने वर्ष ते पश्चिम वर्षु, हैपुं रह्मं नहि वळी हाथ। विष्कुलानद एवा वर असर, पाम वहि मोटी मीरांथ॥१०॥ कह्मं ॥३॥

जेय बनावने वांन्य बनाजी, तेने बसानां बस्तीए माने पति व-वजी। क्षत्र इस पूल व्याप निशादिनजी, अनि रसे सन्य पण व भावे भोजनजी ॥१॥ एक-भोजन तेने केम आवे, जेले लाघी कोठां करी मान्य । उपर माधी आंबली, तेले अंबाह गयाचे दांत ॥२॥ जेतरे विषयकोठांमां पूलि बळगी, अवंगमनकर काथी आंवली । तेने गोस लागो केम लागको, केम के के साकरने भर्ता ॥३॥ तेम भोगव्यां सुन्य जेणे मुसिनां, तेथी अधिक सुप्यां अयरेशनां । तेने वामका वामर कर, सर्वे दुःच इमेशर्या ॥४॥ जेम अधेल वीर्या अवास जासे, लोचे अनरे जाने अधिक पिउं। आयर् गुलपणुं हे नथी बेलनो, एवं अनिहो कृष्टिगएं इहुई ॥०॥ यांची उपाधिये पत्र नवी देकाणुं, चणी उपाधि केम न पुचनदी । सुकुं रच उत्तरे समर्थ मधी, तो केम उत्तरको रच प्रवादे बसे ॥६॥ आणे वेदी उंका अर्थ-थमां, शक्षे जक्ष पीने नरवा नर्जु । पण वह दूःच छे वार आवनां, ते थल तपासिये गर्ज ॥ आ आचा चन परदर्ता, ईये करनी वहि हुन्छास। आगज सुन्य के बु:म्य के, तेनी कारबी नवास ॥८॥ तेम विवय सुमनी बारे मामना, निमारी जोबी अन बान । केवबार सुन्य पा व्या बाध्या, लान्यों सेले लागी लाग ॥१॥ आहे बार ए मुकर्ता, व पुरूषी आणी आ पछ । निष्कुलानंद् कहे नाथनां, सेववां परणकः मक ||१ || फबर्ब ||४॥

वस्ताय ग्रामको — सहस्रमें बहे जानके व राज है। निर्मय वस्ता है नाथमी, सेवी अद्भाव संत्र । अवर उपाय अख्या करी, समझी सार सिद्धांत; निर्मय । ।।।। सूर्णा सुन्य को साटो सर्गा, प्रांद करोड़ी शोब । एमी उद्वरे कळ बळागी, ध्रव्यकी से टोक; निर्मय ।।।।।

१ अफ्रीयाः १ शहर

क्ष वकरणं विवय शंकमां, वर सुर आग्न क्षा । अधिक कृष्य क्षा । वची, रवि कावि। सुरेकः, विश्वेषः ॥३॥ आहे उन्नं विचारी अंतरे, वरी करकी कोक्य । विष्कुतानंद प्रमुक्त क्षी, क्यांच्यां आप क्षां रोकः, विश्वेषः ॥४॥ वर् ॥१॥

एनो केने संगद नदी वैराज्यती, केने क्षरी वाद्य नवसाय स्वान-जी। एक इरिचरणे होय अनुगतात्री, एवा तो कोइक सन सुना-शत्री ॥१॥ वण-संय लुकामी सरस महत्ती, क्षेत्रा जंतरमां मिर-वेद । सुनी सुन्य सर्वे लोकर्मा, जेर्न गयी पामन् शत लेह ॥ ॥ उत्ते विचारी जंगरमां, जोई सीयं जीवमां जवर । विचय साद सह बनामां, करेंग्रे सर जसूर 11311 बैरास्य विका क्यिय सम्बन्धे, नग्रंड व धार्च लाम । जोडी पाढे पिंड प्रचांबरी, एवा भी एक बैराम्य ॥४॥ बैरा-न्यवान विनमे नही, वाधिक शुचनी बाई । शुन्यमुक्तन सब स-मधी, शंप समाच व माने काई १८॥ के निर्वेश निषि नरते, तेने करी विषेष्ठे काम । तेलूं म भाग कहे कोहबी, हो तालुं बजामां नाम ॥६॥ तेम गर्क एक जिनामणि, यणी अर्जानन बस्तुने पर । तेम हाद वैराग्यक्रिरोमणि, नवी एवी बीर्ज कोइ वर ॥ आ सर्वे सुन्तनी संपत्ति, क्ती रही बैराम्पर्मात । मोटे भारचे को आची बच्चे, तो व रहे कसर कोइ ॥८॥ वैराज्यकानने कियम कानी, जे समस्या पार समार । केम लेम कोले कोए गांवेमां, एक बीसरी आचे और बा'र 828 देश-न्य विना तो बाल न बने, हाउ सार्च न केवाय श्रुष्ट । निरम्भानांत्र निरवेष विना, आदि जने मध्ये हुन्य ॥१०॥ कप्तर् ॥६॥

वैराग्य विना विधिनोक्षणी विधिनि, सुना स्वर्शनी एक्छा उर विधीनी। वैराग्य विना विनोक्षी प्रासिक्षिती, मोहिनीने बीट जोवा वक क्षेत्रीजी ॥१,। काच-लक सीची लक वय स्वासी, वैराग्य कोर्च् वनोर्चु वर्षु। इसा अर्थव आस्वदरवी, वल ए समे वर्षु तय रह्युं ॥१॥ बळी पुर्वेट वैराग्य वन्ती, साम्यां अध्य गयी वर्ष्य परमां। वैराग्य विना विद्युव विनाले, सर्द्र रहि सुन्वना अन्तां।।३॥ वैराग्य विना विश्वे व्याकुल वर्ष्, जई वरी गुरुनी वसनी। वैराग्य विना जुने विकारी, साथै वस्त से हां बनी ॥४॥ वैराग्य विना अने अधार्य, रहि

I meen gred unen. it der it beit in freg in wegen

नयुं जिसेने अपार । पानका विना पतनी करी, तेनो उर न जाव्यो विचार ॥१०॥ नारत पाराचार सौनिए, भूनी गया वैराम विना पता । एकनशूंगी अर्क्यको, धर पत्न वैराम्ये पान ॥६॥ गाँव अपा नमा भिये, पत्न पत्न वैराम्ये पताव्युं वेर । औरच प्रस्न निर्मूच कर्युं, तेनी पत्ने आपी निर्म मेरे ॥३॥ वैराम्य विना विचकेतुं, परणीयो पत्नी-पोकोर । आपीज वयानि क्षेत्रे, पत्न वैराम्ये भागपी जोर ॥८॥ प्रसा आदि कीटपर्यन, पत्न वैराम्ये विकस पथा । जारे पीजार्युं तप पोल्युं, जे पश्चम पासर रखा ॥९॥ वैराम्य विना विचय सुन्ताने, जनरे म धाये अन्याच । विव्युत्तानंद निर्मेष विना, क्षेत्रे विषयमा पास ॥१०॥ कर्यु ॥६॥

को शुद्ध वैराज्य उपने अंगजी, तेने व नमे विषय सुमानो सं-गारी । अंगरे बदाबी रहे अर्थगारी, तेने विसे वहे इरिनो रंगजी ॥१॥ क्रम- चिले रेग जाये वडी, ते उतायी इनरे वहि । एवा दैराग्यवायने, पिंच प्रकादिनी गणती सदि ॥९॥ एवा शुद्ध दैराग्य-वाका शुक्रणी, अवज्ञानने एक जानिए । कर्रजनी एक कार्चु नहि, लगा वैराम्यवाम बचाजिए ॥१॥ देव कवि नरदेवती, वही लोट घोडी जोबीने । तेपी धनुष्यनी घोटच के ती, तन वने जोई नोबीने ॥४॥ पण बन्हादे परवक्षपी, मापिक सुच्च अब बालिएं। ब्रेना चन्त है है भरों, विकृते निजरास्य स्वामियं ॥६॥ गोपीचंद् वाजिंद् वोच्य अर्गू-हरि, सबका घरेज सबसूर समेच। जिन वैरान्यमा देन बच्चे, प्रका वहि सायाने केन ॥६॥ शाद कैराग्य कारीग्मां, सन्धानक जेने उपने । तेने प्रचारवंकी का भूमिनां सुन, यर कमरनां वय रजे ॥आ साचो वैसारय के सुन्वविधि, जो जावी जाये जन्मवर्ष । तो दशर कोइ वय रहे, ठिकोडिक वो वाचे स्थानके ॥८॥ भोडे आग्ये सन्व्यने, सके निर वेदक्रमणी निवि । रे वा व दीये रंडपण्, विचयस्थानुं कोचे विवि ॥॥ क्य देशको ए के बसमूं, देशक्यवानने असमूं वधी। तब करी राज्युके तूम लोखे, कहे विरद्धमानंद हां कहें कभी ॥१०॥ कहदे ॥आ

वैशायकानने कान वधी करक कई तो, में कोइ सुकर्ता मुकाय नई ती। एवी करनु आ प्रकार सहीती, से विना विनशामी व वाके रहीती

t teb.

॥१॥ वाक रही न काके एतुं जे कहुं, अर्था श्रद्धांदमां आखे नहि । महासुन्य भूकी महाराजनुं, बीजे सुन्ये सन बाजे वहि ॥२॥ सर्वे लोकनी संपत्ति, पापरूप जाजी वेले बहि । मूर्ति मुकी बहाराजनी, बीतं दुःल जाणी देलं वहि ॥३। घोटा नाना मापिक सुलमां, पना पराधीन परवदा है। सर्ग स्थ्यु पानाख पर्यन, तेमां कोण कम कोण सरस है ॥४॥ जैस अग्निज्यासपी उंचा नीचा, लोहकदामाँ कण उछके। एक पंच विषयमां पत्ना धाणी, जाना मोटा सह बळे ॥४॥ वैराम्पवान जन एवं विकोकी, मुक्ति विवय सम्बनी बाट । मने बने नपातिने, पणी बान बेसारीडे पाट ॥६॥ अर्ड कर्ष् एव लोकीने, क्य बैरारचे क्यासाड । रुट्टं जाणिने व रोपीए, वर आंगणे गरसंतुं साह ॥ आ एम एक अभूने परवृति, जन जेजे करेके उपाय । तेमां सर्वे रीते संकट हे, मानि हेजो जन मनमांच ॥८॥ एक वज वैसार्य बरनाय बहि, अने वर्ने ते वैराग्यवान । माटे असल समाधी अन उतारी, भजेने से भगवान ॥९॥ हाड वैरास्प्यान साचा, अन्त मसुना भणिये । निष्कुलानंद कर्दे ते बिना, बिजा सर्वे स्वार्थि गणिये गरेना करके गटा

च्यान समयी—शुद्ध वैशारपे करी सेविये, येमे प्रमुता पाय । मा-पिक सुन्त न नामिये, मोहे करी ननमांगः शुद्धः ॥१॥ निष्कामी जनती नापने, सारी लागेछे सेन। जे मोक्षजादि नपी मागना, नपी नजना ते देव; शुद्ध ।। ।। सकाव भक्तनी भीहरि, पूजा परहरे पूर । आणे मापिक सुन्य मागशे, जरबुद्धि जरुर; शुद्ध+ शशा शुद्ध वेरास्य विना समझो, नर मो पे निराश । निष्कुलानव निष्कामधी, रिझे श्रीअविनादा; शुद्ध∙ ॥४॥ पद् ॥२॥

वैराग्यवानमुं वर्त हं बलाणुंजी, जेने मापिक सुन्व सी सरस्तुं जना-मंत्री । लोकालांके जेनुं मन न लोकामुंत्री, एक परिवरणे टांक सन ठेराणुंजी ॥१॥ शब—ठेराणुं विश इस्चिरणे, तेणे करी करायुक्त साम छे । साम मरसुं सरस्युं धयु, जेने उर अति बैरास्य हे ॥२॥ सानां न धाये नरम्बरो, जेवं अस अहे तेवं अमें। सुई लावं स्वाद निरस्वाद, नाइने दिन निर्मामें ।(३॥ अन्न दन कल कुल जमी, सराये अने स्हे

والمستعدد الرابي وبراد المشاهلين في المراجع المشاهلين المراجع المراجع

सुनी । वैशास्य जेने उर उपजे, ते सह बाने रहे इन्ही ॥४॥ फार्चा नुका। विकि विभीषी, पका बीरामी कंचा करे। शीन उपन निका-रवा सार्क, एकी असे ओहर करे हरना सुवा व बावि साधरी, सुवर शंबाकी जाग्य । सम विषय सम समझे, देने अवस्थाने से जान ॥६॥ राम विषम प्रवयानियं, रह रे'के प्रतिने ध्यान । तेमे करी नपी जावनं, जन्मार अमे जिल्लान ॥ ।। कोइक नंदे कोइक वरे, कोइ नापे जाने लाना अस । क्षेत्र एव नवर गोचर शाने, होय सदा राजी रहे मन ॥८॥ एकी वैरास्य विजानी विकली, कही कोच सहि कके करीर। केच किये वैराज्यने, जाणी केम बराये चीर ॥९॥ वारिवारि जाउ च वैशापने, जेले जगमून कृत्व जाएएं सही । निष्कुनानंह निरवेद जैवे. बीर्ड होय तो देलाही कही ॥१०॥ कहवूँ ॥९॥

बळी बैराज्यचंत्रने जाउ बारकेजी, तमसम्ब स्वारमां हरि राजी कर्यां कारकेजी । देवपर्यंत रचा एक पारकेजी, अवंता समना काही जेके कारकेती ॥१॥ कड-कारके बादी जेके देवच्छि, सूची कानने समक्या सही। आपे मनार्च जानमा, कर्म कलेवर है केदि नहि ॥२॥ जब बैनन्य जायमां जजनां, बैनम्य जाये बोक्स कर्ये । तेव विना जिमुणे रचिन, तेपरथी धन उनम् ॥३॥ तेष देशे प्रदेश पर-वरे. करे घर वरनं काल । भाग्ये क्या भाग्ये नवि. से हं शक्ति जानया राम ॥४॥ जेस बोनवोनानी जल्बने, जन जार्गहे मनमांच । ते सर्ना बेटा जामना, मुख्येयम बीलं व मकाय ॥५॥ वारी वर वपुसक्त्यनं, वसी विसरे वहि कोइ विश्व । तेम आनमा क्य जावरे आवर्ष, बग-रपर्ण प्रसिद्ध ॥६॥ व्यक्ति विमानि वि विशासकी, ते राजी युक्त रक्षे नहि। राम दिनमती रामिये, सम्ब ते असम्बर्धा पक्षे पढि ॥आ सन्य नित्य एक निज अस्तमा, असन्य देशादिक आद । तेमां नानां भोरा केने कविये, जनो क्षत्रे सरमी देर लाउ १८॥ जम बैमारयवानने बरते, अम्बंद ल्यो विचार । केने बन्याले केने बगरेबे, देले आदिक सम्ब एक बार ॥<sup>७</sup>॥ पन्नांने भी बन्नांने पन्ती, विदेशे वैशास्यक्षणे । निष्कुलानंत तमसुख नजी, जे भजेके भगवनने ॥१०॥ कर्ण ॥१०॥

भगवंत भजदी वर निरमोई ही, जेने हरि विना वालि करी

कोईंगी। जर्मंद रखाडे एक इतिने जोईंगी, एवा जन जेइ तेइ इरिया होईंगी ॥१॥ क= इरिया जब तेने जानिये, जे इति मनिये इम्मन रचा । विवेकी रच वैराग्यवको, आजता बजान थया ॥१॥ जनम के पण वधी सुजना, रंग के पण न देखे कर । त्यूपा के रूप वची जालना, तीन उच्चमुं ते स्वक्त ॥३॥ जिहा है पय वधी आजना, पर रस जावानी रीन । चकी बचने करी नथी बहना, जे काजी बाजी अभित्य ॥४॥ पण के पण नथी बातना, का के पण न करे काम । वासर के राज वादी श्रंपना, सह जाजमी राज्यकि आराम ॥६॥ जन पुदि चित्र जर्दकार के, ते अंतः वरण के वाच । अति धरांके बाकस्, क्रमन नारण जांच ॥६॥ दैरान्ये निवि वर्तियरे वासीने । समेरीने सर्वे कांचवी । ते राजी इरिया कपमां. ते जकी बीजे जानि वदी #आ जे परवरी गहती पदार्थेकां, पूरित वा ते विवयाकार । ते वासी वासी आणी अंतरे, तेते निरवेदधी निर्धार ॥८॥ निर्वेद विना सेद पाये, जंतर ने निरंतर वा'र, देव अर्देष ने कवि राजवी, पद्म पक्षण ने नर नार ।९॥ एक वैरास्य बीजि वजमणि, तेने तपाची व वाके कोई नाव । निष्कृतानंत वीतक सदा, वैराग्य बजामी आप ॥१०॥ कवर्व ॥११॥

वैराग्यवंतने वसंत सुकारी, जेनी भागियह सर्वे सुकारी। कोइ वातनुं रखं नहीं दुःकारी, सन्ताचे रखाके हरि सनमुकारी ॥१॥ का—हरि सनमुक्त रहे सदा, जेने जापना अवागी करी। साजी न राजी वारीरहां, जया जांनमना माना नरी ॥१॥ जेम करोरती हरि वंत्र सुकी, अकवर वेले वहि। तेम वैराग्यवाननी वरित, हरिमूर्ति विना देले नहि ॥१॥ जेम जमनुं क्षणे जसभा रहे, वा रे निसरता वसे चतुं। तेस वैराग्यवाननी वरित, हरि विना सुक्त न वाने कानुं ॥४॥ जेम अनस रहे आकाममां, तेने ओम्पे आप्ये भारे हुःच के। वीद आपे ते जबनिये, जेने शुन्ये रे कामांहि सुक्त के ॥१॥ तेम वैराग्यवाननी वरित, हरिमूर्तिमांह रहे वसी। तेने देवमां जावे दुःच उत्तरे, जे बातममां हही विकसी ॥६॥ जेम क्यांवानती, तेने वहनी

वापरण्य ॥ अ। तेम इरिजननी वृत्तिने, जोइए पूरण परिश्वनापणुं । महा सुन्नमप सृति महाराजनी, ते माहि गरक रे'युं पणुं ॥ ८॥ पण बांधि अलीषु दिपे दुवकी, ते निसरे वा'रो जीरपी, क्षेम वरिष्-तिमां ब्रुवां, न्येष् शांदवो वार्रास्थी ॥ ९॥ एटला मादे जरूर जोइए, बरने ते निरपेद । निष्कुलानद कई ते विना, मरे निर्दे भनने लेड ॥ १०॥ कडवुं ॥ १९॥

परमण धमणी—वा'लिनिधि तो बैराग्य छे, जन जाणो जरर । ते बिना सर्च तपासीयुं, राजे इरिधी तूर; बालि गरे॥ जनेक एण होय जो अंगमां, पण एक म होय बैराग्य । तो तनजनिमान टजें महि, पाळपा पय पाह नागः; बालि ॥ ॥ कुरकेंट फलने जले कती, । मक्ष बांधेधी जाय । तम बैराग्य औषधि बलाणियं, पिनां रोग पक्षायः, बालि ॥ ॥ मोलोकिनोजि सर्व करी, बलाणीये बैराग्य। निष्कु-छानंद जेने उपाणो, तेनां जागीयां भाग्यः, बालि ॥ ४॥ पद ॥ १॥

लीजवैरास्यनी धार छे निन्धीजी, नधी के बार्नु ए वाननं वीर रचीजी।। हाळज कंपणे दिश एनी केचीजी, सोटप एनी नधी जाति सेवीजी।। है। कल अंगे ए वारता, वरोबर के तां बेसे विदे । एस पण जेना पंचामी ए वारें, रेट निरंतर ने राम । जनर पंचा पनरी, समरें छे संदर इपास ॥ ३॥ पस्ती वन सुपनर्नु, धीतर रचे नधी भान । वि-सरी वाले वात बीजी, रे तो स्निमां सुलनाम । दश वर्ण आभम जातनुं, नधी जाणक हुं जराप । नाम रूप रंध भूग, नधी मनातुं जनमांग शाम कवि कोनित पंदितपणुं, गरठनां पण परठाप नहि । ते तीब वैराय्ये आमर्थु छोजी, एक इरिम् निमां रहि ॥ इस वाण पृद्धि वे हार्या निचा, शास्त्रा भोगानुं नथी वक्षे । इसिम् विमां पृत्ति वळारी, तेले जिससी मर्थु पर्व ॥ आ जेम वहे उसे काम अपने, तेले स्माजाकार आन्दे नहि । ते सुमाशुन सन्द पर छे, अपन्य सन्य कोइ काले नहि ॥ ८॥ जे परनुताए यस्तु नथी, ते परनुते केथी के क्षे वाण । एम तीब वैराय्यवानने, एम में जे परतें स्वराय ॥ १॥ तीब

مالمالي المساور والمرام المرام المرامية والمرامية والمساومة والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية والمساومة

१ समरी १ मियंगीना गान.

वैराज्य तेने करीत, जानगुण कोषामां वर्षा आषतुं । निष्कुलानंत् वाधमूर्ति विना, वीतुं मूल्येयक वर्षा आवर्तु ॥१०॥ करतुं ॥१३॥

र्वात वैरारप के सुभवी सीमाओ, अति बावंद रक्षोंके नेमांजी। आर्यु एकभार मधी इंच्य एमांजी, तेलो तेह जाने जब प्रमत्त्रीचे जेमांजी ॥१॥ स=-जेने बगठ्यों ने जब जाने, बीजा हां बन्दाने काणिये। वण दीडे करे बारता, ते दूरी केंग प्रमाणिये ॥२॥ यण जेना पंचामां बगव्यो, तीच्ये तीव वैरास्य । संदना अंगवांदि अ-जानो, रे'वा ते व दिये भाग ॥६॥ जेल कंवनने कंदन करती, तेने जानजो जोवे ताच। तेव तीव वैशायना नायथी, शुद्ध वाये अनर आप RVII विकामयकार्णि औषधियके, प्राम्य विसार आये शारिरथी । तेम तीम वैराग्य लेगे करी, आये विषयशान्य अधिरथी है 🎮 जेम सुरा जारने करवे करी। गांजी गजिन निमरे वार। नेम 🖯 नीम वैराम्पना चेगपी, रहे बहि विषय विकार ॥६॥ सुन्त बुन्ननां कारण पारिते, काणुंकाणुंग व्यवदे व्यता । ते तीव वैरात्यना वेग विना, पदमांशी न पापे पर्ता॥ अ सुनी वेडां पाननां, प्राप्त मुस्य सणका करे। ने वृषन वैराग्य विना, क्रोयंथी पण नव निसरे ॥८॥ वा'रना दरद्ती भौवभि, काछ चानुनी के'वायछे। वन तीव बैरारण दाजि, अंतर पुल्त काँचे जागर्छ ! ॥९॥ तील बैरारण तन मनने, को भिने करें है है । निष्क्रमानंद ए सम्बन्धि है, एम के है संत सबुद्ध ॥ १० ॥ बहवं ॥१४॥

मृत्य वैगारणनी पान से मोटीजी, ने विमास वें समज्ञ कोटीजी।
परिद्र मरीये एमां चिर कुटीजी, ना'र हैया नी आंध्य केम फुटीजी
(११) गळ—ए दि आंभय अंतरनी, ने सुन्य मुख्य सुन्ने महि। वैरान्य
विभा पान सुधि, बुनायनी पुने महि । शा बुन्न वैरास्य विभा
कोण, वेटो ठाउका दरीय ! वैरास्य जाणी विम दिवा'मां, हाथोहान
कोण परित्र ॥३। अंग जुन्निये पनि पामया, जोपे की ते करना
मेळाप । तेम जनन जगरीया मळवा, बुन्न वैरास्य पेळवे आप
॥१॥ प्रथम पे ता काम पहे, बुरि परवा पुन्न वैरास्पन्नं। जले करी
विम् पामिय, बामीये मेणु द्वासन्तं। १०॥ पर वर्षा विमा पनिता,

<sup>·</sup> Die graf

कीय सुम्य व पासे सुंदरी। सीर्थे कथां सुम्य मोटांसीटां, पासे वैरात्रप्रवास करतां इति॥६॥ वर वरवा इच्छा करे, तो आवं जरीतो एवं। तैये जरूर वर एवं वरवो, एवं वातमां अभी सदेह ॥५॥ कोकस भीदि जेणे ए पुंत्रही, जर्मांच वरती संग। एवा जन जे जरतमां, तेनो रही तथों कहो रंग ॥८॥ प्रथम कथां एमा पाभवां, वृद्य वैरात्रपर्भा छे भो बहाइ। तेइ विना तोजि तथासुं, रहम ना हीतुं कहं क्यांइ ॥६॥ वारम्यार विचारी करी, भोटप वैरात्रपत्ती है सन्ती। निरम्हनानंद कहे तरने, नथी सुम्य कृत्य वैरात्रपत्ती है सन्ती। निरम्हनानंद कहे तरने, नथी सुम्य कृत्य

बुदन वैराश्य के बजपून्त परेणुंजी, सर्वधी सरम मदा शुन्नवे-चुंजी। वे'रतां उत्तरे माथेथी जब मे'लुंजी, ते वामिये दोष दूरण जो ले'गुंजी ॥१॥ शब-पूरण ले'ने ए शामिये, अंगे प्यूं जामूचण। ते को मार्ड मर्द रीनशू, क्यांड बसु तनश्चम ॥२॥ जेज को स्था आ जनमा, नेनो सर्वे ए परेने चतुं । पण शुक्र वैशारण विना सुर बरतुं, पाणी म रहुं मुलवर्तुं ।,३॥ वेरास्य विज्ञा था विश्वमां, जन्य कारभाग के जोश्या पणा । यण बेराको जन्म कर्ना हर्ना, लहस्या क्रक्तिको लजामका ॥४॥ शुद्ध बेराक्ये क्रोमा वजी, इरिजननी जाणी जरूर । बेरारण विका मार्ग बरबूं, एवण विवारणुं पर ॥ बेरारय-बान बा'ना हरिने, मार्चु जोईने भराये अनि । बण बेरारयबान विक्लोकिन, इरि राजी वधी याना र्राम ॥६॥ शुक्त भरम सनका-विक शोष्या, बृहत वैशाय घरेणे चतुं । जनक जनश्व कत्रजन् कट्, सुम्ब छ। ग्युं सोगामणुं ॥ आ जो मरो मो अंगे परतो, गुद्ध बेरारय रूप प्राणगार । तो इत करि इरि रीक्टरं, निश्च जाणी निर-थार दिया कोई मोमी प्राणमार मने शारीर, काछ शुंचना कथि-त्या । यण केणन विमा केम कहिंगे, ए क्रोमाइनारा वर्तारना ॥९॥ लेल साराजां मार गरेणुं, मुनर्ज कर विश्वापणि । जिल्कुलाजेंद् बृहत वैशास्यनी, मोरय वर्षा जाति गणी ॥१०॥ कव्युं ॥१६॥

वर्तान मनगर-सीत रैतारच लक्षीयको, नाचे सौस्मी साधन । व जब लच तीथे जोम जे, करे कोइ जन जननः, तीतक ॥१॥ दश्न पुण्य वाळे कोइ घर्षने, नाजे दिमाने लगे। प्रमु प्रमुख कर्षा भारते, वि जयमां वरेणे जन, तीत्र ॥२॥ वण वृहत बैरणण विना वाधना, यमु वाभवा काल । अवर बीजा प्रवासकी, राजी नो'ये सहाराज; तीय । १ ॥ वृहत बैराग्यथी नथी बेगस्स, अल्बेनो स्वद्य । निष्कृतादर नजीक है, बृहत बैराग्यने बहुय, तीवर हतां वर् ॥४॥

जेने का उपक्रमी कहन बैराम्यशी, नेनां उपक्रीयां स्था मोरां भाग्यती : नथी एवी लाज बीजी अखाशास्त्रकती, जे बकी सर्वे हे भहास्त्रभवां जा ग्यजी ॥१॥ कथ-बोटि जाग्य जहें अनने, लेली जाजाजो पहल बैराम्यवर्ष । ते विना तपासियं रण, पाल वधी बेसानी चान 🖅। तीव वैरास्य तो चचके, जो क्रया करे समझीचा । कांनी तेना जन मखे, वैशारपचान श्रुतीया ॥३॥ इतिकृषा विका होपे नहि, प्रामका कृत बैरास्य । कांनो कृति जन हरिना ससे. तो बात व रहे कथालाग्य ॥४॥ तेह विवा हृहत वैराग्यवी, आधा न रामशी पर । जेम पम बुंठे बरमानने, पकि नावे बढ़ीये पूर µ'।। जेम वर नारी विना म नियक्ते, बायक ने बीजी वेट । नेस कृतन दैरारण को क्याने, जो इसि इस्जिन करे मेर ॥६॥ जेम योच पुथानि के जिला, कहाँ कदि से अपने आगा। लग लीज वैसारक लो हराजे, जो अब हरि के हरिया जय मंत्रा में वितर तीय वैराज्यमी, नभी चपजपा चपाय। माटे इरि इरिजनने, संतीने बरवा सा'य ॥८॥ जेड धामना इच्छे कोइ मार्गान, तेने अणवर्ध न रे व अंग । हासना हाम था रही, रहिये बैरान्यभानन राग ॥ ॥ इत्य संनधी प संपत्ति, नृष्टन देराम्यमी मखे वस्ती । निरुष्टमानव नो नन सनना, विकार क्षवें आये हसी ॥१०॥ कहतूं ५१ आ

कृषत वैराग्य के जनुषम सनिजी, एक समान नथी कोई संप-भिजी। नेतो संग शांचे भाषे मापशिजी, तो तेने कछ रहे नहि रतिजी ॥१॥ कण-रति कछ सेने केम रष्ट्र, जेने थाय घोटानी मेंद्र। सप श्रीवरि मिंधुनी जेने, बन्धि गडी अभी लेंद्र॥२॥ जेम रत्नांकरमां रचन मोती, असून्य छे अनि धर्णा। पण नन मन अर्प्याचिना, केविये न भाष आपणां ॥१। चिंदुर्वारे घोंद नसेछे, बीजां पभ पह नाम। ते सुन्न शंकासा सह विशे, रस मोतीनुं न

<sup>2</sup> mil. 2 mil.

वृति माम १४॥ रम मोती बखे मोटी में तमे, क्य शेवते महानां वर्ती। मारं लक् कोए समझी, मेरपां दलारी मनपी १४॥ क्या हिर सामर के सुकता, नवी कोइ वानशी एमां लोट। तेमां निकाशी माने विरवेदने, सकाम माने मापासूचा बोट ॥६॥ निकाम विमा निरवेद निषि, क्यानी नवी रित्रमार। साकरपी क्या सारो बाउपो, जावा सोमस्त्रमार ॥॥ तंशो इत्त्रिमने जोवी वर्ता, पाकृत वानीनी तिन । सेववा अधिश्यवानने, सामके बैराग्य विसा ॥८॥ वैशाय कंतरेपी को उत्तरे, तो बोक्षा कारी रक्यां वृत्य । वाचे वाह से बर्जाई, रेवा व दिये सुव्य ॥९॥ मारे वालो बरी वर्ता वर्ता के बर्जाई, रेवा व दिये सुव्य ॥९॥ मारे वालो करी वर्ता वर्ता के साम के बर्जा है स्था वर्ता कारी साम के स

बुद्दम वैराप्तव विका अन वारभवारजी, गुजवा जुजवा जीव वरे जनतारजी । तेथ बाजव काजवर्मा बहुवारजी, जिसके व वाप नेजो निर्धारजी ॥१॥ सब-निर्धार व वाच निर्मने, श्रका निवा अवतार । वैराग्य विवा वयु वर्णानो, आच्छो नहि वकि चार ॥२॥ देखवार सत्वलोख पास्पी, केकबार पास्पी केवास । देखवार इंड-वस्त्री कान्यो, मोचे व शक्ति विषयशुम्य साला ॥६॥ केववार शुर-पुर वास्थो, विश्वचल्या विमान । कैकवार मूर्मा सुपनि वयो, कैक-बार बची पत्रकात ॥४॥ कैकबार सुर बानार भयो, कैकबार पुराणी वंकित । केवतार प्रशा वकारची, कही योगानी जिला ।(-)। केवतार गुणी गर्वेगो वर्गा, शामी ब्यामी कोविद ने कवि । वेकवार जान प्रवीच वयो, वयो अर्थ जाननतः भानुभवी प्रवत एव अनेकवार वामियो, मोमे क्योबे अवनारने । पण एक न वाम्यो देगायने, स्वारे हां वाच्यो जय सारवे ॥आ जेम मोटा बंदिन्या मोटनिया, प्रयाचे काण के कड़ी कोचना। स्वातां व शताये काश्वर कार्य, व कास्त पोळा जाको प्रथी भला ॥८॥ क्य एम् इच्छेडे सह संतरे, नथी इच्छना आववा वेरहम्पने । लेने दरीने जननां, मधी वयवनां भारे आरपने ॥९॥ यस सर्वे वातो तो सरी करी, वन बुहत वैरास्य आर्थ बद बच्ची। निष्क्रवानंद कहे ही वर्षा, शायमजे रको दे टीचे चच्ची ut+ ॥ कवर्द ॥१९॥

المائمانية في المائمانية والمائمة في الرائمة في المائمة والمائمة والمائمة والمائمة والمائمة والمائمة والمائمة

मर्वे भागनं कोची लीपं सारजी, बधी कोइ पूरन वैराग्यनी शारजी। अंतर विश्वारियुं वारमवारजी, शुद्ध वेराग्य तो सीने बारजी ॥१॥ सक-अद्भ देशस्य बार सहते, बधी एपी अधिक कोइ कामनुं कर्त्व, मांबी ओक्सनुं क्या कान्यान । है।। क्या कृतन वैरास्य विमार विना, बोडे ठेकाने सक्यो सही। यन तीका नीव वैरा-ग्यानी, बाल पुरी पुराणे क्य कही ॥४॥ बाक कार करिंक विवय जम्मनगी राज । सुन्य दुःच नेवां सुन्तनां, कही ह्यं सरियुं काज ॥६॥ जान्या जननमां एवी बानी, बरोघर वणी नवापछे । वज वर जमर निशाचर, बृहत वैराम्यने कोइ वा'पछे ! ॥॥ वैराम्य भागवो विकट हे, जेम बाजवो कडंजे शुक्त । जीववा व दिये जीवदी, वत । विश्वकृतानंत् ए जेने बगरे, तेने सर्वे चडी जाये सम ॥१०॥

वर्गा गरी—ल्हानं जानी न नगर वा मनेरे, र हा है—साय वहि जायेरे शुद्ध वैराग्यधीरे, श्लो कई वृहत वैराग्यमी वहारि । तीव वैराग्यरे तेवकं तमप्रारे, कसर रे का न दिये कांदि; सम्य ।।१॥ तीह वैराग्यरे तिली तरवार हो, जित्रों सजेन जाकरी धाररे । करतामां करेरे सरवे वेगदुरे, लेका व रे वा दिये संसाररे; सम्य ।।१॥ एक हिर विनारे करे वीतुं जळगुरे, तेनी घणी लागे नहि विज वाररे । एवो वसायरे अवर एके वधीरे, शुं कहिये वर्णवी एक्ट्री हाररे; सम्य ।।१॥ जित्रपोरे जागे एर जंगरेरे, जेने होये रूग्य पुन्यनो जोगरे । निष्कुलानंदरे कहे तेना प्रनम्परि, रे वा व दिये रित्रेये रोगरे; सम्य ।।४॥ वह ॥५॥

बृहत बेराम्य वर्णक्यो बहुविधिजी, अतिहाय मोटव एव्नी

किथिजी। यसु समझ करवा ए के बीलम निधिजी, सदा सुव्य-कारी ए जाओ प्रसिद्धिकी ॥१॥शब-वासद वसूने राजवा, एवी वधी विजी सीरांच। छरचे अंतराई अअनी करी, जाये इरिना बाबमां वाच ॥ २ ॥ जे इरि सिंधु सर्वे सुन्त्रा, तदा सर्वदा सुंदर इयाम । जेने वासी व रहे वामपुं, पामी प्रवाद पुरुषकाय ॥१॥ तेह मसुने बमारका; शुद्ध वैराग्य के बळाको बळी । तह वी'बाके वृदि इतुरमां, मुखोमुख दिये भेखवी ॥३॥ वर्णी ने इरिजनने जाणजी, विषय सर्वे विरम्यां। मळलां श्रीमहाराजने, हैहिब रूप्य सर्वे पान्यां ॥६॥ कमी व रही कोइ बानबी, शाम्या पूर्ण पुरशासम । सुंदर साकार गुरनि, अनि कराबी क्वी रूप ॥६॥ ने असुनी वासे दास, बास करीने रहे सदाय। बीतुं व हच्छे अंतरे, इच्छे जन्ति करका सममाप ॥आ जिल्ह विया भावे महि, भूल्येपण जिलर मोझार । सर्वे वकारे समझे, अस्टि सारमां सार ॥८॥ अकिए करी हरि रिक्षवे, रिक्के सुम्बद् श्रीमदाराज । लारे लामी रति वण अव रहे, वामे सर्वे सुचनो समाज ॥१॥ जावे भरी करे चयति, अति भारतंद भाषी पर । नियक्कतार्थंद तेनी पपरे, हरि राजी पापे कर । १०॥ कर्च । ११॥

वोष महाराजनी, एवं रीति समझो कियानी ॥८३ वोदे भारवे वेदे समति, वयद बसु वरमाजनी । तेद् विनानी वे भगति, तेतो वन समत्वा ताजनी ॥९॥ करिये शो करिये समझी, अवद प्रश्नुजीनी भगति । निष्कुलाबंद कहे ते विना, वची वर्ष कोइ धापति ॥१०॥ कशर्युं ॥२२॥

जिल इतिनी समुची अनि सारीजी, जनने परची ने नमर्पा विवारीजी । दिननी बान दैयामधि वारीजी, तब लोह रें बूं तरन तैयारीजी ॥१॥ वच-तैयार रे'बुं तक वचरे, असब करवा अगरने । शीन बच्न बरमाननुं, सही शरीरे संबदने ॥२॥ सेवा करना सेव-कने, पंत्रसम्य सामुं रेक्स्नुं नहि। सबे समाध सारे सेवना, ते विना सुन्य लेक्यु नहि ॥ ॥ लक्ष बानक लक्ष बावक, लक्षे वेरा-वर्षा जनर । तके भोजन न्यंजन करी, जनावना इयाब हुंदर हर॥ क्षत्रे चंद्रत करवर्षु, क्षम्रो जोद्र पे'त्रक्या शह । समे जानूक्य कंगमां, वे'राववां करीने च्यार ॥५॥ शबे वनारदी बारती, समे काची स्थानि कर जोच । सदा शीन आचीन रेपूं, केंचूं बक्तजो तुन्दा बनु कोच ॥६॥ सने बनुने बोहाहचा, समे नामनो पंचे रकत । समें करण जांत्रवां, एम करका ब्रह्म ब्रह्म हुआ समी कोई संबद्धने, तनपर दे'तुं नैयार । अन वर्त अपने दरी, वरवी सेवा करी वह व्यार ॥८॥ जे रांचे यने जेन भावने, तेन रांचे करतुं तेन। के न नमें जनदीयाने, अलगम्यु म धरतुं एवं ।।९॥ एवा वासि सुनर जन जे, ने को अनुने प्रमात । निम्दुलानंद को गायना, ए कहीए माचा संबद्ध जब ॥१०॥ दबई ॥२३॥

अकियां भार आरेखे बहुजी, केटथीब होरव हुने हुं बहुजी।

क्षेत्र विवास शुओ जन सबुजी, एवं घोरवने प्रवमा की वृथ्वी

क्षेत्र वन् प्रकटनी, कही वधी परोक्षणी बनी बना पानी प्रमु प्रमुटने, अंग लीजांचे घोटो लागे। मोटो छान प्रजि नयो, टक्तिनयो

पूरव दावा ॥३॥ वने नोने जिलोकमादी, नावे कोइ निर्वार।
सब समे सुख वाभियां, यसु प्रमुटना जजनार ॥४॥ जनर अविद अजवासियं बनी, वरोश अवर जज जमरेवा। जंबुं सुख गोपी कतुं २६] वर्ड वासिया निध का विवा प्रमा कर्या रव सोवाळ पामियां, तेवुं व वासिया । क्षिपतीए इरि राजी क्ष्य कवि रच्या परिताव लांचा ॥६॥ वाचु स्वत्या सर्वा विचा, रविष एवा मोटाने कोट । जाज कर्या वासिया, व्या विचा, रविष एवा मोटाने कोट । जाज कर्या वासीया, व्या विचा हिये दोत ॥००॥ त्राट विना के पांचळां, जाक करेते अवकाय । कर्या वादानां कुसका, कल विदे विसरे ते लांच ॥८॥ वरिकावीता का क्ष्मी गया, के वक्तां रच्यां वनरावळां ॥ श्री तृत्व स काय स्व व वाय, वल समस्रे चारे वनरावळां ॥१॥ व्यानी गया वाय स्व केस लागे कोट कमात्र । विष्कुतानंद वरोक्ष मक्ति, पिक्रमी ए पत्र ॥१०॥ वर्षो ॥१४॥ वर्षा वर्षे — वरोक्ष कर्या वामे मित्र वापिते, वीवसी करा संगे निह साकरे । प्रथा वयात्रीरे व्यानिते, वीवसी करा संगे निह साकरे । प्रथा वयात्रीरे व्यानिते, वीवसी करा संगे वहि साकरे । प्रथा वयात्रीरे व्यानिते, वीवसी करा संगे वहि साकरे । प्रथा वयात्रीरे व्यानिते, वीवसी करा संग वहिते से व्यानिते । वर्षो हे विवेश के स्व वारामेरे, को नदी जानता इरिजी रीतरे । वर्षे वे विवेश केम स वारामेरे, को नदी जानता इरिजी रीतरे । वर्षे वे विवेश केम स वारामेरे से वस्तेत वायतारे, तेले वर्षे विवेश म रहे वर्षो प्रथा प्रभा वर्षे वार्यो इरिजा सक्तेत्रती, के क्षत क्षत मन सुक्यां सक्तेत्रती ॥१॥ वर्षे वर्षो हिता सक्तेत्रती, के क्षत क्षत मन सुक्यां प्रमे प्रकीते काम कोई, वर्षो प्रशे वर्षे वर्षे वर्षो वर्षो वर्षो प्रवा स्व वर्षे वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो स्वती प्रभा कर्यो कर्यो तहि वर्षो । वर्षे वर्षो वर्षो वर्षो । वर्षे वर्षो वर्षो वर्षो । वर्षे वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो । वर्षे वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो । वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो । वर्षो शोबाळ पामियां, तेवं व वामिया निधि हैल । (६)। पगर अजि अवियतनी, परोक्ष अच्या कविराय । कवियतीए इरि राजी कर्या, कवि रका परिवाद लांच ॥६॥ बनु प्रगटना प्रसंग विका, श्वीगह एवा भोडाने सोट। जाज कासमा अजानिया, दश विमा दिये होत ॥ अ। जनर विना के पांचका, अन्तर करेड़े अपमांच । सरा कांबनां कुसका, कम महि निसरे ते बांच ।।८॥ इरिलाबीला साह क्रमी गया, केवे क्लारे रक्कारे कारावळा । जेवी मूच म जाय सुन्त व बाय, बज समझे बारेचे सबळा ॥९॥ वन्ती गया वृत्ति रखा, केल लागे कोट कमात्र । विष्क्रकामंद वरोक्ष सकिने, विक्रमी एड

करान गरवै-वरोधा अकारे वामे नहि बायितरे, जीवनी कराय अंचे नहि झाकरे। पूरण अपानीरे जनीति नव दशेरे, संदायकत रहे छदा काळरे; परोक्षण ॥१॥ सुक्तोन्सुकारे कळवा वधी मावजीरे. केवा हरि जाणी करतो ज्यानरे । कर जनुष्यरे केई हदे राजकोरे, क्षेत्रे क्रम दिवे छे अनुमानरे; परीक्ष+ ॥२॥ सम सम्यानीरे अंतरे जागन्यारे, पाकशे कई पेरे करी पीतरे। वर्त वे वि'मरे केम इड वारचोरे, जे नदी जानता इदिनी रीनरे; बरोस- ॥३॥ वश दीटे धानरे बदने हां बदबोरे, भवी आज्या दयातु दीता सांवरे । निष्क-कार्वदरे म मसंस माथमारे, तेले वर्व नि'म व रहे कांपरे: परोक्ष-

वर्ष दह राजदो हरिना अकेहजी, जे अब तन मन सुलमा न मनेतजी । मधिक सम्बंधी पाण पंजेलजी, तेइने प बात संधी है सब्देनजी ॥१॥ कर-सूची सबेक ए बात है, वर्ष वाखवी दर मने । वर्म सुकीने काम कोई, करतुं निव कोई बने ॥था वर्ने कोलदं वर्न दोलवं, पर्ने जोवं रहे करी। सुनां बेठा जागतां, पर्ने बेप रहे र परी ॥१॥ वर्षे इत्लबुं वर्षे वालबुं, वर्षे लेतुं ने बेयुं बजी। वर्षे रहेतुं वर्षे कहेतुं, धर्म तेवी पान सांमळी॥४॥ धर्म नावुं धर्मे शिहं, पर्म विना न परवा पाय। करे कर्यु काम पर्नेत्रं, पर्ने करवी तय निवास ॥ आ कर्ष काम वर्षे करवा, वर्षे मुक्ती व करतुं कांद्र । सर्वे काले एम समझी, रे कुं सदाय वर्ष बांह प्रशा वर्ष सुनीने कारज को वे. केटि म इच्छे

करना । करी पूर्वी वाचक जाते, ते रहि व दिये करना ॥ आ बेह-वर्षन कोलवं वहि, वर्ष वार्याके ने मायपी। रेक वेद व तजनी, सदा रे'बूं वृदि आजाएची ॥८॥ वर्ष थाय ने डीच हे, रविये जवर्म वदी अखगा। एवा कन पर इतिना, रहिये वर्धने बखना ॥९॥ सुख रू:चना समृद्यांदी, मुझाई धर्म मुख्यो वहि । निष्कुत्वावंद कहे निव करी, वार्यो धर्म ने चूक्यो वहि ॥१०॥ कर्यु ॥१५॥

वर्ष राज्ये तेव वर्धी कर वेजी, वर्ष विमा केने वीर्श व आवेजी। सुना केटा शुल वर्णना गावेजी। वर्ग किया की मूं बजरे माकेजी ॥१॥ गण-ना'वे बीर्ज कोइ मजरे, पर्व विमा पक्षि कोइ पन । पर्य न्यं जे चन वसे, ने जानी चनुं विचन प्रशा वर्ष नये चरर पान अले, वर्स गरे बले हान बाम । वर्म गरे लाव बाब अले, ने कार्यु सर्वे हराम ॥३॥ भर्वे नवे सुन्वसंपक्ति मने, वर्व सवे बाते राज नार । वर्ष वर्ष मोरच मधी, बळी बळि सह वह कार ॥४॥ वर्ष नपे बना मने, जासन ने पाइन बनी। वर्ष नपे सनमाद कते, दब जादि सर्वे जाजो बळी अवा वर्ष गये जो तम रहे, मरे लक्ष्ये रण जागर्नु । जीववानुं जानुं करीने, वृदि वासे जरवानुं जागर्नु BAN वर्ष गये सर्वे गयुं, गयुं शीर बळी शास्त्रज्ञां । बादे जुबी विज वयंने, व करते प्रका लजामध्ये ॥ आ वर्ष विना सर कत्तर नरमां, कर्वनां बार्डीसम सुन्त थयां । धर्व विका धरा बंबर नांडी, बोदव नाम केमां रचां ! ॥८० वर्ग विमार्ग विक जीवनुं, सब सामको जनमार्वे । देव इचित्रन देव जावियो, यन बाव व जावियो कार्व UN पर्मपामापर पर्मना सुन, रे'छ राजी रशियात । विष्कुतानंद वर्मेशननी, शूं कहिये वर्णनी वान ॥१०॥ कवर्तु ॥२६॥

भरम धर्म कहिये सारमां मारजी, संग नराये जेने बारमका-हजी। नधी कोइ आचतुं पर्मनी हारजी, वर्म ने चारी कहुं निरमा-रजी ॥१॥ क=--विश्वार सार योगी कई, वारी केओ वर्मनी रीत। जो वर्षे जवर्ष रखे, कई ते वर्ष करी दीन प्रशा वर्ष ने वर्ष-सुनमां बचन, तेषु वाधवां जीते बरी। अने जेब बरी जागन्या, ने फेरवची वहि करी ॥३॥ जायन्याची अधिक दीजो, वची जायहो वार्यामांय वर्त । तोबी तपाधी ओर्य तने बने, एक वर्ष के बक्कि वर्षे ॥ ता कानी गृती जन जेहने, वर्ग जेने ने लेम आगत्या । तेने ते तेम वर्गो, तय बरलयुं बचन विना ॥ त्या वक्तमां लेह परते, ते परमध्ये पास्त्रवाद । वचन विरोधी के बरते, ते सर्व धर्म टालकार ॥ १४ अविनाशानी जे आगत्या. ते समलयुं लूख पर्मने । वधी विचारि शास्त्रवी हनये । तो पर्धात स्वा परमंग ॥ ३०० वर्ण परभव वेद्विधिक वर्षे थायेणे परा परते । वे बार अभे विविध स्रते, पास्त्रेणे ते बहुपेरे ॥ ८॥ पण परम पर्म से बाताना वचन, ते कवा जेमे हृत्या करी । तेह विचा वीलां सर्थे, वर्श तृक्वां परपरी ॥ १ मोटो धर्म ए सामची, जेह कवां पर्मन पास । विष्कृतानद मुखा

वरम वर्षे करी इतिवे शसकुंती, शक्य कोहने वेदने दमयूंती। नेवार सुम्य पुष्प आपे ने व्यवपुत्री, गुली बीजी बाने केदि में अस-कृति ॥१॥ कल-अवर्ष वृद्धि भोकायने, वृद्धे आगण्याचे अनुमार। सर्वे वर्ज नेले साचव्या, विश्वे वरी निरवार प्रणा आगन्यामां वहण आहोतिका रही, जेल काछे लेल क्याचुं। तर्क व करको तने अने, काचाए रेकामा अकर्ष ॥१। जेल करे ने जनदीका जी ने, नेम करे ने कर आंधीने। केने व रहां नेने करण, वेटा परम वर्ग पानीन ॥४॥ बेस करे मी बेसपूर, उठा करे मी वहनूं बळी। बाल्य करे मी भाम हुं, शुन्नी बचनवे जाहुं मधी ॥५॥ बोम्प कई सी दोसहं, रहे मुक्त करे तो है में मुक्त । आगन्याधी प्रशांत बीजूं, जागबू नहि याय पुरुष ॥६॥ जेले बचनमा रे'वरन् इर वर्ग, लेले वर्ष यार्थाले सचना। नेह दिया दीजा पर्य लेनी वापनी बजबी चला संभ। सुद्र वर्ष भीमुखनी बाजी, कडीचे जेने कड़जा बरी। एवी रीने रे'चे नेय. जाजो शुद्ध वर्ष रचा परी ॥८॥ वर्षपर्य मह कोइ कहे, वज वर्धमा वह वर्ष है। बनर बसुनी वचन वासे, एथी होते की वर्ष है। ।। इति यह तम प्राच जोदी, योकम करवा छ विकमा । नियम-लागंद तेमां सम विचयने, पारतुं महि धर्मनी तिनमां ॥१०॥ करते ॥१८॥

रराज तररी—धर्म के भागरे सर्वे सुन्तरें, राज्यों जन करी जनवरें। धर्म बारीनेरे संत सुन्ति वयादे, वालवे वरत्या दरिने वन्तरे; वर्षः ॥१॥ वन्तर विज्ञारं योथं वधी वारतारे, वावता तथी वर्षधांदी वातरे । वीजा के वर्षरे केवां वोर वर्गावनारे, ताते अर्थुंभने वन तातरे; वर्षः ॥६॥ एवा वर्ष वन्तरे जानीये वर्षारे, वेबी के वन्धी वमारी वातरे । राजा कारिवृरे जनके सांसकपुरे, स्वानायं रूच्य वाच्या आज्ञातरे; वर्षः ॥३॥ शुद्ध साओ वर्षरे श्रीतृत्वे वाविकिरे, वक्षशी रक्षाकं वन्त्र वाहरे । निष्कुत्रातंदरे जानी तेथे वन्यारे, वर्षु व रहं तथे काहरे; वर्षः ॥४॥ वद् ॥आ

वर्ग राजे हे वर्गी के बाधजी, वर्ष विका सेने वस व दे वायजी। वर्ग जाता सुच सर्वे जायजी, धर्व रहेके रका जनमांयजी ॥१॥ 🗝 -- एवा सम्बर्ध वर्ष रहे. से बाइमच्य काले सहाराज्ये । सहा वीयो सेवाय केनी, क्यांची वाचे सर्वे किरनाजनं ॥२॥ वर अवर अधरेकाने अगल, अगम ईक जाने धर्ष । बक्ति प्रकशी करा रचा, क्यांची सकतुं चाच तेते कावर्तु ॥३॥ सर्वे बाक्या बासी ए सरशी, पति अर्थन ब्रचांच आचार । शर अक्षरमा आसमा, पूरण सकुने पार ॥३॥ सेव वस्तु प्रणय थह, माचे परिर्तु नरत्य । एका प्रमुखा, जायने, कहा क्यांची प्रजे प्रचय । ।।। बोहामांहा इच्छेडे बनमां, जायन्या साथ वरमांच। एका बनुनी जागन्या, सकवी मोंथी समूबे सदाय ॥५॥ तेष वृति कृषा करी के'ले, बली वा'सपनी बचन । ते बढ़वा व देवां इचनीए, धवां क्रिकि अपरची जन हजा कंच मोरफ्ती चिंचु कावनां, रलंभियेके रसे मरेनवां। नेवरे अपूर काय तर्वत, बाय क्टर्ना विद्वा देवचा ॥८३ तेम जावता क्यत वा'लान्जा, प्रश्नी क्रिये वर गरतं पई। ने पूरण वाबे प्राथित, करी केरवाजी रहे वह ॥९॥ सर्वे काम लेने सारित्, वक्ति वार्था भवें पर्न । विष्कुलावंद कहे वकी चयु, जेल जाएको साहलो सर्व ॥१०॥ कवर्त्तं ॥२९४

मर्थ मोरो व समझको मनजी, नेमां केर म वाक्यो कोई इनजी। कराने जासका क्षेत्र साधाने रतनजी, कर्यांचे सम्बद्धमां वक्तजी ॥१॥ सम—वक्तव व कड बालानगां, तेम दर्शन क्यांचे बोयलां। तेष सूर्ति हुस्रोस्युक्त बस्ती, सर्वे काम बहुतायां सोयलां

<sup>1</sup> Property

॥६॥ अंगोजंग अवलोकीने, मन्दरित्य जीवा नाच नारब्धा । ए रि वर मधी बामवं, एम गैयामां पारमं बरची ॥३॥ जे बारमां अप जम जानजो, वधी जावनं स्वाधीना स्वानमा । ले प्रभु प्रवर मकता, त्री कसर रही कहाँ शाममां ॥४॥ शामी तमे शशीय, जेने इतिसूर्तिनुं शाम छ । ते दिन। वकवाद बीज, ए अ(पान) मोई क्यान के ॥८॥ जेने नभी ओपा माधने, बजरीनजर स्थना भरेत। ले केवा कड़ेको करिक्रकाने, करकता ने धानुमाने करी (३॥ आन विवा कामी नहि, कान होय तेने कानी कहिये। सीयं सरध्य गधी इतिशी, तो केम सामको सामचो नैये एआ तेल जानी ते तक्तवेला. केंचे प्रगट प्रमुखे बेच्चीया। ने विज्ञा रको आबी गणी, केंचे हरि नपणे नपी हेलिया हिटा। अनेने आक्या न होय नायने, जनमने-से होच अवसंक्रिया । जुनो विचारी जीवमां, एमां ज्ञानी अज्ञानी केने कथा । १९॥ ज्ञानी ने जेने शस्य इरिनी, यम समझने पर सार हे, निरक्कतार्थेद कहे तेव विमा, वीर्त सर्वे आमार है । रेका कवर्ष ॥३०॥

सारमां भार बरिजी भूतिजी, तेथां जेने रान्दी मद विश्व वृद्धिः जी। इरि विना वीजे राज्य महि रिनिजी। ने सरा संत करिय महा-विनिजी । ११। सम्-महामिति ते सत लगा, तुथे अहि सहाराजनी शहति । अन्वेष राज्ये परविषे, आगी कमानी मोटी अनि ॥२॥ वर्ग हुने तो वर्ण जोड़ रहे, चिन्ह हुन तो ओइ रहे चिह्न । वस्त हुने तो तन्त ओह रहे, रहे गर्क सहाजने अस सीत ॥३॥ क्या पुटी वेतीन वेश्यि, लेखे जया जोड़ ने संग सुन्य। जार्नु दक्ते जोई रहे, जोनां है कदि मही आये पूरम्य ॥४॥ उद्दर नामीने निरम्ने, पेट छाती सुने हेमें करी। कंड जिलक कपोख जोड़, राज्ये इरिम्हर्ति आये भरी॥ ।। अवन नपण नाशिका जोंह, मृद्धि कानने भाषी रहे। जिस्से केला सुंदर देख, बलाजिल्य रूप जिल्लाकी रहे ॥६॥ एम आवंड एक करति, मूर्तिने सुकती कभी । जेस सरिता सागर सांह, सन्मूल वाटतां प्रती वधी ॥ अ अंगोअंग अवनोक्या विता, अणु अभावम् वक के महि । सांगोपांच सर्वे सुंदर, इरि हेपामां गया

रती ॥८॥ केल ज्ञानी केल व्यानी, अने क्षणंत्र रहेश एम पर। से ज्ञान बमुनी सृर्गत, हैं भी नभी अंतरबी हर॥९॥ एथी प्रवर्गन क्षण्य बीजा, ज्ञानी ने केले गणिये। निर्मुतानह ए ज्ञान ज्ञानी, बीजा असे अक्या ज्ञानी अस्तिय ॥१०॥ कहाई॥११॥

जानी लेव केने वरिनी गमधी, क्यी केने नामनी सुनि अग-मती। बणकिया निरमी करी से सुरासती, वा'वे काइ गया लंगनी समारी ॥१॥ वाच-सन समान ने हां कविये, जेने अव्यंत मूर्नि हे वर । ओइजोइ जोर्यू जीवमां, एती ओको व जवर्यू जबर ॥१॥ कामर्या कई की कल्यनर, कई वयशिष मिद्धिमिन । नारण कई के किनामिन, बद्धान बनी कई मिन ॥३॥ अर्कमिन के कर्तु । रूपानि, बची बचमा इक असूनवी । जेले कर्तु ने लोचे वर्षा. जार्ष रचना के जनशी ॥४॥ जेने अनरमां अनंब राज्या, अनंब-लोजी अविवास । राजी पहुने दृरि रखा, दोचे रहिन हेवी निज-क्षान ॥५॥ जेन वंशीयणी वर्ष रे'ना पाल, लोइए सोकवर्तु सुवर्त । एम इतिने हैं बानर्जु, बुद्ध जनर्जु अंग कर्ण ॥६॥ जेन समजीवसका जकते, जांको वधी रेल् जांका विना सभी। तेम इतिजनमुं अंतर, क्षत्र करिने क्षति ॥ आ अब खुन मा स्वीते अधिक जांच, रखा ईश्चेगांवि जेव इस । तेव इरिजनमांवि इरि, इसीमधी रचा एक रस ॥८॥ जेज चयक कत्तर मुख्यतो, रहे कत्तर दिवापर भूत्य । नेम इरि इरिजय सामा १ई, सदले जाच्या सुम्य १९॥ एम माना समनी समयुष्य, सन्तय रहेड श्रीष्टरि । विष्कुलानद् कहे श्रीषा कोचे, व ब्रोचे सुन्तिया ए सुन्ते करी ॥१०॥ करतु ॥३९॥

नतान नाथी—सुम्य संनदे है अंग साथा भोगवेह, साथाने नाथ के दिये कामरे ! जेम साओ जयेरे सुंदर सुम्बहिरे, मांदाने यम बहते आराधरे; सुम्य । !!।। मन्त्रनी वामरे संन्ति अम्बान छेरे, महिला देनी रहेछ १२१ । गोळतुं माहरे गिंगाने गमे नहिरे, जेने जीन परिभद्धे भरपुरते; सुम्य । ! ना सुमृद्दिश करिरे व यांच सुम्य गांधिरे, नक्यां केदि यह न यांचरे । यनुं अज्ञाहरे पुक्त भमे नहिर, कोचवाई गरेने कोमर माची; सुम्य हैं। एम संमानगंतनीरे

१ किंद्रम, प्रश्नुपर, १ काल. १ केंग्रेसी, प्रश्नामां, ६ मिक्क, प्रश्नेपती, ४ क्टेंस

जाजो दिव जुजदीरे, संग अजे तमे नेने असनरे । नियुक्तानंदरे भक्ती प बारमारे, समझी हेर्चु एवं सिद्धांनरे; सुन्तक ॥३॥ वद् ॥८॥

निर्दात बात संत साचे जाणीजी, सब कर्म बचने परी प्रमाः कीजी। सम्बद्ध्य समझीने दरमांचे आर्किजी। एवा संबनी कहे व्यांकीजी ॥१॥ सम--व्यांकी कहे एवा संदर्श, केने मापिक सुन थयां होता काम कोच लोज करवा थया, वर्ष विषय सुन्दर्भ वर शम्भ जन्मनां सुन्य ओईने, उंदे अंगरे वर्षाचे अञ्चनायनां । महा जाजी वधी रिझना, से अवन रज इंद्रायणी ॥१। में थारे काय थो हुं पुष्प के, चतुं लाथे पूष्प बाच वर्षु । जेव बीरोटी चुनानी चपटिये, सर्व मृत्यपु:न्य ने कियानर्थु ! ॥४॥ जेम कोले राज्य कोई सिंहरे, काळना कृष्ण पाप है। एवं अवसुष्पने भौगवना, कहा बोटो संनाय के हाना एवं वयुक्त करायामणं, इरि विना पीन् इराय। बुक्ति आदि नथी मानना, एवा सन के जिल्हाम ॥॥॥ वैराज्ये क्लि वामीन के, अस्ति आवे अपूर्व श्रीतर। वर्षमां क्ल रह मनि छे, से जानमुं एक यह 1,5॥ शुन तुम कै ये जे मनना । तेव आपी बन्यासे करमा । तेजे करी अब तबे भवे, सुवा बरनेते सुरमां ॥८॥ नेती रहे तम अनिमानी, शीहर वर नमना नथी। जोड़ समाय ए शीयमो, आधार रहेते रहती ॥९॥ मेर्झ यम संज-वनां ससे महि, से हुं भवतां पण व सकाय। निष्कृतानंद ते बोच्या रहे, लोचे लेवन न्याच ॥१०॥ कश्युं ॥६६॥

रांग असंत्री रीत जुलबीशी, भेळां व अखे जेम रात वे रिकिती। एम काँछे मह अनु ववीजी, विभे विभे वाल नेती कह वर्णवीजी ॥१। राज-वर्णवी लेजी यान कर्त्व, इरिदास अदाज दोइनी। रागी वागीजी रीन भेजी, असे नाइ दोइदोइनी ॥६॥ एक सुन इच्छे बारीरजाँ, एक व इच्छे सुन बारीरनुं । एक इच्छे निरम अक्षत्रे, एक व्याचा हवारे स्टिन्त्रे ॥३.१ वक् इच्छे पुराणुं वर वे'रवा, एक इच्छे अंबेर नवीन। एक इच्छे अनरे देवा उज्जा, एक रहे सने वर्तान ।। ता एक इच्छे भेवा सुन्य लोकना, एक सोकनुन्य ने लेका नहि । एक इच्छे बाधिक मोटपन, एक साधिक मोटपन देले

महि ।!'-।। एक इच्छे जग जानिन भाषा, कक इच्छे वाचा आतर्तु वर्ष । एक इच्छे बान वधारका, एक इच्छे निरमानीवर्ष ॥६॥ एक इच्छे छे प्रार्थ पामवर, एक बरना इच्छे छाता। एक इच्छे जनप सुन्दरे, एक वे भारत सुन्य हे आता एआ एक पूच्छे है 'वा सरेज्याता, एक इच्छे बस्तीमाडि थाम । एक इच्छे विवयसम्बद्धानामचा, एक ए सुन्वधी है बदास ((८)) एक जन्म अभन्तता जावने, जुदा जानको अहर । यक्ते व अलावुं भी बर्मा, एकते हे वूं इतिहा इतृत ग्रेशा एम दाना अशाम दोगने, अनु रेशामां आरे शेळ हैं। निष्कुणानंत नवी के बाजू, क्ल तपासे कृष्ण अनो क है शरेका करते ॥६४॥

जनोक्ष रोज रचा वेददर्शन सावजी, जे शत दिन गाय देव-सुन्दरी गाधती। तेह विया चान वधी आधी बीजी हासजी, ने केम करको असल मरमाचळी ॥१॥ सम-नाम समक केम करती. जेने सेवा करवीचे वारीरमी। नेने जावे नदि बीलं घॉनरे, सर बान होता सुम्बक्तिरती प्रश्य देवने अने दालको, राम विका करेडे रको । जराय न करे कीव करके, तेने वपनेत्रा आपको कियो ॥३॥ शरीर साथ भावती राजे, सर्वे सुवनको ने समात्र । वन जेत कई भीव जर्थे, नेजो नरन करी विधे नाज धरा। अब अवर संदर जोइ, सारां जानी राजे माचवी। काने जावको जान मारे, एम इच्छा परमां जिला नवी ॥ ।। तुष्या पश्तु पण लागी न पाके, लारे केम लागचे समर्थाधन । प खानी वनी से वेच लागीनो, नेनी परे की जनीन ॥६॥ नोज नजी न्यापंछ जासने, जुन नजी लायछे तेल । नेपण कोचल कलकी नण्, सुबी गंधे बुल्लाई भएक तथा लगा मुख वार्रधनां, तेवा बाद दिलायो मान । तेने क्या वैरास्पर्यन सम, केम करी रही क्रक माल ॥८॥ जनर किंगो भेजा नया, भाषाच अञ्चो अञ्चलो अञ्चलो । भ्रवर कमञ्चलाधी रक्षी, वियो गोपरवादे बळगी । 🖭 एक मन असन बेखा रहे, वन में ना 🕏 रकरूप थी। जिल्हा जार्बर कहा व नहीं छ। इ. के बराधी भी इर्र पानी तरें जा कवर्तु । ३५ता

कता नदी के बादूं कहतूं लगारीती, चोत्वा चोत्तुं चोकस

वॉलिया वाडीजी। साथे अवसरे जे वर्तेचे अनाडीजी, तेने दे ता करना रे'बार बाबीजी ॥१॥ कन बाबी रे'वाचे बरनां, सार्चु के'ला वचले कनेता। जेने आहे जाने तो कुलंग छे, छ समगंगना नो बसी लेका ॥भा जेम देनीय भर नारी बयो, वर्ण पर केर्नु जना-क्यों । लेने आयोधे से योधिना, ए बान बंध केस बेसकी ॥ ।। बेग-व्यक्षिय अक्तिकीय, अने पर्मेनो पर्मी सभी । सेने वानी लागनी, कीर करीने सरिये सभी ॥शा सामु के तो ओं को क्यांत्र, तेने के बुं ते करें करें । से जे में जे बाब सारचूं, एक बहु तो व बोतवू वज । अ केन सिंह समीचे वकती, ने बीनी बीनी बोक्टि गरें । नेम अनाहि नहने आगळे, केम बोलत्त् चन नके ॥६॥ जेन काळा सर्वेग कंडिया, ते बांबी राज्या पांचले । तेने प्रधारमां दुःच क्रमे, रूमे क्याक्ता भोकापने ॥आ जेम सावज्युं साधुरणुं, वर्षत हुने लिया समे । तेय समापु सायु धई, सायुने सेवाप उने ॥८॥ प्रथ वान ओसम्बरी, जिन हे बुं नहि आजाम । जेन व्याप होटे पंट आगते, पम सह सेपांचे प्राम ॥६॥ करी बान ए बांटी नथी, साची मानजो सर्वे सदी। निष्कृतार्वद कहे तथी कहे, अंतरमा रिष्या को ॥१०॥ कवर्ष ॥६६॥

वर्ग गोक—संत विता साथी कोच कहे, सारा सुमती वात । इया रहीके केता धनमां, अभी घरमां पान; संत । ॥१॥ केम जन-बीने हैंवे हेन से, सदा सुनने साथ । अरोगी करका कार्यक्रेंने, वाये करवेरा काय; संत । ॥२॥ केम जमती और भारे चरको, थम-रावा एकपनुं अंग । तेम संत क्या कर्यु कहे, आपना जापणो रंग; संत ॥३॥ जाको संत सना के समुना, जीव जहर आभ । विष्कु-नानंह निर्मय करे, आपे पत् तिरवाल, संत । ॥४॥ पद ॥९॥

तियांन पर्मा पो'नार सन्त्री, में कोइ दिन्या एपानु अर्थः नर्जा। जैने एक पर रक्षा अग्रवंत्रजी, नेणे करी सराप छ हा व पुळिबंत्रती ॥ या — हा स पुळिबाला भंत जह, तेर सहना सुन्याय छ । नवी पू'न य उपले, जे सुरुवंत सम के बाप छे । नव भेत विदेव यह परमारवी, परमारवी बांव में प्राची। पन पर्यन

ह सरकार करेगी व नहीं है है से अवस्थात के कार्य है है है से वित्र,

والمرازي والمرازي في المرازية والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة

वरमारपी, लेख वरमारपी शक्ता रिके प्रकार में प्रकार नद सुलहारि नेवची, कुल कर्य का बाला मंद्रों। वसी विश्व करे साराव है, लेख सर्व सकट संतपी रसे ॥ तम सब सब क्षेत्र करे, वसी कर नवमन वाम प्रवे हरे प्यान । लेख सन सुख सबूबे करे, वसी कर नवमन जान ॥ वाम मंद्रा वरमारपी अविषये, शाम पान पान आहें काम । लेम सन वरमारपी समग्रों, सर्वे वाणीना से सुखनाम ॥ तम करिया केव केव जीवारों से दिनी, जेम वर्ष करेसे बजाम । जम करिया करेसे कीनसना, लेम मन सबूबा सुखिवान ॥ आ अब वंग वृत्यमा वहार्थेथी, सर्वे सुखी रहेसे समार । लेम संत्र अन्तरिक सुखना, आणी लियो जबर कावनार ॥ देश सावा संतपी सिर वयां, केव जीवोनां काम । एवा संतपे सेक्या, अवसर जावियों से जान ॥ देश करे क्यांच तो जन जावजों, से क्षित्र क्यांनी वान । निय्युत्यान व्यक्ति करें, सुख वावानी ए साक्षाल ॥ देश कर्यं ॥ कर्यं ॥ क्रांच ॥

साक्षानकार केने मकिया है जाबीजी, वेशे करी अंतरवी बेहवा वामीजी। जागी शह कोट रही वहि बामीजी। तेनो त्रजु प्रकट समाजने चामीजी ॥१॥ क<del>= वामी तथु प्रगरने, जेने खोळ</del>च न रही अंग । बच्चकिया निक्याय है, अनु अकट ने असंग ॥६॥ श्री ह-रिया बाब्द सांध्यक्षवा, के एका एक वे काव । प्रगट ॥ हुनी स्वर्ध क्यों, के तेनी ते त्याचा निहान ॥३॥ जेले बकर कवने विकियं, के एना एक वेड बेख । जेले चाल्यमध्यं वालो करी, के एनी ए जिला पविश्व ॥४॥ जगर तमुने चवर्ष अ चंदन, चळी सुगरी सुमर्थना बार । तेत्री बाम नियेत बासिका, के नेमनी नेम निस्थार (🖫 के मन्द मनुना प्रेयीचका, चाल्यामे जेह चरच । मेना ने के बाव है, एका संस को समाबरण ॥६॥ जे करे करी हरि संविधा, पाया वाणी प्रमाननां असा नेवा ने वेड वाह है, हमुन्यकांना जह वावन ॥आ एक अमोक्रमे अविनायाने, स्वयों क्यों के पविना नेने मोन जिलोक्सो, आवे संग केंद्र इस ॥८॥ एवा संन संमारमा, वर्धाः जीना क्या जक्तो नहि । मार्ट इक्रिमकि देन नही, ने निना पार परको नहि । भा बीजा गुणवान तो एका बळाडो, पण रहि यने

أأواما والمامات المامات المامات والمامات المامات المامات والمامات والمنافية والمامات والمنطق والمستحد والمستحد

a weg a gliebt, a ger

e e co un a c effe.

इतिया सकेला। विरक्षात्वद एका सन संदर्भ, अधनवा पाप बळेल ॥१०॥ कवर्षु ॥१८॥

एका द्वाप्त संगती सुन्दराधि संबन्धती, जेने करी हुई जारी अप-बाकती । बागिक समानो प्रवाह गंवजी, वपने अनुवद्यांभय द रहे अभिन्दि ॥ १ : अब -- अकिय एक्स अभूभवनी, लेक्टे मान्या शंन अपने राम । उन्हें येन बायानको, निन रंगाइ आग हरिने रत ॥६॥ ने सन बकेन्द्र श्रीविका, बहु बगरना प्रमाण । के धर्म-वर्म बन्धी पुरुष छ, साह समझि नेजो सुजाण ॥१। जेल बारस लशें कोइने, तेमां लोदपर्यु लेखाई वहि । ए मानीपांग स्वर्ण छे, आकारे कार्य वेलावूं यकि ॥था तेल के संगवे स्वइपी श्रीहरि, ते संग ए सर्वे शुद्ध के । एवां कल्यभाव जल्यको नहि, एक सारी शुद्ध के ११-११ जब चंदन बासे पुश्र बीओ, चंदन सरिका बायके। तेन श्रीवृदिश संबन्धवी, संग कल्यानवारी के बावने (१६) जेन जन्हे-बीजक जान प्राप्तनु, स्वर्गीने करेडे वायत । तेम मनर पश्चमा रक्तीपी, जाको जाह्नबीमय प्रशिक्तम ॥ अ। एका संतरे संबर्ध, होन करंक बायछे पूर । शुद्ध गई अन सर्वे अंगे, वा'ने इतिस्थीते इहर ॥८॥ संत वसु बीजा समारयां, तेने तोलं रूले केनवो तथे। इस वं क्य परीकर केए, समझवा वहि कोई समें ॥१॥ जेन क्य-वर्ति भूषा अवास्त्रमे, गरीच कंगान गणवी वद्दि। विष्कृतार्मध् य अरेका हे, जूने बीओ भनका पहि ॥१०॥ कवर्ष ॥३०॥

संग समर्थ के भीदि संगीती, आयुं एने प्रथम नथी कोइ नथीती। अनुपतने प्रथम समस्तो की वेचीती, एपण मान के विचा-यो जेबीती। ए। बाउ—विचार्या तेची के प्रधारमा, ने आपपी संग्रे प्रथम। का साम्या गुचियो, अने क्षण सुम्बरी गयी गया। ए। सिचुने चा सरिको कहां, जिन रंगो ने गयी गयीर थे। नोम साथ याप भागा नथी, जानुं पति आगाथ नीर से धान नो नोम साथ याप भागा नथी, जानुं पति आगाथ नीर से धान नो सरिना पाणी, कुप कम कर भाग गरा। नम संग भंगीर परणा यणुं, नये पति जान नाये करो। अनि परमारथी प्रान्थारीया, प्रशेष

१ केव्हर

संवाय सर्वे लिये हरि । भी जेम महा अर्णव उद्घंचवा, वर्धी उपाध बीजो माथ विमा । तेम संसार सागर पर करवा, जरणो सन अजर साम बन्धा ॥६॥ जेम विनामणिमां चौद लोकती, रकम सर्वे रहीके । तेम साचा संनमां समझो, कही कभी ने सर्वे छ ॥५॥ भोदे भाग्ये करी मळे मानो, साचा संनमो समागम । तो तेणे करी महासूच्य पाने, बळी बामे बेळा विषम । ८॥ सर्वे बान आय सुभरी, जो थाय ध्वा संनद्धं प्रीन । नृत्य न रहे तेह अनने, जाणो जोरे यह जाय जीत । १॥ यार जाबी आय सर्वे पंथनो, बळी सरी जाय सन्द काम । निष्कुलानंद शुद्ध संन सेव्यापी, प्रमाये पूरण परम बाम ॥१॥ कार्यु ॥४०॥

परमण थोळ—अनुष संनने जापुं एपमा, एवं भवी जो एक । जोइ जोइ जोयुं में जीवमां, करी वंदो विवेक; धानुष । ही। वर्ग स्टियु पाताळमां, शोधे नावे संनने लोख । दीठां सुष्यां तेलो दोवे भयां, संत धाता जामळ जामोछ; अनुष ॥२॥ साने इष्टांने सह सुष्यां, कहे कवि जन कोय । सरे सार तेमां शोपनां, संनमम बहि सोप; अनुष ॥३॥ जेवा मंत्र ए कहिये शिरोमणि, तेवा इरि सह शिरमोच । निष्कुलावंद निदाळतां, च जारे ए वेनी जोव; अनुष ॥४॥ पद ॥१०॥

जोक वधी जबनी जगमांचे ओनेजी, चर्ची यची रीने घटमां गरी गोनेजी। बीजा अबनारना अबनारी पोनेजी, आपे आविषा सर्वे सामर्थि सोनेजी ॥१॥ शक—मर्थे सामर्थि सहिन आव्या, बलवेलोजी आणी बार। पोनाना मनापथी, क्यों अनेक जी-बनो उद्धार ॥२॥ कम सुग वर निरंजर, सून औरच पास्या भवपार। क्यावर जंगम जाननी, आणे समे लीपीचे सार॥३॥ देवी बासुरी दोयने, नाया आणे समे अगणिन। व ओए करणी कोइनी, पदी नवी बर्गांची रीन ॥४॥ नमोगुणी रजोणुणी नारि-या, सक्यगुणीने आविषां सुन्य। शरणायनने आ समे, रेवा द्रियं नहि बु:ख ॥४॥ जे जन कोइ प्रकार करीने, उद्धरवानो आको निहा एवा जन उद्घारिया, तेनी मोटप केम जाये कही ॥६॥ प्रसंत्रित

१ देख

144

जिल्हारिय, बन्नी बैराग्य हैं वे बेरबी। गया पामर वर पार कर्गा, एवी बर्माबी पाम बदी ॥ आ मूच काम के नुबर्गा तारे, गर्या पांच तो होये पर्मा । यस लोड पायाचे तर उत्तारे, गर नायमां अहि जना ॥८॥ लेम देवी मूम्पू श्रीय तारे, तेनुं आसार्य मुं जाणिय। यस आसुरी पामर वर तरे, तेथी बात बीजी मूं पर्माणिये॥ । आ समामा जयनारती, मोटच मुखे के बाती वसी । विष्कृतानम् करे जन सने, विचारी सुनो विधविषयी ॥१०॥ कम्बुं ॥४१॥

भा समे वरियां जेवां जननां काजजी, एवां व वरियां विचा-रियूं जाजभी। भा समें मोरिया ने सुखना समाजभी, अलीकिस सुन्य लोके आर्थ्य सदाराजजी ॥१॥ हा=-अलोकिक सुन्य आ लोक मांचे, अनक्षेत्रिये आविष् । व्याम भारता समाधिनं सुन्त, आपी माधिक हुन्य काषियुं प्रशा अमीकिक सुन्य अवस्थितीन, जन आवर्ष पान कर। जरेंद्र पान नामी सहित, हरिये देखानां कबूर ॥१६ पर पोनामा धारने, वृति देखादे मूर्तिमान । सम पृति चित्र अवंकार जेव, ने बजरे दिश्यो निवाय ॥४॥ सर्वे अंगे समे-रीने, साथे एक अंगमां प्राण । क्यी देह ने जहबन रहे, जेवं सफ कार पायाण ॥५॥ वर्षी बाको कायो कोइ देवने, नेने हुम्ल महि सक आर । एवी अगलिन जा सबे, इरिये बेचाको चयन्त्रार ।.६॥ दर दर्भि क्षोज नव दरे, इरे करे करे कांद्र काम। एवी आधर्य वारणा, क्की बेकाडी प्रवृत्याम ॥आ श्रीतिक देव मूर्ति व्योगमा, करे राजीमां रच प्रवेश । आक्र रहित जरके नहि, वय रहे जायरण लेका ॥८॥ एकी अनंत रीत अलीकिक आकी, जाकी वो ती जे जग-अर्थि । अनि सामर्थि पाने पापरी, मधी पद्मे जाती ने काई है। अबेक अवनार आगे वर्षा, तेनी पोनाना जन कारले । निरद्धना-मंद्र सहजानद प्रभुपर, बारिबारी जापे बारणे ॥१०॥ कट्युं ॥४०॥

वारीवारी जावं वालवाजी माराजी, आज कोञ्या हो सीधी भाराजी। प्राचाजीवन पनद्गाय हो प्याराजी, निज्ञानने गरा-सुन्या देवाराजी ॥१॥ शक-सुन्य वेवाने श्रीवरि, पनु प्रगर थया तमे बाज । यहा सुन्याय मृति चरी, वर्षा अनेव जननां काण ॥शा बाते मारा वरण वाल्य वर्षु, चया नरहरिक्षे नाथ । वर्षा कार म जिल्लानकों, पण सनो सुनी म चयो जनसम्य । ज्य सम्बाधिय परि दरि, कर्य पनि राजामं काम । एक्स क्य समुपम पन्न, पण रूक् । वर्ष स्ति पृति वास । एक्ष क्य समुपम पन्न, पण रूक । वर्ष स्ति पृति वास । एक्ष स्त्र हार्य प्रकार में सुन स्व लई भाषणा । कि रामयम् ने राजा चया, नेने सरीच केम पृत्ति काके । पूर्व कार कोई वर्षान, मो हार्यास मारे पन्ने ॥६३ गृत्काक भामप कोई वर्षान, मो हार्यास मारे पन्ने ॥६३ गृत्काक भामप प्रमा, क्यां भावद जीवनां काल । वर्षा एमम् पम राज्यं महि, पत्नी भया राजभिराज ॥आ बुद्ध हाुद्ध कीच नेर्नेन, नायां जीच भाग भया प्रमा । कर्यो भाग प्रमारवान, हरि हने देवां अक्तार ॥८॥ एवा मार्ने भवनार व्यक्ती, भाने प्रमुना भागिया । क्यां भाग मेनने सुन्न भागमां, कोई दिने र्वणा व राज्या। ॥१३ भाने स्वाप्त सम्बद्ध स्वारे आधिन जगने, आप्यो भन्नव आनंत् । विष्कुतानंत् सुन्वत् सहना, नाभी ने सहजानंद् ॥१०॥ क्यां । श्री।

जामी सहजानद जे जने सेव्याधी, तेने जारधं और करवाने के बाजी। सीपरी जिल्लोमणि मक्या वृति एवाजी, वृत्री वृत्री प्रचा एने बीजी देवाजी ॥१:। कक-प्रयमा बची द्वी आपना, जोड जोड जोर्यु क्षकर । चौद गरेकमां जोर्यु चित्रकी, ए सम व समझालुं उर ।। अनेक तन परी हरि, विषया वसुंघरा माँ। तहा मधेन नपा-सिया, सुन्य पार्या न पार्या काई ॥३॥ आजनी ना अलेने बान है, अहत रक्या है अन्येग । इक्या सक्या हिर्दे की, बड़ी बाळी त्वाचानी देव । ता जम्या रम्या आंकं रचा, इया करी हीन-हवास । संसम्मे सन्य आवियां, कावियां इच्या विकास । ५॥ अह-सपरम एकमेक रचा, जनगप न रहि अल्बार । अनेन सपनार आरपा अविक, यन आंच याजियो आ बार ॥३॥ अनेच प्रयाप अनेक परचा, अनेक उद्घारिया जन । कोचे बावनी कसर प्रक्रि. पुषा सहभावंद भगवन ॥ भ अनेत सामधि अन्य वेश्वयं, अनेत करकार आधार । अनेन पामना पणी वरि, वसी अनन वासि आचार ॥८॥ सब् तपर ए श्रीहरि, वनी वपर वहि वह यह यह प्रतापरण ब्राच्य पुरुषोत्तम पाने, एवं आपारे बीजा अनेक ॥\*। एवा पनाची बसु सबया, सेना रिक्रिया सर्वे नाप । निष्कुनार्नेद् भी, हि सबने, बाड बया जम लाम ॥१०॥ दब्दं ॥४४॥

150

वर्गण पत्र— मुली कर्यार जब जगमां, प्रमु प्रगरी जा गर। जि-वामी कर्या जन्मों स्वां, अगलिय वर नार: सुलीव (१)। हास - ज सुल अगम अज र्शाने, सुर सुरेशने भोष। ने स्व दी (१) रामने, ज सुल म पामे कोय: सुलीव (१२)। पामी विनारे एवं पामने, कोण सुल देगार। मार जाप जावी भाषिषुं, अलब सुल प्रयाग: सुलीव (१३)। एइ सुलावी से सुली पया, रखां गुला नेवी हर। निष्यु सानद विन्नेष थई, रखा इस्नि इज्रूर: सुलीव (जा) यह (१३)।

इरि इत्तर जे पाम्या दास पासजी, तेने की इनको नहि तन सने बामजी । परिवरण पान्या सुन्य विनासजी, जे सुन्यना व पाप कोह दिन नाकती ॥१॥ सब-नावा न वाये कोई दिने, एवं अवि-बाबी पह सुन्य छ । तेह दिना नपासि कोर्यु, प्रयोध्यां अध्यक्षे स्वी कुल्य हे ॥ भारत सुन्यना सापनारा, मधी कोइ समुजानद्वी ममान । बीजे के बानीना बायदा, एम समझबु बुद्धिमान ।। सन्य कामा सन सुपर्धन, शोधीने में मूं मार । जेवा नवाधी अव ह नवी, भ वच सम अपार । या माधिक सुम्बवन मोवां धार्मा, म्यार अमाधिकार काम आपनार । माट सहजानंत् भवता, उर करी बळी किवार गंभा अब सुम्य जेनने धरे, नेती नेपु दिन् देशाय ! तेश विका ताली नवासियुं, रेकायण आयण व सम्माग ॥६। एइ स्कूलांदे राहणका, आरुपा क्रमनिए अस्ततका प्रश्नमानु हा एन कारत्युं, गणा ग्रह्त भाग का ए से ल एआ। प्रस्त प्रशास के प्रमृत्या, श्रीराज्यात्वत कृष्याम आधी सन्धा अन् । १० तर गा त पुरुषाकाम् । तः । प्रति तृत्व कृष्यानुष्यी । ती भवदः यः करा सरा ं गर्नो क्षेत्रण अन्तर्भाषा, ज मुल्की रिवा का के। 🚾 बाह्य बोह आर्थी घारणा, यो। भर अपर पान्या नधी । जिल्हा पन्न जण हैं आ की पारमा, या भाग अधर पानक हैं अधी उत्तर मान सर्वात का के कर्षा देवत करें। इ.स. १०००

वका का स्वाधि स

والمراجع والمراجع

कर थे। वाननं लुक्तुं सन् वर्त, क्य करी काई अवर थे?। आ कोइ कोइ हरि असव थे, कोइ वर्ड नाजोस्य तन। कोइ को विश्वमांदि व्यापि रथा, कोइ को आ बोने व्यव ॥८। कोइ को प्रमुने वर-ग्रापो विद्य, कोइ को न वरा घरे पाय। दीवा विना आप गाँवले, अस्था को थे उठाव ॥८। वस जाओ इरिवे के दाथ थे, वे वाय-विद्या थे पुनित, अवन नयन नामिका, मुख्ते बोने थे वरी रीत ॥६॥ जमे रथे निजान केच्या, नियं दिये पुजा से इन्या। इसे बसे ले-वर मंगे, अलवेलो अभवे अविनाम ॥७॥ सामार स्पृद्ध मृश्ति, सुख्यापी सहजानंद्र। वेने जाच्या विना जहमति, निराकार को वर मंद्र ॥८॥ सबन्तुं अवन्तुं अपनी, वादी जाँदि वादी दरमांप। बुंचाना यथी पुंचवणीमां, वद्युं विद्या वादी वादी वादी दरमांप। बुंचाना यथी पुंचवणीमां, वद्युं विद्या वादी वादी कादी सम्बद्ध मुक्षी, करी आक्ष वंशासदी वीत ॥१०॥ कहतुं ॥४६॥

आस वंशसमां सावरदा व लोबीजी, एक्स वान विकासि जो-बीजी। दीरो इत्व आव्ये पुक्रवे व बोबीजी, दिनमा लई रही राम स कोबीजी ॥१॥ कव-दिनयांडी हिंदे भारत मने, रानमांच वर्ष रववदिये, मेश बगर मुकीने करोश अजनां, कही बार एमां काई पश्चिमें ॥१॥ केन कोई कुनवादियाँ कुन वेली, आकाश कुलनी आका करे। पार विना परिश्रम परे, सार धोडुंज सने सरे ॥३॥ तेम मगर प्रमुचे परवरी, परोक्षमां करे बनीन । तेनो पीनुंपनी लय पारती, करी साथा कीया जाने जिला ।तम शांके देव राजी वहि. करे कराज कोड क्यम । नेमां व वह बांबार, वह नेमां ने पान अस ॥>॥ सारे असी साचवरी, बक्टबा करवी बीत। तो पूरण तथ वाद नहीं, बजी बाद जननमांही जिन ॥६॥ एरण कर्य तो सर्वे कर्य, केल कर्यु न रहां काई। अनुष्य देवनी लाभ मनयो, आबी भा अवसरहे ॥ आ शर्व सिदांतनु सिदांत १६%, रे वृ सगर मनु वरायक । अन वक्त कर्म करी, भागवा व्यामी नारायक ॥८॥ एड हिन्द देशकी बान अंतरे, क्षी रे'बुं निर्मय बॉबन । एटल् समझे सर्वे समझ्या, समझाणी सनातन रीत ॥९॥ समयो मारग महाश्व-

<sup>5</sup> WEST

الما والساما والمالم المالية والمناج والماليا والمالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم

लको, क्षेत्रो पूज्य वर्शि सबनवा । निष्कृत्यावर् वकी ए वारता, सामको सोटानो प्रपदेश ॥१०॥ करपुं ॥४आ

कारमिति शंदर संब हे भागोत्री, सद सामा बनमा विचारी-जी। बगर प्रथानीने लामसे व्यारोजी, रूच रखी मुखनो आवसे बारोजी ॥१॥ राष-बारो आवको सुलतो, सांबक्षणामा सार किरोबकि । दीन वाचे अब बगरमी, वनद्वासमाह वकीवकी ॥३॥ अन्य सुन्दरी जब बनागी, बगरको सुन्द देखको । सोकानोक्स्मी सरक्षा बेटी, सुन्य वर्षमुनमां लेक्दा ॥३॥ जगतुन्य कथापनी तुनती, वृति वृद्धि को वर्धावर्थी । समस्या मननी तुन्छ है, बान कति रही वंदी क्यी ॥४॥ वैरहाय अस्ति वर्षेती, बान सारी वेको खबती। शावजी एव बोदी वणी, चोकसवने बोची वर्गी ॥५॥ कार्य संस्थी पारमा, तेर एम कार्ट्स करी है। सांगोपांच समझया, पूर्वीपणी संबोधी हती है ॥६। सारमार गांधी कई, अंजे आस्पार्धा आहे जावियुं। नेवनेच तथानी नने जने, कर्तांक कार्यक कार्यक् ।।आ मुमुभूने धरात करणा, आमां पान के विषयिवयी। नवी गांवी है वान जनी, प्रमु प्रमद प्रसिद्धनी ॥८॥ भरा करवासाने मोसनी, भानो बान भाषी से क्षेत्र वृद्धि । त्यार नरकर नर्गुना, वृद्धी दिचा छे लुंदर नहि ॥१॥ बार बंध बाको शुलको, है को पूर्वा कर्छ एकी रीन । विष्कुतानंत् ए वरवर्र, स्वदन्ते भाग्य अभिन ॥१०॥ कर्त्रं ॥४८॥

मध्दी, की कहं सुखनी सीमाय; भारवर ॥॥। आज अमृतनी क्षे'ली यह, रहि वित कोह स्रोट। यक कल्यामानुं क्यां रह्यं, ध्यां कल्याण कोट; भारपः ॥८॥ संकपणुं तो रह्यं नहि, कोइ म के'शो कंगाल । निरश्निया के अमे क्यी, महा मळयोछे माल; भारपः ॥१॥ कोण काणे आ केम थयुं, आव्युं अणचित्रद्युं सुख । हाळो अछीकिक है हळी गयो, मळ्या हरि मुखोसुख; भारय०॥१०॥ घन्य घन्य अवसर है आजनो, जेमां मळिया महाराज । निष्कुलानंद ढंको जिलनो, बागी गर्गोके आजः भारयक।।१११।) इति श्रीसहजानस्यासिद्यानकुलानद-युविविरत्रिवा सारसिक्षिः सपूर्ण । 





श्रीतिष्कुलानन्द्मुनिकृतकाल्यसञ्ज्ञहे

सीर्यास्त्र प्रयोक्तम, अगम निगम जैने मेनि कहे । ते
अहिरि पाओ सुगम, रम्यरूप साकार सहि॥१॥ एवा बमो मारे वर,
हर करवा दोव दीनवंदु। तो थाए भक्ति भरपूर, हजूर राजजो
हरि हेन करी॥१॥ रोहा— अक्ति सरस सह कहे, पण भक्ति भक्तियों सेव। मक्ति भक्ता मारे वर, पाओ महि, भनमानी पोटी कोज। शास्त्र सर्वे दोधीने, सरी करी पामे नहि, मनमानी पोटी मोज । शान्त्र सर्वे चोधीने, खरी करी स्यो खोज (१४)) राग क्यासरी—स्त्रीपुरुयोत्तम पूरण ब्रह्मजी, नेनिनेति कही केने गाय निगमजी। अति अगाथ के सहुने अगमजी, ने प्रसु थया आज सुगमजी ॥१॥ बळ-सुगम क्या श्रीहरि, परी नरमनने माथजी। श्रीय बसुं कहुं जक्तना जेह, शेहने करवा सना-थजी ॥२॥ आप इच्छाए अधिया, करवा कोटिकोटिनां कल्पाण । वया विरुमां आणि वयाळे, तेना हां हुं करं पत्नाण ॥३॥ के'री अस्था आज ले'रमां, अति मे'र करी मे'रवान । अनेक जीव आभि-तमे, आपवा जभयदान ॥४॥ अरळ ४ळ्या अलवेलको, कर्डु कसर न रास्त्री कांच। केक जीव कृतार्थ कीचा, महा घोर कळिनी सांच ।(४)। माग्यवाळी ब्रह्ममोद्दोलनां, कर्यों आपे भाषी अगणित । नि-क्षॅच कियां नरनारने, रखाबी रुढी रीत ॥६॥ नौतम सको संसा-रमां, आबी नाथे बलाबियों नेक । जे सांभक्यों बो'तो अवणे, ते वर्तीच्यो सहुयी वियेक ॥७॥ पूरण पुरुषोत्तम पोने, सरवेश्वर सर्प- ना इयान । जेनी उपर जहे नहि बीजो, नेइ को धारे जेइ काथ ॥८॥ प्रवस्त प्रनापी क्यारनां, समझाबुं शुंशुं व थाय । अवर्ष समुपी भी-इरी, जे प्रणकाम के बाय ॥९॥ अनि अगम ने सुमय बया, थया मंत्री सुन्य नेवा नारण। निष्कुतानंत् सक्या एवं जेवने, नेइमां व्यक्तियां भारण ॥१०॥ कवर्षु ॥१॥

भारत जारको जासको जेने भेटरा भगवानजी, विटोक्सो नावे कोइ नेइने समानती। जेइने मिळिया बच्च वृतियानती, जेइ सृतिन् वरे भव प्रचा प्यानती ॥१॥ वच-स्यान वरे जेर्नु जानजो, अज हैंस मरीचा मोह। तोये अनि अक्षण के पहने, अधारण जाने वदि और ॥६॥ एपी जलौकिक भूरति, अमापिक अनुव अमाच । भागम निगमने अनीचर अनि, तेनी करी शके कोण पाप ॥३॥ थाय व पाप एका जाराये, वर्णविया बारमकार । तेर असूने केम वामिए, जेनो कोइ व वामिया वार ॥४॥ तेइ इटि वस्तन वरी, आवे आवे अविन भोकार। लारे सकाय ए सूर्निने, स्पारे नाव वाय वरशाकार ॥ अ बहाराज थाय स्यारे वनुष्य जेरा, देवा जीवी वे अजयहान । त्यारे क्या काके सम्बंधानकारीती, क्यारे यूचि आवे अगवाय ॥६॥ त्यारे अन्तवे अन्ति करवा, वयवे द्वार अवार। बाव सेवकने सेव्या सरका, ज्यारे वगडे प्राचनावार ॥॥ जारे सुगम वापके लक्ष्मे, जानवारीने वरमानंद । व होव दरश स्वांतुं दोवणुं, सदा भोपता होय सुन्दंद ॥८॥ साकार सुंदर मृत्रति, जोई जन मगर मन बाप । वधी संबा करी एवा इपामनी, मोर्ड नाम्य मा-अयुं जनमांप ॥९॥ एक सूरित सूकी सहाराजनी, बीतुं माणबुं नहि वालक वह । निष्कुतानद निर्भय कावा, इरिमक्ति विना इक्छर् विक्ति ॥१०॥ करुई ॥२॥

जोने कोइक करेंग्ने जय नय भीर्थजी, जन दान पुष्य करे हरि-अर्थजी। सन्य ओग जगने बःवरे गर्थजी, जेनी होय नने मने धने सामर्थजी ॥१॥ गन-सामर्थ प्रमाण सङ्घ करे, बजी कमर व राज्य कोइ। शुद्र मन शुद्ध भाव भद्धाये, शुद्ध जान्दरे करे बोइ॥२॥ एम मनक करी बरवकान, करे जन्य सुन्यनी जाता। ने शिश्च समझज संगक्तती, त्यागी नृपने पाणी कावा ॥१॥ अंच रिक्रण कोइ रहजनने, अमक्त करीन जाग पियाज । ते जापनां कि अवनीयान लागे लोकमां क्यी नाज ॥१॥ मारे सेवा व्या हरिनी करी, अपिए विदे माथिक सुन्त । जे वामी वह वामूं वह यूं रहे जेम होय नेव हुन्य ॥४॥ ने वाम्यां सर्व समझणुं, जोई लेडू अपवधा जकर । जन वन सुन्त इच्छनां, देह दूम्ब म वाम इर ॥६ । जम कम भूकी कुक-सने, जाने नुनने नजी नांदुछ । नेम भूगित सुकी वदाराजनी, व भागनुं सुन्त विभीन ॥आ वार प्रकारनी मुर्गात, वात सुन्त कहें सुजान । वन सूर्ति प्रजोहर माचनी, मुकी इन्छ पहने एक जजान ॥४॥ जेम कोगर वृत्त कुछ विशे, मसे कुछ को कलेगिए नयाँ । एवा अन्य सुन्त वामनां, कहो कारज मरे गूं सर्मा र ॥९॥ वारे राजी करी रंगरेनने, वागनुं विभारीने मन । निर्मुणानर म मानचुं, जेने वाने होम वियम ॥१०॥ कहतुं ॥।॥

विषये जर्पा सुन्यसादं साचनारी, करनां बुकायते शुद्ध संनर्ना शयजी। ने केय करी काके आशो ए जनजी। जेने क्यर के अर्थन विषयजी ॥१॥ वळ-- विषय विविध भागमां, रखां सामन पर समोर । सर असर इच्छे पादका, घेरी काथ कोच होन बोद ॥॥। अपना जान नाम आपने, प्रहादजीने रीवा करी । सन्य राजना श्रीकंत किथि, वस मुद्रमल न वेटा हरी ॥३॥ तर करी जिलोकमां, वामी परिया वाचा कां। एम करी तब नावतां, सुन्द श्रटस जाप्युं महि ॥४॥ अस राम्यनां अवरीच नीक्ष्यो, दाम देनां नीवाणी मर योग। पुरुष करना चांडव बांचाली, आय्या पूर्वासा देवा दोच ॥५॥ ओने वीवाणा शुरू कडमरन, जर्मने वीवाणी महत्र मुगास । बळी वळी द्विचि कवि, रंतिवेच सरिचा द्यास ॥६॥ एवी अनेक प्रका-रवी कारूदा, जानी सन्तवादीपर मोह । वनवामी लागी वैरागी, क्य कियमे वृद्धि कई कोड़ ॥ आ अंजे अने एड आदर्ष, बरस्टोक पामना बाज । तेतं जबने जानजो, सुन्दतो व रची समाज ॥८॥ विषय बच्च विषविषयां, अर्था अवमादि भरपूर । वालोक वा दिये नायना, जन आशी सेजो जलर ॥१॥ मारे नार ए ते मुखनी, समझी

१ हुंगाले

Wind 4

विष्यात्त्व हा समानि । जिल्हालाकद् के " राजा । भाषा, करवी वारिजी भागति ॥१०॥ कमानु ॥४॥

बरण बालां सा असि उपर प्राप शासी, तेनी धन कर्म बच्च मानार, समीन । देड—अप तन तीरच जीन अगन, हान प्रमा समान प्राप्ताना । पामी पत्र्य स्तृत पत्र पाणा, तेसी कीणा मादी काण नामार सनी । ।।।।। प्रमान पाला समापि सम्बे, कृष बनुर काणना । तक महि केदि श्रीकर बाध, तो विगये अक्षयो बीजा-मार, सना ।।।।। जानी प्रशानीन नाम्या पत्रा पाषर, जाको वर्षा करेतो ए प्रानी । विजय प्राप्ति न रहि केदी, जोई लीचो हामको बाह्यनोरे; संती ।।।।।। सर्वपर विचन समस्वर, निर्मय पत्रिक्ष बाह्यनोरे; संती ।।।।।। सर्वपर विचन समस्वर, निर्मय प्रक्रि

निरम्भियन से नाथनी अकिस्ती, जेशं विस्ता नवी एक एनिजी। समग्रीने करती सदाय शून मांनर्जा, लो आवे सुख अन्दीकिक अमिजी ॥१॥ तत-अशीकक सुन्य आहे, जो जाप असिर अगदा-ननी । व चित्रा जिलांक सुन्तने, आने शामा मीपांत्रनी (त्या मुरति मुद्री मन बीज, समजाबे महि सगार । जन्य सुच जावयां क्रम अर्थनां निश्च निरम्प निरमार ॥ १॥ एम मानी माने सुन्य बावसी, करे मकि मार्चे सहित । अकि विना अग्रसंक लगी, वाहे वहि काह चित्र ॥४॥ जनन्य माने करे भगति, मन वचन कर्ने करी। भागे नदि एरिक्स विना, एवी बान अनामां भर्गव हरी।(वा निष्काण प्रक्ति नाथनी, जेने करवाचे धन कोच । बीजा सकाय मन्त्र समृह होप, लोप होप नहि एनी होड ॥३॥ एची अलिने बादरे, जेसां लोकसुम्ब नहि सेटा । तेम सुम्ब शरीरमूं, इच्छे नाइ बहोनेशा १३३३ मेली गरानं जिल्ला मननं, शाथ जो दी रहे इति श्राज्य । सेवा करणा पनद्यासर्वी, आप जिन्हमां भारपुर ॥८॥ आप अर्थ प्रमानानने, राधी तोष्ट्र करे तेवी सेन। पण बण समे रियार विजा, त्यार न धाय तमस्य । १त एका भक्तनी भगति, वा'टी साते वा'लाने सन । विष्कुत्त्ववद करे नावजी, ते ४५३ घटन प्रमुख ॥१०॥ क्षाई ॥५॥

वसका करवा घण पनद्यास्त्री, करो बरियक्ति अनि हेव करी वामजी। जे भक्ति अणि का व जिल्हामजी, वर्जभवित छे सुन्तर् वास्त्री । १॥ सक्- पास सर्वे सुपर्व संत्री । मन्द्र अति वन्द्र करे। तेन तोले जिलोच माहि, समझी तुवी नहि निमरे हिं। जन जा होक्सू जरी जाता मेटी, परहोक सुलयज परदर्श। एक प्रक्रि जानी अगवामनी, विचयसूल विच सम क्यों ॥३॥ जेमे वच विच-पर्दा पील भोगी। ओडी प्रीत अस्ति कावा। सभी समत तब अनती, तेने रही कही केती परचा कता राजी क्रुसकिये को हते. वय वजने सुपरे वात । वधी वधी सुख मळवा रजवा, जोहए हरि राजी रखीपात ॥५॥ परप्रकान हसक करका, करे अस्ति आहारूने सहित । वरी दव देक एक जनदे, ते करे नहि कोई रित ॥६॥ निव्य-पर आधनी धगनि, समझो सुन्दर्भशार है। एनी परापरी मोप कोइ बीर्स, एमी सर्वे सारमुं मार है ॥ आ साची मन्ति भगवानथी, सर्वे शिरपर सोव छे। बीजो साचन बहु करे, क्य हुवो पनी कोह जोर है । अस अस शखपणमां वार्करा नदी, बसी हसमां सरस नुन । जेव अंबरे सरम जरकमी, नेम अन्ति जनि जनुप ॥९॥ एवी बतुषय जगति, भाषी गई अने भीतरे । निष्कुलानंद के सर्वे सायन, दनी समना कोण करे ॥१०॥ कहतू ॥६॥

विकस्ताव वर्षी व्यक्तां कांचजी, स्ववत्तं स्वतं वर्षां वर्षां वर्षां वर्षां कें व्यक्तं वर्षां के व्यक्तं वर्षां कें वर्षां कें वर्षां वर्षां कें वर्षां वर्षां कें वर्षां वर्षां वर्षां कें वर्षां कार वर्षां वर्षां कर्षां कर्ष

205

भेतेर । ६॥ जेम पंचम्नमां शृतेय सरस, सर्वे भमरमां अमरेश ।
लेम भक्ति सरस मगवाननी, एमां वधी फेर लवलेशा ॥ आ जेम
कुंचे सरम रस कुंचका, मूचे मरस वियमन । क्षे सरम कामदेव
कहिये, लेम भक्तियी मृत्य बीजां कृत्य ॥ ८॥ कर्त्या करीने कांड्रक
वामे, ले वामे कोड़ काळे करी । भक्ति ए गिन निर्भय अति, एम
श्रीपुत्ते कहेंचे भीहरि ॥ ९॥ एम मिन्द्र भगवाननी, वर्णवी सहुची
वरस । निष्कृतानंद के ते विना बीजां, निमे देलाव्यां नरस
॥ १०॥ कवादं ॥ आ

भक्ति समाम नथी साधमजी, बारमबार विवादेष्ट्रं मजजी। बेसार्ड अब करेड़े राजनजी, तेमां सुन्य थोई दुःल श्युडे सघनजी ॥१॥ शक-सचन बु:ल लायनमां, जेना कथमां यह केल । बाने सुन्य तेमां मूरचा, जे दोष दैपाना रुडेड ॥२॥ जेम सोन्द्रसपी सोनुं करता, जोये सवा भाष्य चडी चोट। एक साम्य तैये चपजे. बाधे वा लाखनी खोट ॥३॥ तेम साचन करी शरीर व्मे, वसी वामे ते बाहिशी सूच । ते सूच जाप जीतांजीतां, पाई रहे रास्तर इ.स. ॥४॥ क्षेत्र वेदे जमर जर्मण कन, लावा करे कोइ लांन । रानां के पण रस गरी, एम समझी संबो मिद्धांत ॥५॥ नेय सण सर्वे लोकना, श्रूणी करे हैये कोइ हाम । जेम अवत कुल जायसनां, क्य कार्य पुजामांदि काम ॥६॥ जेम घोडनां कस नावनजां, धाप बहेनन ना बहु माल । जानां धाये बहु लरजरो, बखी बार्ष कोच विद्यास ॥आ अधून बेली अल्प भली, पपु नोप मुंडी विद्येत । तेम मिक योगी तोय मही, हे सर्वे सम्बनी मरेन ॥८॥ पंच्याम जाने पांच रोकश, सपोद शंख कहे हेन हाचा। यह गणीने गांठो कांच्यालकी, बजी कांचे न पुरे सान्य ॥९॥ नेम इरिम्निस्थी सुन बके, ते हं सुख बीजाशी व भाष । निष्क्रसानंद कहे वरने, जाणी क्षेत्रं एवं मनमांप ॥१०॥ कवत् ॥८॥

वर एव बकारण-संबो जुनो मनमां विचारी, माधी भक्ति सदा सुध्वकारीरे; संबो॰ टेक-जूडी भक्ति अफामां करेते, समझ्या विजा

ብሎስ የተፈጠቀ ነው ተመመጣ ተመመር ተመጀመር ተመጀመር ተመሰር ተመመር ተመመር ተመመር ተመመር ነው። የተመመር ተመመር የመጀመር ተመጀመር ተመጀመር ተመጀመር ተመጀመር ተመጀመር

s services, a que, a graf

संसारी। कोचा रोग कावधे रमायज, दिया दिया द्रादारीरे; संतो • ।।१॥ बच्च पूछे बळी चालेके बाटे, जे बाटे महि बन बारी। बहि नो'वावे वहि बक्रावे वाहं, धारां जरी जो लुवारिट, मंती । ॥ ॥ का अवमां भूतवणी से भारे, तेमां भूतवां बरवारी। जियां नियां था जनम जानजो, इतिमन्ति विता वेठी हारिदे; संती ।।१॥ मिक विमा भवपार में आवे, समझी ए वान हे मारी। नियक्तना-नंद के निर्मय थाया, अस्तिनिधि अनि आरिो; संनो ।।।।।। बद्ध ॥ ३ ॥

भक्तिमां रच भवां छे भेद जी, करेडे जन मन वामे छे लोह जी। एक बीजामी करेडे वच्छेब्जी, तेनो नथी केने पर निर्वेदजी ॥१॥ गण-निर्देश विमा लेख पामी, करेडे लेबानाम । मंदे पंत्रे एव एकने, प सञ्च भाषके देशक ॥ ।।। जब प्रकारे करी माथजी, अस्किना कमा के भेद । जिल्लाम यह कोइ मर करे, तो परिद वामे कोइ लंड ।। रे।। यम अंतर पंडी अकाम है, यह यह देमाई है मारे। उपान थयुं ते जाजना नथी. कथी ह्यं कहिय बारमवार ॥४॥ जेल हेचड करमां हच भावे, न लह नेचल शंहों दरे। इनी परवासी परम पदनो, पण कहो एमांथी इदे शु सर ॥ ।। तम अस्ति अनि भनी इनी, तेलां अंकर्षा आग शुंदाहरों। श्रीर पानी लादे लुक पकां, टक्को वर्षद एका क्याह्मो ॥६। तम लिल १.रतां अववादनी, आची अहं मनदेशी मरहा मनुपासक ते वरा, आहे दि इ ए लोह-कारण ॥ । बाट निरमधन चनु जावना, अन्ति करा भरी आर्थ । निराक्षी वा'ला नारामकने, की इ वांबेरको अवोन्तर दाव ॥८॥ सकाम र्थाक सबू करेते, नपी करना निष्काम कीय । नेमां नवंतीन नपी निसरतुं, निम्ब बनोबनां लोधे ॥१॥ योचे त्रह कोइ घर आध्यो, करी आष्यो गदि को इकाम । निष्कृतानंद एवी भागी, गव करवी नर ने बास ॥१०॥ बहुतुं ॥१०।

भक्ति करवी ते कन्याण काजजी, तेमां मर जाओं के रही छोड सामग्री। तान एक परमां राजी करना महाराज्ञी, तथां तन सन बाओ सुल का अभी ॥१॥ शब-सनमन सुल लाजीने, करे हाड

भावे करी बर्गान । सम विश्वनामी सराधी, रहे मान अपयाने एक सित ॥ ना प्रश्नास सुली भर पोरासे, निद्दा सुलीने भव मुसाय । प्रभाव भावनी संगरे, हर्ष प्रशंक न थाये कांच ॥ शा जब नद वहें बाजी बांसहे, जोचा मन्द्रे सच्छुं स्पर्स । वन पर व जुने कोइने, ओ जुने तो बागहें काम ॥ शा लेम निक्त करना भक्तने, नव जोचा दोच अस्तोय । तुन अवस्था केना गोमना, सित वाय संपन्नोय ॥ शा वळी आ लोकनी जे आवद, रहों के जाओ जबर । अकि व मुक्ती आ लोकनी जे आवद, रहों के जाओ जबर । अकि व मुक्ती अस्तावनी, ने भक्त जाओं स्वरूप ॥ शा जने रीमचवा से राजने, स्थी रीमचवा बळी लोक । जोई जय बराजय जक्तमा, बीच करे बर कोइ बरोक ॥ शा मिल करना केने आवे म माने, आवे कोइने पुज जनसून । जेनी नजर पोंतीसे प्राची पर, तेने अधिक स्पृत्त कही कुल ॥ ८॥ जेने सावस्तुं जळ नरसूं, तेने चतुं स्वित्वर ने मूच-रती, जानवी जजनी गति । निष्दुक्षानंद के नोर्सु रही, भजावी लेकी भजनि ॥ रशा करसूं ॥ रेशा

साची भक्ति करनां को केने भाष्युंजी, सरी भक्तिमांही सहुए सोयं केत्रस्युंजी । अनममानंते एम समस्यामां सान्युंजी, रण अक्ति करनतः साथ । योभी तुनो साराजं सहुने, मळी चळी सह बीरांच ॥६॥ महाद भक्त जाकी प्रमुना, दिरण्यक्तिपुरा कर्या हेत्स्य । नेह पाचे करी नेहना, स्या पंत्रमंथी भाषा ॥६॥ बसुनेव बळी देवकाने, जाक्यां जयतीतानां सकर । नेने कह कंसे आर्थियुं, सूनो पापियो आर्थ असुर ॥ ॥ चंचानी मक्त परमधानां, जाकी तृष्य दीर्थु दृत्यामन । नाच्यां संबर ए पापमां, अयुं कुछ निर्मुख निर्मुत्र मध्य पांचय भक्त परमेश्वरता, नेने दीर्थुं दुर्याथने कुछ । ने पाचे राज्य मधुं बळी, अयुं मोन हर्सु बहि सुख ॥६॥ सीनाजी भक्त भीरासजीनां, नेने राच्यां पांचयां रोख । सत्यवाः दीने संनायनां, साविष्युं पुल्य अनोल ॥आ ने इरिजनने देवे कोय वस्ति, जे कुछ देननने तृत्य पाय । वस जेम केमरना काहने, वासनां स्वित्त सोनाय ॥८॥ एम अक्तवे अय वयजावनां, निर्मुय

व रचा कोष, आदि अंते प्रच्ये प्राप्तती, इत्यक्त निर्वय होय ॥ भाषा पर्वे पामका, इरिक्रक्ती भीका तालवी। विष्क्रसान मंद निश्वे कहे, बाल आदली जवर जाणवी ॥१०॥ कहवूं ॥११॥

इतिनी अभिन्नो करनां हेचली, आवे अंगे अंगरे के दि कते-काती । तेजेकरी रहे हेरान इमेकती, एइसांदी संशय नथी तक तेवाजी ॥१॥ सक-लेका संशय वक लेखको, दनो हेलको आगय बवाय । जांचनां रज सूरज सामी, बाही वहे आंवय मुख्यांय । शा जे अख्यी जीनक बाय, तेने समाचे कोइ सव। तेनु से बाबे नगर, सामुको चाचे संनाव ॥३॥ चळी जंबव्यिपी ताका रखे. तमांत्र वाणिये बीर । रही विसिये पामळे, शु शीन वीने सारीर ॥ता बटी जे भोजने वरीने सूच भागे, ते भोजनमां भेकिये भोपने, के देता पवरने जान ॥८॥ बीचुं व मार्ग दूसलूं, जली वेक्स ॥९॥ अल्बमनिने भदाई सूत्रे, सबहु सूत्रे वहि सब सेवा। विरुद्धनानंत् एका मरने, काशिय दिल्ली अपन्ता ॥१०। कवर्षु ॥१२॥

वराज्य अकारती संतो अकामयमध्य एव वने, तेती समझने मयमर्थ मनेरं, संगोर । देव-अफि म जाने नेर नमाने, गाने दोन निकादिने। अर्थ म सरे करे अपराथ, थाय गुन्हेगार बनागुन्हेरे; संबोक ॥१॥ अरिलंक सदर कीयज सुलकारी, तेने बसावे कोह वर्षे । अगर पण बाप अंगारा, बजाब प्रवर्श वर्गरे; सती ।।।।।। कम्पनद प्रसे माम्यो कुटारो, दूर्मन याथा दूष्णने । जेवुं इच्छे तेवुं प्रसे एमांथी, सो नवास प सुरनश्नेरे; मंत्रो॰ ॥॥ एम धार सुच्छारी सार्व व इच्छे, कोई प्रगती धर पापने। निरक्षणानंद के व और पत्ने, बकर भाजवा आपनेरे; संतोर ॥॥ वह ॥स।

वगर प्रमुती जिल्ला कति साचीती, जेंद्र चलित्वे मोटे मोटे

والمتاملة فاستاماها والمرابط والمامل والمامل والمامل والمتامل والمتامل والمتامل والمتامل والمتامل والمتاملة

A TATA PARATATATATATATATATATAT

जानीजी । नेश विना पीजी ए सन्वे काणीजी, नेहमां व रे [ के दिये राजीजी ॥१॥ राज-न्याधी हे यु रसक्तव प्रमुखी, जोई जीवन प्रणट प्रमाण । पड़ी भन्ति नेती भावतु, समझीदे कारी हाजाना । आ जोई मरजी जगदीकती, शिकासाटे करचुं साचित्र। श्चल कुष्म आने तेमां देवने, पण तस्त्री नहि दीमन ॥३॥ सम्बु काम कर्ष कवित्, लाबी प्रध्यर नाजी पात्र । अवर वपाय अळगा कर्यो, रामेजी रिकारवा काज गढा। एज व्यान एज बारणा, एज जब तप में तीरच । एक अष्टांगयोग साधन, जे बाष्यां बगरने शरध ॥४॥ वर वदि ए बावर धन्दी, नेने राजी कर्यो औराम। अस्ति बीजा अक्त मी, तेव कही आवी जिएे काम ॥६॥ वर व आस्पा पशुपावयां, वशुग कर्या प्रमु प्रमक्त । सभी जोई जे सेवा करे, ने समान वहि साधन ॥॥ वन समानी के अगति, जति दुराजी करवा कात्र। बादे जन सभी फोईने, राजी करवा श्रीमहाराज ॥८॥ जेड् समे जेवं गमे बरिने, तेवं करे वई तियार । तेमां सम विषमे बाव सरन्तो, एक प्रत्यांही निरधार ॥१॥ एवा अन्तनी अगनि, अनि बांसी बांसाने सम । निष्क्रमानंद निश्चे करी, व होय कोई एने विषय ॥१०॥ कवर्त्र । १६॥

अगट बनुनी असि जान असीओ, बरी दीये काम एक एक-लीओ। एवं बिना बीओं हे चूलवानी गलीओं, जनमां केने के बा-बंधे केंटलीओं ॥१॥ क्या—अंटली असि जब करेंछे, परहरी बनु मगटने। नेने अस्त के बो ने मूपनी जोटे, केम बादे बेमायों मक-दने ॥२॥ नेने काम जरी फळ जोहेंने, कोइने म पूछी बान। एम परोक्ष असि बहु पेरजी, लाको लेको न्यायछे शान ॥१॥ जोने बाहब बासी बजना, जोरे करना बना करन । क्या बसु मगटने जमवा, अनुभार म आप्युं असे ॥४॥ जगनमुं फळ छूं जाशुं, पत्रुं पानावं पायुं बळी। एपी परोक्षमक्तनी प्रापिन, अवन लीधी छे सांअळी॥४-॥ परपपस्य एनी नारीने, जेने जमाका जीवन शामने। यगट बसुने प्रत्यां, ने पानी परम कल्याणने॥६॥ बाटे बगटधी केपी पापिन छे, लेबी नधी परोक्षनी मांच। एम चिक्तमां बहु भेद छे, समझु समझी सदाय ॥आ माटे मुलोसुननी जे

مراد المراد ا

बारता, ने सम निहं संदेशा तथी । सानती श्रणी सह कहें छे, नथी हीठी नजरे सामगी ॥८॥ कांची कागळ कोइ कंपनो, जेन नार अपार राजी वहूं । वन जगट शुन्न पियुत्तर्णुं, अञ्च जेतन्तुं जावयुं नहूं ॥९॥ आदे जगद अस्ति विना जापति, नथी नर असरने निर्धार ॥ निष्कृतांनद कहे जुनो निहाली, वर्षु अंतर मोहार ॥१०॥ कहतुं ॥१४॥

वत्तरती अकि सारमां सारजी, एमां अंशय जा करणो लगारजी। सारणे अजी काया कंड अब शरजी, जम सुग जानि वर
ने बारजी।।१॥ इल—वर बारी जपार बदयों, असु प्रगटने कामी
बळी। तेइना जेवी प्रापित, जभी केवी जो सांगळी।।१॥ जंनी
सांग जम्या रम्या जीवन, पुर्वास्त्र अवभाषार। इक्या अञ्या
अवस इक्रमा, कही कोण जाने एनी हार ॥१॥ के धूर्व श्वा
ररजद्यों, नित्यकों वाम्या नरवार। सदा सर्वेदा संग वहीं,
आव्यां हरिये सुन्य अवार॥४॥ एवं प्रभवासीनुं सुन्य सांगळी,
शिवजीने प्रयो अने शोण। कर्युं प्रभव जन्य पञ्चामानो, तो रेत
वहि कांच योग ॥४॥ एवी ए प्रगट मस्तिनो, वांस्य कर्यो सन्कार।
अञ्चाने जे भाग च जावी, से वामिया वजना रे जार ॥६॥ अञ्च
जित्र कीच वयो, वामवा प्रमादीकाज। ने वामवां गोपी गोवाळ
वाल, जे सोने च वाम्यो सुरराज ॥अ। वास्मिक बन्यापमा वानरने,
व्यासे बन्याणिया वञ्चामा । ते प्रगट भक्ति प्रनावयी, वाधियो
जवा विद्याक्ष ॥८॥ सन्नु प्रगट सेवी सुन्य वास्मित, तमे सांगळजो
सुजान मळी। बाबा कांचा रक्ता देनात, सुन्य वास्मा प्रभवसी
वळी ॥९॥ एम प्रगट भक्ति सन्नु वपरे, एपी ववरांच वधी कांच।
निरुत्तानंद निजे वारता, सीने समक्षवी मनमांच ॥१०॥ कर्युं॥१५॥

उत्सादि करको एम विवेकाती, प्रगटनी भक्ति सहाथि विवेकाती।
एइमे समान निह कोट एकाती, ते तक मने तो म मूलवूं मंकाती
।१॥ शक—ते तक सन्ने तो मन भूलवूं, सम्मे ओह रे बुं सामधान।
तेमां धोग्य ज्योग्य जोबुं निहे, राजी करवा भीनगणान॥१॥ वर्षे
विचारीने परंजये, युद्ध करबुं मो तुं अवर। यून जाणी भरजी जगवीचानी, स्वारे भारत कर्षों भरपूर ॥१॥ तेमां कुछ कुरुंबी समा

सन्तर्भी, सक्तों से अर्था सहार। म गण्या क्दी गुरु गोणने, सक्ते वसामा वार १८४१ एयू जनगरम् काम कर्युं, तेमां गया कंद्रकता प्राणा। शोष कुराजी कृष्ण मण प्रया, सामु कर्या वार्धना क्याज ॥५॥ ए अमे एम नम्म कर्युं, तेणे प्रश्न प्रया रखीपान। इस्थाएं भन्ने क्यां रब्दु, सक् जुवो विचारी वात । ६॥ एम प्रभु प्रगरेने, तह सम ॥में जानों जेम। तेम कर्युं कर जोलीने, वन चच्युं कीने वंभ। आ वजी विपन्नते प्रभू प्रमुख कर्या, निवृत्ति मृतीन प्रवृत्ति प्रवि । शेष्ठ जेवा भा जनकार्या, वीजा वह गणान्य नहि ॥८॥ मारे जे नमे अम् प्रमुख कर्या, विश्वाच वृद्धि हार जिननों, हुन् क्षेत्र म आजों प्रत्यो कर्या विश्वाच वृद्धि हार जिननों, हुन् क्षेत्र म आजों प्रत्यो वह ॥१॥ विश्वाच वे निवत्त्रधाने, कर्या वृद्धि भाति। विश्वकृत्वाचंद्र य वारता, अने वानजों के मोरी अति ॥१०॥ क्यां ॥१०॥

न्तान नामानी-संनो सभे सेनी नियो लामी, जेने अजतां रहे नहि नामीर; संनो । रेक-मटे लोका मोटी नामेथी, कोटिक टकीये कामी। पुरण लक्ष धमु अने पोने, बाम अनंतना वामीरे; संनो ॰ ११॥ जे प्रमु अगम निगमे कथा, रचा जाने करमायी। ने ममु आज जन्द बचाये, जे सर्वे नामना नामीरे; संनो ॰ ॥२॥ अनु एक व्यी नवी अजावयुं, जानो ए ये अंतरजामी। तेने तजीने जे अने बीजाने, तेनो के बाय लुकहाायीरे; मनो ॰ ॥३॥ जेना वर्षो व्यक्ते करे बाजी, तेनो बाब जाये बामी। निक्कतानंद के आनंद उपने, पूरण पुरुषोत्तम वामीरे; संनो ॰ ॥४॥ वर्ष ॥४॥

त्या पुरवोक्तम वामिये क्यारेजी, अन अनमां हि अवासिये खा-वेजी। आवो जवसर न वाचे क्यारेजी, एम विचारचूं वारमवारेजी ॥१॥ कल-बारमवार विचारचूं, वजमवा न वेबी वळी वान। सम्मे जोइने संबद्धने, हरी करवा राजी रक्षियान ॥२॥ अवकाइने अळगी वरी, सदा सबचुं वर्षचूं संत। अवकाईये दूःल वचने, बळी राजी व वाय जावंत ॥३॥ अंस भ्यता भूले भेजा वह, समा विना करे सेववाह। जोइ एवा जालेब जनने, राजा राजी न वाये कांइ ॥४॥ वर्षा जोइए अनु आगार्यु, त्यां मामरे वाये शुरवीर। कर्षा ओइक

<sup>ा</sup> गोलंद १ वर्ष

था कुं उत्तावन्तुं, स्यां घरी रहे घीर ११०। क्यां आंद्रुप शारपुं, त्यां करे इटावना होता। क्यां ओइए नमपुं, त्यां करे अमावना कोट ॥६॥ च्यां जोहर जागतुं, त्यां सूच सोड नाजीत । च्यां जोहर बोल्डुं, ला क्य करेंग्रे बाजीने एआ क्यां न जोडग बोलबुं, त्यां बोलेंग्रे यह वेवकृष । ज्यां ओहए बसर्युं, ध्यांधी क्यां। जायसं सूच ॥८॥ एवी जिंक को आवडी, केमां राजी न थाप राम । करवानुं ते करे वहि, करे न करवार्त्त काम ॥९॥ एवा संबक्त औहरि, पासछपी परा करे। निष्कुलानंद ए जरने, लंबना सुन्त ह्यं आव्यु सरे ॥१०॥

कवर्तु ॥१ आ

वर्त्त वसूनी जेने धन्ति व आवर्षाणी, तेने तो सून्य आवे
वर्षा वर्षाणी। माने जो सोक्य तो साने मोजवीजी, एवी अवजादनी
देव जेने वर्षाणी। ११॥ वाक—टेव वर्षी अवजादनी, सवर्तु करनी
सुसे वर्षि। एवा अकरी मानित, सुन्यदायक वो'ये सिंदे ॥२॥ वाणी
वाने तो आवे ववरो, अस माने तो आवे खंतार। वस माने तो
वाने वालगो, एवी खवजादनो करनार ॥३॥ बाम्य कहे तां आवे
विदे, जा कहे त्यां थ जवाय। एवा भक्तनी जाति, अति अवजी
वर्षि, जा कहे त्यां थ जवाय। एवा भक्तनी जाति, अति अवजी
वर्षि, जा कहे त्यां थ जवाय। एवा भक्तनी अगति, अति अवजी
वर्षा सेवस के इपामया, ने वामे मिंदे केहे मोत ॥५॥ वारे ज्यां
वर्षा सेवस के इपामया, ने वामे मिंदे केहे मोत ॥५॥ वारे ज्यां
वर्षा सेवस के इपामया, ने वामे मिंदे केहे मोत ॥५॥ वारे ज्यां
वर्षा पर्वे कर्द्र कार्या ॥६॥ व्यां राखे ह्यां वर्षा मिंदे कोत ॥६॥
सुकाय ॥५॥ एवा अन्यारी वरते, यर मञ्जाण प्रभु वकर । क्या
सुकाय ॥५॥ एवा अन्यारी वरते, यर मञ्जाण प्रभु वकर । क्या
सुकाय ॥५॥ एवा अन्यारी वरते, यर मञ्जाण प्रभु वकर । क्या
सौते कहे वालीय मा, वर्णा जनम राख्ये परती। तेले केती अधि
सोमधी, त्रव मानी कील्याम्य नरती ॥९॥ एवी अवजाह धार्थी,
वोह भक्त करे भक्ताई। निक्युआनंद ए धरते, वद धाय कमाणी
काई ॥१॥ वाच स्वांवती धायती, मरे व कर्षा कोई एवो उपापत्री। ओन कर्यु में अधु दृश्य बांपती, नरे व कर्षा कोई एवो उपासांपत्री ॥१॥ शब—सांप व थाय सुंद्रवर्ती घरित्र, कोई करें

सा'यजी ॥१॥ अब-सा'य न बाद सुंददनी अस्तिए, कोई करे हैं ENTER OF THE PROPERTY OF THE P जो कोटि वणी । परिचर्या पामर बरमी, ले सर्व सामग्री सकट-लणी ॥६॥ प्रमान वे राचे प्रमान अंबर, गरम जोपाडे वसी तोत्र हुं। समीचे करी लावे समही, कही एपी अवर्त्त हुं पहुं ।६॥ बसी वे राचे भरम पोपागाने, जमादे शरम ओजन । पाप पाणी पर्नु आपी, कहे प्रमु पाणी प्रमान ॥४॥ जावंत्री करनुरी गरम लावी, आपे प्रमाने एवा सुख्याल । एवी सेवा करे क्ल समझे, ले प्रमु समित ॥ १५॥ चोमासे चलावे कीववर्त, जेमां सुक्रयोगा होच समाह । एवा दास वृद्धम जेवा, जे करावे प्रणीवे कीव् ॥६॥ श्रियान प्रीमा जस लही, मवराव कर्तने प्रीरांत । पत्री कांवां प्रमुने पांचरी, माले प्रमु लही करी भागी ॥३॥ बसी चर्ने पहुने, एवी सेवाना करनार ॥८॥ समझी सामग्री कोचना, अव-लोचे मुससे एक । अन्य समझने एवी सेवा, करवी नहि सेवच ॥९॥ जो सामग्रे तो ओई समये, सेवा करवी सुजान। विष्कृत्यांद वरनाय है, वर्षी प्रमुम्लि पाणाल ॥१०॥ कहव ॥१९॥

वायाणमूर्ति वृत्रेशे अवजी, नेपण समये जोई करे मेयनजी।
समय विवा संबा म करे कोई ब्रजी, जाणे एम अभु न थाय असअजी ॥१॥ गण-असण करवा अनुने, समो लोईने करेशे संव। यण
समाजी सामग्रीए, वृत्रे विशे अतिमा देव ॥१॥ वरोधने यण प्रीते
करी, सम्रो जोई वृत्रेशे संबद्ध । त्यारे अनु प्रगटने पुजली, जोईवे विशेषिण विवेदा ॥१॥ समे दात्रण समे महन, समो जोईने वार्षिये वीर । समे चंत्र पर्विये, सुंदर प्रयापने प्रशीर ॥४॥ समे वसन समे मुचन, समे सजावणा पाणगार । समो जोई पुजा करवी, समे पंरावण द्वार ॥५॥ समे भोजन क्ष्मे भायन, समे पो'दावि पांपिये पाप । समा विना संबद्धने, संवा म करवी कांच ॥६॥ समे मामुं जोई रही, जोबी कर मयणनी साम । तत्वर वह तम कर्यु, रे'यू समापर सावधान॥५॥ सने दर्शन समे पर्यान, पूछ्यों ने प्रेम करी । समे पत्तर आंकडी, तम कर्यु भाषे भरी ॥८॥ समो जोई संबद्धने, रे'युं दाव जोबीने इजुर । सशा विनानी जो बारता, तेथी धासने रे'बुं बूर ॥९॥ जो असे जेबुं गम्युं इतिये, नेबुं करमुं कर जोडीये। विष्कुणार्थंद के' व भूगयुं, करमु कारण सम साम सोदीये ॥ १०॥ कर्मां ॥९०॥

पराण विशाणको—सरम वरणवंछ सादरे अववा करण, मानी पराणं वचन मानरे; सनवार । रेड—सन दर्भ वचने नामनरे अभी, बाहर अभिमान वादं । दान जोबी हाजीदाजी करणां, देदि म नग वंदे तरहरे; सनवार ॥१॥ आरम्ब वर लाक्ष्य स्वामम, एने वजना वयादं । तेने ताच आणी अभि तीन्तो, समुं करेछ सुनावर; सनवार ॥१॥ आण्यो बांकचरे विशिषा सरको, एवो न राजको वादं। देनी दने दरेह बया न आणे, पत्र साथामां वेजावरे; सनवार ॥१॥ देनमां वयम वादी सेथे देवे, शुं कविये वात्रो हजावं। विश्वसानद निज-कारज करवा, राजिये यहि अधारंदे; सनवार ॥४॥ वह ॥१॥

वर्षी अंचार्य वाधवे घरजी, ए रण विचारतुं वारमवारजी। सम-क्षीने सरस कर्न कुं कड़ी वेन्जी। तो बाय बाय हो होटानी से रजी ॥१॥ कळ- केर करे भोटी अति, जो चलुं रहिये वर्जवान । कन्य-ताइ सकती करी, बारी रहिये वर निर्माण हैंकी अवसाह काइ अर्थ व आर्थ, मार्ट शुद्ध वर्तेषु शुक्राण । अंतर कोती वर्ष करपूर, बोर्न विमा न तरे बोबल । है।। बार जे बाम जेवी जियमें, ने बीम व चाप सबो ओ कोट। तेने आगळ आपीत रहेली, जरी जाती जाय कोट ॥४॥ जेम श्रम अर्च होय एक वरे, बीजे जहे वहि जन-माई। एथी राजियं अन सक्त्रं, तो सुन्य व वामिये वर्षाई ॥ ।। बारे सर्वे सुन्व श्रीवृतियां रचा, ते दिना वशी जिलायमां । एव लमु जे वच सबसे, ते वर परत क्यांक्यां ॥६॥ जे वस व्यक्ती सोरवाका, ते सुव्याका श्री थापणे ! । अति अनुवन अवसरमा, बोटी बोटने व्यापण ॥अ। अमजनी भनि बारता, ते धेवदी हरि करी में र । एवं बारनाशी विजनी करी, वधी विक्रमा कोई वर ॥८॥ जेम अज्ञाल महत्वे एक छ, बधर बाहम एक बाक । बादबा बंदन वरीवरी, बळी कावेछ बीजो साव ॥९॥ वन पुरशेलम प्रगटनुं

g agent, it had-

पळपुंते के भौधा भूतनुं। निष्कृतानंद वर समझी, तेयुं भूता जनूतनुं॥१०॥ कवनुं॥२१॥

सुन्य जनोत्र पामवा भारजी, तम सब पन मर जाय एह लाटजी । लोग व मुक्तिये एक बढ़ी बाटजी, तो सर्वे बारता पर्ण वेसे पारकी ॥१॥ अय-पार वेसे वान सरवे, वळी सरे ने सर्व काम । केवे म रहे कांइ करतुं, सेवनां श्रीपनइयाम ॥२। सहुना मामी ने भीइरि, सहुता नियंता ने नाच । सहुता जाभय एह सेवली, सदाय पाय सनाथ ॥३॥ देवना देव जे अध्वंत आनेव, अञ्चलं क्यों सीना आपार । सर्वे सुन्यना बद्धी सुन्यनिधि, सर्वे सारतं क्य बार ॥४॥ धर्वे रसमा रमक्क अनुप, सर्व भूपना क्य चप । सर्वे लेजना लेज हे एज, सर्वे रूपना पण रूप ॥ ।। परापार जपार एवा, जेबी संबा करे सह कोप । ईवाबा ईवा परसेश्वर रोते, एड माम अन्य नहि दोष ॥६॥ पुरुषोत्तम परतका पूरण, सुलद सर्वता इपास । तेव नरतन परी नापत्री, सुल देवा आवे सम्बद्धाम ॥ अ। वन सर सरेका सरिका नहि, वहि ईश बजनम एड । प्रकृति प्रय सरिन्या नहि, नहि अधान प्रत्य सम तेइ ॥८॥ एका जंतरज्ञामी अविमारके, आवे जावे के जलवल । तारे सह वर बरते. सेववा जेवा वापणे सकेत ॥९॥ श्रोप अनुव्याकार जपार मोटा, जेनी सामधीनो यदि पार ! निष्क्रकानंद एत् वावनो, कोण करी काके निरंपार ॥१०॥ कवतुं ॥२६॥

निरमार न भाष अपार के एमानी, यही कोण जाय पार तेनी है माजी। मधी कोई एवी उपमा एने देवाजी, जेई नावे बयामां भी किए एने केमाजी ॥१॥ शब्ध—कई राय मिह कोई मरला, एवा मनुष्याकार महाराज। एने मन्त्रने सहुने मक्या, एने सेन्य सर्था महु काज ॥६॥ एने निरमय सहु निरम्या, एने पुत्रचे प्रापा सहु वेगा एने रुपाई महुने महुने पुत्रचे प्रापा सहु वेगा एने रुपाई महुने महुने भर्मा पुना पुर्वे प्रापा सहु वेगा, एने प्राप्त मर्थ, एने भाग अभी भा बात। एना दरहा स्पर्श करी, मर्थे काज मर्था माधान ॥४॥ सहुनी पार महुने भरे, नर अमरने अमम अनि । एनी मूर्ति जेन मन्त्री, तेन पुर्वे प्राप्त माधान ॥४॥ महुने सरी, तेन पुर्वे प्राप्त माधान ॥४॥ माधान ॥४॥ महुने सरी, तेन पुर्वे प्राप्त माधान ॥४॥ माधान ॥४॥ महुने सरी, तेन पुर्वे प्राप्त माधान ॥४॥ माधान ॥४॥ माधान ॥४॥ माधान ॥४॥ माधान ॥४॥ माधान माधान

बन्द सृति प्रस्त, बन्दी जाग बही विशेष ॥६॥ प्रनट समस प्रमद इयांस, प्रगट के मुस्तानुं बन्दी । अति भोटी एवं वारता, बन सक्तानी मानो मन्दी प्रश्ना एवं वाल आवी द्वाप जेन, तेने क्यी कही कोइ रा !। चरम चिनामित वामनो, सर्व वाननी संबोध नह १८॥ वारणा चरमणत प्रापति, श्रति सम्बद्धी अभाष । ते के वाल वाल नहि सुन्य सन्दर्भी, बन्दी वाल नहि केले वाल ॥६॥ सम्बद्ध आतम् वाल वालो, ततो प्रश्न क्या व्याप है। निष्कृतानंद निभे कहे, तह सम्बद्धा स्वतः कोल वालके ! १९०॥ कहतु ॥६३॥

गती सेवा करवी अदायती, तेइमां कमर न राजवी कांपत्री। बोटो लाग धानी धनवांपात्री, नकपर भन्तर है वं बदापात्री ॥१॥ शक-नम्पर हे मूं नक चचरे, शमाय चचाने परवृती । आच्यो अक-सर जोजनी, कारण कापणुं हेवूं करी ॥भा अवसरे धर्च सरे सचलो, क्या अवसरे बनमें बान । सारे समी माचवी, इतिने करवा रिके वान ॥ १६ जंब लोड लुकार में बती, ब्लोडेरे अमृति मांत । पण देव व राज्ये को लानजी, मी काम म सहे कोई ॥४॥ एम जानी तम् वय-दने, समापर रे'वं माचपान । जोर अरजी प्रवासाजनी, जनी मण्डि कर की जिल्लाम ॥५॥ क्रेम लियन नेजे सोनी परोपक्, ने बमादी केय परोची पाके । पराचे कोह होय श्वीण पूरा, नेव नने नैपार रहे नके श्रदेश एक अन्य आयुष्य आयणी, नेमां प्रगट कन् इसक बरो। जाये वन बादी जब बहि, बाय ए बाननो यह न्यानरो हुआ जेस सेह कोड केलरमां, एक तक वादवा जाय ! ले घेरे व लावे भरी गावलां, भर करे कोटि क्याप ॥८॥ लेख कार धमाण अनुने मुकी, चुकी समो वाच कावचान । ते आणे कमानी करहां, वन बाबू वर्ष स्वान ॥९॥ एवं वर्ष विवासी सामगी, जाणी लेबी वाल जबर । नियक्तमानंद निश्चे कहे, रहिये हरि होये ली हजूर धरेशा कवतुं प्रस्था

पराण विराणको—सन्तर रहिये हाथ जोबीरे इतिहाँ उन्तर, बीजां खर्चेती साथेथी कोबीर इतिहाँ । रेक—लोक परनोकतां सुख्य सांज्ञां, धन्य सानी व देव भाषी। भरिषी जस जेवां मांनी संबं, नेप्तर कोबी वहि खरी कोबीरे; इतिहाँ । ॥ श्रीराजी आंवय सुणी हैये हरकी, इती से ते म मांचीर कोबी। नेस अमुजी जनर वकी,

नश्री काम कोचे वहीरे; इतिहाँ ।। १॥ कही रोकडी डोकडी होच्य जाने, जाने साम व्यवदी कोडी। तेन प्रगट दिना जे मनीनी, नेनी नवुं मान्युं करी पोदीरे; दरिशुं । 184 बनद बनुनी भक्ति शनि जली, मर जो जनानी होत पांडी ! निष्कुलानंद निधे एव जानो, के अवस्थित नरका बोबीके बरिशं । शास वह गरम

जबजब तरवा वशिमानि करोजी, तेव विवा करवा शती भाग-रोजी। श्रांड जन चिने भक्ति जादरोजी, तेमां ननमन समन पर-हरोजी ॥१॥ शब---नतमन समनवे नजी, जजी लेका आवे अन-पान । नेमां क्लांजन क्लि वात्र , अवाद करी अभिवास ॥ ।।।। कोष्ट दीन बीनमनि पानवी, गरीब समेण रोगनी । मेनी वपर निम्बद्ध नजी, करको प्रवास सुम्ब संजोगको ॥३॥ सर्वे देकाचे शक-क्रमा, के जंगरजामी कविश्वाचा । रचे कोइ सुजवदी क्य. तमचा-दिन वयते बाम ॥४॥ अन्य जीयनी वयरे यन, राने बुगा अगि दिलवांह । वेन्नीयेन्त्री भारे कान्त्री, रूप्ये बाये अवस्था कांह । है।। न्यापर जंगम जीव जेप, नेप सर्वमा सुन्यतेन । पश्च पंची प्राजना-रीपर, करे एकि करवा वेच ॥६॥ इश्विजित अजानवाद, समा शक्षमा सुव्यवहरू । दीवपणु वर्षु दाव्यवे, एवा अवेद शुण अवृत् ॥ आ मापना अनि सर्वे अंग, असापना नहि अनुपार । एवा अन्त भगवानना, ले सहते छन्न बंगार ॥८॥ विनकारी मारी महिता. परमार्थी पूरा वर्ता। अधार मोटा अनाय मनि, जेर्ना समझक तथ जाय करी ॥९॥ एवा अन्य जेडवेज कर्स, रखे नेना दिविध नाय। विष्कुलानंद एक गायना, वदी अन्त ए निय्याच ॥१०॥ कवर्ष ॥२०॥

मक्ति करे है अन्त के बायजी, जेवी कोने जीव वन हान्यायजी। बहायमनो काने होते महियापत्री, समझे पारा लाही त्यावे सह सांधजी ॥१॥ वर्ष-न्यामी मारा तथा सम्बद्ध, सर्वे साशीवरे सदाय । एम जाणी दले काना रहे, रूले काये मुजधी दृ:नाय । मा अंतरजामी सामी मीमा हरी, देखेंचे भारत इसकी । ग्रं हं संवाई सक्त्यते, ए जारोग्ने परत्यत्वती ॥३॥ एम ५ क अगवात्रते, आसे शहरा भरपूर । नेथी पु:न्याय कोण दिलमां, जेने ए वं परनेते पर ॥४॥ ते कोच साथे कश्र करे, कोच साथे बजी करते छन्ने । कश्रो  कोणनी ने होड़ करे, हे जानके लाभी सपके । ता जना गुण शिराचे गावा वटे, नेशुं केम बोलाय कर्य वचने। केन प्रज्ञचा जोहर मेमद्रो, नेने देन्याबाय केम आस तने ॥६॥ तेन अधारना जोइए सुमने करी, नवे केम बचाचे वहि बचा। जेवे ओईए जस आपर्य, तेने व अपाये जल केय जब ॥आ एम समधी जन दरिना, करे असित कानि भरी आया। नेव विज्ञाना अस्त तेव, तेव कांचे क्यांत्वी दाव ॥८॥ वक अका से अनवाजना, तेने वन समन दोने वहि । जानापर जेह जब परठे, तेह साचा अच्छ का'ने सकी ॥९॥ एकी अन्ति आवश्यी, जेवां कसर न रहे कोई जाननी। विष्कृता-अंद व जूलकुं, राज्यवी करक आ वालनी ॥१०॥ करकुं ॥२६॥

कराव्यरी विकित्तां कोट व आवेजी, सबू अवने धने सुव्य पर-जानेजी। असवायमे पण एवी असित आवजी, से अस्तिने विक क्षणा सरावेजी ॥१॥ कण-सरावे विषय सद्या असि, असी जाने गुण नाय यजा। ने अस्ति जाको प्रमदनी, करनां कांड रहे नहि बना क्षण जेंद्र अफियाँ बानजो, क्षपट कांद्र वाने नहि। सदा अभूने वेले वासके, ने मोकले मने मा'से नहि ॥३॥ प्र परिने वर्षा देखता, सदा समीवे देखेंचे इपाम। तेर्नु विश्व चौरी करी केम सके, म करे न कर्यातुं काम प्रशाः जाने वने मद्यं से वनलां, करे करंदुं केह काम। रमवार्नु जाने रस रचनुं, जाने अवने सूर्ण है इयाम ॥५॥ अवने एव जे जिल्लुं, बरमे लियुं जे श्वर्ध रस । बासे जेह बास्र लियुं, नधी एथी अजाएयुं अवदय ॥६॥ यस येले प्रमुदे वासके, ने अवस्वपंत्रिमां मूने वहि । सदा देखे समीपे इपामने, साचा चक्त ने समझो सहि॥आ एका जन जनदीवाने, जानो मताबा मोचा वर्षु । सर्वे शाक्षमांती मूचवर्षु, महात्व्य एवा अक्त-तर्जु ॥८॥ जेड् अक्तने वा'ला अगवान हे, तेड् अक्त वा'ला है अगवानने। वस अक्तनामें (के भूकता, धनो गायाडे गुजवानने ॥ भा भारत होत्र भी एका अकभी, भेट्य धाव जबसाई। विष्कु-लानंद मो नरने, करयुं रहे वहि काई ॥१०॥ कवर्षु ॥२आ

करने इने के करी शीपुं कामजी, असि करी रीक्षण्या चन-श्यासत्ती । जे पनद्याम यथा शुलना पामत्री, नेने पामवा श्रुपी 

हैये हामभी ॥१॥ अन्य -हास इती हैये चली, मनु मगर ससवा काज । आ देहें करी के दीनवंतु, जार्च वर्षांधी ध-डे महत्त राज ॥२॥ अर नेले निरमीपे भावने, मुखोमुख दरीय वात । जावे अवसर एको क्यांचकी, जे ब्रमु बड़े साक्षात ॥५॥ अंगो बंग एने कळ्युं, तेनो बहा मोधो छ मेळाप। नो'नो वर्रोमो जिनरे, जे मकक जलकेली जाय ।(४॥ जमर्य रमर्य ओडे बेमर्य, एवी क्यांची वासीचे प्रसम् । मोटा मोटाने मुत्तकेल महावी, सुधी मदा रे'ला अवासन ॥५॥ सर्वे प्रकारे साक्षान संबन्ध, जेने अनि अनम श्रमाच्य । लेक मळे केम मनुष्यते, जे देखने वन दुराराच्य ॥६। लेक् वभाजी बस्तव वर्षे, बरतन वरी महाया नाव । तेण गर्वे रीते सुन्व लापियां, पापियां सहपी सनाच । आ इन्हों मही अइन बनीने, आपी असि जापनी। तेर अस्तिने अस बचापे, मागी सभग पर् पणी ॥८॥ अस्तिओं के भार भारे, ते जेने तेने जवती नथी। पुत्य-बाज कोह पामको, बारेबारे शुं कहीचे कथी ॥९॥ धगटनी परिक रिया, छ बानवीओ मांपी वर्णी। नियक्ताबंद ए जीलम निधि, सी समभ्रो हे सम्बननी ॥१०॥ करने ॥२८॥

दर्गण (बहुलहा-अन्तिनिधिनरे अंतरि संगी अफि, नेन श्र कहं हं बारमवाररे, संगोर । रेक-भक्ति करीने कें। सन्य वास्पा, वर अवर अपार । सुर वर मुनिजन सी को। बनर्गा, समज्या भक्तिमां साररे, संमो• ६१॥ कपि तथमी पनवामी प्रदासी, भाको भक्तिमां भार । जाने सेवा केम मने इतिनी, अंतरे एको विचाररे; संतोक ॥२॥ जादि अने सच्चे मोटव चान्या, तेनो असिः-पदी निर्पार । भक्ति विना भटक्षण म टके, भगवानुं भव पाक्षा-रहे, सती । ॥ ॥ तेव असि अगटनी बीछजी, अनि अनुप उदार । विष्कुलानंद वक्षी प चारमा, लेमां नदि फेरफाररे; संतो+ ॥४॥ पढ राजा

कर नथी रनि अस्ति हे दहीजी, दोपना दिवसनी धानजी ए मुदीजी। ए छे सत्य बान नभी कांई कृपीजी, अवज्ञक तरवा वृश्यिक्ति छे हुवीओ ॥१॥ सन—हुवी छे दृश्ति भगति, अवलख लर्था काज । धपार संसार समुद्रमां, जबर जाणो ए साज ॥२॥ والمعارف والمراب والمراب والمراب المراب والمراب المراب والمراب والمراب والمراب والمراب والمراب والمرابط والمراب सोसी प्रथा सिंधु लरगा, करी जुने जां जन कोए । नवाण विकालों विल्लां, रामसी लेखां जल सोच ॥१॥ नेम मार चिता अवदुल्लां, आवे शिह केदिये अंग । मारे अंग्रि अज्ञानकी, समझी विचारीने मंग ॥१॥ लाधा विना जेस मृत्य व आगं, तृषां वीने अदि वच भोग । नेम भित्र विना अवदुल्ला जाया, मधी क्याय कर्ष कोच ॥१॥ जलजीवन विन जेस नगा न भीज, रिव विना रखे गहि राम । नेम भित्र विना आरे सुल कळे, एवी रेले करो कोड वाल ॥६॥ जेस प्राचारीना मानने, जाणो जाहारमणों हे आचार । नेम भित्र अग्रवानकी, सर्वेने सुल देनार ॥१॥ जलवानकों अवदि ताल विना, विना भक्त प्राचार ॥८॥ जलवानकों, सर्वेने सुल देनार ॥१॥ जलवानकां जोस जल जीवन, वनवाने जीवन वन । नेम भक्त भगवानकां, रावे वीचे वादेर केमें । नेम भक्त म रहे हरिमक्ति विना, रहे विक्ते विना से से प्राचार । सारे विक्ते के वादे ॥१॥ सारे वक्ते न म्हन्तुं, वरवी हरिनी भगित। विचक्तानंद करे विजय वादा, आवरहं करवी अति ॥१॥ विचक्तानंद करे विभिन्न वादार करवी अति ॥१॥ वादार वादार, आवरहं करवी अति ॥१॥ वादार वादार आवरहं करवी अति ॥१०॥ करवां ॥१९॥

अति आदरतुं करनी प्रक्रिजी, तेमां कांद्र कर प्रश्नियो रतिती । वामवा मोटी वरम प्रावित्री, मादे राज्यी जदम एक मिनी

॥१॥ वाम-अति अवन एक राज्यी, वरोश जक्ता प्रमाण । जािनकवर्णु पर्णु आणिने, जेमें करवा द्याम सुजान ॥१॥ वाम्यवरी जेमें
सांभवया, अकितना वसी मेद्र । तेमनी तेम तेमें करी, वर आशि
अति निरवेद ॥१॥ केमेक कर कपाविषा, केमे मुकाविषुं करवत ।
कोई वेचाया अवन घरे, कोई वज्या वही दरवत ॥४॥ केमेक अन्य आपियां, केमे आपियं आंभिन । केमेक कविरण तामियो, केमेक आपियां, केमे आपियं आंभिन । केमेक कविरण तामियो, केमेक विष्यु वटी विष्यांना केमेक तजी सर्वे संपत्ति, राजपाद सुन्य समाज। अस धन वाम धरणी, मेही घोइन मखना काज ॥६॥ कोईक सरभया क्षमध्ये, कोमेक भजी सर्वे संपत्ति, राजपाद सुन्य समाज। व्यक्तिये, मोटो जावी महाराजमांदि मान्न ॥४॥ कोमेक तब करण कर्या, मेही आ तन सुन्यती आता । विषय करी हरि मळवा, कर्विये सरा १ वरिता दास ॥८॥ वरोश भन्त ए प्रमुनना, यना

1 सरका: २ देवली: १ कावली: w सांक.

अपि ए जामनवान । लारे प्रगटना जकते, केम सभे न रे हुं साव-वान ॥९॥ आदि अंगे विवारीने, करी हेर्चु काम आवर्षु । निवकु-धार्मेड् न राजदूं, इरिमक्तने गाकतवर्षु ॥१०॥ कम्बुं ॥४०॥

गाफनवनामां गुज रचं गजोती, पहनाहि अर्थ बगडे आप-भोती। वटी वधानाव बाव प्रणापनात्री, भागे केम जरनरो एड मोरनको ती ॥१॥ गढ-मारकारो एव कोटनको, वको वाके वर निजे करी । जे गए वड़ी बान राजधी, ने बमाच केम बारी करी । है।। वन म भारता अभुवंधमां, करेन वर्ष हरितुं काम। तीने व अध्या जन-दीकाने, सुन्ते गाया वहि पनक्षान ॥३॥ नवने व निरक्षा नामने-अवने व तुनी वृश्यान । ए जोव्य आगे केम तुनो जोबी, विशे चिनची चारकी जान ।।।। पशु पंची चलनमां बळी, आवे तन अर्थन । नेक भक्ताप वृद्धि भगवामने, एइ समझी छंदो शिद्धांन ॥'।। मारे प्रमुख्य देश जेका, एका वर्त कोह व बहेबाय। नहसाई समानी काला, बरनजना गुल गाय ॥६॥ एका बेहज वामीने, बसक य कथा परवासने । येने पाछा प्रदे ओरपी, समझी संजी सबु समन अका आया समाज आपना मधी, जुना भारतको देवने जिन्ही। से तम कोप पश्चपादमां, कहा बात हा समझ्या नवी ॥८५ सन्दर्शाय लेने अन्या, करवी विवस विवार । माजव देह बीचा घण, नहि भ प दलना ए हरर । १॥ मन्द्रे भक्ति बजावदी, यन दलन दम करि। निष्युक्तानम् नरमसन्, नशी शानु सक्षतुं करी तर्वा कश्यु ॥३१॥

करी करी देव गय अपने आयोजी, ते वीत कांचे करो कांचे राकाजी। समसी निचारी वृद्धिनांकामां नायोजी, अयर सुकाजा करी आयाचोठी ॥१॥ तक - स्थाप करी स्थाप सुकाजा, सन्व सुक्षणे समझी घटरे । स्थाप्य साचा स्थापन्त, भोषण कांच्यो कोच कहो ॥६॥ अस्र विज्ञासिक संधी चली, सल कांच क्षम उदा-विचे। जनकांमांची स्थाद हरियादरन केंग्र पाविचे ॥६॥ तंब सनुष्य देव मोंची घलो, सर्वे सुकायपनियो देवार। स्र विचयसुक्षमां वाचरी, करी करवी विश्व सुचार ॥४॥ सेम वसु यमादिती पावदी, करवी बगाधी करे वटोलियुं, ए समझक्षमां संवि वदो, कांच्येनु बोदी वाई कृतियुं ॥४॥ तेम मनुष्यवेद करी हरकारो, पेलियुं कुछ कुर्वने। दारो वह ए वा'काने, जरसाजी साद लोगो जंबने ॥६॥ केन कुंच जरी बजा वी तजो, कोई राज्या रेडे नई। ए जनजार राजो अगरी, जे व दरवानुं हर्युं जर्म ॥ आ तेन पूर्वच जा देश तेह, वर्षण हर्युं जनकेशी। इसे द्रमाशी सुं हरी, कोगो जानो विम्रह राजेशां ॥८॥ जाटे साहारम्य जाजी सनुस्वनमन्, ६८मूं समझी सबतुं काम । क्य अने व बजसाहने, जानो देश अति हतान ॥६॥ को रही तह कोट सनुस्यवेहे, ते आग्यानो अदंसो तजो। निस्कुलानंद नदी जनति, हरीने हरिने जानो ॥१०॥ कहरां ॥६९॥

कराग किलाको—अजो अधि करी जगवनरे संगो अजो , सानी पर मुं दिन वजनरे; संगो । देक-अधि विना आरे आग्य व साने, जाकि केजो सबु का। अधि विना अवकृष्ट व आगे, व का बावबुं सबरे; संगो । ॥१॥ अधि विना अरक्य व दके, सर करे कोटिस समय । अधि विना निर्मय वर वहि, करे सोसो को सा-स्वारे; संगो । ॥१॥ असि अंशार क्यारसुक्ता, निर्धिनपार्यु व वन । जे बामी व १ वे बामवुं, १ वे व सुक्तास्त्रवरे; संगो । ॥१॥ ने अधि मन बावबे बाये, निर्देशनरे; संगो । ॥४॥ वर्ष ॥८॥ विराक्त सब्दे, करो व्हिसेयनरे; संगो । ॥४॥ वर्ष ॥८॥

लेवा व बरे ने सेवब वाजोजी, वयो इरिवास वर्ण इरामी हाजोजी। एवने जन्म रचे कोई मानोजी, जंनर फिल के वारे पुत्र सोजानोजी।।१॥ क— सोजा करियों वोजनों, वयो जन्म भवमांदि जनों। नायों लोव साम्यां पुज्ञवा, वेणी आवादोष वस्तों।। माना वीवाजी लोट व रही, सबे वना वन विवविषद्धां। सारोसानों सबु कोई बड़े, वाम्यों का लोव सुन्य मिनदर्धां ॥३॥ ओजन व्यंत्रव वहु भागमां, वर्णा कने वासोगाम। यबदं सुन्य वन्य महेवने, क्यारे करी नित्रव वरी बांच ॥॥ बावंवर आणी व्यवयों, वसी अन्य ने भरपूर। जाव्युं कमर कोई वानजी, जोनां रही नथी जबर ॥५॥ एवो वारे वेच बनावियों, साने सामा संग समाय। वन वाधुं दशी वय वेसियुं, एवं आवि वयुं जज्ञान ॥६॥ जे जन्म-वर्ष द्वां आसी मुजनां, अन्यनक कहे के अववांह। जन्मक्युं नथी

<sup>4</sup> tr. 4 mm.

जामनं, जासंके डावधी दगाई 1931 जे सर्वे शुन्न कारितां, नइ वेवां कोधनी वासथी। जन्म जाजी ओकवाइ ओका, आपे हैंवे हुनासथी 1821) वसी वांती वस्तृ वितोधीते, जाजी जावे जाजी इरियास ! जाजे अरच एथी सरको, एवो आजी वरे विश्वास 1931 ने वात नवी तथासतो, एवो दिने दगादार के। निष्कुतानंद नर बस्न करेंगे, वन सरवाके हां सार ग्रेड 1834 कहनों 1838

भक्ति करे तेह भक्त के बायजी, भक्ति किया जेने वस व रे क वजी । जामोश्वासे ने इरिगुल गायजी, नेइ विना बीर्ज ने व सुद्रा-वजी ॥१॥ शक-सुवाय वृद्धि सुन्त कारीरको, क्षरिवृद्धि विवा तम्येकरी । अलंक रहे अंतरमां, करका परित्र आवे भरी ॥२॥ बमेश रहे हरण हैये, अली जाने अणि बरवा । भूनवे एक हरि-मिता, बाम व देखे हरवा ॥३॥ भक्ति विना सक्तिकहरी, तम करे का समझे वा । बीद क्षेत्रसम्ब सुनी अवने, बोजाव वहि सामचं वह ॥४॥ प्रक्ति विभानी प्रहि मरीमी, सदा विवह देश कोइ हाम। बादे भूकी व काके अगतिने, अति समझी सम्बन् वाम ॥६॥ वने प्रकारे वकी करीते, जानवा जीवनचा जेह जेह । ने अति जादरहाँ, जादरे, करी सहम्मन प्रकृत ॥६॥ अवसमन माय क्यारे क्यानी, आरे प्रगरे प्रेमलक्षणा । लारे तेह जन्तने बसी, रहे वहि कोइ सच्चा ॥ आ अरसर करस रहे एकना, सदा भी हरियी ओ साथ। जनराय अहि एकांनिकरणुं, चतु रहे हवामनी संवाय ॥८॥ एवे अनंद भगवावती, असिकाले अज्ञावी अगति । प्रक्ति करी हरि रीक्षण्या, करी रहां विक करबं रिन ॥%। करीचे लो करीचे एकी मगति, तेमां रच्यो सुचनो समाज । निष्क्रमानंद व दरीये, अस्ति लोक बेम्बाइया काल ॥१०॥ कवर्ष ॥६४॥

साचा नकती भेर वाय भाग्येत्री, जेवे जनसुम विमास नागेत्री | विमा निम्म हरियरणे अनुरागेत्री, नेह विमा वीर्त सर-वस सागेत्री ||१|| कम्-सागे सर्वे तने सने, यम विमय संबंधी विकार | माथे हरिनी एक जगित, जिन वयर सागे जंगार ||६|| जब जमी जन व्यवस्तुं, सूचे विदे तांणी वनी मोह | निवांच वाचा नायतुं, करे जलन सावन कर ओव ||६|| महामें नने करी देखियुं,

बसी अर्थे अर्थ पूर्व असा। ने स्वतुष्टे साध्य माने वहि, जो व पाय इरिनुं अजय ॥४॥ वधी यम विविध आमर्था, जाय्यां धरे ओडवा बार । ने भोती अन्य प्रयम क्यों, मोस्ती सुन्ने का नई बारद ॥'४॥ एके आप्युं नथी आध क्यर जाणी, वैय कतार वणी के तेवा काम । एक सावर्ष प्रवर्ष आपने, के आपको जीवनद्वास ॥६॥ वनद्वासने शिर वीच दिये, जैथे व कर्ष अफिजजन। रहे विचार एवं बातनी, इदियानांदि राम दय ॥ आ अदं म कर्ष आया केरलुं, इच्छया अन्य बाबा एकांन । तेनो बास कडु येवरवां आनां, सावा करे के कांग ॥८॥ यह बान वंच केश बेमची, श्री क्या ने हैवे जाहिये। बादे सूनां बेटां जागतां, अनि हेने हरिने संगारिके ॥९॥ एक जानेचे जब इरिया, ने जफिर करना भूने प्रदि । विश्वकार्यक् कहे वेश वरांसे, कोनड कमे कुने वहि ॥१०॥ कवर्ष ॥१०॥

कुल्यों व परे कोवर वालेजी, जन्ति इतिनी करे जनि जानेजी। कुल्यों न जरे अजरी प्रांतिती, वकी वान विना व वेले निरांतिती ॥१॥ शक-विरांत विवे वदी वान विना, रहे अंतरे अनि वनाय। कर विकार विरम्पा विना, अथ जनाय आप जिल्लाव ॥१॥ हास-भवावां से होत थे. ते इन आगात है ने वसी। बारे बोटन जाने वर्षि, समझे हे रीत ए सचळी प्राप्त भोटा भोटा कोरी ए कोला साब, करे जरित हरिती बावे भरी। जाने अस्ति विता भागको नहि. कोर एक कराव्यरी ॥४॥ बादै अणि आध्य करी, इरिअक्टि करे भरपूर । मन्त्रिमां जेवी जंग पत्रे, तेवी रहे सवा हर १८॥ आने से क्यमे अन्योजन्मनुं, दारिइय दूर वाय । ने क्यमनी आवी करे. तेथी वेरी कोण के वाच ॥६॥ तेम जिल्लाकी अववृत्त आगे, आगे भाग्य मोर्ड जानई। ते वियुक्तनी पान सांवर्जी, अंते भागस जब जाजबुं प्रश्रा जैय सङ्ख्युने स्वार्थ, साचुं रजेने सरवे। तेम इरिम्कने, कमर व राखवी भिक्त करने ॥८॥ भोटी कमानी जानी कम, सम करें रें बूं ततपर । यनी पान काप कमरी, को पृक्षिये का अवसर ॥९॥ जे तके के काम शीपने, ते वन तके वय वास । विष्कुतानंत्र निक्षे करे, ए एक समझत् वनमांच ॥१०॥ करते ॥६६॥

पर्यंत रह-संतो बनमां समझवा बाटरे, केंद्रि बेखरी विकेश  वाटरे; सनोक । रेक-जोई कोईने कोगुंके सर्वे, विविध जाने वैराट । मिक्त विना अववस्थानों, जानाों न वाप व्याटरे; संनोक ॥१॥ तथ वरीने जिनोबीमुं कोष, वामे बुं राजपाद । जाविषे अवव्य अवंड व रहे, तो की वर्ष वर्मा काटरे; सनोक ॥१॥ आटे भक्ति अवस्थावरणी, वरवी ने वीवाने साट । तेव विना तने सने तपासुं, वान न वेटी वाटरे; संनोक ॥३॥ अव्यत्वी वापा जाने छैपे वाका, एवं वावावयुं वदं वाट । निष्कुनानंद के निष्कु करतों, वयदे अवस्थ वद वाटरे; संनोक ॥५॥ वट् ॥१॥

भक्ति करी हरियां सेवदां चरणजी, बनवां मानी भोटा सुच्यां बर्जजी। तन नम जिनिय तापना हरजजी, एवा जाणी जन सदा रहे कारणजी ॥१॥ सक—कारणे रहे सेवच वह, केंद्रि अंगरे न करे जनाय। जेन वापेस बादाज तजी, तेने वहि साधार विना माच शरा तेम परिजनने परिचरण विना, वधी अञ्च बीजो जाबार । ते मुकी व राके तमे भने, जाशी भारे शुक्रमंदार ॥३॥ जैम पतिस्ता होप समदा, ते पति विना पुरुष वेले नहि । बीजा सोसी गुले कोई दोष सारा, लोप दोविन जानी देने वृदि ॥४॥ तेम अन्य भगवानशा, परिवासाने अमान । अनु विना वीर्ज व अजे बुल्ये, ते साचा संग सजाज ॥६॥ जेब वरेयरे बीहरं बंद म बोटे, लानि विना सुपासम होप। पितृपिषु बनी बाल परहरे, वच्य विये महि अञ्च लीच ॥६॥ लेम अम अमहीवाना, एक नेक रेकवाका के वाय । साति विदुश्यम सामीन वयम, भूजी प्रतारी लिये बरमांच ॥आ जेम चकोरनी चशु चंद्र विना, वच लोनाप क्यांडी लगार । तेम इरिजन वरिकृषि विना, अवर काले अंगार IICU एवं अभन्य भन्त अगवानमा, यमु विना बीजे मीनि वह । जब बचन कर्ने बरी, कीहरिका रखा बहु ॥५॥ एवा जन्मनी असिर जाको, बा'ली लागे बा'लाने मन । निष्कुतानंद करे नाधने, एवे क्रमे क्रमो प्रमुक्त ।११०॥ क्रमच्चे ।१६७॥

यसक वर्षा जेले राजकाजी, तेने कोई बाग व रही अगमजी। सर्वे लोक बाम बर्ग सुगमजी, एम करेडे जागम निगमजी ॥१॥

१ क्यां

कार जागम निगमे एन कई, रहूं महि करतुं पने कीए। सर्वे सुमानी संपति, आषि रही एका उरमांह ॥२॥ सर्वे पार के जापति, सर्वेदे सरे केंद्र सुख। ते वामेडे अन्तर प्रमुख्या, वर्षुवर्ष श्रुं कहिये हुका ॥ १॥ सर्वेशकर से ब्रिटोमिन, सर्वे महायपर से ब्रोप । उनुकी व सरस चया, कोच कहिये जालो एडी ओड समा सर्वे कवाचीने सरे कतानी, सर्वे साम्यवे सरे साम्य । तेह नाथी पूरण थया, तेलो जरित करी तेषु बाब्य । धा सर्वे कव्यवास्य कव्यक स्वयो, सर्वे जीवनर वह जीन । सर्वे लार्जु सार वामिया, क्षेत्रे वह बहु-कार्य तील श्रद्ध। क्रेम मोटा राजानी राजनियि, ते क्रमे वेशा केपाय वह । यस करानी व कमक क्यों, जारे सर्वे संपत्ति पनी वह ॥आ तेम संस्क सुन श्रीवृतितमा, बामा एवं कोष वालवी वयी । पूरण वद्यी है बावति, वतिक्षय हां कहिये करी ।।८॥ क्षेत्र व्यति वंत्रो र्थंगरे वटे, आकारो वसे क्यां जनका। एकी वंची तो एक प्राप्त है, बीको हेटो रको सबक ॥१॥ तेल अफिनकी था प्रकारको, वर्षा सरक जोपूं सोपीरे। विष्कृतार्वद वद वस्य पाण्या, से जलन है सन पुढ़िये ॥१ ०। कवर्षु ॥३८॥

196 wienfelte: 1330 | word women

नेषुं व सरे नवामियुं, जर करे हैचे कोई शाम ॥९॥ वारेवारे कको वर्णनी, अति भारे भक्तिमांही भार । निष्कृतानंद ने नगनि, वस स्वरती निरवार ४१०॥ कवर्ष ॥३९॥

जनर जनुनी अस्ति बकाणीजी, अनिवाय जोटव वरवांचे जा-भीजी। सबुबी सरस विशोमणि काणीजी, वह अकियी नयाँ कैया बाक्तीजी ॥१॥ वस्त--जाकीने परम पद पावका, वस्ति इरिनी हे जली। सर्वेक्टी सरस सार्थ, वरी दिवे काम ए एकसी ॥२॥ क्षेत्र तम राक्षका राज्यतुं, क्ये वह आवाको अनेक । क्यारवि विवासी रजनी, कही काबी काके कोण केवा प्रशा लेख जरिए जन-शानती, सबझो शुरज शमान । अति अंबार्ड अइंगानचं, ते जकियी हके जिल्हाम १४॥ समाना ने के नकतुं, इसतुं बेह सम जानने। ते चित्र विना आवे वहि, आवे इमेश वार्च हेराववे ॥६॥ दुर्वसना ने दीन है जूं, गरीयने गरह वर्ष । ते अभित विमा सब आखिये, को कोए पर पोनापर्यु ॥६॥ जन्ति दिना नारे नारतो, नाचे हही जाब मोरलो । जानुं कमाणी कारशं, लांनो बडरो बढयो मोरडो PM जेन कोवी हवी बाबा कातियाँ, बची कान्यो विकी बाबा वसी। ते जिसपों जुजरी बातपी, रखो जरवतो वच सक्यो जसी BCII तेम सच्छि इरिनी जाम व जाबी, जाबी जेस है श्रंबाई जान I जित क्रम है अब है बर्च, अपने जुलाने कर भरी कात ॥९॥ तेल जिल्ह न करी जनवाननी, करी संबाद ने भरपूर । निष्कुतानक प नरने, वर्ष क्यान जाको जकर ॥१०॥ कवर्ष ॥४०॥

करात करक क्याब क करचे ओहर संतो क्याबक, अनि अंगे करात कोहरे संतोक। कि जो आये आये तो करीये क्याकी, सावधी लाविये सोहं। वहिनो वेची रहिये चारके, वन गांडवी न आवीए ओहरे; सतोक ॥१॥ जो इचकी विये दरियालां, जोतीनाक अने भोड़ी। तो लाविये सुकत सहाभूतां, वन गाविये वेड बचोरि; संतोक ॥१॥ जो जाय अस जान्हची ना'वा, तो जावीये कितविद्याः थोई। वन सामु व लावीये समझी, वाच वरतां ते होरि; संतोक ॥१॥ तेच क्या वहं वर्षात करीये, वरिचरके चिन होतं। निरमुक्तं के तर वर बुकी, म जीवीये जवन बगोहि; संतोक॥४॥ वह ॥१॥

श्रीवन बगोईने जीवर्षु ए जुडुंजी, एतो वर्षु जेम मा' सहिने माच-हुंजी । विचाये वे'वाणी सांजीमां एनहुंजी । एइमांदी सार्व हां वर्ष क्कडूंजी ॥१॥ कर- मार्च ते क्ले ह्यूं कर्यु, वाणी वर्व व योगो लेल । क्षेत्र हीगो गयो नंगाजीये, बादे दुर्गेशीनो भरेत ॥१॥ तेव अस्तिनां कोष भाषी अवयो, पण व टक्यों जातिकतात । रावी वृतिकामा बासनी, निव काम बाबा केराय ॥ ६ ॥ जेम सिंचु जोजन सरे छा-काती, तेवी चार केवा करे परियाण । ते समझ केव समझीये, जे राज्यो राज्या पायाच ॥४॥ एवा एवाने जागले, जोला वरे जन्त्रिनी दाल । जेनी शास्त्रो शास्त्रो चाची लई, ते केल रे'वा दिये चल ॥६॥ प्याने कपदेश देवी, एवी करवी नहि केदि कोछ। से ए जरित अति अजारको, एको वसे व राजको होत ॥६॥ एव जाव विदासी अगति, यर करी वाके विदे कोच । अभित करके मारे आगय-क्षात्रा, से वारा कावाव होच एआ सेना हरियामां हवि चनी. मिक्त करवा भगवामनी । तेने भक्ति विना भावे नहि, करी सर्वाच रहे आवरावती ॥८॥ मन्ति विना प्रदासोकतमी, समन्त्राचे नदि क्यांई सन। राम दिवस राची रहे, साचा के बाप से इरिजय ॥५॥ प्रगट पञ्जनी भक्ति विमा, केने प्रवक्त कवपत्तम वाय। निष्क-कार्यव क्या अकरने कर्षे, इति हते सुगतुगमांच ॥१०॥ कवर्षु ॥४१॥ तुमोजुम जीवय रहे जब हेलजी, जे वये सोर्चु तब वय समेनजी । सहयां होती सेने वसुतां जोती वीनजी, एवा जनजी कर्त हुने रिनाजी ॥१॥ शक—रीन कर्त इरिजनाजी हुने, जेने बस विना पता न रे'वाप । तेल कका विना क्षत्रना, पता एकना नान जाय ॥२॥ असून सामे तेने सून जेर्चु, पंचासून ने पंचसमान ।

ताय ॥१॥ अधून हाने तेते तृत केर्नु, वंचाकृत ने वंचल्यात । शब्दा लागे शूक्षी मरणी, जो आके नहि अगवान ॥३॥ अधिवंश लागे वंक्षे वेषवा अर्थु, बाका लागे शिवपर नाम। हरिसेचा विमा हरिजनते, जरुप युक्त थह तथां जाम ॥४॥ वश्री सुचन कामे तेते जामसी, संचल ने विचल सरणी। कीर्वि जाणे कवके जरी, सुजी विश्व जाच हरती ॥५॥ निराची बदासी निर्मेशने, यह वयजमां जक्षवार। हरि विमानुं होच चहि, हरिजनते सुच कमार ॥६॥

s des le mit.

श्वर्ता व आवे निहा केने, जनता व आवे क्या। मन्ति विना इतिकारने, एक बरने रात ने इन ११ शा गान ताने वाल्य सिंह सर्क सम, ताव काने नाक्य नय। वस्तुं विचय काली ने वरहरे, मन्ति विना आवे नहि धान्य १८३१ जन्म विना केना वंत्रणी, धाम पीका वाने बहुवेर। क्या अन्तरने आजी वजी, शहायश्च करेके में र १९३१ आकार तुल इतिकारमा, ओहर एका क्रमणी करते। निष्कुणार्वह कहे जाव क्याची, यक एक रहे नहि हुर ११०३ कराई ११४९३

क्ष म रहे एका समजी इचालजी, शतदिन राके पनी रकका-करी । जेल करती नित्त जासचे पाजरी, एवं वनि कृपा राजेंग्रे इताकती ॥१॥ तक भूताक एव कृता करी, अमेलवे करेके संजा-क्षता । तिले वजीव रही सावजी, प्रकेषके बरेडे वनिपालना ॥२॥ धानों पीनां सुनां जाननां, वणी राजेके श्वर वरी। बढ़नां बेसनां चानती, हरेके संख्य जीवृति शरा वर जनर नमुजादेवी, रका करें हे स्थापति। जुल जैरव भवागीमा अपने, रामें ने रोकी जित ॥४॥ अंतरकाषु व दिये केदि वदचा, निश्ने प्रतिने निर्पार । निज-भक्त जानीने बाकती, का'तो दे'ती करे करी वा'र ४५॥ बोलाने रीका को बचने, तेने गणे नहि पनइयान । एक अवस्ती निक्य भागवा, रहें हे नैपार आई जाब ॥६॥ देखी व पांचे पूज्य राजनुं, समुजेटलुं रच अधिवाश । जाने सुच लारे अस्तर्थ, क्यारे शक् लगवा कास ॥आ साचा भक्तनी भीवरि, नदा सर्वता करेंके सदाय । ने तक्यांने कथान जन्मनां, इतिये इतिमीना नांच ॥८॥ एवा अन्त्रज्ञा अनवेत्रको, पूरेके पूरण कोत्र । तेषु विज्ञाना जिलांच्य केवा, रखे राखी वर्ड कोई डोड ॥९॥ एक जेरवजन बीजी जगति, ते अन्यसन्तर्भ जोने नहि । विष्कुतार्थन् वदी वारता, से दे वारी करी से कवी ॥१०॥ कवर्च शहरू॥

अस्तिविश्व श्रा शंच के गायोगी, जिस्तो नेह तेने क्रणायोगी। शास्त्रीने पड़ी जन्म जन्मे पायोगी, लारे पीओ वंचनथी ज्ञायोगी।।१॥ कन-वृद्धायो बीओ वंचनथी, नहेंगे राची साची अभी जिस्ते। करा योगानी स्वर सरी, पट्टेंगे रोगाने तहिये॥२॥

<sup>1</sup> truck

विकविषे विचारको, वादको अध्य सन इव करी। अध्य विना कोइ अर्लु करणा, जाकको विद् अवना करी ॥१॥ सङ्गी सरस शक अर्ज, जिक जाति जगणानती। तेने तोल तणस्तां, विद जवे जोड ए समावनी ॥१॥ एवाने असि जाति आवको, नावको गुण अध्य तथा। जाकको शोताना जीवमां, जो असिक्षी वर्षणां वचा ॥५॥ बोदेमोदे वजी विद्या, जाकपो असिको आरे वहूं। ते असि हातु वक्टनी, समञ्ज समझी सिपो सङ्ग ॥९॥ वीजी अध्य जन वहु करे, तेमां रहे नथतुं वनतुं। एव अगर शतुनी अस्तिमां, रहे नमतु अग-वानतुं ॥३॥ बादे कोइने ए करतां, आध वालो वर्षा वित्तरमां। वशी बील वांची अधिक वरोक्षमां, वर्षु आव्दी वेशं वरोपरमां ॥८॥ क्रियां आवर्षु क्षेत्रे वेसतुं, तियां असी वया अनतः। एवे असे आ अकांच अरियुं, एवल आवसी विगत ॥९॥ साची अधिक श्रीवृरि संची, वर्णनी वारम्बार । निन्दुकार्यद एवे तरि करे, सन् सन्व

पराम परम—निर्धारी है निगमे वागरे संतो निर्व । धारे बित्र इरि स्त्रीयांतर संतो । १६—विश्व विता जबरोज व वासे, स्त्रे हुंचा दिनदात । अस्ति विता जबका व जाने, समझी लेखें साकातरें, संतो । ॥१॥ अस्ति करिने जच्च द्रिया, वजीवजी वर्षेया वात । वस्ति करी जारे जाग्य जाने हे, तथी ए वात अ-क्यातरें; संतो । ॥१॥ अस्ति करे ने बक्त इरिता, जोवी बहि तेशी बात । वन्य वस्त्र ए जन्तुं जीवन, जेथे अस्ति करी जसी जातरें; संतो । ॥१॥ वस्ति करी करी बोज जेथे सीधी, तेथे वया जन्त ए क्यात । निष्कृतानंद के वाथ बद्धीने, दिवी अस्तिनी दातरें; संतो । ॥१॥ वहा शरी ॥

क्तन बोड वक्तनमुं—अस्ति है अवज्ञा बहान, सिंगु तरवा शुन्तक छ ए। समझीने जुवो सुजान, नार पतरवा ए जनुत है ए ॥१॥ सन—पृष्ट जावधी जो जनार, पत्तिया जर्मवने ए। म भाष तेनो निरवार, तो हुई कई तेना वर्णवने ए॥२॥ वस ने नीच जनंत, पार सहने वोत करे ए । एव जिल्ली जानजो जन, सुन कर्म भाग्या सरे ए॥३॥ यन्य ए जिल्ला झाज, तारी तरीये तीर कर्या

ए । पामिया शुक्त समाज, ते विक्त होने सर्यो र ॥४॥ नेटर र वंदीने मार्थ, पुचवानी मो विक रखी ए। करतुं रखं विक कांच, प्रवादोक्ताना वेठा पाळी ए ॥५॥ संतने ए सुनक्ष, होबी दनी इरिमननि ए। कोण निश्व कोण गुप, सबूने आवे ए सुन मनि ए ॥६॥ एवं विया वर निरचार, पार ते काई पाम्या वृत्ति ए। इर्ष कदिये बारमधार, सब समझीने करो सदि ए ॥ आ बचाची वा'नरे तोत, मन्ति अनि भव तरका ए। जाने जाने हकामी है, केने व रहे कोइ बरवा ए ॥८॥ अखिली वर जमर, जहुर वस बहुर्या क्षं प । सवा सुना धावानुं घर, जन्ति विवा कावनुं वह व ॥१॥ मित्रपूर्य सम्बाम, आवंते सक्षरपानची ए। क्दी ए बान निदान बहुती करावचार वची ए ॥१०॥ जेजे वर्षा बक्तार, से जन्मनी विका जोहरे ए । तथी थानो निरपार, के जाने ताच्या बीजा कोइपी ए ॥११॥ जोई जीपुंछे जबर, अविवासीई जांदी जावतुं ए । जन्ति भागी मरपूर, अन्तर्नु पुन्त बसावर्नु ए ॥१५॥ वे विमा क्यों नवाम, क्रमचलो जांडी आपे नहि ए। मकियाका असपास, रेवा आवे वीके आवे वहि ए। १३॥ बीका क्यम करेंग्रे अवेक, रण भक्तियाला आये धर्ण ए। तेवा तमयवर्ण ए हेक, के करवा ममनुं इतिमनुं ए ॥१४॥ एवा अन्त से कोइ आविक, इतिमन्ति वि-मा आये वृति ए । करी अंतरमांग विवेक, ग्रूम बीजानो माथे नृति ए ॥१६॥ सर्वे साधमवादि सार, भक्ति कवात बंचनते ए । रासवी एनो आचार, विश्वास पा'लाना वचनतो ए ॥१६॥ हो पामिने परव वानंत, जित पाये कोया जंबनी ए। एवं के के निष्क्रवानंत, सर्वे रपर सम्य बढी ए ॥१ आ संयम संदर कोमजीम, बस्म अगाउ क काविये ए। केर सुरी बीमी दिवेश, अंग पुरूष शरमाविये ए ॥१८॥ वो सोरका दोवा दोच, श्रंपाजीय कवर्षा दवीचे ए। यह एकाव्या कांच, तेपर एक योग सहित ए ॥१९॥ गंच शह्म पर बाड, असि: निधिनां परम हे ए। यह सुने करे पार, तेने आवयकरण हे ए॥१०॥ हवी जीसहराज्यकामिकिक्किक्कानस्युभिविश्ववे श्रीकमितः संपूर्णः ।

नकितिकि सम्बद्धाः ।



श्रीकाविनाचारणे विजयवेतचार्। श्रीनिष्कुलासन्दमुनिकृत⊸ काञ्यसङ्गृहे

## हरिवलगीता।

यन वनावी—वंगळ भूनि भीपनश्पामजी, शरकानतमा सहा सुक्त वामजी। पनित्यावन प्रणकामजी, जयम बदारण निर्मय नामजी ॥१॥ वाक्य-नाम निर्मय निगम कहे, वे समरता संकर रखे। हुक्कृत केह देहवारीमां, तेह वापना पुंज बळे ॥१॥ पुरवोत्तम मारनुं, नाम निर्मय निसाण। जे जम जीने बबरे, ते वामे यह निर्माण ॥१॥ वे नामे वामी गुणका गति, वयो भजामिसनो बदार। भगवित एव नामपी, पतिन वाम्या भवपार ॥४॥ केरी लरी दी-नता करी, करी भारतम् जरहास। अभी सम्य बवारतां, जाव्या वारे अविनास ॥५॥ कामुकिनी करणी कसी, जजामिस निह अ-वहीण, नारायणना भामपी, वया पर निम्ने प्यान करवा, य छै निभि जमुस्य ॥४॥ जय तथ तीचे जोग जगन, वत विभि हिये बळी दान। निर्म्हलानंद नारायणना, नाचे भाम समान ॥८॥ क्यां ॥१॥

नारायणनामनो मोटो महिमायजी, सुण्युं में सर्वे वान्त्रमाय-जी। जीव हेन अर्थे एयुं निह कांपजी, समझ समझी समरी समरे सदा-यजी।।१॥ राम-समझ समझी समरे, निर्वादिन मारायणनाम। बास दमासे संभारतां, पळ पाने निह विराम।।२॥ घोषजी मा-शास्य समझी, करे अर्थंश नाम दबार। सहस्रमुख्यां जुगल जीने, रटेडे एकनार ॥१॥ १थु महिमा विकीने, मान्या द्या इजार कान। वारायणनां नाम स्थान, अनिदाय बरमां ताम ॥४॥ हिरण्यकविष्ट

१ वर्षेणाः

अवने सांमक्यों, नारायन नामनो वाद । तप तजी त्रिय नजी, तेना बया अन्य प्रकार ॥१३३ व्हाद धर्मी तीमधूं, नावे अव्या शीमनवान । जनसङ्ख्यां अन्य थया, नाम बनावे विदान ॥१॥ विश्वीपनने जन्म बार्चु, नोचे शक्तसङ्ख्या (ति । पन लेजे अवे जन्दीसने, ते पाय सर्वे प्रतीन ॥३॥ जसुरद्वत ने अवे अर्था, तथां एवा जीव जनंत । निष्डुलानंद नारायन नामनो, निहेशा योदो जन्ने ॥८॥ सद्युं ॥ १॥

भवज्ञ तरवा ववद्याय वाच जावजी, जावी वेसे एथां कोड़ रंग के रावजी। वाचे जववार संज जावायती। तेद विमा तरवा जन्म न व्यावजी। है।। क्ष्ण—व्याव नवी जा जीवने, जवज्ञ त-रवा काम। वारावणमा नानक्षी। जाजो अजर ए द्वाच १९॥ क-स्थ तुंगां वनावीने, कर्षु कटिये वांचे कोष। यरे व जनरे सिंचुने, के जाम जमाय के तोष। है।। तेम सावन सर्वे कविये, तुंचा स्था-को तुल्य। तेने अरोसे व जय गरे, जाय जमन अपूल्य १९॥ मारे वक रावी व्यावसीने, रहेचुं निर्मय वरने नर्वेता। पतिनवायन विद्य है, ते तज्ञ पहि कोई कि १९॥ एवं विचास अंतरे, राजी तज्ञे वीर्स वक्ष। तेद वाजी वत्तरको, असी आने अवज्ञक १९॥ जयक बाज्य वर्षा, ब्रह्म ज्ञारमी मानज। च्या कम के क्यामी, ते वामे वरण कल्यान १९॥ (सरे ए साची वात के, वीजी जोटी निर्म तेपन करी। निष्कुलानंद निर्मय रही, हेन्छुं अज्ञा हरि) क्यारे पोन म तारे पायकने, तारे कालनरणको तुंचको। निष्कुलानंद ए नावनां, वर्षाण केन वाय वर्षा १८॥ कर्ष्य १९॥

पह बिना बनाय होय कोई एकजी, केंजो सबू समझु करी विने-कजी। एइ बिना सायन बीजां जनकजी, अनि अनि जनिये कडी कर्नु बेकजी ॥१॥ क= अकि नेनो निर्मय क्यों, जोएप निश्चयनुं बरने और। जावना निर्मय विना, अनि रहे बंबावं थेर ॥भा पूर्ण पुरुषोत्तान प्रगटी, मर्भन न परे बाव । तेह सूर्ति जेहने जले, ने सर्वे बाव सनाय ॥३॥ मनुष्याकार अपार सामग्री, जेह समे परे जेह बाव। तेह बाव समरतां जन, बाये प्रज्ञान ॥४॥ जेल बेशुं करे कोई स्थोमनुं, तेनी कासी न अन्ये कोट । तेन नाम पनइमायने,

वाय कल्यान कोर ॥६॥ जेम इर्नुमां क्षमित नहि, वहि नकेसांति संवार । तेम मह मगरमां, को व असंगत निरवार ॥६॥ विशुत व तजे वहित, दितकात व तजे श्रीवंद । तेम कल्यान बहाराजमां, रचुं अभिवाय क्षमंद्र ॥ आ वह दक्षांतर वर यहि, हे वुं वि मंद्राय निर्मय वसी। निष्कुतानंद निर्मे कहे, सन्द मानजो सह वसी ॥८॥ कर्षु॥४॥

वन्ताय कारेते ककार—विका बसा एवं बात के, तमे सांबक्ता सबू जारें। अंतर बाद जाजित के, वर्षच्छे बादे वे विकारे; विकार ॥१॥ कार्य तृत्यु वात्राध्यमां, वर्षे सीशीयं अपूत्री साजरें। देव दावय आव्या जब तृति, वर्षे शोखियो सुरराजरे; विकार ॥३॥ निर्देष अप कोई जजरे, तबी आवतां निर्पाररे। बाम कोच तोच मोडमां, सबू व्यं अपां अवाररे; विकार ॥३॥ व्या अवगुण अवनोधीने, वृति बरे केत्रं कल्याचरे। निष्कुतानंद तैयं भाषनं, डाटरे केरो वच्यो परमा-चरे; विकार ॥४॥ वया ॥१॥

करारे शुवे जनना अवनुष अविनायाजी, जारे कोई होय नहिं विरामाणी । योगनायन नामनी से आवाजी, तथी कई सबू नाय निरामाणी ॥१॥ का—निरामा वाप नरनन वारी, जोई संकाननें जोर । जन वनन कर्ने करी, केहि वह नहि दरिना चोर ॥१॥ कांनी नन्धां घोणने, कांनी वनने कर व्यक्तियार । कांनी कामादिक कर्ने करी, वारी रखा वर मे नार ॥१॥ शुद्ध अंनरे वोधनां, जोनां न जबे कोई जीव । जंनर एवा अवनार्काने, कहा प्रमण वाप केम पीन ।१४॥ बारे कल्यान कोइनें, धानयों मां मनमांच । निष्कलंक एया विना, कारण न भरे कांच ॥६॥ अविनायरिनें ह्यं वपन्युं । निर-वंद वर्षु अरनम । वारायणमा पामनें, अपहरण नहि मजन ॥६॥ वेद पुराने वर्णस्यो, जनेक जीवनो उद्धार । एवं वाननो अंनरें, कहां केम वास निर्वार ॥५॥ भागी वर्षु अन नर्जु, वास उन्हीं न रहीं एक, निष्कुतानंद नर्शनावपनी, प्रस्थाने आवित्र नेकारिन क्यांच्यी ।

वीन राइन देइचारी व होपजी, कीद होचमां विश्व जोपजी। कर्लकरदिन सुच्या विश्व कोपजी, विश्व अनमर्थ समर्थ इना मो-पजी ॥१॥ शब—समर्थ दिश्व बच्चा मही, ने जाने सह जन सोप।

१ कल्या, १ वर्ष, ३ मेजबी, १ कर्प,

वाय नाग्यों से दोयने, ने कहंग्रे सबू कोय 1211 हंद्र बंद जाये कर, पुर कसुर समेक । सबूनुं अवने सांजवपुं, निवृत्ति निह एवं मेक 1121 (इंदिराये अग्य जवनोकियुं, जोने राजाये कर्यों तेन ।) कृष्ण कायिनी कामवत्ता वर्ष, सुन नांच सम्बुल्व जोई । जव्ल्या रेजुका दौवरी, निवृत्ति व दीठां कोई ॥४॥ वराचार नारद सौवरी, समकारिय से सुजान । विस्तंत वसी विश्वायित्र, एकलग्रंती वसाल ॥४॥ केनेक काथे रोसीया, केनिय नीची कोचे खाता । केनेक कोचे कायर करी, रोसीया रंक राज ॥६॥ एवी वानो जनरे, नोसी करवो नवास । वारबी निव्यं क्यी वार्षा । निष्कृतानम् ए तथुं नवी, एक समको सुजान ॥८॥ कद्युं ॥६॥

एकी कानी आने वह धरंत्री, नथी के कानी तोवल करंत्री। एक रिने आज की केनी रहंती, वल एक सहनी ओटव व लहंती हरें। इक—ओटव न गई मोरानची, ने नारायणने निश्चे करी । अनि-वज आअवनं, नेचे संसपने नीपी हरी ॥१॥ तुंदी वासना अच्छने, जो जब अंतरमां थाए । समसे वक्ष मायननं, तो सुन्य न रहे कांच ॥१॥ नारे वक्ष महाराजनं, राज्युं हरिया बांच । नेइ विना अच्छन्त टासवा, जन्य नथी पवाच ॥४॥ एकी तिने जनेक जीवनो, आवे वजो उदार । मार्थक भर्चे वया, आमान हरि अवतार ॥५॥ एक विना जनेक रिने, वसी वान न वेसे वंच । देवी आसुरी उद्ध्या, ने शीर-रिने सबंच ॥६॥ ज्यनि शीमकानाजनी, नहानियि संगक्षक । जावे जजावे जे जाकरे, ते वाच शुद्धकरूप ३०॥ जजावे जन्य पानवी, वर कार वाच आव । निय्कृतानंद नारायण संबंधे, रचवें नहि वंच पान ॥८॥ कहवें ॥२॥

सापन सर्वे सप्तानां सत्ताती, एइमां १वे वनी जमताती। ता-नवां नरने नदी करी नित्ताती, नियन पढे न दारवी दियलाती॥१॥ शब्द—वियन पढे व्याष्ट्रस थह, अति वाधुं नदि पदास। पतिन वापन नापनी, वधो राज्यो विश्वास ॥१॥ जोसाहए कहि भूत्य पढे, वाप न करवातुं काम। नर निसेतुं वस तहं, समरवा पनद्याम ॥१॥ क्याह कापर वहं, वाण न भरवा वतः। देवे दिसत न हा-

त्वी, बंदपूं रे'तुं सुवानम् ॥४॥ वदनां जानवर्गा राष्ट्रम वंदे, जानवुं चिने वरी जाद । वदी व रे'तुं दूधवी, तेवो वनो वद राष्ट्र ॥४-॥ क दर वो'वर्गु जानवुं, जीवरिंधी इंद्रूर । कोवने वंध कावर्गुं, वस जानवुं तब जदर ॥६॥ भक्त वीचे भगवानम्, जब वधव वर्गे दरी । विश्वे वर्षुके वाधनुं, ने दरके विदे देरवे दरी ॥आ जनव जानी व जावारो, न्यून जानवी विदे तम । निष्कुनानंद व वारमा, वदी विरक्षित्व ॥८॥ कद्युं ॥८॥

न्त्र केच-नृदे सांश्रम आयुं शील । १ वस के-भीतर क्ष्में सामानेरे, जोइए बक्के अरपुर । बीजी बान से बाइनीरे, तमें साची सेजो करा; जीतर । ११। जेव एक एकडो राक्षिपेरे, वसी वाखि लोपेक प्रान्थ । बुद्धिवान ने बेरज बांच्यीरे, तेनो समझण्यमां भूत्र्य; जीतर । ११॥ तेव लेनी वस समाराज्येरे, सावनदी नामवी साथ । वरी बोसी वारि वनोवनरि, वनरे बहि बांच्या काय; भीतर ॥१॥ वारे बनसे सोटो बानवारे, वपर बनुनो बनाय । निष्क्र का बंद तेव सरवारे, हसी काये कंतर नाय; भीतर ॥४ ॥ यद ॥४॥

इरिनी आक्ना वाजनी वनजी, धरने करवां सर्वे सावनजी। तेवां कांत्र केर व पावनो जनजी, वनर वसूने करवा वसक्रजी ॥१॥ गण-क्रमण करवा जहावसूने, रे हुं आक्राने अनुस्तर। जेजे केना वन है, तेने वाजना करी प्यार ॥१॥ धर्मे राजी वर्णना सून, वर्षे आपूनो वाजनार। वर्षे धारी सबू रचा, चार वर्ष बाजने चार ॥१॥ तम वर्षे कागीनजा, निर्मों की निष्काच। निःश्वी निरमानिना, निः सावी एवं बाज ॥४॥ तेमां केर एक ननभार, नव वहना देवो नेव। सुवासुधी मूक्वी वर्षि, यूवी लागी एवं देव ॥५॥ मुज्यी बोजी वा-रमा, भूग्ये आव्या करवी वृद्धि। वजे सहिन बोलक्, सबूसकृते वर्षे रही ॥६॥ कायरजी वाले कावने, ना'वे शुरानन साथ। अपुनक न-रथी कावने, पुजनी वासि व होच ॥९॥ बारे हैंचे विमन वरो, अने करो करो केना। निष्कुलानेदनो माध्यी, वाले राजी अन्तवेत ॥८॥ करवे ॥१॥

राजी करवा बगर भगवानजी, समामधे सबूते हें मुं सावधानजी। वेली जब बद तननुं बानजी, राज्युं इस्ति राजी करवा तानजी ॥१॥

क्य-नाम एवं तमे वने, राजी करवाचे हरि कृष्ण । जहीतिक रहें आयोगवर, जाने केंग वसु भाग वसक ॥ शा तमें जमें तमें करी, करें जग अप आग जगम । शिरच तत करें वकी, राजी करवा जगमन ॥ शा ते हसाचे ताने तमने, जरें कावाचे कर कोर । यन हरिजकारी रीत्रमां, आवका व दिये जोर ॥ शा तेनी वसतुं निज कर्नुं, करें गमने मन् ते गोविंद्रमानुं । जेम वाचे तम वसे वसी, मूची वसन जागी वसराजानुं, ताजे अन्यसूच आवा ॥ शा सुख वर निजेरतामां, समने जम समान । विश्वेष सुख आजी स्वतन्त्रं, तेष्पर रहें वर्षुं नाम ॥ शा एवे अभें जायमुं, गजे वहि तम जन । निष्कुतानंद ते वर्षर, मन्नु पाछे प्रस्ता ॥ शा कर्मुं ॥ रेन्॥

वधी अनु वनन करना काजजी, नमुष्यु कर्यु कोरे स्विराजजी। भोरेकारे स्वीके प्रयो राजकाजजी, नमुष्य सर्वे करियां नाजजी ॥१॥ राज-स्ट्यां सुन्य संसारमां, भाषा सीमानम्य । १वी रिम् सुनी भाषो, वाप माहिनाहि साम ॥१॥ सामनी ने वस्त्रम्यु, स्वि अजज्जी नम्मी जेए। समुजीने असम करना, नम्युं नहि निजदेशे॥३॥ अव्यक्त्या ने सीरां वसी, ज्य भार्युं से वोपीमंद । समस्य मरेज ये क्षेत्र करीय, समसूर न गाजिद ॥४॥ प्रमु आदि स्वेच बीजा, वर्षु हाजी कर्या मनपूर्य । सुन्य नम्यां वारीरमां, सम्य यम परा विश्व वास ॥५॥ वंच विश्वपने परस्थी, यमा सरि मन इंडिनम्या। पर-क्षेत्रनी स्वीम क्षामी, सम्यां क्ष्य वारीरे प्रमा ॥६॥ मोर व सामी सम्बद्धा, वांची समन सम्बद्धा सांइ। समसुन्यदी धन वर्ण्यु, वर्षु वहि विश्व व्याह् ॥आ एकी रीम इरिजयनी वर्ण्यु कही ॥८॥ क्ष्यपुं ॥११॥ निष्युवानंद वसी बारमा, इरिजयनी वर्ण्यु कही ॥८॥ क्ष्यपुं ॥११॥

वधीनकी बहुं इशिजनी जे शिनजी, सह कोइ मुणजो वह एक विकासी। जेनी वंपाणी प्रभूकाचे शिनजी, तेने हे वृं धनहिंदियिन-भंजी ॥१॥ सक—कान इंडियने जिनवा, करवी जुगति जन जकर। एनी जानक जनाव हे तां, वृच्च न वाय हुए ॥१॥ आग्नीज वे वीर्य-नमा, वळी इंडादि सुर जन्दर। अजिन इंडिये वया, रक्षा नेचे दृष्णी अरपूर ॥३॥ विक्यानां विकास वया, कर्षा नकर्यानां काल। में बुं नावे रही तथं, कहो कियां रही लाज ॥४॥ लाज गर ने काज नगर्जु, वसी कर्नक नेठी शिर। जाज सुची ए नामने, निरंके वार्षिक नीर ॥५॥ बादे सहुए सचेत रे'बुं, वन से'बुं एवं आवश्या। निर्विषन एवं नाम के, शदाय एक सुव्यक्तन ॥६॥ सुची सुच्च वनद्यायमां, वो-दाक्षुं तेयां जह विक्त। असन्य सुच्चती आश्र सुकी, वांचवी वनुशुं शिन ॥आ एवा वक्त वनवानमा, व्यतिवां सा वांकाने वन। निरद्ध-सानेद निर्मय वया, जेनी वपर मह मस्य ॥८॥ कव्युं ॥१६॥

वरात विदानको-लाती हमें तक्रवारी जन्नव, र अवने। प्रसक्त वया पर-क्रवारे, तेने प्रसक्त । तेने वर्षे कोइ कर्मरे, तेने प्रमक्त । रेक-क्रेस कोइ वारसने वामे, तेने करको न रहे वयान । वयाम विना जाति शंपरित वामे, वामे केस्रा विवमरे; जेने प्रमक्त ॥१॥ व्यवितिक जाति श्री करवा सुनामरे; जेने प्रसक्त । तेनो शामी वह रहे हैं शारे, सा'य करवा सुनामरे; जेने प्रसक्त ।।१॥ से'ते से'जे सुना रहे स्ववासे, वहे वहि वरिसन । वक्तवित्त जावी मध्ये वस्तु, यम वहे हे जातम जाति रम्य । निवकुत्वार्यम् निःशंच वपाने, निमे कहे हे निग-मारा केने प्रसक्त ॥४॥ वद् ॥॥॥

निगम करें छे बारता अकीजी, जुडी व वाव तेर कोर क्कीजी।
सर्वे पुराने प्रमाणी व्यक्ति, ते छे जनगणी ववी पर संकीजी ॥१॥
सन्ध-संकी अभी एवं बारता, छे पुरानमां प्रसिद्ध । साथन बरने न
भूकवां, राजवां असी विच ॥२॥ वचन तर वांसा तणुं, करपुं पुरवप्रयत्तम । वचनवरे वडार छे, ते जानजो तमे जन ॥३॥ विधि
वार्थ वचने करी, सरजे संदारे खिट सोप । वाद्या स्टब्स समर्थपणुं,
तेर् वचन विमा नो'य ॥४॥ विदीह इंड चादि कर, जनमांदी मोटा
जेव् । बोरच तेर बदाराजधी, वान्या छे सह कोर पर ॥१॥ महिन्या
जानी सहायभुनो, वधी सोयता वचन सेवा । तेणे करीने तेवनी,
रहींछे मोटाई इसेवा ॥६॥ कर प्रधानो कवको चनो, जाति रहेंछे
वरमांद्र । तेले करी तरपर रे'छे, सर्वे समे सदाई ॥१॥ एम करना

plant plant plant

अपनी, एक वे जो अवकार होता। निक्कतानम् प्रक्रित रहेतुं, इति-बारणामनमें भोष ॥८३ कहतू तर्शि

यर प्रचाने सारी यह जुनजी, नरी भोषाची नाम समुकती। लारे सर जसरमां शियां ग्रामजी, अनर जरिकाने व रही केनी कुमानी शहा बाय--- समरपापु अजिम हो, पाने वर्ता पाने हो हैता। हमेश हरिजनावर्ण, देवा व दिये बोवचेर ॥६॥ शतकानमां कोरा नता, प्रणायणा पहणे पार । तेणे दरी विसंद्रिका, बाबा बोटा एकवार ॥३॥ काम कोच लोचे चनी, लीची महि केनी लाज है। लोकियाला सह अंगरे, रहे वर लगर सुरराज शशा विकर है वह बारता, इरिथक रे दूं इसवा । दाय व वाने वनमां, बाम कोच लोकको सेवा ॥५॥ सोरा वेक्टना संदिरको, बसर्चु ओन बसन्। साने वह वेचा लुगवे, एका तो कोइक अन ॥६॥ वेरीने वाले वसर्व, वसी राजवी तराहवा आका ! क्रूबाम वर ने केम रहे, में भी ओहा बाप बनाम ॥ आ अवोष रहेत् एक्पी, एवी सुनी बहि कोह रीत । जिन्ह-लाबंद ए जबे अधी, सद विचारी हुये क्या मटा क्यां धरेशा

वय विषय से सरहते वीयणजी, जेन जन हरिये ब्याह सम्बद्धान्ती । वन विकय से सहुने पोपणजी, जेन जन हरेंचे जाह अवस्थाती।
पन जन पन वन्दार गुणजी, वन चेचने वाने वानी वरणजी।।१॥
तन—पोचन विका वानीना, अप रेंचा नहि कोह रीन। नेव लोपादिक मानी रचा, कोई वने वहने अजीन १६॥ कारीवादी जाय
कारणा, लागीनानी करणा लाग। पुणसुपी भूदे नहि, जीवरवांधी ए जाम ॥३॥ वनु वन एवं उपरे, करें कोहक जन जिन। वो नेव
विद्य पास्त्रें, एम समझानुं द्युममीन ॥४॥ जनक जोच पर्या चरी,
इन्सें कारणा पत्ती अस्वान। वो ने कह वरें वंशिया, जेनो हुन्तर है
वे वाम १६॥ नेम विचयपी वेगकां, वव रहें कोह विस्पार। एवी
लोज जोकानां, कोम विचयपी केगकां, वव रहें कोह विस्पार। एवी
लोज जोकानां, कोम विचयपी सुद्ध करनां, लागे सबूने चार ॥५॥
वादे मोटो वानवो, अने बनुजीनो धनाव। निष्कृत्वानद व करवों,
जेनहमाहि बनाय ॥८॥ वजनुजीनो धनाव। निष्कृत्वानद व करवों,

क्षण-नागी के कोइ नव नागो, पन निज जलाय माने जने। जोर नुकी जनदीवार्न, सुन जाने करी सायने ॥२॥ सायने करी लगे-लोकमां, जानो इतो नष्ट्रच नरेवा। वाचीयनिये प्रियंतुं, त्यारे कर्ष न कर्षुं लेका ॥३॥ आरे अमरेवा एम कर्षुं, पुग्ने आरत्यान कोइ आयीने । जनारच तेने जनावयुं, माळी अन्त भाविकने ॥४॥ त्यारे नष्ट्रच कर्षे जनका गणे, प्रज पत्र आकाषा। वनपात गानरोमा-वती, करे कोइ तेनो नपास ॥६॥ वन माना प्रचनो, व थाय कोचे निर्वार । एम के तां बोटच आपनी, चन्चो इथवी मोकार ॥६॥ वेती वनाच बहाराजनो, जने गायो चोतानो शुन्ता जाज पेहेलां चन्ना कंष्ट्र, कर्होने ते तथीं कुन्न ॥६॥ बादे भरोंसी भगवाननो, राजनो जतिवाय वर । निरुद्धानंत् पह वारता, जनक काणो कर ॥८॥

वर्तन तनते नवरे वानुं नंदबावहं बोद वाप देवाबी, द दाव के — अवस्था अरोसी जनवाब बो, जोइए करने जाको। एइ दिना दीजी वारता, वांचकां बसाको; अवस्थ ॥१॥ इतिप्रताव हैपायकी, व शटाव वो बानो। समर्थ समझवा स्थामीने, जोवो दोव पोतानो; अवस्थ ॥१॥ सस्स व वार्चु संतथी, रे'डुं दासना दास। दीन जाणी द्या करे, हरे सब अन जास; अवस्थ ॥१॥ एइ वार्ता अनुष्य हे, निर्विषय निराधो। निरद्धवानंद वीजी वारता, भरी विषये भाको; अवस्थ मिशा वद ॥४॥ वद ॥४॥

तिरविषय में नावनं वारणजी, निजसेयकने सदा सुलकरणजी।
जोग अजीग पर्यु दोय जायरणजी, तेहमा अधमा जोघनं इरणजी
॥१॥ जाव—वृरे जयमा जोघने, में एवं परम पायन। जेले जम एने
जावार्या, ते सर्वे थया यन्य यन्य ॥१॥ गोपी ने गोवाज वाळ, गाय
गोपा ने वस्स वळी। जयासुर वकासुर ने वकी, एह जायं बीजां
बळी ॥१॥ कुषण्या वळी कंस आदि, भातव ने शिशुपाळ। एथाने
जमय पर जाय्युं, बीजो एवो कोच द्याज ॥४॥ पांचव ने पंचाती
वळी, कुंतासम निह कोष। सीनुं शालामाहि सांभक्ष्युं, नेक निर्वेष
व होय ॥६॥ सुकी व्राच परीक्षा करी, आलुं जथावं जहर। कर्यक
रहित कोइ निह, कोण अक्त असक्त असुर ॥६॥ वज जेने संबंध

\***\*** 

अदिरितको, ने पान्या पद निर्धाण। एइआदि अनेक एका तेनुं केन न कहीचे करुपान 1501 दास बदासना दोनने, न्यारे हुने जगजी-वन । विष्कुतानंत इरियामने, नामे नहि कोइ जन ॥८॥ कवर्षु ॥१आ।

अवासर बकासर ने बकीजी, एवं तो असर करा परवकीजी। सालव ने किञ्चाबाद कोयकीजी, एइनुं कल्बाक नव ओइए नकीजी utu sim-नकी न ओइए करवाल पर्नु, ओइए निश्चे नरकमांदि बाल । ते वन समान्धा नेजमां, एवा के अविवास ॥६॥ जेन सुंदा तुंबाइ नव नजे, अला नजे वहि जलाई। नेम द्या द्याखर्मा, सदी रही के सदाई ॥३॥ वय जुने जननी करणी, जुने निजमीटन जग-हीया । आपने अवर्षन आवारे, तेवा गुना करे वक्षील HYII रखे वहि एवं देव नदी, नापीमां सजासना नान । एवं अर्थे नरतन नरी, वरि आने अनिये जान ॥५॥ सहा जयहर मुरति, जेह जने जोह हान्ति करी । ते जन्ययरणनी जासमां, निसे वर नावे करी ॥६॥ एवा मनुने भाषारी, रे'बुं बने सगय मस्तान । कोइ रीने जकाम आवर्षु, वहि बाय निवान ।। अ। कारण तह बनद्यामनुं, धाने करवी संदाय कोक। निरुक्तनारंद निश्चे वामग्रां, गुजानीन जे कोनोक ॥८॥ कवर्ष ॥१८॥

वसी कई एक बारमा सरसजी, पनिजना जेने एक पुरुवजी। वंचने वजी एक नेक बरमाजी, एम कहे हे पुराच अञ्चादवाजी ॥१॥ शक-जहादचा आगममा, निर्णय क्योंग्रे बंद । पनिने वह रतनी, क्रीने क्ति एक ॥२॥ एक अर्थाता पुरानमां, वांधी वह बळकान । सहसन्दर्भ वर्षे रही, अजवा श्रीनगवान ॥३॥ वर्षद्वेदी हरियाममां, वय को वे निर्माण । वंबाली आदि ए वंबनु, केम मानवुं कल्याण ॥४॥ साटे ए बान भुकी दियो, नियो इरिवारणनुं ओर । किया जोगां कोहजी, वथी आवनो नोर ॥५॥ बहाच्छु पनि सुणी, करी गांपारीय मन गोन । तरत देश मिनियां, एवी पनिवना प्रयोग ॥६॥ पण ६०)-इतिना संबंध विना, अर्थ न सर्थों एक । शहरको समस्या विना, वाली शाली एवं देव ॥अ। एवा श्रीय कंद जगतमां, पर्यु पर्यपान। के'बाय । विष्कुतानंदक' कर्णदानी, जरासंच प्रकारण जगमांच ॥८॥ करने प्रश्री

223

शाचीनवर्षि व्यवसिविजी, जेले पश्च कर्या वसु विभिजी। अग्निकृते करी भूमि वरी लीपीजी, ज वसी पश्च जार्य त्यारे अरजी कीपीजी। है।। राव—अरजी कीपी अधिपति, सुणी आविया नारद सोय। अलो जाने तुं क्यति, तुज जेवी वरेशा व कोप ॥२॥ वरी जगने भू- मिका, तेला होस्या पशु हजार। ते बार शुवे के वर्गमांकि, तुने ते- क्षण करवा कार ॥३॥ के वे असमर्थ जावी अमने, एके जारे ते लीपो जीव। अर्थ सायों आपको, एके कारी अमारी सीव ॥४॥ एइ तुं वर्षी त्यासतो, जशसाद गोने के जान। एइ मोटी सुरुवाहनो, तुं करने हवे करान ॥४॥ एवं सुणी नारदर्शी, जून्य कृती दीपी व्याच्य । यजनं क्षण कोहने, तेमज कर्यु लतकाक ॥६॥ मारे मेली वर्ष महाराजनी, जाके जिलकर्षकानुं कोर। जेम काने साल मान महि, जेवां शिया- क्षणांमका वोद ॥४॥ सर्वे सिद्धांतनुं सिद्धांत के, हवे राज्युं इरि वर्षाखा। विव्युक्तार्थद एइ वारता, के सुन्दर्शिय सदाकाळ ॥८॥ क्षण ॥१०॥

व्यान वोरह। को देने गोकविया, व हाक के—सुक्तन्यि सद्दा इवा-व्यो, जीव जकर करणां जाका। इह भरोंको धर्मनंदनो, श्रांति के-तर्काद् आका; सुक्तन्।।१॥ प्रथम धो'च वोनानी कोइने, वणी प्रमणी वरीचे साम। एवं व बाच जावने, अबुं अर्खु करे भगवान; सुक्तन-॥२॥ जेम वेच जीवाचे मेदिनी, वळी अबे हाळे अंचार। एवं काम कोचधीरे, जोने वच बाच निरमा; सुक्तन-॥३॥ तम जे नियम जग-वीचधीरे, तो ने विवने जीवधी प्राच्य। नियम्हलानंद व कीजियरे, वाकी त्याच्या विमा त्याच्य; सुक्तन ॥४॥ वद् ॥४॥

जूरी सामर्थी जीवनी जाणीयेजी, वृत्त्व सामर्थी प्रमुनी प्रमाणी-येजी। यह जरोंसी इव वर्षा आणीयेजी, जम तपासे बजी शीद ताणीयेजी ॥१॥ वाल-नपास विना व ताणीये, जोइए जीव विचारी वात। मोटानी मोटव जावडे, एम समझगुं साखात ॥२॥ रिता वाडे जेस पुत्रने, बळी मीते करे प्रतिपास । सुन्य करे ने दृश्त्व हरे, वारेसावे सदाव काळ ॥१॥ जावा पीचा बोत्तवा, बळी देवा शीन्यवे रीत । जरि मित्र वर जावजां, तेव बढी करावे नित्त ॥४॥ एम इमेश देव करे, करे वासकती वांसे बळी। पीते वाले पुत्र जाणी, मात तात कोषे भकी ॥५॥ वाक्षपणामां बहुपरे, जावे बनी जवराय। नोय भव-गुज न सिपे जर्भनो, समझे सुनने जसाय ॥६॥ एम धोटायी मोट-पनो, कोइ वाकी वाके नहि वार। पुत्र पिनाने वरंतरे, समझ समझो । बार ॥आ एम जीवने जनदीयां हे, जनक जननी समार। नियम्हना-वेद पह नय नजे, विश्वे जाणी निदान ॥८॥ कवर्ष ॥११॥

वजीनं वालव करे जेम पित्री, प्रशानं वालव करेंग्रे प्रतिजी।
सदगुढ शिष्यने जापे सदमितिती, पृष्ट् शैन जाको तुर्गोन्नम छित्री।
११॥ वाल—छित छे ए छानी वची, होच जेले जेना जाधिन। ने तेनुं वालव करें, पृष्ट् अनादिनी तिन ॥६॥ आवषन व होच जो एइमा, तो करे वा'सपशुं वाल। हैये हेन जानि वर्षुं, हेन्यावे दिन ने रान ॥६॥ जेम वहे एवं वालकं, एम अनंद करे वपाय। योनामा जाकी वीला हरें, करे संवकती भा'व ॥५॥ नेम चनद्याम जाणी वरनां, करें में र हरे महाकह। एवं वारता वेद पुराले, सूचवेग्रे जो सुरवह ॥५॥ योनामां जाली वव वरहरें, करे प्रीते करी प्रतिपाद । जवगुल व तुवे अर्थनां, जेम जननी जासवे वाल ॥६॥ पशु पंभी वर निर्जेर, सहु सुनने पाले सद्याप। नेम धीहरि कृष्ण करें, संबद जननी सां'व ॥५॥ निराधार वारायण विना, नर निपप्रया महि एक। निर्युत्वानंद पह वालने, विचारों करी विवेद ॥८॥ कहवुं ॥१६॥

मानारिनाधी रामे प्राणी देहती, नेहमां भाषी यमे जीव जेहणी।
व होचे कर्नच्य एहतुं पहाजी, एडमा कारण श्रीहरि नेहजी ॥१॥
हाय—श्रीहरि विना समाज एगा, कहोने कोणधी वाय। जवण
वर्षण वासिका, दंन जिला करी मुल्यांच॥धा हाय रम आंगळीयो,
वल्शिला सुवाळा थोछ। कीयो समाज सुलनो, कोइ शेने व राली
ओछ ॥३॥ वळी जंन:करण वे दंदियो, प्राणपायु वृज्य प्रकार। प्रयुं
करनां कोइने, व आवडे जिल्यार ॥४॥ कसर कोइ वाननी, मारायणे
राली वणी। जुनो विचारी जीवमां, वळी वळी शुं कहं कभी ॥६॥
जीव आणे हुं जोर छन्न, जे कह ने कम म थाय। वल विचारे जावी
वानने, तो जम छ नेम जनार्थ ॥६॥ मारे असमर्थ आयणे, समर्थ
श्रीमगवान। एवं समझी जंनरे, मुक्युं कर्मध्यनुं मान ॥ आ कर्युं

श्रीकृष्णानुं पायकं, अनवी य प्रत्य अराय । निष्कृतानन् निहासियं, वंडे संनरभाष ॥८॥ कराच ॥२३॥

कवि करे सेम कृषिकामजी, विविध भागमां वाचे वसी सम्राती। जांच अधवते थाधा वह धनजी, एक सनमुची करे निवा बनजी ॥१॥ गण-वरे धनसूचा अवसी, जाचे अरीका क्यकोतार । एक नेनी हरिये दाप है, बधी जाननों ने निरुवार ॥३॥ अवस्थि अक्षये डमायम्, वसी मोटा करवा मो'न । नेनो करी न बादे करवि, नवासी करको लोक ॥३॥ से जस अस वाचे संबं, लंब धायठं लडकर । लेक दर्भका भगवानम्, एव सम्बद्धं सुन्यक्तं ॥३॥ निविधन निपनावर्षः, तेह आयो है हरिने हाथ। लंह युने को लोकीने, तो नव विसारे नाय ॥६॥ किंचिन धर्मच्य क्र्यानचुं, बच्चे कर्नच्य प्रवस्थासम् । एव जीवर्ज कर्मका कोली, के बाधाय के कामजू ॥६॥ जो कोइ बरबी शिक्ते, तो कछ राजे कही क्षेत्र । मानो नर निर्वेश के, जोड़ लेवें एक आण not बारे जीवरिया वारण चिना, कारण कीह न पान । विष्कृत्वारंषु एव वरते, साथी लेगु वसमाय ॥८॥ कर्मु ॥५४॥

वक्रम शाबेरी - साथे हरि वंशिवि माते, य तथा छै - आफो अस समाये श्रीमनवाम । रेक-ए जीएनं ओर व जानवूरे, जनवं करे अविका-व १ कर्ष व वाय कोइन्देर, वर विजयपी निदान; आणां - ॥१॥ व वाणी लुक्त पाववारे, करे ने सर्वव हात । जका वाचे था जन्मपरि, वजी शह करे सत्यान; जाफो॰ शभा कर तर तीरच जोग हैरे, परे पन जह ब्याव । अर्थ व सारे एक्पीरे, जेवी वर विवासी जान: आफोर-॥।। ए केली वस वहारराजन्दे, करे चपाय कोड आंग। निष्ड्रणा-बंद जिल्हाक होहे. जाको और बयं ए क्यान: जाको आशा पद सहस

क्या है जोये भा जीवर्त ओरजी, त्या है कोई रीते न वाचे नोरजी। जनरभाषु अनि मदा पोराती, बरवा व दिए मदामसूना चौराती ॥१॥ सक-चोर जेव चोती घरे, अने बरे मा'जननी मान । नेम अंगरभरि चोरी करी, वर्जी करी मुक्त कमान्य ग्रामा पत्नी मुखे दीय-वर्ग हाम्बर्ग, पक्षी मन मान निरंपन । परने मी वर्ग नेत्र विना, एव रांच रहे रानद्य क्षेत्र केम दीपशिला अभी नह, रही केंद्र काळी बचा। उपांत्र्य जाये त्यां सांच के, आपको अपज्ञता ॥४॥ सांचर والمنازع والمرابط والمرابط والمرابط والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمرابط والمراجع والمراجع والمراجع जाबी जे जीवजां, तेनो क्षेत्र करी करे त्याण । रामदिन कडको रहे, जेस नस्कर करर काम ॥६॥ आन्न्या च सनाय जापने, नहि साचे अनु बनाव । एके करी रहे जानामियो, वच जनाये निष्णाय ॥६॥ एक बनुने परहरी, जाणाचे बोनानुं जोर । नेनो सोसो वर्षु वमे सामरा, पण जारकर विमान होय भोर ॥आ तेन केळे वाय जान-हीचायी, नेने च वाय वर जमरथकी । निष्कुणानंद ए जानने, सम-सवी पूरण पढी ॥८॥ कडकुं ॥२५॥

कीइक नर पर पाठ जानीजी, रखाछे सर्नम रोनाने मानीजी।
निर्मेंच सापने माने अज्ञानीजी, ओक्सी म सक्या ए अविधा
गानीजी ॥१॥ राज—गानी अविधाए ग्रेनधी, पया मनुना दिनराई। वेठा वह बरोबरिया, मानी बंग्यामा सम्माई ॥२॥ बांधी मरआद बहुनामिये, तेने ओहबा रहेग्रे नैपार। मुखे जेम महिरा पीधने, मारबा इच्छे सांजार ॥१॥ अभ्य मनि अनि वज करे, वहांचय
योगानी वय परचे। पया बयोग ने जेम क्या भानु, ने समझाप
केम सर्चे ॥४॥ जेम लाहिरी ताचे चरे, जावनुं पहांच्यो हुं सहुनी
यार। चल आगे लाहे हाद भागतो, एको आवनो वयी दिकार ॥४॥

१ काराओ, १ पूर्व.

को एक ब्रक्त आगमें कहूं, तेनो जाजो भाव समागः। तेथी पच्चाः आणी केई, वर असुर निक्रव ॥६॥ आहे ए विकान सुकरी, वार्षु इरिया साथ । अन कर्म क्यते करी, आवे अजवा अविवास ॥ अ। त्रमु सरिच्या प्रमुज से, बीजे पदाप वहि कोई रीत । निष्क्रतारंद एवं वर्षने, जब चिनवी हुवो चिन ॥८॥ कवर्ष ॥२०॥

बीच करी पून्य को प्रमु प्रवासकी, मो प्रमु क्षाविमां केम सामग्री। परपर पने भी बनु के वापजी, पड़ी वार्षे सहतुं सरलुं व धापजी ॥१॥ शब-वार्य म बाव परा तपरे, बजी काचावामां क्य एव । ए क्रम जनसम्भाष्ट्रमणी, तमे समझ समझी विवेद ॥२॥ जोने एकज रीति ने एकत नीति, वसी एकत किया असूत्र । जेथ जेनो पर्मव क्यों, तेमां पहली नधी जून ॥३॥ जेम जेने राक्यां परे, तेम राक्यां चर जचर । मेने व कोई मरजावृते, चूमि व्योगे वर अमर ॥४॥ बांच-सारी रक्षा प्रवित, क्या दियो रक्षा दिगपाल । सिंपु व मुद्रे वर्षा-दने, इह मुके व माया काळ ॥'आ लेह एक वजुनी आगन्या, सह मानके अञ्चार । योमपोमानी रीममा, केर प्रथा म दिये धाँप ॥६॥ ए पने शहर पन्न व बेसे, तमे हुनो विचारी बान। लर्ग बुखु पा-नाकर्मा, वणी अवस्ति वनवान ॥ आ बारे सनमा वानपुं, कर्ष एक इरिमुं पायचे । विष्कुलानंद निगम सेने, नेतिनेनि करी गायचे ॥८॥ क्ष्यकं ॥२८॥

क्रुराण करण-काल स्वती है से अपूर्ण कभी, व सब से -- मेनिनेनि करी विगम क्षेत्रा, शुल विवादिव गायरे । एवं जेवा तो व्यात ए छे, बीजे केम बचावरे ॥१॥ सुरज सरका एक सुरज छे, शक्ति सरिच्या वाकिरे । सिंधु सरिका एक सिंधु है, एने श्रपमा कड़िरे ॥२॥ छोन्य मरिक्ते एक श्रान्य है, संभीर सरिको समीररे । नेज सरिखुं एक नेज है, बीर सर्विन्द्रं वीररे ॥३॥ एम बच्च सरीच्या एक मन् के, बीजो व होय बराबरीरे । निष्कु नानव के निश्चय करीने, बानी हीयो बान सरीरे प्रथम बर्ग मिली

केने दर्जाने पुष्कृत रक्षेत्री, केने स्पर्धी महाचाप पनेत्री। केनी बीर्ति सुजनां कर्म क्यांजी, जेने वास लेगां प्रवास्त्रच क्यांजी ॥१॥ वय--

<sup>6</sup> mmm. 3 Will. 

मधे सुष्य बोट्ट घर्षु, जेक्ष्त्रे सम्बद्धे जवर । संगक्तकारी सुरति, अपगळ करे वर ॥ सा जना दर्शनसाद देवता, बळी इच्छणे रही आकारा । राम दिवस इदिये रही, नाथ निरमाना आहा ॥ स सदाव सुनी सर रहे, जान पाननी नहि लोट । एक दीमर्वपुता दर्शन दिया, माने अवासी मोर । ४॥ बळी बंदब बसेचे बनमां, तजी सर्वे सुवसमाज। दीन धयन सहभ करे, ने इरिवर्षात काल ।।।। एवं भाहात्व्य दर्घा-बनुं, लेह एक श्रीवृश्यि होच । बीजाया हर्पतनुं, माहारूच व जाने कोष ॥६॥ एवं दर्जन जेवने वर्ष, मधुं तेनुं अमधी वाव । जीवनमुक्त तेह मही, धनि देह एवं धाव ॥आ ब्रह्ममोहोलनुं कारणुं, संस्थं बचाबी एवने साम । निष्कु लानंब निर्मय वह, बामदो व असराम ॥४॥ करुचं ॥१९॥

ककी रुपर्या सन्द्रती परम पायमजी, जेहजेह पास्पा संग असंग जनजी। नेहनेह चया सह परम पश्यजी, एहनी सनना हां करे साथ-मजी १११। राज-साथन बचारां हां करे, आवे क्यां प्रमाण करा। स्वर्ध करनां सवायश्चनो, आपे सुन्य बाटक ॥भा त्वर्श वामी पूनना, इरि घवार्या भई हाथ । पृष्ठवोत्तमना स्पर्वाची, शांचकी वह सनाव ॥३॥ नाबिद स्पर्याची गोपिका, वई सर्वे खुलि सवात । कुकता स्पर्धी कुण्यते, निर्मय वह निदान ॥४॥ एको स्वर्ध पावन अति, परम माधिनो देनार । पापी माणीनो स्वर्ण जेव, तेव आदे देन एनी दार ॥५॥ एवी श्वर्ष जैसे बयो, ते कुनार्व के बायक । बीजां कारि सा-चन करे, बन तेवत्रमय क्यांच धायणे । ॥६॥ क्रमणनो स्वर्ण कामी, जेव थया परण काम । तम मुकता तरत तेव, रामको प्रमुन् थाम ॥आ जेम पारसना प्रनापपी, लोहराष्ट्रं न रहे सगार । निष्क्रणानंद एम भाषत्वर्ती, बाजी वामे भववार ॥८॥ कवर्ष ॥३०।

बीर्नि वस्ती सुलगां कानजी, जाय अजसमझल अज्ञानजी। मगर मगुरां लागे नानजी, एवं कांच अधि एइनी समानजी ॥१॥ शन-समान व दी हुं शांधनां, इरिकीर्नि अंबुं बोप । जन्न सुननां लगदीकाना, पपा सन्तारपार जन सोय ॥२। श्यु वे परीक्षित आदि, वली अनक जेवा नरेण। नारब इनु समक आदिक, वरि क्या सुनेते हमेशा ॥ ॥ जुने बळी आ जलाती, हरिज्या सुने हे ने करी। AND THE PROPERTY AND ADDRESS OF THE PROPERTY O المراب المرابط والمرابط والمرا

क्षणां एइ काम जाने, संघट कर्ने जाय नहीं ॥३। एवं कीर्थि कोजारी, जेने व्यक्तियों नाव रजे। जन्यकवाने काने स्वनां, एवं सर्वे वरणके ॥५॥ पनिनने वाचन करवा, जवा दरिना के जाहुवी। एइ वली विश्व धावा, नथीं वदाय वानो धानमां ।६। एवा जवा केने सांवक्षण, ने समाप वया सहूं। बोएं न वानमुं जनरे, बानमी बोदन वहूं ॥आ जेनी क्रीये पवित्र कीरिन, एवा नां दरि एक है। निक्कतानद ए वदी करनुं, एक्षण सारों विवेक है।८॥ करनुं ॥६१॥

केर्नु बान अच्छे आवे अपनंत्री, समरतां सूच वसे अनंत्री।
वासे भोरच अपनां संत्री, एक समसीने समरेंगे संत्री। ११। एक—
संत्र मान्याने समसी, नव सूक्ते बारायणवाम । त्यामोत्याके ते
समरे, चले देने पत्रस्थाय ॥२॥ तत्र व्यक्तिया अञ्चासन जादि,
अजी ताल वर्षा अववार । वित्रयावन वाल दरिनुं, एपी चाल्या अनेव चढार ॥३॥ शूच बहाद वे द्वीचरी, वर्षा नाम मजीने दिन्यां । पादी चपर वाचल तर्षा । नेपल नामने अंच ॥४॥ मोटा शूनि भाव्या सर्च, अपेग्ने भारायणवाम । रात दिवस श्रव्य करतां, पत्र व वामे विराम ॥४॥ जोगी वसे जई वनमां, जाय कत्र कृत वनचान । एम इसी विज्ञ देवने, वजी अजेग्ने आगवान ॥६॥ अहामान नाम्यो सने, नारायणवा नाममाई । तेलेकरी एकत्रार अंतरे, समरेंग्ने जो सदाई ॥ अ। एवो अहिमा मूर्ति त्यो, विश्वव्यो चन्नु वकार । निष्कृतानंत्र प वारता, नकी ग्रे निरवार ॥४॥ कड्युं ॥३६॥

क्या थोळ—अस्त अस्त हक्तारेंगी, य का हे— जेनी सूर्ति संगत्त-स्व हे, स्वर्णमां वाच वधायरे। अने स्वाने असं कृष्ट्रम रने, वजे वहु समा कोररे। अने साम करमां संकर हामे, वली लागे महि का-समी चोररे; अनी । 1911 जेनी कीर्मिन सुचमां कानमां, वाच वर निर्मय निवानरे। जेनो महिमा व के वाच मुक्ति, एवा हो ए भी-समानरे; अनी । 1911 एम सर्वे जंगे सुच्चायि हे, मूर्ति जेनी सनो-हररे। निय्युक्तानंद एवं माथने, वाचे कोए बीचूं सराभररे; जेनी । १४॥ वर्ष १८॥

एम समझ्या विजा से अपूराजी, पाकुन गुणे करी माने पूराजी।

एस विचार करको बरने बजोजी, ह्यू म शुज सर्वे औद्दितकोजी ।
शुजलानर गोर्वेहने मगोजी, ए सम वहि हुम आपकोजी ॥१॥
शब—आपना गुजने पणनां, जिनवाय जनाइर वाप । अर्थ पर्वे सरे वहि, जाजो जहर तजा जाय ॥१॥ वो व्य न होय पोना वासके, वली करे बताइनी वारना । बाम वहे केम कराई, एम वर्षी विचारना ॥१॥ जेम हाम विचानी हाम हैये, करें कोइ सुजकारमें। नेतो शामुन्तं वासवा वज शीनं, विचा वाहम वारने ॥४॥ जारे मोदन म आगपी, शुज वरना वासीने । शीम आपीम वरनाई, सी संगने हिएस वासीने ॥४॥ अरूप शुजना अभिमानमां, जपराय पाय शुज संतन् । शामवानं सुज्य रहे पाकले, आये हु:मा श्रमंगनं ॥६॥ वाहे विचारी वरताई, पणुपणुं नरमु थाँ । अल्डबारी म देवी जाववा, वेगरमु थाई मई ॥आ आपी शामने जंगरे, राजको जन क्यी रीनशूं । विच्छानांद से वचरे, वसम वाहे मन्नु भीनशूं ॥८॥ वहां ॥१॥।

कारका गुजमां शक्या रहीजी, अतिराव शीजी बोळवाच क दिजी। जनाव सरिजी रहीके बहजी, तेजे मुख्या धोरामोरा बंहजी ॥१॥ क्या-बोरामोरा की मुख्या, जनावी गुजनुं नाव। बी-तरवाई बेटी जजा, ते जोरे करेके क्याच ॥१॥ कविमां वह कविकने,

<sup>1 100</sup> 

गायकमां गायक वर्षे। वंशितमां धर्षे वंशितमये, तेने केने कमी नर्षे ॥१॥ दीनमां धर्षे दीनकरे, धर्म दातारमांकि दातार । कोगी कित तपसी संस्थामी, वर्णानमक्ष्ये अपार ॥४॥ जुनमां वर्षे मुक्करे, धर्म-वानमां वनवान । वस बीच नरनारमां, वर्षा जेतुं अतिमान ॥४॥ आपार ने पर अपार, सीने अंतरे वसी जजा । पर योगामां परती, करेंचे वेटी कजा ॥६॥ आप्यो गुन जे आपमां, तेर्नु वस सर्व वोचे वर्षे । दम व्यविधाये केरव्युं, विका ते सी जनतन्त्रं ॥आ जूल्या दिवा अगवानमी, तीनी आपना गुननी ओर । निष्युतानंद ए वन्त्रे, कराकरी गर्मे लोग साथ प्रवार । निष्युतानंद ए वन्त्रे, कराकरी गर्मे लोग साथ स्था

कारण विना जन वाप हे हु:बीजी, वालि न बसे सबस्या वजीजी।

॥१॥ तक—समस्या विना वालि सही, रहे अंगरे अनि वहेग। कि
स्था न दिये वापरे, जीतरमां माणानां जेग॥ ।। विये वचनेता विकास
रजनी, तुं वेह वंह को तुं देह। तेह विना कप नाहरे, नवी वीतुं कर्तुं
तेह ॥३॥ वास जोवन वसी वृद्ध मुं, तुं को इपास गीर वारीर। रोगी
अरोगी तुं सुबी दु:बी, कापर तुं शुरवीर।। आ तुं क्यम मण्यम तुं,
वाको आंग्रां मुं बास अवास। यम मनाव्युं अंगरे, वरी हैपामांह
वास । आं अविकाय पन रहावियुं, वरमांदं अनेक स्वार। तेमक
मानी सनमां, सब्दु वनेंग्रे संसार।। वा वर्षुं विचारी अंगरे, केमे
वारी म वरी लोख। जेन हे तेम जाण्या विना, सब्दु वरेग्रे वामावोस
॥ आ सानी वान वथी सुक्षती, वथी करना तेनो नपास। निय्वुतावेद निवंग पर्दं, विचार माणाने वादा।। दा वादुं ॥३६॥

वर्गण वाच-समान्या विजारे शंताच, वासे वहि समस्या विजारे संताप। सबू विचारो अंतरे आप; वासे । टेक-आनमाने एके वहिरे, बात जात बाई वाच। यतो संबंधी वारीरनारे, विकी परव-रिये वरिताच; वासे । ११॥ जातिज्ञता सेत वतारियरे, तो व्यक्ति के विसंख वाच। आव्य व वरे आंक्यनेरे, चाच ठीकोठीकज वाप; वासे ॥१॥ हीरा जवाविये आंक्यनेरे, चूने वळते ए वाच। रंग वासे वोत वसटेरे, सबू वेतराय देली काच; वासे । १६ एक आत्मधी जकनो रहीरे, शरीरक्षण पाठयो साप । विष्कुकार्यर ए वरसुं पयुरे, वर्ष तेज रहां तब व्याप: वाबे॰ ॥४॥ वर्ष ॥९॥

श्य सम्में संन श्वालाती, वीता करें वह संचातालती।
आवारने पर्टी प्रमाणती, हेनु विना सबू वायमे हेराजती ॥१॥
हम्म-हेराल वायमें हेनु विना, तेनो अलसमझम वायणी। जेम करण हहारती, परताने से वीदा सापती ॥१॥ जेम जंनर संदर ओपिये, ते होत कुच्यती कंड्रमें जरे। जनमं न दरीय अंगरी, भो दुःलाई ताने सर्व ॥३३ जेम नाने नेपनो बोरलो, बोर वपाने कोपना सजो। अप म आने साथानलो, साने श्राय सुनने वर्णरे ॥४॥ मेने मो नेसाय जरा, हम समग्रम नेत्र नोत्र। अलसमने वपाने परे, सरी कर्या विना कोण ॥५॥ जेम तरई वंदा सोयने, माने हीरा परा कोड में। तेन सुण अवस्था कर्यान, सरा देनारा कोड से ॥६॥ इरियक्तने हैपानाई, विचारचुं से बारमचार। वोर्या निह विच व्यास विंडी, म से दुःसानी हेनार ॥आ केत्रे वसने सा सीवने, वाय अरगई करती असमे। विच्युतानंद आ सक्तावादि, वस वसनादी वसने ॥८॥ कर्यु ॥३आ

करण वेका जाने अंतनी के कायजी, अक्षात्र स्वीरं एक व से वा-यजी । एक पुत्रको वचना व देवाचजी, ने समें धीरज केचेब शहेवा-यजी ॥१॥ कर्ण--वहेवाच निक् क्या पुत्रकां, चीरज ओरा बीरजी। रोकरोंने विंदी वेदना समक्षे, क्यारे काळ्यूं धाय कारिसी ॥१॥ नेव् समान केचे केचे, क्यारे परवका प्राणी परे। कार्य कर सह सह जो, सर्गा संबंधी सर्वे १३ ॥३१ नेव् समें जीवरि कामी, वांता वां करजो वेत्र । आपाद सारा जावजो, चनावका अन्यंत्र ॥४॥ ओरेसोरे एक् मानिर्ष्, करजो बसपी केचाये वांत्र । नेव् सुकीने हवासका, मस् करंतुं वोकार ॥४॥ वक्षा वेत्र को वनक्यास्त्री, सुक्य साचा सनेव् । सम्बादित क्रियोक्सा, मधी सांध करका एवं ॥४॥ वव् समरे ओ सु-चर्ची, तो सुवर्षु सर्वे वर्षु । एवं सम्बो ओ वनको, तो सुं व्यवस्तुं ग्रूम स्वतन्तुं ॥३॥ नेव्यारे सम वासके, वर्षुस्तुं हुं सव्याराज । निष्कृता-संब करे वासकी, एवं सभी राज्यों काज ॥८॥ कर्ष्य ॥१९॥

भाग भारी के इति तमारे इत्यारी, तुम क्यापमा तथे की मा-पत्नी । संकरमंदि व्याभी रे'जो साधमी, परती सुधमो मरीवती ताबजी ॥१॥ क्य—साथ सुधी मरीवती, गुध्विषि के जो बांच । क्ष कोको अवगुध कादेश, श्रीवृति कराने मा'व ॥१॥ अपने कहारण पतिनवापम, दीववंतु को स्पाल । कोई विकर साथुं द्रपालका, सुध्व-द्रावि क्षेत्रों सं ताल ॥१॥ चन्ता गुन्दा पत्रद्रपाम की, तसे वश्या आगे भावितवा । तेल क्ष्या मर्शवंद पारा, पक्षामो वहु (विका ॥४॥ वना-रामे तम विचा, वची काम कोई आधार । ते साथोंको अभवीका तमे साम । तेल विचा जिलोकमां, पत्रं कोच हेनू महाराम ॥६॥ तेल-साद दृति तमने, पद्मीवळी विचान करें । अवर वीजा ध्यापधी, वची जावनुं दुष्यानुं अर्थ ॥३॥ जे के'वानुं वनुं ते में कहूं, दृतिकृष्ण मोदी सावनुं दुष्यानुं अर्थ ॥३॥ जे के'वानुं वनुं ते में कहूं, दृतिकृष्ण मोदी सावनुं शुष्या । दीववंतु दीन चारमां, निष्युतावदमा माम ॥४॥ कवनुं ॥४०॥

क्यान नेवाने—संक्यते जातंत्रे शंकानी केते प्रमाणारे, य शास के—बाजप्री विचारो रे दोच निज दामनारे, ओपने मां जनगुम जारा जीवन । हशुजी संजारीरे विच्य प्रांमानचुं रे, वर्गाचे पनिनने वाज करवा संत्रवा वाव्यावारी, आवोको जविषे हुवी विज वारती। तेनो इरिजवर्ग करवा वालती, तव विना करवा नवी संत्रवे शक्ती॥१॥ करू—श्रम वर्षी वीते हरवा, तम दिना तमारा जवते। तेहसाद अविषे काचो, वाच वर्षे तर तमने ॥१॥ शकर को हरिजवरा, वह साववा करजाविषे। विविष वय नवी देंता त्यारा, करोको श्रम वह विषि ॥३॥ वाच वाजे जेम वाकते, काच शबुच विषे कार। तेहचकी अधिक हेने, कर वाजोको वह वेर ॥४॥ संत्रवा काच संवारता, तत्रवर रो'को तैथार। अंतर वारे वारे व्यवस्था, स्व करोको संवार ॥५॥ हरिजवते हमेश हजारं, विवय करेके विद्या। तेले क्षत्रे तैयार राक्षांके, वार वरे वार वास्त्रव ॥६॥ यम्य-यम्य समर्थ वसी, पर्यवंद्य वर्धना पाक। सुवर्धीना सनेही को, को अवसीता काक ॥५॥ हेन् को इरिजवना, शहा सर्वता सुंदर हमान। विद्यानाव्या गावर्धा, वालम नारा विभाग ॥८॥ काचुं ॥४॥

विभाग को वांता वससे समेजी, क्यारे निजयनो हुए जापी इमेजी। ते भवारा संग वर्जुक्तुं क्यांजी, प्रच तेर्नु हुन्य तसने नव गयंजी ॥१॥ क्य-मसे नहि गरीय पीडमां, सबे क्षेप करोठों मेह कारते। हामर्जा हुन्य राज्या, राज्या गयी आकस एते ॥१३॥ चीठ रहोको जानी करा, ने संगनां संबद राज्या। क्योड हे के व्यू अं-तरे, तान जय शेमाया शक्या ॥३॥ श्रम एक वांधी व शकी, रीवा जय शेमाया नवी। एने क्यें जन्यम्मया, करो को जनम प्रची ॥४॥ सारे निःशंक निजयन है के, विज्ञ कोई व्यापनुं क्यी। सांच वरोकों के संगनी, से के वार्जु वयी कथी ॥५॥ श्रम नवारा मनतां, जायमों वयी व्यति क्षेत्र। एवं वांक्तुं अभी क्षेत्र आपनुं, क्षेत्रा वांका के

संन ॥६॥ जनायणे सारा जीवमां, संन देने रो'णे सरवधान । कडी देनातुं सुं कुवानिथि, अन्यत्रयहारी अगवान ॥आ सावा अनेही द्यासमा, तब सतना को बीहरि । निष्कृतानंत् ए वारता, सथित के सराव्यरी ॥८॥ कवनुं ॥४६॥

नवने वा'ना के नवारा जे जनती, नेह हरिजनमें कहूं बरननती।
वथी विमारना नवने निकार करी, नव विना वीज नवी वानमें कवजी तेशा कर— वन बीजे नवी जानमें, रे छ नवारा वरणवां विना ।
वैदिस वृष्ये नवी दावाना, नवी वंच विषया दीन वना वृष्यां वेटां
जानमां, भाषके को नवारा गुण। विरयकी नवी कुन्या, सुंदर मूर्णि वर्णाण ॥३॥ अस्य वरों भी वरणां, वजी नवी केनो निरवार। नव विमा विमोक्यां, ववी वन्नो बीजानो जार ॥३॥ वर्षेना कारण लवकी,
अवरेके न्यान क्यान । बोकादि अधी वागमा, रे के बनुष्याची वर्णायः
।।॥ निक्याची निकाय निर्मात, निर्मेर मेर वर्णा वर्णा जन जोई जावना, तथे करो रुका सहनती ॥६॥ नवारे नेह तहने नवे,
वस अस्य वरण के दीन। नेमां वाजोको नाव नमें, शीहरि जो दरी
(नि॥ आ वाजवं एनं अमने, वजी वधी वनानं वन। निक्कानंदना
वावजी, को जनकरमन जनवन ॥८॥ कहनु ॥४३॥

हरियसनीता हेते सांग्यकोशी, तेत्रवा नवें गोष मंगप रस-गोशी। समझी नांगसनां पाप प्यक्तेशी, तिर्घण नाते पर मस-गोशी। है। शब—सम्बंधे पर तिर्घण ने, ते बनुने प्रमापे परी। स-शुद्र से सबदनों, ते तरत वर जागे तरी। है।। पृष्टी से प्रभूता दासने, आ संपर्धा पनी। हार्याने हेक्त आप से, अपो'ण रखको आर-पनी। है।। सहच्चतांने सामसी, परातु आपीस घरमाई। भोषे प-स्वानो अप रख्यो, पर्तु बीच व रही काई। है। वा हैवत महित हात्रको, वरी कापहना बसी हुए। आनश्च पर आरोपने, पहित हात्रको, वरी कापहना बसी हुए। आनश्च पर आरोपने, पहित हात्रको, वसी परात्रे परा सम्बद्धा । निर्मा समझ पर पुंचालीया प्रचां, वसी परात्रे पर्या परण से। तिर्मा समझ पर पुंचालीया प्रचां, वसी परात्रे परा परण से। तिर्मा समझी पर ॥२१। परां पुर्वा है।। निर्मानांद समहेत अपों, क्यों स्थ समझी पर ॥८१। कहर्यु ॥४४॥। states to the test of the test

पद्यम पोळ-मने मानीयो मोव अपार, समझी वात सारी। सारी पेट्ये में सोधियुं सार, मित जेवी हमी मारी ॥१॥ भारी जाणमां आवियुं जेम, तेमनुं में तेम कहां। कहां अंतर उपज्युं एम, समझवा सार पयुं ॥२॥ वयुं निर्धनने धनरूप, वसमी वेळा समे। समे अंतर भाष अन्तर, दुष्ट कोह नव दमे। ३॥ दमे समझ्या विना दारीर, भगट भन्ने मेली। मेली मही बलोवतां नीर, प्रापति सई छेली ॥४॥ छेली समझण संतनी एइ, प्रताप प्रमुनो जाणे। जाणे समर्थ श्रीहरि तेह, भरोंसो ए वर आणे ॥६॥ आणे टांणे करवो विचार, विवेक वळीवळी। वळी नरने करवो निरधार, भोटा जो संतने मळी ॥६॥ भळ्ये भनुष्य, कहुं शुं हुं कथीकथी।।७॥ कथी कहुं में सर्वनुं सार, दालयी भूल्य, कहुं शुं हुं कथीकथी।।७॥ कथी कहुं में सर्वनुं सार, दालयी भूल्य, कहुं शुं हुं कथीकथी।।७॥ कथी कहुं में सर्वनुं सार, दालया समझी लेजो। लेको निष्कृत्वानंदनो विचार, सुंदर सारो छे जो।।८॥ पद ॥११॥ इति श्रीसहजानदस्वामिधिव्यनिकृत्वानंदमुनिविरिचवा हरिक्डवीता संपूर्ण।





भीतामिनारायको विजयतेनयास्। श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत-काञ्यसङ्गहे

## हृद्यप्रकाशः।

नोरठा—समदं श्रीयनद्याम, मंगळ करवा माहेदं। अमृतपद् ए नाम, अमंगळ अछत्रुं करे ॥१॥ वर्षथकी वरिये व्यान, प्रगट पुरुषी-त्तमलणुं । निर्विष्ट होप निवान, विष्ट सर्वे विश्मे वर्ळी ॥२॥ रोहा--अति सीणी छे आ कथा, कहे न समझे कोय। सो संक्षेपे सूचयुं, मिन वियो एवी मीय ।।३॥ बारमवार विनय करी, कर्र कथा उचार। मति अति यो'चे नहि, ते यो'चाडो तमे पार ॥४॥ सहुद शिष्य सं-बादर्श, करं कथा प्रकाश । जे सुणतां शुद्ध शिष्यने, होय हृदय तम भाषा ॥५॥ विष्य उवाय-विषय कहे सहुरु सुणो, पुखुर्स सागी याय । सूर्ति जोवा सहाराजनी, इच्छुछुं हुं उरमाय ॥६॥ दिन पहुनी वाखडी, करुद्धं कृपानिधान । पण आजसुधी अंतरमां, भाळपा नहि भगवान ॥७॥ जेम कहो तेम करं, हाथ जोटी रहुं हजुर । दीनपंपू दपा करो, तो हरि देखाय घर ॥८॥ अंतर मार्व अणोसवं, वण दीडे मजनंद । इयारे देखं जगपित, छारे सुख आनंद ॥९॥ एम शिष्प सहुरने कहे, अरजी एह महाराज । अंतरमा इच्छा घणी, नाथ नि-रम्बना काज ॥१०॥ सहरुवान । शेहा-सहुरु कहे शीद करे, अमधी शिष्य थर्मन । सांभळ्य तारां संघन्धी, केन हे सतसंग ! ॥११॥ मन वृद्धि चित्त अहंकार जे, ते कहिये कुसंगी चार। त्यां जीवा इच्छे जगदीयाने, तुं करी कोण विचार ॥१२॥ अवण सचा इमन होप, र-सना नासा नेक । कहिये पंच प कुसंगी, कर्य तुं हैये निवेक ॥१३॥ <del>ŎĸĬĸŶĸŶĸĬĸĬĸĬĸĬĸĬĸŢĸŢĸ</del>ĬĸŶĸŶĸŶĸŶĸŶĸŶĸŶĸŶĸŶĸŶĸŶĸŖŶŖŖĬĸĬĸĬĸĬĸ

नेमां जोगा (च्ये जगपनि, शुं समझी नुं सुजाय। सनिव धदिरमां हरि, व हरको के दि जिस्साच ॥१४॥ क्रिया क्यान-शिवय कहे समझयो वरि, वर्ष कुमंगी ने कोचे। समक्ष्यों सर्वे सनमंगी, एस सनायुं गोचे ॥१८॥ वस समझ्ये बरन्यां नहिः, परमा पानव एक । कानाव एमी वर्षी आपनो, समझाएं परम सनेह ॥१६। अस्तुम एवा ओखनावि-ये, कहें क्यानियान । दशो कनो ह देखी ने, अवसी रहे सामधान ॥१ आ में जावनं वह माहेगां, हेन् हे जा हमेना । सरेहीमां सानुवर्ण, में सर्व महि सबनेका ॥१८॥ जेम के लेम जनाविते, बादी दरिवासका सार । बरायनमां ही हुं वहि, जा नवस अधार ॥१९॥ समझी सामो आपने, करे की जानी हाल । भोटो मुख्य निश्चर्यो, स्थारे कर्यो सवास ॥१०॥ पाने पह परमोदिया, कर्या सनमंती कोल्य। इसि व पाठि संतरे, कड़ी हम केंग्र लोका ॥५१॥ अहिला अंग्रफाणती, रंग इंद्रिय से कै-धान्य । यहम् अने स्रोक्षमाचीय, यस कही उद्यो किया धृत्य ॥१५॥ महत्त्वकान राया-मैथे सहूद कई सभी जानतो, तु जिल्ला अकारी जेता भाषामानुं एको एकवे, भाषा से जेह बार ॥ १३॥ सननी बारी मो वंती, कह बांचब निरमार । क्याचे कह बनु दिना, राज्यां हत्त्व जो कार ॥ ५४॥ संकल्पे सुक्ति सबे, जानी व साबी वर । कही हरि कियाँ रके, भीतर के भरपूर ॥१५॥ लर बड़ी बाबी कवा, सिंधु लाते द्वीप। सक्तन सर्वे एक, सन वंत्राते समीप ॥ ६५॥ इत विकायन वनस्पूर, नाम योग पनवाद । जाकी भयाँ कह अनरे, मिरि कहर वर बार µम्आ अने कृतु जननमां, ने बाली गोनी करमाय । अविज्ञानी रहे परती, वर्षा कायमा वर्षाय ॥१८॥ सारासप्त समझे नहि, मै मा-वेद्धे कही होत्य । संदर्भ सुम्ब दुःचना, दर्शनदिन कोत्य ॥३९॥ जेजे विलोध परमुने, लेमां भाष लड्च । रगरमधां रमी रते, सुम्बद रुव्यक् मारव ॥३०॥ रामदाय मधरे शामने, आयमाय सबरे आय। बामकाय समरे बामने, पामपाम समरे पाम ॥३१॥ सुन्तानुन्त श-वर सुन्तरे, पुष्पपूष्प समरे दृष्पः। मुन्तमून समरे मुन्तरे, पहचीत्र मन विकुल ॥६५॥ निविच एक नवरो नहि, संबन्ध करनी छोता। जायत लग सर्वयां, दीविते दोरी याच ॥३३॥ जने व जांचे जायता, कही वृद्धि रहे कोण ठाम । शिष्य मूं समस्या विज्ञा, हैये म करिय

हान ॥३४॥ सर्वे संकार सुन्ता, करनां आवे जाह । एक संकार हरिनको, वेक क्यो निरम्बाद ॥३५॥ संती वस्तु संतिरे, आणी जरी अनेक । संवि हर्षे रामियो, एवो नरमो वेक ॥३६॥ नेते में जो-क्यो नहि, जावयो वरम कंद । जो विचारि विषय मुं, अरि कर्द मुं एव ॥३आ सोरक---सम्प्रया विना सुजान, सुन्त व द्रोप कोइ इने। सो नकी वान निरमान, जाकी नहे मुं विषय सदी ॥३८॥ इने औ-हर्षम्बादमंत्रे सह्यहिष्यवंशरे म्यमः प्रसग्। ॥१॥

किन न्यान केवा-त्यारे विषय करे समझको सदी, जेले कही कृता करी बाल । आज चंदी में कोळवर्गा, बरने करी हे बाल ॥१॥ एवं विना एवां कोये, बीजां जे दणावात । कृषा करी कें जो करी, कोकल् पने हं आज ॥१॥ लहनवन्त । रोक्-तैये सहद कहे सा भक्ष बढ़ी, बीजी बुदि मुं जाल्य । एइ मारा अंगरमां, इमेश करेंग्रे इक्त ॥१॥ क्रेजे संकल्प अन करे, लेने पुदि करे बमान । निःसंपाय विश्वय ६रे, व ६रे से जिस्साण ॥४॥ मान नान सुन संबंधी, वसी ने पर्योशम । डिक एवं डेरावियां, माना ज्ञान कुछ पर्य ॥५॥ बास ओषन बुद्धपर्तु, माम कप निरंपार । मकी ने निश्रय कर्तु, अर्थु थीं-तर ओकार ॥९॥ वर वारी त्यापी यूदी, वसी से लीपी वेदा। नेने तेषुं बनाविषुं, अंतरमां अवोतिया ११आ पत्र पंची पक्रम अग, पन-वेली केने जान । बुद्धिये बहु निश्चय कर्या, विदेश देश दिलान ॥८॥ क्कर्यमां अनेक विथि, नाम कर गुज आकार । ए सर्वे अंतर जा-णियां, के'लां व आवे पार ॥९॥ जे जे जाली जगनमां, वस्तु विविध यकार । तेने इहाबी अंगरे, अर्था तेनी भंदार ॥१०॥ जबनि आप बळी तेत्र जे, अधिल ने आकाश । पदार्थ एह बंचना, करी अंजी सह काचा ॥११॥ समासगर्ने अनाविर्षे, कवकानी कर्ने वान । धन-वजनुं इदाबियूं, अक्टबनादी में जान ॥१ था बोन बोनानुं बारवपूं, जोल्ब जोत्वतुं जेह । रंगरंगवा सपने, तरत मनाव्युं तेह ॥१३॥ बात-बाननी दिशनी, जानकाभनुं जेम । वानवाननुं बारकपुं, धानधाननुं एम ॥१४॥ वणज दे'वार वे'वार व्याज, जन कागळती लोव। यु-दियां बेमी गई, पर पोतानी वो'च ॥१६॥ स्मरसमा रूपने, जाने क्रेम हे तेन। सद रश सोबी नरा कर्या, त्यां इति देखाये केन 

॥१९॥ सुनां कडी सुन्तमा, करे युद्धि यह विचार । मा नावे सुन्त क्याजे, जा ज्याचे बाच विकार ॥१ आ होज हवेली वेकिएं, संदिर मो'स बोनान । वर कोर वह वंगला, असिये बनावी ए वान ॥१८॥ एवा श्रमेष अंगरे, अर्था लई अरपूर । अञ्चय वर्ष अवलोकीने, इरि रहे के पूर ॥१९॥ वसी रामराम हादे रच्या, कर अवंत्रती रीत । वर्णवर्ण विगनी वारी, कांबामाच सांहत ॥२०॥ शास्त्रवास सर्वतुं, श्रोपी तिये सार । आये मळतूं शतमां, ते राजे वरी यह व्यार ॥११॥ जळजळतूं जाने पर्चु, करकारों यह केर। सकलकरी लोज सरी, वक्षवक्षती बहु वेर ॥१२॥ राक दरैया वो रामा, मनाव्यो ने नान । कवीर क्या कवकमा, वेरो व वर्ष वाल ॥ ३ ।। मानक मोनी मनिकवि, वना पिरोजा हीर । लाग बवाको समक्रिया, भाष्या नतिए भीर ॥२४॥ अधिपुढि जाने चनी, नरम बादु बासिन । एक् बादि बहु अंगरे, बवेबची जिल्लिन ॥२५॥ संज्ञ जंज बुका होती, बारक बेरक चोर । भैरच जून चदानी भय, के देव अदेव कोर ॥२९॥ जेजे जा-च्या जननवां, तंते विश्वे चया वर । वही शिष्य हरि क्यां रहे, अर्थु जीतर अरपुर ॥२०॥ कहीकही कथा वर्जा, रही रहीगयां स-बंद, सहीसही बान कोषी कहुं, बहिनदि न दे वाचे नेद ॥१८॥ वे कवा दता अंग अंगमा, रहीतचा कई रोमरोम ! जवारव ए जानवा, के बुद्धिने क्रोम ॥ स्था जेने जाणी निवास कर्या, नर्या जीतर ने-लांह । सामी डेकालुं महेळातं, रे'वा दीपुं वदि क्यांह ॥३०॥ किया वधी तुं समझती, तुं हुं बोस्टो भूप। तुने बोक्यो ताहरे, तेतुं व कारमं कर ॥३१॥ भाग्य-साची कहुं हुं च बान, समझे सुन्य पा-भीवा सही । अहिनो काडु साक्षान, वान वमावको वहु कहुं ॥३२॥ इति बीहरूरवाकामानानं सञ्ज्ञाहिष्यतानाहै दिनीयः वसना ॥२॥

शिव कार । रंगा—शिष्य कहे साचुं सही, रहुं अंपारं घोर । अने बाहा समझनों, तेनो निसमां चोर ॥१। वर्जावळी बनावजी, ओजनावजी निर एहं। कहो कपर कपरीतनों, हुं सुनीश करी कह ॥२॥ लहुक्कान—सहूद कहे विका नाहरं, विनवे वहु जाकार। कही-कही कहींचे केटला, कहेनों ने जाने चार ॥१॥ जे कने वत्थाने के-विश्वां, बश्चा कर्या हमाना। तेने विका निन्न विनवे, जायन करें कोड़े जान ॥४॥ बात नान सुन अंबंधी, देह वेह पर बार । आई भोजाई जरीती, एवं चिनवे वारंबार ॥१॥ अवगुण गुण करि मिक्रवे, क्षेत्रारे किल सोच। सुन्तर पहार्थ समझी, जिनवे किस निन्न बोच ॥६॥ अस यम पास वरणी, पहा बंची नाम गराम । वेस प्रवेश पुर नगर, चिक्त चिनवे श्वासीश्वास ॥ अ। देखी पर वोनानजी, राज्ये हेन कु हेन । वर्षु समझी संगरे, चोर्चु समावे चिक्त ॥८॥ जा वंदिन आ सुरुत्तो, जा बाबा जोजा दोच। चिक्त जिल्ह एस चिनचे, सहज समावे ओप ॥९॥ आ रोगी का रोगी वहि, जा बुद्वा शुवाय वाल । जा कर दुकर आरी बर, चिना चिंतचे तनकास ॥१०॥ वन जुलवी प्रगन्नी, जब वैतानानी जात । अकर्षितचे एके बहि, विना विनये दिन ने रान ||११|| किने किनवी किनवी, राक्यां क्ष्युवर्ध कर । जिलोकमां ल-नेतल, संबादे सोच करूप ॥१२॥ सर्वे कप संवारतां, म रहे पपरं बेच। लार्च जार्च केम करे, जिल्ला लगना विवेच ॥१३॥ एके कर्य अति बाबर्द, तार्द हाकपुं हाल । निर्मा निरम्बन बाबने, करते हैपामां क्षात ॥१४॥ आका जनन्त्री जानका, जरी जीतर बोकार। एवां जोका जनदीशती, नामच न कर नगार ॥१५॥ फिल्प सोदो संबद पयी, नयो बनुष्यनो हेरू । जज्ञान आची विन्यनुं, राची रच्चो तुं तेरू ॥१९॥ व्येवको बच्चो बेचमा, ब्यंबको बक्कान । बच्चेमके काली क क्यो, बकेबके बर्ब निवाय ॥१ आ मार्च वर्ष्य वर्षा रहा है, जो शिष्य विचारी बात । बाबे वहि कोच महिला, बढी ए जान कुजान ॥१८॥ वन वाने वा'ते बजी, जाने बोटा बोर । वर्ष कारत आपनुं, दीपी तुलने बोट ॥१९॥ वंगल - बोट मोटी बीट बाये, जाये जन्म था। एक्षवे अति । विचारी जीने ररमापे, कांच काम व चर्च रति ॥१०॥ इति बीह्यवयकाकामध्ये सहयक्तिकामधारे वृतीयः प्रकृतः ॥३॥

क्षिण ज्यान । रोग्न-शिष्य कहे हुं कारसित, रिन स समझ्यो रीज । यन युद्धि आञ्चां आञ्चान । कामकी पूलावणुं, व कर्म्यु में निद्यान ॥२॥ कियां, एवं ओटुं अञ्चान । कामकी पूलावणुं, व कर्म्यु में निद्यान ॥२॥ वस्तीवसी कराते वारला, लक्षीलकी लागुं वाय । असीयसी वानीका वद्यायस, कस्तीकसी के जो काम ॥३॥ नहुवक्षण-सहुद कर्म वच्य विच्यासमी, अंगमांहि कर्मकार । अर्थ वयन करी व्यक्तियुं, धन्कि- चिन् है'वे समार ॥४॥ यह संबल्य यो'रे दशा, बुद्धि निवायमा यह । चिक्ते राज्या चिंतवी, ते हुं वे बादं सह ॥५॥ मारां मान वे नान है, जारों जियाती आहें। मारी जान ने वान है, मार्ग सर्गा ने साई ॥६॥ सुन कलक संबंधी, बाद कुछ कुडुंच । एने अर्थे था नने, सर्थुं कश्च विकास ॥ आ एए जारों हूं एएको, तश्चं बहि जय काळ । असन एक केलूं बहि, कई निले बनियास ॥८॥ एवे दुःले हुं तुःन्वियो, प-इवे सुन्ते सुन्त । एइवे जसे हूं जरुपो, एइवे सुन्ते शुन्त ॥९॥ ए छे जारा जातमा, एइ छे जारे नव । ए छे मारा आणमिये, ए छे मारा जीवन ॥१०॥ मार्रा मित्र गोत्र पह, भारी बंदा पचार । शेलुं केम क् सबतने, जारी क जापार शरेश। अस पन बाव वाहेरी, बारी पत् परिवार । कुछ लार्थ वंचुं क्षति, हुं कुछनी वालनार ॥१९॥ जारे बाव बादे बच्च कर्या, जो रे बोर्स काव ! ने बरनो हूं दीकरो, वहि सजार्षे वाल ॥१३॥ ई मोटो इं भोवडी, पूछे सबू जवे वाल। इत्य दामी मार्थरे, करे संचा दिन रान ॥१४॥ हक्तम न करे नाहेरी, कंचे सर्वे अन । बोबेर पुर गर गामनो, हुं हुं एक राजन ॥१५॥ नारे तुल्य जिलोकर्मा, कोण आवे कही बाह । हुवी सर्वे जगनधी, मा-री मोरी लाज ॥१६॥ हूं जे कई ले बायके, हूं वई से न करे काथ। हुं चलतुं भी चाने करे, हु को सहनो साथ प्रदेश सार्व पार्च पार् वहे, व वार्य वच बाय । बीजो जारी बराबरी, जुबो क्यी जगमांच ॥१८॥ हं क्यांको करो चर्च, हं गोरी लंग जवार। धीमा कममा कालरा, तुक मारी वसदार ॥१९॥ वर्ष पश्चिम हुं कर्यों, क्लर दक्षि-जादि देशा। दादी जटा ओई जाजजो, शक्या हे वंच देश ॥१०॥ हुं हुं हरी काले चर्च, अई समन जनार । हुं मार्च माने सही, एक आको अहंकार ॥२१॥ हं पुरुषि पश्चिम हं, हं अक्योद्धं बेद । चा-कामाच सर्वनो, हं जायुह्नं भेद ॥२३॥ जे हे निर्णय कर्यो, नेमां कारे कोच कोच्य। जाया न रंग जिलीने, कर हं कमाओ कोट्य ॥ १ ।॥ हं बका बाचार हं, हं महत्रीनो सेन। मारा नुवनी बारना सह छंचे करी हेल, ॥२४॥ हु गुरु हुं गरको, बीजां सरवे बाख । बारी वरोवर ए सन्, अरवे नहि कोइ काळ॥४४॥ हं बार्व करी वानीयं, जनमां यन-कि जिन । एवं आईना सचनी, शिष्य सुनी से रीन ॥२६॥ अईममने

राज्यां कति, जरी धीनर सोझार। जेले पदार्थ जननमां, नाम कर गुण जाकार ॥२३॥ जलो जल वारितमां, भयाँ पह जरपूर । करो हरि ने क्याँ रहें, शिष्य समझ करर ॥३८॥ दिन बहुवी शालको, में जावपीं है जाव। क्या क्रांच करि निर्मा, नारा परमां वाव ॥२९॥ कावमां न निस्तरे कोपथी, एवां चान्यां के मुख। कले वले जाय कावमा, नो भोसो करें ए हुए ॥३०॥ इरिने श्रंच वहंता भी, धीहरि है जो नैयार। आधि वसे अंगरे, जो होय नवर्व विस्थार ॥३१॥ नोचरवाचे वर अपूँ, वक्तको जाने गय्म। एवं अंगर ताकेन, केम रचे हरि नेह सम्म ॥३२॥ वोच्या—अंगर अनिहाद ले शहरी ॥३३॥ इसे वोद्यावकामको जुनकिक्यांकर चनुर्थः वनमा ॥४॥

किन क्यान । रेपा—क्रियन कडे पह सम्ब छे, तमे कडूं केम छे तेय । बाल मह बहु बगदी, कही कर हवे केम ॥१॥ प्रशास प्रत्यो समने, बनाविये बालम । कहा केम एवं निमरे, नहनी परावी क्षा ॥२॥ अंत: ब्राटण रहे अंतरे, अब पुद्धि चिक्त जबकार । जन्म बढ़ार्थ के कबरों, तेनो रहेंग्रे बा'र 1511 केम आच्या एवं जेनरे, बराई नदां भीतर । जिलायां जिलते वहि, वही रखां एवं वर ॥४॥ एनी सेने एवं आववा, वधी निले समर्थ। अपनी शह सवक्षां धर्या, भारतियो भारते ॥५॥ जनान्कयां ए आदि रखां, दे लाविया पत्री कोष । पूर्वार्षः एक बसने, सञ्जूक करेजी सोच ॥६॥ न्युक्त्यन्त । रोदा-सहुद कहे लाची वर्तुं, ल पूर्णी नेहनी बान । जुनि दह सां-भवन हुने, कहुं तुने साक्षात ॥ आ अतः करणनी जानन, प्रधान रहे हे क्या जोहिए अर्थ जे समे, लेको संविधे संख ४८॥ दिन बायु दि-नकर कर्च, बदण अध्यानी कुमार । जह बैनन्य जे जन्ममां, नेव शाथी करे नैपार ॥ ॥ दिगद्वार दोष कान छे, मधीरद्वार मोप वर्त । वर्षद्वार सो वाक्यदो, एइ समझी से मर्स ॥१०॥ वस्तदार वाको जीवत, वन्तिनीहमार हार वाक। वसम्या कर्व के'रका, व सुवे पाक नपाक ॥११॥ दिन कानदादे करी, वश्रो करे के पार । प्रान्त सर्वे कल्कमा, लड्डड वर्षा भंडार ॥१६॥ वर मारी पूद पाकना, प्याना पास्य जेह । बहोरी विविध जानहां, अंगरे बतयों एह ॥१३॥  नहा पत्नी पत्रमना, अर पैनन्यमा जेम। बाब कर जाकार गुज, कि मने बहोर्था एव ॥१४॥ सुन्वयुः वदापि कोशीने, राक्या बदिया मांच । जेम बोले तेम जाची मिचे, सवाच म रहे जांच ॥१५॥ बाहु मिल बाहने, समझे सर्व सुजाल ! लेखा कर्यो है जीतरे, धरमांडी वमसाच ॥१६॥ डोन नगारां दूंतूबी, तुरी बारकाइ कव । लांक क्रंग मंत्रीरां, गोमुच शीनी अमक्य ॥१ आ सनार सरोदा सारंगी, श्रीमंडक मोरचंग । जेक संगठां वांसबी, होकड बोबक वर्षण ॥१८॥ पहिचाक पंटा पुचरा, जावर जंतर जेह । बीजा बेर्नाव-रवाज बन्द, रजवरिंग निरंदी सेव् ॥१९॥ करजाटककमाना, जरब-धगोजासार। तबल बामां कंडरी, पडवन बादि बपार ॥१०॥ केने बाजां सांसक्यां, तेनो करी निरुधार । छई बनायां अंतरे, नाथ एक आकार ॥५१॥ जान कर तरक मूर्णना, तानक्यो नहि बार । खुणी कीची सांभक्ती, जर्चा हृदय कोकार ॥१२॥ वस्ति स-वैया साली करने, जेजे छंदनी जात । शोहा चोचाई सोरठा, वीक्यो सबुबी बान ॥२३॥ वृर्वणाया परतिया, तुरा बायुरा ग्रंद । बायुनना समृद्दार्ग, बच्चो जंगरमां कृष् ॥१४३ काव्य कवा पुराच पर, प्राप्त वेद बहुविय । एइ जरामां जीतरे, वेमी देश प्रसिद्ध ॥१५॥ एव क हामां अनेक विक, अति हादा बचार । रीम जे रवरवतणी, के'लां व आदे बार ॥२६॥ तत्र बाज गाय बहिनी, बंट खुंट बार जंबु बाय। बाब्द बानवा सांबती, व दोप भवि अनुसाम ॥२॥ रीए भीए वे मंद्रको, व्यास बाबर बोख । शब्द श्रुणी समझी, राव्या प्रद्रवे जनोज ॥२८॥ रोस केटा सेमरा, साबरमीमा सीय। इत्याहर राज्यां हुदे, रहां व वा'दे कोष ॥२१॥ एवं जादि अनंत पहा, क हेर्ता ते बाबे बार । स्वरचे जुद्दी जानिये, बाम गुष्ट आफार ॥३०॥ बही बही बहीये केटना, पशुकान्द बकार । आविरका सह जंगरे, वर्शी मान लगार ॥ ११॥ मोर वर्षणा शुक्त मेना, शुम्द एना सुक्त-देण । काक क्योन विवरी, अन्द्रक पान्य दु कादेण ॥३६। सारस इंस परवदा, रच पहना रमाळ ! वद शिवाणा शहरा, एव बाल्ये वह अंजाक ।(३)।। एड बादि अनंत सत, बोसे बहु प्रकार । शुवाश्चान कर सांभवी, राज्यर द्वाप बोहार ॥३४॥ वंत्री वह वेरपेरवा, वांछी- والمطلوبات المطلوبات والمراجي المراجي المراجي المراجية والمراجية والمراجية والمراجية والمراجية والمراجية والمراجية

वां वह कर 1 वाव्य समझे सहना, एवमां नहि अभर ॥१५॥ वान्य आवं कानमां, लावे कर आकार । तेने अवं समझीने, अर्था लह भटार ॥१६॥ पम आंकानी जायमा, अधी नवरी नेक । वां नेवंडे नाथने, पम करे विवेद ॥१ आ अवणद्वारे कोपीने, आक्या कर्य अर्थन । वतार्या छे अंतरे, समझे एड् बुद्धिवंत ॥१८॥ एम बमाप्यां अंतरे, जकरपदारच जोर । ने आणेडे ताहेरां, पम ए डे बोलां चोर ॥१९॥ क्षित्रम मुं समज्यो नहि, गयो एवये अवतार । नावं नारा उपरे, वाल्युं नहि लगार ॥४०॥ गाफल मुं चरपरमा, ठगी जायडे ठग । काम वह केर्ना नहि, सर्वे सारच लग ॥४१॥ कहिये जिल्लामण के-वली, हैये नहि एकेल । आचा सही ए जंबुनी, बन्मक मावे हेन वली, हैये नहि एकेल । आचा सही ए जंबुनी, बन्मक मावे हेन अर्था सोरक-वस्मक नरवी संपन, अयर जनने जावे अरथे। चोने भोगवे विपन, बुद्धिय जे बाबरो वहु ॥४१॥ इति बोहरव्यक्रकने सहविक्तवारे पंचाः वसंगः ॥५॥

क्षित्र क्यात्र । रोक्-चिक्य कहे साचुं सही, में समझाणुं वहि सोप । लमे कथे लपासियुं, बार्व न मर्क कोच ॥१॥ उपहण हम प् कांसियां, काका जाकी कर्यो साथ। मोटा रणमां रोजियो, मार्पो नयो अनाथ ॥२॥ एइ जेवां होय संगमां, ओळनाचो मुने भाज। नाथ नवारा हायमां, भारी हे गुर लाज ॥३॥ सहस्रवाय-एयु सुगी सहस्र बोलियां, सुणजे शिष्य सुपीर । त्यचा द्वारे वो रिया, स्पर्श वह समीर ॥४॥ स्पर्ध सुन्दर संमारमां, दीडा सुव्या सोय। पिंड अंतर स्पर्का विना, सक्ये केल्या नहि कोच ॥५॥ इति उच्च हारी-रही, बीने स्पदर्धा जेंद्र । वर्ष मर्म चोन्वां करी, राज्यां हर्य नेद् ॥६॥ नारी माना भारतो, स्पर्श ने सुनक्ष्य । कोमळ कापा स्पर्या। अंतर उतारी अनुप ११आ गादी तकिया गाव्सी, मशद को मनमन, लामां वालमसुरियां, भोदितमां अवत ॥८॥ वर्षा वह मह रेशमी, संबाद्धां सम्बद्धा । एमो स्पर्श पामनां, के वा रे कांचे केन ॥१॥ संज समारी सुमने, कोमळ कळी कुल । स्पर्श क्यों सुरने, ने केम जारो भूत ॥१०॥ मद सुगंध जीतकतो, स्पइपॉ पंकं परत । तेन् सुन धारीरमां, विसरे नहि कोय दन ॥११। चुवा पंदन चरची, अक्तर चोक्यां अग । तेल कुलेल ननमां, श्वर्या पासे वसंग ॥१२॥  शीसां सुवासां सुगदां, झीमां वाटां जेव । केले स्वदर्ण विंववे, शंगर थनायाँ एव ॥१३॥ श्रामिश्वेषायां सावद्व, तेव स्वदर्ध त्वचाय, अपीं के तेह जीतरे, सर्वे हहुया अवि ॥१४॥ वनवेती पान पापा-नवी, स्वर्थ सुन्व बु:व्यवाह । तुन सहित प्रदण करी, राज्यां इदया बांच ॥१६॥ ध्वास विकि विक वहति, स्वर्धे वीटा धाव । एह का सर्वे अंतरे, राक्यां समझी सदाय ॥१६॥ रुक्षां पदा जाननी, दाद जज्ञ सोय। ओसनी दनायों अंगमां, तिथे संशय व होय ॥१आ जनकविधिनी औषपी, गुज जाने जन जनर । एक स्पर्ध आनंद हां. एक परवरे दूर ॥१८॥ जल कल लेजे जननमां, स्पर्ध कर्षो जमान । एक त्यकों पीका रखे, एक स्पर्धे आजमी द्वाम ॥१९॥ एक त्यकी सर्वे कोपीने, बनायांके कर । जब वहि जोनां जायना, अयांके अरपुर ॥२०॥ अधिनापी रहे एटली, वबी बाल सत्तव। सोहजब सुनु शहर, अर्थे बन्यां साथन ॥११॥ क्यां देव दीमर दोनवी, लां विश्व वसं कोण विच । कलान कमाइ काकरा, वापी उर्या प्रसिद्ध ॥२२॥ वृहवां तारे अंगरे, आदि बच्चां अपनंत । कही देखाई केरलां, कहिये व आदे लंग ॥२३॥ इपां निरम्बन नापने, शिष्य हच्छाउं शुं जाय । अ-शुद्ध एका अनरमां, इरिनुं दर्शन मो'य ॥१४॥ गय गोवरवादमां, कामा करे कलोग । इंस नियां दिसे बहि, साने पुःच अनोस ॥२५॥ जेह एवा तेवी तुल हे, बहवी सब सनाव। अतिही जवर्तु वयुं, व बयों ताचे जनाव ॥१६॥ वज समझे विनति दरी, जमयो करें अरदास । मधी पचारी एवनो, क्या हुं मादं मधास ॥२॥ मारक-नवासी व कर्षों नोल, अंतरे तिरंतर अवमोदीने। कोषो तन्म जम्मम, वनविवादे वान गर् ॥१८॥ ६व बोर्ड्सममातमने सहयक्तिकासवाचे वक्का वर्गमः स्रीतः

हिन्य स्वाप । रेक्- किया कहे समझ्यो सती, आत वकी एह बाम । वेक अधि मरसं चयुं, परने करी क्याम ॥१॥ बाध विंधी स्वासने, पाळी करे कोय पृष्ठ । सुन्य क्यो आपे वहि, दृष्णदाणी एह दृष्ठ ॥२॥ सम विना कांसीनरना, वही कर्यो विश्वास । मरिष या रथी परमां, नांची तमामांही कांस ॥३॥ जेले मार्ग बेरबी, पाणी पुरां मसिद्ध । सहुद व आंख्यायलो, वेरी सबु बहुदिय ॥४॥ वहुक्-

क्षाच—सञ्चद करे शुद्ध कियम मूं, जोसकतो में जमियान । करेनां कसर बढ़ि रहे, जो समु ने समझाच ॥६॥ अंतर चौरी अमुजेदनी, हाती नहि रहे छेद । रहण देवाडी तुजने, जोकवाबी एकोएद ॥६॥ इम बायु देवाडियां, तथज समझे शुर । नेजहारे करने, जोड़ नावेडे असर ॥ आ बाज पुषा पुषति, युद्ध पतिना जाण । इपाय जेन करीरहाँ, वेली राली परयत्न ॥८॥ जामूपण अवेकविष, पवे बकारे चार । कनक क्या क्रांचा कति, जीतक सीमां वाट श्रेश वेड विंटी कुंदल कर्ता, सांस इतर शर । वीची बाजु बेरमा, करी के सर्वमानाकार ॥१०॥ होता करती सांकळी, संदर मोनी वित्रवेण। कंडण मुद्रिका मेणमा, नृपुर करवनविच ॥११॥ के'ना रच कहेवाथ वड़ि, चरेका चकी जान । सब बाकार हदये, रहेडे दिन ने रात ॥१२॥ शक्त वर्षेया मो'र समुद्धि, वैशा वह प्रकार । रह सर्वे संगरे, रक्षा क्षत्र जाकार ॥१३॥ एइआदि अनेकवित, वानु वननुं कत्र । आरी बर्ग् अंतरे, समझ्यो सुमार कावन ॥१४॥ एक नोहर्सा नेत्रुं वहि, एटलां रूप जाकार । बान्द सर्व बोधी कर्डू, तो केहलां ह आ दे बार ॥१५॥ दार लुकार कुरीबर, से संचादिया सोतार। बचाव करे आयुष्यके, बाह जनमानी कंमार ॥१६॥ एमां वायुष अनेक-विष, तेवडे पच्या में चार । क्षेत्रां पण कहवाये वहि, मंबी कडेता नेइ बार ॥१ आ पुनाको वे चार जनी, एइ संबंधी बायुच । सदी मरे सबू लोकमां, करे पारपर पुद्र ॥१८॥ रोमरोममां रमी रचां. क्षप ए रगरममांच । तत्त्वज्ञित्ता जाती मधी, ए विदा जंतर कांच ॥१९॥ कासनमा कहं केरला, यहि कर्या जे बाट । बा'ल बहेत्य रच पालकी, पत्रंग पराम पार ॥२०॥ मार्स पांची पोडियां, जो-वियो क्यांति सीच । विकु बारट बरन्या, रेट रेटिया होन ॥११॥ मेडी बोडोन इनेनियो, तेमां वर्षा के रूप। एइ उनार्या जंगरे, स-बक्री सुम्बद् सक्त्य ॥२२॥ कृथवीचार चहु वेश्विवे, कर्या जेव कुंत्यार, वयको जोड़ बकी करी, राक्या हुद्य मोझार ॥२३॥ गान्ता कहा नामरदियो, हाडि इदवात्र हुमार । क्रंडां कुडी भावती, बाजी वदक अवार ॥२४॥ क्रमंड करवा कोडियाँ, वरव वदक हैंट। नाम कराया मोधीयां, राज्यां पर जोए मिर ॥१५॥ एव ठार ल-المالية المالية المالية

हार सोभारमा, कमार कुंबार समाद । क्या व प्रापे कोक्पी, क्या बच्चा जे बार ॥१६॥ साट बांच पावाच पूपवी, पुर बाहेर बगर नदी कोट । लईनई अपाँ भीतरे, राजी नदी कपि कोट ॥२आ नोर लरी ने बायलो, एइ संबंधी रहा जात । राक्यां सव पर हर्षे, कविये क्यांतरी कार ॥१८॥ वर नारी वर्षसक, वर्षक वकार। जाणी बनायाँ जंतरे, भाग रूप जाकार ॥२९॥ सिंग सरावी पो-बटो, एक संबंधी जे अस । ओसली शक्यां एक्ने, क्राकी करी ज-तम ॥ १०॥ पाया थोले यमरके, एव अवंधी वार्तिय । एव सहित दवी रिने, एवं रचांके संघ ॥६१॥ क्य रंगी वह पेरमां, कारक कहुंचुं कोट । वेलभी भीतर अर्था, राजी वहि कोई लोट ॥६२॥ जेजे रूप जगनमां, श्रीटां सुरुषां भोष । एइ रखांके अंतरे, नथी ने वार्ष कीय ॥३३॥ बारंबार हां बर्जबुं, अर्थु शुंबाये घर । बदीकही बहिये केटलूं, बांइक विचार मुं बर ॥३४॥ अमृत्रम आ अनुस्पती, अजम जायके जान । मायतमने परमां, चायके मोटी हान ॥३५॥ मुं बाने हे तारा बनमां, भारे हुं हूं जगन । समझे हे समझु आपने, अणमस्त्रः जाणी जगन ॥३६॥ समझावेछे तुं सहुवे, छे अंतरे अं-भादं पोर । वचाडी जो नूं बांबयने, चेनुं घर वज जोर ॥३ आ स-बहुपर विना कां सुद्र रखा, गयो सर्वे मान । तीर्थ शुंटी तांडिये, दीपा ने भूंडा हान ॥३८॥ मेरळ—व्यरी जाधी ने जार, बाचु विच समान समझी। कही कहीचे जो कोट, गरफलने गम न होचे हति [[क्षे]] इति वीतुर्वप्रकालका व स्वृत्तिकासवाहे समयः प्रवंतः ॥ व।।

किन नगर। गेरा—शिष्य है' सहुद सुनो, नरी बभावी नरें। वर जानी बोतानमां, बांधी समन्ती सार ॥१॥ इपा करी देना-हियुं, संनरनं सजान। बाहरने समझ्यो वहि, जोर वयुं जे उपान ॥२॥ नहुद्दवरन वर्षा—त्यारे सहुद बोलिया, सांभव अद्यावात । वेरी बमायुं भादेगां, जे नरमां स निशान ॥३॥ दिन बायु सुर कथा, नेवाज बमन बनाम । रसनाद्वारे रहीने, भावे रम निश्वान ॥४॥ नाटा नारा नमनमा, निन्धा नव्या विगव। जीहान मुजवा जोहते, बांधी लाव्यो कर ॥४॥ वंता वनामां पुरियो, बांदो मादुरी सोय। वाकरवारा सुनरकंती, सेव सुंबाकी जोय।।६॥ वर्षी विदंज किंव

नांदिया, येवर गुंदरपाक । सगद्य मुरकी बालपुरा, मेसूव संदर बाक (१अ) भीर माजां रोटटी, साटा जरूंबी जान । रखवो हार् लाकसी, वासुदियो बनाज ॥८॥ काफदा कुलवरी, अजियां ते वह भात । पुढ़ा बकोडी करी करी, वैधरां कहां कडी वात । है॥ जाणी जिहार जुजबी, खाद सर्वनी रीत । आणी उतारी अंतरे, अति पणी कर्माकन ॥१०॥ बाद्ध वह सोपामकां, भाकि तरकारी नेह । बयारी विषविषयी, सुखद अपनां जेह ॥११॥ कल दल मुझ कंद्रमी, जाणी अजबो रम । जीने प्रमाणी सनरे, औरत्रभी ने मुं अबदय ॥१६॥ जेजे रम का अग्रममा, अर्था मणर भरपूर । मेने रम जी वे दरी, जाजी बतार्था पर ॥१३॥ एकबार जाहार जेले कर्यो, अर्थो उसे भरपूर । तेने वाची वामवा, करे जनम जनर ॥१४॥ विसार्था वि-सरे वहि, जे रका हत्यमां रम । शुना बेठां सांधरे, लटके रान दिवस ॥१५॥ आंचे टांचे जो व मळे, लो वळे खंबर वह रीत । भावत वर्ष पुने वर्ष, एकी बंघाणी जीन ॥१६॥ काले घणा कारी-रमा, सादनमा वह सान । दिनदिन प्रत्ये दीन रहे, करी भूक्यो कंगाम ॥१ आ एम रम अनेकविधि, अराई रचा भीतर । लसे व कोइमा लेसक्या, करी रचा वह घर ॥१८॥ पत्र बंबी पश्रम क्रमे, वर मारी हेराय। देव दावव देखिये, सह रसमा देवाय॥१९॥ वधी भवारे भाषता, रस नावा रसे रहित ! जिहाए सहवे जितिया, रही रसना अजिल ॥२०॥ एम रीन हे रसनी, समझी लेजे सोय। जेने रसे व रोजियो, एवो व दीहो कोय ॥२१॥ एम माईरे अंगरे, स्वाद-लर्जु के सेन । लियां इपान्ड हेन्यानणुं, बाद व दर्य मुंदन ॥२२॥ क्षिप्य तुं समर्थ वहि, के कर तुं रहना त्याम । दिवने दिवने बकी रका, जराय व रहि जाम ॥२३॥ कियां आभी वृदि रहे, कियां रही करिये बात । अवादी एड् अति वर्णा, करे ओटो उत्तपात ॥२४॥ कोरस-अति क्यों बनपान, बात हाथथी वही गई। इसो दिवस वे रात, जिंत जादरी वेटों सई ॥१५॥ १व जीर्रवस्थानमध्ये नहुक-विष्णसंबारे बहनः वसंगः १(८)।

विकारकार । रोहा—शिष्य कहे सुनी आरो, सहा पृष्ठ हुआ हे-बार । बकी काको न निसरे, कहे हुं कोचा विकार ॥१॥ अवे नमे

अजाबियां, तैये क्यों तथान । रैयन ते शहा वर्ष, राजा ने वयो हास ॥२॥ भरावी भेका पर्या, सम्बाधि सम्बर । बास बक्ये नुके मबी, लुटेड नमकर ॥३॥ एवे अरोंसे अब नयो, वर्षों व दोय कि-पार । इसी हे कोप इरामना, पुरु कही जिस्सा ॥४॥ भूरकान । रोधा-पक्षमा जहार बोलिया, हजी वारि के एक। अचेन वर्ष में श्री-अले, यह करी विवेक ॥'-॥ व्यक्तिवीकुवार आवीर, वजी निवेशे र्मप । ते चलारे अंगरे, बहुबिय करका बंध ३६३ सुन्दर दुर्मय दो क-हिये, बाके शंपी सोच । बनारी अनरवर्ग, श्रुव अशुच दोप ॥आ चुवा चंदन सुगंपी, सुगंपी बचार बूपेन । बहर अगर सुनवी, सु-मंत्री तेल फुलेश ॥८॥ अर्थवास वाला निये, निवानिक एक कन्द्र । जाणी बेटी अंतरे, समझी सुचय जरूप ॥९॥ पुजननी प्रोर जति, जाची सम्बद्धी केंद्र । असे शर्मधी बीनरे, तोबी नवासी तेद प्र? oil वंका क्वेती को क्षिका, वेहेरी शताबी काम । बोलरिये दिको पधी. पानवी परिवास प्रवास ॥११॥ सूलनामा सुनकोशमा, धन-दावदी के फन । बरमानिकी वास्तिका, लीवे वास अमृत ॥१२॥ क्षमळ केवदा केनदी, पारिजानक पीजाबाम । महका सुगरी थी-गरा, परियंत्र करे प्रकास ॥१३॥ स्वर्गची सप्त बोर्डिये, जनारी लई पर । भरीके ने भौतरे, जभी राष्ट्री कोच पुर ॥१४॥ अनि सर्वको चंदियो, करक वरक वजी क्रंप । आये वेची वच्यो, आजे ज्यारे एह श्रंत ॥१६॥ वह दूरकदायक दुर्वधी, माके के व छे वाच । तेवच रही कामां, वृष्टमंत्री बुलमांच ॥१६॥ च्या पनी च्यानी, वर वारीवी बेका बोली कोळी बहुविये। राजी एकोएक ॥१ आ नव समय म-कतां, केदिये व जाये नार । वाली है ले बहमां, जानाह बालाहार ॥१८॥ एक समर भराइ रक्षां, बाभ्द स्वर्ध वय रख । वंच शुर्वधी परभां, रक्षां वसी एकरस ॥१९॥ कथां पर ने क्रमगी, सनमंगी वहि कोच । ना'वे केना नो'रमां, करे व क्यमे कोच ॥१०॥ सह काचे सरसंगी क्या, व रक्षा इसगी कोच। कोचर करने कृतिया, देक्यू वृद्धि दिल मांच ॥२३॥ काम कोच वह लोजदं, मोह लाव ममता भूजा। पंच विचयपी प्रगटे, सञ्च अभने वह शूख ॥१५॥ सन्त

t grich

रज तम कियं, एतो से महेमान । आप्यों गया ए रहे, व रहे वकी
निवान ॥१३॥ इरण ग्रोक हाण हृदि, नार्य मार्क नेह । यंच विषयथी येणीये, जिल्ला हार्यों जेह ॥२४॥ सुन्ती दृःणी संसारमां, यंच
विषयपी प्रमाण । येणी पर पंतानणुं, रही से लंचाताण ॥२५॥ बतीति परलोकती, सहा भीवने नोय । संकल्प सुन्त धावातणों, करे
निह एहं कीय ॥२६॥ कीर्ति सुजवा कानमां, अति वणो जासाह ।
स्पर्त लेचा वारीरमां, विकास वहुवन्न बाह ॥२आ व्य जोवा नयनने, रस लेवा रसनाये । सुगंपी लेवा नाकने, नथी आलस कांये
॥१८॥ शिष्य को जुनने करी, एहं चलनी चलाह । नवे ए मरसां
निसर्यां, देली को दिल बांव ॥२९॥ एटला साव नाथने, आवर्ता
समय वाय । तुं तो तलने देवा, विषय समद्रया विनाय ॥३०॥
कोरक—नाथे तियां न अवाय, वरते विश्लेष जियां वळी । ते तपाल्य
तुं सन्धांय, नेन रज नव राने रंथे ॥३१॥ इति धीरप्रव्यवस्थान महरूविवासंवां नवतः वर्षतः ॥६॥

सिव्य क्याच । ऐसा विश्वय नमाची चिताने, अरजी करेग्ने एम ।
एई कुपाल काडवा, कर्न वपाय हुं केम ॥१॥ महरूक्ताच । रोरा सहुक
को सद्धावाल लेह, पांमे पंच निवाल । बैराग्य क्षेष्ट नियम लेह,
सन्दर्भन आग्नसान ॥२॥ एवं पंचने प्रिष्ठची, कर्नु लुज्यां जाल ।
लेह पामना प्राणीने, धाप विषयती हाल ॥३॥ तेनो नील बैराग्यनो,
लागे जेने बेल । ते पंच विषयतो पंचमां, अख्या व दिये जेन ॥४॥
कांनो सनेह इयामहां, होय अति पणा अपार । अंगे तेने आवे
नहि, पंच विषय विकार ॥५॥ एवां झांझां लक्तमां, व क्षेप वर ने
नार । पंच विषयता सुन्तने, अंगे वर्ण अंगार ॥६॥ माट नियम नकी
करी, राखे दिया मांच । एवां झांझां लक्तमां, रहे न किल्डिय
कांच ॥आ निवेद कंच नियमनं, कारण संगनो सग । एथी जान
वयते, नोयल पाय विषयनो भंग ॥८॥ घथम बाल वराम्यनी, छुणी
छीत्रे सोय । पर्धी कर्चु हुं दीतिनी, छेली नि'मनी नोय ॥९॥ विषयताहु
विषयातहाँ, तरत तनना नाहा । कही सुन्य केम वर्णने, नाम व्याघ
संग वास ॥१०॥ जेम केरी वेरी साटकी, सक्री पर सींचाल ।
तेतरपर वाल करे, ते शीया कां सेथी माल ॥११॥ जेम आख्य णहि

<u> Բանան անադարա իարանանան անգին ին ընչ մանանան անականան անգին ինչ նաև անանանանան համանական հանանանա</u>ն հանահանան

वागे रहे, लिली विनीने पाम । मांची मांदरी धागवरे, वहि इन्दर्शनी जाका ॥१२॥ एक क्ये रचे रचा, एक ओहंग्रे बीर । बज्रना गहना देवीन, रहे प्रदास निकाशीर ॥११। बुकाबुका व्यापा व्यस, केहे पहिलो काम । बावे अमर नवणे, न्यां पृथ्य पानास ॥१४॥ रहमां हुंच्य आदियो, छत्रं यदीय नाछ । ने च्य विवय देखे नहि. देखे बजरे काम ॥१५॥ वहनूं जैने अनरे, बरनेसे असीविया । नेहने वन विनयती, रहे वहि तब लेखा ॥ द्या वर्ता एका वैराज्यते, पाने कोइ पुरुषकान । नहिनो सनेड इपासला, करे बकी जिल्लान ॥१ अ कंदमां शुद्ध विमरे, रहे महि तम आन्। प्रमासका अगे करे, श्रुके क्षेत्रम पाम ॥१८॥ इसे करी देखे वृति, पर शेमार्न पंच । हरे वर्ण वजहवासर्ग, लांबचे अब अब्बर ॥१९॥ अवजहां सूचे नहि, वर बोलाबी बाल । आबे श्रीयनद्वयायमा, त्या बाम्य सम्भाग ॥१०॥ शी केश्री आने वहि, वह बोल्याशी रीत । बोले ता सह बे' वावरी, अने अनुष्टां धीन ॥२१॥ एम सरवे अगनी, शुक्र सूने सनद । करनां थीन इंश्कृष्णद्य, बेले वृद्धि विजयेष । १६६। अस नापी योशम बेबनो, मुनी गई नवधान । मही बेबड़े केंचु मुकियं, क्यूं दिया वाई कीई काम ॥२३॥ एवा कानेही सनने, बीड न पर दिवय । जीतां व देने जनते, देने इपाध सनेतृ ॥२४॥ ए देशाय केहती विगती, बदी दही निकृत्य। विशे कई हदे निधने, नेपन सां-भक्क काम ॥६६॥ काने प्रतिक्रमा विना, बीजी इच्छे सुनवा वात । लेकि अक्षते त्यागर्यु, एक दिवस एक रात । ६६॥ १वर्श सुखद स्था-वनी, मननो सुन्दर्भ । स्थ्या इच्छे जो ने दिया, तो नजे अस दिवरण ॥६आ इरि इरिनी सुरति, सनक्ष मुख्युरय । ते विना इच्छे आंक्य जो, मो एक दिव शत व साप ॥६८॥ वसाशी जन् लगी, युरल राखे भाषा। सन परित्र विता रमना, इच्छ नो एक वक्याम ॥६९॥ वृत्त सुमधी वृत्तिमक्त्री, संग सक्त्री सोय। त विना चार्व मासिका, मा एक प्रयोगच द्वाप ॥३०॥ सन मुक्ति हरि सुर्गात, भान्य संकल्प करे जिला। तर करे प्रवासना एकदि, व्यास द्वाच पुलित ॥६१३ मेशी प्रजुकी सुरति, अन्य निक्षय करे काह गुण । तो अझ व लाय एक दिन, त्यारे थाये शहर ॥१६३ भूगति मूची म-

हाराजनी, जिल करे अन्य जिल्ला, तो लेनो दोष निपराचा, व जमे अस एक दिन ॥६३॥ हरि मारा हूं हरिनको, जहकार म करे जो एम । एक दिवस अवने, कही जमे ते केम ! ॥ ३ ता बैरान सेह नि'सनी, कही सुचाची वान । सन समागम झानती, कहं इवे सा-क्षान ॥ १८॥ त्रियो लक्षण नगर्या, धगर बसुवा हाथ । एवा संनगर अंगधी, वाच विवयनो बाका ॥३६॥ आग्या जनाम्या ओखली, कोम्बो करे विज्ञात । एवं झाव जो इपजे, जो बाव विवयनो लाग ॥ इ.आ. वर्षे आपे एवं नि'नमां, एम रहे कई दरी रीत । जेंद्र जोदे कारीरहां, जोने ममुहां कीन ॥३८॥ विषय जेजे में कहां, नेजो बरी लवास । जोकर व रहिये बचना, वाचे वृतिमा दाम ॥३९॥ ए वने काप्यां बाकने, वर निर्जनना निवान । कही गोला की रही, गर्या भाक में काम ॥४०॥ काम कोष मद मोज बाह, नेने बहाच्या बाक। एडमें बजा जेने भयां, रखां कही क्यां बाद ॥४१॥ बाद विनामां बकरों, जो जाप प्रमुती कम। जोह मुख्य ए जबनुं, हरि बाप स्ट्राम ॥४६॥ कुको बकटो वह असी, केबीक जानमां जाय। कोट मोटी प बरने, नक्टांने नहि कांच (१४३) अर प्रका आ प्रकारमां, एवी मोटा वहि कीय । जावी कोर जे जगमा, ने करेंग्रे सह दोष ॥४४॥ पाराकार एकत्रश्रांगी, जारब सी नरी सुप्राण । आभी जार से पहने, ने कहेडे कामा पुराक्ष महत्वा आहे में नुअने बहुं, आणे दिल्य अवह । बाह बसर तुं एटली, मो सभी मारायण पूर ॥४६॥ क्षेत्व- दूर म आणे स्याख, भीचनहचाम मधीचे रहे। ने देले मूं ननकास, धनर कोर जो अससी कारे शहरूमा होने बोग्युवयकामानके लहुमाँतकामकाने नामक पर्मगः ॥१०॥

तित्व क्यान । रोवा—कियन कहें कर जोडी ने, सुनिये बारा मान ।
ए से काम बाहरें, के कांड़ से हरिने डाथ ॥१३ वहित रान बनान
लगी, कोच कने ने अंचर । क्यार दिन विन तमनो, कहो केम आवे वार ॥११ जेन आकारो हु जिन, कर जामनीये क्यांन । दि-वस्त एक दिसे नहि, ए प्रमाप अर्क वयोन ॥१॥ निशापर नरमां जित, दिये सनमां हु जा। क्या क्यारे ति वन्यरे, जारे चाताने सुख ॥४॥ बारे कहें सहुद सुजो, जोइप प्रमृतं जोर। एकने बारे जावरे, नहि जाने पह चार ॥४॥ न्युक्तान । रोदा—सहुद कहे एक आनके, वधी बीजानुं बळ । प्रभुता प्रतापधी, संत कार्ट करी कळ ॥६॥ जन् तमा जे जीव छे, अज्ञाभी अचार। ते ह्यं बात तवालको, छे विव-वच्या वर बार ॥आ वधी एइवे अंतरे, न्योट्य न्याट्य सबर । एडा-बन् बाढे विंदने, एवा बना चरचर ॥८। वन जेने सर्व जनदीकार्ने, तेने करवी तील । जक्त जाको जसएरीये, अक्त जाको हाससील ॥ १॥ ए मंदी कमानी बाजीने, करजो आग्रह कोय । देखी नेवो दानको, सा'य करे हरि सोय ॥१०॥ शनदिन हदनमांह, निये नुद्धं लडाइ । सुन्य दु:म्य वडे बारीरने, कदिये व आये कांद्र ॥११॥ संकश्य एक बामायनां, एडे बीजा अनंत । जुगति करी जिली लिये, साचा कहिये ते संस ॥१२॥ आचे अति कोइ जाकरो, जिल्हो क्या वक आप । जोर्ग तेना जोरने, कायर केदि व बाप ॥१६। हैपायां हिमन बची, पाणा न और पन । समाव्यम् परहरी, संबंधे रहे से मुचालन ॥१४॥ व दिये होष वाधने, जोके पोतानी जोर । सतसंगी सापु-नणी, सुन्वे कहे वह मोट ॥१५॥ जगजीवन लेने जोहने, कहे कुपानी रक्ष। वादी एना परची, आगी जाय ने बह ॥१६॥ जेम सोए नाबर सामरा, नाक्या होय नयार। क्यी जाग्ये आने भना, बजी ब करे कोप बार ॥१ आ एम प्रभुवा मनापथी, जानेग्रे एड जुर । इज-बीतम केम रहे, स्पारे चने सुर ॥१८॥ एम सामा सननी, सा'व करे पनइयाम । मदन न मेले भड़ायमु, जोई जन निष्काम ॥१९॥ सुन्य तजी वारीरतुं, जादरियुं एइ कात । तेजी हरि राजवी, जहर कालो काम ॥२०॥ घर महाद अंबरीयनी, राजयी जाने रंग । तेम नेनो राज्यो, साचो जोइ मन्संग ॥६१॥ बसर कोइ जाननी, स्वारे देले वहि हपाछ । सारे लेह जन्मती, प्रमु करवी प्रतिपास ॥२५॥ लरी डिंमन करी लंबरी, कर्युं सिंभुद्धं बेर । खारे नेवी उपरे, वर्ष भोटानी में र ॥६१॥ कार्ट साची पई महे, राजी करवा राम। तेन केय तरछोड्डो, सुन्द्रापि चन्द्रपाम ॥२४॥ साचा वावे द्रपायको, राजी से रजागंद । काने व सुणे कपटीतुं, भर करे स्तृति कोस ॥१५॥ वारे बीतुं देव्यादयुं, करयुं बीतुं काम । एवा कपटी भक्ततुं, नाव न पुछे नाम ॥६६॥ देव चनावी संगनो, राज्यो विषयशुं नेह । अ-

जन तेनुं भीतरमां, कहिये जो कपटी तेह ॥२आ वंच विषय दश वह रक्षो, तेशुंत्र लाग्युं तान। कपटी तेने कारणे, भारते भगवान॥२८॥ वारी बास्त तिनकने, सापु करेवाणो सोय। अंतरमा श्रमापुत्रा, कारी न वाक्यों कोय ॥२९॥ एवा कपटी जनभी, भीवरि न करे सा'व । साचा संतनी इपामको, आपी चहुँछ वाघ । १०॥ मेग्य ---बांच ग्रहे बळवीर, तेह न मुक्ते बहाराज कदि। गम समग्री शिष्य श्वार, कर जावर आपवर्ष अति ॥३१॥ इति बंदरवदकामणे सहक-शिक्यसंबाधे वकावसः प्रसंगः । ११॥

क्षिप्त प्रशास । रोहा-शिष्य कहे जे सहूद कर्युं, ते सर्व सुर्प्युं सु-लवास । यस अंतर चार सम्या विमा, केय मनाय पुरस्काम ॥१॥ भागन कारण स्थानमां, ए आवे आर्था वर । तेणे करीने तनमां, झांक्यप रहे जल्द ॥६॥ केटलाक चाट के दायते, केटनाव तो व के दाय । मरमरो ए मोरनो, अंतरमां अति थाय ॥३॥ जन्म थया धारवाजना, अने निये संकल्प लाज । एइ पाननी उत्मां, मोरी लोट सुकराज ॥४॥ अयोग्य सकन्य उपजी, बरने जो पछवार । सुन्य रहे केम ते संगने, पाने मने विकार ॥६॥ संकल्प माचा साधुने, आयोग्य थाय जो एक । वित्त देहे हाझे यशुं, न रहे सुन ने वेक ॥६॥ तमे ठेकाणुं हरवा, बनाविये सुद बीर। जेले करी अति हरमां, वारंति रहे सुन्व दिए ॥॥ अंडज उद्गिज जे करीए । सेर्ज जरा-पुत्र लाज । एवा समु जनमे धरे, एम के'छे बंद पुराज ॥८॥ वज संकल्पना कारीरनो, व कर्षों कोणे निरपार। क्षणक्षणमां जनने मरे, तेनो गावे पार॥१३। क्षेत्रे संकल्प वयते, तेने परावे तत । एव समझी संन सनु, अनि कंपने अब ॥१०॥ राजपळ्यां पिंड भारतां, बार् म जुल अगणित । लेनी दास तनमां, कहो घटे कोण रीत ॥११॥ सक-ल्पना शारीरतो, के'लो बाबे पार । बीजां बोराशी वा'रती, सी जा-कोंग्रे नर नार ॥१२॥ बाटे ए केम बटे, अंतर घाट अजोग । संकल्प वामतां सह वामे, जन्म मरण भवरोग ॥१३॥ महत्रका । सहक कहे सुण शिष्य मुं, सार्च कहं सुजाण । वसर आर्च एइनी, पुत्रपुं सभा प्रमाण ॥१४॥ जे जे वर घाट वपते, जे समे जेह काज । ते समे संभारता, मनमोहन सहाराज ॥१६॥ जेम  विशेष 

वर्गा ११] अर्थ हरवायवातः । नीतः ११०

आवनको, काहे कृत्यति एव ॥१ आ जरनन वामी वव कर्यो, वरमाँ
एक किवार । एरच कृता करी वरि, आक्यो असून्य अवनार ॥१८॥
अंनरवानु जिनवा, नारो दीयो समात्र । अवन्य वर धनरवा,
वरनन वर्गन नात ॥१९॥ ते आक्यो अध्याव । एर प्रवासी वर्ग करिते
ह्याका । वृषे वृं आक्ष कर्य, तो रहे जीव्य वह आक ॥१००० एम
समझे ते संत हे, हरिअन्त करिये हरियान । एवा एवं तो तोविंदमाँ,
अवनुन वीना वर्ग ॥११॥ सुन्यंक्च आके वि, देवतिये एव वेण ।
वार्व शुन्त महम ॥११॥ सुन्यंक्च आके वि, देवतिये एव वेण ।
वार्व शुन्त महम ॥११॥ सुन्यंक्च आके वि, देवतिये एव वेण ।
वार्व शुन्त महम ॥११॥ सुन्यंक्च आके वि, देवतिये एव वेण ।
वार्व शुन्त महम ॥११॥ सुन्यंक्च आके वर्ग, ते क्यां हुन्य
कार्या, त्रिकम हे वे नयार । वार्व देवर मह्यू वि, वर्व किया वोकार ॥१२॥ एवा वारो अवसोव ॥१४॥ एवा अच्य वह अक्यां, तेवर करे वरी सिम । बारे वोच व वेचो वार्यो, अहुद वर्व सुन्य क्यां ।
वेचे वृदिव होत्य, रोच करी दीमे अहि ॥४६॥ १म वोद्यवावको ।
वेचे वृदिव होत्य, रोच करी दीमे अहि ॥४६॥ १म वोद्यवावको ।
वेचे वृदिव होत्य, रोच करी दीमे अहि ॥४६॥ १म वोद्यवावको ।
वेचे वृदिव होत्य, रोच करी दीमे अहि ॥४६॥ इत्य वरी वारा ।
वेचे वृद्धि होते वोद, तो व्यारो अववव ॥१० ।
वेचे वृद्धि होते वार्व । वार्य होत्य ।
वेचे वृद्धि होते वार्य ।
वेचे वृद्धि होते होते वार्य ।
वेचे वृद्धि होते वार्य । 

भानंदमां भनिराय । जेने सक्या प्राट क्रम्, ते सह वे पुरश्वकार्य , ॥११॥ इते केने कर अलंब रहे, इतिमूर्ति हैया मोझार । नेनी पान वर्णकी, कहूं हृदयमां धार ॥१२॥ जेम क्षेत्र कीय विनामित, ने जे विवयं ने बाय । नेम जेन पर सुरति रहे, ने वेले जेते चा'य ॥१३॥ ने इच्छे जो अमरावती, के इच्छे जो बैनाम । अध्यतीक इच्छे 🖟 वैद्धंडने, तो देने समीचे पान ॥१४॥ ओनद्वीप नोनोकने, इच्छे ओ अकरणाम । बेली रमें बोलानमें, माने पुरमकाम ॥१०। वर्ता रे बाकी ए बामवा, तेहने केले तेह । अगम न रहे पहले, सुवे चिनवी जेए ॥१६॥ जो जोवा १६छ मुक्तने, तो देने गुक्तमदत्ता। वर्ग कृत्यु वानासम्बर्ग, म रहे कोच अवस्था। रूआ को हकते कोचा भवनारम, द्वा भोषाचा जनन । तो निरुषे सहने नजरे, आवे सुष अन्यन प्रदेश एक एवं अंतरे, बरने सुन्य अवार । से अनाय अवर प्रमुखो, अब आणे निरचार ॥१९॥ बोरो प्रनाच बहाराजनो, जि.वे. कथा व जाय। श्रमावर्धी एवां वर्धी, जेह चारे तेह बाय ॥६०॥ क्या जेम क्षेत्रे राज्युं परं, तेहत्रे राणे तेल । बारे शुच्द सहत्रा, कहिये दु:बाद केम ॥६१॥ एम जाणी अन मनमाँ, राखे वशे विश्वास । मेनी नमनुं सननुं, यह रहे हरिशास ॥६६॥ वैच शेम यह निविधे, आधे जीवन अन्छ। सह रागीनं सरसुं, औषच व होव एक॥२३॥ समावि सचा केर्नु, राम विन्धासनुं अग । माहारूप नित्र वचन वसी, अध्य अजन वर्षन ॥६४॥ ए सर्वे अन शिरोमनि, पासे पर निर-वाल । अधिक स्वृत दर्मा नहि, समझी ने तुं सुजान ॥६५॥ वनर अबु मनया नहीं, आंक्षत्र व मानवी अस । सबू सरलूं नामको, आ-कर सुन्त जानंत ॥१६॥ शिष्य जेते में प्रशिष्, में बंद बरी विस्तार । इजी होन की पूछतुं, ला पुछ सुन्ये करी प्लार ॥२ आ बोरश-पुछ करी बहु प्यार, बाका मजीत शिष्य सुन्दे । स कर संक्रीच हजार. करणे मध्य जनम यह ॥६८॥ इति वीवद्यवकत्वकत्व सहयोजन्यसम्बद्ध भगोरकः मर्खनः ११ १३ ।।

क्षिम प्रतान। होदा-कियम कहे सहूद सुको, जे बच्चा आगे प्रशास । करण हे ए करवा, विचारियुं प्रत्माय ॥१॥ निवेद वन होय वचनो, सेह नियमपण समाव । सनसग रच सुधी वहि सनि सारमञ्जान

॥२॥ भोज लब नेज कवा, रसना मान मन रह । विक अहंकार बोर्चा नहि, नरस अनियो शुद्ध ॥३॥ एइ सहवे निमर्मा, राज्ये वह वसवान । धोरं वसे वानां नधी, सहुद सुकी निदान ॥४॥ बारे कही कुपा करी, होय निर्वजनी निमाय । हिमन बावे हरिमक्तने, भन्ने हरि करी भाष ॥४॥ महत्रक्षण । गेरा-सहुद करे सुरूप शिष्य तुं, कहं बान धनी अनुष । जेजे किया जब करे, ते बाय व्यानकरूप ॥६॥ जे देले जे सांगते, लां संबारे इरिराय । सुच्य शिष्य अवग रह, कई एको क्याय ॥ आ अवन संमादे इयामने, अवसुवाधी मो'र । विसरे नदि एव वारता, सर्व बाख सर्व दोर lich केने संकल्प पर करे, चिक्त करे चिंतपर । इतिसंचल्य कि मा होप बहि, जनर आने तुं अन ॥९॥ वह निवय पुद्धि करे, परे अहं अहंकार । नेमां संबन्ध कह श्यामनो, चिनवे शरमवार ॥१०॥ जेजे चान्द्र समिन्ने, अवन वरीने सोय । तेने वान्द्र इरिमंबन्य विन, निश्चय न करो तोष ॥११॥ वद्या पंजी नर नारना, जह बैनस्बना जान । इरिसंक्ये समिलका, कान्द्र सर्व सुजान ॥१२॥ बाजां हे बहुवियमी, के'लो व जावे जंग । बाज्यांचे हरि जागळे, एम सम-क्षेत्रे संत ॥१३॥ गाव नाव शननी वहि, राग रागनी वहु रीत । जानाच्यां हरि जागके, एम जिनमें जन जिन ॥१४॥ कविन सबैवा साली छपे, वर्षछाया परजिया छंद । बोहा चोपाई सी-रका, कथा इरि आने क्यांन्द्र ॥१६॥ काच्य क्या पुराण पर, काक बंद सुन्वपान । ने सुन्यां श्रीवरि पासके, एव सांधरे पत-इपान ॥१६॥ । एकां सर्वे शोषिये, सुंबाळा सुलक्ष्य । इरिसयन्ये संबारिये, अनिसुंदर अनुव ॥१ आ स्पर्ध कोमस पाष्पालको, पे'-र्यांनां पर कोवल । इरिसंबन्धे सभारतां, आवे सुत्त अतील ॥१८॥ कोमब कुसुमनी कळिये, संदर समारी संग्र । सुना दीता भीवरि, आच्यो आनव एक ॥१९॥ यनेहां यवन कर्या, अर्था हेनेहां होज ! क्यम ऋतुमां अल्वेलची, बेठा हरि करी मोज ॥१०॥ स्पर्धा सर्व क्षणगर्गा, सांबरे कीपनद्याम । घन्यकन्य अन ए व्यावने, अवांव आई जाम । ११॥ रूप अञ्चप अति वर्णा, अवस वरस अञ्चप । वरिसंबन्धे संभारिये, तो सर्वे ए सुन्दरूप ॥१२॥ सर वही वाफी

कुना, इरि नाका पीपां बीर । सांभरे देवा दरियान माने, सुंदर इयास सुधीर ॥६६॥ देश विकायन तगर पूर, निया धर्मा दर्शन । गाम योग वन बार गिरि, गुडा घर याट निर्मरन ॥५४॥ पशु बंगी रक्षम छई, जेने होय इतिसदत्य । गण बाज अज मो महिची, करेन कुला बंध ॥१५॥ वान् सम प्रकारनी, अनेक नेना आकार । इरिसंबन्धे जो मानिरे, तो वर्षे सुन्य देवार ॥३६॥ वंग मूच्या वा सव्य बळी, बामा अना अनेक । एवं सवन्ते इति सांबरे, लो स व्यद् एकोएक ॥२३॥ खाद बाद खुरकी वर्तनपर, बेटा दीता नाव । रथ वेहेम्य वादी चारुव्यये, जोइ जन समाप ॥२८॥ एव चामर अबदागिरि, परी इरिने शिया । ते संभारतां भांभरे, जगजीयन जगदीया ॥२९॥ वेठा अनु वाजोठपर, श्रीवृति वेध्य हिंबोख । करी जगर कपुर जारती, सुन्य संभावें अनोक ॥३०॥ वेशी मदिर मा-जिये, वर्षे बेटा बहाराज। ने संभारतां सांबरे, संदर श्रीहरिशज ॥६१॥ यञ्च समैया क्रमाय अति, जन जोह जोह जमान्यां हाय । को' बालम केम विसरे, सदा रे'ता इति माथ ॥६२॥ शीन बच्न भावूर बांही, सांबरे सुन्ययाम । पूणी पुत्र वावे हरि, वेठा उर्या धन-ह्यास ॥३३॥ ब्रीयम बायुर कारवृक्तनु, विक्रितिर कीन वर्णन । कृत-होता बन्मव कारे, अखना सन अर्थन ॥१४॥ एव संबन्धे सांभरे, श्रीहरि सुचरेण। जावदन होय जो अंगमा, तो न मुले राजीपनेण ॥१५॥ पंचमूनधी प्रगन्तां, जब देनन्य जे जात । ते संबन्धे इहि सांभरे, जिय्य सुवी ने बान ॥१६। लेख-विष्य सुवीने बान, समझापी सहूद कहे। एम दिवस वे रात, बचंद प्याय हरिनुं जो रहे । इ.जा. इस बोहर्ययकासमध्ये सहरतिव्यक्तमहे प्यतिका प्रसंग ॥ १ १॥

विका कार । रोहा—दिस्य कहे पन्यपन्य सुक, जातो बनाय्यो भेद । सहते भीहरि मांभरे, बाप विषय प्रयोद ॥१॥ विषयमारी विसारी वापने, करनां काम हराम । ने समू समझावियुं, संभा-रवा पनइपात ॥२॥ सुप्तम बानो धुववी, कही कोण के नार । जन्य अस वपरे, को छो करी विस्तार ॥३॥ वजी के वि होप पारता, नो के जो भूपानिधान । अद्या हे सांभळवा, सुजीस हडूं दह कान ॥४॥ वचन समारा मुख्यां, ने सर्वे सुख देनार । हेने मर्थां होसे करी,

सुणीया हुं करी प्यार ॥५॥ सहस्वताच-सञ्जद कर जिल्ला सुंचाले, दही बनायुं रीत । राम दिवस हृद्ये रहे, हरि विनवन विकासि॥ रम सरम संसारमां, मन्द्र जो सनभाग। नेमां भीइरि सांबरे, एको कहे बचाय ॥ आ वट रम करा को दीय, इरि अस्यामा जेह । ते समय संभारमां, स्रोधरे इयाच मन्दर ॥८॥ रसोई रसे भरी, करी हरिने काज । ने जानां जगपनि सांभरे, जे जम्माहना बहाराज ॥ भा सदर जातू सुजडी, वेरवेरवा पाछ । वीरमता वंगतमा, सुलह करेटरं बाक्स ॥१०॥ भोजन व्यंजन वह भाननां, देख पोइय अध्य भोज्य । ते सांभरतां सांभरे, जे बरि जमता करी महत्र्य १९१॥ आंदु सिंदु जांदु अध्या, वानि केटी राक्य जनार। जाय राम सीना-कन, भारेक अञ्चा करी प्यार ॥१२॥ वह कल मूल कंदनो, के'लां न आवे जंत । जेते जल्पा जमपनि, ने संबन्ध सनाई संत ॥१३॥ योगायळी यणेयी बीधवां, जयता से अमहीस । सर्वा सेवी मुखा भोगरी, एइ संभावंत तुं शिष्य ॥१४॥ कब मुख पुरव वानने, जमता जोपा माथ । ते संत नित्त चित्ररी, सदा रहेड सनाव ॥१५॥ इसुरंड जंड नारवी, पार्करा सुन्वदेन। एइ संबंध मांबरे, दीव-वंपु दिनरेण ॥१६॥ वही मानक यून वय हह, वीर्या वाली वयन। ते हीडे हरि सामिरे, क्यारे शुने एक जन ॥१ आ जेजे रम बा अकर्षा, बदया वीदका लाटा कार। तीवा ने वदी तमत्या, लोक्या पर धकार ॥१८॥ एव रम सबेक जेड्, पाम्या इतिनी जीव । सबीज एम सभारतां, रहे वहि अवरोग ॥१९॥ सर्गपीमां पण सांगरे, जगजीवन जगनान । विचिविधे ने वर्णवी, वर्ष कांग्रेस ने वात ॥२०॥ च्या चंदन चरवर्गा, अक्तर फुलेल तेन । ते सम्बद्धां सांबरे, जंतरमा अनवेन ॥२१॥ कर्ष्ट केमर कान्ती, जनर अर्थ अनुव । तेल पूर्वेण संबन्धहाँ, सौ बरे वृति शुव्यक्तव ॥६२॥ पुरुष वह वकारमां, सुगंच भारों असिसार । से जीनां दृति सांभरे, असे वर्षा है अचार ॥२३॥ लोरा कजरा दार देथे, पोनी वाजु बांव । युक्र भुलावी कुलना, पूरव कंकन बाय ॥६४॥ वंचा वर्णेटी कुननी, छडी छोने णार्था कुल । दोपी कोपी कुछनी, सर्वे कुल अञ्चल ॥२५॥ बहुनेरे वहेंकी रही, शुद्ध सुगंधि सार । एम सुगधमां सांभरे, जिनम पाच 

नापार ॥२६॥ एम सुगंपि कोपिने, लेबी करी नपास । केसर संबन्ध नहि इयामनी, एवी लेबी नहि बास ॥२आ बास्ट् स्वर्ध रूप रस, कोइ सुर्गिय सार ) वृत्तिसंवर्ण सुभाद शह, वन संवर्ण पुःच विकार ॥६८॥ बळी रहन्यजी बारमा, जिल्ला सुले साध्यम । बंक हंतिय पायन करे, एवी कहें एक बान ॥२५॥ ओज लक तुने कहें, शह भाषानी रीत । सपन जिल्ला बालिका, ए होए जेस पुनित ॥३०॥ बगट प्रमु बाम्या विका, अवच व होच एक । वर्मन वस्तरनी बासली. होप निकाप एइ नेक ॥३१॥ अवने शास्त्र सुक्या हता, अति वर्षे भयाँ अञ्चर । ने बाध्य सुमनां इयामना, थान ओल दोप शहर BI श रवर्ष स्ववाद बोपीने, क्यों क्लो कविवस्तक । ले स्वर्ध बसुनो वायीने, यह व्याचा शुद्ध अनुव ॥१३॥ वयमं एव निवासीने, रेकी क्यों तो नान । ते कप ओह महाराजनं, क्यन बर्धा जिल्लान #4vil रसना तह वह रसने, वाचे रही'ती अवराय । ते हरियसाहि वामीने, निर्वोष वह जिहाय ॥१५॥ बासे वास जिन बहसी, क्रम-मांप लीपी'नी जेड़ । ते दार इरिना संपनां, उसे पाप एवं तेड़ ॥३३॥ एम संबंध औहरित्रणे, प्रजन्ने पत्रे वाष । एक प्रमुख प्रज बक्या विना, समे वहि संनाव ॥६आ एम वंच इंडियमां पाव जे, वसु संबंधे क्याच । जेने अब एव जानवो, नेने शुरु सप्रवाद ॥३८॥ पह प्यान एड बारका, एड्ड सहज समाच । एस क्रमझे शिच्य के, ते वार्थ सुन्त अगाय ॥३९॥ एम विषय रंपमां, सुक्य राजे महाराज । जेम करे काम जे गोटिका, ते न करे काम शवाज ॥४०॥ जेम काम कोमी धनने, कामी संभारे काम । एम शिष्य संमा-त्या, श्रंबर भीषबद्धाम ॥४१॥ यहां कठण कांई वधी, वधी काया कलका । ए कल आने लंगमां, तो सहधी जान मरेश ॥४२॥ जि-व्य जो जो में पृथियुं, नेने कर्तुं में मोच । सुंदर ग्रंथ सारो बचो, समजनो सह कोप ॥४३॥ किएम जेम से नेम हहे, रनिरनित् सप । निरमुक्ताबंदने पर रही, कही ए कथा अनुच । ४४। जे जन अवसे सांभकी, बरहो तने तथान । अंतर महि बोजलहो, पानी हरूप बकावा ॥४५॥ काटी दक्षि केरबी, आणी बाजको वर । तंत्रे समु सक्षयो, कानो जन कदर ॥४६॥ बीजा कोरि उत्तवबी, केदि काज

\$\dark\_d\

प्रत्याः १५ ]

न होष । श्रीसहजाः
देव दानष थानव ह
निर्देश प्रकार । शुद्ध
संघन अद्धार छत्त्रेवो,
नालमां, रास्ती हदे
पथार्थ सेम छ नेम ।
कही ।(०१॥ इवि श्री
पंपदकाः प्रस्ताः ॥१५॥ न होष । अप्रेसहजानंद १०० विना, कुदाळ न दीठो कोच ॥४०॥ देव दानव मानव मुनि, सञ्जु विषयने वशा। शिव अजने सुङ्धी नहि, जे अति थयो अध्वज्ञा ॥४८॥ एटला साटे आ कपा, वर्णवी विधिध प्रकार । शुद्ध शिष्य समझजे, सहुतुं छे आ सार ॥४९॥ संबन अहार छतुंबी, अबाह शुदी एकावशी दम । रच्यो ग्रंथ बर-तालमां, रास्त्री हदे भगवन ॥५०॥ सोखा—कही ए कथा अनुए, यथार्थ जेम छे तेम सही। समझान्युं सर्वतुं हर, अनुषम एत् वात करी ||६१। इति श्रीतिष्कुलानन्द्युनिविरचित्रे हृत्यप्रकाश्यक्ये सद्वरशिष्यसंवादे







भीनामिनारायको विजयतेनसार । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत-काव्यसङ्गहे

## धीरजाख्यानम्।

राग घन्याश्री—सुणना सिंधु कीसहजानंदजी, जगजीवन सहीप अगरंदजी। चारणागतना सक्षा सुम्बकंदजी। परमलेही छे परमार्न-दजी ॥१॥ राष--पर्य सोही सन जनना, वे घणा हेनु चनस्याम । दासना दोष टाळवा, रहेछे नैयार आहुं जाम ॥२॥ अनेक विघनयी लिये उमारी, करी पळेपळे प्रतिपाळ । परदुःख देखी नव पाके, एका छे जो दीनद्याळ ॥३॥ निज दासने दुइमन जन, पडीघडीए बात करे वर्णा । क्षणुक्षणुए सबर खरी, रामछे इरि तेइतयी ॥४॥ जेस पढ़े जनने पांचारं, तेम करेंग्रे ए कृषानिधि। सुन्य दूःव्य ने बळी सम विषमे, रामेछे खबर बहुविधि ॥५॥ जेम पाळे जनती पुत्रने, बहुबहु करी जनन । एम जास्टवे निजजनने, बहु भावे करी भग-वन ॥६॥ आ जगमां जीवने बळी, हरिसम हेनु नहि कोय । परम सुम्य पामे प्राणघारी, एव चिंतवे श्रीहरि सोय ॥ श व रूसे धाय सुम्य जनने, में देखे दुःम्य द्या करी। जेह सुम्ये दुःमा उपजे, मे आपे नहि केदि हरि ॥८॥ जेम अनेक विधिनी औषधि, होय अनि कडनी कसायली। द्वीरि दिये दर्विने, टाळवा व्यापि आहेर मां-यली ॥९॥ कुपध्य दस्तु केदि न दिये, स्वाया ने स्रोटे मचे करी। नि-ब्युत्सानंद एम निजजननी, सा'य करेंचे औहरि ॥१०॥ कड्युं ॥१॥ आवे अनेक भया हरिजनजी, तहने आव्यां वह वह विघनजी। समभी विचारी कर्यो उद्घंपनजी, भाषशुं भज्या श्रीमगवनजी ॥१॥ राष--भाषया भगवान भाषद्यं, सापीत करी विरसाद।

and the states of the states o

भाग नेती आ लोक मुक्ती, तीथी अलीकिक बाद ॥भा ते अक बहाद बमाणिये, आणिये पुत्र कारक मेहेब । विश्वीत्रण अंतरीय जाहि, सम्या हरि नजी बीजी देव ॥भा दिवी वजी सुपत्रका, कार्न ने रतिदेव करीय । सब मुद्रमान स्वरूपका, हरिजंह इतिज्ञा सहीये ॥४॥ शुक्र नारक में भगकादिक, जवनरम जाजिक जाणिये । सक्यी वस्ती वयसम्य, वारा वयबाका ए बचाणिये ॥४॥ मंत्रू विचारी संगरमां, जाजी लीपु क्रेंस के नेस । बाक्त घोडी वे कोठव वश्ती, यह नारमें बनाय क्रेंस ॥६॥ अन्य सुक्ष समारत्रं, नेसां हुव्यको नहि वार । जेव बाक्ये व्यये पंत्र नर, तेमां श्राचे सुक्ष जिरवार ॥४॥ एष्टुं ओह सुक्य भा जक्तत्रं, जेत्रं बान्युं विद्यां सन् । नज्युं सुक्ष जिय तम बनत्रं, करवा वसूते वस्ता ॥८॥ बोटा बुक्तने बटाइवा, कही क्यर करवाइ करी । जीतिये के बाव श्रीवर्धी, पण ए हुव्यक्षां वाविये करी ॥१॥ एवो जावह जेवे। आहर्षों, करी अंतरे वही कि बाह । विष्कुत्वानव एवा जनवी, श्रीवृद्धि बहेब सार ॥१०॥ क्रव्युं ॥१॥

शायमनि श्रुणो सद्य सन्तरी बानजी, हरि अजनां रहेवं राजी रजीपानशी । सुन्य पुल्ट आवे ओ लेमां दिव रालशी, कोई क्यवाई व बाय कमीयानशी ॥१॥ सक-कमीयान व बाय की। दिन, रहे जनमांच ने मनव । दुष्ण पत्रनां जा देवने, क्ष्मग्रीर व नाय कोइ इन ॥२॥ चलतोजी विचनमांदी। वजी बरबी अंतरे चीरवे। सवाच व शोध भरतुं, होय सुन्य दृश्य प्रतिन्ते शाम नेमां कायरना कोरे करी, केंचे दिसल करी राज्यों । सोबी बाधने सुख्यी, बजी मुक्तिया वय भाषावी ६४॥ जेल शहरो जुवे सरीहता, वचा वचा लागेल पाप । तेमनेय सकताच प्रथमां, बढी वाले पूर्व ताब ॥५॥ घणे दु:ले मुख्य प्रज्ञाद्ध, रहे धारधीरनुं सदाय । सन्य दु:ले सर्वा-सरो, राम दिवस रह हदायांच ॥६॥ हुन्धी योटी बारमा, कह राच्या विना म कहेवाप । भीव्य बच्चामां मक्यो वशी, खांसशी शांकार वय जाय ॥ आ शहरा संगतुं सरम् बहियं, तब दूपर एक तान । शरी घर कल सुच परहरे । पर सम्बं संगम नियान ॥८॥ सकरना समुद्रशाहि, दिने दीनना वाले नहि । चलो रहे चंच विकास, तेने सम विकास मजती सहि प्रधा हुन्ते संबद आवता.

जेमां सांबरे श्रीवनद्वपाय । निष्कुलानंद ए जन्म कहिये, नाराय-जना निष्कास ॥१०॥ कहवुं ॥३॥

जेवां बसाचां कमोदियां नवजी, ते ने पण वर निर्विषवजी । सुम्ब दुःम्ब वक्ते व मुकाय अनजी, कार्चु वावे सार्चु कमकी दन-जी ॥१॥ शक-कार्च माने कमणी विना, क्रोधार्च मानेग्रे सार । करी व बाप केरवणी, रुवी वंदी वरे विकार ॥२॥ केन कुलान क ले बुलिया, बजी काष्ट्रवे कसे सुनार । इन्जी कमे बुक्जवे, लोक-ने कमें हे लुक्कर 11811 जेव कानार जिलाने कमी करी, कई आवे बारी नेमां रूप । एवं कमायचे जन परिना, लारे धायचे हाइन्य-क्य ॥४॥ जाको जेम शोषायणे सुवर्ण, ने क्यक कुंद्य पायले । दरी दिने दर्व कोचला, जाओ बोली बांदी बहेबावर्ड ॥५॥ सर १-न ने स्वारमं, मून तोनमां वर्ष वसी। तेर शोव्यापी सह समझो. क्षी कीवन सबकी ॥६॥ बढ़ी जेम बीजी बान्ते, नाकी बाले मेन अधियो। नेवे होते जे भेने भरी, अञ्च पातु आवनी वर्षी ॥आ जेल परिचंद परके परने, बखी दिये मुताबनी मार । लारे मेल मां-काली, सब रहे रति जित्पार ॥८॥ जेम मजीवने व्यांत व्यती, वती रीतवाँ रंगरेज। पक्षके रंगे आवे परशी, वजी तेमां ते आवे नेज ॥१॥ एव अन्तर जगवानमा, आवे कन्ने गोधाय आप । जिल्ह्या-मंद्र ए मन्द्रको, बसी वर्ष अधिक प्रशाप हरेगा करते हथा।

व्यान शक्ते—अन्य थापुरे धनवावनुं, के जो धड़म साथ । सु-वा सर्वे संसारवरि, घरणां जोइए इराम; अन्य । ११॥ देह गेह बारा दावनुं, मेलकुं समना ने मान । एएमांथी सुन्य धारे व्यूरे, जून्ये व इह भान; अन्य ।। ।। विषय आरं दम बांदथी, नेतो महे जो हारिरे। वपहास करे आपी कोयरे, नेथां रहे इह पीरे; अन्य । ॥१॥ सुनी व थाय नारे यणुं, पूर्वो सहज स्वताचे । निष्कृतानंद पूर्वा अन्य ने, जहा जुगो जुन कहाये; अन्य । १॥ पद ॥१॥

जेन्ने वार्षे होच हरिश्वकती, तहने व पाएँ जा देहमाँ जाम-कती। वजी विचयगुर्वाची हेंचु विरक्तती, जेन सुर्वामा आ जन्नेचे अकती ॥१॥ वज — अक सुर्वामां व जन्नेचुं, वजी विचय

<sup>1</sup> केंग्र

راي المراجع في المراجع في المراجع المراجع في المراجع في

सुलने कार । शुद्ध यक श्रीवरित्तका, वार्षु तेका जन प्रहाद ॥२॥
प्रकाद भक्त प्रमाणिये, जाणिये जगिक्कात । हिरुव्यक्षतिपृक्षत हरिज्ञव थया, कहुं क्यापु जेनी मान । १॥ वर्षवासमाहियी गुद्ध कर्या, मुनि नारत्वे निर्भार । निभय कर्यु हरि भज्ञश्चं, नज्ञश्चं सुल समार ॥४॥ वर्षी प्रहाद क्षी प्रमच्या, वसी वीत्यां करम सात । खारे नाने नंहाकीने, क्यी निज्ञक्च शिव भाग ॥६॥ आसुशिवया आर्थकी, तो वाजो अनियो क्षित्र ॥६॥ त्यारे प्रहाद वर्षाका करी, आतो दिनेचे अन्तुर । मारे एवे केम मक्तां, तम विचारियुं वसी वर ॥ आ नारे अन्तुर । मारे एवे केम मक्तां, तम विचारियुं वसी वर ॥ आ नारे अन्तुर । मारे एवे केम मक्तां, तम विचारियुं वसी वर ॥ आ नारे अन्तुर । मारे एवे केम मक्तां, तम विचारियुं वसी वर विचार ॥ मारे अन्तुर । मारे पार्य प्रहास ॥ ८॥ एक वात अमुर वे, वसी नहि वसे निर्वार । भारे मारे प्रवे वहि मक्ते, एवो क्यों वर विचार ॥ १॥ वन इम्मानित्यार । भारे मारे एवे वहि मक्ते, एवो क्यों वर विचार ॥ १॥ वन इम्मानित्यार । वारे केम हुं, वसी मार्थ क्षा क्षी निर्वार ॥ वारी निर्वार वार्य हुं इसे तम ॥ १०॥ कर्युं ॥ ५॥

लारे बहाद कहे पिना ए साहजी, भणीश जेमां भर्नु थाये हाकती। परणुं चयन मानीश तमाहजी, एई सुणी सुनधी तेला अरारहजी ॥१॥ गर्न- अप्याद श्रीशमके जे, तेने कहेंग्रे एम मुगळ।
अलावो लाने विया आपणी, जाओ तेवी वेलारो निशास ॥१॥
शहाद वेटा परी परचा, लली आप्या आसुरी अंक ! तेने तर्ने राश्री सम्या, मारायण वर्ष निर्माच ॥१॥ न्यारे वाशमके के समझिये, आह ए नहि आपणुं काम । ए से वेरी आवणा अति, तेरनुं म
लल्युं नाम ॥४॥ त्यारे पहाद कहे वापी जनमा, इसे शतु श्री सतवान । मारे तो सदा ए मित्र से, आय अंत मध्ये निदान ॥६॥
लारे श्रीशमके एम समहया, से जा वातमां विवाद । एम कही उवेशा करी, त्यारे कहेंसे वासको अहाद ॥६॥ मरी जागुं महने शुरली, जित्र वहींसो भीते नोरा मतो श्रीममवानने, नतो पीजा
सीर वहींस ॥आ जेने अस्ये जग जीती आये, जने थाय सुव्याम
सदाय। तेने तकी वीत्रं वोते जेह, तेह क्ष्मप्री के वाय ॥८॥ अस्ययः
सन जेले आयियुं, आप्यो सरवे सुन्यो सक्षात्र । तेने भतिये अस्य

g framet 1 00%

करी, नो सरे ते सपक्रां काजा द्या लारे वाकक सह पोलियां, जेस के को लेख करहां । विश्वहत्तानंदनी बाद भन्नतां, वहि याप अमार्थ नरसं ॥१०॥ कच्चं ॥६॥

एवा सुणी बाळकना दोनाजी, बांडामर्के कर्यो मने नोमाजी। आतो बान वडी चगडोलजी, लारे कहे रायते मर्म अर्थ लोगजी ॥१॥ तब—मोली सर्व कहं कहं, पहाद नुमाते के नव। नेनी अन्त हैं छे जनवाननी, प में जोड़ सीधूं राजन ॥२॥ आसुर विचा एती 🥻 जिले, भूले क्या अवदो वहि। बीजा बासको बगावयो, बसी अ-बळो प्रपदेश दह ॥३॥ मारे आदी श्लाको एकी आजपी, जे म वरे बीजे वेत । कुछ आपकामां केले व कीपूं, एवं आदगुँछे एले केन ॥४॥ त्यारे दिश्वयक्तकायु कहे बहाइने, जावी अवक्राई तुं कां करे। नानी चयमां निःशंक यह, कारे कोइथी मच परे ॥ ना नानुं राज्य तने आजपी, अस पन सर्वे समाम । जल लोकमां वहुं ना-इदं, कोइ मोदी गर्क वहि सान ॥६॥ प्रहाद कहे एव पापकर, सन गमनो नथी एक् गेल । अजनां श्रीभगवानने, भने सम् लागेंग्रे से ल ॥आ खारे हिरणपक्षिण बोल्यो हाकली, बावि केल पुले सीद भोत । जाननी वची तुं भावकं, मरी जाइक तु लाग मोल ॥८॥ लारे महाद करे वृदे बोलयुं, तेनो करको विकार । तने तारे मने मारियो, तथी बाम्यो हुं मुं द्वार ॥ शा त्यारे दिशक्यक दिए कहे कोप करी, नने इलीवा मारे इत्था नारी रक्षा केम करवी, जिल्ह्यमानंदनी नाथ nert frum gerg

कहें दिरच्यक दिएयं कोई के यो सेवक भी, मारी मुकाबो आशी तमे देकती। आणे तो आद्विषुं अवर्षु छेकती, पत्रं सुकी उठिया असुर अनेकारी ॥१॥ शब-असुर वडी आवी कहे, राप तेम कही तेम करीए । राय कर आने मारो जीवपी, हो आपणे सर्वे उगरीन ॥२॥ असुरकुक कानेननो, कापनार आ के कुठार । अस महा अर-क्यने आएव अग्नि, बळी बाळी करेंग्रे कार धरें। धारे मानी क्या बकी, वदो पावो वजी विजाश। जेम शीयो क्रिकेटो सर्जो, करे कनेदर नाका ॥४॥ काम हे भावता कुछत्रो, तमे जाकी सेजो जहर । मार्ट

एके जो मारिये, तो सह उगरिये असुर ॥५॥ मान तान सुन जा-तनो, वेरी लिये वा नांनो वेदा । एथी सुन्य आवे वित, आवे कडल कष कलेवा ॥६॥ माटे एने नमे अकर मारी, मां विकासे वैक्षि वान । छेद्री आक्षा एक छे, करो एवा जीवती चान ॥आ एवं सुणी असूर तर, सह तरत चया नैयार । जारो मारो सह करे, अबे अर्था तर अपार ॥८॥ ममें री ने निर्दया, बसी पापना वुंज कहिये। नेने पाने महार परिया, जरी क्षमा एवी सक्षिये ॥१॥ गरनतानी तसे हाली. कर्ण मारका साथं मोरे। विश्वज्ञानंद कहे केरी निर्धा, आवती बीठो एड ठोर ॥१०॥ कडवं ॥८॥

पर्माण राज्यी-पश्चानि कन्ने पे ल्यानने, बुद्धम क्यों हे राचे । पीरी भाष्य महाद ने, वांधी कार्याने वाये: बदानि ॥१॥ त्यारे सावने वान मानी मने, बांच्या हाचीने पर्ने । नेमांथी प्रक्राइ बनर्या, सहुए हीटा हे रगे: पदानि ।। ।। त्यारपणी नेथे नपासीने, आप्यू केर असमी। तेनो सञ्चयन थर्ष, नर्व इत्तरे सन्धाः पदानि ।।३॥ विद्या ए सान वर्षना, बांध्युं वक्षाञ्चं वेर । निष्क्रणानंद कहे असुरने, बहि कोइने मेर्राः पदानिक ॥शा पद ॥भा

कड़ो आह आवने करिये केमजी, सह विचारवा लाग्या वसी एमजी । कोण जाणे केम रहे छे ए श्रेमजी, इवे जेम मरे करी सन् तेमजी ॥१॥ तब—नेम नपाणी अब करो, मान्यो ठाउको ठाने कृप । मरी जाशों के भोरंग चाड़ों, धाड़ों तेंने रांशी धर्च भूप ॥३॥ नेमां मन्दि पण वय मधी, खारे चर्चा असूर अपार । जरो देरी वे जी है नथी, एम यथी महत्र विचार ॥३॥ वडी करें छे वकारी वहारथी, भाष मलनास पनु तन । नेमनुं नेम तेने कर्ष, नेमां करी इरिये जनन ॥४॥ वडी नारा जल नात कीचमां, पालिया प्रणी दह भार । तेथी बहाद कार्या, श्रीदृतिये कीथी मार ॥'-॥ वशी काम सर्व साम करी, वक्या मारका शारकीर । नेने जाम वास्ता महि. पन्यपन्य ए जननी भीर ॥६॥ यधी बाबबे परलाळवा, बाळवा कर्या विचार । तेव विनाना वराय बीजा, कर्यो बजादे बजार ॥ आ अक जाकी भगवामना, के अञ्चरने वेर अनि । जनसूबी सने मारवानी,

करेंचे वह कुमनि ॥८॥ वर नारी सह यम कोले, कोई वान करी बहुत्वनी। तो कमुर सह अभय वाय, जय वाय कव्यादनी ॥९॥ बाधर्य वाम्या अमर वर, ओह बहुत्वनी कीर। निर्मृतानहवा नावनी कसकी, ओह वयने बाच्यां बीर ॥१॥ कहतुं ॥९॥

वधी इरिज्ञवने पीरजसम्ब चनजी, काम दाम आने र दोगने इनजी। त्यारे जन करे इतिनुं जजनजी, तेमां वह आवे वियन विवस्त्री ॥१॥ शब-विवय जाने क्लचिक्यो, सुर असुर ने नर वकी। जोलम म बाच जन जेम, तेम बात करवी नकी ॥१॥ आच जने बच्च जांच, अनेर शुन्त शुंद्धं भोगव्युं। सही संबद अञ्चा जीवृरि, एस कारे जुगमाये करतुं ॥३॥ अन्य वार्तु जगवानमुं, राजी विचयसुम्बनी आका। वेत काम न बगाविते, भाइए भरा इरिया शास ॥४॥ अनि मोडं काम आदरी, दक्तनो करिये विचार। एनी बरव आवे वहि, बबी ठाली जोवाय कार प्रभा कार जाये वे काम व थाये, बसी जाये जानी लेव। एवं काम आदरनां, वही के दे जार्जु देव ॥६॥ बादे लावे वाच जेब वाचना, बजा सरादेखे सुदार । वक बुके जो तानकी, तो सांधी व वाचे निरंपार ॥आ जोने मोरे केंचुं ए कोंचुं चनुं, एचुं कोंचुं नथी जो जाज । प्रद्रादनी पंटे आपणने, वधी कमना महाराज ॥८॥ वेल्लो जन्त प्रहादने, जेले वहिया एवं कृष्ण । वेटी वह कहं क्यिंग, रखा हरित्री सनमृष्य ॥९॥ एकाएक विषये हेक, वर्ष काम एने आदर्ष । तिष्कुणानश्ये वर्ष वाथे नेतुं, वर्ष बर्च गमन् कर्य ॥१०३ करन् ॥१०॥

वसी बहादनी कहं सुनो बानजी, नेहपर कोपियो नेनो नानजी।
वसी लह लहम कर वा पानजी, परो कनाहोन मोटो उनपानजी
॥१॥ राळ- उनपान ने अनियो पयो, कहे वापी प्रहाद पर्या गया।
देखाल नारा राज्यारने, कारी करन जारवा रखो ॥२॥ प्रहाद
कहे पूरण हो, मरवे विवे मानो द्याम। इसना मन् प्रगटको, राखको
नार्व ठाम ॥३॥ अरेरे गर्व बोम्प मां नं, वळी कहे उराधीने ठीक।
लंने तारा राज्यारनी जा, मारे अभी देवामां बीक ॥४॥ एम कहीने
जो कारियुं, तीन्द्र करन ने वार। यांचो भाष पर्य पाव करवा, पर्य
व वरे प्रहाद समार ॥४॥ करवे दान कोचे कर्त कांचां, वळी बोने

वसमा वेल । रीसं करी रामां वयां, घडापापीमां वे मेल । ६॥ वती महादे मकाजियुं, जोई असुरमो आरंग । कहुंचे आ कालमां, स्थिर रच्या में वह स्थान ॥ १॥ उराप्या ज्यारे वहि स्थानमां, त्यारे कोप्यो वह करवाल । जिकाजिक सारी स्थानमां, त्यां वराज्या वशु कोपास ॥ ८॥ वसी मार्युं वतु जेय कोममें, नेमां ने वाय आवे यहि । नेपा तेने मारियों, वर्शसंद्यी मगर वह ॥ १॥ हावाकार अवार पयों, राज्युं महाद्यीतुं पत्य । निर्मुकानद कहे तेने करी, सबू मुन्नी मैंसे आपना ॥ १०॥ कर्मुं ॥ ११॥

मगच्या वृश्चित्रणी महायुने साजजी, यह राजी वई वोलिया म-रस्रकारी। सामो सामो प्रकार मुजयकी आजजी, आर्च समने नेह सुलको समाजजी ॥१॥ सब-आपु समाज सुलको, एव दोनिया के नरहरि । पहाद कई नमें प्रसन्न बया, इवे हां मानुं वीतं करी ॥२० मारे को मधी कांत्र मागायूं, यक गर्यु कहेबारे मां कांद्रेंने । यंक विक-वयां बीन जीवने, बागडी रकांग्रे जेमां सोईने ॥३॥ बोरिक सेवा करी समारी, मागेएं मोटा सुचने। एका वे वारीने मोसनी, विकय-सुन्य देशो मां विमुखने ॥ ८। एम प्रहादजी उचर्या, कथो अंतरनी व्यक्तियाय । धीरजनानु धाम पन्य, निय्कास कथा म जाय ॥५॥ वेली मिलि शहादती, एवं। आपने रण आदरो । नदी वाधो नानी करी, भव तती भक्ति करो ॥६॥ भक्त कहेवाह था भवमां, अभक्तवज् अक्षपुं करो । शुद्ध संबद्ध धई पनदयामना, असल अस्ति आहरो ॥आ भक्तिमां भेग भूंदाईनो, बद्धी रशियम जब राणिये। होती वर्ष थी अंगे दासभी, विश्वायासी पासे वय वास्तिवे ॥८॥ अन्तः हे यह भा-तना, दान वाम सुव मान वानमा। एवं न वावं आवर्ण, वान अन्त नरा भगवानना ॥९॥ संबद्ध मह वनद्यापना, इन्हर्ग सुन्य संसा-रना । विष्कुणार्नेय प भक्त वृद्धि, एनी सक्तम हे पार जारना प्रदेशा कवाचे प्रदेशाः

वरमन सम्बो—अन्त माचा भगवाभना, साम्रा जरना मधी। नश्चम ओह लेवां नवीरे, जूं कविचे चनुं कथी; अन्त व ॥१॥ अनि व दमाञ्च दिलना, पन्ने कष्ट न कांच। प्रानभागीने वीचे नदिरे, वर पिक्ने पिकाम: अन्त व ॥२॥ पोनाने सुन्त जो पामवा, पीजानुं व बता है। इस जाने कोइ रमना, तेने शांति नमारे; जन्म ।। शा क्षमा नगी को में नहि, सुन्न रुकते सहे । निरम्हनानद एवा जन्मभी, इरि पुर म रहे; भन्म ।। शा पर ॥ ॥॥

वसी धन्यवन्य भवतीने कहियेती, जेनो नाम प्रसामपाद सहि-वेजी । सुनीतिने बदर आच्या अहियंत्री, जनमी बरमां विचारियुं तक्षित्री ॥१॥ सण्यवस्मां एव दिवारियुं, वार्षे मारे ने इरियास । एवं विचारे आविया, वसी जिल्लानी वास ॥३॥ बादर व बारवा मामधी, वह पुष्टि एवं परिवासती । अवर माये वस एमज कर्ष, यह एक मिन सुजाननी ॥॥ जेम द्वारो कर सेन्हां, हैये करे नवचाने हाम। नेने सीपुं संभक्तावर्ता, जाइ मरी महे एह उाम ॥४॥ नेम पूरे दश पार्व इन्, अनि पार्व से सहपी उद्देश । राज साज सुच्य अपनि, सेनी वन बरवो छ बास ॥४॥ जनव सुच्य अंतरहन्ं, जे मने ने गरी जायरे। तेह मार्थ आर्यु तन संदर्ध, कही कील बुआने वा'यरे ॥६॥ अवस श्रम अविवासीतुं, जेइ वामीने वाहं वर श्रे । एवा सुव्यते परहरी, बीजा सुव्यमं क्षेत्र बन्ते ॥आ असम्ब सुव्य सं-सारमां, तेने सत्य प्रानी नरशार । मुख्यपीयां सुन्तां प्रकां, केले व क्यों वर विचार ॥८॥ वेरीचि अछे वस रखवा, मनसुनो करे हे म-नवांच । पण काणनां नधी रीत शांसुनी, वह अर्थ न आवे सांच ॥९॥ एकुं इस मुचे कर्यु, मो'रथी धनमाय । विरक्तमानंदनी नाथ भ-जबूरं, लजबूर्व बीजी इच्छाच ॥१०॥ कवर्ष ॥१३॥

हर विचार एवं करी धूने जनती, नेगे द्वां वातिया वजना वनती।

जारमवा अवया नारम्यून जनती, नेगे कवां वह नेननं वचनती

[17] राव—वचन कर्णा वह हेननी, वजी आप्यो अंच अनुप।

वडी अव्या अपने आर्गु, जने प्रत ए सुम्बन्ध्य [12]। वांच वरपना

एक वर्गे, प्रभा अव्या अस्म ध्या वह वन्धरं ध्वांने विवरावना,

तेना विवराय्या विने निह [2]। इपाज व्याच कर्ग, केशांगे, वांच

वानर वृक्ष विद्यु बन्दी। भून प्रेन राक्षम राक्ष्मी, वैनाम वैनामी

मन्दी ||पा होहाकार हकार करें, करे कानमां वह प्रचार। भागे
वारो आंचो व्याचा करें, प्रण न हरे धुवजी समार [14]। जन क्या

<sup>ा</sup> कांक्श्वीयु सकः

तजी आरंभ्यं, कडण तप जे कहेबाय । तजी जानस्य तक्ष्मी, आ-इयों एड उपाय ॥६॥ नारी देख नद माम सुपी, उसा रखा एक वरो । असर सर आधार्य पास्या, देवी तप अवजीन रुगे ।। आ वन् मकपामाय परवर्ष, सरवे प्रशीत्नुं सून्य । राजी बरवा रमापनि, जिति दिये है है है है जा ॥८॥ मेनी समन हेमल करी, परवृती कोटा सम्बनी जाया । जार दे तथ जाद है, और पान्या जन जन जान u<sup>0</sup>,0 घरणी लागी प्रजवा, बगवा लाग्या दिगवाळ । निष्कुलानेह नानी बयमारे, हीका बस बयानामा बरस ॥१०॥ करने ॥१४३

निर्वसंथी नथी बीपजर्न ए कामजी, करिन करे कोड हैपामांडी बामजी। चर्च कडण हे चामचा बमस्यामजी, जेंच पामिये सुन्य वि-जामजी ॥१॥ कव-शुन्द विभाग वामिये, वामिये सर्वे विषय । नेगां कसर व राज्यिये, राज्यिये प्रगत्न मन ॥शा चारी वेच प्रवता सरकी, पर जाटी पाचनी एम। पाम् हरि के पार्ट पपने, कर पुने कर्षे है नेस ॥१॥ एव ओध्य मोटाशी निवे, जोठ्य ने जोवा काज । लाली व जाय लेप नेती, जनर विशे महाराज ॥४॥ बहाद हुपती वेरे करे, समझि अस्ति खुलान । तेथी अधिक करवी वची, करवी क्ते प्रमाण (८)। क्ता केवी में भारते, सहे नने बच्च वह राह । कुछ करना हरि असे, त्यादे बनक्यों नथी कोड़ बाद ॥६॥ एका जेवी वसी आपणे, असि आने बांचिये भेट । लारे बसम जनपर प्रमु, व चाय कही केम नेट ॥ आ दिसन जोई इरिजनवी, इरि रहेते हा-जर इज़र । क्या भागे सने भक्ति करे, तेथी श्रीहरि रहे दूर ॥८॥ साचाने सोंघा बना है, वर्षि भोषा प्रया महाराज । बोटाने व जरे लोकतां, ने दिन के पळी आज हैं।। मारे कमर मुकी करी, पाओ सरा परिवा साथ । विष्युक्तानंद मिलक छे, ले सम्मयाम अधिनात्रा ॥१०॥ कवर्त्र ॥१५॥

बळी वहाँ बर्ण में धूननी भागती, कीत प्रस्त सहे छे दिन ने रानकी । नेमां व भाग कोइ काले कळीपानजी, करवा हरिने राजी रुक्तियानजी ॥१॥ राज - राजी करणा ब्रष्टाराजने, सुन्य गु'न्य सहे हे वारीर । अञ्चल कथा एक बगभर, पारी दक्ता मन पीर ॥३॥ रोस ने हाँ बाधा अरका, कावार संघर गुरामाय । आवे एवा बळी र ज ار المارية و المارية المارية المارية و ا و المارية <u>ַבַּילַ בַּבוּל בַּלְבוּל בַּלְבוּל בַּלְבוּל בַּלְבוּל בַּלְבוּל בַּלְבוּל בַלְבוּל בַּלְבוּל בַּלְבוּל בַלְבוּל בַּלְבוּל בּלְבוּל ב</u>

देवा, वल विवे वहि जनमांच ॥६। युव्य नीच विश्व विवरी, काक करी सुपरी करोत । प्रमर तमर वोते टिवर्डा, डामडाम इमके क्योत ॥४॥ एकएकची अधिक वादी, वार्ड अमना जेता। तोप मुनजी वर्षी सुनता, यरी पीरज करी इह अंग ॥६॥ लाग वारजी क्यर वर्षी, यदी करता निहा करले। अप्रेड अगवानने, वारम-वार वर्षणे ॥६॥ वामोच्छासे तमरे, सुन्वन्ति भीपनइपाम। वळ एक वामता वर्षी, एह जनमंदी विराम ॥ आ तमने राक्ष्युंड तपमी, वर राक्षुंडे वहा मनुनांच। तेह विना तम यन वीजे, राक्ष्युं वर्षा कर्षु व्याप ॥८॥ जोह तप ए जनमुं, वाळ्यकनुं वर्षार। मानव दा-वय देवताने, करो केम जांदे सने मेर ॥५॥ विर्म्य तहने विन्धे-कीने, रिष्ट्रा असि रमापति। निष्कृतानंद कर्षे माथजी, इक्या वेदा द्राण मायती ॥१०॥ कर्ष्युं ॥१६॥

वर्गण ग्रमी—इष्या जरस वर् जापना, जननेती जनितास । जानी एम मुनने कहुँ है, मागोमागो सुत्र नाम; इष्या । ११॥ मुननी कहे बन्यपन्य माध्यी, तमे प्रसक्त प्रमा । १६॥ बीतु हुई मागर्पु, दिन हुष्यमा गया; इष्या । १६॥ जन्म है जो मारे अनरे, प्रमु आवाम आवा । मोर्चु चंघन से आयान्त्यं, तमां व देशो वंघाना; इष्या । १६॥ व्य प्रमुत्री न्यारे ओषयो, लाग्युं मार्च इयामने । नि पहुत्तानंत् कहे माथे प्रमी, आप्युं अवस्य पामने; इष्या । १४॥ प्रमूपाणी।

वृति भागवा दरन होय देयंत्री, त्यारे भक्त जुब तेवा धर्यती।

एवी श्रोरा रिवर्ष न रहियंत्री, वरमपदने पामिये नहियंत्री। १॥

श्रम—परमपदने पामिये, वामिये मने विकार। काचा माचा मुचने,
वाच वामे निरुपार ॥२॥ भागर न देवो अने आवश, देव दमयुं नसन् वधी। एवा सक्त जक्तमां पणा, नेनी वात हुं सुं वहं करी॥३॥
वांत्रना विवय शुव्यती, रहे भणंत्र न परमांय। भाकी वका भक्तने,
वहो केनी करे हरि मांच ॥१॥ मारे भक्त ए मुना वच्चा, नवी भु
ला पच्चा भागवान। जेइ जेवी भक्ति करे, नेतु कर्य पाम निद्रान
॥५॥ वाक्ति वीत्र वळी विवनं, वरिये अध्यक्त्यती आधा। एइ
वान नवी नियत्रवी, नेहनो ने क्राये नवाम । ६॥ करी हादवा जो
काचना, वळी हेवुं मोलियानुं भूव । ने समझ केर समझतो, काध

विश्व सिम् सम मून ॥ आ मून अविषय धर्ममानवाये, वसी विश्वार ॥ एइ बान । अस्ति करी मो रे अगमे, तेवी करवी विश्वार ॥ ८॥ एगर सारमो आर मरक्यो, नवाकी ने बनावनो । सारमां सङ्ग सुम्म मने, छार होने वरिश्वम वाक्यो ॥ ९॥ बादे साचा वर्ष सङ्ग नही, बोठ्य जंबेरी काहो वरी। विष्कृतानंद करे नावजी, रिक्को तो अविष ॥ १॥ कहां ॥ १॥ कहां ॥ १॥

अयो इतिमक थया इतिशंहती, जेतुं सल जोई लच्छानी है-हाती। त्यारे मधी विष्णुती वासे पुरंदराजी, जह कही बान लाके नयुं संदरओं ॥१॥ राच-नार्व नो पर गयुं, जान काने लेवो अच-वयति । एतुं सम्वयमं विक्र जोहते, हुं ता अक्रवानो अति ॥२॥ एने दाने करी चोलियुं, बादं अच्छ इहामन । सारे राजी कई मुजन, हुं आप्यो पार्क जनवन ॥१॥ स्वारे विष्णु एव कोलिया, तुं वंशा स्वातक माहरे । मधी देवूं इंद्रासन एने, एव राजवों के दास माहरे ॥ त्या वर्णा तेने नाववा साह, तेहाच्या विश्वाधिकने । हरिओ-प्रमे सम्बंधी पाटा, पमादो दुःम निरंपने ॥५॥ लारे विश्वामित्र कहे विष्णुतं, एमां लागे भने अपगय । लारे विष्णु करे मारे वचने, स्थी सबने कोई बाप ॥६॥ जेले दक्षिप्रसूत सी सहायों, एवा के दिसना ब्यास । तेने व काम धरण नथी, वही चानिया तनकास छ॥ प-रवे वीडा बमादवा, जेने जंतर वधी आरेरार । संकर ए केन सबि वाक्षत्रो, एको मधी हैवामाही घार ॥८॥ सनमा घे र कन्ने नहि, वाकी-ए विषय वाचे पणी। कावाये कई ने केम करे, पत्तो विवास तेना वणी १९॥ अवशपुरियं आविया, इरिअंड रायन येर। नियम्भानंह इरिन्दरे पत्नी, पुता करी पहुरेग ॥१०॥ कवर्षु ॥१८॥

योगका प्रकार करी पत्ना जिनिती, भूव दीव करी जनारी आह-नित्री। पड़ी इस्थ जाडी करी विजितिती, मार्गामामा पुत्रकी मोटा जहायतिकी भरे। सब्द—पामा कर्यक गुत्र बन्मकी, भइ आयं भ-मने आज । त्यार पूर्ति वार्टिया, आप्य भाके सर्वे सात्र भिना पृश्च राष्ट्री कृषर माराने, सामु शोव राजी रिजायान । भी म जे मार्ग्य में जापक्य, बहि मोन कर्ष मुख्यी बाम ॥ के राज्य दाने रोक भादा,

p of E.

शहि शक्ष लंगर अस्त्रज्ञार । सन्तर्भात् पृथ्व आवर्ष, निह रहे सम्ब करो विचार ॥४॥ लारे राय राजी कुंचरे, कर्मो एम विचार । आपो सन्ह राज्य एकते, राज्ये सम्ब विरुधार ॥६॥ त्यारे राय कहे के स्वितं, आप्युं राज्य साम सर्वे समृदि । त्यारे कृषि वोतिया औरण, तेष उपर दक्षिणा दीपि ॥६॥ त्यारे राय वातिया, देशुं शुः वर्ण सन्त्रभार । त्यारे कृषि कई आप्य दम्मा, च कर्य वेख नगार ॥आ राज्य साम समृदि बारी, एथी बा'र दोप कांप तुम्नार्थु । साध्य ते बनावर्त्वं, एस बांधो कीयो चर्चु ॥८॥ त्यारे राय कहे आ राज्यमां तो, असाद नथी अर्चुनार । कुंचर राजी जा देह नार्थ, ए के दीवायकी वा'र ॥९॥ त्यारे राय क्यिये कहे, वेची कमने वन समृदे । विच्छनार्भद त्यारे कृषि कहे, चानो सन्द काचरिए अर्थे ॥१०॥ क्यार्यु ॥१९॥

विश्वामित्र करे वितरो एक बामजी, स्वारे हं आवीश तवारी वासजी। त्यांसुची करजो कावीमांदि वासजी, वर्ण हुं वेबीस करी तपासकी ॥१॥ सब—तपास करीका हूं समजो, पठी बचीका विगते करी । त्यारे क्रणे जान्यां सांधकी, इब धीरज प्रवर्मा वरी ॥१॥ राजा राजी कुंबरमां हे, सनि कोयश शंग । सोमरे सेवा जेनी करता, मधी तेने संबद्ध एक संग ॥३॥ कांटा कांकरा आकरा अति, सावा सविया देशं उचके। गोमारं संद काम शुक्रीयां, लागे कामां होती रचके ॥४॥ तये जुनि हीची कति, तेमां तथी चनानुं चर्चे । बखे सको ने पमना, तेने बखी पहेंछे बरने १'-॥ इपर शीन्तो प्रमय सरिम्बो, कर्यो अर्थ अग्नित्त । वाणी व असे प्यासे घरे, अन विना दिन गया केंद्र ॥६॥ प्यास भूजनी वीवा वकी, वकी दिने वधी धोलता । जबवर्ष लबपरं परे, तोच कायर वायक नपी धोलता ltol बाटमरं बहु वियम करवा, सम्ब सुकाववा सामा करें। क्रणे-भी एक रेक हे, ते बळाच्यां रच अब बड़े ॥८॥ मधां व जग्य पा-रीरमाहे, एवां बीजां कह अ। व वह । तोच दृःसी व माने दिनमां, एवां भदावाकां के सह ।१॥ रूजनना वृतिवाकांदी, क्ले विद्यां के तके। निष्कुमार्गद करे पश्च पीरम, एम कर्य संग संघर्त ॥१०॥ करने ॥१०॥

वर्षण विष्- सत्ववादी संग संबर्ध सह, रहे पीर गंभीर वीरं-निधि जेवा। जाये अमापे ताचे तये महि केदी, जाग पा मगे प-रहे एवा, सत्व । वर्षा जावपद्यास चास इरिद्राम सहे, जन्य कास ताम वाद्य बीधी जेले। जिल्लादा पास वाम आदा वरी, लास बजाम बहाम रहेडे नेले; सत्व । ।१॥ जाने प्रसम्बद्ध निवादित रहे, घरपपत्य जन पापन सरे। जगजीवन व्यज्य विषय हरे, तेह विस् अजन यन वर्ष करे; सत्व । ॥३॥ मही रेक एक विषेक्ष करी वरी, केद तेक लेक ते वय ताले। निय्वत्वानय जगवंद सहजा-नेद, सुम्बद्ध गोविंद वृद्धेद अजे; सत्व । ॥४॥ पद्य ॥४॥

त्वार रशी क्रणे जाली मूल्यां बाटजी, जानफ आर्क्ट उन्हें नहे-बाटजी । बाध्यं बीर नदी कोइ बाट चारजी, तोय मदे बधी करता वजारकी ॥१॥ वाच-प्रचार भरी जैने जेनरे, रहेके जानंद वरमा अति । इट पीरज समर्था परी, करी सपन वमविचे वति ॥१॥ लेह केर क्षत्रही करों, कावस कंटासा बोरवी । अनि अणियासा सांक-क्रियाला, लागे कांटा जाये समयती ॥६। बाप वद बातर विद्यु, वांचा सेमर इपाछ है । चीन मानंग बार बोख, ए दबमां विद्ये क्यात्व के ॥४॥ परवन पर पार्वक वर्छ, पांचे पद्म वंशी दुंबराज । क्यर कडे काकरा कामजा, कंच कोकी करका माण ॥५॥ युव कोमा वना प्रचं, बीजा बाप्य वाचे अवंकार। सचा व आये जवने, एवा थाय बहु वथार ॥६॥ सुवि कठण ए मुमिका, अति विकर वन स-यत । बाली बरण बद्धपुर धर्मा, त्यारे वर्षु ए वन इहंचन ॥ आ बाली न करे बरने, रही बढ़ी बड़ी जाए धरने। समे वीहा बहु चेरमी, तेनो बदने म जाय बरले ॥८॥ स्नवस्थ मही उपरे, जर्जे विद्यार्थ ने बार । घोडीभी मुच्छा उत्तरी, तैये पर्या चानवा तैयार ॥ भीरे भीरे पर परी चालनां, आची नदी पीनुं जीर । निष्कुलान वंद क्यां मार्ग मखयो, वधी चाल्यां प्रणे सुवीर ॥१०॥ बहवूं ॥६१॥

विन्यो बारम वास्तियां कोरेजी, यह बालहे पम पाछा व हो-वेजी। यो विवेकाचित्रों सार्व छ सहयेजी, तब पो विषे तो कवि रूले कोरेजी ॥१॥ बाङ—कवि कोष्यानी बीक रहे, रूले बाटे बड़ी

ار المعالمة المرابعة المعالمية والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة و والمنابعة والمرابعة والمرا

ा समाप- दे अधि

जान मान । जाने वाप तो आपने, घनो जाने मने जान गरा।
जान किया अनेत स्वति, शिंत भोती भोती भागते । अववदनों ने
आक्तात्रती, वर्ण भान्यों अपने ॥३॥ कांत्र वर्ष सद सामरों सन्ती,
वसी जान करे चीरजनी । सरण करनां श्रीवरित्रं, एवं निगमेले
रजनी ॥४॥ समारे सह वह सामयों, वस्ती जानके नोंचे करी । रचे
बीती जाय वापदी, एवी अंतरे जरफ न्दरी ॥४॥ नांपणे करी से
लहेतियां, पर्या अन्न विना जनेत । सुकी गर्या वारित्रमां, राजा राजी
कुंबरसमेत्र ॥६॥ लोच देव तमतो नवी, कवी नवी के बाती एनी
वीर । जोक्य व कांचे अंतरे, सुन्य दुन्य न माने करीर ॥आ
एल सहादुन्य वास्त्रत जारते, तेव के तर्र पन के वाप निवार चना
इता, कवि विन्यामित्र नेतुं नाम । तृत्व के जी ने वपर परी, पन्नि
वेशकोने काम ॥१॥ सांक पदी गर् वाहेरमां, त्यारे आक्यां वराव ते
वेश । निष्कृतानद कहे नाचुं दर, सह रायां पीत चेताने वेर ॥१०॥
कर्म ॥२॥

राजी रोडिदालमुं द्विज वह धनती, लेडी नयो नेवने निज सुक् नती । इरिबंड एक रक्षो राजनती, नेपल बेपालो व्ययने सद् नती ॥१॥ राज—व्यथ वंद राजा रक्षा, द्विज परे रक्षा रोडिदाल । लारा ने पल द्विजनुं, करे काम करी शहाल ॥२॥ नारा लांडी दिये लांदुका, पीनी दिये गोर्चुम लादि लग्न । जक मरे वाले पर आंगणुं, लींचे सन्न पूर्व पर्या ॥॥ रोडिदाल पण एडज रीने, करे जाय-लतुं काम । पूर्व पर्य तृत्व इंचल आणे, पांचे परण पात जाम ॥४॥ श्वयचे सोंच्यू इरिबंड ने, लंबी सबदे अबदे नाम । आपे लांचल प-इंगो, त्यारे मुकबा देवी लाग ॥८॥ नारे इरिबंड पानी हैये, जाय सब्द्यी मो दे स्वाप्त । दिये दोचुं लेबा लागने, पक्षी पादे बहु शुंक-राज ॥६॥ लांचल वहंमो लहंडा लगे, लारे ने आपीश पाळवा । आप्या विना रच्ये आम सुका, अध्यो सुं हुं जाळवा ॥आ मोर्चु वाहेर सरे पणां, वाले अलगां एक एकपी । इमया पत्री दिये इदियुं, जिरांच सबनेका नपी ॥८॥ अबदे सबने स्वाप्तमां, रचवडे राज व

s पालवी पुत्रके. १ वर. १ वर.

अर्ड श्रीरकाक्ष्याच्या श्रे<sup>64</sup>

कर्म १४

10

इन । जन्न शाणे जन्न न मके, अझ राजे न मने अस ॥ १॥ एका का-समा राजा रच्या, निर्मा गया वहीं कह इन । निष्कुणानंत् न वाद बीज, जेनु कर्म एक राजन ॥ १०॥ कहनू ॥ १३॥

वित्र वह गुवन रोहिनाम सुभाग्याती, सुगंबी पून लाव्य कर बाराजी। सथा लावे म्यां बदया काको बाराजी, मेचे करी समी कर्य तज लागजी ॥१॥ शक-स्थारपंतक जब ओईने, क्यू विषये में बार । नेहना देवने दाद देवर, श्रीकल्या लेवक चार ॥ शा ने बाब लाव्या गरामरे, में स्थी मके हे आगा। बारे इरिशंह के य ज़की छ जब्रि, जाप्या विज्ञा कारो लाग । ।।। आपी लाग सगावी विमा, वर्ष अर्थनअर्थु क्यारे सन । त्यारे जान्दी के जोमबी, वजीवजी वर-पी पन ।।।।। त्यारे आपीके लाहर नियां, तीर्थ सबबू ने मोखामांप। ला आक्या कवि करे आएं हरी, राज्ये जून अय व रहे कांप ॥ ।। अस्पी सरी कहां अह जायने, एक बान कहं काने वरिये । अ-बारके बरकी अनुकारे, जायसे कापीकापी स्टियं 1.48 लाहे भूप कहे ने ही भगियों, आओ मारो नरदान कहते। साली लीपी वर्णी जरिये, मारचा माद नेइने ॥ आ हीका गचना बाइए बळी, मारी करी है अधमूर्त । मारामारी करे हां विचारी, करी मूंच परवकी छई ॥८॥ एकां दृष्ण आधी पश्चिमां, अह सत्यां व आय करीर। सून सुवामी अनि कोक है, लोग परी रचाछे थीर ॥ भा पत्री वरिक्षंत्रने बुक्रम कयां, जाय्यं बारण गरद्व । जिल्ह्यानद्वा बाधनी कारणी, सही बार्क कही कोच्य जब धरेशा कहतां ॥६८॥

वरणण (वयु—नाकी वाकी जाकी लांकी शीली कहे, कार कार-कार करवाल लागी। यह जान वार वर वर वर वर नाम, वरधान्य करी कृष कारी; राजी। १२॥ रच्ने अवर वर वर वर वरनो, वरधान्य कर करीण मां जो। परी धीर कारीर आपीर भंदा, मान हाथ वासली दिले वरीश मां जो, राजी। ११०॥ त्यारे अव्यानक वानक विले वही, व्यवही वयु भरी होट दीथी। अति विकश्च करवाल ज्वाल जेवी कहीण, से भूपाल उनाल ननकाल लीथी; राजी। ११॥ कार में व्यवस्थ वर्ष परक नथी, वरक्षवक से धवक रही। करक करक करा करी नथी, सावकालक कहे मने मार वटी; राजी। ११॥ तीली तर- पार मार मार मार करे, यारे पारे पारे बीर म न रहे। नारमारे ; तारे नारा भणे, जार धार मार एम मुखे करे; राणी॰ प्रश्ना सुर नर ! साधमाच साथ मण्डम, पाथपाथ पाथ पढे रहे रथा। निष्कृतानंद : धनायमाथनाथनी, इ।धहाय द्वाय मही सीओं दियां; राणी॰ श्रुष्ठा पद ॥६॥

मानो हरिसंह जाएं दुप्रनेजी, नमधी चा'तुं वधी बीर्यु गुजनेजी। नमने पीका सुणी शुरेशनी गुजनेत्री, घटे एवं काम करवं अनुज-मेजी ॥१॥ वस्य-अयुज एवं काम करे, जेने पर नहि दारमणा । बारे जानो मुत्र पासची, हुना राजी धया वर्णा ॥६॥ लग्दे इरिसंह योगिया, पत्प लगे पया बसग्र । एपी अधिक बीर्ज वर्षी, वर्ष सर्वे सक्यो मान वन ॥३॥ वन बरला होच आपर्यु, नो बागुर्य मारा ह्याम । अमे अमारी रैयन सहित, राजी तेवी तमारे पाम ॥४॥ लारे वि-ज्युए ए वर आवियो, आध्यो वैद्धं हे तसन वास । एक वात हरिसं-हुनी कति, सबू लुकी संजो इरिदास ॥ ।। एवी करित आदरवी खरी, जाको जेवी हरिश्चाह करी। तेह विना तन यन ताने, वधी रीझना जीहरि ॥६॥ कालावालानु काल वधी, आतो शिवा सारानी वाल है। तेष्ट्र विमा कोई करे बनकां, तेना कासी कामजीवे भाग है।।आ क्रेम इयामायानुं सुनी देवारळ, माने कोई मनम लई। यन वेट म-योगां हे पायकों, से जानव वह जाने वह ॥८॥ जेस केवी केटे पानी माजियुं, जह सुनी सोंद नार्गाद । घनवां जाने हूं नरी गई, एयूं काम व करतुं जालीन ध्रेम बहिद को ही संसारती, रहेनु इनु घर-जांच भरी। निष्कुलानइ कई सूचा पत्नी, जेज पान पान ने लरी प्रदेशी क्षत्रमं गर्दशा

जवारे जाय वो (या बानु जमूनवजी, त्यारे जो ए कर वो सनमांच नोमजी। देवो त्यारे ज्यारे मुखे ले को साम्युं सूनवजी, यह बान कही बधी नधी दर्भा सूनवजी ॥१॥ रख-मुन्य कर सनमुख सनमां, ने बिना वैसे पुने व भाष । नेस सदाहीननी भगनी, नेपच नेथी क'-बाद ॥२॥ वथी विचा बोरे अजिया, करे हाथी जवानी होता। नेनो पान्यामां पापलां, समयो करे अपनास ॥१॥ जेन पर जानेपा जा-

१ वृष्टे. १ धारू काली कालते कृते थी.

नमी, बळी जाप जोडरजोड । जानैया तो जने रमे, घरे बर शिर-पर मोड ॥४॥ भारे जोड अधिकार आपनो, पन्नी दिलमां करवो दोड । महाद पूर्व इतिमद जेवो, क्यांधी पूरो वाप मन कोड ॥४॥ जेम पंच अमवार पंचे जातां, नहीं भेसो पन्नो मर करे वती । तेनी पो'वदानी मनीन करवी, एरण भूनव मोटी वही ॥६॥ जेम वक हंग वरोपति, बळी राजका एक ज वान । तेम माचा काचा मंन सरित्या, एम आन्यु एज अमान ॥४॥ स्तरित सुक्तने संभारतां, निवादिय म-वर्ग नव रहिये। महासुक्त महाराजनुं, करों ते को रीते कहते ॥८॥ कायरने केम धीरज बाबु, एपण अस्परी बात है। वेच लेतां हार-वीरनों, जन जाको चरनी चान हो।१॥ येनी मन्स पूरवना, हैवे हेती मधी बची हाम। निष्कुतानंद आजे आद्युं, ते करण हे चतुं काम ॥१०॥ कहतुं ॥१६॥।

सुको बळी कई रंतिदेवनी रीतजी, अन्य प्रभुवो एते पुनिनजी। सचा तेल दुन्त सरीरे अगणिनजी, यह नेती बान सुली दह कि-सली।(१॥ वन-कर्षु वान वनिदेवनी, करे निज बवानु राज। योने बोतानी प्रजा वासे, रचावे वह अनाज ॥२॥ एम करना भावी वक्तो, बार बरचनो बळी काळ। एकाइवा बरच अस वो बियुं, हाब्यानो थयो जलासा।।।। त्यारे राचे अक जःवियुं, ने पण यो'रपुं वचा आम । नपी लाग्याचे करका, वर्षा उत्तर दनकाम ॥३॥ कलके जन अस विना, बहुबहु वारेशे बकोर। ने सुकी राय वालिया, समे राजी सुन वपु भोर ॥४॥ उपरास योगा यारने पच्चा, एके ओछा पूरा पंचास । त्यां अणहच्छाचे अज सल्युं, वेडां जमना पासीपास ॥६॥ पादीर पादीर पाणियां, पञ्जी आध्युं इन् के अस । उपपास ओसमपंचारके, क रका बेटो आजन ॥ ३३ अञ्चामन असारथी, नहनी बार शुके छे बन्ही। आधीय एवं भा मांवधी, एम विचारें है यह मही ॥८॥ नियां ज-यंती एक आवियो, सन सहवे बळी स्वान । मुख्यो मुख्यो एस ब-रके, बाह आयो भाजन पानतारे॥ त्यारे आव्यं असला पहने, राप राणी सुन सुनवाम । निष्कृतानंत् पाणी पं अपोरियं, देन दा की वर्ष जब दल्म । १० । कर्ष्य । १००।

पुरुषुं जळ सम कुष वसी भवारजी, प्यासी रखी यह राजा स-

कार्यों, अर्जुन पया लेगा जिल्ला। यह बाल्लामां आदिया, उपां चेठा हुना नरेणा।।।।। त्यारे राम उठी उना भगर, पर्यो बंड्यन प्रणाम। भिन्ने प्रणाम अनु मारा, मार्गा कांड्रक मन अनि अनिराम।।।।। त्यारे आहमण कहे प्रणामन्य राजा, सत्यवादी तु साथों सिंह। पण मारे में जे मार्ग्यू, ने नरन नने कांचाम महि।। जारे बरेण कहे जिल्ला कांच पर्यं, मार्गा सन्याधिन कहा नजी। राज्य माज सुन्य मर्गल, मार्गा पर्यं, मार्गा सन्याधिन कहा नजी। राज्य माज सुन्य मर्गल, मार्गा पर्यं, मार्ग सन्याधिन कहा नजी। राज्य मर्गल सुन्य मर्गल, मार्गा पर्यं आध्या आ प्रारंगी सीममां, त्यां सुन्य सिंहे साल्ली सिंगा ॥।।। एकक पुत्रने एम पर्यं, गयं भावे हुन्य समृत्वे सिंह । पुन् रायं गयो। आवह सर्व अच्छी। मारी ने भारा सुन्यों, बाप म रेशा सुज्य । लारे बाप कहे निष्युत्वावद्यों, वाप भाग्य कहे नुज्ये ।।१०॥ कह्युं ॥२९॥

हैं एको आवे केम विश्वास ॥६॥ स्वारे बाप को ए वससुं मधी, अब भावती जा नुं अधिर । जाये अध्य दर्धाविषे आच्यां, आप्युं जिनिये कापि कारीर (134) कर्ण कथन अमे म्यू, अल्यू बळिये जिला-े जिनियं कापि करीर (154) कर्ण कथम आगियु, अलगु बद्धिप क्रिस्टा- हैं हैं की मुंराज ! सत्यवादी ने के सोथ द, जर जाया न पांचे से जाज हैं हैं अदी एम कही हर्पा माकस्यों, सरत तकार राय पांच ! नपी समायु हैं ने में सुन्ध्यी, तेय नधी मेलाबी सुन आया । 'त उभव संदर आदिया, है A THE STATE OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE STATE OF THE STATE

एक एकपदी अधिक । निरक्तानद्वी से ग्राप करवा, तेस पासे अने दीक ॥१०॥ करवू ॥६०॥

नारे राग केटिया वह दमकती, वने नमे आविया धारे नुब-नजी । आपीश हूं नमने साद आ ननजी, ने जानायो तथे जहर समती ॥१॥ रण-प्रकार समे जाकाची, आर्च प्रसादने आ देश। विवय नेती मधी बन्दी, माणु मानायो मधी सदय ॥३॥ न्यारे न्या बोक नमने नेवाबियो, आपी सक्रमाडी एवन । पुत्र बनाने वास मी, व राजाओं हरिशु अनेहन ॥३॥ वर्णी नरेण नाही निमन्द करी, वरी कंडमर्न मुनर्सादाम । मगाय्युं करवन वंदवा, न्यारे पठपुं अक-काई साम । ४। इत्तकलान काइर सह थयू, रच वह चारनां चीर । शाहरकार क्यों बनो, क्यों सहुए वयवमां बीर ११-॥ न्यारे मोक-रवज एम करे, ह मून नमारी नवार नव । आपी सबे ए विवने, बची करो एने अवस ग्रामान्दारे राजी के अर्थ संग हु का बूं, आयो शय मुने व आये नहीं। वासे पुष्प व बोनानको, सने वायना सुनामी बई (१अ) कुं वर राजीबी वाणी सुजी, बोबया द्वित्र मेवक वे संग। आयो बान बगरे क्ही, नहि आवे राप अर्थ अंग ॥८॥ बेमी सामक्य वा-नो भारते, जलूर वर्त वापनी पाम । जल्य एवा वरणाजिये, स्थारे आह जाय एम् बांस ॥९॥ वटी बान वंबायन, ने व नियम निरधार । निरक्षमार्थक्ता मध्यमे, एवं गमियं भा कार ॥१०॥ कववं ॥६१॥

नारे भूमद्रमीन कहे द्वित्र जामत्री, वारी अने नरने का वेदे इन्तुं वामत्री । वार्र अंग नादे माने गते कामत्री, एणे नो नीपूंछे विज्ञान वामत्री । १॥ राज—वाम नीपूछे दक्षिणने, राजी कुंबरने वेदन । एनं नाने जावण्ये, आपनं तोय हरने अरेन ॥ मान बदे वदी पनि कहं स वं, तो कोई, सन्हु रहो राजी रिजयान। वा जवसर अस्-तप्सी, रूले कोई बतावों वान ॥ ३ । माने सोटा जे सत्तन थई, नेजी नथ आदी मारे आत्र । प-नथस्य बारा देहने, जे जाएनं वास्तनने काम ॥ १८ ॥ अरो करवन काकरी, अरकरी करी नेनी पार । आपने वीरीने माहने, नरन दें के अर्च वारणात्र वास्त वे नेनी पार । सामी रूल है ये अरी ॥ ६ । राजी करो क्यांचायने, कोई दिन म करो दिन-हरण है ये अरी ॥ ६ । राजी करो क्यांचायने, कोई दिन म करो दिन- गीर । मारा दु जन दे जी करी, रज नयण घरो कोइ नीर ॥ आ मार् नथी एयुं मनमां, जे अवर्ड थयु आ बार । तमे कोक विद्न करो, धाओं वेगे वेरेका नैयार ॥८॥ एम कही उमा स्वज वे मध्ये, अनि अनि उत्पादका थाय । नेह जोइने जन बीजो, करेखे क्यां जायत्राय ॥९॥ अध्ययनी छोख्युं उदका, रहेश्यो छेर सह नरनार । निकृत्सा नरनी नाथ जोनां, कर्यु करवन नैयार ॥१०॥ कर्युं ॥१६॥

मन्तर्यम कहे मानु हुं ने हं मोजी, आहं कर अनुस कित्यामां रे मोजी। बळी एक बीजु मारे मानवु छे मोजी, इवे आवी वरीका के नीए म हे मोजी ॥१॥ एक — हे शामां आवी वरीका के नी, तमे दया कु हपाने घड़ी। एस मन्तर्यको मोर्चे मान्युं, सन्दु और साक जानो सनी ॥२॥ भनो भनो एह न्यान, मेनी मनि अनि मोटी पनी। मनी करी एने भगति, एना मेनी मोहए आपनी ॥३॥ मान्य सद्धा पीरम्पणुं, मोहए एमा भेनो विवेद । पर्स एन इड पार्थो, मोहए एना मेनी परी देव ॥४॥ देव एक हरियलाने, बेद छेक सुधि छांवती नहि। करी विवेद अनि प्रसां, बळी एक रहे दे वुं सहि॥५॥ बळे

<sup>1 480</sup> 

वसं रंग वतरे वहें, के य जवन कम्बी के से बीजनो। एकरे की के जी एक रीन वहि, ज्ञान कम मिल्डनो । वा वज जे जे जल मोरे बना, ने सर्वेनी सुजीए रीत । कहणा विज्ञा कही कोण रचा, सबू विजयी सुबी तमे विद्या ॥ आ जेम हथ्ने वामे अमृत्याना, तेनो प्रवम वाने वीजावते । त्यारवणी वहं सावह, तेनो गोम क्षांव सावर वावते ॥ श्री तम कहणा विना कोड कम्बू, जरे वर्ष वची आवती । एम समजी संकर सहो, तो जमी अजि जाव जगित ॥ श्री वोष्य विज्ञा पूर्वने वच्चानी, हैये करे कोड होम । विष्कृतानंद कहं प विव वने, अमलो वाची अवसोस ॥ १०॥ कहनुं ॥ १३॥

धमु भजना जेने करनी बनायजी, तेने रच करनुं जेन कर्युं छ-तुरायजी। बतु प्रसन्न करवा गया वनमांयजी, वारंबी तर वना एक शायती ॥१॥ शत-एक वर्ग प्रभा रचा, जरून सबे जनक वह । कर वेड वंचा कर्या, वारीरपर केरवे विदे ॥६॥ इच्छा संसी अस पाननी, यसु समस करवाने कात्र । तत्री आचा वसी समनी, जेल सजी आच्या जिजराज ॥३। शरीर सर्वे सुकी गर्यं, रखं वहि लोही ने यांस । अस्य रक्षां एक अंगमां, रक्षो साम वण विस्वास ॥४॥ बाडी रही सर्वे निसरी, प्रधादी अंगधी वार । गळ्यूं अंग मळपूं वेट पूढे, लोग करेंछे बाम चनार ॥'वा मानू शुंडण मोटा बया, रही है यूं वा'दे जिसरी । अजिंव वळायूं अस्विप, वह कृता दापा तरे करी प्रदेश सामे जनम संग लक्ष्यते, बळी बांगडे नेणे देह । एवं ज-बेन जीन वर्ग, तीम तम न नजे तेह ॥आ सुका कार सम गमा रवार, अरुव्यमां एकाएक । इस्ते पाले वृद्धि परणे, एवी ग्रही जाकरी रंग ॥८॥ राजी करवा रमापनि, अनि जाववं तप भावप् । परणी लागी मुजवा, सर्ग कंपायमान कर्यू ॥५॥ वर्षु तप जोई आकर्द सर्वे बीन्या सुर असुर । विष्कृतानद्वा त्रावन करी, छेदो आपणा स्यानक जरूर ॥१०॥ कहार्यु ॥६४॥

त्यारे पुर गया भीपनि नाम ती, अयर समुए करी करदासजी। अमने राज्या त्यां असे कर्यों के निनामजी, एक एवं नधी हरि ए स्या-जकनी जावाजी ॥१॥ सन-जाशा नधी एवं स्थवनी, जोड़ तन क

a stant. It arred.

346

एम बम्ब कर्या परज्ञकाती, कडी करीरे वह परिश्रमती। एड बात सांभक्षी लेवी समेती, बात से करूप नथी कांग्र वर्षती ॥१॥ राष-वर्ष वधी से करण पत्नी, जेवा नेवाधी धानी वधी। सहस-हमा सम्भा अयो, पहुँ विचारी अंगरपी 🖽 वन व्यवस्थान ए बारमा, अन एक अर्थ आवे शहि । महिमा महात्म्य मोहण मूनपी, कतिये वर कथी कथी कहि ॥३॥ जेम रहजनने चार्य प्यापी, नेह नीन्दी देखीने जब नजे । सहे बह बह एक माद, नोय माबे बही ए-दने भने।,४॥ जोने मोटी जाता है मनमां, जेवी वामवाने वैमानवी। नेवी आका नधी अविनाक पदनी, वान हां कहिये पजी पनी पना अश्र वसन साथ अंग आपे, जियां कार्य कहा पद्धी दिक्ता। ए तो वागरे रहतंत्रहों, यन भजाय यहि जगदीक्ष तथा असन्य सुन्तवाद एतं करे, विंड पाच्या सुधी प्रयाण । सन्य सन्यने सांभवी, बळी धानी मधी वर्षी लाज ॥ आ दिवनो की हो विवसी, बसी बन्दाने वि-पर्न सुन्य। तेने हेनी अमृतमी, भाग जबर जानजी हुन्य ॥८॥ नेव भक्त था ब्रह्मांचर्मा, भने हरि व तजे विकार । जेम केवा कहिये कडेकाना नचा, खेन इयाम सह एक हार 1011 जन्म भाग भगवा-

والملامات والمقارك المتالية والمالية المالية المالية والمالية والمالية والمتالية والمتالية والمتالية والمتالية والمتالية

बना, गणमना मण्ड प्रमाण। निष्कृत्वानंत् को ने विना, बीजा नानी भाषामा वेषाण ॥१०॥ कश्चं ॥३९॥

प्याण विकारो-दोषानुं वाणुं इरिहामरे, मंतो होय । कोइए लगावी तममुख बाखरे मती । रेड-इरो जेव रणमां तबका, परे हैवामां वाल हुनाल । येद करारी मार्थ पण परते, तेने केनी रही बाकरे; सतो । एवं करतां को वही शया चोरे, तो तस्त तेनुं कुने वालरे; बावा । एवं करतां को वही शया चोरे, तो तस्त तेनुं कुने वालरे; बावा कोच बोच बोह जिती, भावे घलवा विवासने; संतो । ॥३॥ एका घला ने चला हरिया, तेन वहे जम उपहास । निष्कुतानंत करें ने विना कीता, तेनो वाचे केन्द्रि विकास रे; सतो । ॥४॥ एवं ॥९॥

वादी बहुं वान जनुवा वकती, सुलतो कह वर आसी विके कती । कई सम्बादी राष किविती देकती, यूकी वृदि यूचे सूचा-लगे के कता । १॥ एक- केच देख नाती नहिं, दिन देहेकार करी दान। जेजे वाने तने जाने तेने, बहु करी सरवान 191 गुम्बी प्यामी कीह क्षाणी आहे. माने मनवादित से बजी । आहे केने आवरणी, आर-अवाकी सांवकी हो। नेचे जब बाच्यो भा सकता, परवाके पत्री बाक । इंड करे केचे जामन मार्च, कर काइक स्थानक हाशा दे ती वे'ली बास वाधिये, तो रवे समाय सीय। आय्ये असे से आवर्ष, ने काम म कावे कोच ॥'-॥ मामी भाग्ये कोष कर वाने, तंने होताप महि संगार । सारे सेली माजनता, वे'लो ब'लो बरवी विचार ॥६॥ वणी शांच वयो सब्दरो, वयो हामी त हुनोत्तान। आच्या नेत्र प्रहना, क्यों बेटा इता राजन १२०१ कथान सथी जानी नोहमां, बेटो शकत सामेरे सुजान । काच्य बारा नुं कादार ने, बारा बून्ने जाय है शान ॥८॥ लारे शिवि को सुच पाकरा, कारने जावयों ने केन अपाय। साम्य नी में कोच कममां, अने करी ताद पूरण आप गया गया पाने पान पर्ने बील आहेर्न करी, जोएए डीचे मापानु आ पार। विष्कु नार्वद नो वाध-नाच करी, भाष्य काम एवं होताचार प्रदेश कवर्ष प्रदेश

शिविशामा है इयानी निवासनी, पाप करनां सथ वह मासनी।

a greg. a solit.

नेणे केम अपाय हारी पर शांसजी, नेनो नव सनमां कर्यो नगा-सजी ॥१॥ सक- नपास करी नवे प्रवे, आह समारपा ने वार। कार्यु सई अध्युं काष्या, आष्या आंश्रिय शेलाबार ॥६। कापी कापी राय आर्षियुं, सबै बारीरज् मांस । भाग कान बन वयवयुं, तेव बाली वेठों हे जेड़ बाल ॥३॥ त्यारे रागे क्यारियु, आली क्योल कारण-क्ष्यहै। बारे आपूर्व अंग आपूर्व करे, क्ष्य करे के बद्धी भूपरे । छ। छ।रे वेठा राव जह बाजवे, बुवा लोकमां दाहाबार । लारे होली रखी हुलाकान हुनो, इन्हें कान्यरों कान्य ने बार ॥१॥ न्यारे हुँह कहें बन्ध-वस्य राजा, मुं जेवी वधी बीओ एक। नवभविमानी मुं नवि, असे जोयं की विवेक ॥ शा सन्वर्ध निव रेक नारी, जारे वारी जनी नमें बुर । तम तकी हमानोद आयो, बादने हवानकर ॥ ॥ वे त-वे'लुं निये बाहरतुं, वधी दिये छ आअगदान । एवा संबदने सहन करमां, जाको वधी कांद्र क्यान ॥८॥ बामने बांध्या बजिराय, वधी बोने बवाना बहुपेर । इजीमुधी हेने बही, इहि रहे छे एने पेर ॥ ॥ एम वर वह शुरेका गया, बचा जान जयजपकार। नियक्तनावद हरि-भक्तने, प्रश्नी लेवं एकु लार ॥१०॥ कडबू ॥१८॥

बार्ष्युं कापी अब सन्यंत कि बिराजजी, तेनी परणोकना सुन्यं काजजी। एवा जेर्चुं आपने करतुं ने बाजजी, न्यारे रिसको पर-इयाम बहाराजजी। ११॥ कन--धनद्याम चर्चु रिसे त्यारे, क्यारे रहे प राजाजी रीता। चीराज धर्म मन्य सुक्षीयता, तेना जेवी करवी जो-इय धीन ॥१॥ अंगपी अळ्चु अवस्ति, बळी अंग अवसो होप। वेते आपे जिलोकसां, सुन्ये धनी सन्दु कोष ॥१॥ पन न्यारे आवे अंग वर्षो, सुन्य दुःन्यमा सन्दृद्ध मही। त्यारे रह चीराज रहे, संत कहिये तेने बळी।।४॥ सोटी बान करतां सुन्यची, कडी न्याद आवेचे सन्दुरे। वर्षा स्थारे जोएए आ जीवमां, त्यारे अक्षापे भून्य बहुने।१०॥ यह पूल्यने झळती करी, न्या हरिनी चित्र करिये। मोटा भन्य में मारे बया, तेना सनने अनुम्बरिये॥६३ मनगमनु बेटी करीने, सन मो-हानो सन वारिये। प्रमण्य करवा छे प्राच्यानिने, परस्यु तो जकर वि-चारिये॥आ अंतरजामीनी भागळ, वहि बाले जुठ जराय। एव

विचारी आवणे, कसर व राजवी कांच ॥८॥ वह बान अनुव हे, वकी सुम्ब पावानी निदात । यस समझे विका वरं, रच तृजार्थी सग न्याम ॥ मारे मोटा संगव सकी, बळी राजवी वरचे भूमन । निष्कुः लामंद को क्य कोईए, अवसर आक्यो समृत्य ॥१०॥ करवू ॥३०॥

जेने क्याय करको होच चक्की, नेने वाद महथी नि'सनेहकी। जेम बरका अमद अंदजी, करना राज्य क वाका विदेशती केय हाल-विदेश करेवामा ने स्थानळी, व्यां आध्या वय कविराय । क्रमा अवस केरवा करुवे, यमे हेर्न यानी हैपामांय ॥ म्यापती प्रवण एक एक ने, लेनी पूछी कविये वान। जमेन समझ्या आ सर्धन, नम समझानो साक्ष्मन ॥ ॥ त्यारे अवय कई वा देवनो, नथी वक्ष व कतो विश्वास । सम्राय केम जा मुनिने, ज्यारे वर् जाय ननवाज ॥भा एव कविने पूजा करी, भावे कराव्यां भोजन। रणी वंडा सभा करीने, पूरुषां कहां एक ॥५॥ त्यां मिधिनागुरी परजळी, बागां सह समूचे वेर लोख । जनप कड़े बादे वजी जलतूं, कावे कई हं सबे कोब ॥६॥ राज सरज सुन्य अंपन्ति, बळी देव गेव दारा राम । एव कोच देवां कोच आपणे, कोइ केने व आवे काम ॥आ अच सम समे जारणुं, शबू जानी रहुं धनमांच। हुव विचारी जीवमां, नानधी आपणुं क्रीय ॥८॥ एम राजमां रही राम भएयो, ए हे लक्ष नेवा जेवी वर्षो । नुष्ण वदार्थ साथ मणायुं, एवी जोइए वहि यन जायनो ॥९॥ जाया कर एस बरेवा सुनते, तांच बोर्डा बेली वने एन । विष्कृता-मंद्र ए केमान है, मधी आध्यो राजानी समय प्रदेश। करते ॥ दशा

पर्यम विक्षाती—कीन् ने रहि ये कं साम्परे संती कीन् । उपारे सबयो थोटो बना बालरे संयोग। रेक-पुरण प्रवा पुरुषाणम पामी, जामी व स्वी एक वाम । अमनमहित वात आचाकी, मानी वनमां नि कृत्यरे; संगोर ॥१॥ राजानी शकी अमी जिल्ल माने, शाने बंगालने काम । यर मजासभी राणी जाणी राजा, श्रीजी वाहे कटी व्याटरे; समीक प्रमा तथा समा अगयानमा धरून, रहे विषयमा देशान । तेतो पामर वर सामा पुरा, श्रीकणिती परी छे शामरे; सतीन ॥शा तब सरजाका लजी मुख्य जाली, काई समझी ए मान । निरक्र लाजंद व जन्म इरिया, वी ओ बातारी बकार है; संगरिक महा। वद ॥१०॥ The trade to the first tent to the first of the first of

वळी कर्स वाल हरिजननी असळजी, मलरप्रीनो राजा एक क कती । रूप गुण वीत पदार निर्मकती, एवी बीरमेननी सुन शह-कती ॥१॥ बाय-सबस व सत्त्ववादी सुणी, बमवंतीए विकासी बात । बरबुं के ए कळने, बीजा पुरुष तान ने भ्रात । है। नेह बात न जाने मान एइजो, रच्यो अयंश्रर नेइ बार ! नेमां राजा नेदाविया. सह आपना भया नैयार ॥३॥ न्यारे बारदे बहु जह हंडने, वर्ष अग्नि सुको बरुका। तम फोरच ए करवा भीधनी, सुक्या सर्व एना में कुक ।। रा पन एने बरपुंछे बचने, एकी इब घारीके देश । देक बजाबी बचे बरो, तरे बजे बड़ी बड़ोड । का बज अंतरे निरमक है, जेब कहेंची। नेम करते । नजी क्रिय योगानणुं, नमार्थ क्रिय अनुसरका । आ नारे चारे मधी कयुं मखने, तुं कया अधारां बचान । तुं मारी विदा करणे, भी असने बरको एक जाना ॥आ लारे नसे कई कई इसपं-र्ताने, इह अधि वर्ष ने परण। एने वस तु देने करी, तो तारे नाने आदे कहं कोण ॥८॥ लारे इमर्गती कहे ए देवता, हं तो वरीछं बकराय । इवे समायुं जो दिलने, तो प्रतिवतापणुं आव ॥º,॥ स्वाहे इंडादि चारे वस धया, पलटावी पोतानो वेच । निरम्भवानंत् करे नाच समरी, एर्ड आच्या नळ नरेवा ॥१०॥ कवर्व ॥४१॥

वर्गी पांचे वया वस वयाणजी, पितवस वर्मभी वरी बोळ-वाणजी। वाली वर्कड वरमाछ सुजाणजी, सुर वर वया विराणी विरवाणजी ॥१॥ वाल—विराणी वर अवर गया, त्यारे हंदे क्यों ज्याय। आधी कर्जिने आगरमा, तुं वर्का क्रम्य वर्ज्याय॥५॥ त्यारे वर्क वर्गत वर्ष वर्षो, रम्या ज्यांक्या भावसाथ। राज साज सुज्य समृद्धि, कीपी जीती क्यों अवाथ। ३॥ प्रश्नी कालां वृंपती पुरुषी, आधी पेरेचा एक अंगर। सुक्यां काही मोटा बनमां, क्यां अवश्यां वर्षा वर्षा ॥४॥ जळराणे जन वर्ष मळे, अब टांचे व मळ अवश्यां वर्षों सेका अम, दृष्ट्यांची विद्यां त्यां आशे क्यां वर्षों साथ करो च मळे, केळे बनपार्थी विद्यांचा। जावा आने करो वर्षे, सोय वर्षों च मळे, केळे बनपार्थी विद्यांचा। जावा आने करो वर्षे आसी देहने। आपे संकट सत्यांचे मह, कई निह्न काइ लेडने॥आ अने सकट कारीरमांच, अणु जेटला आध्यो वर्षी। तेन सकट

सामटो दक्तो, जे कहेवाय वहि मृत्यनी क्रमी हटा अलवालां करे अर-क्यमां, व्यवस्मां वाले दशीर ! ताय अकटाय वडि अंतरे, समझी सने सुपीर (19)। राम द्विम एस रहवरे, वरे अस दिना उपवास । निष्युक्तानंत् कह यह पनमां, करे पर यह ननमामा। र ना करण्याना।

वय विषय अनिवास विकटती, उसी उसी जाय स्थी वामे संब-टजी। राज दिवस रहे वृष्य अमरजी, झाड पांड वृष्यी अनि वृत्रपटकी ॥१॥ राज-वृत्रपट देखी अर्टाद एक, चळी जाय सनुस्पनां चित्र । नेमां राजा राजी रहवहे, वहे दू.च व्यां आगणित ॥२॥ यजा गोल्यस कांटा क्रगटा, कांच कहू करणां जीर । आवि स्पर्धे ए आंगमां, तेथं सुत्री जायदं कारीर शक्त बद्ध बंबी बरायर, करे बाब्द हुंदा अवंकार । सच्या व जाच ने अवने । एवा काच वनमां प्रचार ।।ए।। निकासमंदि निकाचर करे, इरे क्यू वंगीना यान । एवा वनमां इंपनी अति, जिल्लाक करे जिल्लाक ॥ मान वाज को जे वय सके, वके हिंगक जम इवेडा । मीप में बारे वहि मुख्य राज्यमुं, हैपामांहि लवनेता ॥६॥ जेमजेम परे विषणि वसी, नेमनेस सने मगर । यस वनमाय विचरे, राम दिन राणी ने राजन ॥ आ एवा वनमां कवि रहे, जेने असनो नहि आहार । जोह राजा एवा कविने, त्यांधी चाली निसरे ते बार ॥८॥ एम दिन कई वही गया, वडी राजाये क्यों विचार । राजी जानी सर्वे दुःख्यी, मार्डे मजी देवे निश्पार ॥९॥ वर्णी अर्थु अवर सह अर्थ राते, वासी निमर्था वस वसी गरेश । निष्कुणानंद करे दमयंती, पामी पूरण कलेका ॥१०॥ करके ॥४३॥

इमपंत्री वोकारे कहे हे शामगती, मेली तमे मुक्रने रहवदती व-नजी। हूं पनिव्रता साथं अवळातुं तनजी, तम विना मारी कोण करवी जनवजी ॥१॥ काम -जनव करना ने जाना रच्या, इदे रही। का हुं की रीनमां। हे देव दीयूं दुःव में सामहूं, नेहनूं व विवार्य विकास शहा क्यों सम्बद्धी वही गई, शुद्ध व वही वारीरती। सन्द वियोग ए जारने, मध्ये नदी चाली बीरनी गया पडी पहली आच-दनी बळी, चार्मा एकाएक वन मां। लाग्या कांटा कांकरा बरा, नेजी वीवा वर्षे समयां ॥४॥ नेया अस्ताच समयो, वायेष वीवा अति पणी। पण मन्य न मृदं वर्ध न पृष्ठ, शुं कहिये धीर म तहनाणी المارية المارية المارية والمراية وا श्रिम एक कहक कह योगव्यों, नेतो कहेगां न आवे पार । पात रियम रचवदतां, पळी वही गयां वर्ष पार ॥६॥ पछी पाया निक्र राज्यते, प्राचे भश्या श्रीभगवात । एरलुं कळि पळी करी गयो, तोय न पळ्यां सल्यधी निवान ॥ आ एक साधुने सल राणवुं, राखवी रवसित पर्ममां । सूल पू:ल मही हारीरने, रहेबुं अवक निक्र आ-अममां ॥८॥ प्रमुख एन नथी, नरनारीने निवान । पर्म जातां जो पत मले, तो जालवुं पयं ए स्थान ॥९॥ एकी जांटी पानी अंतरे, वरिजन वीमन राल्य हैये । निष्कुलानंदनो नायत्री, याचे राजी असिदो तैये ॥१०॥ कहवुं ॥ तथा।

पराण विश्वती—दिये हाजी वनस्थामरे संनी करी। तो सरे सरवे कामरे सनी। देक मरजी जोई सद्दाराजना मनती, एव रहिये काई जाम । जे व वमें जमदीकाने जावों, तेनुं व सूचीये नामरे; संनो। ॥१॥ वेमां कष्ट आवे जो कहिक, सदिये हैये करी हाम । अवन अक्रम रहिये एक मने, तो पानिये सुन्य विभामरे; संनो। ॥४॥ जुवो शिन आगंना जनती, पान्या विषक्ति विराम । जन-सपकी मानो मुक्तानुषी, दर्श बंदा नदि दामरे; संनो। ॥१॥ एतो दोयनुं सोयनुं के आज, विजये होय दाम वाम। निष्कृतानंद निःशक बहुने, पानिये हरिनुं धामरे; संनो। ॥४॥ वहन ॥११॥

वद्धी कहुं एक राजा अंवरीयजी, तेने घेर आच्या दुर्वामा हार् शिष्यजी । भोजन कराव्य अपने नरेशाजी, त्यारे इव कहे आही आवो मुनेशाजी । है। यह—मृति वे'ला तमे आवजो, आज हे हार् दुर्वीनो दन । नाव्या टावे जाकी यूवे, कर्यु उदक्रवान राजन ॥२॥ वीती वेळाये युनि आविया, राजा केम क्यु के भोजन। यन जमा-ज्या विना जन्यो, इउच्च हुं च्याप राजन ॥३॥ च्याप दुई माचे व्यक्तिया, आध्युं सुद्र्यान ने बार । यह भागे आवे व्यक्तिने, वाले आव्या ह-विन आधार ॥इत कर्यु इतिन क्य निवारिये, द्राक्तिये सुद्र्यानची प्राम । त्यारे भीवित कर्य प्राम क्या निवारिये, द्राक्तिये सुद्र्यानची प्राम । त्यारे भीवित कर्य प्राम क्या निवारिये, द्राक्तिय प्राम शिवाय विभाव । आज नेदि एक नाम होय तो, सुद्र्यान हुर बाव ॥६॥ एम बायु निज्ञ केने सम है, सम हे सुक्त दुर्व्य देनार । एवा अक्य के जलमांही, लेनी बचर जमुनो प्यार ॥ आ पर मार्णाने वीचे नहि, जर वीदाय वंद पोलालचुं। एवो विचार जेने जंतरे, पविपविषे र-हेते वर्चु ॥ ८॥ हिशकारी जारी भी जीवना, जेने मुद्दाई माग आवी वरी। तेने अचनुं अवरनुं, केम बाप वंदर अनरपी ॥ १॥ ममूद्र द्वीतक सदाय, केने हुन्य न दिये कांच। निष्कृतानद ए भक्तनी, भीहरि करेते मा'य ॥ १०॥ कद्दम् ॥ ४०।

बळी कई एक अन्तर विजीवनत्री, अते हरि करी विवेक विच-अन्ति। तेषु जाणी रायण कोष्यो तनभन्तती, तेतुं कोण करे राक्षम रसंभाकी ॥१॥ कम--राक्षस रायणे साथ मारी, काइरा संकापी या'-र । आष्या रामना सैम्पर्मा, नाप्या गरवा ने बार ॥६॥ लारे विजी-क्या कहे राजवासाने, आई कही रामश्रीने वात । जन्म तमारी नाम विश्रीयम, आय्योछ रायणमी जान ॥३॥ सारे भेवद वर्ष श्रीत-मने, सुनी राम कई सुन्य दाम । आदे ही आवे सम नार्टने, वन भने नहि विश्वास ।।।। लारे भेवडे कर्षे विश्वीयमने, मार्र आध्य सुवा साचा सम । तो तेरी जाईए प्रमु वासमें, वहि तो जावानुं हे विषय ॥'ना स्वारे विभीषण कई सुन दाश संबंधी, राज साज अमन अस धन। आवे कर अनुर रामजी, को बनो दोप मारे मन ॥९॥ ने संबंध सुजान्युं भीरायने, सुजी तर्न तंत्राविया वाम । अलो भक्त विभीषण मुं, जन सुव्यथी में उदाय ॥आ सुन कन्द्र कारणे, शुर असुर वर इच्छे वर्षे । शास्त्र पनम्बे सङ्ग् सुन्य सान्युं छे, ते में बंधन जारूपे आवर्ष ॥८॥ एक कही विमीचणने, राजी बंधा भीराम । बन्च एका दक्षित्रवन, अने सुन्ध समारी समन ठाम ॥९॥ एम वर विजरता, अदे सुन्य लहाते तुन्य। जिस्कुलानद कई ए भक्त परिना, अनि मोटा अमृत्य ॥१०॥ कण्डे ॥४३॥

इंसरकत्र सुन सुपत्रका तेइती, नेने अति श्रीहरिमां मनेइती। इर इरिश्रक अवत्र वळी एडती, अस्य दोवे आरणा नानना गुन्ता-मां नेइती ११॥ राव—नेन नाने नपास कराबी, नान्यो नवेत तलनी बाई। श्रीहरिना धारणवशी, वळी काया म वळी काई॥२॥ व्यारे करे तेम तच्युं वधी, कांनो श्रीविध छ एइ वास। तेल वच नपेन व्यत्रे, बहि क्षीप्रिय काद्या नपास ॥१॥ खारे कहे मंत्र धे एटा मुख्यां, नेनो अन्यह करेड दबार । ने पंत्र नो भीदरिमारण, एणे बाह्यो असे अन्यर । है। साची अस श्रीकृष्टले जाणीने, करी क्ष्माये एनी साचि । एसी पहें नय स्वधी हाके, दृष्य हामनु प्रवादय । एमें क्छा पत्रनी पीटा एस्या, एसि इस्जिन पासे रहें । वण विश्वासी एहं वासरे लेडापा। पान नव एहें ॥६। राम दिवस रक्षा करें, निज्ञान कर्मा वास ए किए वर्धा है सुके निर्माय नावजी निहान क्षित्र ने कर्मा कर्मा क्ष्मा आहित बहेगाय । एहं हेन जार्यु कर जीवन, कर बीजे कहा केम पाच । टा बकी बन्दानाहवा-पत्री, अर्थानय रहा अस्वदा हुमीन से देखे औह, जम पहना आहुं पंच 12,0 पहने रहीन पेसे हिन, देखे दासभी हनता पीर । निष्कृत्या करें हुमीन के हे के हमारी हनता पीर । निष्कृत्या

गर आदि वक्त भया पह भूपजी, साचा सन्यवाही अन्य अत-पर्जा। पर्विटा तथ्या द्वाद सुकारप्रती, करी हरि ज ी सर्ग गुना न राज्य ती ॥भत 💎 सार प्रयासक ने नकी, आगर्य न के अनक । भन्मचरम् एना नामित, भरमधरम् गहनी रेश तर, एवा रेक बाइक शायन्त्रे, करमा प्रत्ने कतहा। यास्यो । इस्तर्कार्व, न्यान्त्री कर्नन कि । जब भूच काई खुमहू, पण साम है। अप भन्द । स्पानु के ब द्वाराके एक काले पीयन्त्र । तो लेख पर काट लाखगहे, होग उटा अजननाम । त्यास्पी सुम्ब भूमिन अल सार्धन पह-ाथ ॥५ क्या कनाव्या द्वारा सरमां, पण होची न त छहाई। लांखर्पा ने घेपर्वा केया बन्धानाय गराई ॥६८ इत्तर केवी हो। धापुन, फर तम करा थ (धाप। श्राजनने अर्रिक्षाणः भी। करने पाण उपाय एक, काम । स्थास्त्र कर्ताय, ए आत्रका चला अस्त्र। आपनां एने ऑक्टबंज, यही सबर ने रामधी गरी पटा अगर आधार पर उत्तर 📑 १ तर र भाउ लगा संह सेह प भार स्था सरहह विक्रीविषय १९ । साम्राज्य व भाषत कर, साज्य रहेवा च १३ । आहेर । निष्युद्धानद्भाग रहत् प्रशिद्धना अति प्रीकर्णन कर्या दहा।

गरम्य विकास किर समा नांड धनरे सनी घीरतात । आव अर्थ दोषांड दनरे सनात । ४६—अनोल दू न पडे उपारे आधी, सेनो न से बाय तन । नमां कायर घईने केदी, न बहे दीन धननर,

सनोक ॥१॥ धीरजवनने आपे बन्देन, दुःस्य बहु दुरिजन । तेनी सरवे सबे वारंपरे, जाणी है जब अक्ररे; संतीक ॥न॥ पीरत वारी रहे बरवारी, पाम ने मुखसद्त | कष्ट कापवामी ए छे कुटारी, वारे विपलियां बनरे; संबोध ॥३॥ जागे सीमा कुंता वे इंप्पड़ी, पारी पीरज अमि मन । निरकुलानद्या माधने कर्षा, पूरण वर्ण प्रमण्डे;

քչ] Հայաստանարարանան է համանանայիցների անականականական չերի անակարեր հետ հետ հետ հետ հետ հականական ընթ գչ|

भोहने, आवी करोतो अवस्ताह केम । लारे भोह कह मुनासने, भा नको करेसे एस ॥४॥ लारे नवाप्रत्ये करे बरपनि, अनि बसमा हाबी बचन। हारे जहादरम बोलिया, सूच्य बचन कह राजन ॥५॥ अवकार से मारा अगरी, ने कई है सर्व तुसने। वं जेने कई नारी जीमधी, मेन् वधी दृष्ण कांद्र मुजने ॥६३ में कवं जोड़ आ मनने, मेह वधी आश्यामां एक । देहदणीं तो एमज देखे, जेने नधी अनरे वि-वेच ॥ आ। न्यारे प्रापंताचे पिछान वची, न्यास्या पाप प्रणियन करी । क्षमा करती अपराध मारा, एस क्यूं अनि करवरी कि एना लेखें भाष जायणे, त्यारे पढे पृति विधान । त्या बोहानी त्यवर व्यति, वकी जनायं निवास ॥९॥ बादे वह विको नवीवन है, साम व-वधी वर्धने वर्धक । जिस्कृतानंद जमकीयांती, अन रके वहि रेक ।११+श कवर्त्र ।।६०**।** 

टेक एक नेक शुक्र जीनी मारीजी, अनि अनि घोटी कीने सुन्त-कारीओ । राजपुर आय्या रायपासे विकारीजी, पंपमां पीटा पारणा मृति भारीती। १॥ राय-भारे धीका पामिया परधी, करी बहुकहु अपहास । उत्सन जाणी कहे कहता बाली, हराचे दन्ताची जास है। कोईक मान्त्र मोधर मोपर, विकास इंड वाका कई। कोइक मंत्रारके लरिया, पापी वर पुत्रमान नई ॥३॥ कोइक नाव नादी पावे, प्रमावे कृष्ण विमुख्य पर्ण । बोक्स हरूच तेनो झुक्त शीने, बधी अवस्ती सांच अर्था है। से ता नभी तेतु शोहने, जाणी जन्मना तीय अज्ञाण। एवा भक्त आपना नरेका पासे, कर्प राजाने सन्धान ॥५॥ आसे व्यासने आध्यो जेले, उत्तर जन परमा रही । आधरण रहिन आ-त्मदर्शी, एका समर्थ श्रद्धती सही ॥६॥ समर्थ पण ए सर्व सदं. जरमधे महे भेतु हो पहिए। आज नपामी भाषण, धना अंधा नथी के धहर ॥ आ अन्त नी शिन जो अन्तमां, अन जाणा जोईर जरूर । बोमानी र्याम परवरी परी, वरिदास स करवी पर ॥८॥ वेचे छेबा है नेपाय नहि, बाहकार बरेबानु सुन्य। बाकी वंशी ना यह नेमज करे, पण शाम हकमनुं रहे कृष्य ॥९॥ ओदी अध्य अंगे सिंहनुं, अपूक्त करे लेख जार । निष्कुशानंत् एए पाननी, अन निर्म आप नोर गरेना कवर्त ।।५१॥

<sup>1</sup> प्रथम के विकास

बन्दी कह कपि जारद एक बकीजी, जेवे प्रतीत प्रगटनी है प-कीजी । आर्व ज्ञानदान करने विवेकत्री, पारण जनपार अगाणिन एड श्राद्धीजी । १॥ साम-अगणिन जीव इद्धारका, यरे नार्ग स्टब्रु से बानाख । ज्यां ज्यां होय जीव शिक्षास, त्यांचां जाय ननकाळ ॥६॥ एव करनां साविका, जारद बारायणसर । दीवा सायरा महत्व द्वा, इस बजापनिया कुंबर ॥॥ नेने क्यदेश आरी कापी, समारशु-सानी आया । तेष सामिती दश्र दिले, खनियो पर्या पदास ॥४॥ खारपणी एक सदक्षते, पपताबी मुख्या एवं स्थान । सेने पण नेना भाइमा जेंचुं, भारचुं छ बारदे हान ॥५॥ ने सुची इस दिलगीर भयो. बाच्यो बारस्त्रीने बाव । बुहुने चपर लगे क्यां रहो, व्यां सुरपु वा-अजो आप ॥६॥ व बराय यहांची चिर वयरे, आयेत क्रजी वयरेका । व्हमा जेवी जापह, परिजयने ओईए हमेवा ॥ आ के दी वान हरि-कुरवानी, हेन देवाची देवानचुं । कादी लेवो काम मुख्यी, एवो बक्दार करको वर्ष ॥८॥ योग्यं मारने यनावनां, बाहने गमे के वर्ष गमें। कथामां कमर वर शामनी, सुन्द दृश्य समे वसमे ॥५॥ आ-कसी व वेसर्च आपणे, हेने करबी इस्ति। बान । निष्कृतानंदनी वाषात्री, रहे शाली लेवर दिव राज ॥१०॥ वहन् ॥०६॥

वर्गन वन्ने—ज्ञाचा संग अनंग राजी कर्षा श्रीहरि, सेली अमत तब्यनगरी। हीसन अनि यतियांच ने वाणीने, रिवंपीनी लीपी ताज वनी; साचार ॥१॥ दान वाम वाम दीडां चन अब तसे, काम इपानमाचे शक्युंचे जेन । वाम डाम न पूछे ताम यामनुरे, आई जाम दाम देवे रहेचे नेने; साचार ॥२॥ एवा सननो संग कर् बंगहीं करिने, तो आमत रंग बची जंग रहे। दिन वगमने वन क्ष वर्षे, जिल रही चने जम जीती हने; साचार ॥१॥ साचा संग ध्रावीर पीर शकीर छे, जीर क्षीर कांबर दीर करे निवेचों। निच्छा सानंद आमंद्रपर वामीने, केदी व मूके ए वामने ज केटो; साचार ॥४॥ पद ॥१३॥

प्या तो सनकादिक सुजानजी, विषयमुम्य कृत्वकर जाणी तजी तामजी। अजी अभू पासिया पर जियामजी, एक बात सरवे

१ काशर्यः

पुराणे प्रमाणाती । १॥ सम-पुराणे बान यह बरती, सनकातिक सम वहि कोष । वर करी विषयसुम्ब साथे, भश्या भीहरि सोय ॥२॥ जेंद्र सुन्वसाद जिल्ले बचा, सुर असुर वर भृष्या भने । ने सुन्व सनकारिकने, स्वप्तामां एक वच शमे ॥३॥ मिक करी हरिने रिझ-व्या, भागोमानो कहे भीषवहपाछ । भागिषे वय वर्ष यांचती, बळी रहिये सदा निष्काम । १४॥ वटी वामी अवस्या वर्ष धांवती, सर्वे लोकमां करे सुकाल । सुकाब कथा श्रीकृष्णती, करे वह जीवतां कम्पाण ॥६॥ उंडी अंतरधी हच्या गई, स्पर्शमुख जियानस्त्री । पत्री पेठं करो जापणे, बेली दियो हुन्छा मनती ॥६॥ जिस्सिपी शमेछे नाथके, विकय विकय गमला नथी । जेम समग्र कर वेसे स-आर्था, समु जाने पटी आवे आंदियी ॥ आ इपर बन्या बहु इजका, माप मेलनी भणा नथी। एका जन जोड़ जनपनि, जनाव करेडे वरपी ॥८॥ इच्छाओं अनेद वरमां, न्यान वान व्यक्तं सुन्वनी । एवा भक्तनी जगति, इरि वर्दे वहि विमुक्तनी ॥%। एंच विचयती पटा-रिएं, यणी बारे भरी परमांच । निष्कुलानंत् कहे नाथना, एड भक्त ने व कड़ेबाय (११०)। करने (१५३)।

बळी करी एक जानो जाजळीजी, आरंग्युं तथ जाने विचय बजीजी। कर्युं इरिस्पान नेने तनशुद्ध रखीजी, आस्पां बनविद्यां बजी सुपरियो अळीजी ॥१॥ कथ-अपरिये सळी साखा चालमा, बळी वेड कानभी कोर। इसां मुकीने अदोनिक्स, करेछे सोर बकोर ॥१॥ जहम पमे ने बजा रखा, पळी जाय व आवे क्यांच। जाने पंत्रीने पीड़ा रपजयो, एवी इया घणी दिलमांच॥१॥ चारे दिसे जाय चण्य साढ, पळी आबी रहे त्यां रात । पणी हंडां घटी हंडज ध्यां, गयां वरी अनात ॥४॥ तोय जाजळी जोड़ रखा, दिन केटलाक-सुपी घट। वार्यां न जाय्यां पंत्री प्यारे, ध्यारे तज्यो सन बचाट ॥४॥ एना जेवी इया दिलमां, राच्यरि अति परी पीर। क्षिण मोटा जीवनुं सहयुं, सुम्ब दुःम्ब ने वारीर ॥६॥ आपने अंग पीड़ा जावतां, जो धाय सामाने खुम्ब। तो भावे करी भोगविष, दिलमां न मा-निये दुःम्ब ॥आ अन्य शीव वपर वळी, राच्यां नहि एक रोच रति। स्थावर जंगम जीव वपर, परहरवी हिंसक मित्रां, ८८॥ परने पीड़ा कहं करबी, एमी काम से कमाईनुं। सबेंने सुण पावा इच्छन्, एवं कृत्य से संत सुणदाईनुं। (%) एवं मन जरो इति बक्तनो, सब पीडवां शामपारीने । निरमुक्तानदनो साधजी विसे, एवं करबं विचारीने ((१०)) कवां (१०४)

जरूकी वयमञ्जू आयल भीश्यमा जिल्लाकी, गुरु आगन्यामां वरने जहोतिकाजी। जाय जल जायवा इरले इसेवाडी, आयी आरं गुरुने आहे गुद तेने लेवाजी ॥१॥ बार--लेवा व आवे स्थारे कियाने, ज्ञिष्य जाने जज रही जह । लारे गुढ कहे गरीय गुडश्यने, परी करी वीकवा कदि ॥२॥ त्यारे वय वळी वीने वळी, करेंग्रे नेव निरवाह । लारे शुरुए वय बरसकीजनी, वाडीछ चोची बाइ ॥३॥ वर्ण व्याची तेजे श्वचामांहि, केर्कपान चया तेषु अंच । वनशी आवनां वाटमां, वदी नवाचे कुपसच्य ॥४॥ आच्यानी वेळा वदी गई, लारे गोनवा हुद निसर्पा । शेकार करनां वहेल कुवामां, साममाना साद कर्पा ॥५॥ वधी कुवामांधी काडी कहै, वयमन्यु तुं हुं मारी दाम । मने में बसब क्यों, इदे बारव काइक मुज पाल । ६। एव गुरनी जा-शस्या, जे पास परम सुजाण । तिर्विधन ते नर पर, पामे पर विरयाण ॥आ सन गमनु मेश्री करी, रहे आज्ञान जनुनार । नेज शिष्य साथा सरा, बीजा सरवे संनापनार (८)) कुकेरकानना कीर सरिका, किया में याचुं समझी । गुद वासे तेम वसर्च, अहंता जमना भवती तजी ॥९॥ गुरुक्ताचे सुन्त वामिये, गुरुक्ताचे अवजे श्राम । निरमुक्तामंद गुढ कूपा करे, तो आपे अविषय दान ॥१०॥ कवर्त ।(५५॥

ए कथा सरवे परीक्ष इरिजनजी, एने केने पगर मधी प्रसंपा भगवनजी। भोग कोइ मोखा व परिया जनजी, कर्नु वार इजार एने पन्यवस्थानि। है।। काम-चन्यपन्य एवं जननं, जेंचे तिकासारे सोदो कथीं। तजी के आदा तम सनती, एवा कथम जेंचे आद्यों। शिशा लीपरे सिदारो विशा दायमां, तेव साथ जोवा केम रहे। सरवानी तो बीकज सरी, असि आस्यनो आग्यों भई।। शा आगळ वालतां आनंद जति, जावे कर दाँ रणसुपरे, एक तबी मरे एक

s meaning कर १ जान.

रश गरे पीरअधनात्म गरेल विश्व पर विश्व में स्वत में स्वत

जारवां विषुषतं विमात ॥६॥ वेमो कवि विमातमां, मेदी जाये जमरपुरमांच । भन्य देव तमारी जोएने, असे आस्या नेवना जांच ॥॥ खारे पुण्युं सुन्ध पुन्ध लगेतुं, कहा संद्रव करे परे पन करों । खारे सुन्न कहें वहि आपूं ए थामे, लए जाओ विमातने वर्गा ॥८॥ अल्प सुन्तने जोगपी, पुरुष न्दरे वाह्यं परचुं । एवा सुन्तने वस्ती सामसी, चांखुं वधी ए देने वहतुं ॥९॥ वसी अवधे तम नती करी, गया ते अन्यव बाममां । निष्कुलानव कहें सम्बं कह नेह, तेह जावियुं बाममां ॥१०॥ कहतुं ॥६०॥

वक्षी कई एक शिकोप्छन्तियारीजी, बीजे एक कनकन वर्म विचारीजी। ऋषि कषिञ्चन काषिवारी सुनवारीजी, असे दिव जारुमे एइ धळी बजी बारीजी ॥१॥ शत-बारे बेटो उपारे जय-बाने, इनो लाखु कोर तुगल। त्यां धर्म बरी रूप द्विजर्यु, गब जोह आवरा तेइ वल ॥२॥ आवी कहां आयो अक मुने, हु नुकरो छत्रं लक्षण । त्वारे कविये आवरे जावियुं, योगाना आगर्नु अस ॥३॥ वर्णी आप्युं कवियमीए, जाय्युं कविसुने करी प्यार । वर्णी आप्युं यनी वारीय, भयां अस बीना ए जार ।.॥। अस विन दिन आड गया, पाणी आठे पण शहि भाषा । तोष पारे शजी रक्षां, पळी कोई व वर्षा प्रशास (१)। जाप्युं जल जल्यागतने, जल रख्युं यो-येस कर वर्णतुं। तेमां जाळोट्यो आधी योडीयो, वयुं जर्यु जंग सुदर्भेतुं ॥६॥ एवं शुद्ध अस एइतुं, ते जमिया गुरंग पंती । राजी वया कवि ४वरे, जायुं आयुं समृद्धि सपटी ॥ आ लारे द्वित्र वसरी धर्म थया, भागोमायो तमे सुत्र वास । लारे द्वित्र कहे पत्य वर्षे तमे, आयो तमारा पापमां वाल ॥८॥ एव समे आवी कोई अस जाने, बसी होये श्रुपाए जानुर । वी'न्य प्रमाने आपनुं, राजी वह जन जबर ॥९॥ अस न आये पत्तर आये, को तो संनाये कडण कही। विष्कुतानव परिजननी, एकी रीत जोहए वहि ॥१०॥ करपुं ॥५८॥ बळी बहुं एक जयदंबजीनी बानजी, सांअक्या सरबी हे सारी साक्षानजी। जेने घर पद्मावनी विक्यानजी, करे इरिमांक बोव दिवस वे रामजी ॥१॥ सब-राम दिवसमा रागे करी, गाय गोविं-

दगीत बीते करी। जानी लाने आज तेइ जमे, जाने मूनवा जनने

भावे करी ॥२॥ ब्राह्मण ने बळी भन्त वर्षिना, आणी किएव धर्या कह अब । एम करना क्यारेक काळ बच्छे, अबे वहि अस्त्रमां सह u रे॥ वर्णी अवदेव बाल्या आक्वा, जिय्ब वासेवी आक्यूं वस । ने सई भाषनां बारमां, समया सारगमां दूरिजन ॥४॥ आवनां ओलनी एइने, अपरंबे विचारी कान । जार्च कर तो तन वजरे, वहि तो वाको बेडवी वान ॥५॥ कराने वे बडेबाने, तब ओई मा-ब्याखे नेह । अध्य जारची जीवची, ए बानमाँ वहि संदेह ॥६॥ वृक जयदेवे विचारी जीवमां, आपी दियुं राजी वर्ष पन। सारे चारे कारे विकारियुं, कांइक कपट से एवं कम ॥ आ बारे बारी बालो एइने, तो जरे आ सपको मान । धारे एक कहे वाचे हाथ नाने, एकी केले जरको बेहात ॥८॥ पधी हाथ पन काफी हालिया, महापापी ने महि में 'ह। सिपां आव्यो एक श्वाम, वे 'त्ये वेसारी वह नयी वेसा, हा वधी राजाये एवे ओखनवा, जाक्या जन्म था ते जवदेव। विच्छ-वानंदमा माधना वा'ता, जानी करेखे बढ़ सेच ॥१०॥ कहते ॥५९॥

वडी एका किया भया जुवासकी, एक करना वाजे वहि गयी बाकरी । आच्या ए पोरटा सायु यह पानी मासजी, तेने ओकक्या वयदेवे तत्त्वासाती ॥१॥ गम-तत्त्वस्य तेने क्षेत्रजी, वयुवयु बरावंग्रे क्षेत्र । आरे चोरटे यम जानियुं, आ जरो सूनी जपदेव श्रा आच्या अविना दाधमा, वृत्ते चनार्यानी जावत सन्ति। जोह अवराम आवजी, मार्पा दिना ए जुन्हे अहि ॥३॥ वार्पाने वाप पीमा-तमा, माध्यां वजरे ते निरचार । यहां भार केम कर्त्यां, एम जिल-बेठे चौर चार ॥४॥ २०१ बोरे जालवानुं कर्षे, आरे जपाच्यां कर्ष नार्या भरी । जानक कह क्यांक बतर्या, बाहांबाकाने कान करी : ॥८॥ जववंत्र जाननी सांपडी, राजाना सुन्दामां आस्पी हुनी। अमने सौंप्यो इनो मारवाने, त्यारे अमे मेन्या एने जीवनी ॥६॥ ते शुने आध्यां पत्रनां नावलां, वळी बीन्यो एक समर्भा सही। आक्युं एम मारी जावतुं, रुखे राजाने आवे कही ॥ आ एम कहेनां 🖟 कारी अवनि, पहोत्या चार वारं पाताल । मध्यां वाली घेर ला-विया, वर्ष पुर्तान वर्षु तेष् काल ॥८॥ लारे जयश्रेवे पत्या वर वि वरणने, वया साजा ने समये सोय । छवी विवासी जन मने, एवा  ىلىياتىياتىلىلىلىلىدا ئەلەردىلەردا ئەلىرىياتىلىدا ئەلىرىياتىلىدا ئەلىدا ئەلىرىياتىلىدا ئەردىدا ئەردا ئالىرىيال

श्रवाचान कोण होत ॥९॥ साचा जन नेने जानिये, जरी समा राज्य मनमांते । निष्कुनानंदमा भाषने, एपी वा'न् नवी वीर्त कांते ॥१०॥ कवर्त ॥६०॥

क्तान करनो—श्रमादंन संस अन्तंत्र सुन्य ओगवे, नामे कुन्य श्रमाती ओटवासा! मोतुं वर्षु अस सबे बना वावनेरे, ओग्य का-अने वसी रच्यासा; श्रमावंत ॥१॥ बना ओगार्ता व्यच्य सह वे ती करे, एतो अंगो अंगमां शोचा साथे। काच आगे तो साम साथे वहिरे, करका कोश्यतुं तम साथे; श्रमावत ॥२॥ सर्व सिंह व्यचा-ववासा संस शिया, जेनी नासे जानां नत वह नामा। अति अन्त-तर वह नरमा बचारे, तेने कहेर्चु वहे तमे मत साचा; श्रमावत । ॥३॥ ए जेवी के वी हेवी बंदवाचा नजी, को तृते वाचे संताच स-एतो। निक्कुतावंद कहे जब बाय ओरनारे, जो बहेना बहेना एवा वन बरमो; श्रमावंत ॥४॥ वह ॥१५॥

भोत्रीयोजी यान करी राय कविनी कपीजी, जेन हे तेन ते कहे-बाजी मधीती। विकारे बान सुजजो पुराजधीती, ए जेवा बया के अपिक एक एकपीजी ॥?। राष-मृद्ध एकपी अपिक परा, केव कृषि केंद्र राजन । ने प्रसिद्ध के पुराणमांचे, सबू जानती कन वय ॥६॥ करण कसकी सदी कारीरे, काको सेन महिली मापा-तको । अन गुन पंच विचय बामना, कर्यो त्याम नेनो तने यने वको ॥६॥ अंत्रष्ट बरने नित्य अंतरे, वाक्यरिटिटे समेरी वसी। जेस बरमे जक अवस्थर, वस नीवी भूमिए आवे दसी।४॥ तम वृत्तियो सर्वे क्यी, मजी जाबी ने अंतर यांचे। यथी मूर्णि वेली बहा-राजनी, जाये व आवे क्यांचे ॥८॥ बाल सक्यो मोटो क्लो बरमां, तेमा अमलना आनंद रहे । सेली चंदन प्रश्लीपागर, बजी बेडे को यला कोल यहे ॥६॥ एवां सुन्त संमारतां, जानो कुरुए कोयला समाम । काळच्य आरे व्यंत्रोकी संताये, बजी वारे सुन्य निवाय ॥ अ। एवा सुम्बने बानामिया, रात दिवस हथे हे रहा । वन वात जभी विभारता, जे ठाने हाथे केंद्र गया ॥८॥ महा गुल्ने के सुन्द मके, नेरण रखी बढ़ी जाय । एवा सुम्पने अञ्च अन विन, कही आई कोण चहार ॥१॥ एम ब्यागक राय कविए, समझीने कीपी 

**अर्टि भीरकायनात्रव १९०**०

के लाग । निष्कुलावय कड़े वर जमागीने, तथी वयत्रमी बैरान प्रदेश्य करणां १६१॥

बैराग्य विना ननसुन्त्र न नजायजी, तममुन्त नज्या विना इति न भजायजी। इरि भक्ता विना भन्द न निपजायजी, लीपी सेली वाने भक्तपर्य सजायजी ॥१॥ कव-स्त्रज्ञा जाय का सोकमा, पर-हो के रूप पहाँचे वहि । एवी मिक बादरनां, वही माह कमाशी सबि ॥ मा केम केमारियां कोड़ करी जाते. जाने कालमां करेबी शरणती । काम वर्षे की' केम आवे, बनीति एका मरणती ॥ ।।। जेम सनी वाली वारे बखवा, भेळां भरी लिये जब बारलां। बाग्य लागे वटी जानको, होनची तर्जनां आरलां अप। एव जन्म वह जगवानको, वसी के बाजो सहची अन्ते । एक शारीर सम्बद्धी रा-नियो, मोटो मियांनी गोनली ॥५॥ ज्यारे वंत्री इवेली विक सह, लारे आसीपानो शो अर्थ है। यस दगो से एना दिलमाँ, से संते बरवी जनमें है । ६॥ एका अमराका अन्य व वाये, धाये जन्म भागत कथा एका। ज्यादे साम भागती की सुम्बरी, त्यादे व बनाविये काचनिये विका ॥ आ दीर्थ जायन ज्यारे गुवर्त्र, तेव मांबी भीई कोरचं वहि । जानां व कवाच इच काच, वहां नेमां कवाची सबि ॥८॥ भनी भक्ति आदरी, बामबा पुरशोक्तम सहि। बग्री पंड लुक्त हुक्कतुं, दनो बान वने नहि ॥१॥ लावो भैरव अपने स्वाहे, लारे करानुं व मेलबुं जंग । नियुक्तामंद जेम दिवी देली, वाछी न बन्ने बर्तन ((१०)) कवर्ष (१६२)।

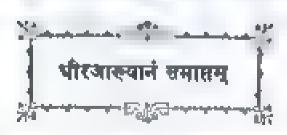
हरिजनने हे एक मोदुं क्यानजी, जो जानी कावे अंग अधिना-नजी। तो व अजाये केंद्री अगयानजी, रंख रोवश रहे एकनानजी ॥१॥ गण-नाम रहे एक पंतर शेष्यामं, सान समने रहे खोळना । वर्षे तो महासूच काने, व बर्धे तो वासे बांच्यो बासता ॥१॥ अब जांड बांड वाचे विकास, कुलक्षणाती जाने बळा। सोमी बाने नावे शांकले, बादीपादी करी जाय देगळा ॥३॥ एव वर आधारि-या, करे कम तम हुमर इजार। अनेक रीने जावना बजी, व दिये अंगे अजार ॥४॥ कर्मक्या कोढि कय सहे, रहे तन दिवस रोसि-वड़ी। यस सरसमध्ये छेश दृश्य सहेता, अध्यक्षे कृती जीवही शक्ता

वान धरणे व्यथमियो, वृतिन वान वृत्त योन । जनु व्यक्ता एक व वर्षे व्यथमियो, वृतिन वान वृत्त योन । जनु व्यक्ता एक व वर्षे वोटिकोदि सांववारो । अत्र अर्थे व्यवे वेरे, तो वृत्त प्रति कोटिकोदि सांववारो । अत्र अर्थे व्यवे वेरे, तो वृत्त प्रति कोटिकोदि सांववारो । अत्र अर्थे व्यवे वेरे, तो वृत्त प्रति कोटिकोदि सांववारो । अत्र अर्थे व्यवे व्यवे । स्व व्यवे व्यवे

इया संन एम बान खुपी; घटप०॥६॥ हार जीन ने शाम वृद्धि जागो बळी, इरन्य शोकमां तथ इसे दर्व। गांवर्ष शहर सम खुष संसारगारे, इराजक जोई सुम्बल्प जळ लुके; बटप०॥६॥ समानी बजा पीडा लपने रही, ने जायनमां एवं भाषनी नथी। निष्कृता-वंद एम साथा संन समझेरे; विचारो सबु कई हूं बान कथी; बटप० ॥४॥ वद् ॥१६॥

वर्गन क्षेत्र—आज आनंद मारा उरगां, नशी मुने महामोवी
वानरे। कोटी कह करे हरि नव मळे, नेनो मने वस्तीपा साक्षानरे;
आज ।। १॥ रमाच्या जमाच्या वही रीनशुं, अव्या वसी वारमवाररे। हेने प्रीने नित्ये सुन्न जावियां, नेनो कंतां जावे केन वाररे;
आज ।। १॥ अन्न जल कक इन्त पाननी, आपी एवी नसारी जन्म
त्यरे। वरगनी जाव दीची शानिये, आप्यां सारां वन्न सुन्यवरे;
आज ।। १॥ सामग्र भगन अनक अथा, सच्यां तेने वारीरे वहु
दु: वरे। नोप अभु प्रगट पान्या नहि, पान्या वन नाव्यां जावां
सुन्यरे; आज ।। १॥ कोइकने आपी असरावनी, कोइकने पुर कैनासरे। कोइकने सत्यलोक सोवियुं, कोइकने वेद्वते वामरे; आज ।। १॥ स्वान्यते सत्यलोक सोवियुं, कोइकने वेद्वते वामरे; आज ।। १॥ सुन्यस्य स्वार्थ वाम आप्यां जनने, जोई निक्ताम सकायरे। आज
तो अहसक रक्या हरि, आप्युं सहने अक्षरवामरे; आज ।। ६॥
सुन्यस्य सुन्य क्यां सुन्य पणुं, नेनो सुन्ये कंतां व कहेवायरे।
निय्कुलानंद ए आनंदमां, हरन्यी हरन्यी गुन्य गायरे; आज ।। आ

रोधा—बोमका कवनां मान एक सिंधु, छे बरण वसी पर् सोक । तेथी उपर एक छे, बधामणानुं घोत्रा॥१॥ संबत् जवार नवा गुवो, चैजबदी रक्तमी रज । रच्यो संध गवपुरमां, सुवी समरो भीभगवन ॥२॥ १० जीनकु यन्दमुनावर्यन पीरज्ञकान सन्धृत्य।





श्रीसारिकारायको विजयतेतराम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत-

## काञ्यसङ्ग्रहे

## हरिस्मृतिः।

रोहा-मनोहर सुंदर मूरति, सहजानंद सुन्दर । मनदीलसु-थी निरस्तां, आवे आनंद अन्य ॥१॥ प्रथम प्रमु पगटने, राखुं ह-ब्यामांच । जंगोअंग जवलोकीने, जंतर रहुं ब्रष्टाय ॥२॥ बोपाई हुद-क्त-पुरुवोत्तम परम द्याळ, माथ निरुव्या छे। श्रीमक्तिवर्मना बाळ, बाथ∙ ॥ सुलदाची सङ्जानंद, बाथ० । सन्संगीना सुलकंद, नाय । ॥ श्री अंगोअंगमां अविनाश, नाथ । तेने हैये छे हुलास, भाषः ॥ प्रथम पेक्तिने वे पाष, नाधः । आवे अंतरे उछाव, नाधः ॥४॥ अंदुज अरुण वर्ण वे चर्ण, प्राय॰ । इतिमक्तना अयहरण, नाथ० ॥ तेमां कोभे चिद्व सोळ, नाय० । अवलोके सुना अनोळ, नाय । I'all जमणा वरणनां चिह्न कोइ, नावः । सस्ति असकोण छे सोह, नाथ॰ ॥ यज्ञ अंकुश मे ध्यज, नाथ॰। जब जांबु कहिये कंज, माय ।।६॥ पन बेहुमां उत्परित्न, नाय । शोमे जिल्हाय विद्योत, जाय ।। पन दावे विद्य सात, नाथ । सदा सुखदायि सा-भाग, माथ ।।आ महस श्रिकीण ने व्योग, नाय । कलका पनुष ने सोच, नाप॰ ॥ गोपद सोनां गणिये सान, नाप॰। सोळे चिह्न एइ विक्यान, नाप॰ ॥८॥ जमणे अंगुडे नर्पमांय, नाप॰। कोमे कच्चरेण एक लांच, माथ०॥ वड पावलिया पुनित, माथ०। थोटे आंगळियो ओइ चित्त, नाय०॥९॥ जेवी अध्य कमळनी कळी, भाषः । एवी सोभे पग आंगळी, नागः ।। मलश्रेणी मणिसम, नाथ॰ । उपहला ने कहा रम्प, नाथ॰ ॥१०॥ अंगुठा आंगळियो बह् सारी, नाथ । ओई अंतर लिपो उतारी, नाथ ॥ आंगळी अंगुडा

वकर, वाष- । बोरेने क्रीमा रोम सुंदर, नाव- ॥११॥ क्रमानमा लांच जोह, वायक। शोधे पुटि पर्ण दाह, वायक॥ गोस रंगचीस वे वेनी, वाथक। हां कुं कहुं को मा तेनी, साथक ॥१९॥ कांबां को-अक्षा के कहिये, जानक। जंपा जोड़के सुन्य सहये, जानक॥ पिंडी सरनी वे स्वाबी, नाप०। विक लागेंग्रे स्वाबी, वाप० ॥१३॥ जोषा जेवा ए वे जानं, नायक। पुरुष नाव पास बोधानं, नायक। बाबा जानुपर चिह्न ओई, बाबन। सार्द सन रहाने ओड़ी, जाबन॥१४॥ वद को में सदर संबाका, नाव॰ १ ईमान्यन साथव दरावा, नाथक । पूर् कांद्र इसे देखी, नाथक । मारी चन्च कमाइ हेखी, नायक ॥१५॥ कोशस कटी कहीते केवी, नन्यक। ओई जनर वार्या जेवी, नाथ ।। वेरी वल देई श्वेडी, नाथ । बाद सन कांच्यानी देवी. माधक (११६)। वंत्री मानि गोज गंभीर, माधक । और जीव भरेछे पीर, नाम ।। पेड कडू ने दपाई, नाम । विपत्तवान सम स-बार्क, जाय । ॥१ अ। जिबसी परें को नेमां, जाय । बोयणसम क्षीत्रक सुन्य जेमा, बायक ॥ वस निरम्भि मोर्गु मन, बायक । को ने संदर इगाम स्तन, बाष॰ ॥१८॥ छवीदार रणक्ती छाती, वाष॰ । वो जी दवाजी रंगराती, नाय+ ॥ वेते अर्थु अति हैयुं, नाय+। ते केम करी आप कर्ष, माय॰ ॥१९॥ कृष्य पडवार वे बगर्खा, अरव०। जोतां सम्ब कावेसे भन्दं, नायक ॥ जना सूच जोपा में जाते, नाच । इसेमा हुर् बलाजु वाने, नाच । ॥२०॥ मुला भरी वेड वले, नाप । जोई जनस मरण भग टके, भाष ।। भनि आजानु वे पाहु, नाथ । जोई वजहारी हु आउं, नाथ ।। ।। वजहार सरीजी को से, नापका देखी होचन बारा हो स, मापका दिख मान्यु ओई वेदरियो, नायक। गोळ जनोज एकमरियो, नायक॥६२॥ कोणी संदर इयाय संवाजी, बायका वही सागते दवाजी, बायका द काई नोर्स के पुकरूम, नाय । जोई मके बीनमन गरम, नाय । ॥२३॥ शाय इयेळी छे राजी, जायन । ओई रेम्बर हरेछे छाजी, नाथक। पाचे पांच आंगन्तियो सारी, नाथक। बेहर विसा उपर वारी, नाथ । परता मस देरवां के रामां, माय । वधी केंवे में केंवामां, नापन ॥ वन सासमाज सम सारा, वापन। नेतो सबे सारो प्यारा, 

والوابية والوابية والمالم لمالم المالمة والمالية المالمة والمالمة والمالمة والمالمة والمالمة والمالمة

बाय • ॥१५॥ तीया सम्र ने नेजली, नाथ । जोह जीवमाँ गया वसी, बावर ॥ कर संदर सरका वेड, बावर । जोड़ दिन उतारी केरं, माचन | १६॥ कंड केब् सम अवन, माचन। नेना आहा वि-क्षे तल, नाथक ॥ तकुं क्षान्तु से धर्णु, नाथक। बहुं शुंदर माधान-वर्ष, वाषः ॥२३॥ दावी देली दिलपुं उतिर्यं, वाषः । भोद्र विषयसूनः विसरियुं, नाय ।। एवी विवृद्ध विका चार, नाय । यन मान्य म-बोदर कार, बाय॰ ॥२८॥ अवर परवास्त्रां सम वेश्वी, जाय॰ । दि-लहुं रीष्ट्रपुं तेने बेची, नाव० ॥ इते भरी वाणी होते, नाव० । सुनी बीजे जन व बांके, नाव० ॥२९॥ देवी दांतनवी जावजिया, नाव०। कविषे क्षेत्रसमनी कविष्ये नायक ॥ वदा वपासा रमानरिया, नाव । सारा सुवर्षे स्तंकरिया, नाव । ॥ । सनावे छे वर्षे वाली, वाय॰ । सुची विकारित लोबाची, वाय॰ ॥ वांग्युं वांनव बन्दाचे, बाव । सुणी वाकी पर बन प्राचे, बाव ।। ।। मुख्य अर्थ मर्थापुर पासे, जाप॰ । जोह जनस बरण दुःच जासे, नाप॰ ॥ नामा अवियासी के वृत्ती, जायक। शुक्रवंतु दीववान केवी, वाधक॥३०॥ तेपर शिक्षि विद्व निवासी, माध्या जमने माने निम हपाडी. 

१ करा. १ केवल होडवो केवले अन्तः

नाथ । विद्व चिंतवी सुम्ब हैये, नाथ । ॥१॥ तस्तु वरस्तुं से तेय, नाथ-। वाचे विनोके भनेतृ, भाष-॥ संदर वाक खेन द्वास, नाय-। रेकी थाप दरजकाम, नाथ० ॥४०॥ विका संदर के सारी, नाय०। बन्दविकायर बन्धीहारी, बायर ॥ एवी चूर्ति विशीत बारी, बायर। ते रं अंगरे प्रवासी, नाय० ॥४१। को ने बचकित्वा वारीर, नाय०। चिन्ने चिन्नी वर्ष पीर, जाय- ॥ पुष्ट अंगोर्थम सुंदर, जाय- । मूर्ति वरमासी मनवर, नाथ० ॥४२॥ सूर्ति वर्षु से वनव्याम, नाव० । वर्गन सामाचे सुभवाम, नाव ।। अक्तराजनी मूर्ति त्यारी, नाव ।। करचरणादिक वर वारी, नाव-॥४३॥ जगोजने जवलोबी, जाव-। जाने जानंद अलोकी, नाथ- । बन्दशिन्ता सुन्दनी साजी, नाथ-। जी मे जाय नहि बन्ताची, माय॰ ॥४४॥ एवी कृति सनरंजन, माय॰ । चिने चिनद्वां निवादिन, भावन॥ सथस बोडी जाने स्थारे, बावन। ओड़ जन मगन मन लारे, भाष- ॥४५॥ दिये द्रवान दीनव्यास, वाथ॰। विश्वनकता प्रतियाय, भाव॰॥ वडी देवकिया करी सावे, नाय॰ । हाथ क्षिकाये पटीयारे, शाय॰ ३४%। बोसी रुक्की जां-गक्षियो, नाय । योह शुद्ध करे सचिवयो, जाय ।। वर्णी दानम करता इयाम, जायक। तुष्य पोई स्रो'ता सुक्रवाम, आयक ॥४आ वन करावनां वची, नायक। तत्र लेनां दश जांगधी, शायक॥ अंगे अकार बोसंस, बावन। तेल सुगंधी कुलेस, बायन ॥४८॥ वळी बान ला करे कीरे, बावन । लु'तां लामे पर वार्शरे, बावन ॥ बीलुं वे'रे को वं पर, माथक। यहनां चार्कहिये चट, माथक ॥४९॥ कोही पर्छ-थी पायन, नाथ॰ । आप्या जमदाने जीवन, नाथ॰ ॥ वेठा पायने अविमात्रा, माथक। इसी नियद्वलानंद बास, माथक। (५०॥ इसी धीवरिश्वशिक्षणे वधमध्यसभावशिः ॥१।

रोहा—भोजन बहु रसे भयाँ, जुगने करियां जेह । आण्यां थो-की उपरे, तरजां जमना लेह ॥१॥ याक बहु प्रकारमा, विभविषमां भ्यंजन । पूर्या करोरा प्रेमधूर्ं, जुगने जम जीवन ॥१॥ योगा हुर-वरी—मोदक मगदस ने भोतिया, जमनां जोयां । साम्बनसाह । ने संवेया, जमनां ॥ तिजया बिक्या मांच नेजामा, जमनां । का-स किया मनमान्या, जमनां । ॥ वेंद्रा प्रथमां ने पुरी, जमनां । सुनर्केणी ने सामुद्री, असनां ।। प्राक्रत्यामा सेन संवाळी, जननां ।। पुरी कवोरी बपाळी, जमनां∙ ॥४॥ इन्हवो इरिसो रमाछो, जम-नां । तेवर गुंदरपाक बपाळो, जमनां ।। गगनगांठिया गुंदवडी, जमनां । गळासाटा गलपापडी, जमनां । 🎉 । जीते माथु माक-र बजा, जमनां । सुरकी सुरवी मेसुप बजा, अमनां ॥ मान-प्रदा साकरमना, जमनां । वरकी धीरंज एतवीदाना, जमनां ॥६॥ बाटी बाउररा घउंनी, जमनां । घणा घीमां बाळी उनी, अ-भनां ।। जाजां जीर खुरमा गोळा, जमनां । गुपपाक दहीयरा बो'स्टॉ, जमनां॰ ॥आ मान्यज मही दहीवडां, जमनां॰ । पुरम्ं लावसी वे दहां, जमतां ।। कंसार वामुदियो अली, जमतां । केरीरस कही रोटली, जमनां ।।८॥ पुत्रता ने प्रणयोजी, जमनां । रेवडी वकोडी बोळी, जमनां- ॥ गुनाब टोपरांना पास, जमनां-। जलेबी ने संदर साक, जमनां । । । जार बाजरी बाबट पोळी, जमनां । पीर्मा पर्वनी सर्वाळी, जमनां ॥ सठ जबना रोटला. जमनां । विचा चणाता वह घला, जमनां । १०॥ सुगंपी भान ने जिन्दरी, जमनां । कोदरी कांगवुं ने कडी, जमनां ॥ जार वाजरार्ध वान, अमनां । सामी वंदीनुं निदान, जमनां ॥११॥ रोटली ने गळवाणुं, जमनां । अवलपाद वांचळवाणुं, जमनां ।। रानां बरवां वे रोटला, जबनां॰ । यग बलावा पुरला, जबनां॰ ॥१२॥ जरद वन चनाती हाळ, जमतां । नुवर मेसुरती हपाय, जमनां ।। बात मह ने बटाणा, जमनां । कानु कळथी चोळा दाणा, जपनां ॥१३॥ वृंनाक बालोख बळी, जपनां । सारां स्-रण घीमां तळी, जमनां ॥ मारां वाकरियानां वाक, जमनां । बचार्या हाथेश्चे बूंनाक, जमनांश ॥१४॥ वर्षा रनार्नु पनार्ट्, जमः नां । परवर पापडी दणाई, जमनां ॥ केरां कारेलां कंकोडां. जमनां । कोळां भीकण ने सीमहां, जमनां भारता गलकां गया-र ने घीसोडां, जमनां॰ । साक सामरियानां करां, जमनां॰॥ भी हाफकी बजी दोहां, जमनां । चोळाफळी ने चीचोहां, जम-लांक ॥१९॥ महं कृषियां ने टींडोर्स, अमलांक। कानु करेल ने कोर्स, जमनां ।। भरत भयां घणा घीनां, जमनां । वहां राइनां राई-

नां, जयनां • ॥१आ कोमळ दुवी ने कोचनां, जमनां • । शाद एक एकपी मला, जमनां ॥ ताओं तरकुष वंद्रोबों, जयतां । साम सा-रां सुंदर वो का, जमलां ॥१८॥ रसे अर्था वटा कहिये, जमलां । सीमा शासनणी व लहिये, जमनां ।। अर्था इक्षदर इवेजे, जम-तां। वस्ती वह ससासे बीजे, जबतां। ॥१९॥ शंका तांद्वियानी भाजी, जमर्ता । सारा शुवा तलवणी ताजी, जमता । मेची मोरचनी चन सारी, जमनां । भींदा बोबीनी बनारी, अ-वर्ता । १२०॥ भूका करलीवी एक करी, जमलां । वसी वीर्डु मे मोगरी, जमतां ।। लुकी चील वे चलेची, जमतां । जमे चोले आने वें'ची, जमतां• ॥२१॥ बाजी ताजी राष्ट्र सारी, जमतां•। वर्ज पी जीरे वधारी, जमनां । अजमो नोई पक्रवेलां, जमनां । भजियां अळवीतां करेलां, जमतां ।।१२॥ क्षेत्रां वृंताक ने सार्, जमनां । भजियां रताळ्यां सार्, अमतां ।) नयां हवेजे भजि-यां, जसनां । कंड कचा ने कंड रखां, जसनां ॥२३॥ काकवा ने वर्षा वटी, जमतां । कसी गांठिया कृतवटी, क्रमतां ॥ वापड जरद ने मगना, जमनां । भीना होटनी सगना, जमना ॥९४॥ आर बाजराना सारा, अमर्ता । जमता पापव छाने व्यारा, जमनां ॥ भासून बढनां महिषां, जमनां । सागे करशांत्र जाय कवां, जमनां ॥२५॥ चना वातना कीलवा, जमनां । पर करकरा पुंचा, जमनां ॥ वसी व्यवन जो अवाणां, जमतां । पर्या बाटकामां वर्षा, जमतां , ॥१६॥ केरी रायती बपाळी, जमतां॰ । बीजी बोबेड रसाखी, जमतां॰॥ विंद विवित्तां बनाव्यां, जनतां । शिक्षी इसदीनां धन आव्यां, जमतां । १२ आ केरां करपटां कर्मदां, जमतां । युमर वांसनां राष्ट् जादां, जमनां ।। आरियां भामकां ने जारू, जमनां । सरां सारे-कतां लाषु, जमतां ॥२८॥ भरकां गुंदां ने संतरां, जमता । का-ज पूज केंद्र केरा, जमनां ॥ शृंताच बतातूनां बळी, जमनां । बाबल गुवारनी कली, जमनां ॥२९॥ कोटीबानी ज कावलियो, अमनां । बीजी इकदि तेले भरियो, जमता । श्रींबु रस बचा वांनी, जमनां । संदर सारी आगे राजी, जमनां ॥३०॥ आंदू-ماسك والمساورات المشاور والمساور والمساور والمساورة والماسان والمساورة والماسان والمساورة والمساورة والماسان والماسان

वार्था के संबार्था, जनती । बोदयां सरसिपायां पर्या, जनता ।। मुख सर्गवामां सादे, क्रमता । उत्तम जवामां एआहे, जमता ॥३१॥ केपी सर्विंग ने भरियां, जमनां- । लिंडु लारेकमां अरियां, जमनां ॥ बीर्ड इकदर ने पाना, जमनां । मेकां आधेन जपा-लां, समयो॰ ॥६२॥ आष्टवां अहत ने करेगां, जननां॰। बनी चर-वी बेरमदेशी, जमनां ॥ एवा अवाणां जने हे, जमनां । विषयि-थर्था विवेद, जनमां ।।३३॥ कुरकरमनदो दरियां, जनमां । त-समांकवी जाजरियां, जमनां ।। यून १प दहीती नर, जमनां । मोल जान ने साकर, अमनां- ॥१४॥ साकर राज साकर वाणी, अवनां । वर्गाव्य थी तीव्यं वन्यापी, जवनां । सीदुरस वरियां वारि, अवनां । सांठा संरवियो वन सारी, जननां ॥१५॥ वना दर्शन दरवा दास, जमनां । आच्या महातुच शुलवास, जम-मां । बाच्या वर्षित सोपारी, जमना । जायक एकवी सारी, जमनां- ॥१६॥ काथो चूनो नाकां पान, जमनां- । बीबी समानी समान, अपनां ।। सुना सुंख्य ने संचय, अमनां । भरी अजमो जे जबत, जमनां+ ॥६ ॥ बुंद भादू ने बरियाजी, जमनां+ । तज आवंत्री तमासी, अमनां ।। आप्या सुलंधी सुल्दवास, जवनां । वास्या नंबोळ ते शास, जमनां ॥६८॥ वर्षी जाल्यां संदर कळ. जननां । अनि कारू ने निर्मता, जननां ॥ लाबी दासे पासे व रियां, जमनां । दशं दपाक्षां रमभरियां, अवनां ॥६९॥ आंद्र निंदु वादी देती, जमतां । सारां केळां जे सोनेती, जमतां ॥ देनी हारम नेराणे, जमनां॰ । लागू सीनाकत बन्धाणे, जननां॰ ॥४०॥ जामकल जीवा जेवां, जनतां॰ । शावकल वन एवां, जम-तां ॥ राज्यो सहियां ने बोर, जनवां । सारा करे वर्मकीशोर. असर्गाः ॥४१॥ विलं केन् नरमार्थः असर्गः । बीलां नारंगी द्यान्तः अमर्ताः ॥ बोडां अजीर अनुप, जमनाः । व्यारेक व्यक्तः रस-कर, जयनां । ॥४२॥ टोपरां ने का मुक्किया, जमनां । हास नीनवा जे गळिया, जनतां ॥ कहां बदाय सिंगोहरे, जनतां । यस पा-रोळी के दर्श, जमनांव ॥४३। कमसानाव्य कुंबर जोई, जमनांव। गुलाद गुलसुवा कुक सोई, जमनां ॥ मृंगीविदनदर्जा पात्र, जम- लांक। क्रेडीसच को बी निदास, समर्गाक ॥ अपनी वी वर्ष से चोका, समर्गाक। हाई मोगरी से स्वा, समर्गाक ॥ मेरी च्छानी वांडिकियों, समर्गाक। इंकि नमें बाहुं चित्रयों, समर्गाक ॥ पूर्व नाहुं, समर्गाक। स्वी वांडिकिया से समर्गा, समर्गाक। चालि बाजरी लड़ करा, समर्गाक। प्रदेश सम करा, समर्गाक। प्रदेश समर्गाक। वांडिक से से समर्गाक। प्रदेश समर्गाक। वांडिक से से सिम, समर्गाक। प्रदेश समर्गाक। वांडिक से सिम, समर्गाक। प्रदेश समर्गाक। वांडिक से सिम, समर्गाक। प्रदेश समर्गाक। प्रदेश सामर्गाक। वांडिक से सिम, समर्गाक। प्रदेश समर्गाक। प्रदेश समर्गाक। प्रदेश सामर्गाक। प्रदेश सामर्गाक। प्रदेश समर्गाक। प्रदेश सामर्गाक। प्रदेश सोमिन सामर्गाक। प्रदेश सामर्गाक। प्रदेश सोमिन सामर्गाक। प्रदेश सामर्गाक। सामर्गाक। प्रदेश सामर्गाक। सामर्

रोश—कर चनर चाळी चाळमां, जासळी करोरा जांस (वनवाडां पविषा बारका, जन्या कनक ठामे अविनादा ॥१॥ अवनोरा क-होरा कमस्तिया, कठारी भारी तुंच कमंत्रक । चतु करी चतुराहर्डा, पीयां निरमक जब ॥१॥ योगत तुपची-दान सुवारी वंडा वारे. नुपर जामपा है। जामपा जन पूत्रवा मारे, मुपर ।। परवे के इन बिक्रियागरे, मूपर । इंक्रम कल्दी केमरे, भूपर ।।।।। मारी शुक्रक धारीरे, भूपर । अने करकी पीरे बीरे, मूपर ॥ बचा कु-कुमना जांदला, भूपर । शोभे भोना भोना भला, जूपर ॥४॥ हैये सलादे वे हाथे, भूपा॰ । कर्या निनद चंद्रसाये, भूपर॰ ॥ अमे अंबर दिना दे'ता, भूपर- । दिगंबर दर्शन देना, भूपर- ॥'-॥ पन-कम बन्यांबर संबरे, जुनान । सुगाजित शरांबरे, जुनरू ॥ वती करेपीन करवेडे, भूपर । राज्यी अनकी लारकेडे, मुधर । । ।। गी-दशी कादर कोफाळे, पूपर । दिशा दरकार इपाले, सूपर ॥ संसु पोली पोली के'री, मूपरका गुरेरर केरे में री, भूपरकाला सुरवाला के हाबधी जाथे, सूपर । जोड़ अंगरणी दुःण बांब, सुबर । वे'री r potenties tentralisations of the surface of the surface of the surface tentralisation tentralisation of a section i In

कांगी क्षते वा'ले, जूपरक। कवी कथर दूमाले, जूपरक ॥८॥ इस-ली मोनेरी बपेरी, मुपर । बीबम्बापनी जो वे'री, मुपर ।। बननी जरीती देरेल, भूपर । योरकसूती वांधल, भूपर ।। १॥ पर वांचरी चक्रमे, जूपर । साम दूलाने दुःच क्रमे, जूपर ॥ वोरी चोकाळ दमाने, जुनर । दे'याँ रानो रेटो वाले, जुनर ।।१०॥ इमनी गरम कोसनी वे'रिये, ज्वर॰ । वाच कलंबी सोनरिये, गुयर॰ ॥ वना अ-करमा रसकते, जुनर् । योकानी वावविचे वसमने, भूपर् ॥११॥ मुगर कुंच्या मोलिये, भूपर । कसूंची किंदे कंकोलीये, मूपर ॥ वाच हुगनी बरेडीये, जूबर । सुरती काडीजी सोरडीये, जूबर ॥१९॥ टोपी कवळ केवळा कुलती, श्वरः । गुजा अरियान शहासू-सनी, जूनर् ॥ मोरा नजरा चाहुए, जूनर् । बंदन कुन ने सा-लुए, जूबर । ११३॥ शुंजा स्तांत्रकी दारे, जूबर । अर्थ आवक्तमा लगरे, ज्यर ।। गुनाय गुनदायही वाने, ज्यर । यंग वंगेनी विज्ञाने, जूबर । १४॥ गुक्सुमना नोटा बजारी, जूबर । देंदी कुलपकेटी बारी, भूपर० ॥ दीरा भोनी समि लाखे, भूपर० । पना पीरोजा बचाले, ज्यर ।।१०॥ कृत कपूर ने हारे, ज्यर । बाह्य नोरा पविचा सारे, जुनर ।। सोना पाच सोना सरपरियां, जुनर ।। कोमां वर्ग को नेरी चरियां, भूपर ॥१६॥ तोरा किरपेण कोनाने. जुपर । सोन्यां कुण सोनानां काने, जुपर ।। मोना दोरो मोना शांककिये, जूबर । स्रोमामाका स्रोमा माद्यीये, जूबर । १ ॥। दार चंडी पण कमकने, जुपर । विनदारी ए बानकने, जुपर ।। हीरा सांकळी मुपलुं, भूपर । कोचे कावे कुंदळ वर्णुं, भूपर » ॥१८॥ सोमा बाजु स्थाना करे, पूचरका बीबी बेह बीटी बंग जस्ते, भूपर ॥ करण करण अगडी, भूपर । मुतिका मोनानी दीटी, भूपर ॥१९॥ कटीमेजना ने नोणां, भूपर । जोचे सोनानी ने क्षां, मूचर ।। दे'री बवानी चान्दहिये, मूचर । एवा दीताचे आ व्यक्ति, भूकर । १५०॥ बमके युंगरियो व्यक्ति, भूपर । वदनां व-गथिये बहाचे, मृपर्॰ ॥ वं ती कमक्कृतवासी, मृपर० । बमदे वं-वाबी दवाबी, ब्वर्॰ धरेश साग सीसमनी वज सारी, ज्वर॰। वरचे वाकवियो वमकारी, भूवर ।। किकोरी सुनर वेवाने, भूवर ।।

Intellated at a table to the page 19

बोजडी ओम्बाई अभवाने, मुबर । १६०॥ बाट्य बाट्य ने बहते, क् बर । वेटा रोलिये दशरे, मुक्त ॥ प्रवस्त्रका ब्याटले, मुधर । खुरकी बाजोड बाटबे, जुबर- ॥१३॥ सांशामांबी सिंदासने, व-बर । मानी कार से आसने, जुपर । मेरे मचे बीन हीं होते. मुपर । गोम वा'न वंदी देवाने, भूपर । १४॥ क्या वर मेदी ह-देती, मुपर । देटा बंगले बांका मेती, मुपर । महिए मंबन हति-बादेरे, भूकर । तंतु रावटीए बहुवेरे, भूकर ॥१५॥ भ्रदारी आगर-शी आजिये, भूपरः । वेटा मोदवजी माजिये, मूचरः ॥ मोटे मो-सरी पत्रमासं, भूपर । दीर्घा लां ब्राकान दयाखे, जुपर ॥२६॥ वेडा जोच जली जानरे, जुबरका ग्रांटी भृति कृतारा करे, जुबरका बारी भागकि बादरीये, जुपरका दरशम सामग्रीपर सरिये, जुपरका ॥१७॥ मोदबी गोदवां गावलां, भूपर । लां द्रवान वपांछे भनां न्यर ।। साथ वा'व ने वावाले, मूचर । वेठा नृश्चित्र सम आले. भूबर- ॥१८॥ गावी दे त रथ चानलीये, भूबर- । सूर्ति सेने वेडी समीये, मुचर ।। गार्च चारट शुक्रवाले, ब्यर । सुबे जन वा'ता-वे वा'त, जुपर ।। १०।। करी करनिए वह वाले, जुपर । सोनेरी समानि समाजे, मूपर ॥ वेटा निज सेवकने असे, सूबर । क्षेत्र हाका वेश इसे, कुपर ।। १०॥ एक समामां शुनि ससी, मुक-रः । जाय्या कृता बरवा वळी, जुपरः ॥ वक्त वरेणां वे'रावी, मु-वरः । वरवयां वंदव संदर सावी, ज्वरः ॥११॥ पूप दीप पुरुष्।-रे, भूपर । इ.री पूजा बहु बकारे, मूपर ।। पत्नी बनारी आरमी, जुपर् । करी पुरुष श्नृति अति, पुपर ।। ।।। वर्षी वज् पर्या वसम, मृपर । सक्या निजाननं जीवन, मृपर ॥ भाष्यां भाषा वे चंदने, मूपर । लीपां पर ववे निजानने, मूपर । ॥३३॥ छापी नि-अजनती एम छाती, क्षर । वही बेसारी बंगती, भूपर ।। बेठा वंगते मुनिराज, मुधर०। आव्या वीरमचा सहाराज, मुघर० ॥३४॥ वीरसे वंगनमां हरि वोते, भूपर । जन तुम व वाय जोते, भूपर »॥ लादु अलेबी लहने, मुफरका जाय औराओर इहने, मुपरक ॥३५॥ वह पीरमे वेमे करी, कुपर । करे वंगनमां क(किरी, जूपर ।। तेहलेह मोजनना नाम, भूपरः । आने यने हेने यनद्वाम, मूचरः

। १६॥ श्रीपा सटके सादु दाय, भूपर॰ । निजानन जमादे नाथ, भू बर ।। मासुम्य मुख्यां बोय्क बारे, भूपर । वटी प्रमक्त परके कारे, भूपर ।।१अ। देना एडी हुन होवटे, भूपर । आपे लांब साकर कर मोटे, मूचर॰ ॥ वे'री बड़ेडी लेमजी, मूपर॰।कोमा की कर्डु बेबजी, जूबर॰ ॥१८॥ जाने बनावस्ता जटके, मुघर०। वे'री हुइकी वादी सटके, ज्वर ।। करे कांतमां वह केरा, जुवर । वी-रसे पाक बोले वजेता, मुक्टर ॥३९॥ एम जारे जब जमादे, मुक-रू । वीरसी वीरसी कार चमाते, भूपर ।। एम जमान्या जन च्या-रे, भूबर । कर क्य बोबा ने कारे, मुबरक ॥४०॥ वधी उनारे बवा-या, जूपर । निजजन वन मोद बनार्या, जूपर ॥ ता बोडीयो डा-केले, जुबर । तेवर वाधरणां वाबरेले, जुबर ॥४१॥ सुंदर नादवां नोव्हे, ज्वर । कोकाव कोसिमां दहे, भूवर ॥ मेल्यां नासक सुरियां गाले, मूबर । यांचे यरण निजातन वा'ले, जूबर । ॥४९॥ क्रीन जनुमाहि सारी, भूपर । तारे सुख्यां सुख्यारी, पूपर ॥ वकमो चौकास रजार, मूचर० । ओसी पडेरी ने जार, जूचर० ॥४३॥ वच्या कानुमां अविनःश्वी, ग्वरः । इतिस्य अस वीतां सु-कराद्यी, ग्वरं ॥ वंका करतां सेवक वासे, ग्वरः । सीतक चंदव बरचर्या हासे, भूबर० ॥४४॥ चोमासामां चरी चानदीये, पूबर०। हंदर सारी कर जाबदीये, जूपर ।। जोदी कामश्री सुवासी, क् बर । बारी कारी दवाकी, भूपर गापना आवी वेटा लजामांच, भूबर । जन सर्वे साम्या वाय, मूचर ।। त्यां वरियंत्र वावरणे, मूचर । वेटा रक्षियो शाजीयणं, मूचर ॥४६॥ नेपर लोगाय सो-हंगी, भूपर । वेडा नक्षिपाने ओडंगी, मूपर ।। निरमी अन मन बगन वर्षा, मूपर॰ । सुंदर बार वे राज्या निर्धा, भूपर॰ ॥४०॥ की लागी यही दाने, मूचर । बूक्या प्रश्न प्रमु वासे, भूपर ॥ तेनी बचार करना आवे, भूपर । कर लडका करी दृश्य कारे, कु पर ॥४८॥ दवा प्रश्नने सो बळी, मूपर । प्रथा जनने मसदा क क्षी, भूपर ।। सक्रमा लागीन वह जानी, भूपर । वडी वापी वर-के जानी, भूपर । ॥४९॥ वडी सन्संती सुमसीमा, पूपर । डीपां तेणे वरण जातीमां, भूपर० ॥ एथां बलोकिक सुख देतां, भूपर०। 

भानंद निरकुलानम् लेखां, सूपर्य ।,५०॥ पति सीएरिस्तिकारे हतीय-वितासनिः ॥३॥

रोश-प्रधी बार्जा नह विधविषता, कर्यु सबैये तात । ते भेका मळी हरि, को वे दुगटि नान ॥१॥ संन सह हमा वह, रच्यो सनी-दर राम । करे करे कीरमनने, ने अंद्धा करे अविनादा ॥१॥ बोदा हुवन्त-दीनो दीनी ने अजनाने, हम बीठाने। हांदी कानसे द्रशक्ते, हरो॰ ॥ झार मेनाव प्रमाम, हरो॰। वाक्ति सुरजने वकाक्ते, रमे ।। अपनी अग्नि अपोरीचे, रमे । जमनी देव वर्षु गोरीचे, रमें ।। इसदी राज्य प्रदुशक तेले, हमें । एवं विना प्रजाने बीले, हरो॰ ॥४॥ वसंते वला देशी वसंति, हरो॰। व्यान्धे केन करना सति, ह हरो॰ ॥ अधिर गुनाक नामना, हरो॰ । ब्रोधा व जाये के जाय-ता, इमे । । भा कर एक गुलान भोटा, इमे । बाले निजास कर ओई सोटा, इरो॰ ॥ वळी विचकारी जान्यता, इरो॰। करना लेख रह मन गमना, इते । ।६॥ रंग नांसकी नांचवीये, इते । धनो भरी मागरकीये, इसे ।। रंगश्रीको रसना रंगे, इसे । योगाना समा संगे, इमे॰ IIII सर्वे सन्ता रमयस करनां, श्रो॰। इह तासी कृत्य को घरला, इमे॰ ॥ रमना शमका बन्ध जंगना, इमे॰। धर्म सरवे राना रंगमा, रुगे॰ ॥८॥ कर चरण सुन्ध रंगमे, रुगे॰। यो से आकियो तेज भरेते, इते» li रमनां कृति मनशी साथे, इते» i मा'वा जानां संत संगाध, इते। । १॥ वका वर्ण मुन्दे हरि योहे, इते। । सर्वे शला चारपा जोते, रगे॰ ॥ माथा निर्मक जनमां जई, रगे॰। लां बरी सीक्षा केई, इमे॰ ॥१०॥ वांनां वांनां सन्तर साथे, इमे॰। यह बीर प्रणाले हाथे, इंगे॰ ॥ पछे बाती जिल्लामा कि हते । वे'र्या कोरो बन्त त्यारे, इते । ११॥ कर्षी कुंकुमनी चांत्रको, इते । वह को लेखे से अलो, हमें । मादी काच आव्या कतारे, रमें । कर्या हाम दरवान त्यारे, हगे। ॥१२॥ ना'ला नदी नद तलावे, हगे।। कंड क्या सागर वार्व, रूगे ।। अभैगा उत्सव कार्ता, रूगे । से-कामांदि योड फरना, इते । ११३॥ महायह अनियह माहि, इते । करी चाराकी क्या गांवि, इसे । ब्रह्मभोजन कराव्यां आहे. इसे । लट मामसूची एक बारे, इमें ।।१ ता कर्यों बूंदानों लां विका, इमें ।

चर्यो कुलेकामां एका, इगेन्।। वरी कुल अलीकिक असि, इनेन्। करी काकथी वसी वेदिन, इनेक ॥१५॥ क्षेत्र सर्वेग कमान लीहे, हरोक । बांच्यो करार महाबादे, हरेक ॥ क्य कवात करारीय, हरेक । क्य पायर अवदागरीये, इते ।।१६॥ बळी पालता हरि बारे, हमे । सरिना सागर वे घाटे, हमे । इस्ते क्यर स्ते विवरमाँ, हमे । वसी राज दिवसे करतां, इते ॥१ आ ताद नदकामां संघ सावे. हमें। जाने संच बरमना वाचे, हमें। मांचा आंचनी कांचरे, हरो । आसोपालय पीपर यहे. हरो । ॥१८॥ पीएस यहान बोरसर-बीये, हमें । बीजां वह तब बारहीये, हमें । । बाबार मदिर करवा काले, इमे॰। सीधी माथे इंका नहाराजे, इमे॰ ॥१९॥ कथा केल क्षिका मार्च, हो। यह बादे सच्चा साथे, हरे। एक इरिये-दिर कराबी, इने । मांबी मूर्नियो पपराबी, इने अपन्ध वजी इ-रिमंदिरने फरनां, रगे । सांसो प्रदक्षिणा फरनां, रगे ।। जोनां वर्ति संदर सारी, रगे । वान वावान वर व्यारी, रगे । १९१॥ तेने इंडचन को करता, इनेका बची सामुं जाह पह दे'ता, इनेका समला बलादी वह बीन, इगे-। नुक्रमीनुक निर्मन मधीने, इगे-॥६६॥ बीलां कृष पहली दोतो, इते । वीर्ध यून आही करोतो, इते ।॥ बसी बरसब समैपामांहि, इने । आव्या हाम हजारो खाहि, इने ॥१३॥ करे दर्शन पूजा दाम, रगे- । तेनुं प्रदण करे अविनाता, इने ।। पूजी स्पर्धी ला'नो लीपो, इने । ने के अन्य सक्त करी लीपी, इसेक ११९४॥ ओह मान समापि या, इसेक। पट्या पाण मानी विना केंद्र, इसे ।। भावें समाधिधी वा'रे, इसे । वन असे वेब क्यारे, रगे॰ ॥१५॥ वसी वेले बाहरपाम, रगे॰। निये गोसो-कर्तु माम, हने ।। श्वेनद्वीय वेहर देखे, हने । प्रवादर कैलास येथे, रमें ।।१६॥ वजी विकासाना वासी, रगे । देखेर जन से सुक-राष्ट्री, रगे॰ ॥ जगावे समाधिमांनी ज्यारे, रगे॰। करे बान बाम-बी खारे, रगेन प्रत्ना ने सांबबी सुन्याम, रगेन। इसे मंदमंद पनव्याध, रमे॰ ॥ मुमुशुन साथु करता, रमें । नंद्रवद्वी नाम बरला, इमे- ॥१८॥ कह देवा बढेवा करण्यो, इमे- । स्वाधिनारा-वच वधरण्यो, इते- ॥ कथा बीरमन जे का वे, इते-। श्रंणे परंदरे

करी भावे, १मे॰ ॥१९॥ काव्य कविती स्राधिकार्या, १मे॰। बासा तुष्यसीनी केरवर्गा, रगे॰ ॥ सुष्यक सुष्यती वण सारी, रगे॰ । कुत-नासापर बनदारी, रुगे० ॥३०॥ बाहेर पुर नाम बोबे, रुगे०। कून-वाबी बादी मेमे, रमे- ॥ लेख बळामां महाराज, रमे- । तेनां काम कराका काल, रुगे॰ ॥३१॥ शता हर्षक ने सुबने, रुगे॰ । बरेड शाह-बार सहने, रुगे॰ ॥ लोक परेनने घरे, रुगे॰ । ब्रह्ममामा यह के रे. इमे॰ ॥) भा कोय रोगी जानी, इमें॰ । आय चेने नियां नानी, हमें । भाषा निवर मेजी लेलां, हमें । दिवे सुन्य थाय जे देतां, रि रगे॰ ॥३३॥ मुख्यो व्यामी होय कोह शाजी, रगे॰। आपे अन जन दुन्तियो जाणी, रगे॰ ॥ दीन रपर बचा चनी, रगे॰ । जेनो कोप न होय वर्गी, इमे॰ ११३४॥ बळी मोटाना मो'वनी, इमे॰ । जन सारामा सोवती, इतेन ॥ आलां विचा' बरामांडी, इतेन । जह जा-ने कोले लांबी, इसे ।। इसे। केले जेर क्या के बात, इसे । कर्य वह तेणे सनमान, रगे॰ ॥ वसी में मान राजनां, रगे॰। नेनी जनकार सांन्यना, रगे० ॥१६॥ सांदाने जोवा आगा, रगे० । वळी करना ने बारना, इते ।। सबस निर्वस ने संनावे, इते । तेनी जबी म काफे जापे, इमे- ॥३ आ दुःची मरीचनी समर लेबी, इमे- । हरिजी सहज प्रकृति एपी, एगे॰ ॥ केने प्रसादी आपना, एगे॰। इंडोन वह रूप्त कापना, रगे॰ ॥३८। केने फूनहार दिये बन्त, हते । योशी घरेणां ने बाना, हते ॥ केन गापी महीवी दरेगा, हरों । कोरी क्या न जाप कथा, हरों । ॥३३॥ अमारे माधूने सुन्य-कारी, एवं । असे व्यंकपयोगी संसारी, इमे । प्राचान प्रवासारी जेलचारी, इंगे॰ । जमाच्यो रांच यह नरनारी, इंगे॰ ॥४०॥ यहने बना क्षेत्रा दीचा, रगे०। वह पुर्श्विया सुव्या क्षेत्रा, रगे०॥ आर बारक शक्ति लेगां, इग्रे॰ ॥ रावन रामनियां जनभंगां, इग्रे॰ ॥४१॥ नेने बन्द्र परेणां पोड़ां, हरेन्। आप्यां पना नहि कांप धोडां, हते ।। बारव केंद्र क्या नवाये, हते । नेती प्रमु योने गळाचे, हते -।।४२॥ वर्ष सदावन वंपान्यां, रुगेन । जाय्यां अनावरे अस भाष्यां, रगे ।। ज्ञान वैतारय ने पर्म, रगे । के ना अकितो बळी वर्ध, हते। १४३॥ वंच विचय पराजय करी, हते। जीवने भाजावतां हरि, 

हमें। । केवेच के वुं चट ते के तां, हमें। । कोपनं सांभली पण हेतां, हमें। ॥४४॥ इसतां रमनां ना तां लातां, हमें। । घोडां सेनदी फुरदी फरनां, हमें। ॥ वीरा चनाचळा पम परनां, हमें। । बली फर्डां सरकां करतां, हमें। ॥४५॥ जानां चलतां नातां के तां, हमें। । तीर सीर अधीरस पीतां, हमें। ॥ अध्यय करतां मृत्य प्रदेशां, हमें। । उदासी रहे हा। जायतां, हमें। ॥४६॥ प्रकाण करी वर्ष पापतां, हमें। । करतां निज्ञजनके निमरतां, हमें। ॥ मिरि गहर बन पपत्रने, हमें। । जोपा देश धरेशो जीवनने, हमें। ॥ श्री तापसंगे केशा विश्वे, हमें। । एम जीव बहु पपदेशो, हमें। ॥ ता-साबे श्री पाणस्माति, हमें। । आंक्य सरकुं पण न मरती, हमें। ॥४८॥ प्राणस्म करतां योग विश्वानां, हमें। । योगक्छा देलावी देतां, हमें। ॥ एथी अवेच दही शिने, हमें। | जिनवुंसुं मूर्ति विले, हमें। ॥४९॥ सुनां वेडां ने जामनां, हमें। । जाय हन एम चितवतां, हमें। ॥६०॥ इति बीहिसल्डियने पर्वाकिता। । ।

रोहा-एक बच्चविच्या मूर्ति बाधनी, समरतां सुच वाप। अहो-निधा वरमां कारतां, करवुं रहे न कांच ॥१॥ चरित्र मर्व चित्रवी, भूरति पारे मन। काळ माया कर्मनुं, व्यापे निर्मत ॥२॥ चोतार मुक्तरी—मूर्ति तमारी सुन्वकारी, जीवन अन्तुंहं। छो अव-नारमा जननारी, जीवन+ ॥ महासमर्थ छो घटाराज, जीवन+। वसी अरचे राजाधिराज, जीवन ॥३॥ पुरुषोच्नय पुरुषत्रवा, जीवन । नमने मेनि कहे निगम, शीवन ।। वास्तुत्व इवात् स्वभाव, शी-वन । सहायुक्त सहानुभाव, श्रीवन ॥ सा नारायण निर्विकारी. जीवन • । सद्दापरप्रमंगळकारी, जीवन • ॥ अक्तवप्रधारी अगवान, जीवन । आपमे अधिनने अभयदान, जीवन ॥१॥ सधिदानंद दिच्यमुर्ति, जीवनः। लेगे अति आगम कां अति, जीवनः॥ को बरम कम्याणकारी, जीदनका एकी नीकाम मूर्ति स्थारी, जी-वन ॥६॥ तमे कोटि वक्यांवाधीका, जीवन । वजी सर्वतणा छो [का, जीवन ।। धर्मध्रं घर घरव धरव, जीवन । भक्तिधर्मना नदन, नै जीवन• II आ अल्हेक्सिक सूर्ति आचे, जीवन• I जोए जनसमस्य المرابعة المالمية من من في في المرابعة منابعة من المنابعة المنابعة المنابعة منابعة منابعة المنابعة المنابعة الم ولي ر مرحور و براز روز و از از مراحه المراجع ا

दू:च कार, जीवन ।। तमे काळमायामा नियंता, जीवन । शुक्तरागर गुक्तदंता, जीवन+ ॥८॥ तमे भव शब्दाना वाधी, जीव-न । अकथ मूर्ति अंतरजामी, जीवन ।। प्रतिन्यापन अकारण-वारण, श्रीवत्रक । अभवत्रद्वारण जयवरण, श्रीवत्रक । १॥ नणवित-व्य मृर्ति मंगळरूप, अरेवन । आवे जोए सुन्य अनुप, जीवन ॥ आनद् पाद आनद फर, जीवन । आनंदमां भूग सरोहर, जी-वन० १११०॥ आनंद रूप अनुषय एपुं, जीवन० । सी जनने जोपा जेबु, जीवन ।। आवत् वामन मृत्रव अंगे, जीवन । आवंद आ-षोठी उठरंते, जीवन ॥११॥ कृपासियु छो पनइपाम, जीवन । कोष लोग विवारण काम, जीवन ॥ परमानमा पूरवहका, जी-वन । बीतकंड कहे निगम, जीवन ।।१२॥ जीव ईंग्स्ता हो छा-भी, जीवन । बळी सर्वे चामना चामी, धीवन ॥ शर असरची को पर, जीवन- । अक्षर ब्रह्म तमाद पर, जीवन- ॥१३॥ काळ भाषा तमारी शक्ति, जीवन । करो वह कारंज एवली, जीवन ॥ कोदि लगांवने करेके, जीवनक। बल्पक्ति स्पिति ने इरेके, जीवनक ॥१४॥ तेवा वियंता एर तथे, जीवन । सल लागी जाण्या लगे, शीधन• ॥ कारणना कारण कहीते, जीवन• । काळना नग काळ सदीये, जीवन ॥१५॥ जात्मामा जात्मा छोजि, जीवन । प्राज-मा पन भाग होति, जीवन ॥ तमे ईश्वरमा ईश्वर, जीवन । अंतरजाबी को अपहर, जीवन॰ ॥१६॥ सर्वेता को साक्षी सार. जीयन । सक्य फळना देनार, जीवन ॥ स्वयं क्योतिहर राजी, जीवन । मानागुणधीपर बीराजो, जीवन ॥१७॥ जिराकार नि-रंजन करें हैं, जीवनका से ह्यूं तमारी गति हुई है, जीवनका हो अन्वंद अविनाकी, जीवन• । मागारहित **णे सुव्वराकी, जीवन**• ॥१८॥ नमारी मूर्तिनुं परिमाण, जीवन । करी करे हां अजाज, जीवन ।। पर मुखे जो बच्चा आखे, जीवन । यांच मुखे शिव कही द:भ्य, जीवन ।।१९। सहस्य मुख्ये कहे थे।य, जीवन । यहा-वन गाय गणका, जीवन ॥ लाय कांचे न वासे पार, जीवन । एकी मुर्ति से अपार, जीवन ॥६०॥ सर्वे बामा पुराण मांचे, जी-भवन । गुण समारा भवाचे, जीवनन ॥ सर्व देव वंदन करेखे, जी-

भव । वेद श्तृति उचरेके, जीवन ॥२१॥ एवा समर्थ सहरा ला-सी, जीवन । सबू रहेडे शिक्षा नामी, जीवन ॥ तमारो अप शुक्रिने आरी, जीवन । तेले रहीके लोकने वारी, जीवन ।।१६.। लबारा अये समे तक करते, जीवन । कुल कर वन समने, जीव-व ॥ समारा अपधी बोच इसेवी, जीवन । चीद शोक सार्थां हे विको, जीवन ।। १३॥ तमारा जनपदी साधान, जीवन । वासव वरसावे वरसात, जीवन॰ ॥ तमारा मगधी सूर्य वाद्या, जीवन० । करे काळवाकि जड़ोनिशी, जीवन ॥२४॥ तमारा यथे ब्रकांडे कृत्यु, जीवन । रहेके सदा सर्वच करत्नुं, जीवन ॥ ब्रह्मा विरुष् बारदा विषय, जीवन । रहेके बरजीमां तलवेब, जीवन ॥२५॥ के एकएक ब्रह्मांद्राधीया, जीवन । तेपण ब्रमावेडे शिया, जीव-व ।। एवा कोजी एक निषंता, जीवन । मह रहेंग्रे नमपी हरेंगा, कीयन ।।१९॥ एवा मोटा को बहाराज, जीवन । ने समयाको सने जाज, जीवन ।। तेनो साथ करी हे द्या, जीवन । ते गुण केम करी जाय कथा, जीवन ॥१आ तमे मेरे मुजयर कीपी, जी-वयः। बजी बुदनां बांध्य प्रदी लीधी, जीववः ॥ जेते वर्षी नमे तुज, जीवन । बीजो करे एवं। कुंज, जीवन ॥२८॥ तमे विकद पाक्युं तमार्व, जीवन । जोयुं नदि कर्मस्य जमार, जीवन ॥ तमे गर्भवास बाल टाडपो, जीवन । एतो बादो आंकल बाडपो, कीयमः ॥२९॥ जनमनां जनन कीपी, जीवनः। मारी पहनामी बहुविधि, अीवनः॥ स्वान पान श्वर राष्ट्री, जीवनः। ह्यं हं देखार्थः कही दान्ती, जीवन॰ ॥३०॥ ब्याजसूपी पन अमारी, जीवन०। राष्परेणो लबर सारी, जीवन ॥ पळेपळे करो प्रतिपाळ, जीवन । एको बीजो कोच इपाळ, जीवन॰ ॥११॥ वळी जनकाळे आयोछो, जीवम•। रथ चंल विमान लागोछो, जीवन•॥ बळी धले पूट चटी पोडे, जीवनका आबोरते सचा लड् जोडे, जीवनका १२०) एम अन सबेलाजी आयो, जीवन । देव दासमणुं स्थानो, जीवन ॥ सेने नेपी जाओं हो साथ, जीवन । पंचारी रथ विभान माथे, जीवन ॥६६॥ लेले आपोली अक्षरपाम, जीवन । भावले जन त प्रणकाम, जीवन ।। वीजो एको कांच कृतालु, जीवन । तम विना दीता नहि है 

[ विशासनिः ५

द्याद्, जीवन ।। । । । सम्बद्धा दीननवा हो वंधू, जीवन । सुव्यकारी सुखना सिंध, जीवनः ॥ तस नाच जनाव जनना, जीवनः । तसे बहरवान हा मनना, जीवन ॥३५॥ तमे बीचारांना बाचार, जी-वन । समे पूर्व कना राजार, जीवन ॥ तथे अक्तना मध हरता, जीवन॰ । निज्ञतनने निर्मय करता, जीवन॰ ॥३६॥ तमे संग्रजनना सेदी, जीवन । कावो कह वहे जेदी, जीवन ॥ तमे दासनगां इ:व्य कापी, जीवन । कर्या मुक्तिया सुष्यत्र आपी, जीवन ॥३०॥ एका अन्य अन्य अन्यान, जीवन । दीयां आधितने अन्यवान, जीवन ।। तमे जकरणना हो शरूब, जीवन । दृःव राजी सुखना करण, जीवन॰ ॥३८॥ निजजनमा सुम्ब सार्थ, जीवन॰ । इयां बाववुं हे तमारं, श्रीवयः ॥ तमे जनम सुगम वर्ष, जीवतः । जावी अव वदार्या वर्ड, जीवन ।।३९॥ तमे बरतन वरियुं वाच, जीवन । भर्षे सामग्री हर भाष, जीवन ॥ दर्ष एकं स्पर्शेत् दान, जीवन । निर्मय जन कर्षा निद्यान, जीवन ।।४०॥ मूर्ति तथारी बदाराज, जी-बन्न । सरे महनां ओह काल, अविन्न ॥ दर्श स्पर्ध ने तमारी, जीवन । यहाँ मोडु सुन्य देवारो, जीवन ॥४१॥ यद्धं नमादं हे भों पुं. जीवन । तेती सहने चतुंचे सोंचुं, जीवन ॥ कियां असे कियां आए, जीवन । बीबी कुंजरनो मेळाव, जीवन ॥४२॥ सह-ना माथ तम नियंता, जीवनः । सर्वाधार सर्वना करता, जीवनः ॥ सर्व पर छो सर्वभार, जीवन । सहुना देखा परमेश्वर, जीवन ॥४३॥ क्यां तमे ने क्यां असे, जीवन । तेती क्या दरीसे तसे, जीवन ।। नवे अदल हबया हो आज, जीवन । महामे'र करी महा राज, जीवन । शक्षता देखी दुःख्यिया असि दास, जीवन । समे आच्याची अधिनाया, श्रीवन+ ॥ करवा अनेकनो उद्धार, श्रीवन+। सह जननी एषा मार, जीवन ॥४५॥ एवी नकमां हंपच आख्यो, जीवन । मारी पेती सफल काच्यो, जीवन ॥ मारा सरियां सर्वे काल, श्रीवनका तथी तथे सक्षय सहाराज, श्रीवनक स्टिशी शुःख वरियामाधी नार्यो, जीवन । वजी अध्यन उदार्था, जीवन ॥ मारा साचा हो सनेही, जीवन । जोह जोह जीय तेही, जीवन ॥४०॥ वरी वेजानी वाजीनी, जीवन । हो दाम दोगमा दिनी, المادية المادية

जीवन ॥ मारा मरण टाणानी मुंदी, जीवन । वळी सबसागरनी हुदी, जीवन ॥४८॥एइ भरोंसो छे मोटो, जीवन । तेनो केवी न वाप लोटो, जीवन ॥ वर्ष मदि विकद् समार्थ, जीवन । विद् यांका सनमां घरं, जीवन ॥ वर्ष मदि विकद समार्थ, जीवन । विद यांका सनमां घरं, जीवन ॥ धर्मा छे अवत मारे आजरो, जीवन । वर्ष मेलुं हुं इवे स्वारी, जीवन ॥ मृति तमारी भीरांच मारि, जीवन । वर्ष मेलुं हुं अळगी घटी, जीवन ॥ तेम निद् सुकाय समयकी, जीवन । वर्ष मेलुं हुं अळगी घटी, जीवन ॥ तेम निद् सुकाय समयकी, जीवन । वर्ष निष्टुलानद नकी, जीवन ॥ धरी। इसे बीदरिस्त्विकन प्रवस्तिमारित ॥ १॥।

रोश-एइ मरोमो मीनरे, अवज है वरमांव। शरनागननी इयामका, सदा करोणे सहाय ॥१॥ सुन्यना सागर श्रीवृति, सदा सर्वदा इयाम, निजजनना निधि माथजी, पुरुषोक्तम पुरुषकाम ॥२॥ कोवाह बुक्करी-सूर्ति तमारी सहाराज, सुलकारीजी। सी जननो सुन्व समाज, सुन्द०॥ साकार मृति सुन्ववंदार, सुन्द० । स्परकी बहु पाम्या अवपार, सुन्तक ॥३॥ प्रगट सूर्ति प्रनापे, सु-सक । सुरासुर वद्धयां जाये, सुन्तक ॥ अंजे प्रगट प्रसंग पान्यां, सुल । तेनों सर्वे संकट बाम्यां, सुल । ।४॥ तमधी सरियां सीनां काम, सुल्य । तमे सीना सुन्यविश्वाम, शुन्त ॥ स्वरकी वर्ग औ-गुठो हवी, सुन्तक। जन बहु तारण जाह्नवी, सुन्तक॥६॥ वळी पद-रज स्परकी शल्पा, सुन्छ । यई गोनम नवणी अहल्या, सुन्छ ॥ एको पत्रजनो प्रताप, सुन्तक। इक्को तरत तेनो संताप, सुन्दक ॥६॥ बळी रद स्परकामां काळी, सुन्तर । वयो निर्मय अवस्य टा-की, सुन्यक ॥ वृद्धावनना वेली बन, सुन्यक । वयां पर्रज्ञथी पायन, सुन्यक ॥आ उद्धव अक्रने मन व्यारी, सुन्यक । वधी पर्रज से त-मारी, सुन्त• ॥ यम यावन प्रीते जोई, मुन्त• । नुक्रभी रहीते त्यां मोई, मुम्बर ॥८॥ एवां वरण सदा सुन्वकारी, खुन्बर । घर ध्यान तेनुं त्रिपुरारि, सुमार ॥ शंप सुरेश अज शक्ति, सुमार । अर्क क्या जे नेजभी, सुन्दर ॥ भागत् वारत् महस्य अवस्त्री, सु-मा । तेषण वृद्धि पर्मना उपासी, सुम्म ।। एवा अवारणवारण च-रण, सुन्य । पारे इरिजन अंतः करण, मुन्य । १०॥ पूर्व जन मळी The state of the sales and the sales of the والمراول والمراول والمراول والمراول والمراولة

वळी प्रीते, सुन्तक। वर्ळी चिंतवेषे नित्त विसे, सुन्तकः। एका का वायन हे वह, सुम्यक । सुम्बन् जाणी सेवे सह, सुम्बक ॥११॥ स्वकी नायन के रुपयी, सुमार । तेले राजी रहे नित्य नवी, सुमार ॥ एका वावसियाने देखी, भूलका दिलकुं रिक्रो जनमुं बेली, सुलका १९॥ जंघा जोईन इंदिरा, सुन्त• । चरण चांपे पीरापीरा, सुन्त• ॥ जानु त्रपुत्र जोई जन, सुन्न । सदा सुन्नी अन वशन, सुन्द ॥१३॥ माथक सुंबाळी वे मारी, सुन्तक। सगन बीट धरी बसगारी, सुन लक् ॥ बदर सुंदर अति सार्व, सुलक् । जोई जब त्यां रखां हजाबे, सुन्य» ॥१४॥ मानिवकी अज उपजी, सुन्य»। पाम्या बोटप्य सम-रंशी, हुन्छ ॥ पर जोई कोबायाम, सुन्छ । क्यों क्यळाए वि-भाम, सुल्य ॥१५॥ गर्जे को मा जोई वजी, सुन्य । पामी सुन्य खाँ कोम्नुस मणि, सुल्व ॥ मुखे सुल्व पानी सरल्वती, सुल्व । रहीछे राजी पहुँच अति, सुल्य ॥१६॥ मुल्ये सुन्य पान्या कंइ जन, सुन्य । मुख सहुतुं मुख्यसद्य, सुख्य ॥ भुष्यं मोचा होदा मुनि, सुख्य । तुम्ब सुम्बनिधि सहनी, सुम्बन ॥१आ मुम्ब जोई पूःच इक्रेष्ठे, सुम्बन । आचे सम्बद्धांति वदंग्रे, सम्बद्धाः गृषु सम्बद्ध हेवार, सम्बद्धाः जेपी सुन्य वास्यां बरवार, सुन्य । ।१८॥ सुत्रा वंत्र सुन्यता अरिया, सम्बन्। मदी ताप तनना इरिया, सम्बन्॥ करने तरके कारण कीर्या, सुम्यक । जोड़ जब धने सुन्य लीर्या, सुन्यक ३१%। अञ्चय बर वे तथा हाथे, सुम्बर्ग एका कर केली अब माथे, सुम्बर्ग। कर-आंगळी सुन्तसदन, सुन्तक। जेने घापों भावर्षन, सुन्तक ॥२०॥ राम्यां माय गांधी गांबाळ, सुन्दर । करी व्रज्ञजनमी धनिपास, सुन्त ।। हाथे दासनवां दू व हरियां, सुन्त । जापी सुन्त सुन्तियां करियां, मुन्नक ॥२१॥ वस साकार मूर्ति संबन्धे, सुन्दक । सुविधा आदि अने मध्ये, सुमन् ॥ मूर्निवरे मोटप्य सहती, सुमन् । को-ण तपसी कृषि सृति, सुलक ॥२२॥ सृति सेडी मोरूप इस्ते, सु-ला । मेने वाम बनी बनारी हो, सुला ॥ शून्य एमननी नीय दाम, मुम्ब । मुर्थ तेनी करते हाम, सुम्ब ॥२३॥ तेम मूर्ति तवारी मे-सी, सुन्य । सुन्यसार कळवो संसी, सुन्य ॥ मधे जनना सुन्यने का-ज, सुन्तक । सदा साकार को महाराज, सुन्तक ॥५४॥ साकार वि-

हरमनि, सुन्दर ।।१८॥ करना मनस्या मारवा, सुन्दर। जिल्हा प्रते बवानवा, मुन्तक ॥ तेवे सारी संक्षा जापी, मुन्तक। पूर्वी सूर्ति कडी वनापी, सुन्तक ॥१९॥ सारे सूर्ति समञ्जूष, सुन्तक । एपी पारणा सुम्ब अनुन्त, सुम्बन्॥ एथी अमगद्ध वति केनुं, सुम्बन्। शुंशुं कहि देखाई हैने, खुला ॥४०॥ संगक्त कर परचादिक कहिये, सु-१२० । धंगता कर्णांतरमानगी नहिये, मुक्क ॥ मंगत चारण परिच बार्न, सुन्य । बंदयाम वार्माया कार्न, सुन्य । ॥१॥ मंगस देवूं हेर्दु एवं, सुन्तक । सर्वे मंगळकारी के दू, सुन्तक ॥ संगळकारी वा-जी बुकरी, सुक्त । प्रसम्भ दृष्टि करेरण सुकरी, सुक्त ॥४२॥ सर्वे किया संगक्तकारी, सुन्तक । संगक्त कृतिनी वलीहारी, सुन्तक ॥ सं-नसमय मूर्ति जेने जोई, सुन्छ। तेने स्यून व रही कोई सुन्छ। ॥४१। संगळ मृतिते प्रताप, सुण्य । श्यर्क प्रजले पूरण पाप, सु-स्र ॥ संगत शृतिने समरतां, मुन्द । अटे संबद बीहरि करतां, सुष्य ।।४४॥ संग्रह सूर्तिने चिनवर्ता, सुष्य । दिनियय जाप शु-क बापे जियमा, मुख• ॥ संगळ वृतिनुं प्याव परमां, सुख• । थाय अंतरमां सुन्य समना, गुन्द» ॥४०॥ मंगन्न मूर्तिना गुन्न गा-बनां, सुन्तक। माटे में तथी सुकाना, सुन्तक॥ भंगता भूति जोड सबरानी, सुन्तक। नेजे रहें हुं फुलानी, सुन्तक ॥४६॥ संगय सुर्ति जोइ में मने, सुम्पर । राजी रहुष्टुं राखदने, सुम्पर ॥ अंगळ सृर्ति जोनां मारे, सुला । सर् ओछव्य छे जा बारे, सुल ।।४ आ पूर्ण-काम प्रगट प्रमाप, सुमार । यस सने समाणुं आप, मुमार ॥ लेनो वधी चाप उचाप, मुन्दर । नेना धगटने प्रनाप, सुन्दर ॥४८॥ मूर्ति संभारता सार्थ, सुन्तर । कर तुं समयुको पन आई, सुन्तर ॥ नेती पूरण वर्षा प्रमाण, सुमार । कर्षा सृतिना वनाण, सुमार ॥४९॥ इ-रिस्मृति धाप हैये, सुन्छ । माटे हरिस्मृति कहिये, सुन्छ ॥ केलि सुवार्ग मटे अवकद, सुवार । एस कहे निष्कुलानद, सुवार ॥५०॥ दुर्श बीद्रवित्वपूर्वभावत पत्र जनामधि: ११६१।

रेपा—जलीकिस मूर्ति आजनी, घरी प्रमद्भार। जोर्ना नारे जोजना, आ सम अन्य अवतार ॥१॥ समय मूर्ति सुन्व घरी, घरी व घरचा कोष। सर्वेषि के भीतरि, सहजानद वभू कोष ॥२॥

केवाई हुक्वरी-प्रगट प्रचस मूर्ति, आकारणकारी है। अंत नेति वेति कहे सुति, आवश्यकारी से ॥ जक्षक बनुष अमाप, जायक। कोच करी शके बहि बाव, आयक ॥३॥ अगम लोस अवार, आवश् । निगमे व बाय निस्पार, आवश् ॥ विश्व हका शरका करेंग्रे, काच॰ । तोच अति अपार रहेग्रे, जाच॰ ॥४॥ वनद अूर्तिनो महिमाप, आय० । सर्वे सुन्तननी सीमाप, आप॰ ॥ बोरप्य इतिमृतिनी सति, आप॰ । के'ला क्रेकाय महि कोचवती, आय॰ ।६॥ अंडे इतिवृतिंथी धर्य, आय॰। तेने वे व जाय कहे, जाय» ह बहुबहु बाद जगन्यार, आय»। नेने कहेना व आपे चार, आप । । शे को कोय केशी व सुच्युं कान, आप । नेती देखार्स जनवार, जान० ॥ जतीकिय वस्तु आवे तोचे, जान० । नेनो अन सह व्यवहोदे, जायक ॥आ अधान वसन संदर नाव्या, आप॰ । बसादी राज्य रोटा दवाका, जाय॰ ॥ तबनाई मोरा हार, बाय॰ । कड कुल अयुरुष अयार, बाय ॥८॥ रामे समाधिये ने शाम, जान । जाने ज्यारे लारे रहे पास, आय- ॥ जेने आपे समापि मांचे, जायर । तेने छई जावे जन भांचे, जायर ॥९॥ ज-काविक वाधिकमां भावे, जावः । एवी जन्य आवरत हां का वे, आप॰ ॥ वसी अनेव पर्या आपे, आप॰ । पाने जर प्रगर प्रमापे, बाय॰ ॥१०॥ तेनो के'ता व के'वाये, बाय॰। मोटो इतिमृति सहि॰ मापे, आपक ॥ क्षेत्रे था समानी चान, जावक। ने दीती में सान भार, जानक ॥११॥ संसदास जनद जनाने, जानक। गया असमा मांचा धारे, आप॰ ॥ दीपी जलमां हुमकी दासे, आप॰। जिसपी तरनारायण पासे, जायक ॥१२॥ नियां होड मान रहे, जायक। लांनी सबर आच्या धर्म, जाय॰ ॥ तेतो आवरण वान बहेबाय, है जान । जा देहे एम जनाय, जान ॥१३॥ वजी दरी मेरवा म-हाराजे, आय॰ । हीयाओ वहंदयो मुन्दिराजे, आय॰ ॥ आपी वयरा नदी त्यांथे, खायक । कनर्या कीवृतिनी वृष्णाने, आयक । है आ बाबा मानसरोवर पाटे, आपका केंद्रे बारण कीयां बाटे, जायक॥ एए सामधी सामिनी, आप॰ । बीजी कहं बहुनामिनी, आप॰ ॥१५॥ एक समिदार्वद संत, आयक । बदामाटा सापु जलात, आ-

च ।। तेने दरपा परमां पाली, जाव । राजी बोकी ताळा जामी, आण॰ ॥१६॥ तेमांची विस्तरी गया, आण॰ । नाळां तेमनां तेम रच्यां, जाय॰ ॥ भौतिक बेह अभौतिक धर्द, आय॰ । एह कारण हरिनुं कर्यु, भाषक ॥१ आ बळी इसिमर्राट बनापे, जापक । सुन्धिया प्रया माधु आपे, जायक ॥ एक व्याधकातद श्रुति, जायक। तेपर वे र मोटी प्रमुत्री, जान्य । १८। सदा रहे भूर्तियांह, जान्य । हरे करे वरिहच्छाह, आच॰ ॥ पत्नी जे हे लेले जिहाय, भाष । तेली लेमर्न तेम पाय, जायक ॥१९॥ एक मुई शीवादी घोडी, आयक। एक नात कहि कांचे थोडी, आप+ ॥ पठी वाचममून जीवाको, जा-च । प्रमद प्रमाचे चढाकरो, आच- ॥२०॥ ते सामग्री सहजानंदनी, जान- । कहि केम जाय आनंदकंदनी, जान- ॥ पत्नी स्वापकानंदे एक, आवश्य कारी कष्ठ उमार्थी विभिन्न, आवश्य ॥११॥ एवां स-नेक अमीकिक काज, आच॰ । कर्या संबद्धारे बहाराज, आच॰ ॥ बळी सन लक्ष्यानंत, आष- । जेने अनर सहा आगंद, आष-॥२२॥ करी समाधि संयमिनी गया, आच॰। दीठा जीव दुःविया तियां, आप॰ । नरककुंडमां सरनार, जाप॰ । पापी पीडामां ज-पार, आपक ॥५३॥ है ने बेली वका जानी, जायक । बोरूका गुरि-सूर्ति बज ताबी, जाय॰ ॥ जिससे मरकपकी सह बा'र, जाय॰ मगढ मनावे बरबार, आच+ ॥२४॥ कारी जीव कीया कंड लामी. आप॰ । जेने अमे नास्वाता साली, आप॰ ॥ ते निसर्व इतिय-नार्च, आप॰ । एको अनोम बान अधार्च, आप॰ ॥२५॥ एक हरि-जन पर्वनमाई, आपः । मदा रहे हरिमूर्तिमाई, आपः ॥ एक दिन विचार्ष एवं, आपक । बाराहरूप हवी बळी केवं, आपक ॥ व्याना क्य क्यां पोविदा, आयक । वर्मा आगत वसरे दि-वी, आयर ॥ एकएकधी अनुष, आयर । विश्ववीर कोविशी हर. आप । । । भाषा पाठी पगट सुर्वते पासे, आप । इसी हीती तेपण दासे, जान- ॥ सर्वे कर समाणां नेयां, आप- । अगर सृति सुमनी सीमा, आप । 19८॥ नेती पर्यतनाई पास, आप । सन्। रहेणे श्रीअधिनाचा, आष्ट ॥ एषी वात आज दिन वे'सी, आष्ट । क-भी अवने मांबळेटी, आवन् ॥२९॥ क्टी एवं मूर्निना वळे, बा-والمراسات المراساتين والمراسات المراسات المراسات والمراسات والمراسات المراسات المراسات المراسات المراسات والمراسات

चर्याच्याम कहे एक क्ये, जाचर ॥ एक मक क्यो स्थानी, आप । करे प्यान गंधी परको, आप । ॥३०॥ मेने घेर विकास हरे, आपर । आपमा नाथ रच अनुरे, आपर ॥ इनो रच हालो-हास्ये, आच०। बसम्यो रचने रचनो शस्य, आच०॥३१॥ चोद्रोस्यो बलमां जुग जोजने, आण्या विदा गांचे बार सर्वे, आण्या ॥ ते-तो विभू इन् दोकान, जायः। तेथां मुकी गया जगवान, आयः श्रदेशा भीतिक भाष रक्षी वहि इति, आणः । शस्या दिवय देह-बी गति, जायन् ।। एका जनन चमनकार, आरयन् । प्रसट सुर्विमां भवार, जावन ॥६३॥ वळी एक मेच इनवाई, आवन । सन्। रहे समाथि वार्द, जायक ॥ करे कंदोईनुं काल, जायक। यस जुले स-वि महाराज, आप॰ धरशा लपाये तेन अति तायदे, आप्य० । ते-मांथी कवी कारे करवंदे, जानक ॥ नेमां हिन व दाशे आपे, जा-वर । तेतो इरिमूर्ति प्रतापे, आवर ॥३५॥ वसी एक दोमो वयन, काच । तेने वर्ष इतिनुं इकान, काच ॥ त्वी मृति कंतरमाई, आव । भूल्यो वृष्ट दिले वहि कार्ड, आव । १३६॥ तेने वार्व वां-रयो वंधे, आय॰ । रोक्यो प्रसां पाली संबंधे, आय॰ ॥ आध्यां कमाच दीयां ताकां, आष०। वेठां वारणे रचवातां, जाव०॥३ आ तेमांथी देव अदर्श वहें, आपका निमयों बार गाउपर जहें, आ-प॰ ॥ त्यांपण रंप क्यों वसी बीजे, जाप॰। वांधी निसरी गयो भीजे, जान- ॥१८॥ जानरच एक आहं वन रहं, आतन । भीति-क देव आधीतिक पर्यु, आपक ॥ तेती आगेडे जब मनमां, आ-चर । एवं सामधी अगवनमां, आचर ॥३९॥ एवी केटलीक वालो करीये, आय॰। प्रगट सृतिनी देखरीये, आय॰ ॥ पत्री वात थी-श्रामां कही, जालक । बीजी चकी संयोगी नहीं, जालक ॥४०॥ सर्वे बात संजारी कहेचा, आरणः। मधी या जनमां क्षेप एवा, आणः।। जोगुं जंतर वंदुं लाळी, आयन । सामर्थवंश्वामां दणमोळी, आः चरु ॥४१॥ आ मूर्तिनी से मोटाई, जावर । तारे वावे कथा माई, आय॰ ॥ आ मूर्ति सहुधी न्यारी, आय॰ । हो हे कहे बढाइ वि-लारी, आचक ॥४२॥ आ मृर्ति सहुरी बोली, आचक। चोकस मा त कर्नुहुं कोली, आपर ॥ आ सूर्ति मिन जन्य जेरी, आपर । ४-المتكمية متربي والمقامية والمتامية والمتامية والمتاب المتابة والمتابة والمتامية والمتامية والمتابة والمتابة والمتابة

The state to the second second at the second second

रि घरी न परको एवी, आच० ॥४३॥ आ भूति के असीदी, जा च०। मानो मान मनतुं मृकी, आच०॥ आ मृति नहि कोय सरसी, आच०। जुवो अंतर दंतुं निरस्ती, आच० ॥४४॥ आ सूर्तिनो महि-माय, आच० । कोटि कविये केम कहेवाय, आच० ॥ आ सूर्तिहुं परमाणुं, अरावः । सन्धर्मा केणे व सत्ताशुं, आवः ॥४५॥ कैक क-हिकहि के छे घणुं, आच०। बळ बहु वेसाडे बुद्दिनणुं, बाच०॥ तो-य अधारय जाणवा, आच० । तथी कोय जुना नवा, आच० ॥४६॥ एवी मूर्ति हे आजनी, आच०। इरिजनना सुल साजनी, जाच०॥ सहने पार आब्याछे पोने, आच० । जन सुलिया पाय सह जोने, आच० ॥४७। एइ सूर्तिने प्रसंगे, जाच०। केड सुविधा पया अंगे, आत्व ।। एवी सूर्ति सुलमय सारी, आत्व । तेतरे द्विण पर्म पर वारी, आवः ॥४८॥ धन्यवन्य द्विज धर्मकुमार, आवः । कर्या वः हु जीव अवपार, आच० ॥ ते गणतां न गणाय, आच० । कहारे छ-सिनो महिनाय, आय० ॥४९॥ मोटच्य कहेवा मूर्तितणी, आय०। इती हाम हैपामां घणी, आच० ॥ पूरी पई पाम्यो आनंद, आ-च । एम करे निष्कुलानंद, भाचरजकारी हे ॥५०॥ इति मीनिजुल-जन्दमुनिविद्वितद्वित्रभृतिसभ्ये सप्तस्र्विताम्बः॥





भीसामिकारायणे विजयवेतराव् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत—

काव्यसङ्ग्रहे

## चोसठपदी।

वन्तान भोस—हेवी कोने आनंद कुनार सलुजी सोमता, व दास है—एक बात अनुष अमृत्य, कर्रह्मं कहेवातणुं । यण प्रमभाई कहेचे स बो-त्व, घोळपं न कहेर्चु चणुं ॥१॥ यग वणकक्षे जो विगल, यह केम परने । संत असंतमां एक मत, निश्चे रहे बरने ॥२॥ माटे कसा विना न कळाये, सह ते सुंगी क्षेत्रे । मोटा संतनो कच्चो महिमापे, ते संत कोने कैये ॥३॥ के रांत सेव्ये सरे कार, एम के वागममां। संजी मिन्कुलानंद से जाज, सहु छे उच्चममां ॥४॥ पर् ॥१॥ 🛊 एवा संतनणी कोळलाज, कह सह सांभळो । पर्छी सोंपी नेने सन प्राण, ए बाळे तेम बळी ॥१॥ जेना अंतरमां अविनादा, बास करी दिस्या । तेथे काम कीम पाम्या नावा, लोन ने मोह गया ॥२॥ एथा चातुनलुं रक्षयुं साल, लाल अर्था आबी रद्या । तेणे संन चयाणे निहाल, पूरणकान वया ॥३॥ एवा संग जे होय संसार, कोधीने से-विजिये । को निष्कुलानंद निरपार, तो लाग ते लीजिये ॥४॥ पद ॥२॥ 🛊 साचा संत सेव्ये सेव्या नाप, सेव्या सुर सहूने । सेव्या मुक्त श्रुनि कपिसाथ, बीजा सेव्या बहुने ॥१॥ एवा संत जस्ये ज-न्या द्याम, जन्या सह देवता । जन्या सर्वे होक सर्वे पाम, सह थया तृप्तता ॥२॥ एवा संतने यूजीने पट, धीलेशुं पहेरावियां । तेणे बोक्यों सबुनां घट, कर्छा मन भावियां ॥३॥ एवा संग मख्ये मख्या खामी, खामी कोये न रही। कहे निष्कुलानंद शिवा नामी, साथी सतुने कही ॥४॥ यव ॥३॥ 🛊 मकी बात छे एनिस्पार, खुटी कराय 

न्थी। सह जंतरे करो विचार, यतुं शुं कहं करी॥१॥ एक जयना बोलियो बाल, जर्मकाथी हां सर्व । एक जमीने बोल्यो नि बांक. वसूनां जावा कर्यु ॥ १॥ वस एक दूर्व दूरवा सह, सेव्ये सह संवि-था। मारे पर्णुपर्णु शुं कर्षु, नेद अक्तना कथा। है। इसे एका विना वे अनेक, जनमा जे कडीये । कहे निष्क्रमानंत्र विवेक, संबंध सम्बद्धं सदीये ।।।।। पद् ॥।।। । जेना अनामां काम कांच. लो-भनी नाम वसे। एका वह करना होय वोध, ने सांसक्ष्ये हां वसे ॥१॥ बार समना सन्मर मोह, ह्यां अनि वसी। एको अध्यसमा समृद, पारी रचा जे पनी ॥२॥ तेने सेवनां हां कम बाव, पृतीने शुं पाधिये । जे जमाहिये तेरण जाय, जापुं जे इराधिये ॥ शा एवां बर्धन ते रूप्पदेण, न पाप तो व कीजिये। संगी निष्कृतानंदनां बेज, मह मानी श्रीकिये ॥४॥ यह ॥५॥ । एवा विकारी जननी वात, देवारी हे दुःचनी । जेवा अंतरमां दिवरात, इच्छा दिवस सुमनी ॥१॥ एवं अर्थे करे प्रचाय, शोधी सारां नामने । योने की-तानु माहारम्य नाप, बहाय दाम बाधने ॥२॥ करे क्या कीर्नन काच्य, अर्थ ए सारवा। मनी देवावे मिकिमान, पर पर बारवा ॥३॥ एथी केदि व वाच कन्याण, जिल्लासुने जाणपूं। कई निच्छ-लाअंद जिरुवाच, देवी परमाचयुं ॥४॥ पद ॥६॥ क देह पोचवा साद जे दंग, करेके जे कुनुद्धि । लोटा सुच अरथे आरंग, गुक्त नहि मुदासुधी ॥१॥ तेले जनम दशुने चार, लोघो कोटा कारले । मोधा मारने आच्यां कमाए, कडी जडी बारचे ॥२॥ केरो व काच्या वयो कतिन, जीन गइ जबमां । मेनी मुक्त मोटप्यनी रीत, स्वाति करी लक्षमां ॥३॥ साथ वा पने आच्यो दिवस, पाने अधी पोयहो । कह निष्कुलानंद काबदय, नाह्यो बाल कोयलो ॥४॥ बद ॥ आ 🐠 सन असनदी ओजनान, नादी के पुराचमाँ। संजी सर्व जन सु-जान, तनाबारे मां तानमां ।।१॥ जड बरत जनक जेदर, एक बायूं जापने । त्यारे करतां असननी सेव, बात करो केव वर्ज ॥२॥ अनि जारमें काम अनीत, परमोक पामवा। लारे जरी करी जीए बी-अव, वियनने नामना ॥३॥ वनममझं सार असार, नार कही कीन वया । करी विष्कुतानंद विचार, सन असंत कथा ॥आ वर ॥८॥ 

veriet eine- mennen mit went, mermat i menft, eine b-साचा शंतनां अंग पर्याचरे, जोए नेवां जीवविष । जेने मक्तवे आर्थ्य कल्याचारे, तेथे ओवा विविधविधवि ॥ Pil व्याना पीना ओना कणाकारे, जानाय एवा अनरती । यह बेसे बोले कलाकारे, याने क्षमा ए काबी ॥१॥ क्षमी बताब बीवा केवरे, क्षम क्रमी क्षम कर-ताही ! शेवजेब एचाइडी प्रजंबी, तेवलेब एई पापी | 11| जाप क्यो समय नवीरे, ने संघ करे छपायाई। कह नियहणानंह कार वकीरे, केंग्र के लेग कलावामं १४॥ वह १४॥ व जेगी राम अपी जे हामेरे, नेवो नेपांची प्रश्यो । बोई काइको पन्ने कामेरे, निसे नेवो विसर्के ॥१॥ कोने भाषार करे जब जेवीरे, नेवी आवे भोडकारे। अवपूर्व निमारे प्योरे, जावाय संबदनो वारि ॥२॥ जोने विस परे श्रममानेरे, कार नेवी वीची है। वेची मारचने कर वानरे, जन्म कोवर वार्ष्य बीची हे शहा एका वश्यववाता लाखूरे, दीवर वे हमे भरिया। यह विष्क्रमानंद हो मालुरे, बोबको दनी जोई किया ॥४॥ वर ॥२॥ क काकी बोले काले जरिवरे, को नी बोले लोज ला । परेपी बोने कोचे जनमारियरे, मानी बोने बाबे सई ॥१॥ बानी कोन साह क्याणीरे, एंजी बोले रंग भरी। सर्वशारी सहकार आजीरे, कचरी बोने क्यूट करी श्रेशा मादे के जनने मले जेवारे, तेनो तेने रंग भवती । वृद्धि जाम ओलासाद संवारे, जेम है लेख लेने अवसे ॥६॥ सुच करा होच करवासारे, तेन जोचुं तवासी । धाच निष्क्रणानंद श्रुव्याखारे, व्यरी बान कर्षु व्यासी ।।४॥ वर् ॥३॥ ० वक्तारपुत्रो वर-नारोरे, जा पर समनां आंकनाने । परी कोपी समापन नारोरे. ले साथ दीति चाचा ॥१॥ तेव विता सन वहि भानेरे, बीते वनवं वृति वेसे । कायरजी वानो काजरे, मांबजी वज्यवा वृति वेसे ॥१० आंक्य अनानी प्रवक्तरे, प्रको पारलु पोनाने । जरा जोटानी सम प्रकोर, अवशे वालो ए जोनन्त्रे ॥॥ पत्री संग जर्मन एक पा-बंदे, अहि देखे में कोष्ट हुने। कहि निष्कृतानद हा देखांचरे, जालको जेल हे नव सबे एका पर शता के जेन नव धन बार्ग व्यागेरे, ध-कि वर्ष आवेशे । तेनां वचन विका वैशागी, अंतरमांची आवेशे ॥१॥ शीम संनोच ने वसी पर्शनरे, एमां रहीने वोलंके। बीरजना

बरी वधी जानीरे, कार स्थानमां क्षेत्रेत्वे ॥२॥ एवा सन सहसा समारे, परतपदारी पूरा है। जेना इनमां बढ़ि कोय इगारे, शंख बानमाँ शरा है ॥३॥ करी हेन क्यू हे हैं पेरे, कांक्वे करून बरसे-है। यह निष्कृतानंद शुं कहियरे, ए जब औई हरि दुरखेते ॥४॥ वह प्राप्ता क केन इ व्य वंदानी विकासी, जुन्ये भूतो आब नवी। परप्रकारे प्रवासकारि, प्रवासे प्रका समस्थी ॥१॥ वंच विश्ववते परहरीनेरे, परते हे वण विकारे । तेह जनाय जीवे करीनेरे, अब ए बानके क्यारे ॥६॥ वस विचारे एक बानुरे, आने एका अनरवी । वाने अर्थ वयनानुं वसानुरे, वननुं वन नवसुक्तवरची ॥।॥ एवा वर्षाची वस अन एकरे, नियंत्र संतर निष्कामी । को निष्कुतानंत् विवेदरे, बीजा वह होय हराबी ॥४॥ वह ३६॥ ० विवयी अनवी बायकरे, अया नरपूर तुवाइये । शोवं सहते इ ज्वायकरे, वधी स-नियां हो पाये ॥१॥ ओने आप्रीज हीयनमाहे, विवयसाह विशवता है। दर्भ क्या बांची बालामारे, सारे देने सक्यांहे ॥३॥ वसी विषय ने पुरवासारे, सोबी कोची कांबंधे। एका असरबी से बान बारे, सर्वे शामा जनावते क्षत्र बारे से सबसे गुन सेवारे, एवी आवे संबद्धने । यह निष्क्रमानंद न सेवारे, जाणी एवा विवेदने ॥४॥ पर ॥ आ । कस्मां पर एका पर का कोबीरे, सह अवने सम-काषाने । कर्ष तम प्रमान में नोजीर, जेन है नेम जनावाने ॥१॥ कोष बीयुष रसने पार्ट, वर्ण्ट कर बरमने । लोप निरक्षिण ने म बायरे, बार्च विष्य एका अगव ॥६॥ ओने अंबो सुख जे बी और, नेबो तह जलावेसे । तेनी वर्शर जनन जो बीजरे, तोय ने श्रं बहुनावेसे? ।।।। एका केरीका अब आफीरे, करन नेवे तजी देवा । संजी वि-क्कुनाबदवी वाणीरे, शह सनवी करिये सेवा प्रशा का पटा।

क्यान नरची—सभा जनाव कामारे बात सकी वाचान, र काने— करण वश्य कहुं हुँदे, कहनां कहिएय कर । दरदीने मोली हे-मंतुरे, सुन्य वाका अनुष् ॥ भा अर सने ने जान काक्बोरे, आयुं जे भोक्य । जीरण रोग सेनो आवदारे, सुन्धी बादो सच्च ॥ स्था क्या कि क रहेते बोनमारे, साची देनां दिस्य । यहां किह केनां भोनमारे,

المساملين المراجع المراحية والمراجع والم والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراج

वचाई जाको विष्य ॥३॥ वेदामानीने वित्तमारि, सुचनां जाको सुच । बाजकारी तेषु रक्तकारि, जाइये बाको दुःच ३४% बाढे कह न कई की-हतेरे, एम आये विचार । विष्युत्तावद विचारी ओहतरे, पर्छी वर्ड क्यार ॥ अ वर् ॥१॥ क शुंको साधु शुक्ती सरमारे, भारद जेवा मेक । वची चनमा मानो मानारे, पर करी निवेक ॥१॥ जवनरम जेवा जानियेरे, सनकारिक समाव। करूत जेवा वन्यानियेरे, करा भवावाय प्रभा एवी साधुनाने भावारीरे, क्यारे नीयो जोग । लारे तीन सहदां करहरीरे, जुलवा अवयोग ॥३॥ एनी रीमे रीम आकर्णारे, बीजी रीने वाच । परवरो वरी वाक्कीरे, वससी ए वरा-थ ॥भा कोगर क्लमी बीजा कंडमरि, जावे हु व अश्रंत । विष्कु-लावंद जावंदमरि, सदा रहावं सन १८॥ वद् ॥२॥ क शुक्रजीय क थी संबर्धरे, वालं बसी यम । बालं नारहे केंद्रं म कर्षरे, करेके की-ये इप । रेश जनमरने व जोवावियुरे, शाई नादी वेल । कर्रजनुं श्यासे का विपृत्ति, करी क्षणाओं कंग ॥१॥ सनकादिक सुक्कार-जेरे, बोडूं व राज्य बेर । आतो बांच्यां बीमाने वारजेरे, करवा कालों के र ग्रामा लेकी कभी असम रीमनेरे, नकम भीशी नेक। ने-लो चोटी गई जिलानेरे, छोती व हुए हेक एता कोई कई एती को-रन्ते, तेशं बंबाये वर । कहे जिल्ह्यानंद बोरन्ते, मूंपर राजाओ के र त'-॥ वर ॥ ॥ ० जबर जाएंसे जानजोरे, बजुजीनी वास । ए-वी देशिये मां आमजोरे, यनकर्ष नवाम ॥१॥ जानो जगमोटाई स-ह होरे, नेजी नज़रे नाचा। एवं इच्छे ने हैपाहर होरे, व इच्छे स-जान ॥ भा नेनी लान भा तोष सुन्तरोरे, दीन करी परनीष । क-नो बन हे मुरम्पनारे, भारे इरम्प कांच ॥३॥ दवा संननी रीतदी-रे, जाको सुदी जब । जेवं प्रभुसाचे प्रीनशीरे, ने विकासे जब गरा। आचे दलंद में बरशहरे, एती के अवतात्र । तेती विष्कुताबद वरसूं-रे, जोई रीक्षे विक् राज ॥ आ वद ॥ शा क बांधी आध्यो में सरस-गमारे, अजवाने भगवान । आच्यो नेये नारा अंगमारे, ना ना भो-रूप मान ॥१॥ समु संतने शिक्ष मामनोरे, धेरे वालानुदास । पु-च गोविंदजीमा मायगोरे, जगरी वे वदाम ॥भा यह नम् मारी गोलपुरे, बीतु देई पार । वई तीपुं सक्षण सांस्तुरे, अवदं वर्ष -

माच ११३१। चनी बाल शई बमबीरे, धववानुं हे काल । दिने लक्जे-है प्राथविर, महुनो पापा द्वाम गर्म काने पुने लोहप्य व सहरे. विचारी जोते वान । यह विष्युत्मात्रंद को बसेरे, डामो दिने सम 🖂 🗎 वय ॥१॥ क सोटा पापानु मनपरि, बनवा पनो होता । तेवा शुव वधी नक्करि, कां करे मुं कोच 0१॥ तुं नकसी जोने नुजनेरे, चलरी शंबर आंच। पत्नी इच्छाने वाचा प्रत्यवेरे, तेलूं वची कांच ॥१॥ काम कोच वजी कोज होरे, नियंग्रे नारी साता। नेककरी संनरे शोग धरे, जो क्यारी भाग ॥३॥ सुंबा कर बरेबे जिसरेरे, जे म बहुवाने वा'र । एक बानजो तारे बंतरेरे, क्वी वर विकार ॥४॥ क थी लोकनो लोका धांपवीरे, देखे बीजाने होता। कहे निष्कृतार्वह न्यापनीरे, अमधो को अपसीप हन्त पह ।। वह स्था के एक सुमाबीने एक बारे, बाक्यां नीवां बीका । कोनां कारकको व ककारे, कारे करेंग्रे रीक ॥१॥ पत्र विना करेंग्रे वांचवारे, कविन वजना काम। वासीका नांद्र परिवर्त राजवारि, हाली क्रोइक लाज ॥५॥ हीको हि-नकर सामखेरे, करका जाये कांच। शोबा ह्यं तकाव बामखेरे, क लटी शांसी सोच प्रधा भारा पंत्रित आणे शुरकोरे, करे कोच स्था-र। सबू जाने पद्ध सरमोरे, भूनवे व एवं भार ॥४॥ वांदी होर कता सीपामणिए, वही हेचाचे पूर । विष्क्रसार्वद माने समासनी-रे, अराय मधी जुन ॥५॥ वह ॥५॥ । बान देनती हैथे पारजोरे, समानि सुजान । कान पढे ए विचार जोरे, तो वाची बल्यान ॥ र॥ प्रमुत्रीर्थ पर पायबारे, था थे सुंदर सार । वडा विचन पामकारे, वामवा वेडो बार ॥२॥ वर्ष समाजीने कवनुरे, श्रीमधी वर्ष साम्ब । एम करीने मोर् लक्द्रों, सह पूरणे मान्य ॥१॥ क्रेंच किंते जानी काननेरे, करीने कम एम । एम समझी तेना ताननेरे, वे'रावची के-बक्ष प्रता वर्ष भाषणी से तिन्त्रीरे, योपी क्यं सार । क्षे निक्क-सामव हिनाबर, सार्व हाम देगार श'ना पर ॥८॥

वराम पंच-नुने सावन बातु विश्व रच बोरा करी कान्यते, र दाव है-बानो मजी है मोटी वाम, इस्त आदी में मां इस्तव्यारे । करी जनम दिवाम राम, सुनां केटां संवारत्योरे ॥१॥ साची सक्यो है सनमंग, अमे कावस दरी रामक्योरे । एके यह बीजानो रंग, वर्षु बदापम पूर आमक्योरे ॥२॥ लई बेटा को मोटी नाम, भेटी पूरण सक्त नेरे । बहि तो पुष्णको रागत दाय, साथी नेपपो ए समेनरे ता।। जात बास्या भी जानेप, बास्या दायज दुःचनेरे । एस यह निय्कृत सार्वद, रूपे मुख्या एवा सुव्यंतरे ॥४॥ वद ॥१॥ । वता मीया अ पन्ताम, माने नजरे न बने कोइनेरे। अक्षरवासी जार्ड जाम, जे ने रक्ताफे कर्जन कोइनेरे ॥१॥ अनि वर्षने नीम आधीम, नित्न मः मार्थे किक्नेरे । समनी समादी से कीन, ओई रखाये जसरीयांन-रे 8 भी पूजा मुक्तने सक्तवा काल, मोटा इच्छेचे बनगरि । शिव छ-क्षा वे सुरराज, लेलो लक्ष्मेण लक्ष्मारे ॥३॥ च्या देवनार्ज द्रका-व, वार्ता वर्षी बोबी वानसरि । विश्वहतार्वत् विवारो तव, आयो रहस्य वेसी एकांनमरि ॥॥। वद् ॥२॥ । विषां जीव विषां जन-दीया, आपने शुक्रवी ए जान छेरे । यर आविये मोमो जिला, नोय क्षमक्यानी बात धेरे ॥१॥ कियां कीशी करी वेळाव, वेजो बावा भारे सेद होरे । कियां पूर्व पुरयोगाम जान, कियां जीन जैने नह के द छेरे ॥२॥ व्यक्ति काणमञ्जयानुं एक्, सळवुं वाचिक अमाविकनरे । तेनो इपा करी चरी देह, आचे चढारचा अनेकनेरे ॥३॥ नैये थाप एवो सेकार, क्यारे वरतन परे जापजीरे। इहे निरक्ततार्वह आप, जारे बकाय वने सामग्रीरे ॥४॥ वह ॥३॥ ७ वदा बक्यांने सहारा:-ज, जे कोप सर्वेना इपाय केरे । बजी राज ए जिसाज, एने आर-बारे सबु बाम हैरे ॥१॥ धामधामना जे रहेशर, इन्टरहर्ड जोडी कृषिकरे । करी जारत्वक्षं प्रवार, शिका बचावेंग्रे नावकरे ॥ । जि व ब्रह्मा ने सुरेक्षा, देव अदेव रहेचे दरनारे। जेनी ब्राह्मामां जहां-निया, पाणि सुरम दें से सरलादे ॥३॥ करे काम माना मनमांत, भ-नि चर्च अंतरमरि । यहे जिल्ह्यमानंत कांच, मूं वल जाने नेना जर-मरि ॥४॥ वद ॥४॥ क एती आगम को आपण, कोच शचनीयां आविषदे । शीव को बीने बहायण, समझ् शाणां समाविषदे ॥१॥ वेचे रच्युं का जगन, जोने जुजनी जानन्ते । जोनां मुझाई आप बल, एवं कर्य काल्यमान्य मुद्दे ॥ शा क्या कर्युं एथुं एक, धाय महि म-धर जानियरे। यणक्षे ए विवेष, कीय जिल्लान जानियरे ॥३॥ मेसी दा'क्य भोजाक्य, रहिये दासवा दास भइनदे। यह नियक-ى ئىرى دارى دارى دارى دارىلىدۇ بىلىدۇ ب ئىلى ئىلىدۇ بىلىدۇ ب

सार्वेद जानक, तो वेशियं लाज सहवेरे ॥४॥ वह ॥५॥ व जेले दृश्यि करियुं देत, पर्यु करे कोण आपणेरे । अपन ताल सर्वा समेत, जा-न्यां समेत्री जोकायकरे ॥१॥ जोने मर्नयासनी जास, रखे केम रा-की कोचनीरे । तेपन टाव्हीने कविनाता, राजे अवर अंक नोचनीरे श्या वसी समेमने सभावा, जानो करे इतिजननरे। वीतुं एवं को-च इत्यास, कारे मनाय वृद्धि सरवरे । १॥ एम समझ्या दिना जन, बाचे वनवलाह अंगर्नारे । कई निष्कृतार्नेष्ट्र वचन, वर्ण अन वाने इसंसमिति ॥४॥ वह ॥६॥ 🛊 अंचे सबयो दोनामां गुज, जाववं हुं रण की कोच कामनोरे। तारे की व क्यों कुल, नेना जातारी सुन दर इयामनारे ॥१॥ ज्यारे करी दीवना खाग, जमे शीधी अइंकार-वेटे। बारे सकतो मामाने नाम, बरो करवा खुवार वेटे हुआ वर्ती कतु पामचा काम, जेले कर्यू इन् का जनसरि । नेनो सर्वे लोगो सा-क, बच्चरे कारको जह क्रमसार ॥॥ एवा मुरम्बनी सीरांत, पने स-वें बची आधर्मारे। यहे निष्कुतानद वात, वरिश्वकने मन भाक निर्दे ॥४४ वर ॥ आ । अपनी जरवनी जे वान, कोय वर उनादे अं-गमारे। लारे सुन्धी बाप साक्षात, बड़ी समझी रहे सरसगमारे ॥१॥ महिन में गर्जवान, जिस्स भारते सर्वनोरे। मेनी समना में बाब, खाण करे तब गर्बनारे ॥भा कोजी कोख म राजे कार्र, क-थी भक्ति भजावकारे । एक रहे अंतरमाई, तात प्रमुवे रिकाककारे ॥१॥ एका वक्त अधियनद्वाम, सदा सर्वदा राजी रहेवरे । सरे जि-श्करानंद काम, एव सर्व संत करेंग्रेरे ॥४॥ वह ॥४॥

वर्गन श्रोक सनी मध्यद्वकी कर कार मार्ग मध्य महा व राज के-कर तो बळी कर्ड एक वाल, सुकरणो सह मछी। के जो सांसकणा जेवी साक्षाल, वाल के बर्ड बळी ६१॥ जेव मरदेव दूर देख, केनिने बहुव करे। निचे जाटी ने सर्वे जह, रूक्ष ते सरवे करे ॥२॥ तेम क्र घटी पूरण प्रका, संत्रवा पानु प्रचण। काम कोच लोग जे विकल, ते हुण तुल्य कच्या ॥३॥ जाद सर्वेद सम्यामान, वाची पारोठा कीचा। को विष्कुलानद निद्दान, निजानन सारी छीचा ॥४॥ वद ॥१॥ क नेम जीवा ए पानु समुद, काम कोच लोग छर्। जाद केंद्र सक्त ता बोह, तेसी देखाई कर्ष ॥१॥ काम काम करानी छाज, कोचे बोनी बंध करी। लोभ उपर सहा सुविशाल, भाविया सावे करी । भा लादे सम् एक इंकी अब, अख नाची जन जमे। सेह सं-आरे वहि स्वजन, मानधी दूर रसे ॥३॥ कारी रीम करी दुवकार, बीजां कुछ बहु क्यां। यह जिल्ह्यानक निश्वार, वेरी एम बहुव कर्या ॥४॥ वद ॥४॥ व मार्ग काको वेमार्थी सुदर, बमुत्री प्रगट वई । जिल्लामंत्र कर्या बारी जर, उन्हम उपनेवा वई ॥१॥ कोह कांचे सुणी नहि कान, एवी रीति आवे साणी । लोकमांदी असीबी जि-दान, आवर्ष पारवा प्राची ॥२॥ वह मामर्थी वावरी दवाय, कास ने के करी। पछी पपारिया निजयान, श्रीयनद्याम हरि ॥३॥ वांसे रखा वेरी विपरीत, नारे नारा निजे भर्या । कहे निष्टुतार्थं इ नेनी रीत, देली साचु दांकी वर्षा ॥२॥ वर्षाका 🛎 वर्षु वेर वाळः कार्य काल, सावचा ए सबू चया। बोटामोटानी नेवार्य काल, ला-के के तह रका ११॥ श्रीका सामकामा नहि जवा, बादे मोटाने जोबी । करती हमी हेमान्यी अवदय, देर बाजी बनोबदी ॥६॥ मारे शह रे'जो साववान, जनवदार वहने जरा । जेर्नु आने वर्गु अक गाम, ते आखरे महि जरा ॥॥ एम छे ए जमादिनी रीम, नवी ए नपी धई। कहे निष्कुलानंद चारो चिन, सनानन साची दही ॥४॥ वर् ॥४॥ क कुरूम वयार्था केमधी वान, भी नागवने जानी । क्यों असूरे यह बलपात, इतिवारी वेट राजी प्रशा आर्नुनर्नु व पत-वर्षु करिय, मौतीय चलुंब हतुं। मोस न वर्ष तंत्रनी का प, बुरायण आष्युं मों ने गणा बार पत्र तथा पत्री पय, याप नेता संकाष किया । शमासनु रहे कही केम, जेजा रचकास गया ॥३॥ बाटे समझी सरवे सुआण, वचनमां बळनी रहें जो। यह निष्कृता-बंद निरमाण, कडण पत्र आपी हे जो ॥४॥ पद् ॥६॥ ० वारी स-जरे न सुबो कोय, विस्तनी तो बात शुंडी । स्वाद कीह पुःसदायि दोष, इच्छा पनी हालो वही ॥१॥ मान मोटो छे वहि भजीत, स-महीने संग तजो । व करो ए क्यी प्रतीय, इंतेश इरिने भजो ॥२॥ आयो अवसर जाय अमृत्य, पाणी से प्रधानी मधी । तेनी त्रवासी करको लोग, वंदर अनि अंगरथी ॥॥ सांदी मुठी तुन-राजी केम, जीला तो जीन थई। क्षे जिल्ह्यानव तो एम, बार्या 

الإراج المراجع المراجع

मी वार्ष मा ॥४। वद् १६५ ७ अस वन गये सके सम धन, वक् म-वे वम सने । वर्ष प्रवन सन मुबन, दिन गये दिन मने ॥१॥ शाम गयं मानी सने राज, साम समाम सही । वस गई सने नहि नाज, करेवानी हमी ने कही ॥२॥ नाम खोइने करचे काम, एनो अवाम खरे । मर सने विश्लीकिन शाम, घोडमूँ परवशी वर्ष ॥१॥ वेडी वर् लांभी मेंन दिएका, दले नहि कोच वस । कहे निष्कुलानंद वसा-वीया, ल्लायणे ने कामले ॥१॥ वस ११ आ क लांने नव मुख्याजीती । वृत्त्वय, जन सह मानेथे । व्यत्त्वपूर्णी सीमरीनां इत्त्व, वोधीमां व्याक्षेत्रे ॥१॥ वाश्य वर्षन्त्री निद्यम, बीर्ति क्यामां कही । सारे सम्बद्ध स्थान वाष्ट्र मानेथे । स्थाने भोटा के वेरी विश्वम, बोरी वाष्ट्र वाल व्यति ॥१॥ उद्देश विश्व गामर, सम्बद्ध मने। कहे निष्कुलानह विवार, करवे वस्त्रे असे ॥४॥ वस्तु ॥८॥

वरगण धोक-में तो हीता प्राप्तगण प्रमुधां हीतवाहे, व क्षक हो-- जेन् दाही कावी की पूर्व काक, को ने कह बाज की पीरे। जेनी भी ने रोब्टी क्यों रांक, बावे तो कतेती कीपीरे ॥ शा एका जनमुं जाको जरुर, अपी सुम्ब जोपा जेवृरे। होवे अर्द जाशी नजी दूर, अये अवराचुं एक्दे ॥भा मेने जामे बनना बाम, लंकन मी सामन लागेरे। नजी तेने आणी तवजाय, जेपी कुषुद्धि जागरे ॥३॥ एका वापीनुं स्वर्धनां श्रंग, पुण्य आय बीतानजुरे। इहे निष्कुणानंद ए क्रमंत, ते समे क्यान वर्ष्ट्रो ॥४॥ वर् ॥१॥ ७ एका अब औरवना अवर, शुवा है मानी ले और । वर्णी पूर्वपन रहे जो पूर, आधारकेर एती है आरे ॥१॥ का छा। विना वहि सुझ काम, गुनक ए बीद राजोरे। बाबी जाळी राखो एनुं ठाम, वानि वर्षत अन्ते मानोरे ॥२॥ वर्षु रामनो ए धरमांध, सुकी के सकि आधारे। कादो केन्य स करजी बांप, पर्णु राज्ये गरम भावेररे १८३॥ केर करबी वहि लेबी क्रांच, बरवारी बाटी बो-जीरे । कह निष्कृतानव सुजाण, कहाँ में तथासी जीजीरे ॥त्य कह ॥ सा । क कहे को इस कर नर साप, भूषा तेने केन कहियरे। तेनी पुंच क्षमानेके साथ गर्वाचार जीव गयेरे ॥१३ पण विकासने नथी। बान, जबर जाणी लेजारे। जोड़ पना अंगर्या एपांच, पनी हरी والمناورات والمراج المناورات المناورات المناورات المناورات والمناورات والمراجع المناورات المناورات والمناورة والمناو

क्र रहेजोरे ॥२॥ काष्युलक कारत कुमळ, सर पण सुती जाशार। लेम बर करे कोटि कछ, अने ने उपाई पाशरे ॥३॥ कही कपट केटला दिन, वर एड राजी रहेश्रेर । कह नियमुखानंत सह अन. केम ह्यो लेम कहेबीर ॥४॥ पद । ३॥ क जेस सहाजकर्मा मध्य. सागर शहने रामेरे। नानां मोटां करी रहे घर, कोयने न वादी वालेरे ॥१॥ यज उपांछमी जीव होय, स्यांप्टती लेमां रहेरे। यज जीवे रहे नहि कोण, लें र पुर बाली दहरे ॥२॥ हरिजनम् जीवन के पर्वे, पोने पोनानो पाऊँ। नजे नहि मजे परक्रक, नो रहे नर्धा सदाकाकरे ॥३॥ वणतीवे शोप वहि वास, सन्मग सिनुमाइ।। करवी निष्कुलानंद नवास, कय वधी कर्त कार्रि ॥४॥ पर ॥४। क जे कोई सबका दिवस राम, जानो वर होय जरारे । नेने श्रीवनावी जुठी बाल, बांचळां महो पर्रार ॥१॥ जेनी बादी शांदी वर्ष पर जिका तो उंदी वहीरे । इन दोष दई नयां दर, श्वास अध्यो सुपा चहीरे ॥२॥ तेषु समामाहि सगवन, करे कोष कश्वातपुरे । तेरे रोकर्षु छे रंडायण, ग्यानणड्यारे घणुरे ॥१॥ तेम सन्स्रगमां कोय जान, गणवाण गोरा वालेरे। कहे निष्कृत्वानंद कीय दन, रूपे से जीवित बालेरे ॥४॥ पद ॥४॥ ७ डोरी बंबी म बगावी वित्त, सम क्षीने संग करोरे। सारा सन ओलानी अवन, सन कर्म वचने बरोरे ॥१॥ देली प्रपरनी आहारोप, सने रूले मोटा मानारे । एती कोगर कुम्योग्ने कोप, समझो ए सन कानोरे ॥२॥ जेने आणजी अन मोटाई, जदांची जीव समेर । नेने मोटा मानो प्रमानीई, लोटा के मोस सगरे ॥१॥ जीन शुक्रणी ने जह बरम, की कल मोटा जा क्यारे । इसा विरद्धमानव ए समर्थ, वची महुए बरमाव्यारे ॥४॥ वद ॥६॥ • एइ विना माटाइ जे जन्य, न्दरि ने वन त्याटी नधारे। तेतो सुणी कियो सद् जन, तेवण कर्च कथीरे ॥१॥ जस पर्नामां मोटेरी पूर, मारमां नार लैपेर । जेम जळमां मेरेरे(रे मूट, प्रामां पाको कैमेरे ॥२॥ सर्वतां ओहेरो तक्षक, बीधीमां हाकरियो व हार। क्तो भोटका दु व्यक्षायक, समझो सह मर्छारे ॥३॥ वस व्यक्ष्या विना जगमांग, बनाय अधी अगयोनोरे । कर्न जिल्कुलानेन ने न्याय, है धानों के जब मानोरे ॥ ता बद् ॥ आ क म्योटी कान मां नकी आया 

लोट, दोष जे बीजाने देशेरे। योने येट कपट राष्ट्री कोट, वा'रलो साधुमा प्रदेशेरे ॥१॥ एवं कवे छपाची छित्र, वांकमां महि जावे आयेरे। एवं करनां जाणशे कोय नर, तेने बरावशे शायरे॥६॥ आणी सास्त्रान तेनी उपर, बोलवा नहि दियेरे। जेने नथी महाराजनी बर, ते कही केथी बी'येरे ॥३॥ ए पापी जे पापना पुंज, देखीने पूर है'येरे। कहे निष्कुलानद ने शुंज, कही कही केटलुं कैयेरे ॥४॥ वह ॥८॥

वस्ताम क्षेत्र-वाल्य सभी जोवाने बहुए कारीको बजले हेटेरे, व हाव है---संबर सारी विष्णायण मारी, मानीसे धनवा भागारे । वारी वि-चारी में बान उचारी, ते ओई स्टभाय नारारे ॥१॥ वरने कहेवा क बीच हां पूरो, पोमानुं तो तं व पेकरे । सामाने परित्र देवामां हां हा-री, बिज दोषने वय देखेरे ॥४॥ कोय व समझे कारज तार्व, कहंछ कांचे वृद्धि वायरे । शरिदने वनाकर्ता परवार्व, करि व समाय कांचरे || क्षेत्रकी समझन अकनीए करी, सबतुं समझ्य तो साहरे। निष्कु लानंद कहे विचारी, प्रत्युं मानी तवे मार्थरे ॥४॥ यह ॥१॥ 🛊 बन तने समझाववा सार्व, कर्ष में बारमवाररे । तेती गमने व त-जिये तार्थ, यह विकासन गमारहे ॥१॥ ओ के बात करी तुल सर-ने, तेतो ते रित व राजीरे। लोक्य आववा व दीपी प्राचे, ह्यां वी-जापर बाजीरे ॥६॥ कही जीव्य इस्ते केम तारी, निज होपने व हे-करे। एथी भूव्य बीजी कई मारी, सबूची सरस जान लेकेरे ॥३॥ कड़ेजाराने कहेवा म रहां, में व पर्य वचारे कावरे । निष्क्रतार्वत कते तुने जिएं, तारे तो बीखं ने तानरे ॥४॥ यह ॥२॥ क समु स-शक्षे शोधनां एका, जोनां शासा मन जहरे। क्षेत्र म जावहे अव-हुं छेचा, बणनोळी विशव जो पहेरे ॥१॥ मान मोरप्द ने अमना मुके, नमन् गोविंदनं जाणीरे। चोर निकास दपरथी व चुके, पर-लोके प्रतीति आफीरे ॥२॥ कोण काले जो काम पोनानं, पनमाहे वृद्धि बळीरे । कपट के दिये व राज्ये छातुं, बोटा सैनने मळीरे ॥६॥ क्षा जम जगनमां जायो, परवर पंजा न दोधरे । निरम्भानत कड़े परमाणी, माचा संत का दे सोघरे एका पर प्रशा क आ लो-करी जेले आशा माधीये, परमोकता सुलक्षाकी । तेलेकरी हरि-

चरित्र रजी है। संसार सुन्य पएं जायरे ॥१॥ जीए मोच ने जनुर-का सनी, जनमां केते कहेबायरे। सर्वे डेकाचे अनिव समनी, हे-के तथनां लांगरे हरत उत्तर आवर्ष आम न सुत्रे, कही मून्य क्यां बनायरे । काक जायाथी सबू तकां धुते, इतिनां करण विनायरे ॥६॥ एव अहोजिक अंतरमार्द, वरतं हे वैरागरे । विष्कृतार्वद कहे लेने कार्ड, करून स होच कार्यु कारादे ॥४॥ वर् ॥४॥ क वर्ष शवनी प्रपर दृति, राजी हे राधिकापनिरे । जेले मन्त्रि भावेशं वती, करे वहि केदि प्रतिरे ॥१॥ वादीयमां सुन्य सर्वे लामी, वाची प्रमु-स्राधे ग्रीतिरे । केवी समजी लालक्षं लागी, लेलो रक्षा कम जीति-है ॥२॥ क्यर रहिन कुण्यती हेवा, जानकारे के जने करीरे । प्रमु-वा वर्ते वामिया एका, आ वर्ताक नया नरीरे । ३॥ तेमां संवाप बेक म काची, पूरण प्रतीति आजोरे । विष्कृतार्वेद वर्ते विश्वा-को, केला जीवमां कार्कारे ॥४॥ वद ॥५॥ क एवाले स्रोधी अध्य-रचाने, सवायके जो जबारे । बीजाने शने तो शुव व पाने, गुव्य रहे भरपूररे ॥१॥ जेने जायुं शोष जमने वाथे, दक्षिण देशानी बाय-है। लेली सच्चे रवी कपटी जाये, तेनुं कर्तृतर वधी कांगरे ॥ ।।। पण कार्यु अने अनुजी पाने, नेने करवा नपानरे । धनर वीजो तसको आयो, वर्द रहेर्च इरिया दासरे ॥३॥ आयी वान अनरे इनारी, करी सेचं निजकामरे । जिल्ह्यानंद करे विचारी, तो पाविषे हरि-कामरे ॥४॥ वर ॥६॥ क जेड वामने वामीने आजी, पार्च पहलाने वचीरे । सर्वे पर से सुम्बनी भागी, करेबुं करिये तेने कचीरे ॥१॥ अवंत हुन्त क्यां जान हे अरिया, रहें हे मनुत्रीनी वासरे । सुव्यसुना क्यो सुनाना ब्रिया, त्यो बसी रका बालरे ॥॥ तेजनेज जियां नज जंबार, तेजोलप तब नेवरि । तेजोलच क्यां सर्वे आकार, शं कहिये सुका एकरि ॥३॥ ते तंत्रमध्ये सिंहरसम को ने, निया बेता बहुता-बीरे । निष्कृतानद कहे सब मो ने, पूरण पुरुषोत्तम पासीरे ॥४॥ पद क्षेत्रा क एवा पामनी आगळ बीजां, यो लवनीमां सवापदे । मा'मलच काळमा अधिमां सीतां, इसेस जे ब्लापरे ॥१॥ ज्युनि-पुरुष समयमा आये, भव सका व रहे को परे। चौदलो क नाम रहेवा म बाबे, खर्वे संदार दोपरे ॥शा जेल बदायामां बच पण्यतं, वंचा 

बीचा जड़ि स्वाकेरे । तेन जो नमधारी वसले, सर्व क्रृत्यू वे वाना-केरे ॥ भा मारे सुम्ब वधी कियां वा ने, प्रमुजीमां वर् वजीरे । निष्कु-नामंद करे मृत्य काने, के बान जाबी मुं समीरे ॥ ४॥ वर ॥ ८॥

परराम के व अरब बारर पूरण तक भट्ट जरनपतानी. द शब है — एका भारत ने नामका काल, जनसर जमन्य आच्यो । जान्यो सुमनो ससी समाज, जला अनि यन बारपो ॥१॥ भारपो ए रस जेइने पर, नेने पाना प्याम करी। करी देशकृद्धि क्यी हर, एक वर राज्या हरि ॥६॥ हरि विना राष्ट्रं नहि कांच, जनल जानी जाने। जाने विचार्य अनामांय, तेह तर्व वहि लावे ॥३॥ नावे नवतां जाली चिनांक, हका परधी नहीं। नहीं विषद्धनानद संवाद सोक, जावे लीचा अञ्चे जारी ॥ ता पद ॥ गा क जानी जानी गाँके जो बाल. पुरुषोत्तराने वासी । वासी कार प्रभु लाक्षान, कही कांह रही जाती ! ॥१॥ भामी भागी मही भई मार, भोषा दिनी मोठ्य रखी। रखी गया सर्वे प्रचार, श्रीचनक्षाम मसी ॥२॥ मसी मोज अनीक्रिक भाज, आर्थ सुन्य अपि अने । अने कर्यु व रहां काल, बजी बहा-राज क्ये ।।। स्मे रदीश हतो सदाय, सुनदारी द्वाव जाली । जाकी निरक्षकानद् सनमांच, रहं पर आर्थद् आणी ॥ ता पर् ॥ भा आणी आंख्ये में जोपा जीवन, सहभानंत आगी। जाबी होपछा विवसनं पन, पानी कृष्ण गर्या वामी ॥१। वामी वेदना मारी था पार, पारण श्रीजीतु वर्ष । वर्ष पुत्र अर्थे अपनार, अर्थिया आपे सह ॥६। सह बहु का समानी रीत, आज आहे आहि बाक्यो । बाक्यो दिक्स भी मारी जीत, सवाय कोड राक्यो ॥३॥ शासवी कासनी वासनी पास, पूरण सुख पारमी। पारमी विष्कृता-नंद पहाल, पूर्ण जिलाद व कारको ॥४॥ पद ॥३॥ ३ वास्यो जनन्त्र सुखबा प्रश्नाप, सुर्गत सापामां लागी । लागी बसुपद जो पाप, बीजी मुख मर्व भागी हो। भागी का लोकसुखनी आका, जिसकी निर्मात था। था परी ए सर्व सामा, सन्य अधिनाचा गई॥न॥ शा सुरति सहनी पार, अक्षरपाने पाई। पाई इचाना सुच समार, नेमां न बीड़ काई ॥३॥ काई व माने बीजे लेनुं मन, महासुल मोड़े ओई । ओई निष्कुलानंद बगन, सनमा रच्यो मोई ॥४॥ पर ॥४॥ ०

घोड़ी रच्या अने मुनिसक, नाज तमसुख करी। करी टीपुचे बोलानुं काल, केरो वधी राक्यो करी ॥१॥ करी कमवूं से कर्माय, एवं न राक्ये एके। एके करचे राक्ये वहि कांच, तल एकवार लेके ॥३॥ तेथे बजर यो'पानी है केंद्र, सामाच समझक नदी। एनी वनि को की गह छेक, हुं बलवारी लेकी ॥१॥ लेकी जो कर आवे कही कोण, बाम विचारी जोई। जोई नियम्भार्मन गई जोण, वह संग लोई ॥४॥ पर ॥४॥ ६ सोई सुच्य सख्याने काज, योरा वन-भाष क्या । इन्हें अब प्रचा सुरराज, बसवा बनवां रहेडे ॥१॥ रवेथे जावा। एवी समयांप, सबे सवासुम्ब सेवा । लेवा जानंत् इच्छा सदाय, इत्रवाई इच्छे देशा ॥भा देशा प्रथम एइवे एक, कोर्ना बीजी जबनी सभी। बची कानी ए बारना छंड, बहंबायछं क्रवी कथी ॥॥॥ कवी कर्स ए वासमुं सुन्त, वरणवी वजी वजी। वसी विरकुतानंद के' जीवुल, मुख जाय एने शसी ॥४॥ पद ॥६॥ ६ वसी अहाराजने पुनिराय, सह सुच्य गाम सोय । सहल कब्रु रहांतनी शांच, जाको कावभूति होत ॥१॥ होत कावना सर्वे आकार, रवि वाकि मारा वयी। वयी नेत्र नेत्र स्वां अवार, रहे वह अवस्ती ॥६॥ शबी पूरण दियो जकाया, रहतम तेज वर्ष । एवी पाममा है रजास, ए विमा कहिये के मूं ॥३॥ के मुं के से मर्था इन कांच, लगाने तो समग्री साथे। साथे विष्कृतावद भाष, अंबे आष्णुं तर् पावे ॥४॥ पद् ॥ आ • वाने लक्षां ए पद चौतका, सुंदर सारा होती। बोधी क्रोक्यो सब सारी पत्न, जेवी दोच जेती पुद्धि॥।॥ पुदिमांदी है करी विचार, सचर्च सार प्रदेशों। घंटली करवानु ने निरंपार, व करवानुं भूकी देला ॥भा देलो को वजी कोचने दाय, रोप जंतरमा आभी । आभी हैयामाई पत्नी होंस, मंदो सह मूच जानी ॥३॥ जाणी ओईने आसम अंग, रुनिए रुने रहे । वह निष्कुलानंद लो र्त, असम्ब नाम सह प्रशा वह ॥८॥ इत अध्यक्ष वाकानुधानाविका चोसंस्वर्गं सम्पूर्ण ।

चोसउपदी कथाया ।



श्रीलामिनारायणी विजयतेतराम् । श्रीनिष्कुलानन्द्रमुनिकृत– कान्यसङ्गहे

## मनगंजन.

The states to the transfer of the transfer of the states of the transfer of th ोहा—सह पे'ला समरिये, आच्य पुरुष अविनादा । सोये बपु वरी विचरे, जेनरे जक्तपकाचा ॥१॥ जनउद्धारण जनम जम, करण कोटि कल्पाण । सोपे सहजानंद भूरति, प्रगट प्रसु प्रमाण ॥२॥ खामी सहजानंदने, सदा रहिये शरण। लाम अलम्प सो लीजिये, जाये जनम ने मरण ॥३॥ स्वामी सहजानंदनुं, नाम जवे नर कीय । विधन सव व्यापे नहि, सदाय सुष्या हाय ॥ । । कर यहा है नंदने, जे दारणे सोंपे दीदा। सुवे न अवगुण जीवना, करे गुहा है नंदने, जे दारणे सोंपे दीदा। सुवे न अवगुण जीवना, करे गुहा है हो बांच्य गुरुवेवजी, नाथ सुगो सम गाथ तथा देह नगर दियान क्षोय, निज परमक धन नाम। यने न बंधव बेउने, ठठेराव्यनुं डाम ११ आ कोय कोयना के'णने, भाने नहि महाबीर । बळसर वांचे बाकरी, सळरयुं बेर दारीर ॥८॥ परतक मन के परहरी, निकडव निजमन बार । बदाशुं बाद न क्रीजिये, आपणो जीव बगार ॥९॥ निजमम कहे तुं नरेश नहि, काली न कीजिये वात । सरी पड़े ते स्रमधे, जेने माथे जात ॥१०॥ जान कारण नव जाणिये, माटीपण पहर्यु मेवान । एक् अंजस नव आणिये, निजमन नर निवान ॥११॥ निजयन के' मन मेडिये, हालवुं पोले हाथ। शिशमारानी सायवी, वेर वडांने साथ ॥१६। मन में देह दोरगमां, क्याँ अनेरां काल । प्रभुतना परतापद्यं, रहे न तोर्ड राज ॥१३॥ कार्यु काथा कोटपी, मनवा मूळ उल्लेख्य । तरकर रायना तस्त्रतमां, प्रजा पाने बहु विख्य 

(११४) औषो देव अनुष्यती, मसे व सुन्यने सार । इतिमञ्ज वि-म ब्रारियो, ब्रामिन बाबी बाट ॥१५॥ लार्च नारो सारियो, ब्रारि-को हीरो हाथ । जिस्तक हुने तूं जन्नकी, संग तह तोरो साच ptall करे अब केम काडी शके, पंच जोदा तुल पास । टरे पहि वन तरहेरो. वालीका सुलमां वाम ॥१ ॥ कान्य स्वर्ध एव रस. र्मंत्र गुणी के पंच । तेष्ठ आगळप कोचे रक्षा, रेंश व पाचे रंच ॥१८॥ अवनीर कोच जायो वहि, रंच विचयनी पर । शीर वायक क्याकिये, इमर्चा पामीक दार ॥१९॥ जीत्यो व दीवो जक्तमां. आगवय सुत्र जमीर। लरी नवे सम् जलमळ, नरे नवि कोय थीर ॥२०॥ निजयन कहे नथी सक्यो, चरो तो लेक्ड्रं क्षेत्र । जाडया सह ने भागता, पन कील आज नो जोय । ११॥ पाडक लक्षि के बी'बरे, जच्य नामनो जान । देवक वह ने दांनियां, रून लक्ष्यों व अभियर साथ ॥२०॥ यहको परतक पारलूं, सुत्र तुलतुं केदरम । रजमां वण रोपी रहे, मर को शहर दिवान ॥६६। क्षेप सचेन इवे सावची, सजी सरव समाज । हवी भूधी सी तीजिये. रिक्षेत्र मध्ये राज ॥२४॥ वय कहे कोज महिरी, वर्णनी सणाई बीर १ काम कोच सोम बोह, अहम जोच नवीर ॥१८॥ जाएम हुच्या ईरवा, जिंदा अविचा बार । कुटिन्ट कुमनि कुवृद्धि, एवी कीज अपार । १६॥ राज हेच श्रंद सदा, दानि वृद्धि ने देन । बीक वर्षेत्रा सेत्रमा, अम एक लेवू जेन ।१३.। शक्रम विकास संक्रम विज, निर्मय ने जिल्लार । वंच विचय प्रपत्न भव, बनगरप विचय विकार ॥२८॥ विक्रविक चहाच भोगते, बातादिव निरदाण । राम दिक्स राज्यो रहे, एम होय जन्म हेराण ॥२५॥ हार जीनना हेनडां. मेले व कदिये घरोड़ । बाले बाडे बोगजां, करे उपामन बोड |१६०॥ केला प्रवासभ जक्तमां, तेलां उपर नाम । अनेक इच्छा बरमां, उरे वब रानि ठाव ॥११॥ बेक्यूं दिन मन कुछनुं, भयंकर भयभीत । जिलेश नगार्य गवगंद, कर वरे ध्वतः कतीत ॥३२॥ क्रमान अवनी उपरे, क्रमो मन हर्ष काप। निजयन कापा वयपी. कार्य जाज बचाप ॥३३॥ निजयम निकम्य पाईरो, कां सम हो सहया संग । जाज तुं यद वगरे, जीतुं हे रच जत ॥६४॥ दहे दहक

मोरो केटली, निजयम से इने साम । मेना ताहरी सुंगवा, देवे ते मारे साम । ३६॥ निजयन कर मनमां बजी, जोर मुं जनर ओराज। तुम अ। मे मूत्र सेनर्नु, कई पेर कई बन्यान ।(३६॥ चंडवक्रीना दि-लमां, पाने म देने पाट । एतं कांपेक नुत्र आगाने, ते वृक्षियुं ते-मार ॥३ आ क्षीन संतोष दो संतमां, वती विवेद विवार । वीरज वर्षपुरपरा, क्षमा बचा हो बार । भ्या लाग वैसाम्य ला रहे, बाम इम अदा सोय । कानगरिषी अगति, श्रीनदासा एक होच ॥३५॥ जाब भजन भरपूर रहे, हाभ गुज बानि सोय। जन्म बिरन्स अन्त भागे, हाम उदामी होय ॥४०॥ पंचतन पर बीन हय, निःस्पृती निष्काथ । निर्देशि निर्मानिया, निष्मादी एइ बाम ॥४१॥ प्रथम त्रमाणे वर्तयं, यह हमारी देख । निरवेर रहे सह वयमां, कांडी एस क्य छेक ॥४६॥ मांद्रोमांद्री मळी रहे. हैये घलेंद्र हेन । करे व कृष्ट कपर कर्छ, एवं अधारी रीत ॥४३॥ मन कवे समें में लखी, वेची ताहर दक्ष । एका सेना साहेका, यह व कीले क्या अपना सूर किया : को शुरुवां, अजमजनां होच अग । पूर्वी पूर्वी पन भरे, ते जीते व क-दिये जग ॥४५। ओपा मारा ओपने, जीती न करे जुहार। सासच्य देशक लक्ष्या तथी, मारव क्षे धर्मबार ॥४६॥ ब्रोच बजी जो बाव हैये, मो बीर व कीले बेल्य । नियो लक्ष्मी लीजीये, बांब स्रो जनर तुं बेल्य ॥४ आ निक्रमन कहे जब कीर्जाये, धनवा मोटी बात । द्वारामणा सदाममां, माज इस्ति हाथ ॥४८॥ आध्य पत्री चोगान मां, सेना तर्व मंग शूर । जागळ भागा पानळा, राजर हो कुन्र ॥४९॥ सम्र थयो हो शारमां, बरवा काम्य भाव । इवा सिंपूना सेनमां, पाल्पा बगारे याच ॥५०॥ वहवा समे वाणी वदे, अहि : वाज मन आहुत। पाह प्रमुख्य पांचितां, तो आत्य मायानी पूत्र ॥०१॥ सन नं भीवनवानना, बनमां एके नुने बाद। मांदी में औ मुजर्श, नो करीय पूरो कोच ॥५६॥ मुज नुजनो सामलो, काचा क-टक्झ काज । जीत्यो इस जब जाणियं, औं जीत्यो रचराज ॥५३॥ जातकारे क्षेत्रहर्मा, बाज मार्ड बळवान । शुंजी क्षस्य सीपास-ना, परीवा कपी वर प्यान ॥५४॥ स्पर्ण शीन वच्नतो, ऋष ह्या-हो बेच । बार रस बेची चळवळे, सर्वय सराये हेच ॥५५॥ चंच-

وأسكوا والوادا والماوال والماوال والماوال الماوال والماور والماور الماور الماور الماور والماور والماوران

काम करनक सने, सेन्यां निजयन साथ । रच्यो आभी अभिये एक्ची, जिस्तर हरिनो हाथ ॥६६॥ दीपेर क्रव्य म लागियो, बीपेर नवनी स्वर्श । परिवेर न राज्यो स्वमां, भी रीन शीन्दो गंप रम ॥६॥ विस्था स्वाय-साम्य जेला संसारमा, एक शावायामी भा-म । इरिजया सुणी हत्तमुं, ते दिव सरवे त्यान ॥५८॥ तर्या प्रीत इच्लानो, बायुनाओं विकार । जेई हरि हरिजनने, अवर लगे अंगार ॥५९॥ कर रिनियम नेजनी, लापर लूटे च नान । कर इन्हें वरी रा-मनुं, वरिये जिल्लाक्ये श्याम ॥६०॥ शंघधति जे पृथवी, वजे म ला-वर विला। गंपमां हार गोविद्या, निर्मालय परिमनपर प्रीत ॥६१॥ क्षर्वे रस संभारमां, बर रस पोषण साम। देव निभावन दीप्रिये, व करं लाइ जिहान ॥६२॥ एम शांच बाज परनकशी, जिल्हा गयी निवात। आय व गंत्र्यो अक्तमां, भीव क्षेत्रे भनवात ॥६३॥ वक्त-तरे सक विचारी कहे, मेलुं मोहतुं बाज । अनेक पहारण वच्छे, जबी बीन जोराज ॥६४॥ कति। बाग यन कामनुं, सांचु निज-सब जिल्ला अंधी वाचे जल्पना, वरे म अंतर धीर ॥६६॥ सीम मुचांग्य सह करी, नाकी इची नैयार । अणी जेनी भागके, सब वेंच्यो संस्तार ॥६६॥ सथवय द्ववा सत्रवा समे, कर वरी कोच कर-बार्स । वर्ष व जापो बरजर्मा, शबद जगनती साम ॥६आ वासी । निजयन वपरे, निदा कांसी नेस । जासस करारी समयां, जानी वार्ड केन्द्र ॥६८॥ लोड पटलां सह करी, यान्यां विजयर वान । लेका विक कीय कीयरे, केटवी जुनम दान ॥१९॥ मोन्याण सी मरोबिएं, परवरि सक्तं प्रीत । निष्दुवी वन पाळतां, वृह जननमां जीत ॥ 50॥ भन दारा निजदेश गेंह, पुत्र पशु परिवार । आग्य सुबब गर्ने मागसी, एवं निःसंदी वदार ॥०१॥ अवान वसव भूक-वसं, मोह व पाम मन। पहे व मसु विना विलयां, पत्य निःस्पृदी जन ॥ ७६॥ मधी नहि मोद वालधी, निजयन जन नरेका । सदा च्याम समारपी, इरिश्चं बीन इमेवा ॥०३॥ कामवाच सो कावियं, विक्र मार्गित्रं क्षेत्र । चौद्र श्रोक जे चतुरचा, इच्छाया व वरमाँ एवं हु ॥ अभा अन्य बाज बर्स्स अनि, जाते बचे म जीव । सुरासुर वर नाग पुनि, जान्ये बचा थिय ॥ अत्य कायक्य सी कामिनी, सूर्नि-

मान एवं मेंन। नामुं भूमवे व भाषण की जिये, ना निरम्पी कोष नेत्र ॥ १६॥ तत स्वाच-एकाँसी करता नाम हे, जोपामी काहर आत । जिल सायुन चाहिये, क्या बनमे कर्वे बान ॥୬ आ ए क्य विचारी आनमा, हरि अजवा होय होता । बीजी बाने बाब है, वन हातमां काहा दोन ॥ ३८। एक्स वर अधुरिया, वसी व सम-क्या जात । वर वारीको व दस्ती, भागी रही एवं श्रांत ॥ ५९॥ विक त्रव क्ष्मच - देरे बेसी शंकवा, केन्यवस्तुं बोलय। साम्य विरोधी ह्यं सर्वे, तुं मुरम्य वक्तोल्य ॥८०॥ इंड भड़ एकत्रशूरंगी, श्रीअदि शास्त्र शिव । जनवदी अधिको वयो, जोज्यो आह्यो जीव ॥८१॥ लाज तर जिलोकती, बारे कारेल बांक । शह पुत परी सहनजी, बजी वदावयां वास ॥८२॥ कागद करिणी दंवनां, हमी मरे हजार । मूर्तिकंती भागुनी, केय यो बादे चार ॥८३॥ अर बाजी पर्नन सम, नारी दीपन प्राप्त । योक पानी मरत तेम, नारी नरनी काळ ॥८४॥ विष देशियन वैतरी, नागण बायण बार । बायण सायण इसभी, माते न हो व्यवहार ॥८५॥ वेहे करी पूर रहिये, कह बकारे आप ! तो अंतर इच्छा नहि रहे, प्रश्तको प्रताप १८५॥ अन्य जनक जासबी, मा विनवी कीय जार । सेलां तियुं नामने, पहने आहे बार ॥८ आ जन्मच उनदा श्रासम, जनावे सदेनु वंद । निराहे एथी बारने, ते मारे क्यारे लुट ॥८८॥ कामबाण करका करी, जि-र्भेष भयो निजयन। लोज लुबांस्य लागी बहि, बहा बेजीपेर तन ॥८९॥ को व क्यांग्य हरिणी अणी, नागी सर्व चार । देव दावव भागव मूनी, वाचे वंडिन वीर ॥९०॥ कामधकी करदी वजी, बाने न भामी मान। वेहन कुड़ वेटी मंगे, मान बतावे पान ॥ ११॥ वदी अनियो लाकरी, स्टेशनकी लुशांग्य । शिक्तमन केय सामी बहि, सीय वारिते भाग्य ॥९३॥ भिजनन व्याय-महोत्र सूर्व हृदय मेलिये, एडमां अनन विकार । कृष्ट क्षपट एक हिंमा, की अनर्थ नानार utan पान् सस प्रकारनी, अवधे वर्षे प्रवर्णन । हीरा मोनी काणथी, इरिजन रहे प्रदान ॥५४॥ वर काय-हाम दिना दृःसी भवें, बाम करे वह काम । दोष काताहे दाममें, निजयन के तुं माम ॥९५॥ रामनचुं करी रास्त्रिये, अज्ञान बसन घर मार । पणी म  فعالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم المالم

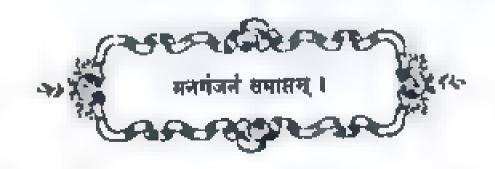
थाये पनना, तो नाप नहि सगार (१६०) अवस्य स्थल-स बोल्य एवं समया, वयविचारे वान । एवं मुख ने ओक्टे, प्रेन घटमां पान ॥९ अ। एवं नायण्यता को बनी, विषयों क्यों वर्षेत्रा। वर्षे वापी वेशियो, रोजी देवा देवा ॥१८॥ वयदेवा एनो जोजवी, तरत करी-थे सार । योज समी नहि सीठीयो, जेन तेम सुरे जान ॥º,º,॥ क्षमादि अञ्चलकी, चन कंचन बहु वाल । स्वामी सेवान लंक, लो बीआजी सई बाल ॥१००॥ लोज लुजांग्य लागी वर्ड, लागी वरू-भी परिष्य । इच्छा म रही अंगरे, असला ओखवर्ष सामय ॥१०१॥ तीको कोच तरवार सम, बेच नेजमां बाट । निमानी एक नर कि ना, पढी व शाने वाट ॥१०२॥ नो'न ला नराजन करे, अनवी'ने अमान । दक्षि न बोले रांकर्श, नर सीचे निरमान ॥१०३॥ क्रीप करवाल कावा करे, जिस्मानी जिल्लान । इसी नमान शिवाने, विषु होचे वसक ॥१०४॥ बाचे बिहा वयले, सूचीवर कोच मोच। बिरे देखे सीतरे, हाय भूषी एव होच ॥१०६॥ आवस संगे देस क्यते, जरून आयुष्यती जांच । तिकादिन नाम जारायमतुं, समरे हरे सदाय ॥१०६॥ सदा समस्य प्रमान्त्रं, जातस वंच निकार । कोने सक्तर्श कावर्ष, वृदि अजने ब्रंशियार ॥१०आ कृतास रखी बन कोरथी, निजनन नर निर्याण। सर्व केश न तापियो, मर्पा ने काने वाच litesi सीरपो सब तब संपर्द, को त्वती सांव i जान्य निज जापेरको, जेथ सक्युं नेश भाष ॥१०९॥ वेश जोश वरा-वरी, रोच्या रणमां वाच । लवे जबे कीय सहयहे, होनुं लेखे दाव ॥११०॥ वसच्य वेस बलाभिये, सहमद हुवो से लेखे । ब्रह्मच आये हो जला, अवयव हुवो वमेद ॥१११॥ टलनल रंकारव हवा, चणवण वसे पुद वाच ) तज्जन वांसां त्रमासे, वजनज वजे श्वंटाण ॥११२॥ इक्कल इय अर्थु हावले, बक्कब बोले वाण । म-समाज गांज गोकियो, अफलन पढे जगान ॥११३॥ गररर गोजा बाक्यमा, नररर बोले तूर । अररर करे अधमुवा, भररर आगे चूर ॥११५॥ पत्रत्र नेजा फरवरे, घरतर यमार्ग भूर । भरतर केव का-परां, बररर आगे दूर ॥११५॥ चणनम भुजे चरती, सणमग दूचा शामकार । द्रण्याच द्रमका शोरका, रमधान हुवा रणकार । ११६॥  tve

क्रमानन क्षत्रे परिवर्षा, रक्षत्रज्ञ रक्षत्रे हान । बन्दन वर्धा दो-मनो, ने बनचन बोलियो गाळ । ११%। इंडडड आयो हासनी, करपद भागी कोज । करपद पानों कारमों, शरपट आयों म-बोज ॥११८॥ परको सब पोकारियो, विजयन सुचियं बाच । जोते मा मारे जीवधी, आव्यो हं बारण अश्राच ॥११९॥ सायव सम्मा बीजिये, दीजिये जीविन दान । भनाभ तपर एनवी, न घर नाथ विदान ॥१२०॥ इहिमहिन हं आगरे, करीय राज्यनुं काल । हान दासनी दम्म है, भेतान मुत्र जिल्लात ॥१०१॥ अर्जु न कहि । जोगने, रचुं व कदिये राष । चारश्चं व चिषय सुन्धने, निज्ञमन भोष जिलाव ॥१६२॥ निजयन कर्न आवे वृद्धि, प्रतीन लोरी वनमेल । बाज को जानी सकिये, तो सान्य समेली लेल ॥१२३॥ क्षीचरेय कविको संस्त्रो, करे कायाना बाचा। ज्याम वेरी वहनि, क् छोटे बढ़ी बन्तास ॥१६४॥ होच व हेनु बोलना, सब ओरंग विक वाथ । बळवां जंबी विकारिये, तेवनो कीज लाग ॥१९५॥ वने व के विचे बेहुने, लागी रागी साथ । एक बहाय सरववने, बुओ होहेर सराच ॥११६॥ तूज सुजना मानने, वर्णनी कहं विवेद । छेई असी असमामनुं, केहि व वस्ते एक ॥१२७॥ धर वार्तप्रवर्ग पाय-प्रात्ते सम प्राय सहा अवजोत, रचे वहि रंच वने निजरीत । लुकी भव भूग कर रस मान, तुरे व कड़ी विक्रता कतान bहेरदा। इच्छे श्रम अपर शुंदर अंग, अजाने एवि क्रम करे प्रथम । यह सम म-थण सुवर्ण विल, वेशे नहि निज करे नहि कीन ॥१६९॥ देले सन देश विक्रे और दशक, झांची विक्र वेश उठ अग शास । देले सन मुख्य लेशि दरपण, व जुने जो निज निराधी नरपण ॥१३०॥ निरुणे को प्रम छाचा छवि जिल, हुच्छे वहि जिल असन अजिन । जिहा-के को मन नारी नव्यशिल, बदे निज ताये इनाइन विवासि १९९१ न्यावनी साच्ये वन जो सराये, निक्र बननाये विकर के आये। गये सन मार्जिय रम गील, जहें वहि निज जले वहि चिक्त ॥१३९॥ लदा यन सुन सराचे संसार, इच्छे वहि निज गणे जी असार । देशे वन सुजन रूजेन दोष, सदा समानाय वरे निज सोय ॥१३३॥ यते वहि वर केंद्रि जगवान, यहे नित्त नित्र वर्णानुं प्रधान । वाग्रे

सम का करे प्रवेश, लोगे वहि निज क्यन्त्रे लेका ॥१६४॥ अजनमा जब वादे को जंगाण, समरे को जिज सदाय सुजान । यहे वन बार पना परमांगे, करे वहि जिल संकल्प कांचे ॥११५॥ हिसे वन हेने काचाने क्षाम, अनि निज रहे सन्तरे उत्ताम । रहे सर्व राजी वजेठचं रूप, करे जिल नायं सदाये जो कीय ॥१३६॥ वर्षे सन चंचक चपक चाम्य, इक्टबी निजयन इंडल डाम्य । करे वय रंग वांगे कंड अन, मुटे कटे पट रहे निज मन ॥१६ आ करे सुद आस्यामां ज्यानि कोइ, समझे को जिल सदा सुखदाइ। रखे यह इंद्रिए देवस रत, श्राति जिल्ला प्रथमे जाने असाच ॥१३८॥ देने अन रिचय प्रती-जाय इस. देले निज पाप मोजे महि पक्ष । एवा गुण सदमना को अनेच, सम्पर्ध ने अवये न आवे जो छेच ॥१३९॥ रोहा-केलाच शक्षिये कामके, परमद समना वेच । मुवाबी शृंदो सरे, बीवक्की क्य बीच ॥१४०॥ सबका तुं तो बदाबरो, तुत्र क्यर व कले कीय। क्षेत्र वह तो देन करे, चल कांचक कवर तो दोष ॥१४१॥ क्षानी का तुं कान करे, व्यामी कई घरे व्यान । त्यांनी कई तुं लाग करे. हुं रक्तकाने राज ॥१४९॥ लगशी वहं युं तन करे, बजी रहे बहामी रंग । अस बरहरे वयशाम करे, वय सब तोरो बरवंच ॥१४३॥ अय तोब वयाच्या में सरा, वर सर्वटने म्याय। संब सरियो पडी रही, आंबह करी अवसांच ॥१४४॥ सावत शावताचि एक मूं, अवसी मू-क्षेत्र भांत । करती कृतिन कुमनि, रूमेनि रूकमन शांत ॥१४५॥ जोर इनारो क्रांशियो, उम देश जारती जान । संपर सोभी साज विन, क्जी रचावक वान ॥१४६॥ न्यान शिकाक वर्षत्रो, वह गर्दश्रतो मुल । काम बनाइ क्यर अन, को भरोमो कुल ॥१४०॥ जुल बेन विकासनी, दर्श लक्षण लाम । अवर अशुभ उदमा, ने सर्वे देवा काल ॥१४८॥ जेला जबगुज जन्मयां, मेला गुजरें होय। राज्यो चरे नदि राजमां, भाषों घरे नदि भोष ॥१४९॥ कंगान पह ते बरगरे, वाली बुलामां वास । वच्चो रहे घर विजरे, वल मेलूं व बोक्की राज ॥१५०॥ तम मनर्था तस्करी, को करको कोच जन । नोनं व करि गोलाजने, मेनी समराजय ॥१५१॥ जानुंसं सं अरा-सरी, सरवे तोरो साथ । कुमार्गे कोय पालको, तो सब पवको ताम PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE

आप ॥१५२॥ इच्छान् नहि सके साजधी, भने नहि सके मोन। रहे तो वची रीत्रहां, आभी करीरे जोग ॥१६३॥ देवद्वाए सर्वतुं, करवाने वह बाय । रहे बच्ची हवे राजमां, नाबी नवं गुनामश्रीकशा जीन्यो निजयन कोजने, राज्यो सन एवं रीत । निजय नोचन नव-तरी, यह जगनमां जीन ॥१६६॥ आचड जल सुन्य स्थारे, भनोधनी विजयह । मोले मार्च नाहरी, में जरको सब क्षक ॥१६६॥ बोटा महाजन मनी करी, पूछे करी जाने मेम । जीन्यो निकथन जनसी, नहायिक सम केम ॥१५ आ निजयम करे वहि अध्यक्त, भीव जेवे भगवान । राहमी मो मेद करे, जने मेद की राह समान ११५८॥ सन्मंत्रका बनाव हो, सरे जो सपका कात्र ! सबर बीजे बनाव हो. रहे व बहिये लाज ॥१६०॥ संत सन्युद सहायशी, हरिक्का पन होता। पंतु प्रदुषि परकार, कहे म आधार्य क्रोम ॥१६०॥ जीत्वा पार्व रणसंगर्या, शुर भीष्य संग्राय । सदाच केनी भीदरि, तेथी कोण व सरे बाम ॥१६१॥ वामक्षणा विरोक्ती, वरी विवि क्याच्यो इ.स. । ने बनाचे जीतिये, एशी सई आग्यर्ज ॥१६२॥ जे जीत्वो ने हारको, यह अनादि रीम । सरव कारच सदगुद, महि हार जीन पर प्रीत ॥१६॥। सुणी चलन सङ्घ निजनो, बजना विदेशा काल । वस्वकृत्य जिल्ल वर वर्ष, क्य सुका बाव सुजान ॥१६४॥ वतर-मांबी बरेवा विव, रहे न अमधुं राज । तथने विराज्ये आप तसे, मानो क्यन बहाराज ॥१६६॥ सूच्य होच सह शहरने, अवस करे एक आण । वीडे नडि कोच कोचन, रहे न लेंचानाचा ॥१६६॥ इति-जन इतिहा हेनची, निजमन हुना बरेशा। दनटी काला कोटची, लंबर रचा न लेका ॥१६ आ निरवेर रहे सह नवसी, जला बादी सुन्त । एक प्रतिजय होचे तथा, वेती गणा विमूच ॥१६८॥ अव्यंद्र रहरे जा शरेरमा, निज रायनुं राज । चने व चोरी चोरनी, रहे वहि ब्याबाज ॥१६९॥ विजयन बेटी राजपर, जवजव हुवी अण्डार । विजेष केता रोपिया, इतित्रका हुवा वचार ११७०॥ एक असन विना अपनि, होचे रैपन हेगन । दोष पत्रीना वंशासी, बिटे नहि लेपानाम ॥१७१॥ भनो ने कोच भगवानने, से तजो सबे मनसंग । भानो नहि शिष्य जननी, जो इच्छो सुन्न अर्थन ॥१०था 

कोटि बपाय ओ करनां, जीत्यो मद नव आय । अनि से अब ज-कर्मा, जेइने सन्गुद भन्नाम ॥१७३॥ सोम सन्गुद सेविये, जेथी वन जीनाय । जीन्या वन बिन जे करे, ते सरवे जुठी उपाय । १ ७४॥ मन्तुद एक संसारमां, जिल्ल इरण संनाए । विन हरे के विश्वनं, ते गुढ गणिजे बाप ॥१७५॥ गुरुवाध्य स्रो मरिष्ठ हे, सबपर सीये सरिष्ठ । सो पुर सहजानंदशी, एक उर सम इस ॥१७६॥ इच्छे जे कोष अंतरे, कह मिटाबा कोष । एक अवज ए आवारो, सहजा-वंद प्रमु भोष ॥१७७॥ दास जेनी द्याधकी, जीवा यन जोराज । कान सुणी के नरे नथी, नजर दीडी निर्वाण ॥१७८॥ जीले मन सब जीतियां, जीवा काम ने कोष। होन मोइ हैवे होरिया, जबर बना जे जोष ॥१७९॥ राजा जेनो रोजियो, वददी नावयो वास । नोकर तेना नात्रिया, चाली सुच्यां पास ॥१८०॥ अनसी नर नमाविया, जे मा'संता मगबर । ते वाचे जोतां नजरे, जेम प्रकार आकत्तर ॥१८१॥ भार बनायाँ मुमिनो, सारी भनती क्रोज । रखो व वेटी राजमां, तब पापो निजमीत ॥१८२॥ माची सेवक रूपाम-तो, निजमन जेर्नु नाम । भलो सको भारतमा, व कर्यो संजनगा-म ॥१८३॥ जीति चलाची नदामां, अजीति करी उपाप। वापी काव्या



उत्पी, सबे मधी संताप ॥१८४॥ वशुतना प्रतापरी, सनतुं कार्जु

मुख । सहजाबंदनी सहायधी, निजे कर्षो निष्कुय ॥१८५॥ वन नि-

जमनना रूपने, जोळलाया जा चंद् । इतिजनने दिन एइ हे, कहे

निष्कुलानंद ॥१८६॥ संबत बदार एकोतेरो, आयण सप्तमी चंद्र।

वक्सी सत्वाची सत्व हे, मरवाके महजानंद ॥१८७॥ १व बीमहरा-

वक्षामिशिक्तभिष्युत्मानंदभुनिविद्विते वनभिज्ञवनश्चादे वकाजवनवः संपूर्वः ॥



धीमापिनारायणे विजयतेनसम् । श्रीनिप्कुलानन्दमुनिकृत-काञ्यसङ्घहे

## गुणमाहक.

देव<del>ा - लंबोदर हु लागुं लळी, पार्दनीनतु पाय । हु</del>द्ध हुद्धि दियो इयाम बीर, बांकरसुत हो सहाय ॥१॥ गणपति राजपति गाइए, अवगुण सटे अनेक। गुण विन गोविंद ना रिघे, प्रिजे न अवगुण हेक ॥२॥ गुण पूजावे सबे जक्तमां, गुण पदावन मान । ज्यामें जेको गुण रहे, ताहि तेको सन्मान ॥३॥ गुण अवगुण दो गुंधके, कहं कथा प्रमंप । और गुणमें आदी गये, गुणातीय हे कोविंद ॥४॥ अवगुणकुं आदर नहि, शुभ गुणकुं सन्मान । दोष दिव एह देन्दर्ह, जानत हे सब जान ॥५॥ देव दानव मानव मुनि, सब हे गुणके राज । अवगुणकुं सुझन नहि, रीत रंक यह राज ॥६॥ सब-विध देख्या क्रोधके, तिनुहूं छोकके तान। कहिये जब कही कोन-कुं, गुणब्राहक भगवान ॥॥ एक भवत गुण आकादाके, शून्य सोइ शब्द विभाग । शुक्त कोयल मेना समी, घुड गर्दम कुकर काम ॥८॥ एसी बाणी जाणी एककी, कोय न सुनत कान । एक हुनत यह भावशूं, तोरत ताहीसुं तान ॥९॥ एक घान्द गुणगान हे, एक बान्द् सोई गार । गान भिलावत मौजकुं, गार भिलायत मार ॥१०॥ एक नर अञ्चल बोलही, एक विवासन वेद । प्रसिद्ध गुण दोह वेग्विपे, भयो गिरामांशी भेद ॥११॥ जाकी जेसी हे बोलनी, तापर तेसी हेत । कोकिला क्या देत है, अर्रु काक वर्त्त क्या लेत ॥१२॥ शुज गुणसे सुख वपजे, अवगुण दुःस अनेक। दोय विघ देखे दि-लमें, तो रहे न संदाय रेख ॥१३॥ ( गबुगुजर्जन ) अप छुनोहो रीत 

to be be a best of the test to the test of the test of

समीरकी, बहन हे थिय दोड़। एक बीनक क्षम करे, एक समाव हे सोइ ॥१४॥ अद्युक्त प्रवासन जड़कुं, जह एक विनासन केय। प्रवा तुम एक वेथिए, बहुन कोर्नुजू वेश ॥१५॥ एक आसंह जान आगारि, बाद एक देवन हे पूरमा। जेमी ही गुण क्यामें रखो, नेमी कई सब तुमा ॥१६॥ अद माति अति एक हे, क्षेत्रमादि गुण दोय । एकसे दृश्य अनि वचले, अद एकमे सुन्ध होच ॥१आ एक असि चना-वन जन्हें, जब एक लगायन ला'व । पु:च सूच दायिक देखिये, एवं बोठ शुन सब नाव ॥१८॥ एक पुषर पर पुंचने, अह एक करन बजान । वाहि व भावन संतरे, धारिने होन हुनास ॥१९॥ शुभ गुण दिन जन सुम्बदो, इनदि न दीते होत । वेली गुण बिक विंखको, जब बीके करना कोच ॥१०॥ विश्वो तुम जब बीको, अब बांदिने हो विच । बीठो बारी मानिये, कीने बांदि श्रीमतः ॥११॥ एक श्राक सामुगमः साहावी, सद एक सहावि हुंच । को बहाबन सब नेहरों, वादि व रासे पंड १९९॥ एक बीर वंदी-से जिनमे, हैश्व थीने जद जाद । वांती व यन्ते भावकर, वाही पांच करी वाच ॥२३॥ बाद चाहि मिले विम नोसर्वे, जोहि मोलायन लोग । जानदी जेको सुन है, ताकोहि लेको मोर्च ॥६४॥ एक बान वेको आवको, एक विकास बामरकेल्य । बांदि जावन सांतकर, काई हुन गढ़ि बेल्य ४९५॥ एक कुन जनन आवळको, एक वपट कुन लुमाय । मिलन आंदीमो मूल्पयो, है एहि वित्र हिसाय ॥१६॥ एक क्ष हंद्रायण आकरो, एक कम अकम हे माग । जाक व असे को जुन्यके, होज आमिक देवे हाम ॥१॥ आप व आपन आम सम, एन्यू दिन विचार । एक मोन वर्ष आपहि, सो वस सामको नार ॥२८॥ सुनि दंजी सुन्न जारको, हिथे न बीजिये इस्त । होत वहि सुप इंगकी, शम धाम नम इपाय ॥१९॥ जमर थीगा अक्ष निमा है, निमा मक वक्ष भरावा । यभी एक वहि के किये, हे विषविष शुव विशास ॥३०॥ गुव विजानो सवती कहा, ब्राइचे लाकी इन्तकाय। बाहिकी मोच व बीजिये, समझ रहेवा भाग आर्थ ॥३१॥ एक पृथिती गुन मसित है, अक खुदी बाकी

y ma e pfortt, g budt.

المالطية والمالمالية والمالية والمالية والأراب المالية والمالية والمالية والمالية والمالية والمالية والمالية

जात । भिने वृति सर्थ पृत्यमे, समझ एर पानु सान ॥३ था पुतरे क्षात विकास कीत है, बिलन व एकहि सुन्ध । अंत कति रजन सहि, जाने व सम कोच युग्य ॥३३। एक अपनिसे प्रवर्ते, नवपर भार बहार । सचके गुत्र अरुने नहीं, विश्ववित करो विचार शास्त्रश अस भागव हे अब मुशिके, करना एक कुलाने । जासेती जेली तुन है, नामेहि नेकी वि बात ॥३५॥ एक परवें थों न परंतरी, जब वादियं विज्ञान । क्यां भोताई सरवाकियां, क्यांतां वह काहांमरी पाम ॥३६॥ आब अरमे गुप जेवि जानदि, नावि परण जनव । पटवर पारस को पेलके, रालेशि रीय स्पत्तकाण प्रति विश्व अनेक तुन, वेमंदि बायन वार । देलीवि शुन वद दोपकुं, बादा का-हवा है सार (1)८)। बाद अब केनेकी एननी, सनही सन समान । आनेति रीक्षे क्षमपनि, चन्यपन्य गिरा एवं गाम ॥३९॥ बायु वरून वह विचंक, समझीप अब वच अब । क्रवयन्य सोही सनीरकं, जेहि परते हरिक पश्च ॥४०॥ अय अयव हे बहुविवक, महेनाय ल-सामां ही था। धन्यपन्य भोही समर्थ है, जोहि जरत ६पाम समीय ॥४१॥ बारि हे विचवित बहु, मर मरिना भरे हुन । जाई विवे बरने हरि, आंदी है जीर अनुव ॥४६॥ अब दूरवी हे वह बरबी, जेन इयाम क्षत रका पीत । पश्यमध्य आंशी पराकुं, सेही परि करी सकित 8838 शह भूषम हे वह आगरे, ब्राटि साटीय विश-वंत्र । प्रत्यपत्थ एडि धामक, जामहि रहे गोविंद् १४४8 सब मो-जय है बहुआनके, लेख बोइव अक्य अब ओगय । बन्यबन्य एहि अवक्रं, जेहि जमन मोहन मोज (१४%) अर वामन हे बहुविशंद, केंचन कांमा विकास करा। भारत यहे एह माजनके, जामहि असे जबुन्द ॥४६॥ अवसीरा बरोस बन्धिया, अर भरे निर्मन भीर। पुरुष बन्ने एक बालके, उथाने अस विने बळबीर ॥४०॥ से सनीत शोषा() एसची, जब बाधा चुना पान। पन्यपन्य एवं मुख्यासई, भागे भागे भागवान ॥४८॥ वर्षक हे बहुचेरकी, साह बाह सब कार । करवचरव होती सेलकुं, स्यां मुक्तके औरंग ॥४९॥ संदर संज समारी सुमेंन, विद्योगी अवस विद्याप । कन्यपन्य हे साही

s got a good have with a got

जनके, जेहि नलांसनहे पाप ॥६०॥ सई प्रम सब संत्रसे, अद बाकस नोबी अंग । सह लोटा मुख बोवही, सब वे दे बसव सो-हंग ॥६१॥ कमन संदर बहुविषक, लोहे सोरगी सुरवास । जामा वे'रे करियानके, जसकन वाकि जान ॥५०॥ जब कमरे वांचे कमि-के, दोचरे काल इचान । बोधन संदर किए वचरे, बाब कोवरी हरूरान १८३॥ बना हे वह विषयित्रक, निमन परत नहि पार । क स्वयम्य वह सोही देलीये, जेति वेट बाम साचार ॥५४॥ रंगरंग हे वह रीनके, बीच रीन अंत अब लात । कतुंवा किये क्या कई. हेवाके जाग्य विकास ॥५६॥ के केवार कर्त्यों रंगके, रंगे हे बमय समोत्र । जाई वेरे जगवति, ताहि म आवत तील ॥६६॥ सुवर्ष दश कोप सथ नहि, अपेर्ड जाके जूनन । बन्दनम्य सोप पानुके, वेरि हे बाजजीवन ॥५आ वेह विंटी करमुहिका, वॉची अंगुडी वा-म । बाह्य कार्त कमक कर्णा, प्रश्व के है इवास सहाया ॥५८॥ कमक कुंबल हो काममें, लांहा नंगन मोरा तार। मुक्त मुक्ट बार कररे, क्रमकृत वर लोगर ॥५९॥ क्रमकृत लाला कंडमें, करियोगी किये कंचन । पाये पंत्रनियां वेखके, ओह बोहिन हे जन ॥६०॥ वस्यवस्य पृष्टि वालुक्कं, वेरे हे पुढवीसात । जबर मूचन अनेक हे. सो बावन वाके सम ॥६१॥ वसन जूनन विवविषक, वेरिहे प्राण-आचार । यह बाह्य हरि योपद्धं, अश्रा अरे कसवार ॥६२॥ गण श्रीकारे । यह बाह्य हार यापद्ध, सम्य मय संस्थार गर्या गर्या । व्यक्ति वस्ती वस्ती वस्ती क्षेत्र । व्यक्ति वस्ती वस्ती क्षेत्र । व्यक्ति वस्ती वस्ती क्षेत्र । बोच न वाकि क्रोप बोच ॥६१॥ वाल हे वस विचंद, हेप वाकि जा-ल अनेक। परि चर्च जो प्रच वयरे, वाके सब महि एक ॥६४॥ एव बहेन अब वालभी, हे काकर सोय जन्द । ओहि वाहन जारव क कातिये, क्या बेडे अद्भूष । १५॥ विश्वविषये बाह्य वपरे, परेते अनुरा राच । देने आपं इरवानकं, वनमानि सो वनमान ॥६६॥ बह विवक्षित जावा काकि, सो कहेंने तावन भार। बन्ध आंबा ए-इ जांबती, आंदर्र वेदल हे मोरार ॥६आ सिंदालय सीप सोपाय-में, मने मारी लक्षिया मेग । विछाने हे विषयिषके, आप वेटे हे अखबेत ॥६८॥ और जामन विच अनेद है, रची बंडन राजा रा-का। लाके लोखे लेड महि, क्यां केंद्रे हे द्याब सुजान ॥६९॥ जुनतु-

व मिने वह अन्तरे, निरमन वयने वस्य । आर्नर कायो अनि अं-नमें, अवेदि चर्च अवाध ॥ >>॥ अनुवय मुनदारे दि योग हे, बादा बार वृद्धि बार । लेडि विश्वान हे जनहीशाई, बन्धवन्य लेडि वर-नार १०१॥ पूजा विषविष वेरकी, करनहे कर जोड़ । कन्य शीवन तिहि समयो, बरनहे दूरे कोड ॥ ३२॥ बहुन करवी से बंदको, बर कंड आरोपन हार । जगर पूप जक आरमी, बनारन पारजवार : #33# अतिप्रमादी पहुदेशकी, साचन अरुवर वास । इतिप्रय क-बायन हुफ्ता, अीमनइ दीनइयास ॥ ३४॥ देन बमादी इति हास-कं, देन करी हरि दान । जेहि कम प्रमादी कारने, क्षात्र सिन भ-वे बनाय ॥ 9/-॥ बिली बुकायुवयची बंदबी, जिरव्यक भरजर के ल। सममुख वेलन श्रीहरि, इयाम सुंदर लुखदेल॥ ३६॥ जोगी कि-योगी हे वह अकर्म, पहर महत्त अवेद । दिने हे आई शहामधु, नावि सबो वदि एक (१५%) स्वां केन करी पूछती, प्रशा क्लर क्स-त । संग सुमन हे अब बिनी, प्रमणमहि जामन रंग ॥ ३८॥ हे संपाद वह समारमें, वोजन वदक्त कीन । संत हरि संवाद सम, तेहि वर्ष आवन नोम ॥ 5%॥ धर पहिन स्त्री भेने वर्ष, करना कथा प्रवार । शानन जाकुं भीवति, क्षेत्रवि सन क्षणार ॥८०॥ परिन वार वृद्धि देखिये, इरेड्डे डोरमडोर । इपाध समीवे औ रहनडे, बांडे क्या वहि और 8८१॥ सुदर फुल सोपायन, हेने करन वह हार 1 पुत्रा बरन परायर कहे, जाहे कर मरबार ॥८५॥ दिल हेवी दीनि दामकी, हेन करी हरि लेन। कोचब वेर हरि कंडमें, बोहब वार्क में देन ॥८३॥ पूर्ण मो है पहुंचारे, विस्ति श्रीय रचाना। सुसन मी-ही सोपायते, जो अश्वे हरिके अंग ॥८४॥ मोरा गजरा अब वी-वियं, हैयेहे हार असून । होन् बाने कुशुस देखिये, क्रोनिन संदर कृत ॥८६॥ आरती पारीय अनेकर, कामीक आयत कामा पृत्य क-दे श्रोहि योहीपके, वे हे सुंदर इयाम॥८६॥ कुलूममाला यह कहते, पेर प्रथास संयान । निरम्बन सब विली बापक, मायन युनिजन राम ॥८ आ मान लानकी मनती महि, लेहन बहुविय नाम । पत्य-पन्य ओही रामक्कं, आहि सुने अगवान ॥८८॥ वार्जिश हे वह-विषये, या वाचे ले यम बाल, बाजनहे अजराज खांडी, लाहि मा-

बत कोष तोल ॥८९॥ जेवजेइ गुनई जेडिमें, नेहिनेहि आवन का-व । जवगुनकी एसी सही, वा पूछन कोस नाम ॥९०॥ एसा गुन आयो नहि. जाने रिक्रन राज । अब वहे रहे दरवारमें, वेट महन-के काज ॥९१॥ अब बेली सुल्यमय ओरको, हैये व की जिये होंस। एसो गुन नहि आपमें, तो दिने किनके दोष ॥९२॥ जाही कई जनदीचार्क, तमहि भये गुज बाद । जेही गुनहीन जनहे, इनकि वडी जमान्य ॥९३॥ जद ऐसी अनादि रीतहे, के अधी जब हेरे भाग । भला सुं कोचनो काहा भया, अवनो करियो लाग ॥९४॥ दीनवंश बरवार सुनी, में आयो हुं महाराज । अपन बदारत आप हो, बाथ गरिवनियाज ॥१५॥ मोटी बजर करी में रकी, देखोहो दीवद्यात । श्रीमहजार्वद्धे राज्यमें, कहिक विश्रेष कंगान ॥९६॥ ठाकुर तम ठिकड़ी करो, वहि दुलड़े सुख शिर । मेरा मन अधि-रिया, धरत बहि सोय घीर ॥९आ जब अवगुन मेरा आप तमे, देखो वहि वर्ष दयाछ । अभैक करे अपरायके, भी बाप तजन वहि बाक्ष ॥९८॥ बदरमें जपराच अति, बहुविय करही वास । मान व हायन समर्थे, करन दीने प्रतिपाछ ॥ १९॥ अब कुपानियि प्रमी करो, करन हुं करमाम । लहि वहाइ आपकी, सुन्द दीजिए अब इयाम ॥१००॥ सुन्यसागर तम इपाय हो, कृपाळु सुन्यके कंद। हो नाय निष्कृतानंत्रके, सुल्वनिधि सङ्जानंद ॥१०१॥ इति श्रीयदेवातिकपर्व-प्रवर्षक्रमीसम्बार्भक्तामिश्चित्रक्षत्रकृत्यसम्बद्धिवर्गक्षत्रम् स्वापः ॥





भीकामिकारत्वको निजयतेस्याम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत—

काञ्यसङ्ग्रहे

## हरिविचरणम्।

कोरक मंगळकर बहाराज, राजाधिराज करना करी। निज्ञान हिनकाल, आज शाल मन में र परी ॥१॥ सबके उपर जेकि इवाम. याम जनतके जेहि वनी। सो असुजी पूरन काम, ज्याकि मोटप्य वय जान गर्नी ॥२॥ सो पूरन पुरुषोत्तम, प्रगट भर्ष जमहिल हरि। श्याकुं निषम कहे अगम, सुगम सो हे बरतन घरी ॥३॥ अक्षरपर अविनाचा, जास प्रकाश था अक्त रथे। स्ते करत कळिमळ लावा. बनुष्याकार मोरार भवे ॥४॥ वेदा- ऐसे श्रीयनश्यामकं, वंद बार-प्रवार । इरिविचरन इरिक्या, कर्डु अब करी विस्तार ॥५॥ संदर वेश सरवारमें, छपिया छविको याम । द्वित पर्म प्रसित्त सुवन, प्रगटे श्रीयनक्याम ॥६॥ चेवाई-प्रगट भवे प्रमु पूरम चंदा, निज जनके वर देन आनंदा। कपटि कुटिल कुकुर्मि कुमति, ईनकुं सुख रही निह रति ॥७॥ पापी पालंडी परत्रिय रता, परहोही परधनहरता। ऐसे दुष्ट देन्त्रिके द्याळु, करी करना भये प्रगट कृपाळु ॥८॥ सुभग देश सरवारके मांई, गाम नाम हे छिपया त्यांई । तामें द्विज वसे सरवरिया, परम पवित्र भावके व्युं भरिया ॥९॥ पाँदे हरिप्रसाद पुनिता, तिनकी पत्नी पाला पतिवता । धर्मपान हो ई दंपति हेसी. भक्ति वैरास्य ज्ञान विदेखी ॥१०॥ निनके भुवन प्रगटे बहुनामी, शिव प्रकादिक सबके खामी । संदन जहार दरव सावित्रशा, चैत्रशादि नीमिकी निया ॥११॥ दया घटिका आते जगदीका, प्रगट भये सुर नर सुनिर्देशा। अपर्मसर्ग अत्यापन काला, पर्मसर्गको

क्यांच्य राजा ॥१९॥ यहन जीवर्ड करण अवरारा, जाये जार सबदे जाबारा । सन सुवर्धी शुक्रमनि बारे, एडि सब जन अपहे सुनारे ॥१६॥ इंजि दृष्ट इगाने काना, ईनके वर अने वह बरना । विव बहुनी जरन पटवासा, नेसेहि जरी घरन अव्हारा ॥१४॥ संन सुमाद दुःमाद दुरमानि, यर यनद्याम बाम शुभ अनि । केननेक विषय रहे एवं गामा, विषे आपे अयोच्या गामा ॥१५॥ नवां रहेहे किनमेक दन, वीछे त्यांने चलिहे शीवन । जन्मने अपे वरम एका-इसे. लेकि विश्वमें लुक्जमें जिससे । १६॥ रोग-- वर लजी चन-इयान हरि, लेड कर्माद बार । सेह लजी संबंधीको, असिडे बर-निराट ॥१आ पोणाई-पटोन दिवस कीरे बनमाई, इंन्टे प्रोमा सो बरबी व जाई। सर मरिताबे विमेख बारी, गिरि तहर करि सुवकारी ॥१८॥ वद्य वची बोलत बहुआती, करन बारवर बाव्य सुदानी । स्रो अब स्वन दीवद्याता, किरन वनमें वर्धमियाता ॥१९॥ फिरमा फिरम विने दिव वह, देखेंद्रे वन गिरि शोजा सह । विके आये मुक्तमाथ मांहि, रहे बाक बाम आये लाहि ॥२०॥ लांसे जायेह दुरोस थारे, महादूस प्रसिनी सापालीक परे । अगिनी जायाका करी कन्याका, लांगे चलिए इयाब सुकाना ॥११॥ सिने गोबालयोगी बनमांही, बरस एक रहे बोने खांही। योगकता सब प्रीक्षवी आहे. विश्वि गोपाळयोगि निय्यवे ॥१२॥ इनको काज करिके बहाराजा, चले बहुन जीव तारण काला। व्यांने आदिया-राइ तीरथा, कोटिकोटि जन इरन विचा ॥ १३॥ एवि शीरथमें जन क्यो रहेंहे, लिंग समनकुं दरकान जवहें। विधे लांने पश्चिहें सुजाना, शिरपुर आये आवे जगवामा ॥२८॥ वाहेर गोवा वह वाती व जाये, सिद्यक्ष में निनदीको राये। सिद्ध संवामें अनि अनुराशी, बायुर मास रचन देव त्यांगी ॥४५॥ त्यां बसे इति पाष्ट्र चायु, वेणाको संग जर्मन अर्थनु । लांसे चनित्रं आप महारामा, वय-सचा परवल देखन काला ॥६६॥ त्यांदि वच शच योगी के वास्ता, नपेंद्रे आप कमहीके पामा । वहे तीन दिवस हरि लांदी, आपे नामवाकुंच तीर्थमांती ॥ एआ मेहि व्यवसे रहे दिन तीना, तीर्थ-बासीकं बरवाय दिया। त्यांने चित्र गंगामागर आये, लांके रहे-

भार दरवाम वाचे ॥१८॥ अनि काम दैराम्य असंची, लांसे वनिदे व्याची बहुंची । करिनाक्षमे आये सुव्यसिय, वस नित ला हो वीनचंतु । दश्म कांमे काचे पुरशोक्तवद्गी, हेन्दे द्वार कति वति इरी । सोनो परस्पर सबीजुपा, बरिक्ष्णांचे जमुर मात्रा हुपर ॥१०॥ धुव बागुर अनि श्रववना, नाडुं देवी पनि व्यवंता। बादियाचे आये जविताची, तिरची तिहान अये व्यक्ति बाजी ॥३१॥ व्यक्ति चनि भारतपुर आये, सन्यान बाब हे जीवको शये। हेची आवि बरबीको बेबा, बरिबार क्षम जयो बिच्य बरेवा। ॥३२॥ ताको करी करवान महाराजा, विके चने राजनिवराजा । लांबे आवे क्वेड-राजिये. विषे दरकाम समझं इतिये ॥३३॥ शिवकांचि विवन्नकांचि जोई, जाये जीरमधे निरमाई । ऐसे फिरत बदन अधिनाती, इष्टर्कम संगम सुध्यराची ॥३४॥ रोग-अपांत्र्या विवरे जन्नित. नुधियर जनवान । लांको जीव हेति धिने, निवको जाहे कन्याव ॥१५॥ जाने अजाने जेति सम, निश्मे मधने नाम । ओति सनाम लय अये, होचे न कवड़ अनाच ॥१६॥ केक्च-विक्रे सेन्यंपराके-भारे, आप नाथ नां जानवानरे। देने शुंदर आस्य शहाई, रहे कांचे-क दिन आपे त्यांई ॥६ आ विके त्यांने चले नवाराजा, जाये औहरी शंदरराजा । भूनपृथि व्यक्ति कुमारिकम्याये, क्यानामधे कन्त्री आये || 12|| जवार्ष्य जद आदिकेशने, चलेहे समियाचन हेण्डे | वंद-त्परं जनावादं जनवनि । त्यांने इंडकारक्य करी तनि ॥१९॥ विके क्यारे मामकपुरमें, अनि उत्माद भरे हरि उत्में। नावी रेवा बडी साध्यक्रमानि, एडी रहापी जाये शालपनि ॥४०॥ भीवनाय आवे अगवाना, बहुन जीवको करम कन्याना । व्यक्ति वने हरि विश्वति विहे, आये गांचनाच सिंघुके नीरे ॥४१॥ लांने आये हे प्राविद्यांत. जानि कर्ष अयोशे नव न्यांगे । विके आधि है लोहने गाये, निव बाल रहे बन्द लाग्ने ॥४६॥ विधे आपे बांगरोबन कहेता, पहुन जीवनर करी हरि महेरा। देन्दी भूमि पश्चिम पूर्विता, कहा समारच सम्बंध किया १४३॥ अनको क्षेत्र वधाव हो आहि, ऐसे संकाय करे बन-वाहि । त्यांसे प्रमुक्ती कोल क्यारे, संबंधि प्रमुद्धे हरण क्यारे ॥४४॥ त्यांद्रि वसनदे साथिक संना, त्रिये वनके त्यांन अलगा । नामें

मोटेरे मुक्तानंदर, सब संतमकुं देन जामंदर ॥४५॥ हेदि गाम बा-हिर बाबडी, बेढे बाय तिवां दोत्र पत्नी । म्वामिके संग एक नियां है लाये, करी वितय लाये जाते मांचे ॥४६॥ त्यांदि आयदे वेडे वह-नामी, संत सब बेठे दिए नामी । पूछव आने परस्पर वाता, कैहे एकएककि विद्याना ॥४॥ सुनिहि संत धवन भवे राजी, कवेहे संत सो मिले मोच जाती। कई इरि रखो तो रहे जाहि, जोर ठोर सन मानन नांहि ॥४८॥ सन कहे वहे भाग्य हमारा, जो रहना होय नाथ तुंभारा । नाथ कहे इस रचे तृष संगा, ऐसे इरि करी रवे वर्णमा ॥४९॥ रोहा-रवे लोक्स साचु संगे, सुव्यसिंधु वनद्वाम। स्यान वैराज्यकी बारता, करतहे आउं जाम ॥५०॥ इति वीविष्कुवानव-दुनिविद्यिते दृरिविचरणस्ये वथमो विज्ञानः ॥१॥

रोहा-किननेक दिवस स्वां रहे, संतर्शने सुख्याम । विके वलंदे मदामसु, देलन गामोगाम ॥१॥ जेवाई—सोरड देशमें किरे सुल-कारी, कर्नु सी गामक जाम विचारी । काणक गाम माळियाचे आपे, क्यांकि अक्त बसन प्रवसाये ॥२॥ कालवानि गाम अग-लाई, ब्यो रेड्न अन्य परदन गई । केशोद नाम गाम हे अश्वा, अवांदि अन्त जेठामर पडा ॥३॥ गाम मांगलुं अर आत्मा गाम, आपे इरि नरसिंह द्विज चामे। पीएळागामे आये सुमकदा, क्यांह मिले सामी रामानंदा ॥४॥ भावता गाम संघपुर आये, स्यामें द्विज बहुत जीमापे । त्यांसे मानावत आपे महाराजा, क्यां इतिजनका बहोत समाजा ॥५॥ भीतली पाडोदर वर्ग वंबाख, सील माधवपुर गयेहे इयाजु । सथेषा सुखेज गाम बनधली, अन्त कण्याने अन्ति बरी भली ॥६॥ औरनगर आये जगदीशा, भव प्रका सब अम-रके हिंगा । शिया बनमें युं घारे बहाराजा, करनी मंदिर श्रीकृत काके काजा ॥आ सत्यसंकरण असत्य न होई, वधिह याम जाने सब कोई । एक दिन आप गये कुंतियाना, देशहे गयेहे इपान सुजाना ॥८॥ बादेर गाममें मक हे बारी, सिमरि आपे आपे सुब-कारी । जमुनायब पुर हे घोराजी, देली अन्तर भये भन राजी ॥९॥ कृतेनि सांकडी प्रथि गुंदाहुं, जेनससरमें आपे इपाछ । जेन-THE RESERVE AND A STREET OF THE PROPERTY OF TH

पुर अब गामीन गामा, अन्त क्षेत्र त्यां गये सुवयामा ॥१०॥ स्वा-रिक्कं रामपुर मोहे, गोरवियाधी गये लुंबाकोरे । जे जेह माम नवे रचे राते, ने तेह नाम में क्षां क जाने ॥११॥ रोश-एडि भानि हरि विचरे, श्रमिपर भगवात । दर्ग हरवान आपको, दर्श बहुको सन्यात ॥१२॥ वाधेर वसे वालाकर्म, अन्त क्षति भावित। पत्रव्यात्र किरे गो'लवावर्ष, सो कहं करी विवेद ॥११॥ वना सिमर अरववर्र, बारचटोब्स आये इयाम सुंदर्र । नाम राजुना बसेहे बाबरे, आये नाम बाणले एवं करे ॥१४॥ मेरियाओं नोरवका नामा, नावकडे होई चले सुन्यवामा । विरुव्धिमें बचारे मनुत्री, वह मन्त्रकी भन्ति अति रजी ॥१६॥ मचा वेचलपुर ललाजा, गये सिहोर राज अधि-राजा। भाषनगर दमराजे भार, राजपीपजे भक्त सब भाषे ॥१६॥ नाम नहाजिमें जन्म अंदरे, अनु वचारे निहां बहुवरे । नाम वना-कि शुंदाका गामा, मास्युरामें रहे चह आमा ॥१ आ आये सामी-दर गाम रिक्रपाने, रहे गर्ड सोडे जग जाने । देली पवित्र अति इरिजन, रहे त्यां भाव करी भगवन ॥१८॥ करे वहान समेवा त्यां मेक्षे, अपे अन्य संग त्यां भेके। वह बरवा स्परका ब्याके, किने सग वहन सुन्वाके ॥१९॥ आव सामर्थि वावरी अवारा, किये अर्थन है श्रीबके बद्धारा । त्यांसे चति किरे जेड् गामा, सुनदो सबे कई निनके नामा ॥६०॥ १७१1-कई काठियाबालके, संदर गामके बान । स्योज्यां विकरं जगपनि, सुन्तर सुदर इपास ॥२१॥ वालां --बोपा-वा मान्यनका कामा, अदमासा बनोड वरेने स्थासा। कार्योह नाम निनाका, निर्देश नाथ जब भवेदे निदाका ॥२२॥ पीपकीया इगोराकार्थ आई. भाजपर सुरके सुम्बदाई । सरवई सिक्षापदर रचे हे, केरिये मिनपुर मचेहे ॥२३॥ जाडा गाम असमपुर बळे, वचे शामादि फिरंह गगले । रोहमाळा बाटना बानवि, रतनपुर गये कहे कवि ॥२४॥ सत्रराज्या गाम कविये कारियानी, निर्मा क चारे अभु सुन्वदानी। अन्य आदिक बसे जिएां सारे, एवि गाम प्रभ-जी के स्वार शरूना कर्राटवृद्द गाम समहिषाक, कुद्दार्थ क्यारहे है इयादु । वो र परवादे पहुनामी, आपे सनमंगी दिन स्वामी ॥६१॥ रोशिद बेना सापर गुंदा गामे, गाम जानिका क्यादेहे मामें।

सारंतपुरमें सुंदर दवामे, बहुन नीया त्यां यही मुख्यामे ॥२॥ कार कालिमा सुंदरियामा, बनियानि सामासर करे साथा । चंद्र जोरमिया बागव बवजाती, जियां क्यारेड बयाव शुवाती ॥१८॥ ऑसजायन मुखे करी मीजा, बहुन संग लां अयेहे खेळा । भाष रहे जागहका आहे, अन्य लुगा निरम्भि हरवाई ॥३०॥ गाम कोरका स्वामका मोर्, माथ साराजिक पाक्षिपात मोर्। कावि-वाक वोकि व रेक्टा, समाह वोराद्में अन्तहे वहा ॥३०॥ वानम-पुर जीवदाद शार्व, सुन्वपुर रहे अन वने इचार्च । शोरदका सरती-बपुर सोह, अंथेवादिये गणेहे जिस्मोह ॥११॥ विवरहि बोर्चुका हाथसभी, सोमगण भोपरे हुपे सुव्यमी । करूका अर्थिपाणि काकासरं, कमन्त्र मधेने प्रयाम सुंदरं ॥१२॥ कोटना रायपुर कोन्स-शाला, श्रोकिया वालिक करेवे कल्यामा । ताम लंगामा महिल केराका, व्यक्ति पन गर्यके द्याका ॥११॥ शक्यूर क्रम जांचचपारा, बाववि शयहे पात आधारा। वरियाना निजयना बदाई, विपनिय प्यारेहे स्पार्त्त ॥३४॥ देरवि वाम शरनाम पुरर्ते, रहि राम पने हरि भोरबे । ऐसे अवित अहम करिके, यह दरका मारे जनतीके ॥ १५॥ रोग-स्यास्या विवरं जनपति, सहजानद् सुव्यवान । कांची मारे जीवकं, देहकं दरकान दान ॥३६॥ जान अरन जननि कीयं, सुकासिंचु पत्रवृथाय । इति विवदे बालातमें, कई नेहि नायके नाम ॥१०॥ केवले — बादकोर आये अविमात्ती, सनापुर गये सुन्यराची । भाष विषया नांववे वहनामी, दिगंदे श्रकाव दासकुं आधी ॥३८॥ लास सिमांग कोवेश गांई, आप गोडल इयाब मुलदाई । नाम मोमका विरुप्त वये, जमरावि चोलीपारमें गये ॥ १९॥ कंबोरणा पुषियद्व स्वान्त्, श्रांत्रमेर वपेदे कृतान्त्रं । वपवेदा अस्मिया वजीदे, जायायह जार्थ प्रव मोदे ११४०॥ मुलेका राजवह सनोमरा, कानवहे लब जादव खरा। विवश्चिम दवा जिस्मारा, राजकोटम गर्मे को-करा ॥४१॥ वदासून सरवार सुन्वदाई, आपे दरि वकाली कोई। कृष्ति भावता राजपरं, जांच आयेहं इयामसूदरं ॥४६॥ हम बीfergungegfefanfen gletemmund fad'et femme nibn

वेश--वन्तवस्य आवय ए श्रमिको, पश्यवस्य अत समजित ।

देली ऐसे हि दासकुं, इरि फिरलड़े नेहि दिन ॥१॥ चंचारे-चिटविया भाग वेरनियं, युनारपुरमें अगुजी दियं । बेबि माननि मोबामें प-यारे, कवते मनमें आगंद क्यारे ॥२॥ अमैया केन्यार क्यामें, जाने बालम वनपश्चि मामे । कलुके बाल जाने अविनासी, तमा-विरोध गये सुचरावरि ॥३॥ जालिया गाम जोसमें बहाराजा, वा मायदि नये भक्त के काजा। इदियामा चायदि जोदिया, भाइरेसे भास एक रिया ॥४॥ माधापुरसे गयेब आमने, विवे जनके सुन काम व वरचे । कोठारीया जेमा विचनिये आये, निजात सन अति परणाये ॥५॥ मोरवि भाषत वेजसके विदे, जानदेविने का-मिये रिये। का बागवने किरे हरि नामा, कई वावर सववासंके-माना ॥६॥ तुना जानम वंशिया मोशारे, यस वनारेने बोहेर सं-कारे। गाम कोकरा मार्च मानापरे, मान बनारेहे सुप्रवतरे ग्राम शुजनगरमें रहे बच्च दय, देई दरल किये जब बगम । स्वीते गये भावकृषा कृष्यी, देखी बीत अति लां अवसी ॥८॥ सांमनरा दे-शतपुर द्याला, भाग व जिसे जिलाये कराता। नाम क्योन बज-स समर्थाना, निया चपारे ने आप अगवाना ॥९॥ गाम व्या सद नाम योषाता, जनहित फिरम जनप्रतिपाका । नाम बेटा जांगा-कि अलाह, ज्यांदि बनारे इयाम शुक्तवृत्त ॥१०॥ वृद्धि माथ बाहेर है तेरा, जियां किये हरि बोहोल बसेरा । काळाललाय मनिया विवरणी, कोकशावमें इसे एक वर्ती ॥११॥ माम सांचाल प्रयानक-माइ, नये कोरविये आप इच्छाइ । नाम रनविया कई नायेजा, निया वधारे ने राज अधिराजा ॥१२॥ गाम गोपरा बोक्वमें इया-मा, पई दरवा अन दिने समामा । पोडेर भांबची गाम सेरडी. धन् प्यार्थे माने पन्य पदी शर्का अरकता नाम नाम समायोगा. विने अगर्क ला आर्थव अमोचा । माम शहरा मजीव पुनवि, निर्धा गये हरि करी जान जिंदे ॥१४॥ गाम केरा बंदरा वस्तिये, लां जह अवकुं समन किये । रामपूर गोंडपुर गामा, लांसे बांबानि जाये सम्बद्धासा ॥१६॥ कोटका वका गाम पुत्रह, इतिजन हिन फिरम इरि मई । यमक्का मिक्समें समाचे, अवाहमें अव्यक्षेत्रम नाचे ॥१९॥ कंपकोर योपारि रवेते, अनगरे नाम बहाराज नवेते । यां-

करमर इधिरपुरमें, आये वाये जन जातेए वर्षे ॥१३॥ आपूर सावर आकंसर वर्ष, लांदि गये रहे आवंद्यवरम्यु । नाम जीमा-सर नारायणमारि, संगि नाममें नयंत्र हरि ॥१८॥ व्यक्तिया कंटारि-या चिनरोडे, लां वरि फरी दुछ मान मोडे । विवली मान किवि-या बगरे, निया गये वधु सुन्यमागरं ॥१९॥ सानवपुर वाच गोन-रके, शुक्रपुर गये आवंद भरके । ऐसे अवनिमें किरे अविनासी, संत सुन्तर इयास सुन्तराकी ॥१०॥ रोहा-रामपुर रात्रोजने, प्रका-है से बाब । विजापर वे आपके, किये वे अब सवाब ॥२१॥ मीजिए देशके संतिये, संदर मायके भाग । निजनके दिन नापजी, कि-रमहे श्रीपनद्यास ॥१२॥ योग्यं—इरिजन दिन आये इक्ष्यदा, निरम्पी निजान पापे वन मुद्रा । वानसरमें वापे निरमोइ, आप एकाएक संग नहि कोई ॥१३॥ तवाय जारवा महेमरि, देवचराहि क्वारेने हरि। दुमानां एक नामके नामा, नियां नयेने श्रीवनद्यामा ॥१४॥ प्रांतपरा अंकेशकिया गाळा, मेपान जापेहे दीनदपाला । मुख्य आपके सममें मुं चारे, इयां संदिर होय एक सारे ॥१५॥ एसे अनोरच किये है सब, में बहि करेंगे सो जब । विचलि सायका मेमापर रचे, सामका करमक चुडे गये ॥२६॥ वडवान द नेमका सियाती, जल शासर्व आये सुलदात्री । क्वावि क्रवांना वामने-बार, कंबारिय आये सुरमुविक्ता ॥१आ अववाक्य बरोहये बहुना-भी, गिये सिंबहिये समर्थ आमी । गाम समता सातियाद बाबा-मा, लाख मानिये रहे अगवामा ॥१८॥ नाम देवस्थिया चंडिय कथे-हे, एहि मामरे महाराज गयह । क्षेत्रमा रामगरि कराये, कर् मारिये विवासे आये । १९॥ राजपुर मेलामना मधियान, मानकर-लय मोबामर विधीयांचे । नियां बचारे ने बमुजी आवे, देह दर-बान क्रम पुल कार्प ॥३०॥ ब्युका सापर व सियान्ये, दिये ब्रशान कांनोलर इपाले । इकाना समादि सरगवाका, निर्मा गण्डे जनक नियाका ॥३१॥ वेजनका जानका बोर्ड होए, यास्ता वर्शनक आये हरि सोह । रायपुर काका करेंद्रे, विस्तानाका काठासे नवेद्रे ॥६२॥ बोसका कोस्य गनम पोसके, नियां हुई इति एकान बोसके। बरी-था नाम वायमे बहुरायी, त्यांसे विके वने समस्य कामी ॥१३॥ 

ELY

जान वाला कोचे जनक्यान, रहे स्वांति इतिजी का जान । ताल कंचार्य सांवदे सुन्वकारी, जनीपुरमें आगंदे भोरारी ॥१४॥ तेलकाण व कड़ कामंदरा, किशन करन हरि कावन करा । जान कर्य सुवार में जापित, देन्यन है जिलकाकि भगति ॥१५॥ तेला— वाल्युं नाम अब जायक, क्यां विचरे हरि आप । देरे दरकाम हा- वक्चुं, किये हे जब निकाय ॥१६॥ जैसे अन्त हे आनमें, तैले नहि हे क्यांत्र । सेवा करन हरि संवकी, जानि कटा सम्वांत्र ॥१६॥ वोवर्य—वोन्यापुर वर्यात पुरुववंत्रा, जियां १ये रजनी अगवंत्रा । वाल वोवर्य राम रहेने, सब लोककु दरवान दियंते ॥१८॥ वाल वालेक वाले राम रहेने, सब लोककु दरवान दियंते ॥१८॥ वाल वालेक सारे कार्य गाम क्यांत्र हरि करेने विकासमा । वालका गाम कंक जन्म हे वक्षि, जन्म आग्ये देन्य अदा ईन्यी ॥१९॥ वाल वालेक खेल सुनवरे, अन्य क्यारहे नाम स्वांत्र स्वांत्र । नाम क्यांत्रारिक आवे खेलाकी, क्यांने कार्य बोलेरे सुन्यराही ॥४०॥ इने वंशिक्यनंत्र हर्त्यराहित हरिवरण्याचे हत्यो विवास ॥१॥

रोश-नाम कोलरे आयके, दिये सक्तुं दरकार । विस्त्री कर विज्ञमानकं, जनम अपेरं एक । १॥ भगरं-चन्य भन्य मोनेश साथ, जियां जन्म रहत निष्काम। यंच मनपर मीन हे बनी, बड़ी देख म तजे जावनी ॥६॥ ऐसे अन्य देशी अवसंता, अपेदे राजी आवे क्यू जलना । सनमंत्री सब देले विशोमनि, सनकि सेवार्वे जहा क जी ॥३॥ ऐसे भक्त देशी भवे राजी, बोलाये भक्त आवित पुत्रा-जी । समहा प्रमाणी परम विवेका, जांदि मंदिर करिये कई एका शक्षा माने बैठाये संदर भगति, जो तमकुं होये बान ए नमति । तम मोन्या प्रतामाह हरियम, जंगरजाबी जाबि मन्यपन्त ॥५॥ एक पार इतेमरे हैंगे, को तम कहे बाप किस कैये। सबोरच ए है बेरा समका, करी राजेने बोहोन हमका १६॥ एह देवार्थे संन व बेरे, रहिके राम जनम सबेरे। को करी मंदिर काहि बहाररजा, तो रहे सब संगको समाजा ॥अ। युं कहि जोरे सबे सुत्र गांव, तक बोबे अनुजी सुलदानि । सुनद्वं सनसंगी अन्य द्वारे, करि हूं मंदिर संदर सारे ॥८॥ ऐसे कहि मदिर कराया, लागे नद्वयोदन पचराचा । जन्मभोदनजी बेठाचे महिरामें, किया ए काज महाराजे

अधिरमें (१)। जरवनोवय को तम अधिज्ञति, याने बेठाई जायकी बारति । एनते काम कविके सवास्त्रज्ञा, । चले आवे राज विधाना ॥१०॥ गाम गोरासे वये गिरवारी, विवे लो जह सदर वादि । कोषि बाक्य कादियुर पश्चिमादे, कामनि नवामाम जानादे ॥११॥ कतिनात कोठविया सर्गकाका, रनमपुर केवरा मपाळा । शिकार शाने गये मुतर्गना, असे संच इने यह संना ॥१५॥ नाम वरहते आयेहे बाथ, योग धूने तब जसांचे निज हाय। गाम गांचले हे अन्य कतारा, त्यांनी प्रचारे प्रमु बहुबारा शहेश। रक्ष्म गाम विविध कह-लहे, क्रमे अन्य साहित रहतह । कविकाताकि कई क्या बहाई, बेर-क्षेत्र क्यां आये सुन्ववृत्तं॥१४॥ व्यवना व्यवेश रोशकं रवेशे, जसका लाम भंपूके मचेहे । ऐसे भाजमें किरे भगवंता, दई इरका वह बढारे जंना ॥१६॥ रोदा-बारावे बहु साम हे, कहुं साहिक बाध । जगजी-वय क्यांत्रवां शये, वये औ पूरमकाम ॥१६॥ वदोनरके चिनवी. कहं गरीके माम। सोई जाउथ अंबारिय, श्वां गरेहे सुम्बयाय धर्आ वार्ता —वाश्चिषका बरमचे बहुवाश, गये द्वारिवे वास आधारा । आवेषा वरोकार्वे बहुमामी, आने प्राद्ये बांगवे ना-बी ॥१८॥ ऐपनी लिंपामी ताम लाईना, निर्मा आपे करे अन्यना । हैं बुरवज कावपुरकांद्र, गाम सोलांचे संपंत्रे सुवादाह ॥१९॥ वित्रजी मुक्तंत्र मोराका माना, पुरेशमां वक्तं किये कियामा । नाम सीराज्य श्रद्धवाच्या व्यवस्थे, बन्नव्यस्थं रचे इति राज्ये ॥१०॥ साम देवाण शर्थ अविभागी, योचासमये स्ये सुमराशी । मरशि क्रिनीश यायय-नामा, नियां क्यारे हे सुन्यामा ॥११॥ नाम बोरमर अर्थ मुत्रामा, वेरे गयारेडे आकारम कारना । वेदरका वाक्षेत्र गाम गांना, नियां त्रवे हवे आपे असवाजा ॥१९॥ वनामान करमान् केवे. नाम जो-क्षे श्रीजाय हो हैये, परंपपस्य वरताल्यके वासी, जियां बहुत र-हे सुन्तराची ४६३॥ दिये समैपा शत्मच क्रवेता, विया विवे सन-संती वस संता । दिये दरका स्पष्टका दिय राती, किये संत स्टूकी वहानानी ॥२४॥ विशे विशे खोड़ि महिर नीमा, नामें वेडावे अनि जु-र्रात वर्षीया । वर्षेत्र वास ग्रंपास सुन्यकारी, बरही दरकार वस वर नारी ॥१६॥ जोजो कर दरशय करही, सोई कर नवदेश व कर-

ही। सनसनी संबद्ध जाने कैंग्रे, ईयां जानका होत समैवे सर्वस राधनीती त्रवोचनी एकाइफी, विव तेरे व्या आवता ईमली। ऐसे सागन्या करी इरि आपे, बाबी हीती सब बन निक्वाचे ॥२अ। विधे क्यारे बसु जेकि लामा, सुबो सब कई तीवके बामा। नाम सत्राया चांना ६ वळोटे, रोज्य जामरोज्य जना हे सोटे ॥ १८॥ जेडवेपरे प्रमुत्री प्रचारे, जनसंदावें व्यावंद प्रचारे । समग्र-री बोरियाची को करे, जाबरचामें राज हरि रचे ॥१९॥ पणमोरा क्यरेड काफोरफं, नवे करि त्यां वेत्यंके डाफोरफं । माथ मामवा विरंज कुलेले, निर्मा प्रचेने आचे अमनेने ॥१०॥ वरनाज्यको बाद-वि दिशमें, कई मान इरिजन है जिसमें । बांचनी गाम सेमान्य वीयमार्थ, नियां जीहरि बहुवेर आस्ये ॥११॥ मास पासक आधे श्रंबोबारे, देई ब्रुक्त कृत्व बमारे । नारापुर सोजीनरा ओई, रोक-क कोठाची देखेंदे होई ॥१२॥ काकि संबरोध्य सपारी परिवाले, सं-जीवादाका क्षत्र वह रहे । वसु अनंदरे वयेने महाराजा, गये मा-नरमें जिल्लान काला ॥६३॥ वां र लेखा रचवानता हुए, माथ प्रमा-ना क्यानमें सर्वे । निर्धा क्षमनके कह हरिशक, वेली समय स्थ कियों जगम शहत जिसे सामर्थि वेलाई स्वांद्रवान, विके सने देन्तर जन गाम। गाम शामगोली प्रमार बामी, अवे विलोदरे ब्यास क्षणराष्ट्री ॥३५॥ वशियाद विकास वधारे, वासनीतिमें आजंद क चारे । भाग प्रकास विषय देगाओ, दिये अवक्र दरवान व्यासे गुक्ता रोहा-नेस हरि किरि जयनी, किनी परम अकिम । सो परापर जब है, वांचे भारत अधिन ॥३ आ नानां —गाम अरेरे सचे सुन्त-मिष्, प्रवदावादवे बावे दीववपु । गाव प्रवचन श्रेत्र हे सारे, रकुमरचे प्रमुत्री पचारे ॥३८॥ कतनाल्यमें आयेहे कृपानं, मध लारवे अब अलिकाई। अलिरांकि चंदविचे सहादेख, नियां सचे है-वाधिरेय ॥३९॥ लुकाम सलकि योकामध्ये, स्वे कावरोती आर्यक भरमें। क्रवा गांव अब वांडवारी, नियां क्यारेंहे इयाम शुम्बकारी ॥४-॥ माम मांकवा व केशारा कशार, हरिपुर मधे संग सुव्यक्ताई। माम मामरी महेते महाराजा, आये विस फोमर जब राजा ॥४१॥ क्षी बोलिक्कानरवृतिविक्ति हरिक्किकावे क्यूचे विकास ॥४॥

-----

रोग:--चरपपस्य ए जास्य भूमिके, वर्षा दिवरे जननाम । इनके सम एके वृद्धि, कर्ष मुख्यों कथर बान ॥१॥ कार्या-नेमपुर जब बबानाये, श्रीवृद्धि आप प्रधारे हे लागें। जेनलपुरमें जब पायब, नि-को किये बसूचे जनम ॥१॥ दिव जजाये नियां बहुविधि, बसु परचा जनाये प्रसिद्धि । आप नामची जनाइ जीवन, जन्मवयंत्रन ज भवन ॥१॥ वास असनातिमें आपेते आपे, नाम क्षेत्रे जन पूर्ण कारे। नाम हाथिकन कवना कहेरपूर, त्यांकि हरि हेन करि रहेरपूर ॥४॥ गाम वेकाल्यकि हे विके बाता, जियां बचारे बनु साक्षाता है मान देनाम मिलमें नवहे, बासनामांदी बान्यमजी रवहे ॥५॥ कोलरा मेमदाबादे बहाराजा, व्यक्ति कर करवा ताले काजा। अमदाबाद आये अविवासी, दुसदमन सतन सुवारासी ॥६॥ मरमारायम देवकी भूगति, करी अदिर वेठावे बहियति। केदेरके ब्राह्मन सम्बद्धं जमापे, विये समैपा भी कमे न जाये ॥आ जीनके बंका दहें दे व्याकृ, चने हे अध अनमतिवातु। को टेमर मोटरे मोरारी, मा'ये बाध लां जिसम्बद्ध पारि ॥८॥ महासम्बद्धे मापेने मनवेला, रहे राम ला क्रिस कविना । बचारसच गाम ओमा नामें, नवे इरि रवे रजनी ए गामे ॥९॥ नाम बहु वहमार्थे वालव, आर्थ कोरज गाप वेति विगव। गाम प्रतिपद हुंबानि तामें, वाथ आपे करजीसव नामे ॥१०॥ लाक बांगरचा बारदिपुरधे, आये वांगरोत वनने सु-रमें। वेड नाममें अन्य भावसार है, नामहे मुन्तन वह उदार है ॥११॥ आहि पपारे मणु करी मीति, वेली एवं जननकी रीति। वसई गाममें भक्त हे भारी, ना'ये बाभने निर्वत वारि ॥१२॥ वि-समगरकी वरत् हे बाता, जांदी पचारे ने अब सुन्दाता सहित काहेरमें पथारे। निजायन यन मोद पथारे ॥१३॥ शाम गुं-क्यामें व रवे गोविंद, गये वहमगर सुम्बद्ध । वहमगरमें रये इति रानी, दीवे सुन्य जनके यहामानी ॥१४॥ रोहः—विवरत ऐसे वा-स्पयती, भूमिनर भगवान । रेजन देश जर गामकं, जनहित जीवनवान ॥१६॥ नेतारे-नाम झुनामन प्रशामें आहे, त्यां परि संनकी बंदकी बोलाई। गाब अवटार हे एक लारा, खांहे रचारे ने भाग आपारा ॥१६॥ शिनपुर जाई किये सभैया, करे बन्सप सो जात 

न कैया। किये पून आमनीके जुन आमा, विकेशनुत्री वोडे शुन्त-वामा ॥१ अ। पारतयांति परक्रका चयारे, निजातन वन ओद वयारे । नाम भक्तेचे नचे भनवाना, दिने सवद्व इत्यान दाना ॥१८॥ मेमा-वामें भीयदाराज आये, दरियक्त भावजूं जिलाये। गाम वास्त्रवे आपे बहुनाथी, करे स्मोह निजकर आभी ॥१९॥ गाम गेरिने नवे हि गिरपारी, देन्दी अन्तको भाव अनि आरी । नाम नवाना विहार मेवासा, रहे राम आपे अविनाचा ॥१०। विजापुरमें बसे इतिजय, निया गर्प हे आपे अगवन । सिटपुरमें आपे सुजाना, ऐसे फिरन कम्पाना ॥२१॥ नाम नाम नामरोडा सोई, प्रमु क्यारे अनुस्ता कोई। ब्रांतिपुरमें बसुत्री क्यारे, क्हून जीवके कात्र सुवारे शहर॥ ताम मानमे आये जविनाकी, किये जन सुन्धी भूजराकी। नाम बादरिमें नाथ गरेडे, यहि दोयंद त्यांदि रचेहे ॥२३॥ शाम प्रवासे आपे संतमने, जब जियाचे जित एएछरंने । क्रोनवहा एक मा-वका मामा, नियां गर्थने सब सुन्ययामा ॥२४॥ प्रधासनाचा भाग्य पन्यपन्य, जियां गयेने जगजीवन । जार्रे अमे दिवे अवसीरे, वारे सर्गुर चार को मोरे ॥२५॥ अंबासनमें आये वृति आपे, द्रं परवास जनपुःश काने । गाम मानासून गये मुद्रुद्रा, निजन-बच्चे दिवेदे आनंदा ॥१६॥ गाम मंदासम गयेदे वाका, बहुन जी-वर्ष कियेथे समाना । कदनासिंधु गर्धहे कुंबाने, कही राजपुर हे-क्या रयासे ॥२३॥ रेश-जेविजेवि साम शये रथे, कये निजेक माम । रामा के के रहि गये, स्ते म कर्ष गाम माम ॥१८॥ बर्मास्य-में इक्षित्र दिया, गाम सुनके भाम । मो कहं सुनियो सबे, क्यां गरेहे पनद्याम ॥१९॥ कोकई-शाम काकरान वर्षे बहुवामी, सं-दर इयाम संवद्ध लामी । आनंद गामे गये मानपनि, देली हुए दासे वर अति । १०॥ मांकरदामें आये सुलकारी, रहे रात अक-भवदारी । वंदिर बडोदरे आपे सुनदाना कहं कर्छक में मा-हिंदी बाला ॥३१॥ बूप मनु पपर।यन काजा, आवे सामैचे शत बहु बाजा । गाजने बाजने परं बपराये, करे बिनय परे बसुके बावे ॥३६॥ किति पूजा पोजका प्रकारा, भूप दीव कर आएनी बनारा। कर जुग जोडी बहन बरेशा, इस वे तुमारे कही नामे शिशा

المشطول والمراجا والمالوا والمالوا والمالوا والمالوا والمالوا والمالوا والمالوا والمالوا

॥६३॥ विके मसूजी आयेहे बतारे, जाये दर्शन वाहर शोक सारे । वहेबहेके मोहहे माना, अति सामर्थी हेलाइ भगवाना ॥६४॥ निर्धारचे इसि दिन नीना, पिछे चले सभुती प्रवीता। स्वांत्र्यां गये जग आवारा, लांट्यां किये जीव अवशासा । १५॥ रोहा-ऐसे अरम अवनि करी, जगजीवन जम देन । जेदि जम निरमे मापई, भो जाय वहि जमनिकेत ॥६६॥ योगई-एकत्रवारे आये एक इंगा, वृदि फिरि करे पूर्वाच पार्वना । गाम समामे आपे स्पाक. लनीपुर वयारे कृपातु ॥३अ। गाम पादरे आये पर प्रवा, नेनि-वेति आहं करून विगम । सरसवतीमें आवे हरि आये, वाच वि-रव्यक्ति जब सुन्य वाचे ॥३८॥ गाम मोन्यंड गये सुन्यदाई, वहं रात एक इरि त्यां। गाम दोरामें आयं इयान, अकारत्यस्य अक्तविकाळ ॥१९॥ साम इंकारिये वर्ष इरि शते, त्यांने प्रशुत्री चलेहे मधाने । नाम सिनपर अखदर आये, इविजनके मन अति भावे ॥४०॥ रोहा-परमारच देन कारने, किरनहे वाक्षोगाम । दूर निकट देश विदेशकुं, सनम महि धनद्याम ॥४१॥ ही श्रीतिष्टुसान-रम्भिविर्यापेते हरिवियरयम्ये रंगमी विज्ञासः ॥%॥

नेतरं—विके प्रसुती तथे साहेगरे, त्यासे नाथ नर्मता उनरे।
साणीपूर्ण रथेहे अहाराजा, किये क्या करी किरके काजा ॥१॥
रथे चौकीमें रजनी जान चाक, त्यांसे उठके चनेह सवाद। त्यांसे
साथे गाम कोसाला, नापी सरिना चनरे द्याळा॥४॥ रस्नुधानमें
कियेहे चनारा, जाये दरकान जन अपारा। सुरन वाहेग्में आये
सुन्कारी, निरन्धी निहान भये नरनारी ॥५॥ जे जन निर्णे नाच
मेनुं भरी, सोये अन्याच मोये पिछे करी। जाने अजाने जोये अविभादी, सो सब भये हरियाम निवासी ॥४॥ ऐसी मुर्लि सुरनमें
आई, करी श्रीळा जनमन आई। धन्यपस्य ए जानकी भरित,
स्यांधि वथारे जाथे पानपनि ॥४॥ दिवस सस निर्णा नाच रयेहे,
सांसे अभुनी बीछे अयेहे। हिरन किरन देन वरवान जनके,
देखन नाम पुर चननके ॥६॥ ऐसा—धर्मकुवर धर्मपुरे, जानम किये
विचार। एक मुमुशु जीन दिन, नारे वह नरनार ॥आ वेणां—एक
दिन हरि आयो वथने, निरन्धी लावो नियो जन मने। हार जपार

पहेराचे आधक्त, माचे विकाद क्रमाचे लाधक 828 दिवेहे ब्राचान अबकुं ब्यास, मांने चले अनु शान कात । विकासिने बनु रचे पीर चारं, काले क्ष्याय चलेके सवार्थ ॥ भावत सामने साथे बाजवाना, विज्ञानेत्रक सन हेज्यू जाचा । वत्यधन्य वर्तपुर चन, जिल्ला क्लन विवेची इतिजय (१) भागा असम्ब व सार असारा, निवर्ष लंगानी किये निरवास । बोहोन मन वंच केन्य देखे, यम जिल लाती पुरव a वेले ॥११॥ कोचन कोचन विने लाचा लंगा, जीव**ई किनेहे क्**यर भगवंता। सोई अनवे करी बहु बाला, प्रमु बनावे सहजावंद साझा-ना ॥१ मा लोहि सुंबद अनर आंटी पार्श, जानो व रक्टे किनकी बचारी। विके शरवादी तरम भई जारी, जोवे क्वारे वेरे सुन्ववारी ॥१३। जिल्ली मान्य भई गदगद गीरा, दोच अपमन्ने फलंद शीरा । विछ योगाये माथ करी हेना, नव नवे बाई होई सचेना ॥१४॥ नानी पाय विवय वह कीवा, राज्य शहाराज में नुवर्द्ध का ही गा। वैसे लामके चोले पहि लेवे, राज्य एकारे अपने व चैवे ॥१५॥ लुमही को राज्य नुमारा । अंतरमें रच्ने अभुजी ध्याम, ऐसे की की सर्वे सा सभैषे, लाम बाल्यम बांमदावें गये ॥१९॥ रेश-विविध आश्वी वांसरे, इति करिये लीका लांच । देश इत्याव सवर्क, वसु आये वर्ष-पुर जांच शर् आ चावचं--एक दिश जाचे जंब जेसरते, रचे राम का आनंदणरूपे । केहर मरोपर्धे आवे भगवाना, दिने अवर्ष्ठ क्रवान दाका शहरत गांच बाग मोचा एक मारा, लांति प्रवादेने प्राच काचा-रा । सोना गाम कोसमाबि कहे उन्, जीनाविके जनशीय रहे वर्ष ४१९॥ भाग मोधोर आपे अविवादी, जन कारय किरण सुन्धराती । माम क्योमने वापे सुक्कत्वा, केयोद लागे रचेते वाधिया ॥१०॥ पुत्रा भागमें वह हरिशय, रही राजनी दिय दरकान । काहेर जामोद नाम केश्याका, जांकि प्रवादे ले वीमन्याका ॥ देश मान कारेने रजनी रथेते, भाग गामधे भगवान गयत् । गाम गजरा वर्षे धावकांना, क्यादि रावे द्याम सुजामा ॥१२॥ मान बोधादिसे बने द्यादे, वहीं पतरे हीन प्रतिपाई । साथ नाजने प्रमुजी पराहे, दिन्हीं बाच अभव शाचारे ॥१६॥ मान्य प्रमणाध्यार्थे पृष्टि आये, सब अवने धन वानि भागे। माथ बदारूपमें रहे जेहि जन, निरमी बाच सो चरे

बाबन १९४४ ऐसे फिरमने नाम पूर्णने, मारत जीव कारत कहे कवि। जो जो नजरे यहे नरवारी, मोई जान नहि जमके बारी ॥१५॥ तियम गियम गिमे वह गामं, ज्यांहि च्यारेडे श्रीश्यदयार्थ। संग देले रही गये पने, सबे संभारी केने नहि पने ॥१६॥ आस पास अबि अनुकर्ते, क्षे कलक हरि किरे में बरमें । अन्य अधनक के ताम श्रम परने, प्रतिजनके जिल्लान करने ॥१ आ देले किरी परि कार्य गर है, एवं कृतिके आवय है वर्ष कहे। श्रीयनद्वास कर्न् लुक्दारी, जिल्ली सुन्ती अये बरवारी ॥१८॥ बंहद शीवदं दरवान दिया, केमनेक सुत्री समान किया। प्रमु प्रगट सुनी जन काने, देश बढेवापी आये जब लावे ॥१९॥ जीव जिल्लामु जगनमें जोह. सीनो सुजिदे हुए बढ़ि कीए । जे जनके अनद पढ़ि कार्न, सी अप बामके बामी में मानूं ॥६०॥ आये बहुन अपने अवनात. हैवी जीवका किया है पदारा । हैवी आसरी जीव जो जगरे, सो शब चनाचे मुक्तके बनमें ॥११॥ आप धनाचे पदारे कर जति, पाकि नियने व होये निनमि । बरमार पढारे अवारा, सो शह आये करत जिरुपारर ॥३२॥ दियेहे बहुत जीवक आयपदाना, अनि सामर्थी वावरी अगवाया । आव संवय अब मानके हारे, संग वानके वक जीय लारे (153) सनमंगी बाई माईकि बाने, नारे जीव मां कव व जाने । विके किये जानार्थक होई, नारव जीव कारव कह सोई ।। हा एक पहुने दोरेदो प्रमगा, जो मिले हो बिरन सुन प्रवेता। ऐसे बहुविच किन पदारा, बाकुं कथन न आवन पारा ॥३५॥ अनंत जीव सीचे हरि पारते, दिने सुन्य मो जान व बरते । देश विदेशा क्य गिरि प्रवार्द, नारे जीव रहने रचे न्यां ॥३६० पुर नगर गाम अब क्षेत्रा, निवक्तं विभि करे जन अदीचा । देह एरचा स्परपाकी हाना, वहम जीवको दियो कन्याना (क्रिअ) वद्य बंची वजनके नाहे. क्यांचर अंद्रश्च बहोन पदारे। जोजी बजद बावे बयुपारी, सोनी सम्ब काथे अनि भारी ॥१८॥ लाको जाअर्थ भानो मन कोई, सब क्रिय हुमान लामहे भीई। तासे जीवको होत क्रम्यामा, जिल्लहेक कृत बाल निदाना ॥३९॥ सब कारमको कारम जेरी, सब अवनारके अवशारी पूरी। हो तरतन परि इरि आपे, तारे जीव पह आप

वनाचे ॥४०॥ इति विकासकी कही वाली, जवारच कही कोचे विक् जाली। एनती शुनके रहो आर्नदा, एमे कहन्त्वे निष्कुलानंदा ॥४१॥ वेग्टा—इतिकारचंदी वाल, कही सुनी में देवी इसकी। वर्षु हे ग्युं साकाल, केने व वने कवि कोदिसे ॥४१॥ इते वीविकासक्युविविश् विते इतिकारकांचे वही विवास। । ६०

रोवा---ओजो साम सनीचे करे, क्यां नचं रचे वनव्यात । जन नवाये ज्यां बावजी, कह साये स्वसंद साम ॥१॥ नोसर्--कविये ना य इति अन्त्रेत् अरमें, विशेषा पुविषा होतुं सहसे । अनोरमा सरत सरिना, नाथे बाडी बाध किय पुनिना ॥२॥ बायरा नदीके बार अनुना, नामें वा'वे धनदवास सुम्बद्धना। देखि वदी नदी जो रावती, माने नाथ मा'ये प्रामपनि ॥३॥ वटि रावती नदी विसर्वि, नामें मा'ये हरि कर्त्रहें कवि । बानवाकुंड नेवकिसे वनद्यान, का'ये ओरमें संग सुन्यपाश ॥३॥ गंगा यमुना वर्ष बड़ी गोयनी, वर्ष वर्शमें बहाये आक्पनि । नेतालागर श्रद करिकाशमे, मा'ते नाथ लांडि व्य समे १८॥ शमेजर सिंधुके चारतं, लाडिमें ना'ने वरनिरादम् । विषयकांचि विषयुक्ताविमें आह, एवं बदीमें वा'वे सचे सम्बद्धाः ॥६॥ चंद्ररपुरमें विरम्भ जीता, तामें बद्धाचे द्याच सुपीरा । वर्षपुर नदी मांचे सुन्वपामा, वत्रनम नीर नदीके नामा PM पत्रक विकासीकी नदी निवासे, नाव ना'वे अन किन सुकासे। भाषीनदीमें वा'वे जब नाब, दिवे दरवान जब किन सनाब ॥८॥ वाकियं रही वन्त सुजान, विकि नदीने किनेहे साम । नरीच बाहेर वा'चे वदी रेवा, विश्वामित्री वा'चे जुन देवा ॥१॥ वदी वदी नाये सुव्यक्तिपु, सामर वाये श्रीनकं बपु। मोगवतीये नाये जगवाना, अशावनीमें करेडे भाना ॥१०॥ निमका वा'ये नदी वमानची, ऐसे बहाये नदी निश्यन्ती। शियोर वा'वे तकाक्रवणाहि, लामे सरित जिलोती जो बाबि ॥१२॥ मोपनाचे मीरनिधिमें आ'ये, काटा सवाक्ति वदी सम्बद्धाये । चत्रभगा विवासाध्यके वासे नामें बहाये बाब हुनामें ॥१२॥ धालवर्षी वहि बदी जब आती, मा'ने माथ नामें सब बानो । यन मर्छद्री है निरमक नीरा, नामे ना'ये अनक्षाम सुपीरा ॥१३॥ शुमयपानमें ना'ये गुनवंता, जति 

والمراحة والمراجة والمراجة والمراجة والمراجة والمراجة والمراجة والمراجة والمراجة والمراجة

कुच तन त्यान अन्यंना। लोडचे वा'ये वापी अद क्रे, अये पवित्र क नीरकक्षे ॥१४॥ कोकियानकी नदी गकीया, नामादि इरिये स्नाम कीना । पाटन मा'ये हिरण्य सरम्बनि, मानिये मेनन ना'ये महा-वित ॥१५॥ बोलि वदी वा'यदे विदेशकी, कहेर वांगरोज आये सम्बराषी। लां वापी कृष मरोवर वा'ये, त्वामे विशेष सोझमें आये ॥१६॥ शांकि माथे माथ बाज्यके बारि, विके रहे एवं गाममें विचारी । सामीके संग ला रहन समोदा, जाई कान कोच नहि बोडा ॥१ आ ऐसे संग जानिके दीनवंता, ताके अंडे रहे जगरंता । बोदोन दिन ला रहे रंगजीने, देनाचे प्रनाप शाप परीने ॥१८॥ सोनो बान हे अनि अनुवा, सब कहूं हरि करे नीरवलमवा। कालवानी आये कृषानिवाना, त्यांवि वदीयें किने कामा ॥१९॥ सुंदर नाम एक जनवाह, किवि नविज नाच नदी ना'ह । रिचवि क्षोजन वदी अनुपा, ना'ये पिपलाने किने गंबाक्या ॥१०॥ वंबासे वा'वे सावती सरमें, किये क्षण्यद त्यां आनंद्वरमें । मानावदर वरी वा'वे बबुवा, बाबजी बा'येहे नश्मीकृता ॥११॥ मेपपुरकी वही सबीता, ववेबमें आपे स्थान कीता। बाहेर नदी निरमन जानी, जहावनीमें ना'वे सुन्वत्रानी ॥२२॥ दिन मोत्रव नदी वना-बसी, इपीवह ना'वे कोकन जिरमधी। करेगी सुदर गरीके वंदे. केमपुर मा'वे नाच वृष्टें ॥१३॥ जीत्यगढ जो कंड वालामें, मा'वे माथ नदी कालकार्थे। मा'ये मित्रोजी कोकव्य गामे, मा'ये करि काने कान्युवार वार्षे ॥२४॥ वालोल्ये वालोविये सुरवे द्याय, गोडले नोंदिकिये वा'व सुव्यवाम । विषये वदीमें करमान कोटडे, प्रापर-बाबी बा'वे कंडोरडे ॥१५॥ कालावड वा'वे बदी कालावडी, प्रवास्त्रर ना'ये कुनकर दकी। मोबे अनिये ना'ये दकारेने, साररे वंस्थे मा'ये अलबेने प्रश्वा आणि नदी ना'ये राजदारे, सरधार ना'ये सर संदर मोटे। मणी वापे थांकावेर घोष भरे, जाटकोड श्टांक-पुरी भावरे ॥२आ गहरे वा'वे येने पनद्याम, सनमंगी मंन सहिन सुन्याम । एव अदी सम्पर शिरोमनि, नाडी नाच किनी पनित बादनी ॥१८॥ बोटादे कृषे सांचे भावनमं, सुन्तपुर माचे केरी सादरमें । क्षित्रावदर मा'ये पायनिये, कारियानी मरे कंबस बनाव-

लिये ॥१९॥ कमियाके वा'ये नाथ सताबे, विवासक सरे सरे मक्रियाचे, शुक्ते सलाव समाव सेवामा, इक्ष्यव तताचे मा'वे कन-वामा ॥६०॥ त्यांसे वयारे वामक देशा. मा'चे सच्यासरी तर श्वनिर्देशा । कंडारिया छाकदिया जाबोह, बाब कंबकोटे सरे जिल-कोइ ॥६१॥ सुजनगर या'वे भटकी वाबी, नामके कुप बढ़ाने हरि-दाबी। केरे नदी नदी गजाते, लांदविये वा'ये रलकाकर करे ॥३२॥ बोल तनाव बायकुवे गंगाये, तेरे वा'ये इरि तलाव वांचे । सास ताल तालहे काळुं, तामदि वा'वेहे बाब हवाडु ॥३३॥ जवार्व हुए अनुष्य सारा, कृष वापी शर सागर अवारा। स्थान्यां बहाये सक् शीवन, सो सब वये तीरथ जावन ॥३४॥ मितपुर सरवातीमें वा'वे, लांसे पाल्यम शुर्जर घर जाये। सिंचपुर बोटेरे साधरणनी, वा के केतलपुर सरे शुज्याति ॥१६॥ नाच वाचे ने बावक शेदी, संत-मंद्रक लग संग लेडी। यहारे नाथ ना'वे त्रिवेनी, तीरवरूप अर् सम्ब हेनी ॥१६॥ वरमाखे ना'ये जान गोकनी, सरे किसी सबसे वही जिति, ऐसे अनेक वारी कुप सरमें, वाचे कुंक नदी सागरके ॥६आ जोजो करे घंरी जानमें आये, सब शोपी करे कोये व आये ह सब बाही करे शीरवरूपा, एक एकसे अधिक आसूपा ॥३८॥ एव तीरवर्षे जेह जब मावि, सी वीरि अवमें नहि आवे। वंगक स्वरको वामन करने, धाकी मोटप्य जान व करने ॥१९॥ क्या आके स्वरको पुरुवोत्तम, को व न आपन पनकी समा। रही बरम जानन हे संना, जाक भीतने प्रधार जगर्नमा ॥४०॥ इमे वीनिकृत्वनंदनुविनिद्विते हुव-विकासमंबे समयो विभागः १००॥

रेग-व्यांत्र्यां ना'ये जनपति, किने बीर पुनीत ॥ अब कडू लक् सुनियो, सुंदर कत्मवदी रीत ॥१॥ कोवर्य-अब कडू लांदां किन सभैया, भाषे सुनियो आवसे जेया। संकत कडार कोवन साठ्ये, अक्ष्मदी दिन वाचन आठमें ॥२॥ ता दिन करस्य किन लांगरोसे, बेजाये प्रताब सो जात व बोने। संकत अदार वासठक करसे, अवाचरी दिन जावसे ॥१॥ शीम दिन समेवा किना मिलपूरे, अति दरण भरी हरि वरे। बीनी पुन्य जायनी जुन जाया, विशे सुन्यांसे अये वनद्यांचा ॥४॥ संवत अठार वरस वासठे, हरि हरि- जन संत विके एकडे। वैच शुद्धि दुवल दिव कविये, जीरमण्डले किम समैवे ॥'आ संबन अवार पांसठके आहे, आसी वदी नेरवा कड़ाई । ता दिव करियाने बल्लव कीना, सब सनसंगी संगई सुच्य दीया ॥६॥ संयम ब्यहार योगड बायने, ना विद ब्यहमी संदर दिने । ता दिन क्रम्सन किन अनवाह, सन इरिजनके बाध नी-क्षाइ ॥ अ। संबन ब्रहार बांकड रोम बाने, क्लरायन क्रमान दीन कविनासे । सत्रवृक्त दिननगी धनद्यामे, विष स्रवाये केनलपुर माने ॥८॥ संचल जहार जासर दोल शुहे, जनाव जह किय सन कोदे । संपन अकार अकसर कामवर्षे, सारगपुरमें बुनासदी स्थे ॥ कियो क्रमच कुचाविकाया, दिवे समझे इरकाय दाया। संवतः व्यवस् कोनजोतेरा, कागुन शुरी दिन पुरुवनकरा ॥१०॥ ता दिव सबपुर किन क्षणासनी, करी व जान पेसी बोध्या बनी । संबन अकार संतरे सुव्यकारी, काशन वदी सामग्र आह सारी प्ररेश्य ना दिन तीका किन बरताले, बहुत सुन्य तीना संत बराले । संवत अवार क्योनेर आवने, सोडनअसमी किनी कामीसने ॥११॥ संबन अहार एकोनरके जादे, वही छठ को कपिला बलादे। ना विष करमण किम गरहे, इत्जिनके सुन्दार उपने ॥१६॥ संपन जहार श्योतरे जामीमास, बरनाले बन्सव वह जमाने । संबन अवार बोनेर फामुले, सुंदर शुद्धि पुरुषमधे व्ये ॥१४॥ लेकि दिन गवते किन समिया, स्रोप्न जान गाँव मुख्यते कैया । संचन अवार जीतर नका आसे, शाबि रंचनी वर्तपुरे कुलान ॥१५॥ किन समेपा सुगर बारे, देश दरबान जन किन सुन्तारे । सबन अवार जीतर कागने, बरमास बन्द्रव शादि पुरुषम इते ॥१६॥ संदम अवार पुर्वामेर माग-करमें, शहि एकावश्री संदरमें। बरनान रण्यप किन कृपाके, दिने सुन्ध समद्धे ह्याखे ॥१ आ संपन जहार पंचीतर दागवे, सारे हारी कुम्बलके वृदे । ता दिन गरहे किन समेपा, वृहे दुर्वान लंग सुनी किया ॥१८६ संबन अधार पंचीतर चावते, जागुन शुदि पुरुषमध इने । ता दिन बोटाचे लीका बनी, इरि इरिजन केने बुनामनी ॥१९॥ संबन अवार क्रांतरा वर्ष लारा, कागुन शहरी पुरुषम इन व्या-रा । ता दिव करसर कियो महियार, नाम दाम जमे जन आपे

॥२०॥ संबन अदार सलोनेता कैये, चातृब शुदी पुत्रव इव कैये । मा दिन चन्सक किन गरहे, जीन निरमें निमक भारत कहे ।(११॥ संबन कहार अध्योभेर अनुपा, फागुन शुद्धि बीज सुव्यक्षणा ना दिन भागवाचावके आहे. करवारायम देव पवराई ॥२०॥ अंबन कहार अगम्यासी अति सारी, फागुन वहि सहसी सुमदारी। ता दिन सारंगपुर समिया, करेड़े बरच को जान व कैया ॥२३॥ सबन क्षार अगन्यासीके जामु, वदि जवांस वीने योगासु । किय समैदो का-रियानी माने, अक्रकोट स्थान किनो धनक्याने ॥१४॥ संबन अवार वरस असम्याशी, बहाशुदी पंचनी दिव सुन्वराशी ! ता दिव लीका किनी हरि मोचे, विस्थी आधवाति क्षत्र बोचे ॥१५॥ संवत वदार धनन्यासी जनुना, कागुन शुरी पुरुषक सुव्यक्ता। ता दिव करनाव किम वंचाओ, नियं शुक्त निरम्ति बराओं ॥१६॥ संयम जवार कारवासीया कैये, आका वर्ति कवनी दिन कैये। ता दिन करतन नवदे की यो, संग वृश्चिमकुं आगव दीनो ॥२आ संवत ववार ई-शिष्ट वरसे, आवन वदि अवसी सरसे । ता वित्र वरसव नवपूर नासे, किने वर्षाने भीषनद्वामे ॥१८॥ संबन भवार वरस कर एंदरि, कारतक शहरी संदर एकादवरि। किने बन्सक बरनासके गांई, सक्तीवारायमकी मूर्णि प्रवर्ग ॥२०॥ सचन अवार वरम रकावी, थानकर वदी श्रीज सम्बराशी । ता दिन सरत किने लगेदे, बहुन जीवके दरवाम विके ॥३०॥ सक्त अकार वरण स्वाविमें, कैस सुरी भौमी बजासीमें । ता दिव कत्सव किय काताते, बाब विश्वी स-व्य भीन वराने ॥३१॥ सक्त अहार व्यासीमें बहुनामी, जाव हारी वंचमीर दिन जामी। ता दिन समेपो सहरियाने, हमे भाष सन : संत सवादे ॥३९॥ संवत जहार वाशीकी वतहारी, ता दिव आस-दापाद पथारी। फुलबोलको उत्सप किनो, सनि सार्वद निक्रतपद्धे दिजो ॥) १॥ संबन जरार व्यासी जनि मारी, वैच शादी नीती सुन्न-कारी। मा दिन परमाप किन परमाने, इरिजनके शुम्ब दिने पुणवाले ॥१४॥ संबन कदार व्याजी कर त्यारी, कावे बदोव्दे इयाम सुन्वकाः री । कारमध बदी भीज के इने, कि नो प्रत्यव सिनो सुन्य अने ॥१५॥ संयम जहार योगार्था के बरसे, बैच शारी नवधी दिवसे । कीनी

डरसव बरतालमें बाले, घर्मधुरंपर घर्मके लाले ॥१६॥ संबत जहार बरस चोराक्री, वैद्यालक्ष्युदी तेरका सुखराची । ता दिन वत्सव किन घोलेरे, महनमोहन पथराये देरे ॥३०॥ व्यांसे विलक्षे जुनागह आये, नी मूर्ति मंदिरमें पघराये । किन समैयो सो कइते न वने, स-बर्ड जीमाये नाय हाथ आपने ॥३८॥ ऐसे बहसब समैया अनेका, किने अधिक एकसे एका । सो तो नावत किनके कैये, एतने किने उत्सव समैपे 1.३९॥ आगे कपे धने गामके नाम, ज्यांज्यां विकट श्रीधनद्याम । कये कपूक रशी गये घने, काहा किने सब कहेने न वने ॥४०॥ पिछे कये नाथ ना'ये जानें, किने तीरवरूप परामें। सोतो करे रही गये के'ते, कहा न जान हरि मा'येहे जेते ॥४१॥ ता पिछे कपें उत्सव समेचे, कहा कप्तक घने रही गैये। सब केने कोड समस्य नाही, युंही विचारे में मनमांही ॥४२॥ पन इरिचरित्रे मन छो भाया, जथामति इतिके जदा गाया। नामें सम विवम मनिवंदी, सुनी चरित्र उरमें आनंदो ॥४३॥ अनुभवत हे इरिके चरित्रं, रपुं-सुधी टेडि गंग करत पवित्रं। यसे जानके जाहुवी नाहाना, शुद्धा-ह्य बार्कु जो न जाना ॥४४॥ उयुं सुरसरिता सन्द्रं सुलरूपा, तेसे इरिजया अतियो अनुपा । सोनो लगत इरिजनकूं प्यारा, कहन सु-वत सो वार्यवारा ॥४५॥ इतिकथा वित पळ नहि जावे, जागत सु-वन इरिगुन गावे । ऐसे अन सो प्रमुजीकुं प्यारा, निष्कुलानंद कड़न निरपारा ॥४६॥ इदि भीनिष्कुलानंदमुनिविरन्दिते इरिवियरणप्ये अधमो विभामः ॥८॥





भौकामिनारायभो विजयतेतराम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत-

## काञ्यसङ्ग्रहे

## अरजीविनय.

अपवर्धर<del>—अयजय भंगळरूप अनुप जय जगवंद, जय अस</del>-कारण तारण भव मंजन दुःखदंदू । जयजय महाराज जिल-राज अकट अफिनं, जयजय कंदन काळ दयाळ नरतन नीतं। जय जनरंजन अंजन भय संजन बुद्धि देण सुदा, भीसहजानंद भानंदकंद बारमवार वंद सदा ॥१॥ जयजय बदत वेद भानेद बदन'ते चारे, जयजय बदत शेव महेवा अज सर सारे। जयजय बद्दत नारव् शारव् माभ तमाया, जयजय बद्दत सुनि-श इमेश जोडी छुग हाया । हंत्र चंद्र आदि बंदत छोडी ज़गल पाणि जहि, सिद्ध सायक बंदन सदा श्रीसहजानेद सुख महि ॥२॥ धन्यधन्य तुहारो राज अखिल प्रद्यांटमें एका, घन्यघन्य तुहारो तेज शप रविकोट विशेका । धन्यधन्य धन्य प्रताप वाप म वाये तुनारो, धन्यधन्य तुनुस्रो रहेश क्षेत्रा न रे'हो न्यारो। धन्यधन्य जन वर्जित रीत समनसे नौक्षम न्यारी, पत्यथन्य पत्य धर्मपर साहेब साहेबी हुहारी ॥३॥ घन्य होरो दरबार पार प्रजापनि नहि पावे, अवल चुके एक न्याप ताथे निगम नेति गावे। रंक राहोको रीत न्याये वसारण, जुग प्रत्ये जाण अवल एक भारण। पर्ध मग धारण कारण तन संत समावण संकट सदा, एहि रीत अनादि शाज्यमें करत नहि अनीति कदा ॥४॥ ग्रंबिजन धर-सदा सुलस्य अञ्चय ए रीति द्वार आये कोइ दुःखी न होहै, जन जेहि मनवा-िकान जे जिल भावन पाधन सुख़िह सोहै। करी न होय कंगास क

वि बर दूध दारिक रहे वहि कोडे, होय जिलांक रहे वहि रंकडि सुन्य सम्बंद वाने वर जोहै ॥५॥ जानंत्वंद सदा विषय सामन पानन माहि सो बार तुहारो, क्षेत्र स्टे निम सहस्रफणामाहि जुगवजिहाप करे बंबारो। विधि वने मुख बार बंबार जनार जनार सहे वहि नारो, देव दनुत्र सुनिजय वर युद्धिय को करे जिरपानी ॥६॥ जनम जनम कहे क्यो जिसस क्षत्र व पायन पार क्यो आने, क्षत्रम समय हैंचा क्लावन कथर इंड क्यी अगम वारे। यह अहीह कहे जिन अगम पुर संपूर अगम जानाचे, बारद बारद सो कहे जगम निष्कुलागंद लाहेको न मार्च ॥ अ। बाजार अचार पुराम कहेरायुं अचार जागार प्रसान कार्य, जपार मापार करे मिन्न चारण अपार जपार गांवर्य गाउँ। अचार जनार करें सब सुनि जपार अपार संग सरावे, जपार ज-वार को सब कवि जिल्ह्यकार्यको बार व वाबै ॥८॥ अव बोर्तवाय-अपार अपार अपार मोगाल, अपार अपार अपार रागाल। जपार जपार जपार जजीत, जपार अपार को पार व बीन ॥९॥ जपार अपार जीव अवतार, अवार कीवे की संग बद्धार। अपार अवार वरिक अवार, अवार वर्षु वेद व वायन पार ॥१०॥ जवार जवार ज-सुर छंदार, जवार विषय विषय निवार । अवार वरे वरा तब जनंग, अचार अचार करे को व अंग ॥११॥ अचार मत्त्व कवा किये क रिण, शुणी जीवे सोवे सदावे पवित्र । अपार जवार वाराव दक्षि-म, जपार जपार रची जनरंग ॥१९॥ जपार पदार पामन जक्त, अपार करविषयर बस प्रवळ । अपार अपार राये रचुवीर, जपार असूर वसे रजपीर ॥१३॥ जवार जवार कृष्ण जवनार, किये शस-कीया अभिन अपार । अपार वने दुद वस अनंत, अणे जगजप आच्यो सब अंग ॥१४॥ अचार कर्णक निवारण मार्थ, कलंकिय कर चरे समराथ । शीचे कति वर्ष सके जब लोप, अपार वरे जबनार अनोष् ॥१६॥ सोवि अन अजन नृःच सदाय, सेवच जनेदिह कर-वा साथ । अनेक अनेक तीये अवनार, एक जन हेन अवार अवार ॥१६॥ जय जनजीयन के जनदीया, जब जनकारण के जनदीया। जय समरण जय सुन्वस्य, जय सुन्य दास सदा द्याम अद्य ॥१ आ जय अन भंजन भूवर भीव, जय प्रमु वावय राखन वीर । जय दी-

वर्षपु जो दीवद्यास, जय प्राचनाथ जनपनिवास ॥१८॥ अय कर-वादिकि पुरवकाम, जय सन सर्वेनचुं सुकवाम । जब गुव्वकृत्य देव तुरार, जब बरदेव करण बार ॥१९॥ जय दास नास विचारव इ.स. सर्व सदा संबद पावन सुन्त । अप सुन्तसागर इराम सुन्नान, क्य ग्रेमी अनुका जीवमहाच ॥१०॥ जय रसस्य रसिक को राय, ओनां जनसब तब ताप आय । जब रसस्य समूच जीवन, ओई सब मनम रहे नित्य अन् ॥११॥ अप रमस्य रेनावर राज, करे रसक्य निजान काल । शय रमक्ष पुरति रसिक, हेरी क्ष बाकुर ह-वर्षे दिस ॥१२॥ अब रसस्य करो रसरेल, आबी हुन पास बमो अलबेस । जप रसपान कराची राजन, अवारसर्वा करी जन बनाव **१९१॥ असो रसराय पुरो सम व्यास, असोनिया दरम विमा वदा-**स । करमबं मुंत्र आये कर जोड़, इरि रंक साथ व बीतिये होड हरशा कायो तुंक वारणमें हुं अमान, इरि करी देन बदो का दाय। भाष्यरे हुं भाषाच हुंज एरचार । में र सम सामी ओसे ओ मोरार । १५॥ प्रमु वहि आवे अझे देही बार, इयायबीया बरी लोही हुवे सार । छटि केम माथ हरको जो छक असबेला ग्राप्त जाबार में एक, DESH वाचमुख एक व ओको जयारो, तमे ग्रुच नाव बहेजो तमा-रो । पुरवक दास जोइने दयाल, क्या इने करी ओसे जो क्याल unau पानो शूंज पहे हुं पाण जानार, विश्वेशर इरि करो सुज वा'र । कही कांच गुत्र सरीची बंगाच, देवची वहि नुत्र सरिची रपास ॥९८॥ राज शुज उपर म दीजिये रोच, दयाकु जो नाच कि-बारण दोष । एवी सई समन्त्री जो आभाग्य, जिस्स व करो त-में रोषमें स्थान ॥१९॥ रंकपर राष व कीजिये रीस, होय समोच-अर्ध होका इमेचा । बाद हरि बीजीये को होय बका, नमारि हूं नाव महि तहोबक ॥३०॥ इयामध्यम बांटी अमारे जो साव, बरहरि राजी व घरे जो नाथ । अभमंग राज करो जैये एम, कही कुल रहे वारीरे जो केम ॥११॥ राज तम दिना कई कियाँ राव, मानी जिये करजी माहेरी मान। देली दृष्णजान मुं दरकार, वीवा-वंत प्रमु कर हूं योकार ॥ १॥ रोश-सुको योकार ह्यामला, अधनकी अस्तास । अवदः व अंजन अंटनां, दृष्टी रहे केन हास ॥१३॥नमे स-

दर हो सुन्दर्न, मद्बम् नि महाराज। यह सब बदव करो, बदव देना-बी बजराज ॥ १४॥ मनोहर संदर मुरनि, नव्यक्तिका जोचा नाव। यव इच्छेडे माहेर्य, इयाम बळवा नम साथ ॥६५॥ सदर कोमा इयाम-का, जजन छनी अनुष । रे'जो हृदिया श्रीतरे, राज तमाद रूप ॥१६॥ संभारतां शबद टक्के, चित्रवर्ता चिक लोजाय । अयने निर-खुं बाचजी, त्यारे लाप समाय ॥३ आ माने अवयुष्य जेटलां, वरे विननी दास । वांनि वजे वारीरमां, क्षण जीनां बदाराज ॥३८॥ मूर्ति तथारी भारती, शहर सुमानदार । यम दीवे व्यापि वर्षे, र्जनर असे भाषार ॥ १९॥ ज्यारे ओर्ड जगपनि, निहासी निहासी वाच । जमो जंग कवलोबनां, इयाम वार्त समाच ॥४०॥ वर नोर्वास--- यो ने स्मानके सदा चिह्न सोच, आवे अवलोकतां सुख जनो-स । अस्ति अञ्चोज मोये अनि शार, जब जांद जीये होये जपकार ॥४१॥ बजर बनाय अंद्रश विदेश्य, आदे जो जानंद अव्य उपर्य-रेल । इक्षणति पाप वर्ष चिद्व हेन्य, बाय पाये साल को वे जो वि-केम ॥४२॥ सन्त्य जिल्लोण दिया शहामुख, देखी गोपद पताये जो राज्य । कक्षवा प्रजूप विलोकतां ग्योम, सदा सूच्य आपे जिल-वर्ता सीम ॥४३॥ चिह्न एह सीम चिंतवर्ता चिल, वर्ड शव वाव वावे जो पतिन । भन्ने जन वानेच वरीने आव. व्यक्ति निरम्पना अन करवाच ॥४४॥ वेली कालांगळी बेस पुनित, चोटे जन सन वित्रवर्ता विका। उपवेदन बन्द अंगर्ड अस्तिन, मस्तिन सोशित क जो जो लंकिन ॥४५॥ बेली बोचे पुरि दिल सुन्य देन, पेले पत्ने पाप बाहदीसि पेन । कांचा पिटि कोमल प्रणकाम, हेरिये गाँउन हो-वे करी हाम ॥३६॥ हावे वर्ग चिह्न वित्ववर्ग होय, जावे जो जंजा-म जंबा होने जीय । रजे बहु बहुर सहर रूप, अभि गांचे नामि ए पंती अनुष ।। तआ पहे बन्ध बेटे बच परमाण, विन्हेंकि जो पर करं शं क्यान । को वे कंड सुद्र बहुममान, यह जिल लाये की-चे जो निकास ॥४८॥ भने गतमंद्र मरियों तो मूज, नियां मन कार्य जाय काणि नुमा। को वे यांचा पांच जांगजी सहित, धितवतां वन इराये जो निन ॥४ ॥ नटके अटके अन नेवनान, निरमी अपर थाउं जो निवास । आये दान अनि कवी जो अनार, अक न वेज जिलाप वचार ॥६०॥ सहमंत्र हासे वसीने महाराज, वचा है हरो हरि विजनी हाल । नामिका निरम्न सिरम निरम्न होने होने नाल मोगे सुन्यहेल ॥६१॥ इक्ति करोड निरम एक हेल, वनी वर्ग मोग होने विज्ञान । अपनी रमास विद्याल निरम को कि विज्ञान । अपनी रमास विद्याल निरम को को को को होने निर्माण । अपनी सीने मुद्द है जर जान, सक्वर ओने को होने निर्माण । अपनी सेने हम सिर्माणों को ए हिए समस को होने होने निर्माण । जारान को से के जान, सिरम का सुदर को सिर्माण को सेने हाने हम सिरम को सिरम का सुदर को सिरम सिरम का सुदर को सिरम का सुदर का सिरम का सुदर को सिरम का सुदर का सुदर का सिरम का सुदर का सुदर का सिरम का सुदर क न वेण जिल्लाए क्यार ॥५०॥ सहसंद हासे इसीने सहाराज, हण-दोये नाम कोचे सुकारेण ॥११॥ दक्षिण दयोज निम एक रेग, बळी चये परितम कोले विद्याल । अयलां हमाळ विद्याल विद्याल, कोला सम अंदूज जाये जंजान ॥५२॥ भासी जीवे मृद्धि समर चान, वसवर जोवे को होये विद्याल । अमधीय दोर चिट्ठ निर्या जोष, वरिजय जोषे वैथे शुन्त वोष ॥५३॥ देशी दय शवन संदर सोवे इयामवर्ण कायेक सकेत ॥५४॥ जनकिन बोधा कही केन المراجلات المراجل ا ولا المراجل ال

जाये जुल परिमाल, नमारीए रहेते जमने माल ॥६८॥ सथारण करे समाचाने मन, संस्थे नेन जिल्द जोबाने जीवन। भगोशेन भेड़ें आयोने अलवेल, रसिलाजी आवी करो इसरेल ॥६६॥ छात्रीला-जी सेवरावीय को लाव, जिल मार्च जोवा करे वह वाव। जिल्लं हं वयकां करी जो नाव, इयामजिया वार्च कारे हं सनाथ ॥६आ जाने जारी मूधर भेटनां सुन्द, देली दूर पाये द्यानुं जो दृःण। अन्तरीडे अंतर मार्थ बदास, बसु इरे प्रीते रही मम पास ॥६८॥ असबेना सुणी बारी अरहाम, रूजी दीव छित इपातु ई दान । आको केन वर मारो जपराय, जनि तथे गुजरानीर अगाप ॥६९॥ तुवी क्यारे जीवन मार्टज जोण, बोर्च केम लाथ सारी शुधगुण। बहुवामी बाक्षो घोतानुं विरद, दीववंतु दाम विवारण दरत्॥ ३०॥ वही गुज कर्मनको बांका बांक, रूपे रीम करी रोखो राय रांक। कोई जम यह केहरिनी कोर, जंबुक म रीम करी वाके नियां जोर ॥ अर्॥ बीजी कोई बायुन अन व्याप, हुयो गुन्त नेनी नाये कांचे आ-य । आवी कोच अकड़ां माने अधार, दीने क्यांची दिव क्यो जो पुचार ॥ १२॥ चरशु संद कोषे अमनि चा'प, वदे सब रीत बीनक सो बाय। करे नेम बीन नमशुं को कोय, सदा सुव्यविधि वावे जम सोच ॥ ७३॥ कदाचित होये चुत्र कटण कर्म, प्रारणे आ-क्यो इयाम राम्बिये वार्म । अना बमो मूपर जो मार्स भाग्य, जी-वय मधी को कोचे मारी जाम्य ॥ ३४॥ म करको माथ एवी मुक्त-जाय, आध्यो मुत्र कारण हुत्र अनाच । राजीये राजीये कारणे हो राज, सहबीयर मुजबे के जो लाज १७०॥ सर्गा जेम आगे अनेय-मां काल, यस वृद्धि अभावं करीयं भाग । यहात्वी लेग करी प्रति-बाझ, इन्यो हिरवयक्षिणु साचे इयाळ ॥ ३६॥ अवरीय बााप नि-बार्धों जो आप, लिए दर्शी भुवे अविषय बाय। प्रमु सुणी गणन-न्या जा जान, क्या करी पुन अधिनक नाम। तमु सुणी गतम-जी तो पंकार, आगे हरि कर्यो अहम्या नदार ॥ अला करी आये जीमहीनों कर्य, कियो हरि नदार ही घर कर्य। जनीविये नदायों कामभुतांह, जनादि विद्यु तम नारे अन्येह ॥ अटा हर्र नहं संक विश्वीपन हाम, उदारे रीज जीज ए अस्मिन्दान । अमु करी पक्ष जरामू प्रसिद्ध, गणिका बदारे बदारे जो सीच ॥ अपा 

र्षेक विरूत सुदायो बास, बनु अकुर बद्धव रखे वास । विश्व क अजननी करी वा'र. नाथ विव नीर जननि निवार ॥८०॥ वयौ क व बासव अजनर कोच, मिरि वरि कर राखे भाव गोव । वसुदेव देवबीजी करी वा'र, सोचे बंग आचे जसुर संशार ॥८१॥ कर्षे हरि कुकरपा वारीनुं काल, आप्युं तसे वससेवने राज । शुद्ध वृति करी जीने जरामच, बंध ओडे सक्य एकविया वंच ॥८२॥ तरकासुर का री निये सब नार, आवे कियो जय देवनार प्रदार। कर्य प्रति-नाक को नांडवकुल, पूरे बनु नांचानीने बरकुल ॥८१॥ राजे सार्क-वासवी वरीक्षित राय, स्वामी करे शावधी होवदी सहाय । कर्षी जन अनेकर्मा हरि काज, वहा अपनंत बदारे बहाराज ॥८४॥ व-दार्थों जजामेस बहुज आए, तमे इपीं लामी क्षेत्रको तार । श-मोजुन जनस भारत जन, शतु हरी वाच करोछो वाचन ॥८५॥ अ-क्तार तेवो कोन् एके काम, एक इरि वेचाको समने आम । विक वाय रीम वयसी जो बाव, इरि केम मुको हवे प्रहो हाथ ॥८६॥ कोंदें को कठोदें होये कोए केद, नथी कोए तान तरकोदना नेदा। बरो कोप द्रोप दरि ब्लांनांजान, बरनो जन जानी न बाप जो पान ॥८आ विभाषीये वाप सरिये बजार, शेर्ष हरि बारा गुन्हा जो बजार । समिन्नो सांभको इपासका सुजान, बरबी बरबी क दं पुंचराण ॥८८३ वाथ केम सामिको नहि निदान, देशाय वेठा के म बुदिने कान । एवं। दिएयो अस लगो अपराय, अनवेता स्वीत-को महि भाराच ॥८९॥ अवने भागे हे अमने जो एक, तथारी ल-वे व संभाको को टेक । अनु इवे करी रच्छो हु वोकार, वासव क व व्याचे तो करको वा'र ॥९०॥ राज दरचार करी जो में राव, वज-रमां जाने भो बरजो स्वाव । असे करी पूछ्या जमारो उपाय, इपा-म इबे सुसेनो करतो सहाय ॥९१॥ यो'चाडी योदार प्रमु समयास. बनवेना अधनकी अरदास । अरबीए सुनी दया दन बाल, इयामसिया सम भागो को समाच ॥९३॥ वर्षक रक्ताओ-काचे होपदीके काम रामीके मा'राज लाज, धके जब समस्त्रण काम वरि भाषेती । याचे भागांसत का'र आपके कियो बद्धार, बनिन क-तारे पार बार वहि लायेही। गणिका शीवन जान नारे हरि हीर-المالما فالملما ما ما ما في المالميام الملامة الملامة والمالميانية وي والمالميانية مالمالميانية.

बात । अहम्याक्षिक हं क्या बात शाव क्याब सहायेही । वसंदी काराज राज अनेककी राजी लाज, दुन्ती कर देनी लाज नाव केसे माधोही ॥१३॥ वर मुक्तवको र तक के आय जगवंद कई मु-विशृंद, जम चकार चंद स्वे सम्बद्ध । इसे पुःलहंद्र वालमुक्त्य, श्रीसङ्जानंद आयो भागद् ॥१॥ सुन्यत्र कार्यं भवनारण, जनी-हारणं अपनिवारणं । योहपारणं जीसहजारंड जानो आनंद ॥भ। कर्व सुव्यवास संग विकास, करो वस काम संदर प्रयास ! पूरी इरि हाम की करमान, श्रीसहजार्यद आयो जानद ॥३॥ अब अये मंग, औराये रंग, सदा रही संग नो रहे रंग । जबनोई जग जा-वे वर्धन, श्रीसद्जानंद आपो जानंद ॥४॥ जो जोवं वं नुष्य नो शाबे सुन्त, जाये दिल पुःल जो देलुं क्या । आजे अवशुन्त वाये संतोष, श्रीसहजावंद आयो भावंद ॥५॥ सामी दरो मा'य महा दुःसमाय, करो बेक्क कांच सही हरि कांच । समु लागुं बाय श्री-रमराय, श्रीसहजानंद जापो आनंद ॥१॥ सुजीतं बोदय बारम-बार, अवस बद्धार विकट् संभार । बीबारों बधार का'बी मीरार, श्रीसङ्ज्ञानंद जापो आनंद । आ निष्डुकानंदना नाथ ए सुपी वाच, इयाच रही साथ तो हूं सनाय। धरी मरी वाथ वजी जे बा-य, श्रीसङ्जायंत् जापो आगद् ॥८॥ इति अहर्य संपूर्वत् ।

रेता-दरद मारे दरवानमुं, विकेष्टः व वनाय। दया दरी धरि देकिः वे, राजी वैने राय ॥१६॥ नयवां धरी निरव्यमुं, मोदन नयारे मुल । इसके सनाव नये, क्यारे जोशुं दव ॥१६॥ दिननी वाने दिनमां, दिवे केनी दरस । इसी वोल्या विना हरि, अंतर के बदाम ॥१ आ मार्गु हुं मगन वह, दीजे इगाय सुजाल । दियो नो दरवान दियो, नि-यो तो हीओ प्राण ॥१८॥ अरजी एवं अधनजी, सुजी हरि वृद्धितन । दीन जावीने मुजने, वजय वादो प्रसन्न ॥९९॥ द्वाद व्यक्तद ॥१००॥ शुं सनी संभन्नाविचे, वजी नाव बजान । बंतर वाहेर अमनजी, सब जावो सुजाल ॥१०१॥ तमे सदा सुन्यवान छो, तमे सदा सुन्यदेव । तमे सदा सुन्यवा छो, जयजय महजानव ॥१०६॥ हरि बोबदवानसमिश्चित्रकानस्तुवानस्तुविद्यित्र वर्षाविनवहंगा सपूर्वः ।



धीलामिनारायको विजयतेनराम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत-

काव्यसङ्ग्रहे

## कल्याणनिर्णयः

क्षोग्डा-समस्तां सुल होय, कोह वियन न व्यापे बळी । सुल-द भूरति सोष, सहजानंद आनंदकंद ॥१॥ समर्थ श्रीवनद्वास, हाम मदन मननी हरी। कथी जन निश्काम, शाम क्षेम होच हर करी ॥२॥ अवनारी आपे अनुष, रूप अनुषम आपे घरी। सोय-इ सुन्दद सहरूप, सहजानंद जगवंद हरि॥३॥ सरवोपरी सुन्धाम, इयाम सहुना नाथ सहि। मसुजी पूरणकाम, इतम करी हरि रहि-ये हैं ये । हो । रोहा-एक बात अनुप छे, सांभळक्यों सन् कोई। सं-वाय न रहे भेषमां, हे समझ्या सरन्त्री सोई ॥५॥ कोवई—हाद मुमुक्षु जे सुजाणरे, पृज्युं पावा प्रथम कल्याणरे। महामुक्त नमे विरोमणिरे, सुणो विनति एक मुजनणीरे । १॥ सहु सहुना प्रतने मनेरे, सान्युं कल्याण मन गमनेरे । कोई के' अमे मत्स्य वपासीरे, कोई कहे कुर्म सुखरायीरे ॥ आ कोई कहे बाराहना वासरे, केने चित्रहरी विश्वासरे। कोई वामनरूपने अजेरे, केने परशुराम रूप रजेरे ॥८॥ कोई राम मरोंसे रहेंछेरे, कोई कृष्णकृष्ण करेंछेरे । को-ईक बुधजीतुं बळ लहरे, बेठा कंहक कलकि कईरे ॥१॥ एइआदि दश अववाररे, एमो सर्व सुखना दानाररे। तेने भजेंग्रे निम्नभिन्न भावरे, मन अति अपंषो ए आवरे ॥१०॥ जंजे जनना जे इष्टदेव-रे, तेने जन करे तेनी सेवरे । ते विना नधी बीतुं सहेवानुरे, कोले बीजा देवनुं घसातुरे ॥११॥ वळी ए विना बीजा जे अनेकरे, झाली

बेठाते जुलकी टेकरे। यथ पान जिल्ला जिल्ला भागर, प्रवासका ने ज् अभी जातेरे ॥१६॥ कोड कोड केटा यम मदरे, मान्यू मत्य पानानुं लचकरें। कोई का व कलाकी करेंग्रेट, कोई काचावरव करेंग्रेट । १३। कोड इसी मुंदी कामन्याईरे, काड समन जीरमां नाईरे । काई जरी कारी ज्यान करीरे, बंध माजा निलक्ष रच्या परिते ।१४। बाई फ-वा मोदरी कोवीनरे, चनकत रारांवर स्मानीनरे । बाहक वया वंदिन पुराकीरे, कोई एक प्रका कोने वाकीर ॥१६॥ कोई राज म-बाराज सवाराणीरे, ज्ञान्य मधीर वायस वालीरे। काई रुखे वर्ध कवीरते. कोष्ठ कंत्रर प्रस्पत वीरते । १६॥ कोष्ट्रक कप्तरीया कल्याकरे, मान्युं परिपुरूण प्रमाणारे । कोइ केष दिलेका गणेकारे, कोइ काका विस वन स्रेशिरे ॥१ आ कोई इका विकासानु आवरे, सर्व भीरण आर्थेस गार्थर । एव कल्याच अनेद रीनरे, बहुए बाल्युंसे चोदम चिलेरे । १८॥ नेमां पोतानो होय व देलेरे, अन्यपी आप अधिक हेर्नरे। सहरी सबसे पीनानुं सरमरे, आवे बीजानुं नजरे नरमरे तर्कत वर्षी वरी एक विस्थाररे, मारे मने ए लोटी विका-रहे । बळी अवनारना जे उपासीरे, लेनी पण मनि गई नापीरे ॥२०॥ बोलाई बोलाई बयुने बदेखेरे, परस्पाने बंदेखेरे । कोइब पुत्रेखे वाळमुकंदरे, कोइक मजे के जीवजनंदरे ॥६१॥ कोइ कहे विकाली-रायरे, कोइ रमायनि गुल नायरे । यम अन् कर्याने अंत्रेडरे, नेइ किया की आपने सामग्रे से अस्था एवं जुलकुं सुलकुं जबरे, सरकारतुं करेंग्रे भजनरे । एवं विना वीजा वयासीरे, नेतन पहले करण्या नवासीरे ॥ भा। कन्नु कल्याच वन्नु प्रकाररे, अनुभूदं मान्युचे समान देरे । सर्वे सरस्य कम्पाण छे एहरे, के कांग्र अधिक न्यून के तहरे ॥२४॥ समू वावजी पूरण बहरे, त्यारे वांधी ओहर वहि पहरे । जे-म का कोके के अवाताकरे, तेस कल्याकर्मा का जाकरे ॥१५॥ जेम जा लोकर्म मार्च नावरे, तेम करेखे मन वय सावरे । वधी असीकिकपण्ने लगारे, यही लागी गुक कथा तेमारे ॥२६॥ रह्म का-चुं बोमानी कारतुरे, पूछवूं हे बोर के कवोरतुरे । कुळो बुळावे केम तारदारे, मार मारो ए बाननी संदोरे धरआ वही केने सेक्ये केन्

मुन्य पामरे, केने सेव्ये केवूं हु:व्य बाधरे। केने सेव्ये केवूं कम थायरे, केन पूर्व काळधी मुकायरे ॥२८॥ कोजबकी जाव आहरवामरे, को-जधकी बाद पूर्णकामरे । एक अंदेव सर्वे भरावीरे, के'जो विवेश विगति वादीरे ॥१९॥ जोग्य छोजी जवार्व के बारे, दुख्या प्रस्तवी बनार देवारे । पूछी एटलुं जोडिया पानरे, त्वारे बोलिया हुन्छ सुजाकरे ॥३०॥ इति बोबस्यायनिर्वयनको बुक्युबुधुर्मकारे प्रकारे निर्वयः ॥१॥

होता-मुक्त कहे सुक्य सुमुख्त, सारा पुष्पा में बशा उक्तर एओ आपिये, कारिये संचाय सचन ॥१॥ कल्यांच के कैक आलवां, तेनी जुजरी जुजरी जात। सर्वे कल्याण सरकां वहि, तेजी सांजळी हे इवे बान ॥६॥ आर्चु के तो संताब हो, लोई कहामां हाई साह्य । वा बकारे वाच छे, अने विचार्यद्व तेषु आव्य ॥३॥ एक स्वारे पुछर्ष ते बीतशूं, खारे आपशुं क्लर अनुत । दे'शूं कल्यामनी बारता, सावासावी शुद्ध इव ॥४॥ वोगई-- सेच प्रकः वा अवस्र वजेरे. मान्यं करवाण पुरुष भाषणेरे । जेले करेले जगमां जनरे, तम दावे माने श्रेष मनरे ॥६॥ देने चवटी पुण देवापरे, मेनेवम कल्यान के बायरे। केने पांच भरी वास पाणीरे, तेपच कल्याच वाचाने जाजीरे ॥६॥ कोइ सुध्याने जापे भोजनरे, नेपण कल्याण वानीने अनरे । कोइ बमन न्यन आपे गर्थरे, नेपन कन्याम बाबाने अर्थरे ॥ आ सोनुं वर्ष आवे जांचा वागरे, नेपच कल्याण काले निवासरे। गाय अहीपी ने गत्र बाजरे, याम बरादि कल्यान काजरे ॥८॥ काश्चिषं तह विशे करवनरे, तेपण कल्याच कावा तरनरे । विवासे जह इन्दर्भ माळेरे, गडे पृथ्वीए विंड प्रशास्त्रेरे ॥९॥ कमलपूजा भैरव जब लायरे, नेयब कल्याच साथ के बायरे । कोर करे लीचे वन स्वाबरे, कोई आवेग्रे सर्वन्य दावरे ॥१०॥ कोई वर्ष विस टेक बारेरे, क्यारे कम्याच करवा विचारेरे । कोइ करूच तथ करेग्रेरे, थइ उदासी बन करेग्रेरे ॥११॥ फन दक्ष करे जस जागारे, करवा कम्याणनो निर्धाररे । एवं विना चपाथ बजाररे, करेछे सब क-स्थाण मार्थरे ॥१२॥ १ण जेनी जेवी परिश्रमरे, पामे कस्याण मानी ए समेरे। कोइ पाने जल पर बामरे, कोइ बामे गराम ने नामरे ॥१३॥ कोर वामे राज्य साम सुन्दरे, सुन कल्य वहि देहे बु:बारे ।

क्षण कल्याण क्य के बायरे, सुन्य भानी रखाये व सांवरे ॥१४॥ कोइ वामे आमरावनीरे, सेवल पूर्ण बानेसे बायनीरे। शिव म-बानी पुरीने वासीरे, मान्युं वास्या पुरव भागी नामीरे ॥१५॥ एव विना बीजा बहु लोकरे, वामी समाबी बेठा है बोकरे। वन आ-संतिक के करपानरे, तेती रीत भाग जुदी जानरे ॥१६॥ नेतो इति हरिजनवी बायरे, साचुं कन्याल अने के बायरे। समझी लेखे में एटर्जु साररे, नथी बीजो निले निरंपाररे ॥१आ मछे प्रमुचगर वसालरे, कांनी नेवा मळेले कल्याचरे । तेव विवानी कांटि उपायरे. बार्लनिक कल्याच व बायरे॥१८॥ जेम रवि विदावी सनरे, व जाय व बाय मजानरे। नेभ यगर प्रमु सकता क्लीरे, बाय कल्यान लेवुं ए समीरे ॥१९॥ नेइ विना जो पाय कन्यामरे, पढे जुठा नो सर्वे पुराकरे। अबे अंत्र्य अगन से बहुरे, सावयान वह सकत सहरे ॥१०॥ सन योगाना पुछिने सरधरे, दवानवा निपत्राच्या संधरे। सर्वे वोतानुं कर्युंग्रे साचुरे, क्षेत्रे राज्युं क्यी बळी काचुरे ॥२१॥ क्य कल्याच प्रमुती वासरे, तेह दिता वलोबेड डामरे । ए डे सर्वे शास्त्रको मनरे, तेनो व बाय दे.दि असनरे ॥२२॥ एव संन शास्त्र कहें छरे, क्षेत्र बगर वामके रहुछेरे । एम सर्वेत्रु छ सिद्धांतरे, मोरि मोटा भागी गया सांनरे ॥२३॥ जेने करी व वर्षे करपूरे, तेने सार्थ-निक अंच करपूरे। नेइ विना नरे कम्पाक काचुरे, पानी पहर्यु वर्षे के कार्युरे अवशा केन्द्र आ लोक सुम्बधी कार्यारे, केन्द्र क्या मर्थ-लांक जनारे। केक हरपुरिधी इजाजारे, केक जहलांकधी पण्टा-कारे ॥१५॥ कियाँ रहां वहुं ए कल्याकरे, जारमूं वहे बारिधिये वा'गरे। ए कम्पाच काम न आवरे, जेने काम मापा मनी वादरे ॥२६॥ जेने आपे छ भोटां विधनते, एवं कल्यान स मानो मनते । तम मनमा बान कोळीचेरे, कानु कम्याण नई घोळीचेरे ॥२३॥ केम हीचे अन्तर स भारतरे, एड भूष्य भीतरथी शहरेरे। सन असने रक्षां जे पंचारण, नेमां कन्यांच न वजे कार्र ॥१४॥ परधर मारी पेट भरेरे, परमुन विका दारा हरेरे । एवां कहि व मानी कल्यानरे, जेमां नदी स्वादी हे जानरे ॥३९॥ कर्ष नम के पृष्टप्

३ कहुद र

नुं तेहरे, एक वानवां नथी संबंहरे। माचुं सानी संबंध साक्षानरे, वही बल्याननी तमे वानरे ॥३०॥ इति वाक्सवनिवंशको दुक्तपुत्रकृते वादे दिवीको निवंदः ॥२॥

रेश- मुनुष पहे तुक सांभको, तथे वही कल्याचनी रीत। नगर विना से बांदर्का, कराक्ष्यं कहां सचीत ॥१॥ इतर प्रमुख होत इच्बीए, कोइ कावा इच्छे कत्वाचा वर्षु तेने केन करतुं, एड् उद्धं क्रोडि काल ॥२॥ होच अवनारको जावारो, वावे बरना होच भजन । कन्यान करना कारने, जाजी करनो होन कनव ॥३॥ वादी सेवली होन संतवे, सांजवानी होन पुराम । नेने दरीने नेहने, केम व दोश करवाना ॥४॥ नेपार्-सन जान्त्र हे कन्यानवारिते. सबु करें के एक विचारीरे। सामु सरवे नाना भोरारे, ग्रंब क्य वरा वधी कोरारे एका पाला शाक सरमा है सहरे। संग संग में सरचा कही। संब सह शाकामा बिक्कारे, एवा कोण जोड़ा ने अधिकारे ॥६॥ क्युं ओह बमाधिये क्रिवारे, ओहये वहि करणी एउट्टी लेवारे। एवा लाचे अने संसने संबंद, तेनो बोटा सुचने तेवेरे एउस वाला भदाये करी मांभगेरे, तेनां सर्वे संबद रवेरे। संन काक्सी केक सुपर्यारे, अण्या अबु करेके जब नर्यारे ॥८॥ एवं सांजबीने सचाप रखवारे, जार्थ बाक्षणा पारम प्रवचारे । जन सेवीने कैंच सुन्य पान्यारे, बाव्य सुन्ती केंद्र हुन्य बान्यारे ॥९॥ संने केंद्र अवस बढावारे, नामर पनियने यन लाखारे । संने बढारियो अजाधेनरे महा समलको हुनो से बीलहे ॥१०॥ लगना इसमा हुना कलाईहे, तेने सम सकता सुन्दरहरे । सहापापनी मेने मुकारवारे, आ जन्दर्भा भक्त में का क्यारे #११॥ जान कृत के जेवर जानरे, कर्या अने सुजी माधानरे । यह भीव गरिका गणियरे, सने वच गार्थ ने व्यक्तियरे ॥१६॥ जुनत्व सुदायर विदुर्ग, सुन्ती सन्त्री बचा अकरे। दक्षक्त जे दक्त हजारो, व्यवादे बया अवकारदे ॥१ ता वजी हजार बुद्धीने हाल्यारे, फोराकी कार्यमां व चाल्यारे । वच ओगी अबद अंदेवरे, भने सुभी क्या ननमंत्रहे ॥१ ता सहस्य अज्यादी क्षेत्र कहेवायहे. ते वल संत्रको परिया नायरे। संत्र सेवे लोके आवे वरीरे, जाक संसार्तिषु भी नरीरे ॥१५॥ संन नाच जेचा निरुपारे, एपी पाञ्चा

बहु भवताररे। बेब कवि नवसी राजनरे, वास्या संवर्धी सुन्ध-सब्बरे ॥१६॥ प्रव बहाद सुन्दी बया आयेरे, ने रूप कें है सन बनायरे । राज बनमांगर अवशिवरे, एक जेवा बीजा के बरेकारे ut आ बिावि सुवनवा सत्ववादीरे, रहागण रंतिरेव चादिरे। हिन अभी वैदय वसी शहरे, नाम्या संतथी सुन्तमनुहरे ११८॥ सन सबुवा के सुन्वदाहरे, एम बहुके जब शुन माहिरे। वशी पान्या वह सुन्यवामरे, परयं वहि वभु बगरमं कामरे ॥१९॥ क्यों उदाव वक्क व जायरे, वधी शंगरनुं काम कांचरे। जोइये जनानी भनी जनतिरे, वस व दोव तोच वाच निर्दे ॥१०॥ अभवे तो सवसायके पहरे. वची साचा विन्ताल केवुंरे। सेवे संग रामी वय सापुरे, हो बच्चा-अर्जु व रहे काचुरे ॥२१॥ वसी बात्माने कोइ आंअसेरे, तेनी जूतव कही केम न रखरे। शासा वर्षे रखा वर्षेशारीरे, सामा बमाने रहे मरमारीरे ॥२२॥ कामो करी हे वर्ण साख्यदे, कामो करी हे वर्ष मण-मेरे । क्षाची करी के सर्वे वे बाररे, क्षाच्य जनाचे सार असाररे ॥११॥ बाक्समाचि बहुं से कल्याकरे, में क्ल बान मधी अप्रयानरे । बान लुजने म होय परस्यागरे, एनी सर्वत्रयी नै नवी नाजरे ॥२४॥ सन-वारण सबुमां समावादेरे, क्यां फेर मधी कई कांदरे । सनदाामाधी क्षेप व पायरे, एवं अमे गुणे व के वापरे ॥१५॥ सनवा समे सन को बोपरे, लो नया विना व रहे कोपरे । क्यां बनद बसुजीनुं कामरे, वधी पहलुं कहं करभामरे ॥२६॥ समें तो कमो बनर बनायरे, ने पान्या विमान क्या नापरे। त्यारे सन बालाधी हां मर्परे!, क्यारे कन्याण प्रगटकां अपूरे ११७%। एवं बानमां वर्षा सदहरे, तमे पूजा करी कही तेहरे। तम विवा ए सशाय न मालेरे, नारे अमे पुरुष् मच पासरे ॥६८॥ घटा है जो सांबक्षता मांहरे, करे हती कमर त रहे कोचरे । अंके व होच वकी जिल्लाररे, लेह लांभक्यामां श्रं सारदे ॥६९॥ जेमां करि फेरवनी व बांचरे, सीवे साववा सरम् सोपरे। करिये प्रथम म अवं अभरे, बाला जाय भा जबन व्यवंद ह |14 | मारे साथे सुकता धायरे, एवं। अनुप्रम के जो बनावरे । एव समुध्र कहे बहांनरे, माचा सार्च कहेरणों ए सिटांनरे ॥६१॥ धी बीकस्थान्त्रनिर्वत्रक्षये तुन्त्रमुद्धभूषये वृत्तेची निर्वयः । ३ ।

रोश-लारे शुला करे सुरुप नुमूख, तमे पूक्ष के के बचा। ते को उच्चर असे आपिये, दसे सांज्याच्यो वर्ष कर ॥१॥ वृर्वे उच्चर-थांकि जिल्लाने, हरि हरिजनने संपत्त । नेह विना कोइ जीवना, क्की हुई वहि अववश्य ॥१॥ जंजे औष नर्या जन्ममा, नेजो करो विचारी विवेध । हरि हरिजन वच बच्चे, कोई चतुरिया शक्ति एक ॥६॥ अंतरमां अवगर रहां, वरदेशाने क्यान । ने जानाने शां स-वकायको, बजी नकी बान विकास ॥४॥ चेन्सी—बारे जेने सकता भहाराजरे, एवा संसभी सरेके बाजरे । इति साथे होय इकवाय-क्यारे, अनु बगर बाभी नाच रक्यारे ॥५॥ रही वर्ष क्याराजी नागरे, नाम्ना साचा मापु साक्षागरे। बादक शक्क व रहंरे, जवार्थ जे हे ने बद्दि ॥६॥ एवा संनवी के सबलावरे, नेनी राजवा इत्य विकारे। केंनी संवाय रहिन वान सार्वारे, पूरण वापनियां नभी कार्थारे ॥आ एवी बोजी के रोकवी कहीरे, जबी कारता एवी नमुश्रीरे। साने चोपने नथी कोश्रनीरे, ज्यारे जोईए लाहे जिल वर्षारे ॥८॥ क्यदीठी वनी क्याजनारे, कडेके बजारे बजरनी जाय-लारे । बन् पालकता के रहेतारते, के कहे लेकों वहि केरकारते ॥९॥ बोले पशु प्रमन्तना प्रमाणारे, लेकां प्रशि तम कर तालरे । ओई लहा-बसुनी मरपीरे, वर्षु वान करेंग्रे गरजीरे ॥१०॥ जनि अयस सहित वचरछेरे, वह जीवमां काज करें छेरे। साचा सन ए हे सुन्ववाहरे, एम करे के सबू जार माहरे ॥११॥ एका संनची सरे के बर जरे, ते ह दिवस के बड़ी आजरे । नेनो कहन में मुने मोरेरे, सुसी पुण्यू में पुष्पाने होरहे ॥१२॥ सामा सन के आहरि होपहे, शीव नारवा ए जमें होयरे। लेह बिना जे सन बहेबायरे, लेह सनशी बाज व बाधरे ॥१३॥ एमी सन्त्रणी तह बेजारे, पटनाद आवे प्रवृद्धारे । नेने क्य समझको मनदे, बाक्षे क्यान बोहु जा अन्वनहे ॥? वनी और करणो विश्वासर, नालके तो कोरे कायवाचारे । वाक्यो भूको काम बंग्लोरे, भाषा ए पानको यह पोलंदे ॥१५॥ कांनो बरको कर्म बचानरे, बहको परधरमा अनवानरे । बांती वह नगा क्षे बादंग्रे, एम बनेवन वह गावारे ॥१६॥ वधी प्रमुलनी दिवा लापीरे, जुरुवाइए रका मन वाशीरे । बाव लाइब लाइबा बाजरे.

करे वह जीवनां अकालरे ॥१ आ व्याधकी मानवा कन्याचर, ते-नो वह दिन भाको देशकरे। एवं समझीत लग्न साररे, कल्यान अब्दमयाच करवाररे ॥१८॥ साचा समर्था साच् कम्याचर, बीजे तो मुख्यमाद्ती बाणरे । मारे जेजे तथा अने जतरे, तेरे मदया प्र-बटना संगरे ॥१९॥ इवे जाम्बनुं कही संगळातूरे, मध्ये सर्वे सर्वा-य रखायरे । कामा भीमुखना जेह दशरे, मन्य कामा व हे सुखने-गरे ॥५०॥ एवा वचन न सुम्बकारीने, तथा सहने अनरे पार्टी । व के बेद बात्स ने पुराकरे, कमा श्युक्त कोटि कल्याकरे ॥११॥ का नो एनी लीका ने वरित्ररे, सुन्दर्शिय ए काम पवित्ररे। कांनी ए-ना मानेन जे घंधरे, आपे एटटा अंघने अधरे ॥२२॥ बीजा कवि कोविदनी काष्यरे, ए मी बारि विनानी है वाव्यरे । नेमी रखाहे भूत भोषगरे, गरे तेत्रं करे अंग भंगरे ॥ मा बद्धी मनमत्त्रा अ संपरे, कर्या सारवा रोताओं अर्थरे । तह विना वीजा प्रथ वजीरे, थाय शुंहं ए सथ सांबर्धारे ॥२४॥ हसिकप्रिया स्मयंत्ररीरे, सुनानां नरन जाय पृत्रि करीरे । यन्त्री वामी वेशनीना ग्रंथरे, अनि ना-जिन्ह बाद अवर्धरे ॥२५॥ भागे आजिन्ह वर्गि जो एमरि, याप हु.की रहे बाह क्षेत्रारे । साटे ए सन कालानो संगरे, समझी कि चारी म करवी अंगरे ॥२६॥ म द्वीप प्रजाद गरम्बं दूधरे, नेयम सम भी लेकुं सुक्षरे । जेम बाहिकार काहेरमां कापरे, लेम कोर विजा बाहेर ना पर ॥२ आ एक कानक कृत्व करेवागरे, होच करवाल बहु बीजा सांगरे। बादे चाम्ब गामा नहि गक्षरे, सन संनमां चन विवेक्तरे ॥२८॥ नेनी शुद्ध मुमुशुने मुझेरे, सहं भरानु एम न वृक्षे रे । जेने वासकुं परम कल्याचार, लेने अलि व रहेतु आजावारे ॥ १९॥ बान सरवे समझा सेवीरे, चचा अबी होच नने प्रदर्शरे। एटलूं नी जावायुं जरुरे, भीतर भाकायण करी हुन्ह ॥३०॥ इत मोक्स्वायान-भंदयन्त्र गुलग्रा तमका पहुन शिलंब 1001

राश-मृत्यु मृत्राण जेह, वह करेंग्रे ओही पाण। सर्वे सरम् लगसर्गा, मनी आज वही ओज्रानाच तह । वज वह अन्य भाज-क्तभां, ते अकत्या क्या भगता । तेतु कत्याक केय छे, कहं पादी क्षां, ते अकता का भगत । तेनु कत्याण केम हे, कहुं पाशे तेहनी विगत ॥२॥ जुजुकी कीने आ अक्षां, क्या भक्त ते वह المنابعة المنابعة والمنابعة والمنابعة والمنابعة والمنابعة والمنابعة والمنابعة والمنابعة والمنابعة والمنابعة وا \*\*\*

भाग । मेना शिष्य संसारमां, अभी मानना केरी वान ॥१६ अनु-वकी परायदं कर, समझंखे पोतानु मिदांत । माविक कही अपना-रते, अभ जीवने भरावी श्रांत हता वोधां—सनकात्वाने मानरे, कई वोषांधीयां सकता वानरे। सर्वे बालमांदि हां के सा-ररे, बबरे बबरे क्यों निरुवाररे ॥२॥ बांच्या क्योंक्रम चार चार-रे, बळी ए विना वर्ष आशाररे। मेना वर्ष परणनी विभिरे, वह बोबीजोबी बांधी दीधीरे ॥६॥ एमां समस्ते मई वह बाटरे, जीर समारी भुनावी वाटरे। एमां जान्मानुं शुं सर्पेरे, सर्वे रंडनुं कुरणं कर्नुरे ॥ आ ओक्यो व्यास वाल्यिकती पुद्धिरे, कोइ वाल करी वर्षि सुधिरे । काराकार वे काल किव्यिको, कवि सुवि स समझ्या रीतरे ॥८॥ पाप पुण्य पुराणे प्रमाणीरे, बांच्या बहु शी-वने नेमां नाचारे । ग्रंथी नवाके जावयो जोराचरे, नेमां सब था-वर्ते हेराजरे प्रभा प्रंच कोटा ने फोटा करवाररे, एवर कमे तरे व श्रीपुं सारते । एक व्यक्त संबे साम प्रथरे, कामामी करणा अवस्थरे ॥१०॥ बळी बहेडे अवलार खोटारे, बैनन्यमां कोण बाबा मोटारे । दहे हे जोतीश अमुनां इत्रे, त्यारे बीजां ने देनां करूपरे ॥११॥ सर्वे रुपे एक रामरे, मधी देव वानव मर बामरे । पशु वंजी स्थापर जंगमरे, तेनी मोती कादो नमें गमरे ॥१२॥ सर्वे पंच जूत-मां पुनवारे, वोचे क्षे अनुव सपयारे। नेमां वैनम्य वशनका-रीरे, तेनो रशुक्ते सनुने पारीरे ॥१३। चैनन्य चैनन्य वहि केर बासरे, दीवो दीवी मंत्राय सञ्चालरे । एस बैनन्य बैनन्य वसरे, विंच वस्ती करें के अवेकरे ॥१४॥ एम शान्त सुनी शुभ सरिरे, नपी रेली ने नरने रतिरे । एम करें हे कुलक्षणा क्यीरे, जेने कोइनी मनीति नपी-रे ॥१५॥ तीर्थ इन निम सदाचाररे, नेना कापनारा छे कुठाररे । एका ज्ञानी बरोपर पणारे, अर्था अर्थ करो कलियक तथारे ॥१६॥ एतं केम समझतुं की विरे, आरे संशय ए तमे आगरिवेरे । सल पानका थोडा करंताररे, असन्य वासना करंतारा अपाररे ॥१आ वट मं-दिर वे अपासरेरे, चोरे जारे एक बात करेरे। बारे बारे एनोज वकारते, चौडे हार्ड ए बाल वेपारते ॥१८॥ भर वंत्रित के जे दुरा-गीरे, मेच कक क्षेत्रे ए बाजीरे । गुड संग जुडा अमे बोसेरे, से-

विशेष १ विशेष वार्ष वार

त्या स्टाहे करे कचरे ॥५॥ शाक्ष कटेखे के लामजी बालरे, अन्यली के शुन्त कर माञ्चानरे । साम्य करेशे वेश्वत बनाकीरे, नेने पामका इच्छे अपीरे ॥६॥ काम करते गोलक्ष्मा गुकरे, बाम विजा समझाव कुणरे । कात्म करें हे अक्षरपामरे, ने मुची सह करें है रामरे ॥ आ कामा करेथे भीडरियं सकते, जे पामना रहे बढ़ि पु:-लर । श्रोक जलोकमां जे अगमर, नेत्री वर्ष परावेष्ठे गमरे ॥८॥ दाला करें हे सर्वेश स्थानरे, जने दीयां न सामस्यां कानरे। बाला करें के कल्यानदी रीतरे, कामी बायग्रे प्रमुख प्रीतरे । है। बाला-वकी सन बोद्धनाकरे, बाग्यवदी समझव जानरे। शामो करी अरवेशे सन्दिरे, बाका विजा अनि श्री प्रशीरे ॥१०॥ बाक्य वर-शादे सह हे खुनीरे, अहिली इंडपारी रहे दुर्जारे । देव दावव मन्त्रम मृतिरे, बाल्ये गांधी सरतात सहवीरे ॥११॥ एथी केरली वाली करेवापरे, बाटी मनवास्त्रजो बहिष्यपरे। तेमां होच हेचा-वधे वावीरे, मेनी ओइए जीव जीव कार्यारे प्रश्ना नेनी महीने ज-भार जाकरे, चणी जमकाती सार नाकारे । परका मरकमा क्रेक मां लेहरे, बाओ वृद्धि मन धनुष्यमी देवरे 673॥ बाम्बबा'र बरले-हे जेंदरे, शाम्यवा'र पासे देह नेदरे । शास मुकर कर शियाखरे, नव से बामनी नक्काव्यरे ॥१४॥ सारे ओरनी बाबी को एवंदे, क-था जेतुं वहि रहे केनरे । एम पृथ्वी रहेशे राम इनरे, सत्त्व माने मुख्य में मनरे ॥१५॥ बळी पूर्ण में प्रस्ति वानरे, नेपल सुणी ले-उच माश्रावरे । कियां जीव कियां जगदीशारे, कियां लगांत कि-यां दिनेकारे ॥१६॥ अंजे जमजीयनथी पायरे, नेतो जीवशी व पा-प कांपरे । जोने बधुनणी धनापरे, सह जाने जननमां आपरे ॥१ आ अभी आजाने वादि। सुररे, अभी लोवना जाजी अकररे। जनी आक्रामी सरराजरे, येप परमाचे सह जनकाजहे हिंद्य जेन नी आता वर विचारीर, घरणी रहांचे एरेकन पार्टीरे । जेनी आञ्चा-मां कोच बमेवारे, चौद स्रोक परी रचा कियारे प्रश्मा केती आक्रा-मां घेनी बनरे, आपे फल दक सब सुबनरे । जेनी आजामां का सकारितरे, दिनसाम रहे छे करनीर । २०॥ जेनी आज्ञा सानीने पुः न्यरे, सन्। सर्वदा रहेले फरलुरे । जेनी आज्ञामां अज (बारे, हर-والمالية والمالمال والراء الراء المالية والمالية المالية والمالية والمالية والمالية والمالية والمالية

वे करी रहे छे स्थीवारे ॥२१॥ बन्धी देह धरी क्यां काजरे, तेमो कड़नां न कहेवाय आजरे। वह परी हरि अवनाररे, क्यों कंड जी-वनी बद्धाररे ॥२३॥ तेव प्रमुनवी नकोववरे, धावा जाप पापी जी-व जहरे । जेने नथी वारीरनी साध्यरे, बळी वजनोळी बेठके झा-व्यरे ॥२३॥ वक्को परवदा पराधीनरे, वर्ने एकएक लागे कीनरे । र-को अज्ञानमां अवराईरे, घणी पनद्यामनी पनाईरे ॥२४॥ ते जा-को करी जमपुरी मांघरे, यह मार लाहो शुर आंघरे। पछी मरसमा कुंडमां पडशेरे, पच्चो केल काललगी संबंधेरे ॥२५॥ कर्मचीमे जो निसरको पा रहे, लेको सुन बेनना अपनारहे । बाको विष्टा पेसा-वने बीकोरे, एवं हरिजिदाने कल लेकोरे ॥२६॥ एवं सुन्य सामिकी-वे कानरे, पायु होय तो धाल्यो भगवानरे । एमां तुर्दे नहि पढे जरापरे, सब मानी लेजयो मनमांपरे ॥२ आ एका वापीनरे मन जे-वे बायरे, तेनो पण जन्म एक्षये जायरे। कम्याणनुं तो रही आय क्यांईरे, सामुं को प्रकृत्यान बांईरे ॥६८॥ कुटमुं निरज्ञस्त्रमा जस-डामरे, रखी हैपंथी जीव्यानी हामरे । सक्या पारने वनोईनरारे, प्राथीना बाण हेनार खरारे ॥२९॥ एम समझी हेवुं सिद्धांतरे, सम-क्या दिना भाने नहि सांतरे। कही नान पुछ्या बमाणरे, इने हां पुछ्युं सुजानरे ॥१०॥ इति औदस्यायनिषयभन्ने मुक्तमुमुसमारे वर्षा निर्णेषः ॥६॥

शेश—पन्यपम्य मुक्त विशेषणि, मुन्य प्रांतिना भागनार ।
आज्ञान तम राज्ञवा, सुरज सम निरंपार ॥१॥ वणा विवसनं पर्वे मां, संवायनं रहेतं वृद्ध । तेह तरत तमे राज्ञियं, महामोटा मोहनं सृष्ध ॥२॥ वळी पुतु हुं प्रीतद्ध, तमे कहंण्यो कृषानिषान । अनेक जीव रद्धारवा, आव मृभिषर भगवान ॥३॥ कन्यान करी कोटि-कोटिनां, वाह्य वपारे पोत्रानं भाग । केन्ये रहे तेना कुळना, तेथी सरे के व सरे काम ॥४॥ पोणां—पम् होय प्रगट प्रमाणरे, खारे करे बहुनां कन्याणरे । ज्यांच्यां हरि घरे अवताररे, कहुं सांभक्ष-स्यो करी प्यारे ॥४॥ सम सृग जळ्यर मांपरे, वर वह आ-व ह्व्यापरे । विश्व वृष जायो जंशी मांपरे, वाप प्रमुजी प्रगट खांचरे ॥६॥ तेना वंशना रहेछे वांसरे, भना गुणना घरेल प्रासे-

र । दर राय वर्ष निम बाहरे, अयोग्य आवश्य व करे कार्दि um un रीतने पाल बळावर, सवाप कोकश जाना बळावर। रहे वजुनी मरती मधाकरे, मजी सन ममनाती माकरे ॥८॥ जान म्यारच सारवा माधरे, कर्षि करे सन्ति बार माधरे । काम कोच क भी भी न वर्षारे, सीए वनमां न जाय वर्षार ॥९॥ सहने आवे शु-भ उपनेतार, तेमां स्वार्थ वहि स्वतंत्रार । समा सहवा से हिन-कारीर, पर्छ पीरणने रचा पार्शरे ॥१०० औटरिना गमना मार्डेर, रहे सदा सबंधा सदाईरे। होत हरिया अवन वचारे, लेथी सहवे उपदेश नवारे प्रदेश नेज मधी पासे शीव पाररे, नमा अधी जो भवाय लगारते । एक म होय धर्म निक माईने, नहें अंतरे अधर्म करहेरे ॥१२॥ एका बायु के जाना रही जायर, तेशी ओव बाय के व थायर। कथा मारि छात्र तुल मोपर, नेनो रोप के क्सी व होपरे ॥१३। दश्यानकारी बारच्य बोडीरे, स्था जनबोरच्यं वन जोडी-रे । वे'वारिक मोटप्यने माईरे, वायरेखे दुदि वक् लाईरे ॥१ ता सबुची भरम फोमवेडे सुकरे, बधी कोई वानमुं बजी वृत्वरे । कुने करें में रेनी मोटाईरे, ने मांचली वर्षा पोता महिरे ॥१५॥ एका बका मुख्यि परेग्रेरे, आची प्रवर्त्वा शिष्य दरेग्रेरे । करेग्रे कश्याण हे जन शर्मा, जानो मंत्र हई चाओ दामरे ॥१६॥ जापी तम अव यन अपनेरे, अनुपार करिये लगनेरे । वधी हरिनी हरूओं हालला-रे, रहेडे कब सबने मा'लनारे ५१ आ चाने बसुनी मरजाद बोदीरे, रहेंचे विषय काथे अब जोडीरे । एथी करपाल थावानूं केयरे, ए पुजी बहेंच्यों करी प्रेमरे ॥१८॥ वसी पुजी एक महाराजरे, वहु अथनार पर्यानुं दुई काजरे । को इति म रह एकत्र करेरे, कीए था-युँ युई लक्ष्यरे ॥१९॥ एक होन तो भागत सबू एवरे, केवानाव रहत महि केवरे । सह भावे करत भागतरे, एक बीजायां मेळवी अवरे ॥२०॥ हेने हसीमसी रहत भेसारे, दिने म रहत कोय हुने-सार । जानो परस्पर पडी कारीरे, माहोमाहे वह रखा मारीरे म १९॥ एक बीजाने निस्ने बहेंग्रेरे, सहस्मृ बीनाने बहेग्यरे । एक रहें दे विषय काथे अब जोडीरे । पूची बल्यान बाबार्ज केयरे, प में एक नी ववासना माहिरे, कावे जाळी जांच्य कोट्य कांहरे ॥२२॥ नेनो सह मजी जिंदेंछे बाघरे, ही जुं करेंछे पोनाने हाथरे । नेमां

वि वावे व्यवं सुन्दे, थायां सहन् इयाम पार्शमुन्दे ॥२३॥ एयां क्रमाणी वी क्रमापारे, ठालो जनम एखये गमापारे । एवी मूलथवी छे जे भारेरे, माट पृत्तुमुं हुं वारेवारेरे ॥२४॥ कं'जो जो होय
कं'वा जेयुरे, वहिलो घोड्यु वर्ष वय कं'वुरे । बेलो सं'जे पुछयुं संलजनरे, वयी संपाप एनी मारे अनरे ॥६५॥ बेलो समझी साबिल
बीचुंछरे, रह अंतरे वारी लीचुंछरे । बजु वकर विशा कल्याचारे,
वयी मानतो हुं निरवाचारे ॥६६॥ एवी निराह गांच्य वक्षीछरे, वीजी सर्वे बांकि टक्षीछरे । जांच्यो पृष्ठवामां वयी बाहरे, हवे एवुं
पूर्व विषया माररे ॥२३॥ एक पृश्चि वे वरवोचरे, एवं वयावतां अवयोचरे । इये एवो निह कर्व वचाररे, बांधी हीयुं छे सर्वेनुं साररे
॥२८॥ वल बीजावे समझवा साबरे, पृष्ठवृंछे सहाराज आवरे । रखे
प्रचेवमां कोइ वहरे, एम मार्च मन पार पहेरे ॥२९॥ इति कोवस्थानविश्ववत्ये मुख्युमुमुनवारे अवने निर्वेश ॥३॥

रेश-मुक्त वचन एवां सांबटी, बढी बोलिया करी हेन । शुः ड मुमुख सांगरचे, कई मर्वे विवति संवत् ॥ ॥ प्रथम कई ह पिएची, बसु पगरमा अवनार । पणी कर्नु नेना कुछनुं, निश्चय करी निर्पार ॥२॥ एके अनेक शकारमां, सरे नहि संबक्तां काज । से सार तब जुलवा, परणिये घरेडे बहाराज ॥३॥ बोरि बेसुपा व्यो-मयां, वृष्टे बृत्वी कर्या होय दास । आरमवानन अरथं, आपे जा-वेष्ठे अविनाम livil कंकर्-एक अवनार एक वे काजरे, सहर क-री लियेथे बहाराजरे । तेनां सर्वे सक्ट टालेधेरे, बीने पूरण लाह पाळेचेरे ॥ । इने इसीमदी तेर साधरे, बोलव मुल आपे तेने बापरे । तेतो पायछ पुरणकामरे, बळी पामवे प्रमुनु घामरे ॥३॥ एइ बिना होप इरिशामरे, नेना कष्ट करनी शाय नावारे । त्यारे ए तने जनव व भागरे, एम समझवू मनमांगरे ॥ आ जळवासी दः रे काम जळतुरे, व्यवसामी करे काम माळतुरे। माटे बांग्यां नी-लां तम परित, काम करेंग्रे जननु दक्षि ॥८॥ उपारे परेग्रे जुजनां गानरे, त्यारे द्वाय मुजबी रीत मानर । पड़ी देवी रीन जार्ज मनरे, नेबी रीने करछे भजनरे ॥९॥ जेबी गुण कर ने जाकाररे, जोड़ ज-

a fewer in much in graft to be secured.

ब दरे निरमाररे । यरे आकृति जोहने ग्यानरे, गुम सर्थे दरें मानरे ॥१०॥ कोइ कडेंग्रे मुखे शत्का साम्प्रते, कोई कडे कन्यांचकारी क्ष्मरे । कोइ करें के बाराव कारावारे, कोइ कर्मिक जी व्यागारे ॥११॥ कोष्ट असे बाधम परशुरामरे, कोष्ट निवे रामानीनुं नामरे । कोइ क्रूच्यक्त्या कही रहे छेटे, कोइ पुत्र क्यकी क्रवेंग्रेटे ॥१६॥ वे-तो क्षेत्रे सकता प्रमु क्षेत्रारे, तेवा अवसा रक्ष्याचे तेवारे । तेती वी-के करे कर राजरे, कर्य अति इस धन साचेरे ॥१३॥ सहने बोला-ना इष्ट के प्यारारे, तेना गुण आकार लागे सारारे । एव सहन जारने जनमांहरे, परवस्त्री व शसे मोटाईरे ॥१४॥ एक ग्रुजनी पढी-के बानरे, मेनूं सकती स्वे साक्षानरे। सानी टंब एव जो सपछे-रे, वर्षे कोष्ट्र केने जेर्नु य अजेरे ॥१५॥ अति समने वंपाणा सनरे, करें एक बीजानुं जसनरे । एम विदेशे एक एकतरे, शुरी बेठा वैचे विवेदावेरे ४१६॥ इवे इरिवेदानी वानरे, नेपण आंजकायो मा-रा जानरे । इक बाबीका जादि अपारे, रोजे वर्षा इतिवे अवना-हरे ॥१आ लेने अवचा केने काम भावरे, लेने सर्वे कल्याककारी का वरे। के को रहा से कुछ कहेबायरे, सेवी कम्याम के दि व भाव-है ॥१८॥ केंच्यो अक्तकुळ एकोक्तरहे, तारे लेखां वहि की करहे। लारे इरिक्कम केम म नारंदे, तेरण कई सुओ सह कारंदे ॥१९॥ इतिनी मरजादमा रहे निन्देरे, पर्व निम पान क्वी रीनेरे । लोके वृष्टि जाका समारहे, आले प्रभुक्षक अनुसारहे ॥१०॥ होच जा-क्राकारी जंगरे, केंद्रि म करे आज़ानो भगरे । एवाचकी गाय क-रपायरे, वर्ष बीजाजी सांभक्य शुक्रायरे ॥ ११॥ सम्बर्ध प्रभूजी सम्बर-स बहियेरे, मेथी कल्याच कही कम शहियेरे । कुर्मममु वश कच्छ कड़ें छेरे, तेपक कल्याक काई करें छेरे ! अपना बाराष्ट्र समु वंशती शंबजरि, मधी दाना ने कन्याणनजारि । वृक्षित वन वंताना वाच-रे, तेनो जब जीवता चरापरे ॥२१॥ बावब बहु वंश लक्ष्यारीरे, तेषण क्यांवर्की कन्याचकारीरे । वरशुराम बंधा क्या करकीरे, तेनी कोच ओई घुने वरणीरे ॥१४॥ रामवंशना सुरजवंत्रीरे, नेमां कल्या-जनी वाल क्योरि । कुण्यवंतामा जावन जानोरे, लेखां कश्यान क्यांची ववाचारे ॥स्वा यह वसूना बोचत्र आवंदे, कहंगे कन्याः है 

लती जब कापीरे। कमिक के वे कियस रहेकोरे, तेमां कम्यालतुं कोस कहेकोरे (१९६)। साथ द्वार दि हरिजन बोजुरे, करको कम्यालतुं जो बगोजुरे। साथ सारच सह आरकोरे, हरिना के परघर मारकोरे (१९७)। यह बांधी शब्द बांचलेरे, करको जीवने यह आयजेरे। लेको सर्वेश्व तेहुनुं उमीरे, करको कोइ स्वारच समीरे (१९८)। पृथी केहि बहि साथ कम्यालरे, बांच्यो हुकता कोरे शवालरे। काम्यो बांडे बोरदाने हाररे, सांव जाने काण चाहुकाररे (१९९)। बारे मोसी स्वारचुं केहिर, कम्याल प्रमु के समुने ससंवेशेरे। सेह विमा कम्यालनं कानुं काचुरे, करे नियक्तवाले ए साचुरे (१९०)। इसे बोक्सवालि क्यां हुक्युक्तवाने जहने विकास समाने (१९०)।

रोत- बहायुक्त करे जुमुझ तने, यम पुछ्छे बर्सुई बान । बल्या-जकारीमा दुखनी, मुं सांमधी से साशान ॥१॥ अमीकिकपर्यु वहि कारमा, क्रेकमां बचारचा लाज। जाटाटोर एट कारचे, शह राजी रक्षा गुरुराज ॥२॥ जेले करी जाये नहि, रहे गुरुपर्यु धरमाह । एवी रीनने जनुमरी, यह उस करेंग्रे उताह UIII जेन बयम वर्ण अहा-रमां, सबू करे वह सावधान । तेय क्यम गुरुए जाव्यों, धन कर्य क्षाने जिल्लाम ॥४॥ पोपाई-सुद क्षेत्र जजावना काजरे, राजे गो-भनो सर्वे समाजरे। सार्य बना परेणां वाहनरे, कई नेती रीत सुणो कररे ॥६॥ वो को बनामां केव संवासारे, वह रहा ने रंगे क्यासारे। क्षीजायोगां सायेन सेहासारे, बामन अत्तरे बांबदियासारे ।.६॥ एवां बम्ब अंगोजंग के रिरे, गुरुपणुं नहां वंग्रे ते रिरे । वळी के री अरेगां को बजारे, करेस होरा मोनी हंमनजारे एआ वेद वीटी करा बांच बाजुरे, दवा बादबालां चर्चा काजुरे । बेली गत बात सुम्बरालेरे, शोज तान सह गुर मा'सरे ॥८॥ वळी सुंदर मंदिर रहेवारे, काच हालेल हांडिये दीवारे। व्याचा पीना मले लुच व्यासरे, जेंबूं वह चरकने बोमासुरे ॥९॥ सीधी सरस मुलिया दरेंद्रेरे, बात दल्या-कती जो करेग्रेरे । आपे प्रसादी ने प्रमादियदि एव चेना करे जि-यो तियरि ॥१०॥ केक पूंजना को उंकानरे, चाद्र श्रीकत सह नि-बानरे। क्षेत्र दोरा बांचे दूवा आपरे, क्षेत्र नसमुद्राए तब छापरे ॥११॥ कोइ मुक्के बस्तक इरथरे, जोई सोई जपता सनावरे । कोइ वंश्र 

आपे विचे आकरे, कोइ करावे जानि विटासरे प्रश्य कोइ आने राज परमाचारे, बहु धन लेवाने शालारे। एम सहस्रहूना सन सक-तारे, आवेडपरंक राजे जळतारे ॥१३॥ एव बांधी देता कुर होतीरे, एक बीजाची राज्य बान जोरीरे। कहे आपणी वाल के एवंदि, वची कोइ कीजाने कथा जेनीरे ॥१४॥ जापण सबुतुं कल्याण वाकेरे, बीजां बहु अने भरकातारे। एव गाँने बोनामा सब माहरे, सान्त्रं कल्पाच कलर व कांहरे ॥१५॥ सङ्गुए मात्रीके परम धार्चानरे, वार्का करणाण कहि कर रशिरे।सगरा पामको क्वीतुं प्राप्तरे, क्वी सगरातुं कोइ डाकरे ॥१६॥ माहे अबु धाओ सुक्युन्तिरे, कीद सुक विना रवो पुःलीरे । एस सङ्घ कोई सगरा बचारे, गुढ विमा तो कोई स रकारे ॥१ आ अने चेमले भारयुक्त जेमरि, वती गुढ मसिवाचे नेमरि। एम कल्याम डेरापी डीकरे, बेडर बराबी साथेपी बीकरे ॥१८॥ प्या कन्याणकारी कई का वरे, विचय क्ये जोगवे जोगवादेरे। करे विश्वेष वि:शंक रे'ओरे, जमपूरी नमारे सुद्री में ओरे ॥१९॥ एवी वाली पाप परोधररे, तेले निवर वर्षा नारी वरहे । एवं बाल्यं कः ल्याचार्त सुनरे, करेचे सन्द आरंधे जनपूनरे ॥१०॥ एवं सांगधीने क्यों काणपुरे, परचुं भागी जायचुं बबावपुरे। बढ़े जाना शयने अर् विवेदे, आने नेवचा ने केने अविदे ॥ देश मह गुबनी जाकती क्षरि, क्षा केंद्रों के विश्वेत गर्दरे । मेने क्षाये केंद्र मार्च मेचीरे, महा मोरामी धरजाव केबीरे ॥२५। जियो कासवाक वे कंतरारे, करें। काक जनमाँ मामकारे । कुकम हुने नमारो व रक्षीरे, नेनी जन-राय जाशी नियोरे ॥६३॥ एवं क्यूब जमपूने स्वारते, जमरावे कि चार्षे बारेरे । इव बा बाननु केन बाहोरे, जार्र बीहरि हपामनी वासरे ॥२४॥ वर्षी भीर्ति वासम अर्दि, वान मनुष्यत्रादनी करि। बर्मकोके पर्व मोटी पानरे, करे पाप सक विकासनरे प्रश्ला नेवा भोगवताओं अप शार्वारे, वंदा निर्वय का गांत्रा वार्वीर। करेते अगरार्नु बरसुं बाकेरे, अगरा शह बाममां जाकेरे ॥२६॥ मारे गुड विजा मधी नरवारे, काला गेला वन गुर करवारे। एव बेटा सनु शुक्र चारीरे, गुक्र विना करी वर कारीरे प्रश्ना हवे सवसनीनुं हां का-बरे, बहोनो करिए राजह ए चामरे। युवयुष्टीने देवो से इंडर, बाव

the feature of the fe

नाम ओहु ए वर्षको ॥६८॥ नारे जेम कही तेम करियेरे, थाय व्यक्त राच नेपी दरियेरे। जेना नुद थयाचे जमानरे, तेने केम कई वंधि-वानरे ॥२९॥ एटानुं कहीने जमरायरे, पाण ओडी लाग्या धमु पा-वरे। कारे वोलिया सीहरि हमीरे, वर्ष बात करोचो एइ कसीरे ॥१०॥ १व वोकन्यानविर्वयक्ते पुत्रमुख्यको नकते विर्वयः ॥६॥

रेश--- श्रीहरि कहे वर्ष सांबळी, शुरु व होच वेरोचेर । शुरु हो एक गोविंद है, बीजी सावा क्त्री बहुवेर ॥१॥ कन्यासकारी क-ल्याण रही, सारी आये अने दना अये। रक्षवादे प्रपंत हती, अनि बाजा करेके जनमें ॥२॥ जेम मर्नकी सून्य करी, इतिनिधे केवानमुं यव । वेच शह विचविषया, यरे पामरवे बसल ॥३॥ तेव नापापे लग्रामा, करी शीचा विश्वमांय वेशा। एका गुढ शिव्यमी, लगे बीद व राष्ट्रक्यों लेख ॥४॥ नेकां-नुद द से शूं दैनया नुदरे, स-जो वर्ष नेनी बान करंदे। युद्ध का अवनांव से बजारे, नेनो दोसि-या सह काकनजारे ॥'या जे पुरुषी जयबंद जायरे, ने सांचको नमे धर्मरापरे । तेली होष धोने अगवानरे, आपे आधिनने अववता-वरे १६। सर्वे पाधनचा होए पाधीरे, बजी बच्छ जंगरजापीरे। जाने सहजा बननी चानरे, जेम दोच तम काफानरे ॥ आ अर्च भोरी ए आसे व जातरे, वयमना बन्धावने मानेरे। एथी व होय अजान्यं को कांचरे, बळी जकगुद ए दहंबायरे ॥८॥ होप प्राचना-बी एवं हाचरे, सर्वेन्दर ए सर्वेवा वाधरे । लेवे बाणवादी तो ले-चायरे, तेनी बार लागे नहि कांपरे ॥ भाषी प्रमती देखावे पा-वरे, बोह तम बाय पुरमकामरे । वसी धामवामना रेजाररे, हे ले अभि सुन्तिया अपारदे ॥१०॥ जन जोई आवे भाग जेव्दे, जावी कर्त मार्क करे पर्युरे। एकी अनीकिक रीत जियरि, होय हरिनुक होष निवारे प्रदेश बळी अंतकाज आवे आवरे, वहा रथ विमा-वर्व सांबरे । लेक्ट बेसारीवे तंत्री जायरे, साचा सहूद सेवे दहेवा-यरे ॥१४॥ आचे सेहवा तेनां एपांचरे, जेना प्रमु आवे प्रदेशाय-रे। हीरफेरप सम अंग होपरे, अभि वर्ग वर्ज वाले कोपरे ॥१३॥ एवी रीन जियां छवी जानोरे, नियांसुधी सम्याण प्रवाणोरे । पठी य वाननी वाच सावारे, बलनी माणा करे नियां वासरे ॥१४॥

बाबी नियंते गुरुनो वंशारे, व होय गुरुवर्ण सब संशारे । सर्वे वि-नामभा केन वजीरे, मापरगुरुमां रखां कोच सर्वारे ॥१५॥ वारी चोरी चळी अस मांगरे, नेना बळे मापाएड पायरे । भांजी मांगर होका बहुपेररे, बाबे जाकु अपर मुक्येररे ॥१६॥ अंते जनवांच होष फेलरे, तेने भवें शुरूप राज्यतरे । होष विषयी है स्वस्त्रवीरे, पना अभूजीना इत्यवनीरे ॥१ आ वर्ष समहरीना भागवारे, एका एक वरोपर इकारे । मधी वर्ग नि'म बुकावरे, वेदमर्पादमांची बुकावरे ॥१८॥ वर्णाभवनो के वे वाररे, वो वे सायानुकने सदावाररे । वर्ग बरावे जानिविदासरे, नीर्थ तन वि'सना तो काचरे ॥१९॥ एक बुद ने गुदना विष्यदे, काली नगावल्यो कहोतिकरे। एती बीह शका जब जागोरे, सर्वे जीव ए तमारा जागोरे ॥३०॥ एवा नुव बेना जमे बचरि, तेनो अबें कुछ तमनजारे । एका गुन्हेकार गुरू शिष्यरे, तेने देराम करी इमेक्ट ॥ ११॥ एका त्रिये कर्च लोके हरते. लामी वर्षराय वाचे सदरे। जेजे किया विष्यती जेमेरे, तेनी तुष करी माञ्चा तेनेरे ॥२२॥ वसी व्यक्तनी पृष्ट्या केवरे, मेने क्या तुष होचे शिवरे। मांनी नानी भागी संपरारे, तेने एक युद आणी जरारे 8+38 पना तुष जनमां जनाररे, तेनी बानी बायानी परिचाररे। बादे जेवबी कन्याच व पायरे, नेवच ने तुव जेवा के वायरे ॥१४॥ वो'य गुक्तामे गुक्तमरे, नेत्री गोतीने कारची गमरे। एवा अलख मुदनी बीच राजीरे, शीद दियोगो आयुव जाजीरे १९५॥ लाने हानी बाबी नके बामरे, मेंबो नवभार ब राजो हामरे। बाबी लियेके अमारी लाजरे, सन्य मानी लेक्ट्रो कमराजरे ॥२६॥ जेते बांधी असे महजादों, तेने ओवंडे ए मनुजादरे। सारे एने तो बड बंध देवीरे, क्यों इस्थि इस्थ न्वारे ॥ भा वर्ष मांबदीने जनस को, मानी बाका नानिया पायरे। के के जेले कुपा करी कहारे, नेने विवास विकास समेरे ॥ ९८॥ यह बान के बदायराकरे, रक्षत्रमा-जमार का जाने है। असन गुप्ता चात्री ए शान है, समे जिल्हा की-काबो क्रमान है ॥ १९॥ त्यारे आंक्य एनी प्रवृक्षकारे, क्यारे अलानोडवा बाल वहवारे । बादी पत्नी नेना कामापर, क्यारे बदवी करेल कार्य #\$का इति बीकम्बायभित्रंवकाचे जुलमुन्धुअंकाचे एकवी विर्वतः ॥१०।।

रेश-मुमुश् कह मुक्तने, प्रवारे क्रम क्या करे रोष। वारे भाषामुक्त्रे वर मारमा, रण दिएएयतो द्वापी होता हो। कल्पाण करका कारके, आवयो एका गुरुती वाल । तन वन वन दई नेहने, धया दिन साचे एवा हाम ॥६॥ आंजनी न करूपा असन गुरू समकृषा विजा चया शिष्य । आजाच्या प्यर एवडी, राष्टी व वह धर्मन रीम ॥३॥ एस कर्म कर ओकीने, नव मांभर्को मारा इपास । ۷ نوا میکندا ما نمانهای برا بیشم اساسه ما بیشم اساسه ایران دارد ایدا بداید ایمانهای «میانم اساسه» دستار پی

जाजीरे, वी हं अर्थनाळवय वाजीरे हरे आ होते हे जायां का देवाओरे, बनाबीर ने बोर के बाजीरे। अवदा अगबीमां शानुकाररे, बनी क्ष्यमें सन्ते बन्दी आररे ॥ १८॥ यस अवस्थ गुरुने आकरीने, जीव आयर्फ ने जमप्रीरे। नियां वह शामेले क्याँडरे, अनी अनि लग समा छ प्रथिते ॥ १९ ॥ वर्षा भूपन् सार जसारते, तेले करी नाव जम मारहे । साची बान मांबद्ध कानेहे, तीय चन्नों के लोहारे मानेरे ॥२०॥ मोटा गुरुवा माणांचे समारे, सभी गावा ए हे जम छतारे । यंच विषयत्रा योचन वतीरे, लीवे अस चन आयुष हरीरे ॥६१॥ व्यान्यते कीचा गुरूर वार्वतर, पछी आध्योते अयवे शासीहै। वस चंत्री चान्यो असमाधेरे, अचकर्ष आबी वर्ण माधेरे ॥२५॥ कांश्रीगरे कांसी बाली कोटरे, कींथी अमनुरे वहीं होटरे। बालुकार आणी क्यों सगरे, नहीं विषयों होतानी हैनरे 1511 असहया विया क्यों संगाधरे, नेने लूंटानी आजी अवस्थि। कथा केंग्रं है के वे व रहारे, एषुं बद्धारी वे साथे प्रपृते ॥५४॥ वस व्यव विका लोख लार्थारे, क्लवरंक कळारी क्लार्थार । सनिहील ले लहानु:स वासरे, जे कोइ सभी वर्त मुर भामरे, १६५०। बारे सनि वानाजी हाय भोडीरे, तो मळबू घोटाने यात्र घोडीरे। पूछी आंबी पदन पारतारे, जेटी मन रंपनी समनारे १,३६॥ माची बान माचे हैं जो कायरे, जेले करी जाव इरियामरे । जोरी दानमाहि कोव्य आवेरे, लेले भूर विना केने भावरे ॥२ आ बारे सामाने शांभव सामूरे, कश्वाक-क्षां व राज्य काणुंर । माचा महूद अनने संबीर, सर्व वानने सु वारी लंबीर ॥६८। वर्शकरी व वर करवृते, एटल्ड मी अवडच कर-बुराए के योगाना दिननी बानरे, सहने समझपु ए साधानरे ॥२९॥ जन वारीने भाष जा स्थानरे, व्यो सन व बहुबी निदानरे। व्य कर्य मुक्त मुख्युनेरे, होय सजाव तो प्रकरंप मुनेरे ॥१०॥ इस कर-स्थाननिर्वत्रकारम मुख्यम् । स्था हे एकारता निर्वतः ५१ ।

रंश-नृत्यु कहे महायुक्त संवाय रखो नथी रित्यार। तसे वर्ष तेमज छ, एमा नथी पर अगार ॥१॥ दृष्ट मक्ये दृःल इपते, वृद्ध संत्र समय छ, एमा नथी पर अगार ॥१॥ दृष्ट मक्ये दृःल इपते, वृद्ध संत्र समय समय आप। लगानक ए कोई मथी, तेन कृष्ट केम के बाय ॥२॥ वर्षी कृषि हरिजन सक्या विना, दृष्ट केदि व

होच कम्याच । नवण सर्वे शन्य हो, बद्धानकी बान निर्वाण ।।१॥ क्य इति वे इरिया जनती, करी जोएए केटली सेव। जेथे करी केव किरवर्त, भाष एको पृष्ठ में व ॥४३ कमा - प्रभू प्रगर बडे केने क्यारेरे, जोट्य मामी रहे वहि मारेरे। जेवां वर्णव पूर्णव बहुरे, बर जनर मानेते सहरे ॥५॥ जोती जिन सबसी मन्यामीते, सह वनु दर्शनका ध्यामीर । इति हर आज अधरेवारे, प्रमु सलवा इच्छे अहातिवारे ॥६॥ लाग प्रगर मधी चायनारे, रहेके सदाये बीका जामनारे । वृत्ती चान ए छ पूर्परते, नेनी प्रभु सकता प्रनरदे ॥ आ वती प्रमुखे करवा मसलो, शुशुं करे शिक्षासु जबरे । केल्यो परन्तुं कृता करानरे, केम राजी कर ए इरिनरे ॥८॥ केवी करे अभूजिनी जिल्हिरे, जेवे करीने पासे मुक्तिरे । केंचूं माने प्रतिनुं पणतरे, चे हुं राजे शका शहर जनदे ॥ १॥ देवी शहा होय संवादाहर, सेवा विमा व नमें बीजें कार्रिते। केंबू मेनि बोनामुं मानते, केवी रिने रहे माच-चानरे ॥१०॥ केनी रीते वाले तेम प्रवेरे, केनी रीते चलारे ने वलेरे । केवी रीते राज्ये विश्वासरे, केवी रीते रहे प्रमु पासरे ॥११॥ वे.वी रीते राजे हैचे बीकरे, केवी शिव रहे डीकोडीकरे। केबी रीवर्ज बीते क्यारे, केवी रीवर्ग पूर्व ने पक्षरे॥१२। केवी रीवे सुन्ने वान कानेरे, के वी रीने बने सत्य बानरे। के वी रिन वाच बसकरे, के वी बरजी जी-हैने समनदे ॥११॥ वरते सन कर्स के बचनते, के वी दिने के रावे बसनते । केवी रीतजी प्रमान करेर, केवी गीन भनकार परने ॥१४। केवी रीत चंदन उतारीरे, करे पुत्रा ध मुक्तीनी सारीरे । केनी रीतनां कुस्म लांबरे, केबी रीवजा पार पे रायेरे ११%। केबी रीवे प्रवारे भारतीर, केवी रीते करे मुख्य अतिरे। केवी रीते करे वटी स्तृतिरे, केवी रीतनी करे विवतिरे । १९॥ सई घेर मुक्त प्रमु आगरे, वती कर जोडी शुं मागरे। केवी तिन वश्युं वसीरे, महायानु यगरने मर्न्यारे ॥१ आ अंचे करी हरि राजी भाषरे, धवा के उची ए सर्वे प्रश्नवर । विषक्षि करी भनी बातरे, के उसी राजी भई रळीयातरे ॥१८॥ बजी प्राच सक्त एक है। कहे उसी ते क्या करी विवेक है। उसाहे प्रभूती वनर होयरे, लारे सन्द्य नरे के वर कोयर ॥१९॥ होय लार्व कृत्यु में बालाओरे, लेजू कल्याच्य केस एक काओरे। देव हात्रवादि जे والمالية والرواء المالية والمواهدة والمواهدة والمواهدة والمواهدة والمواهدة والمواهدة والمواهدة والمواهدة

के 'बापरे, तेनु करणाच कपी वेर भागरे ॥२०॥ भूत प्रेत वे औरव भणियेरे, तेनुं कल्यान केन गणियेरे । बक्षी क्यू क्ली मरीमपरे, जेना इलमाहि वह इर्वरे ॥२१॥ हुका बेली विविध के बायरे, तेनुं ओप पाप के व बापरे । स्थापर अंगम जह बैनस्परे, स्पूछ सूक्ष्म बराबर अवेर ॥६२॥ अम् बगटने बनायेरे, एक् नरे के न तरे जायेरे । केने होय हरिनो संबन्धरे, नेना पुट्या जीएए धरवन्धरे (त्रा) भारे एवं बेडपी इद्वाररे, बाव के व बाव विस्थारे । अनि रज्ञ नमें अर्था बंहरे, केम कामें कल्यानने लंहरे ॥६४॥ क्या एक बंधे बढरे ओ वहरे, खारे प्रमुनी प्रमुणा सहरे । एइ सर्वे समझाबी कहे-क्योरे, जेम होय नेम देकाही देश्यारे ॥२५॥ नमे इतना छोजी इपाद्रे, मारे वश पुत्रुं ह्वाद्रे । सुंजवा हान वजीते हैयरे, आणुं सर्व ए सांबद्धी लेवरे ॥६६॥ क्वांधी नम जेवा कहेनाररे, बान जोली देलाडी देशाररे। जेन छे लेव कहों हो क्यीरे, जेर्या तेश संवाय रे'तो वर्धारे ॥२आ वयन सुयासम सुव्यदाहरे, एवा मानुंतुं ह सनमाहरे । जेने करी परलोकनुं सुखरे, पामी वामिये हाकन इ:बर ॥ वटा। एम कहीने जिलामु अनरे, वडी कर ओही कर्य लवनरे। एमा सम विषय जो बोपरे, बरुएयो भ्रमा सन्य सुनि भोषरं ॥१९॥ इति वीकस्थानभिजंबकाने हुक्तमुसुबूसकारे हाएसे भिजनः ॥१२॥

रेग- जिल्लासु भूने में लाणियो, जरा ज्यासी निर्धार। जेले में पूछ्युं ने पण, छ सर्वे सारमुं सार ॥१॥ जगर वसुने पासिया, ने कुमार्थ के बाप। सर्वे कारम सारियां, जाणायों भा जगमांव ॥२॥ वर्धी मुद्दे प्रमु प्रगरमुं, पणुं गममुं जेम होष । नेवी रीने मरपर थर्ड, करे सदा निरंगर मोण ॥१॥ मेली गममुं निम्न अनमुं, रहे हरि-जाला अनुसार। साची मुमुखु ए मानची, निश्चय करी निर्धार ॥४॥ चंपार—जेना हरिपरायण प्राणरे, भधी रही जेने चोड़ नाजरे। प्रमुख पर्युं निम्न नमेरे, वायुसमहार में बचनरे ॥५॥ जेम बाजे नेम जन बजेरे, मसी ममन अन सप्येटरे। रहा। अनि आला अनुमा-ररे, करी निश्चय मने निर्धार ॥६॥ एका शुद्ध सेवक सुजाजरे, प्रमुख प्रारंग वसाचरे। बीजा सहधी पर निराधरे, वया भीधन-इपामना वासरे ॥३॥ सदा जोड़ रह्या हरि सामुरे, नमर्नु हरितुं

करका से हाभूरे । एका संग सदा जिहामिणिये, कहं रीत खुणी ले हमिलिरे ॥८॥ करे व्यक्ति सदा निष्कामरे, चन्त्रपान व पूछे नाव-है। बाने वन कमें क्याने क्याने, राज्ये एकावे हरिया वनहें। है।। शह अदा क्षेत्र सेवा शहरे, नेमां इंच कपर नहि कारे । मेन सन तन जिल्लाको, करवा इरि राजी व्यवपानरे Bhall वाळ इरि जिल त्यां वजे नगरे, विषयमुख अक्षये व चज बगरे। इरो छे वभुनो विन्यासरे, रहे अभुवासे हालानुवासरे ५२२॥ अंतरज्ञाधी जाभी राजे बीकरे, केदि स करे काम कडीकरे। बोले दीन आधीन बचनरे, करेरक के प्रयो मूने भगवनरे ॥ १६॥ सुको सावधान धा बातरे, सन्य बचन आणे साधानरे । घटके रहिन पूर्व हरिकारे, निर्मी आनद आये अनुपर ॥१३॥ जुबे राजीपी इतिना जेमरे, क में बन कर्म क्यान तेयरे । इहुद भोजन जमात दगायरे, हैवं हरि जमादका द्वामरे ॥१४॥ लेख कोच्य अस्य ने भोजनेरे, जमादी वे शक् बना नवेरे । बन्न क्रेम मही पूजा करेरे, बन्नमूनां परेलां जी करेरे ॥१५। सनिस्ताचि करूद क्यारिये, करे समी और पूजा सारिरे । सार्रो समाचि अपर्व कृत नावरे, करी बार वृश्ति वे रावरे (१९६) अलिक्टेन बनारे आरुनिरे, यह समय करे पुन्य अलिरे। प्रेमे कता रही पनवनिते, करे श्रंबन ने विनितिते ॥१ आ लेने सम्बद जेक्य करकेरे, बाले प्रभु राज्यायों कारकेरे । करने का दालना दा-लरे, एव रहे प्रमुत्रीने पासरे ॥१८॥ जेले महायम्ने वच समेरे, लेने करे नहि कोइ समेरे। बची पूछमूं इन् ने बमरे, उपारे बगर शोष अगयनरे ॥१९॥ त्यारे बनुष्य तरे के तरे कायरे, तेपण कहें मांबक्षण्य सोगरे। वर देव दावदादि वर्जारे, वर्ता प्रवट प्रमुख है. सीरे ॥२०॥ शक्षम पक्ष भून भैरवरे, बजे बतर तो तरे ए सबरे । बळी पड़ा बन्धी मस्मि।परं, नेपन तरं प्रतु प्रतापरे ॥६१॥ कुन बेली वामे परम गरिते, पच कुल एत दारपनिते । स्थूल सुरुष अह कै-तनरे, प्रमु प्रगट प्रममे पायनरे ।.२२॥ श्वापर अगद परापर जेव-है, ब्रम् बगट मदये तरे तेव्हें। जीने रामकृष्णानि अपनारहे, नेपी वह थया भववारदे ॥२१॥ स्वावर जंगम स्थूल मुक्तमरे, चराचर पाच्या गति क्रमरे। तेनो गणनां न लावे पाररे, एव पयो बहुनी 

बद्धारहे ॥२४॥ केक सनुष्य नयाँ वर बामरे, वशु पंत्री पाम्यां हरि-पामरे। के क्या मेन में भैरवरे, बुक्त बेली लग सुग सर्वरे ॥२५॥ आगे वह पया अवनाररे, नेथी माज सामग्री अपाररे। जोने भा समे पदार्था कहरे, मेनो सम्बन्ध समाय महेरे ॥६६॥ रामजनगरे के रही गयारे, ने कृष्ण अवनारे बार बयारे। कृष्ण अवनारे नवा'-ता रहिरे, तेतो भाज उद्धरिया करि ॥२३॥ एम आहि अने मध्ये बानोरे, बनाए प्रगटनो नहि छानोरे । पगट प्रभु के बसुना संगरे, तेह किया व उद्धरे अंतरे ॥२८॥ एक केंद्र रीत विना वीजेरे, कोई रीते कम्पाण न वर्गा तरे । सर्वे शास्त्रमुं मिद्धांन वयरे, के वा हवे के के मधी रहुरे ॥२९॥ कही रीत सनातन तणीरे, यण आज हे अने जे चलीरे। आज अमलिन पास्पा आर्मनरे, एम निर्म करे निरम्ननाः र्वदरे ॥१०॥ वर्ष को करवाबानवं बच्चे शुक्तमुसस्याने वर्णस्या निर्वतः ॥१३॥ .

रोदा-- एवं मुंजी सुमुनु करें, तमी सांभको मुक्त महाराज । पृत्र सं बळी प्रसने, मारो संवाध समाचा आज ॥१॥ सन्याण करवा कारण, करे जिन उत्तथ उपाय। शुनि पुराणमां सांमळी, बळी करे एव सदाय ॥२॥ प्रगट हरि होच प्रक्रि, होच प्रक्रि नेना मकेन । साज समाज सरब, रही जाय नेनी रळेल 🕅 पाछन प्रमुजी शारे, जाबे क्तुं कर्युं कोड अर्थ । ले मा'य करे कोड अंगमां, के बकता वे आय स्पर्ध महा। पोणाई-अंते करे ए कम्पाण कालरे, तेने कई सांबली महाराजरे। मेक्यां अशा पत क्यां पावरे। बसन भूकन आचे केले कामरे १६॥ बामन बाहन नाट्य पाटकारे, मादी मकिया ओछाड माद्रश्वारे । वाय्य कुवा शवावडी क्षेत्ररे, आवे वर्ष प्रभुवे ए परियारे ॥६॥ पर्व सदावन कृत्रणांहरे, यस वेले वर्णशास्त्रा काईरे । माय गया महिची कत बातरे, होच रथ बावची समातरे ॥ अ॥ वांसे जाने ए अर्थे हरिनरे, बार साद एन् तेने करिनरे। बजी आपी होच महिनी गायरे, नेजां दरी हुए पी जनायरे ॥८॥ आपनारने ए अर्थनगुरे, अंग कं अमे समझावी मगुरे। कती अस्य लगा वे विचाणरे, बालवडे ने केंक्यों कल्याणरे ॥६॥ बळी सार दार इक मुगरे, आवे हरि अर्थे पंचा पर्वरे। कड कुछ मूख रस कडीरे, आजी तरकारी जीविष वळीरे ॥१०॥ पशु वंश्वी ने सनुष्य आंपरे, والمراسية والمساور والمراسات والمراسات والمراسات والمراسات والمراسات والمراسات والمراسات والمراسات

सर्वत १४ ] क्ष वस्तावस्तावस्तावस्तावस्त स्वारं पर्ण प्रश्न सिर्वत १४ ] क्ष वस्तावस्त्रवा गंक प्रश्न सेवत होयर, जावे व वस्तर रज्ञ वर्णाकरि ॥११॥ में सनुष्यमं सेकेन होयर, जावे व वस्तर रज्ञ वर्णाकरि ॥११॥ में सनुष्यमं सेकेन होयर, जावे वरि संवा सांयर ॥११॥ वर्णा कर्म जाके प्रशासित एक माज समाज वे वाररे। वाले हिर हरिजन अवने, क्ष क्ष क्षेत्र एक माज समाज वे वाररे। वाले हिर हरिजन अवने, क्ष क्ष क्षेत्र एक माज समाज वे वाररे। वाले हिर हरिजन अवने, क्ष क्ष क्षेत्र वाले वाले वाले हिर हरिजन अवने क्ष क्ष कर्म पर्ण एकरे ॥१४॥ जरुव क्षेत्र वाले वाले वाले वाले हिर वाले हिर हरिजन क्ष क्ष क्ष वाले हिर वाले हिर वाले हिर हरिजन क्ष कर्म कर्म वाले वाले हिर वाले हिर हरिजन हों हिर हिर हरिजन कर्म हिर हरिजा करें विकास हिर हरिजा करें वाले हिर हरिजा करें हिर हरिजा करें वाले हिर हरिजा करें वाले हिर हरिजा करें वाले हिर हरिजा करें हिर हरिजा हरिके हिर हरिजा والمراهرة ما ما ما مراه والمراه والمراه والمراهرة والمراهرة والمراهرة والمراهرة والمراهرة والمراهرة والمراهرة

भारीरे । धे प सन्ता अर्थनी बातरे, के तां सुणतां आगं भवें छांतरे ॥२आ अंते कर्यु होय प्रमुक्ताहरे, के प्रयो तता कळतुं देताहरे ।
तम विना के वे बीज कोणरे, मधी के तार जायुष्ठे जोणरे ॥२८॥ अति सन्दु जोड़ रखा सामुरे, बोली अन्त बेण पुरो हामुरे । तमे विकास को हिंग्याबरे, मारे पुषतां वायुष्ठे बखावरे ॥२९॥ प्रश्न पुन्
हुंगुं हुं लगाररे, ने समझावांको करी विकासरे । पत्यपन्ध दिलवा द्याखरे, पर्मपूरंपर पर्मपाक्षेत्रे ॥३०॥ इति बोक्न्यणिवंत्रको हुबा द्याखरे, पर्मपूरंपर पर्मपाक्षेत्र ॥३०॥ इति बोक्न्यणिवंत्रको हुबहुमुख्यको बनुको निजक ॥१४॥

रेगा—मुमुधु तारा मननुं, में ओह श्रीपुंडे आज । सुन्दरायक ए सहुना, च्या प्रश्न नारा प्रमाण ॥१॥ यहे धनीति अक्त परोक्षते, भी-क्षत्रो समझाय सर्म । ग्यो जाद्यय तारा दरतो, परमार्थ अर्थतो वर्ष ॥२॥ जन दिनकारी जाणियो, जिज्ञासु भूने वे जोर । जेजे पू-णपुं में जीजधी, में नथी कांग्र कनोर ॥६॥ आपूं उत्तर इवं एड्ना, में पुछिषुं सुजने जेड । शुनि वह इवं सुजन्मो, कहुं सर्वे समझाबी नेइ ॥४॥ चार्यः—ने पुछषुं परोक्ष अन्तनगुरे, में वहुं कांग्र धोडूं एणुरे। सून सविषय ने वर्गमानरे, कहुं जजनी रीन निक्तरे ॥६॥ मक भक्तमांहि भेद पचारे, सर्वे भक्त व होय प्रमुतवारे । नि-क्दाम सकाम वे अक्तरे, तेनी पण जाणी जोहए विकरे ॥६॥ सका-म भन्ने काम सार्थारे, भाष तन मनना निकारकारे। एने अर्थे भन ने अधिनाकरे, तेनो अर्थ सर्पासुधी दासरे ॥ आ एने अन्त इरिना है म कैयेरे, बान एवण भामश्री लेयेरे । सुन करून देह सावरे, अजे-छे भावे भक्त एजाकरे ॥८॥ एतुं जासर्थं वहि काइ अयुरे, सङ् सारेछे काम आपर्युरे। साचा अक्त एने व अणियरे अर्थाअर्थी ए जन गणियरे ॥९॥ एनी असि इतिने न आवरे, एनो प्राकृत असी जो का'बरे। भाषा अक्तनकी बोळनागरे, कहं सामकापे नुं सुजाणरे ॥१०॥ शुद्ध अंतर ने शुद्ध आशोरे, शुद्ध अने प्रभुने उपा-सरे । निषकाम कपटे रहिनरे, शुद्ध आब खदावे सहिनरे ॥११॥ पत्त कीर्ति वधारना लाजरे, नहि दंश देनादना काजरे। नहि -रूप्या ने अभरपरे, नहि रपर्या थावा सरसरे ॥१२॥ एवी रीते -कीय जमे जेहरे, तेतुं करेन होय कांह तेहरे। आवे ते हरि हरि-

जब अर्थरे, लेनी कवि ब आये क्वर्थरे ॥१३॥ जने अव ने वेरि बसनरे, आबे इरिअर्थे एतुं बनरे। तेथे वामे वाम बागिनरे, लेको केर नथी हाई रलिरे ॥१४॥ मूचन बसन बाइन वर्छारे, लाठ्य पाक्यादि कान सम्बद्धीरे । आवे बगद बनुवे ए बामरे, पाम सुन्त-निवि एको इयामरे ॥१५॥ बाब्य द्वाना ननाव भुवतरे, नेना करा-बनारा के अबरे। नेह कार्य प्राची परण गमिरे, मणु प्रगट बन्देंगे प्रायमिरे ॥१६॥ विवे पाणी वा'चे बीरमांचरे, देसे एनां करेन वर कांचरे। आवर्ष एनं करेन इरिकामेरे, तेने करी प्राणी सुम्य वामेरे ॥१आ नादी नविया गाइना गोदवरि, अवन भोडा-क ओसिसां वहारे। तेवन आवे को काम इतिनरे, सुनां वेडां जानवे करिनेरे ॥१८॥ नेवा करावनारा जीव जेररे, वाने प्रमुखा हुकने तेहरे। बादी क्षेत्र परच सन्तामनरे, चांनी वर्धशासा पाने बुनरे ॥१९॥ नाय नया महिनी नज बाजरे, मेनी बरे ए सर्वे स-भाजरे। पण केले जाने अर्थ कांहरे, वृति इतिजननी सेवा मांहरे. ॥१०॥ तेले करीने वाच कल्याचरे, तेवल निश्व जाणावी निरवाणरे । रच वे'ल पानकी ने सेनारे, बरादेन होए जब जेनारे ॥१२॥ जीवयो कांसुपी जोत व मक्योरे, वजी सर्वे मुकी वाली पक्योरे। मुक्षे मेली ए सरवे मिरांधरे, पाछवा आशी ए परवे हायरे ॥६६॥ तेइएवं भीहरि संवायरे, तेर्नु कल्याण जकर वापरे। इव दही कारबंक यी मिसरीरे, जन्या होय बगर ओहरिरे ॥२३॥ तेह शाय महिनीनी गतिरे, नाय वसु बमने प्राप्तिरे। केनी अस्ति शूंग रोम चामरे, आवे महामनुजीने ए कामरे ॥२४॥ वामे परम वित प्राणी पहरे, इरिप्रचें भाष्यों एको देहरे। सार दार इन तृत्र वसीरे, कम कुन मूज बंद कसीरे ॥२०॥ एवजादि ओपपि जे का'बरे, ने जो बगर बमुने अर्थे आबरे। बांडे दने व्यापर देश न्या-मीरे, बाव बानक्यो मोक्सर्ना जामीरे ॥९६॥ बळी टीस घोटी मिन बाळारे, कंकर क्ष्यर रहा बबासारे । अनि कहे कर्या होय बेळारे. बच्चां रच्चां ए बालती वेकारे ॥२०॥ एइवर्ण प्रमु जो पुणायरे, ते-मा चनीनुं कल्याच थायरे। काव्य कवि करी गया होयरे, आवे श्रीपृतिक्षाचे सोपरे ॥१८॥ नेपण पांधके परम कन्याणरे, नेनं सम-

इति लेक्नवे सुआणरे। वसु सगर में समगरे, वासे भाववाति कोड़ सं-गरे ॥२९॥ लेको वासे सम् अववातरे, तेसां संवाय वधी जो समार-रे। एक जाना संच सच्य आहित, प्रभु विमा कल्याक वहि क्यांहरे ॥१०॥ इति वीकक्तवांत्रंकको शुक्तकुतुत्रकाहै क्यांत्रे विचेतः ॥१५॥

रोरा-मृमुश्च मुं करे मायपचे, पूरण आश्री असीम । इरि इरिज-न सक्या विना, नो'य कल्याच कर्च बोद रीत ॥१॥ व्यक्तियक शन बद्ध ए बान जरी, करी पुराणमां प्रधान । नेवृ विमा प्रण छोछ-मां, भाषो सांची को कते कल्याच ॥२॥ वर्षय नर्या वर्षय नर्यो, कर्म मरेडे बजी भाग । में सक्ष्युं मूं समझक्ये, मर्था सक्रम जेवे महाराम ॥६॥ बार्वनिक कन्याच कारणे, बावुं सगर प्रमुते शाम । बोहादायक एवं भूगति, के बोहादाना एवा दान ॥४॥ केल्री-नेव विया जिलोकने वारि, वची कल्याच पाकानं क्यांदि । हकालोक जरी सुन्ने भावतरे, किन्नोकने सुन्ने संनाबीरे १०० जोतां क-ल्याच क्यांचे न बहारे, पर्व सुक्यं पुराण अवसंदे । वहा राह्यस ने दहरायारे, नेमां पान्याचे कल्याम कुलरे ॥६॥ व्यत्र (कारी क्षेत्र व वायरे, लारे बीजाबी क्षेत्र के बायरे। धर पूजी एजी अजी साचुरे, पण कन्याण पाणानुं काणुंदे शत्रा एवाची पण कर्न व सहेदे, लईव बीजा संच कोच करते। वाचि सुरक वे बढी बोबारे, सर सुरवित वे गर्भवारे ॥८॥ एवं भोरा देव जन जायरे, एक वती व वाद कल्या-नरे। त्यारे अञ्च देवने प्रपासेरे, कही कल्यान ते केम वाचीरे ॥९॥ मारे कस्थानकारी सांशक्षणारे, एक इरि के इतिया सक्यारे। साची बाल हो मान है सबिरे, एवं बेंच विना सोका नहिरे ॥१०॥ केने करेंचे कन्यांच साहरे, पच ए विशा काम प्रचादरे । हाद वर को पराधा सेवकोरे, तेनुं काइ काल क्षम संबंदे प्रदेश लेक्न व्यादे बनद कुछ हरिरे, एनी पाण मानको साथी बरीरे। मेहि बामको वह निर्माण-रे. एक्य समझी लेख सुजायरे ॥१२॥ क्या विना प्रभूने सक्यरे, नां क्रम्याण आय अस अस्यरे । मोटा देवधी मुलि न भाषरे, कारे बनुष्यभी केन के वायरे गरेशा जेने बचाने लीपाने जावरिते, मेल्या पत्र विषये वस करिये । काम कांच ने सोधवा भवारे, क भी कही कोण जब मर्वादे शहशा विंव शेषवा साद प्रशंभदे, साह

करी राक्या सर्वे संचरे । जंगे करी था जीव सनायरे, एवा विस् की लीवाके क्यायरे ॥१५॥ भक्या बाजा ए मारवा अर्थरे, वर्ष बाबा तेवा नीति गर्धरे । एवं पायवा अवंचनकारे, बांच्या तन वर्ष वाने गुनारे ॥१६३ एवं एवं को बोकनी नेपारे, होच के बारवा क क्या क्षेत्रारे । जोच सर्वे बल्याककारीरे, बान एक्या क्षेत्री कि-वारीरे ॥१ आ बारे यन पंचमंदि वर्धारे, रूपे शाना जियां नियां अक्षीरे । नवी बाह कल्याच करवाररे, प्रमु धमर विवा वि-रवाररे हर्दा वेचलंबामां का रक्ते सबारे, लारे बीजे कावाय केम इशोरे । जोगी जंगम केम संस्थानीरे, एम दिगंपर पनपा-वृद्धि ॥१९॥ जटा खेलपटा कासकटारे, कपर अर्थर ने कामप्रतारे । जंदा जैस हारांपर लालीरे, चन्ह पहिन के' गुणे आलीरे ॥१०॥ इका विकार वैशासी बदासीरे, लोरच गोव्ड जक्य अवासीरे । वानु कवीर शुर लोगाहिर, वती मुंबी ने मुखरा महिरे ॥११॥ प्रश इंड ने बचा क्योरिरे, शुल्यकादी बेदानि मुमोरीर । एवं विना बीजा बहु शुरुरे, तथा बान्युचे कल्याच कररे ॥२२॥ तमे दोच क हे आज मोटारे, पन देवर्थ ए वहि मोटारे। क्रीय समग्रे जा ना-तमी वर्षरे, भीव सन्य साम्या निजयमंत्रे ॥२३॥ वृटी भाषत वेरे बजाररे, लेबो कोचे व कर्णा विकाररे । जोश्या बनुपरे तम बोह-है, सचा कश्यानकारी वृद्ध को दुई ॥ आ वह यह व सुकता दिएय-है, तेंच क्यर करे हरि शासरे। कहे जुनो आजानी जनरे, महि ना-ल सकद्याचे मनदे ॥२५॥ अने वश्री कवर काय लगर, ध्या गुरु वस करे वृद्धि । यान वर्षे बायज्यो साचीरे, धार रणे रेना एवा शाचीरे ॥२६॥ क्रेके के वार्त्र प्रतृति कहारे, वधी केले के वा कांत्र रू धुरे । सन्त मानी भृष्यु सनर, सुनी आवादी राजे जननरे ॥५०॥ समार्थ के भूगवणी भारते, आदे कहाँ तुंबे वारेवारेरे । जेले पूछपा इता में प्रचारे, नेने कथा में जिल्लास जनर ॥ दे। जे कोई सर्वनती समझको समुर, लेने रक्षको विकर बसमुरे। कर्म असे गुराय बने क बीरे, में वें कबू तेमां जुड़ वर्धीरे ॥ भ्या माची वान हे वान्त्र प् राजरे, समसी समयुद्ध सन दिल्लाकरे । सुनी जनव पामकं आ-मंतरे, विशे के एम विष्णुमानदूरे ॥ देश। देश बीकामानानाना गुन-इन्द्रवाणे बाहार्थ मंत्रव शहरत

रेश-पृत्यु दहे वन बाहेरे, वदी रशी दमर दाई। लंडाच सर्वे अभीगयो, सुचि वचन तथार्ग सुचदाई ॥१॥ वचने वच-ने में विचारियुं, नेमां जोयुं नमार्थ में नाम । इरि इरिजन बचना-Bu, मो'प मिर्मप जम निवास ॥शा मनु सगरमुं क्यी पुछली, पूर्वा वसूना बर्जन । एक रक्षा का'लामा क्ष्यमा, एक क्ष्यमा-बी इजेल ॥१॥ व बेहनां बचन चरोचरी, के अधिक स्टून के एता। बुक्शन केम मानवं, एवं मटाविये महेव ॥४॥ नेनई-मो रै केव इना इरिजामरे, रे'ना जगर असुने पामरे । येत सरना बानना क्यारे, रहेला आक्रामां रात व्यरे ॥५॥ तेमां एक इतो आत्मका-बीरे, बीजो पंडो अनि अभिमानीरे। आत्मक्वानीने मान व आ-वेरे, देशमानी बाने सुम्य पावरे ॥१॥ नेनो जान प्रके के न प्रकेरे, मारे अंतरमा रको बसेरे। वर्ष व्यवनो स्त्रे योग्वेरे, वर्धी क्रमणी-बी बच्चो मंत्रचंदे १७॥ बीजे जई बांधे बीजो मनदे, वहे सत्मगते ने अमन्दरे । अंत्रे जिल्लानो सननी साधरे, तेने इपियार आच्यां हाथरे ॥८॥ करे बात बबाइनी चर्चारे, तेम्दां अचावे बोह्यव वोतात-कीरे। यह यान करेडे बनाबीरे, कडी लायन लनिन साबीरे ॥°॥ बोने मुच्चभी बीठां बचनरे, करे जननां मन रंजनरे । बहु हेचाहे विवायनं ओररे, वन होच प्रमुजीना चाररे ॥१०॥ क्लेना होच प्रचय विशोधेरे, एवा बचा बहु जीव कोचेरे, तेह जीव तरे के व तरेरे, के ज्यो समझानी संवादने प्रेरे ॥१२॥ होच प्रतिना धलेख व्य-रारे, पण याचा व माने अरारे । परंत वीतं पणनवी वा'तरे, सेनी कांका न माने सगाररे ॥१२॥ वयो बनुधी कोने विमुक्तरे, मान्यूं बाम्यो पूरण हवे सुन्दे । के थे बीजाओं ने कोरे तेवीरे, हुंती निस-कों कर्ज कांगी बेबारे ॥१६॥ एकी करी यह होच बुद्धिरे, तेनो क्यां-बी करे बान सुपीर । कंपी बाने शक्या श्रीय बंधीरे, रखा आमागी यमां बद्धवीरे ॥१४॥ यमं बस्याच थाय के व कायरे, के नयो सक-काबी मजाय जागरे । कर्य कम्याण दृति दृतिदाभेदे, बादे में पूछन् लमारे पासरे ॥१६॥ वर्ष सांमधी बोल्या मुक्तरे, भुष्य जिल्लास तेनी विजनरे । जेले कचा हरिये क्याने, तेमां रहे जियांतशी कारो ॥१६॥ नियांत्रभी नारे जीव बहुरे, वामे हृतिना वामने सहुरे।

क्यारे जिलारे बचनवी मातिरे, लारे मीने मानरे मानरेरे ॥१०॥ जेन क्रवाया'र वर्षु शाक्षरे, नहिंद नयां नारवानी नाप्रदे। एको नजीने चाले सीपाइरे, तेनो व चाले बुक्तन कर्रहरे ॥१८॥ छडी पटी मुक्ती छडीदारदे, करे इजन तो जाय सारदे । कोटबा'र निसरे शाहकार-है, बहु लुंटाय कुदाय बादिरे ॥१९॥ लेख संन वचन को लागेरे, ले-में काल मापानुं लाव मार्गरे। बीजाने मो क्यांचकी गारेरे, वर्ण बोनामुं का बचारेरे ॥२०॥ स्वाधी कोट्य होटी बचो सुवाररे, करे-के बीजाने जागदाररे। होय शुरुष है जाने वन्तरे, नवी होर हेवा-बुंध अंतुरे ॥२१॥ एवानी तो सम नश्री दंबोरे, एनो प्रदेश रूम व सेवोरे। नदी मुख्य पर्नु जोया जेवूरे, बुर्म स्पर्ध पर्नु नजी वेवूरे ॥११.। १ती वान जाजो नास स्वासरे, जेवी इसदाया जानती सामरे। एवं क्षमंते वासिये दुन्तरे, करे विमुन्त मधी विमुन्तरे ॥२३॥ एवी बानवे श्रीकवी सेवीरे, म बामवी साचा सन जेवीरे। क्षम एमां के विकासभागरे, मेने केबि बेचा महि कामरे प्रश्ता कोड़ कापर वर्ष रहे कोर्रोर, बोले बोलाजुं बोले व जोरेरे। को संसती बोरच्य बनीरे, बोने कई स्थेत्य बोनानवीरे ॥६६॥ वदो होय कोष इरिजनरे, तेनां साचारभिक वचनरे । एने सुनं नहि सार आसार-रे, क्यम विमुख्या पूरण देवाररे ॥२६॥ आरे सत्या अंतर्या जे थे-नरे, सबू जनने के सुन्देशरे। जेते प्रवार एवा मुख्योरे, नेती है-बार भी ने सुन्तरोरे धन्त्र। सन कर्म ने बचने करीरे, व्य बान बानी सेंडची मरीरे। इस कल्यांशनिर्णय करीरे, मरी वार के प कोटी वर्षीरे ॥१८॥ शुद्ध मृत्यु शोपशे मारहे, करी बंगरे वंशे विचाररे । सामान ने नो वहि पर्व गमरे, बीट शीर समझनं ममरे ॥२९॥ नेने उपर वर्षी का बातरे, समझ समझक्यां साक्षातरे। समे समझनां पामको पारे, कहे निष्क्रनावद विष्याररे ॥३०॥ वर्ष बीक्त्यायभिर्वत्यस्ये भुक्तयुक्तयंत्रःहे समरतो भिर्वतः ॥१ ला

वराव केट— मार्चमाणुं कहेशुं, इति राखे नेश रहेशुरै। रेक— बरावकं करेशुं कासी, कीट करीय वान मोडीरे; मा०। कहुं कन्याकं मार्ग, कमर शक्तों मां कारि; मा०॥ मार्चा मंत्री नेत्री वाते, क्यी कन्याच कोई भारते; सा०। मार्चा वट्टया विजा

सार्च, भाषा कन्यानमुं काष्ट्रे, सा॰ ॥२॥ जोटा समे दश कोये, अंब रचवांति रोपेरे; मा० । बपा कवटीना वेकाल, मारम् सहाव-रिवे चा'नरे; सार ॥३॥ जाकी जोड़ झेर नावे, नेमां सुनी चवांबी कार्यरे; सार । एस कारीने उपदेशे, बाब देश्यांत देसरे; सार ॥४॥ जाको बंदरावे बीजे, जाई सुन्व सानुं श्रीजेरे; सा॰ । नेव कोटा शुद करमा, पार वाचि अप करनारि; सा० ॥५॥ लाह समाधने मध्य, वो'य पत्रवीनी गंध्योः सा॰ । को'री वीकी वद व्यावाः कोई मो'य जो सुन्वाखारे; मा॰ ॥६॥ एका काकीने करवरिये, संग लाहे व करियंदे: सा॰। व्यक्ति विकास वाचे, तेने सुव्य शार्च जावेरे; सार ॥ आ जाने चोरने सगाये, धार जावानी के मार्थरे; सार । एका बमुता जे बोर, तेने बेली वाकी बोररे; सार ॥८॥ बोरे वांपी काळावांचा, कोइ व नयां शियाचारे; सा॰ । इय कामा-जीती जीरे, जावे सूच्य हां प्रारीरेरे; सार ॥९॥ एका वकाराने सर्गे, आचे पू:ल धनि अगरे; सार । गर्का गर्पेशनी नाप, घांचे पदांचे न चायरे; मा० ॥१०॥ नपुम क नरने परची, नारी नहि पाने अपर-भीरे; सा । नेम सोटा गुर करी, कंम जावा अब नरीरे; सा । ॥११॥ भवअक्ष मरवा काज, माचा संगनी समाजरे; सा॰। लोटा सने लांक्य आहे, बांध्या वा जा से बुवाबेरे; सार ॥१२॥ एकी अप्रोगित अति, वची वती अर्थ यतिहै; सार । मार्ट क्षेत्रकीने लेवे, प्रयांन्य क्षानाई व रे'ब्रें: भार ॥१३। बांनी कोळाकडी जानी, नाये वि वरमाजीरे; बा॰ । नाय महिबी बरोबये, क्यांधी क्योंन् बनोबयेरे; सार ॥१४॥ रवा गुद ज्ञान बीचा, नेनी कासना व्यवकारे; सार । कल काहबीनं जानी, विवे कढ़ि सहवानीरे; सार ॥१५॥ आंब आची आक कब, लापूं वडी वहि कबाे, आ०। तेम वादी तुव अवते, सम्ब कार्ति क्यांभी बळरे; मा॰ ॥१६॥ अब बुदर्मा ए एपान, तथे सांबको सुत्राचरे; सार । शय दनमां एगाई, काने मोटो सनमांहरे; मा । । । अ। वर्ष निम भक्ति शीम, जाने है वे वर्षीनरे; मा । पूरि-लना में कुड़ दबर, ब्ला इनमां दोबटरे; मा॰ ॥१८॥ भागी अंतरमा कार्द्र, विषयमुखनी विकराद्धी; सात । सिनर वार्षि नो अवका, विषय साद शाने बदकारे; मा॰ ॥१९॥ नायो स्वाने मरोले, रहेके

हैने इ'व्य बाहारे; सार । बारे विवास्त्र बंदूं, एने वर्ष बाप सुदूरे; सार ॥२०॥ वाण वाच बना सारी, तेनो केनो दिनकारीरे; सार । कान बाज ने बताई, नेवी व बाय अनारि: सा॰ ॥२१॥ एम दुछ तुद दुःलदाई, मानी देश्यो सनमाईरे; सा॰ । एवा तुद सन सने, मांडीके हवाई हमरे; सा॰ ॥१२॥ हाई शिष्यने सरदम, बरी छीपा थोनावे बवारे; सार । बहु दिलमांदी धमा, तेला न होय देना सगारे; सार ॥२३॥ एने अज्ञापये जाबारे, तेलुं आरे सुंदुं दरेरे; सार । मारे करवो साचो संग, जेपी रही जाप रगरे; सा॰ ॥१४॥ साचा रहि तुष कहिये, जेथी परमयद लहियेरे; सा॰। देवल्य पासिना हाला, मधी बीजाने कडेबानारे; सार ॥१५॥ बीजा वसू के बकानी, वांधी वेठा पूंत आहीरे; सार । जेच काचना सवाका, सर्वे सरचा योखा कामारे; सार ॥२६॥ शाला जाणी करिये सम, मुंबासा पण है भोषंगरे; सार । होय दही हीराकणी, क्य आये द्याचि वणीरे; सार ॥१आ एम वादि हीसे दवा, रूप अंतरमां कृषारे, सार । एवा जमे पणा पूना, जीव हेवा जमरूनारे; सा॰ ॥२८॥ भववा केवा भरवार, बेइया केनी कुछमाररे; मा॰ । एका बगरेन बेहाल, केने ब करे निद्दालरे; सार ॥२९॥ महता द्वा मोटलिया वाप, वन दोड व कड्बापरे; मा॰। बांड होय धनवान, घेरे सुलना सामानरे; सा॰ ॥ । ॥ मारे साचा होठ हरि, बल्लमां मुद्र सुन्धी हरीरे; मा॰ । अलीकिक सुन्य लोके, जन भौगदे विलोकेरे; सार । 12॥ वनी देवे पासे बास, बद्धी बाय पुरचकामरे; सार । एवी रोत होव जिया, जाओं प्रमु पाने तिपारे; सारु ॥१६॥ कथा जा हे बल्याचकारी. सह लेल्यों हैये पार्शरे; सार । एस समृद्ये रखको देव, निश्चे के निष्कुतानंदरे । माणे माणुं करेशं, इति राले नेत रहेशरे ॥११॥ इति बीविष्युक्तानरमुविधिरितित कम्याणनियमकाचे मुणजुमुखुलकाचे सहारसी निर्वेश ॥१८॥



	3	मबतार <b>ि</b>	देता <b>मणि</b>	: 1			
सारविकासका सुनिह		घम्यम्बरी					
643	राष्ट्र बक्ताबतार पुरुवाबत		_	<u>मिनारायण</u>	रारायण ९ ध्रुवाधतार		
वाराह			飞 斬	५ कविक १० तृ			
यासम् वस्त्रम् कृषिक कृषशीय		नगरस्यम	় ব ক্	मार	११ छच्या		
		2किंगमं	' ਚ ਜੀ		१२ बासुबेब		
<b>ए</b> ग्रे	क्रामाय कारक	वासुदेव	५ वा		१३ इनावेष		
भूयापतार	रामा दतार	सम्बद्धाः	कार १ क	पेछ	रेथ यज्ञाचतार		
र्थ	कृष्णापत्।	<b>परक्र</b> राम	७ म		१५ बुद्धापतार		
दसादेष	क्यांसम्बद्धार	मरणपतार	< मा	राषण	१६ परशुराम		
इंस	<u>इंद्रायकार</u>	<b>事</b> [24		0.3.0			
	0.35.0						
! क्षच्छ	९ हरि		र वामन	۹ ۹	द्वरि		
२ हंस	१० वर		२ ऋषभ ३ कुमा	r t	• ৰক্তমন্ত্ৰ		
३ कुमार		११ भग्यम्बर्ग		_	! मोदिनी		
४ मोहिनी		१२ कल्कि			९ हुन्द		
५ धारमह	_	१३ श्ववाचतार			रे भुषायतार		
६ नृसिह		१४ राम			४ व्यस		
७ मृत्या १५ मृ		•	३ धन्य		१५ किंकि १६ सम्बन्सराय०		
ट या <b>नु</b> ष्य	ध्यासुदेव १६ मस्य		् ८ सरस्य	•			
	0.8.0		!	11.83	II.		
१ १५ 🐧			े ६ ह्यस	रेक ९	राम		
र यहावसार १० कुमार		२ ब्यास	_ "	० धन्यन्तरी			
३ मतस्य १२ वृश्चितार्भ		३ मोहि		१ पृक्षियमं			
४ मन्यन्तराधतार १२ कक्ति		४ यासु	_	२ कस्कि			
१ दस्तात्रेय				५ नारायम १३ ह			
६ अध्य	१४ वसमू १५ वासुरेव		६ सुन		<b>३ पुरुषाधनार</b>		
			७ नायस		५ अभ्यम्सम्बद्ध		
८ परशुराम		ern	८ मन्स्य		६ परशुरतम		
4			11 22 11				
अक्षातमधीः व्यक्ते १ अक्ष्माक्ष्मिक स्थाप व्यक्तिसम्बद्धिः इ.स.च्या	ंग्य अवसार वरि ते प्रथ क्षेत्रे प्रार अक्टबाय-क्षेत्रे ते नेप्यतः होन्य	श्च अंश्वमा होट पद्धीने साथ क नेज अनुसार सं है बीउन्य मनस	तो वे २६ ने दिशाय अने किया अंक्षा है हो भारेको जनक	वे महीते त्रम क्रां से र अस्ताम् कार स्थ हो पंतर जबे हर प्रीमी दायल	ते प्रवस अंक्षा हो द इ. भागः अने तेन । स्मा अंक्ष्यः हो व. ते सोच महोने एक्ष्योः स्थनं सही शक्कें, ए वे संक्ष्मां स हो थ		

## जबतारचितामणिः।

المشرة بالرائدة والرائر الرائم الراءات



बोक्ट्रे-मन बंबक्ट बंदर बीधा, देवी जीव वामे बामी लीधा। नुषुषु जन नार्या अनेक, एका नो नामितारायण एक ॥१॥ चार्या राजीयां पर्वत याते, देव देख साम्या र ल जाते। लारे सरग्रह में मे अकता, वर्षो वीडवर संज्ञानका ॥६॥ याति वाशवस्य व्याक, राजी क्षत्री जानी परमाख । पद्धी मार्थी दिरव्याक्ष केंद्र, कर्या परिच इ-स्वादि नेद ॥३॥ बावनकर पनि बदाराज, बन्द्रि एउयो इंद्रराज का-अ । यपु यथानीने विश्व लीपूं, यजी वजिने वस्तुन वीषु ॥४॥ वर्ष कविनन्त्र मानकाज, कर्ष्युं स्रोमयमध्य प्रतिनाम । वर्ष झान देशस्य में अन्ति, वर्ष मानावर्ष मांचय अनि ॥५॥ १यारे इति सपनार पा-थीं, खार प्रारंपी कत्र प्रमार्थी । कवि वेदना कार्यपी एक, कत्र बाह बया हता नेह । है।। बळी घरी तर अगवान, दीर्थ हुदने केने बरदान । एवं भूवावनार जाको, बचा नवे राजी बरवाको ॥ आ बजी कहं अवनार एक, नेमां ज्ञाणको अति विकेत । अति वृथकीदोहन सर्ग, क्वारे पेरेने रुपुन्तव पर्यु तटा। भई आपे द न्यानेय नाम, सर्था पर् देवप समाव । जो राम दिव जिद्याग दल, नेतां वळ वारायीनो कत । भाग पनि इंग्लिक जेवा, बच्चा मध्यक्ते ब्राम देवा । पूछत् ब्राच्याने सनकादिके, हंसे प्रकार कर्यो विवेके ॥१०॥ वजी पूर्तिहमन थारी बार्च, बच्चो हिरच्चक ब्रियन हाथे। कर्य वहादनं प्रतिपास, हास्त्राम निवामी स्थास ॥११॥ स्थार क्षत्र नम्ब पंत्र प्रया, पृत्र बांधी परमद्रम स्था । परमद्रमनी शिन देलाही, तेने अञ्चानी ति-वेषे आही ॥१६॥ वटी यज्ञादनार पारी, इति विस्तेदवीसा निवा-री । कर्ष हुन्य सहते ने अनि, मारे करवी मनुन विनन्ति ॥१३॥ बळी बस बह बब बारी, मार्थे दिवित बावर आगी। बीजां बन काम कर्ण जेल, लक्ष्मित्रापुर आदि कलिये नेर । एता कुमारादिक अपने भारी। आत्मनस्वती बान विस्ताती। पर्म पान्ती भन्न तेषु जन, नेप-इ राजी भाष भगवन ॥१५॥ वर्ळा इवर्धीय नवन पारी, बेट्मप वा-जीयो प्रवासी। मधु केट बादिक असूर, मार्था पाने वे सदा करह है ॥१९॥ पक्षी मारवर्षे सब कर्षा, बैरकर्ष भारवतर्गत कर्ष । राजासूत 

जे लाढ क्रमार, दई झान कर्या भवपार ३० आ वळी रामकव वॉ राज, मार्थो राथण वांधी सिंगुपाज । व्यां अनेक परित्र करी, आस्या अयोध्यामां क्षेत्र इति ॥१८॥ येश्वे वरी कृष्णअवनार, आः यां दानव देख जपार । निज शरकायनमां पृथ्य काप्यां, वह राजी अचळ सुन्व आध्यां ॥१९॥ बळी यरी व्यामजननार, कर्या एक बेह बदी चार। क्याँ बब्दी अवार पुराल, लेने आले ले बाच्या शुक्रा-न । रूगा बुद्धजीए ने बोधज आपी, कम्याभनी जब मानी कापी। हानी असूर वे तेह बारे, करी इंबरका ए प्रकार वस्ता वसी वन्बंगरी तन थारी, रावधो रोग आयुष्य बचारी । शीनवेषुण वीनव्यासु, कर्ष् सर्व जगनवे सुम्माळूं॥१६० वर्ष जोतिबीवर जन्म, जोई जम्-र चया विकस्त । पानां असून राष्ट्रशित हेतुं, बसी शिवजीतुं हन भेलें।।६३। वेले परी पुरुष अकतार, ब्रह्मा आदि रच्यो आ संसार। नेमां देवी जीव वामे सुन्त, आसूरी जीव मंशांव दुःच ॥२४॥ क की नारायण तब करता, काम काप लोग वह हरता। कर तब की ते अनि प्याद, विज्ञतनमा सुचने साद ॥१५॥ वसी पश्चिम ने जन-तारे, आप्यूं मानापने सुन्य त्यारे । जो कोई वाली बसुवारले बाय, तेनां अन्यमस्य कृष्य जाय ॥६६॥ सह्या अंतरमां रच्या जेव, एवं वास्त्रेष करिये तेह । कर्म प्रमाणे सुन्व दृ:व आवे, निजजनमां स-दानुभा कार्व ॥५आ भरी सम्बनस्थायनार, वर सनुनी रक्षा ने बार । एका अन्तर अवतार वाच, तीय शेर्न आजन्मा के बाच ॥१८॥ ध-री परश्राम अपनार, इच्या क्षश्री एकविश बार । सहसार्श्वेन बहु बुष्य दीर्थ, त्यारे एमणे ए काम कीयु ॥२९॥ बळी मन्त्व बहुने बुराहि, वेद थाळ्या काम्यास्त्र सारी । कह वाने वस वस्तिद्धि, राजा सन्द-मनवी रक्ता की वी ॥देका कवित्र अन कवकी जे पाला, तेने अजी कहक राजी चारों । युग वर्गमान काले अरज, लामिनारायकर्था धाय काल ॥३१॥ जान्य सच्य अंत्ये अवनार, यथा अवन्तिन यात्री अवा-ह । यस सर्वेता कारण जेह, नेनी जामी महजानंद एह ॥१२॥ अस्तिनो एकप्रिया कथाने, सामा बीजा प्रशंमां स्थाने । धर्म भ-किनी रक्षाने काल, आध्या निष्कृत्वानंत् के महाराज ॥१३॥ हं। वीक्षिक्षु-सामद्द्विविद्धिती अनास्वित्रकार समाप्त ।

والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة والمرابعة

### चिह्नचितामणिः

चिंह्रचिंतामणिः ।								
स्रसि	५ अंकुश	९ त्रिकोण	१३ घनुष					
अष्टकोण	₹ जांचु	१० भीन	१४ व्योम					
केतु	७ मञ्ज	११ सोम	१५ कळश					
जब	८ कमळ	१२ गोवद	१६ अध्वरिखा					
474	्र अष्टकोण	१ फळप	् घटुप					
स्वस्ति	२ व्यक्त	২ জাৰু	२ गोपद					
जिको <b>ण</b>	३ अर्धनम्द	३ म्पोस	३ सोम					
मर्घचन्द्र	भ कलहा	ध अंकुश	४ कमस					
अंकुदा	্ধ জান্ত	ं ५ गोपव	५ जिक्कोण					
व्यव	६ भन्न	६ अव	६ कळरा					
धनुष	७ भीन	७ घतुव	७ मीन					
कलग	उ म्योम	< হয়	८ भ्योम					
11 8 11	॥ २ ॥	11.8.11	11 6 11					

# चिह्नचिंतामणिः।

**--<+**\$\$\$\$\*O≥3O\$\$\*\$\$+**>-**+

रोत-संग सराहत सम्बद्ध आने होत बन्यात । हक्षत्र का सी देखिये, जगर चिह्न प्रमान ॥१॥ अन्तर्भाच अवलोकने, कश्च प्रिटन हे कोट। अन्तर आवंद पपते, लगे व कालदि बोट ॥१। केंद्र हेन् मनके, रहन प्यन आधार। नेमें संगतिरोधित, यनन आज्ञाअनुसार ॥१। जन जोचन जेरि जनके, लेकि विदेश परसेपार । सदा मुद्रा धन पाषति, अंतर सुन्य असाय। राज्यान बचा अंद्राज्ञ करि, अन-धेराज मगलर ! बारी केरी लेनहें, इरिवरने इज़र ॥ ।। जिन जान्यों रम जांदुको, सरवे रमयरि सार । अन्य रमकि इच्छा हरि, निरम अयो संसार ॥६॥ यज्ञ नजर विन्हेरूने, जिनेय जये जन केया। काल कर्मीक कम्पना, एटि अंतरमे छेक ॥ । नीर म मोपे कमजर्द, तेमे मंत्र ममार । प्रभूतर बिह्न प्रतापत्रों, व्यापन नहि विकार ॥८। जिक्कोण विहन्त वाहित, जिक्कि ताप न जाए। यसत मदा पर पाममें, मन हरत संनाप ॥ ॥ भवक मीते प्रशीत है, मी रसे करक निदाय । जन्म विरक्त पहन है, नेसे संन स्वाय ॥१०॥ मोधं मदा शीनव करे, पाकि पांड रीत। हाझन नहि नहि दिल्ले, जेहि विनवनहे जिल ॥१२॥ मोरदमें या गुन हे, जेहि विनवन हे जन। भवार वह संसारको, न्रत करन उद्घंपन ॥१२। घनव जे अब चिन्ने, नेपर रीझे अधिवादा । काम कोच मद लोबको, नुस्त होत विवास ॥१३॥ वेरवेर स्व ब्योमफ, देखतहे लेहि साम्। अटहरू नहि आपरनमें, एडि गुन आकादा ॥१३॥ कळवाकि में क्या कहें, सम्बद्ध रहन सद्भाष । पाकु प्रश्ने पारने, करना रहे न कांच ॥१५॥ बोन पाने देखने, आपने हे आनंद । फ्रांबरमाके प्रवरी, बारी जिन रकुकानंद ॥१६। इति व्यक्तिक सर्वात वर्णकः विद्वविकायकः समात ।

पुंष्पचितामणिः								
गुष्णकारी केरकी कर्तत महकी गुष्णकार्था केसुबां गुष्णक विवाधास गुष्णक्षावरी कुमक	शाय भाग भागिकार केसर केसी निमीकी गुस्सीमना कुसि चदर्शी पारक बासुक	क्ष्मुंची स्रोबामीर गहून गुर्हे कर्केट केटकी चोरसरी पोहोन बोळतेथी निर्वाही	१ गुरुह २ गुजर २ गुजर ५ केयर ६ केस्ट ७ कमस ८ केस	जारी गडा विदी गर रे	१ वर्षत १० गुनाव ११ तिमांनी १२ वर्षो १३ मध्यो १५ वियाव(स १५ वर्षो १५ नाव १ ॥ केवरी गुलाव वर्षेनी केवरी पावल धर्मान			
१ जाय २ कुंमि २ केयडी ४ केसर ५ गुलसोमना ६ पियावास ७ क्रांगिकार ८ कसुंगे	९ वसंत १० चबेर्ड ११ पाउल १२ आवो १३ गुलहः १४ गुलल १५ तिवोर् १६ साग्रुट	ते वि मोर जारी कारी कारी	दोरसरी गुलदायदी गुललाला दोलरीयो निर्वामी आयोमोर पोहोध कण्येर	10 to 12 to	केवडो गुलाब चित्रेली केसर कर्मत वर्माळी पाउल चेपी			
१ कणिकार २ केतकी ३ सुलक्षेपन ४ सुलइजारी ५ केसर ६ केसुडा ७ मध्यो ८ पाइल	९ निर्वारी १० वसंत ११ कृषि १२ विसंह १२ वोस्स १४ गुरुष १५ दोस्स १६ चुई	ही है री १	पियाधास कविकार गुलळाना बार वरी दाडम कव्येर जासुस अध्ये	\$1 \$1 \$1 \$1 \$1	निर्माद्धी श्रावेळ १ केसर १ चनेळी १ चुई १ क्रमी १ चंपी १ पहुल			
ा), अपने केय पूर्ण हों पूर्ण अपने पर र अपने पास अपने स्ट्री कोस्सर्य जोगार	। बीका श्रंद्रमा होय ( सटीते साथ श्रंद सेन पुष्प स्टेटमा क् होसीचार समग्री   सेनो- से पुष्प कार्	तो एक भने में भाग मने पेथ (कमो होंग तो प रेसे मुख्य बीजा म   होंग से ने चंड	मकीने घण विक पुष्प काठका श्रीक तर अने सोच के त्यस स्वयं करी द भाग पोष्ट से बी	वायः । भी द्रीत भीने धका भिन्ने वर्षः इ.संप्रामा	हवां बीच हो से पत पते देश पुष्प प्लोका व हो सात करे बाह बीदा संद बाद हो विने पीनां पुष्पे था वो होने पदिः			



भीवादिनारायको विवयतेतसम् । भीनिष्कुलानन्द्मुनिकृत—

काञ्यसङ्गहे

# पुष्पचितामणिः।

रोश-पिया चले परवेशकं, सहादुःख दै शये घोष । अब कव देखं कमळते, तरहि कगरा जोय ॥१॥ बेरे घन एसी भवी, सदा रहुंगी संग । सुन्तमें दुःल देक्यो नहि, रचि हुं कुसुंचो रंग ॥२॥ में कुली मिल विवक्तं, जसे कुली जाय । मधुकर वीचा सकरंद लेहि, गये सो फेर न आप ॥३॥ अब कब पिया आबहि, में नहे बहा कर योकार । जब पिया देखुं तब पोहोयको, कंडे आरोपुं हार ॥४॥ वया करं किन जाउं सम्बी, पिया न आपे मुजपास । देखुं फुल गुलदा-वदी, अंतर अपे बदास ॥५॥ इंदाबनमें में गये, देखी आंवाको मोर पाप विदाकि सांमरि, रक्षा न इदिया होर ॥६॥ तुं मन बेहं के केवडा, भोड़ि बह उपजन बास । दिल दिवानी बोलहुं, विया न जाये मुजवास IIII जवा कहुं तीये केनकी तेनो रहि जो कुछ। पिया मेरा परदेवा है, सोई गई क्युं भुत ॥८॥ केवार नहि तुं केवारी, माहि फुल एइ मोर । मोपे एकिली जानके, मारतई मा ठोर ॥९॥ ते कहुं गुलसोमना, लेनेकुं भोड़ि बान । भा भवसरमें एकि-ली, तक भारत तुं बान ॥१०॥ विषा गये परवेशकं, में एकिली नार । गुलहजारी गुंधके, किन कंड जारोपुं हार ॥११॥ वेली कुल बोलरियो, में मन भपी उदास । सेज समारी क्या करं, विया ना-हि मुज पास ॥१२॥ देखी कुल गुलावको, दलमें भयो वर्षु बोड । पिया न जाये मुजवासके, इवे पुरे कोण कोड ॥१३॥ सुरि सुरि

<sup>।</sup> केनुक्त

सांची बची, रिया व आये घेर । जिरची कुल जिरवारिको, पहणे वित रिनिको बेर ॥१४॥ निनकी निनकी नविके, क्लोबे हान हवा-ल । आवे क्रम बसंतकि, नोयं व आवे लाल ॥१५॥ विगा नये व-रदेवा है, अवल भिन्ति स्वां बार । दियो कुल वर्षुलको, लाने बाये मोरार ॥१६॥ मिली हगारी मादिनी, विने चन करी लान । दिने कुल शाहमको, लाले अपी निहाल ॥१आ देले भोजे दिलके, र-चा जार्नु क्या किन । देहि कुन जानुकको । विया अपना कर लिन ॥१८॥ विया वरे परवंचमें, लाने व आये जान । ध्यारी विया-वासको, भूज दियो ने राव ॥१०॥ देवी कलेर काममी, काली कुल ज्वार । कलि मजि अनि रही, कुमूद देव विसार ॥२०॥ अ-व विया पर आहरू, विषवित करन विद्यार । चंदन वरनी पप-को, कंड जारोपुँ कार ॥२१॥ क्षेत्र समाव सुमने, भूनपुन कुल कं-वेल । सत्र सुदर प्राणगारके, आये मिले अन्वेल ॥२०। गतरा गुंधी गुललालक, बांधुं दोलुं बांछ । दोवी देवि बांधक, मास आ-रोपुं गळायांच ॥२३॥ सुद्द बसव मोहायव, वरो शिरवर पान । जीये कुछ में जहके, ने बेच लोग लाग ॥१४॥ बीचा मेरे बारमे, बहु मदबा बहेकाच । मोहन सुमारी मोल्यपर, कोसुं तोरा नेमांच ॥६५॥ सारे कुलने कृतिक, पिया वर्ष तीय पारच । काये क्या कर्त भये, जान करेउन् भाग्य ॥१६॥ विनि लार्नु करमे, सुदर कुन अध्य । काने दोने कर्जिकार, ते से लोगों ये पूल ॥२आ अने आये करवाचने, विया वर्ष हरे पास । वह कृते बोरसरी, स्वो स्वो कालन बाम ॥१८॥ बीलम कुन निर्मातिक, अरे सुगंधी इयाम। विया आये तब देमलं, सब आये हे काम ॥६९॥ वत मरी वाहma, लाउं कुल जपार । घरे बिल तम उपरे, बाद बार बजार Uton के सर भीने कामजी, चेर आपे गोबिंद। प्यारे विश्व प्रवरे, वारी विषक्तमानंद् ॥११॥ इति वीनिष्क्रनानत्युनिधार्यनतः पुष्यविनायनिः समापः ॥



### लग्नशकुनावली.

रबेण रक्षिणुन भगिद्य अनुष्या ९ थन ११ कुंश २ हुणभ ४ कके **१ क**रूबा ८ हुक्किक १० लक्द १२ जीन

## लग्रशकुनावली.

वेदा-सीमहत्रानद शानंददद, वंदू वान्वार । दीवद्यार्द्ध दुःच-इरम, बगरे यह समार । ?॥ समरव करके कहनही, बाकुमावली हान नाम । जान लग्नमें जो जिनने, करे मलको काम।। मेनन-वन मन विनवी, अज दूषन अविनामा । मून्य लाभ सवदि विने. क्तम इय यह राम ॥१॥ पूर्वजनत विकारीके, बारह एएन करे कृष्ण । अर्थनान सुन्य सम मिने, जेही पूछे नेही प्रश्न ॥८॥ मिन्य-तम जनमें परी, प्रमा पुष्टत करें कि । स्थानको सुन्य नहीं सिले, इय विना कम्र कलिया ॥५॥ कदनमे कर जोरके, जवपृक्ति प्रान लाज कहे । का ने ने पुनि लाद महि, शिव सुमरी केवैसहे ॥६॥ सिं-इनते सहदेव पुढ़े, भीरत कहे भरी भाव। विचान सिद्धि वावहि, विरमुक्त गुल मान ॥ आ करना पुछ कालिका, अरलानी करनाई सोच। सुन्यनान्य होत्रो शही, पुनि कह नहि होत ॥८॥ नुन्तन्त्र जानी लेकि, मानि पुण्य करे देव । हस्यवास खुन्य पावती, हेवेर अकि ल तलेब ॥ १॥ वृश्चित्रलये गीनम पुछ, विशक्ति कई मोप । हैवे कि तने सो होयगे, पुनिहे नेर कहाँ तीय ॥१०॥ यनको गालव पुछे, शंकर को समजाय । एकारज होतो सही, लाभ होए वह मांच ॥११॥ अकरलक विन्यामित्र सुनि, पुछल कहन वाल्यिक । गडी का-अमें बहुन इय, बहि माथ कहन इय ठीक ॥१२॥ कुथनते दला-नेय पुछे, कृषा करी कहे भीकृष्ण । रही चिंतवे कारत प्रताबद्ध, के इच कुक्तक रही प्रश्न ॥१३॥ मीनवज्ञ सभवति पुछरी, अगवता करे भरी भाष । सूच कार ज सब द्वांपते, सन्नविनवन कन जिले आप प्रदेश। जो जो देवने पुछिये, नग्नजाकुनके प्रधार शके धन सक निवाक, राजी किये बार् कृष्ण ॥१%॥ इस निवादिय चिनवनहे, वगर भीसङ्कानंद्र। सब बाह्यतमें सब बचने, सदा होन आवर् ॥१६॥ सुनम पह पाकुनावली, चन्द्र भये सानद् । संबम अवार वाचीए, मही बीज विरक्तनार्वद । है आ रहि जैनिक्तननार्विधिक वप्रवक्तावती समाप्ता ।।



भीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत-

काञ्यसङ्ग्रहे

यमदंदः।

सोरज-मंगळरूप अनुष, समरतां सच सुख मळे । सो सह-जानंद सुखरूप, जे भजनां भवदुःख रखे ॥१॥ करमा मांगळिक काज, जन मनमां जे इच्छा करें। ते समरे श्रीमहाराज, तो विध तेनां तर्त हरे ॥२.। एवा श्रीधनइयान, नामे जेने निर्वित यहंगे। विक सरे सचळां काम, लेने नजी बीजुं शीद बहिये ॥३॥ सर्वे सु-खना सदन, बु:खहरण हरि सीनपंधु । ते प्रभु पई प्रसन्न, सा'य करण्यो सदा सुखसिंधु ॥४.। रोहा-प्रथम प्रश्चने प्रणमी, कर्व कया-उद्यार । पमदंडनी जे वारमा, कहुं मित अनुसार ॥५॥ राग सामेरी-यंगळमूर्ति सहामसु, यहनासी बद्रिकाईश भावजुं, रहा इदथमां इमिश ॥६॥ सुलसागर सौना पति, अति ध्यासिधु द्याळ । पूरणकाम सुख्याम सदा, निज अक्तवत्सळ प्रतिपाळ ॥७॥ तेह प्रभु पूर्व प्रगटपा, द्विजकुळ घर्षने घेर। नाम घनइपाम सुंदर, हरि करी जनपर में र ॥८॥ त्यांधी प्रमुजी पथा-रिया, पूर्वेथी पश्चिम देश । अनेक जीव उद्धारिया, आपी अमळ वपदेश। १॥ तेह मसु मळ्या सुजने, खामी ते सहजानंद । जन्म मरण प्रमयासना, जेथी बुट्यो हुं भवें फंद्र ॥१०॥ जेह हु:ख न कहेबाय जी मधी, अति विकट से विपरीत । जे जन सुणे अवणे, ते थाप अति भयभीत ॥११॥ एह दुःस जेने उपरे, ते सुखी नहि निर्धार । अस्य छुन्दने आदारी, नधी करना कोइ विचार ।।१२॥ भीजी बानो बहु सांभळी, जीव पाय राजी रक्कियात । जन्म

बरण जमपुरीनी, कोई काने व सुंखे बात । ११ ।। मारे आजा अने करी, पृष् वाल विश्वारवा काम । कृषा करी कर्ष हरि, श्रीमुखे जीमहाराज ॥१४॥ वर्ष पूर्व मने पूछ्युं हुनुं, प्रजारिय करी बीत। वपारच यमदंडती, में कड़ीके नेहने तीन ॥१५॥ नेह रीत हत्ये क-री, मुं कड़े उसे करी विस्तार । जे सुकी सबू काफ्री, दरी वाले वर वे बार ॥१६॥ एक जीमुखंबी में व्यक्तिकी, बक्री पर कर्जी विका-र । अब कहा तेन करनू, कर पानवी महि समार ॥१ अ। एह हरि-लाका वर वरी, कर्नु कन्न जीवनां जेव । नरवारी निज वावधी, भरे हे रूप्त जे देह ॥१८॥ जन्म सरण यसपानम्, यह जाति वर्ष हे अवार । अवन वह सह सांबत्तो, क्यूं दिरवर्शन निरवार ॥१९॥ जेह पाने था जीवने, नालेडे बादने द्वेड । पाप तपाशी प्राणीमां, जे दिवेशे दुष्कर इंड ॥१०॥ जेबी विकट बाट हे, जेवा से असर्व बोर । कहुं संपन्निनी क्रवेरमां, दु:च वाले ब्रमुना कोर ॥२१॥ जेवां नरकता कुंचमां, के सुजवी जानवां हुन्य । तेमां वहीने प्राणियो, वामे वहि लेका सुख ॥२२॥ सह वहि इदे सांबसी, कई संदर बंधासार । जे सुणी का जीवनो, निकाय होय निकार ॥२३॥ ते-तो बच्चक प्रभुवे पानिये, कांनी तथा अक्षेत्र जन वर्ते । अन्ययाच-मुं पूरण जीवने, तेव बारे तर्न रखे ॥ १८॥ तेव अनु शुननून को-वि. असंब रहे अधिनाता । निम्नशान वर्द जीवनां, बरवा किल्फ-क बाक्स ॥२५॥ इवा चोपीका आदि अनंत, नित्र निवित्त से सक तार । बरनव परी रहे तापात्री, करे अनंत जीव पदार ॥६६॥ क अध्याकार जवार योटा, बसी बसी व शक् कोष । बहासमध्ये वह बनुष्य जेवर, श्रीष्ट्रियरने शोप ॥२॥ अनंन प्रचार जेना राममा, वर्षे छ अनुने काम । कीन लिये तेना पारते, सन पानी पासके विराम ॥१८॥ सामध्ये जीनां सबूबे सहे, बार जीनां सबूबे बार । मोटपणे मोटा अस्ति, तेइ इरि पर अपनार ॥२९॥ इतंत्र ने सुनान थह, यह अगम सुगम व्यवस्य । अगोचर में गोचर थह, कर जीवने क्या अनुष ॥१०॥ वळी विशेष इया करी, वयनदी वांधेके पान १ मंद वैराम्यं काने मानवी, तारवा तेवने कात्र ॥३१॥ वचन माने जे

1 946.

बहाराज्ञन्, विकास करी वर बार । ने जाये हरिना बासमा, पासे ने क्षण अपार ॥३२॥ सुन्य सुन्य सन्ति, बहि बुन्यती सपतेशा। जे बामभा जानको, शहि कास मायामी कनेवा ॥३३॥ अन्य सामंद नि अनि वजी, जे कहेनां का कहेबाव महि । ने मोगवेशे भक्त व-रिया, वा'लाने वचने रहि ॥३४॥ वचनवहे सूची सह, नेहर्या ने कर्ष एकाण । अब अक विरुक्त बजी, लेक्ट्रे का सक्ति सदाण ॥३५॥ बाज प्रपादे किएल नासे करी, अने शिव करे ने संदार, नाम क्यम पर लेड्जूं, बढ़ि बीजो पर विचार ॥३६॥ सुर पादित सिंधु पांच जे, शुक्री वचनने एक बार । अद्याप रहे जन करना, जब बादे कर समार ॥३ आ काक करे जेवी बीक्पी, इंड आदि सर्वे अवर । मीक-तां देश वचनने, सह चेंग्रे धरपर ॥१८॥ मोटा एक जनमां हती, राषा वर्ते के क्वनमांह । स्टार्क जाणी भीहति, केर बदवा न दिये कोई ॥१९॥ अंद व आये ए अर्थने, लोपेके बचन सवाद । कृतमी नर कुनुद्धि, बाबी से बावनी वा'र ॥४०॥ बनुविक्ष से वाविया, वय साथे नाथवयम । नेह जाय जमारीय, बहुँ रीन सुणी सपू जब ॥४१॥ अल्प बुद्धि नेपन गंपी, सुपी बाल समझे गाँह । भदा हिनकारी भीहरि, अरि तेन समझ्यों सहि ।।४६॥ अति अक्षेणो समाधीको, पर्वकोको गकियं । परमहेन मञ्ज परहरी, परत्यो सनि भाषणिये ॥४६। जोते हरि दयात दलवा, क्यों अते द एते गुल । ने शीपे एके जाएको बहि, अनि कोई इरामी लुख ॥४४॥ जोने पर्यु कुल सर्ववासमी, कां करी इतिवे एती सांच । बळवळती वीडा हरी, तेनी पाइ व मान्यों कांच ॥४५॥ पदरमां दुःच अनि पर्यु. के तो तेनी व आये वार । वेदनामां स्थाकुळ पर्द, करतो प्रजून जे बोकार ॥४६॥ अनि दीन द लियो हतो, पीडा बाम्यो त्यां बहपर । एक काम्यापी कावियो, वरि करी मोटी में र अपना ने बेबा नने विमरी, स्थारे आध्यो प्रदर्शी वा'र । सन्त वहं सह सांभजी, पर्रदुःक अचार ॥४८॥ सर्व संबर मानिक्यां, जीव बागरवांद के-ह । बदरना दुःच आगसे, बसी नवी नवानां तेह ॥४९॥ दःचद च दुःच जिया, वहि सुचनी अवनेता। बास वयस्पी श्रीवर्त, देशन गति क्षेत्रा ॥५०॥ ते कर्ष कविनत्रीये बानने, गर्भवासने राज्य-इंग । ते संक्षापं सहने, एम करे निष्डुमानद ॥५१॥ करत् ॥१॥ 

वृतंबाची—जे रीले आ जीवने, चीलके यसभी बार । गहन गलि गर्भधासनी, ने कई करी विस्तार ॥१॥ मोटा मुनिय ससी कर्षी, सर्वे बरकतो निरचार। तेथी अधिक यू व वहरे, जेनी कहेगां ते भावे पार ॥२॥ जोगी जनि नपसी कवि, जेजे सोटा कहवाय । एड दु व्यवे सामित्री, सह कंदेडे समर्मात ॥१॥ देव द्रावय सुनि सामग्री, सुने वेटा करेडे विद्यास । जन्ममरण गृःच स्थानगी, तथी सर्वत-रतो सर्ववास ॥४॥ सूप अनुरम राज्यमे, बसी जागवेछे अली आता। नेवल कंपेडे नवमा, सुनी गर्भवासनी कान ॥६॥ ओल कोटडी आर-मन्ती, नेमां दंशी राज्ये दिश्रेण । चण प्रदर सम एक नहीं, समू समझारपो परवेश ॥६॥ कोरल्- प्रदर्भा जे जलि पर्णु दुःख, अब शामसुपी वहि सुन्त । वर्षे कियो सरकावे भई, नियाँ दुःसनको ने बार मही।। अपने अहरानाच अवरर, बळे देव ने करे बोकार र दासे देह अनि अकताय, क्रांसक नने ने केम संवाद ॥८॥ नेह नावे नरक वे प्राची, आवर्ष वाक्षे भा देहनी वाणी। बरकवावर्षी बरस् हैकार्च, एकी बीर्ज हो है होई बचार्च ॥१,॥ द्वाब अञ्चल आहारनी : इस. एइ मुलमा आये अवदा । यह वाथ ने इधिर पीई, मछ मूल बच्चे ते रहेतुं ॥१०॥ उत्तं राष्ट्रं कोचेन्द्रं कमार्थ, जेते अस जनवीच चार्च । तेने रच्चों बीबायके तन, एव दू:चे दु:ची रातदन ॥११॥ लाद लाडु करते परंतन, सम्बं नगम् अस धनरेन । एडुं असे ज-बनी जे बार, लागे शर्जने असे अंगार ॥१२॥ बरचु वरी अजमी वे राई, शुंद सचल करियानुं के बाई । एनं एनं बाना प्रवादे असे. तेनुं बृत्य वासकते इसे ॥१३॥ काणु कोट लुखु दृत्यकारी, व्याव रेट भरीने मेंनारी। उनु तार् विव वाणी ज्यारे, अनि वीहायके वासक लारे ॥१४॥ कोइक वायके समय देवजी, व वावार्त्त ला-पक्षे ते बळी। तेनो रच पर्व लनपर, लेले सुख वर्षी पणवर ॥१५॥ रमे भने माना सर्वारे, पर्व कृत्य ते गर्भव वर्षे । जनि अञ्चित्रे के अगार, जीव पश्चिमें तेई मोशार ॥१६॥ तका पूर्वम सम्य पर है रवेवा, चडी एक नहि सुमा सेवा । बाजु समनो अपी भंबार, राज वियम करे ए आहार ॥१ आ जीव जंतु तियां वसे जोई, वसे देवने पियेथे कोई ! मोरां जंनू फानी रखां मुन्य, राज दिवस दिये यह दू:स

पराणे कावियो बारि, एवं वृश्ये भयो अवतार। श्वास प्रशास भ-राणी छ।ती, चारवी बीका कही वधी जाती ॥३६॥ मति समीको वयो अचन, आरमी वीक्यो सम्र सूत्रे समेन । वरको नरदे सर्व बारको, तेमां बाद्यो जराक जंदको ॥३ ॥ बाम्यो बानि वे बगुवे सुन्त, विमरी गर्नु गर्नतुं रून्त । आव्यो वारि वे पर्नु अज्ञान, प्रकृत-वांदि जे दन् प्रान ॥३८। इदरमांदि जे हनी समाध्य, आव्यो वा रे ने विसरी रवाष। जेम सृष्यो गोविंद्ना गुल, तेम सारी शिल कार्ष कुक ॥३९॥ जियां गर्क लीपो अक्नार, नेकी कारपी सह मरनार। पुत्र आय्यो जाणी पाम्या आनंत, एवं वधाई करे कुळकुंकु ॥४०। बाजे क्याई आनंदे अगी, ओटी मेर कुळदेवे करी। भाना कई मुदे बाळको, विना कह विना राखको ॥४१॥ भाई कहे वर्ष बीजी वां'य, बहे कुडुवी करको सहाय। वेन कहे करको कंपची, पूर्व करे मनोरच नित्य नवी ॥४२॥ आप सार्वे वांधी एस अरका, जैस रच्यो पारियण पाता। सह सहने आजा मुजबी, अन जनन करे निन्य नदी ॥४३॥ न्यानपान करी पोचे देह, थाय मोटो आपे सुन्य यह । एम करणां प्रयोग्यं पंच, रमका कारण आर्थो संच ॥ तथा। अनेकविधि जिल्लावी अन्य, म जिल्लाक्ष्यं हरिनुं अजन । जेले करी भूने भगवान, एषुं समझाव्युं सर्वे ज्ञान ॥४५। कुछ कपट ने वणी पानो, तेनी करी समझाबी बानो, एक हेनर दमा दवादीण, एमां करों पूरो परवील ॥४६। येच बालाइ परचन केवं, अनेक रीते क्षीत्वरम् एषु । वंशी हिसा करवी हमेशा, आच्यो सहग एवी उप-इंश ॥४७॥ तीर्थ वन माना माधुनो सग, ने सहमांधी कर्षा मनजंग। बान पुण्य करिये निक्किती, मन्द्रे पन नो हैये मार्थ केरी ॥४८॥ एकी जिल्लामण सहए दीपी, मुदमनिए मानी ने लीघी। पर्यो मोटो दिये बहु बोटुं, अणक्षणमां इसे उने कोडूं । ४०॥ इने कांद्रे मरे मोटी काल, विवे विवस्तवे वीजा वाला। काषा पीषानी नियम क सर्छ, बनाअर्थ विचरे समळे (१००) काल विजानी करेखे लवांनी, धनो कुळमां मोटो क्यांनी । दिना न्यारचे बसाव बेर, मारे झीला जीव मति मेर () १ ।। आहम्ये आह्ये करेते अनर्थ, एम आध्ये जनम कार्य । एम करना आवे योजन, लारे जिय लागे जमदा ने घन ॥५२॥ أأماما ماماء والماما والملم لماسلوها ساسات فراسا سلم لماماء واسا ماداها مامايم لمراب استماسات

ए विना बीतुं वा'लु बहि कांहें, राम दिवस रावयो यह माई। यने अबे सनस्य करे, उधु अवतुं करनां न हरे ॥५३॥ सन रहे दास वासे मोई, एम बेसे आवरदाने लोई। यसपुरीए जाबाने वाज, सके एवा सरवे समाज ॥५४॥ जेम जेम अधिकुं याच पाय, नेमनेम राजी रहे जाव। जोबनमां जोर जुलसे, करे तेस जेम सनने गमे ॥५५॥ वरनने व करवा जेयुं, पायी पाय करे नित्य एवुं। यामी जोबन करेसे जेह, करे नित्युक्तानंत्र हाई नेह ॥५६। कश्चुं॥६॥

प्रांक्षको--- ओवनमां अंजे कर्षे, तेनी कहं हवे बात । दाम बायने कारणे, चणी चणी दक्षियो यान ॥१॥ श्रीन वांत्री वननीसते, अने अंगे करे अधर्भ । साचा संत्रनी जिल्ला न माने, अने करे ने लोटां कर्म ॥३॥ कंक्ष्रं—कहे कर्म अति चला कोटा, जेले पाठी ने कंपन बोर्टा। चोरे पतने हरेंग्रे जारी, बयो स्थमांसनो आहारी ॥३॥ मारे जीन आने कति मेरे, बांधी अपर्ययक्ता ने घर । बाने न्याई वे जा-लेखे आज, जिल्ला कंगालको काम हत। यह पनने मुक्ते आह्य, दीयो वर्ष सुवर्धनो त्याम । बाल्यो एक बन्न कम मुंदी, अनि अनरे धमना है पदी ॥५। महश्री मरस धदानुं है सह, देने अर्थ करे राप की । राम दिवस पढे वह पाट, समसुदी मोर्च पापा माट ॥६। क्षि वजा आभवन अते. राची रच्छे तममुख रत । यरहे ब्रह्म पाप संभाके, सई दर्गण मुख निहाले 🏿 अ पाने जीवनमां मदमानी, वेसी पन पुरुष कुलानी। जोई छवी छोसलांती छांप, नेण सगर रहे बनमांच ॥८॥ वरोचर बेसना बनायी, वे रे खुमहां छोजन लाबी। शये पेच पीतिये पारशी, चार्च आवे करी अति भली ॥६॥ वणी-हणी बेमे बोरे बोरे, आणे होत मने अवहोते। बाने छक्ता है-मादे छात्री, बीजी मुदाई कही नभी जाती । १०। तुबे पक्यट जई परवारी, अनि दियो इन्डकाई सारी । नाम्बे नजर परनारीपर, पार्यान बढ़ि प्रभुजो दर ॥११॥ सुधे कान्य शीम्यो सनकारा, थाय विकल देनी परदारा । कामी इरामीशु हेन सब्दे, मुन्ये नाम इरिन् न भाग्ने ॥१६॥ महद उरहमां रहे सकलाती, चणु ओपन ने मदमाती। राज दिवस रहे रहवहती, दाम बाम अरथे आध्यवती, ॥१३॥ जेम रचकार्यु स्वान दिये होई, लेश रामले करवा काम खोई। जेम आपने 

ओम्बरियुं होर, तेम आपटे देवनी चोर (१४)। आंच अवाई पानपीं ओषा, बाय नैयार न्यां वन कोका। बोका भारत गांजा ने अपरीज, भयो बंधाणी दक्षित्रो हील ॥१५॥ इतिजय साथ यह दिन, बोरी अवरीमां कोलां किल। काटी बजरे करती करे, वन वार मारगमां भरे ॥ १६॥ जाने ठाउको वर्ग ठिकाडीक, जैने वर्श वगकानी बीक । लोकमांत्र कांत्रक क्यांची, मृत्य अन्त्य प्रांप भनाची ॥ अः लई लोक कुटुंबनी भार, करे बाब व करे विवाद । अब बननी बची अच्यादं, जाने पावनी शिक्षि इजाई ॥१८॥ इंश्व पालंडमां नर पूरी, सर्वे कर्य विकर्मभा द्वारो । करे कर्म व त्रवे तकादरी, किस्सी हरा बगाइ ने होशी ॥१९॥ निन्य पाच करे नर नवां, राज्यो आयने सुन्य वोष्यवा । एम करना ने मन्नी हे जारी, न्यारे सर्वेने मेन्यां विस्तारी ॥६०॥ केवां भाषाण मगिनी भाई, वृश्चि संदरी सम शुलदाई। केवो काको बाको बाकी कोई, बयां बेरी बारीमुख ओई ॥५१॥ केनुं कुछ इ.ट्रंच गोप गाम, मजी बारी भी धर्मा बदाम । सन दिवस राज्यो रामार्श, तथं जोवन भुवति करा ॥६६॥ घरे नित्य गारीतु ने ब्यान, जेम करके सराये श्वाद । बलाजिला जिनवर्ध नारी, पांच्यो आमा प्रयासका भारी ॥२३॥ वटां बच्ची बची रको देवान, साम्यं सदली संघाचे नात । जरमचरम रहे एकमेक, वयो परधी पठी विवेक ॥२४॥ नरनारी करे एम किया, जेम करें काम भाग भेता। करे होता सक-काय बढ़ी, जेम बिष्टा गिंगाने ने मही ॥१५॥ रात दिवस रामा-रंगे राज्यो, जेम बादने महियो माच्यो । परे भंगना काल गुकर्म. होती बेहबिधिया ने वर्ष ॥२६। जाले केंब राजी रहे रमणी, राखे सीधी ने परवाचा पमणी। हाजीहाजी करे जोडी हाप, पर्ने प्रतिना कामे क्षत्राच ॥६ आ राजी देखे रमणीत् हुन्य, त्यादे परने परांति वे सुम्य । एते अर्थे करे फंई कर्म, तेमां न जुने धर्म वर्षमें ॥२८॥ आप लारच सरे सगार, नेमां परने पीते अपार । करे पाव म जुने विचारी, एम गयो ने जोवन हारी ॥२९॥ एम करनां भार्यसं आस्यां, वह मुरम्पने मन भाष्यां । यांची वासमार वर वीति, एक कार्य करे अर्वाति ॥३०॥ माने बाजधकी अति प्यारो, वर व वेने निवित्र त्यारां । बोले लोलकं नेहनी साथे, लेडे बिडे में चहाबे बाबे ॥११॥

एम करनां सुन्ती पाये, लारे सुवाने पूछवा आये। मुखे करे वसाधि जुनदी, जार्ष आक्या मुं राज्य आस्वदी (त्रा) जारुपे व्यवस्था गयो अस. तो वधी तररा सुत्रवे विषय । मानी मुख्ये 🥫 साबित की में, मेनी बाजी वे ठीकर लीचुं ॥३३। वन गुने गुनेमार थयो, जावा राज वज बनो रखो । एवं। वह बायछे वेशन, नाय क्षमणी माने निहाल ॥१४॥ क्षमणी अभने आयारे बास, परेपने करे प्रतिपाद । व पेने वजरवदी स्पार्ग, काम प्राचपकी अनि ध्यारां ॥१५॥ अर्थ परी जो असर्गा जाय, करे कन्यम यह मनमांय। बार्मा बासने वह विचन, नेती दावी जोहए जनम ॥३६॥ एव वर नारी करे बान, वर्षा मोटी वांको इनकान । कोई मोबा ने मांगई पड़ा, मामरे रही बारे वानीमां हवा ॥३आ करे जिल्ब वर्गी वनि वावयो. बबी बजी बजी दिये गाडयो । तेत्रो सरवे सांगीने रहे, पन एना जनाव न सहै ॥३८॥ लागे मुख्ये वाहे वावती, शोध माने वये प्रस् वहीं। करे सनो जंडे सुने देखे, सबचा अमहचानुं अब देखे ॥३९॥ एक सारोदि करे संनाच, शोप राज्ये देन माई वाप। एवा पर्या पांच को कोचरां, बीच्या जनमनां बेरी ले व्यक्त ॥४०॥ बाब्दी वोषीने ले नरवादे, एव करनां बुदावन आवे । बुदावनमां नगदी वान, वर्षा केल केण क्षीण बात १/४१॥ लड़ी बनकी ने बयां हत, तीप व मेने सबधी फूल । जाने सादं वर्षु माने शह, एवो इतमां कोव हे वर्ष ॥४९॥ व माने परपरवर्ग रति, तीय हरि व अजे प्रथति । जाने भाग विष्यासण सार, चार्य एवा घरतो व्यवहार । ४३॥ सर्वे अग ना शिधिक क्यां, करवा अंवानी कोई न रक्यां। लाए वाधी नवसी लो-सना, जवसव करेंग्रे बोलगी उदशा जा और असीप सरम्बं धेर्य, नेगरे मार साने यहि के मूं। देवे वहि विश्वकते दाणो, एना सर्वे पुनारा के आओ ॥४५॥ को ने वर्ष दीचे ने दूर्व होई, सुन्य दुःन्य आवर्ष कोण जोई। जाको जुई हे दुक्य ने पाप, सर्व जाको बाकीनी निकार ॥४६॥ जा जो वापना गोधी समारी, नो बाप बन्नविधी सारी । कु:व्य दि-वे पंदरण दारी, बहीयं बरलुं पाळी जिलाबी ॥४आ मार गोर्ड वांचर साथ, मारी मांचर तो सुव पाय। तुवा वर्गा ने हु वे के वा-य, तेने भारता वाच म बाय ॥४८॥ जम्म धरी कर्य खेले जेव, पायी The state of the s

आप किलामण एड । जिल्ल शिलाने पापनी बान, आहे करे कराने हैं। पान । हो। एक व जोएं सर्व विचारी, अने की तनि वाको जो भागी । एम म्बाह मूजी जननार, जाबा नैयार बयो जसदूर ॥५०॥ अंते अंदं ही पूंचन कार्य, तेने मुख्ये वर्द वधी जानुं। एका वासी सुभ्य क्यांची लहे, सन्य निष्कुलानद एम कहे ॥५१॥ कहतुं ॥३॥

प्रवेशको-- अभुविमुख जे वावियो, बासे परलोकमा बू:वा। कुलारी जे कुषुडि, तेने वयांचे व क्षेत्रं सुन्व ॥ १ ॥ वरलोके वीदा वामके, आ लाके हु व्य अपार । सुव्यक्तांनि वयांपी लहे, एवा वापना कर-नार ॥२॥ बाज ओवन पुदुर्भाये, कर्या कर्म अपार । बाज पूर्व ममना वधी, वधी सीए अपों निरस्कार ॥३॥ बेन् अंने जाननी, रा-क्षती अति चतुं हेत । तेज लाग्यां तिस्कारका, कहे बरो रहे पापी प्रेम ॥ तम नेक-बास जिया बीलां बहु ससी, बचन कहे करी रोपाजी। असे जमार्क वकेल्ड्रां, वेदरी रेजे दुर्मने बोमराजी । का स्थम व करनां लाज व आवे, कदी वदीने हो कदिवेजी। भोलता बंध व भेमे तारे, जिल्ला सालीवे रहियाती। है। उन्हें हाई हाजर हुते, एयुं अब आणी देहांजी । रंग रांचानी देव अहि रहे, अ्यारे नवरां चाहांजी एआ मूं जेवां जकामां नधी, जमारे के काम-जी । य पातानां बच्चरां सुकी, बेडी रहे एक ठायजी ॥८॥ व बो-ल्यानं बोल्य पुरा, जिहा सुकी प्रशीती । बारिनी पुराणी आंख्यो, हैया भी बन कुटीजी ॥९॥ समस्या बिना क्याने मारे, हक्ती करण लांबीजी। मेल्य सममुची महासन्य लेवा, करी कमाची आबीजी । १०॥ नामं कर्नस्य महियां तुने, हे मां केने दोचली । भाने करीने भोगका इते, मेटी मन अपनोष की ॥११॥ जावा टांजे जांच्यो कारी. लारं मोरुं कहेतोकी।एतो दिन वीतिगया आगे, बळवां रिसाइ रहे-नो क्री। 🕬 एवा वयन अवने सुनर्ना, विक्रमां लाखी वरकोजी । कई कर लाडी कोरे बाक्यों, बांधी काटो परकोजी ॥१३॥ कोह से यो र त्यां वेकी रक्षो, एक केले स पूछी रेसकी। लागी जूल के व्यासे र्वाच्यो, अवनंत्र्यरे आच्यो घेरजी ॥१४॥ भोत्रियाची शांगकिये श्री, श्रीपा देखा दरवाजी । दालावाला कोद करे का, प्रश्नी व नि दिये गरवाजी ॥१५॥ भोदारिये असी अस विना, बंधे गरवर का-

المراه براها بالمراية براها والمراه المراه المراع المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه

देख में बगोर भी 111 शास्त्रके भरूको भरूको सूरण, एकी सा-जिए दीशीजी। का सुन्तमाद जीवर वादी, नाम समारी लीबीजी ॥१५॥ एम कहीने कर्ना आगे, प्यास मुख्ये व पुछेली । एकुं कर्म म अपने सर्व, कर्य सुभव चर्च नारे श्रं केली ॥३६॥ एम करीने सक्ती सर्व, पती कल्यां जळगांती। सर्वे दःच सतीने आक्यां, वजनां नेते वळायांजी ॥३ आ आधि वयाधि से अंगकेके, कही व जाप केने जी। बाद ओवन शृहचनाथां,सह कोई वीराय नेनेजी ॥३८॥ बन्दरी ने नर्ष, पाक्ष्, शामरी वे शामरीजी। जानवदी वे मोजा वहियर, नेती वीवा वरीजी ॥३९॥ शको रीमणी रमवा, कवे वन क्वानाजी । कीवियासं ववियां वासं, सन्तर् कवे सर्वानाजी ॥४०॥ काओं कोई कळनर बळनर, तेजे तब नवायाती। जांतवे वे गोहक क्रान्या, कान्य व सहेवायशी ॥४१॥ साधसम्बं वेक्य क्यमी, कोडानी क्रजेनीजी। सारच्य में संपाणी बायू, अगंदर सुद्दी स-निजी ॥४६॥ नवन्तियो अमेर वाक्षती, सुलक्षत्व वंदानीजी । शर्जा-रोग ने राथ धोले, जाने बीका प्राचीजी ॥४३। वह बरोल्य बॉब-लाई, वीक्षे वेट बांसा प्राचात्री । मुझारो वे मूर्जि बाबी, बोर्टा कु. लामां मुखजी ॥३४॥ मखमस पडी पेपुटी, चान्डी पेटे चुकजी। आं-तर गांका ने अवियो गोको, गर्ज व प्रमरे गुंकजी ॥४४॥ गर गुंबर ने गर्थ गांक्यो, भारतिंगस भारीकी । हेडकी वे दिस देवामा, मुक्यो अरधी मधीजी प्रदर्भ क्षत्रम ने क्षत्रों जाने, व्याली जाने वर्ग-भीजी। मृत्य पापयुं वे जिल्ला सन्दाणी, साथयो तोष प्रदासीजी ॥४आ अनरगत वे अंदनी इति, ओकारी वह आवेजी। क्षयरोग वे मीटी मटके, कोश रमोद्धी का वेडी ॥४८॥ इसदरको वे हैया होती, सम भीन मुताबोजी । बंदशास ने कवद काने, जोरकक जदाकोती ॥४ ॥ बानु जाये चनुर धाये, बाये सनेवानजी । बदर शह रोग अतिहो, अधी के बाती बातजी ॥५०॥ बाके बाकसूर अति, भारत रोग अपारती । मन्तद रोग वहुं कपाठी, केतां वा वे पारती Paris कुंच कमळी कमळी कहिये, कालस्य सांपधी कारोजी। औडरी ने कर्ष वायु, आफरो दृःष्य आवेजी ॥५२॥ वेश वर्ष ने गांटी काम्यो, बाम्या जाम एकदंदशी। छात्रीवंत वरे वहि छात्रे,

राश्वसियो देवे बांध । अति दांत देवादेवे वा'र, जोलां जिला व वासिये बार ॥६॥ निष्या जाक सरित्या छे रोम, विंड वहीत्यां इध्वी ने स्थोम । विंड एवां ने अवकां मून्य, जेने जीनांमां जायके सुन ॥आ सरमुच्या ने लांचा के कान, अति दिसेके वरचे वरन । केनां भागना लेवां हे सुन्य, भयां तम देवा कति दुःच ॥८॥ केना पन क्रणा ने के पुन्ने, गर्जे मेग्रसम पीर परें। केनां सिंदना सरित्नां के जन्म, ब्याप्रमुक्ता दिये अपि इन्य ॥९॥ गत्रमुक्ता योहामुक्ता पन्ता, बांस बारमुन्ता विचासणा । भरून शुक्त वचरमुन्ता कविये, मुन्या लोही ने मांसना लहिये ॥१०॥ वादामुच्या विसुसुच्या वळी, जज-गरमुखा नियं हे गळी । गर्थ गीपमुखा के गलाय, कवा चुक-तुम्बा के बनाय ॥११॥ शियास स्वासमुम्बा सुक्या भर्मे, तेनी वावी बाजी देखी हमें । बेंदा बााडीधकी पण काळा, मुख सरन्ता है अने मबाका ॥१९॥ रामा दांन विधारता अर्था, बहु लांबा हे बार कि-सर्वा । केवा अवका ने दिसंग्रे काका, येरे तोचन निसरे स्वाका ॥१३॥ केक जिला विना भव और है, केक निजर्न तन नोवे। केना हुन हुदरना जेवा, कर्या रूप अधानक एवा ॥१४॥ कीय वीदमां मुख देखाहे, पर्या तम एकविका लाहे। काओगळी लांचा हे मोर. विसे बहायकी ने कठोर ॥१५॥ नेवे टाळेडे पारीनुं काम, वधी पहतुं बायुषतुं काम । दिका घोल ने गरदा पत्रा, मेने आधार्मा न रहे भणा ॥१६॥ इस्मे लीपां के यह इधियार, प्रया किंदर सह नेपार। हुई गदा गुरुष खेल साथे, सुद्रगर भोगरीयो हे हाथे ॥१ आ परश क्रिशुक्र में नरबार, पर्या घोका छरा ने कटार । चक्र विविधा चार ते वाल, कालपात्रा ने क्रंतरा पाण ॥१८। सुपा सांचित्रयो सुरी मुद्धी, एथी पीका धावे अजन्त्री । मोटा माना शाममां सुमछ, वेन्दी वापी व बाने कुशक ॥१९॥ आता पनारा दावे देवीया, मारे माभामां लोबाना जोबा । एवा भाषुप अति अपार, मेनो के ता ने ह आवे पार ॥२०॥ चला उंट चरे में अपार, बया झरना पाडे आस-बार । रीठ बिंग शुंचणां ने रोझ, वई त्यार जाती जसकोज ॥९१॥ केंद्र चल्या ने केंद्र चाया, केंद्र चाहिया केंद्र जिंगाचा । केंद्र बीह परवन जेवा, भावे वापीने नेवचा एवा ॥६६॥ केंक वडा रिसामा है 

जींग कहा कांणिया बाल्याचे सींगे। काजियों ने कैंचे इकाजियों, कवाकियो अभिन्याकियो ॥२३॥ सरपरियो के सरपरियो, अरफ रियो ने कुरपरियो । बनवसनी ने बसदसनो, बसदसनो ने गस-तसनी ॥ १४॥ इंडइपनी में क्षत्रकती, कडकदनी वे अहमदनी। क्यां जानक्यो जननां नाम, जैने मन्द्रे तेनुं रक्ते हान॥४०॥ सरकियो ने के वे दर्शकतो, काररकियों ने कर्राहणों । कालियों ने के वे जीवाचियो, व्यक्तियो ने क्की हेरावियो ॥२६। जटो जब ने कटो जो कहिये, सटो ये बजी सपटी लहिये। बाहियां काविये निवा बचा, राहियो हाहियो वियासका ॥२ आ हंतियो सनियो वे आकरा, हंतियो दर्भावयो जरा । शांतियो सांक्रियो तीला आस. बांमियो कांसियो काक्षा नाम ॥ १८॥ कहिये कर्मियों ने अवर्थियों, विकर्भियों वजी कुकर्मियो । क्षेतियो वेतियो समे रियो, सहाकोपनी अयों केरियो ॥ • ॥ एक अक्नमों कुक्ममों, कविये कुईमों ने शिएनंगी। रोखियी ने शोजियो रीमाका, वमुकियो बोकियो वे साम्रा ॥३०॥ एवा वाव जाको जमनकां, समु केरकां से अनि यकां। जेवां वाम कप वक क्यों, नेनों बाकम क्य जालों नेवी ॥११॥ होड लावा हॉन मुख्यां। रा, पर जाकिये पार पराशा । मोदा गोका जेवशा वे गाम, मरका वर्षिते दियो वेहाल ॥३०॥ फारवर्ग सुन्त ने फरशियो इन्ते, यका युनामा जवाजा लाये । वांका कांच ने बसमा थणा, मुदा अयंकार विया-समा ॥३३॥ एवा बीद कोड जम जेड, वई भवा निरद्यी नेह। चाल्या किंकर मरवे मजी, जेम संच आवे योर वरजी ॥१४॥ चाया बिंदर कुनुब नई, जेल बलट समूत्र सह । करे होटी बनोबक मारी, जेम गर्ज पारिधिए पारि ॥ १५॥ मार्च मार्च कार्य कार्या ने आस्पा, सर्ग सेन सपहुँ ते लाप्या । एम आसी घेर्या वापी वाणी, वारो मारो कई मुख बाजी ॥३६। दई दंश ने कारण्यां वार, रूपे करना नेजप लगार । बंधी द्वार दियो बहु दुःम्ब, पामे वीका प्रभुतो विमुख ॥३ आ लारे वेटा आधी बानदारे, बी । वय सुलवानुं वार । बहें छै बानमी सह बोकारी, सर्वा सर्वर्धी वे सुन वारी धरेटा वाली बोधारां व वर जात, मुन्दे बराने कर्षे जकाता एवं बहेते सुन नारी भाषी, सांख्ये संघर्ष जाओ बनार्था ॥३९॥ चन क्यांथी सुने एइ समे, यम-

1 127 1

दुन दु:व्य दर्भ दमे । बळी आंक्ये बेटा हे अपार, टाळी ओळनाच तेव कार ॥४०॥ इसकी जिस्स व बोलाच वाणी, रोक्यो कंड व उनरे वाजी। कीर्या वंश द्वां एम हुरर, वसी द्विये हे वंद अवार । हर्।। केनेद दोष ने केनेक चार, केनेक अस केनेक हजार। अनियापी होय पाक-वंत्र, तेने आवे तेरवा अनंत शपना दिये हर गाने दिल दया, पाने दुःच न जाय मुख कथा। लोग न कर्यों एम विचार, जे में कोयो एकपं अवनार ॥४३॥ मुकी स्वाय में कीशो अन्याय, वीका रांक-ने बांक किनाय । साचा सदगुर संग व संस्या, सेव्या ने निमर्या मुजजेबा ॥४४॥ जेवा वंच विचये हर्या मान, वय जिया तथा जे के चाम । काशिया ने कोगटिया केटी, चाने वर्धमर्यादाने हेटी ॥४५॥ तेने जानवा वे सदगुर संग, तेतुं भाग्युं था राप कलंग । भृत्यो भोकाचे एवं मरोंसे, इन्हे सुन्य बाबा सर्व वाशे ॥४६॥ आज केले बीची महि सा'य, तेनी कांठर व समझ्यो क्यांव । इने जियो हरे ए ज्याय, पुर आरूपे व नाम संपाय ॥४३० लोटा गुरुवां सामार्था लाई, चान्यो जीव असपुरी सर्ह । साची बान के बाव्य पुराने, मोटी वहि चाप अनवे टाणे ॥४८॥ कर्ष बाळ प्वा बृद्ध आहे, यण रहेकी मां एवं वापरे। अभी मरणवणी निरुपार, बाळ जोवन मरे जवार ॥४९॥ सह क्यां के काळने वादा, त्यारे बृदनो दिएको विकास । भाज काल्यमां अवृक्षे पटी, ईयां स्थानी बाव के जुड़ी ॥५०॥ एक जन्मे ने एक मरेछे, एक अहातिज काळ करेडे । नवी रहेलूं केन्द्र निरमार, बाल्यो जायके सङ्घ समार ॥५१॥ कोए बेनी बाको नो चेनचुं, खुणी अवले अकट एयुं । चेनचुं चिने चावक माबी, हांहां करमार्थ पान वह आपी ॥६२॥ जम आपीने बालडो गळे, त्यारे कोण केनुं तेह वले। जेने माधेले जमनी कोज, तेने शियां सुन्द सई मीज RAN मोटानुं वेर मार्थक्षे मोर्डु, हरि व भन्ने व वाच जोर्डु । सरे वेर तो पामिये सुन्य, करी आवे महि एइ कुम्य ॥ ४४॥ जेले करी जाय जममाधे, एवं न करीए निज कार्थ । जेवा करी घटे जनकंत, करिये एषुं के' निष्कृतानंद् ॥५५॥ कद्युं ॥५॥

पूर्वकाने-वर्धी वाषी शीवने, वेशि स्थाहना परमांव। कावामांवी कारवा, क्यों वर्माकंकरे वर्षाय ॥१३ सन विकर वर्ष सावदा, वीटी

वक्या ने बार। कोच करी कडक अनि, दिवे सुरमितने सार REU ओई सुक्तां जीवनी, वधी कावनी प्रमने केरे। बंदपो संही रीतर्श, पीचवा वह पेर ॥३॥ जन्म भरी जेजे वर्षी, पानी जीवे जे वाच । नेने संभारी सरवे, कर्षो वसकते संनाच ॥८॥ राग वन्तावरी---बाक मोचनमां मेने कर्यां नां, बहुनकामां बन्नी ही। कर्या कराव्यां बार के बोले, ने आध्यांके बर्जाजी ॥५० लाही बहरमां समये अर्थे, क्षमें विकर्ण के कीश्रंकी। सर्वे सर्वाने जब से आवर्ष, असे कृष्णक शिशंत्री ॥६॥ वर्षा कर्म काळां केई, कुछ कुरुवने कालेली । अब बाचानी संदाई सीपी, सोकदियांनी साजेजी ॥आ करण वेकाए काम न आपी, परी पोलाने माधेजी । पापमां पांती केले न लीपी, के कर्यों तो निज शायेजी ॥८॥ वेक्कर के व्यवस्थी, करी अहि नगरजी। मुद्रे हाने भौषे सुवायों, तोये बा'ब्यो विचारजी ॥५॥ लारक्षी में बामस इनां, जमनां भूक अकारती। सर्वे आवी करे क्काची, केलां व आवे वारजी ॥१०॥ वेटी शीवी वांची बी वो, दीवी पह मारजी । अपारक आपी वींड्यो, राजन पर गमारजी ॥११॥ मारोमारो हां विचारो, सुनी आव्यो हापत्री। हमारले आसी इत्या, एम बोले जमनाधारी ॥१६॥ करून वाणी बोले लाणी, जाकी बचन बांकांती। कानपहिया भया एजदिया, कृटी पश्चि-यां कांकांजी ॥१३॥ कोमक कर केल मुख्यी, जावयं सक्यों मेपजी । परी अस जाय ने धर्यु अभार्य, नांनि करमा नेगजी ॥१४। केक आंध्य बेलाडे एकी, जेकी धवती विज्ञाती । करवे हांन ने पाय कराका, नीका माने ने अही ॥१५॥ काही जी न देवाचे बरावे, काबु जीवं व जावजी । रोक्यां द्वार दशे जमे स्वारे, आगी केम जवायजी ॥१९॥ आह्नय व्याष्ट्रय धां आवळो, दिये जंगमा बोइंजी । जियां कुने त्यां जमने देले, पाम महाराज मोइंजी ॥१ आ वर्ण वाचे वानर चेनी, करे जेम किनकार ही । वाका वाका चन्नी विक्रोंके, करे वह पोकारकी ॥१८॥ इंच्यां। इरियो सम्बद भरियो, पवियो नेमां शाणीती। पेट घरी जे बाच कर्यांनी, अमदान जुड़ां जाणीजी ॥१५॥ मेनो सर्वे मार्चु पर्यु, मर्यु सुम्य समुद्धेती । हांबां बरनां जनम हायों, भारतं कृष्ण अवनांबर्तती ॥१०॥ जमने कृते

बाल्यों वज, लेले इचर्ड अरेजी। में र म जाने मारे पल, कारो कारों करेजी ॥६१॥ रम बारम रोकी नेवारे, वंच वचन भई कीघरेजी। सुभाग कर वरी कोपीने, प्रथमां वक्की श्रीकोशी ॥५६॥ वारी मु-बुगर मध्य मन्त्री, वांध्यो बेह कांध्रेत्री । वांचे क्रश्लिय सावस्था मारी, कारी लीवों माचेजी ॥६३॥ सूचों जेन वार्जारे काल्यों, बक्ली लानी वदंत्री। नेनरने जेस वात्रे झाल्यो, एस साल्यो अवानदत्ती ॥१४॥ धर्नोरच रका सनमां, अधुरा जादरियात्री । कमने दुने लीधी ओरे, रचा समस्या परियाजी ॥४५॥ वह बद्धायी अनि असीयी, क्षीचर सुबं हरने जी। कायामाधी कावन साक, वर्षा कृष्ण आसे जी ॥६६॥ वृज्य कारेपी काक्यों वसी, अंगधी अक्षयों की पाली। शीव काषा ने बयो जुवारी, बारी मंदि नीपोत्री (१५०) जेन दृष्टे वह बह कांगु, चोंद चारे कोरजी। कम महस्ता महावाबीने, बामवा अवसा ची-रजी ॥६८॥ जमपुरीयां जह नो नाको, मानो मुहुनं महिजी। नान नुकर पुणी वाणीमां, बमाना लाव्या आईजी ॥२२॥ कमें विकर्ष कर्ण जे बाद, नेनु जोषा हेन भी। हातवा दिनसूची ब्लाबा, वादी बयो हे-नजी ॥३०॥ प्रेनजा देवने वाभी दराभी, दलके वुर्धानजी । कमाची तो काम व आची, पहछे भुडी गतिओ प्रोरंध लारपडी से सब पर क्षें'तुं, बीटुं काली जोलांजी। कुटुव सजी कुनोबल बीधो, रहे वहि कार्या रोगांजी ॥६६॥ साम नाम आई वे समिवी, दवे सम वे मा-रिजी । पर दाइय एवं अनरमां, लारच आप संजातिजी ॥३३॥ कुछ कुटुंच कुष्टु कुष्टु, कब माने स्थानित्ती । पर लेनर केटा सीमे, मोर्डु नत्यु भागता ॥ इसा घरनी वारी घर संवारी, वर्ष आहु जावती । मोलानी वेढे भा करतुं, कोच बरको कामजी। १५॥ समारतुं सुनाई वर्षे, जांतो करी गया संस्त्री । आक्रम केवानु उनस्य, करिय को परकी । १६ । एट धर नादि करून कारी, जोदी जान विक-बीजी। एकारक प्रतरियुं सार्व, शुं स्वागवय रवीजी ॥३ आ क्यर लादे है वृं कुट, हुटे केश वार्शा ती। रही वृष्य अंतरमा मोटी, भोग-तली ने भारतिया ॥३८॥ कामाराज काने सुभी, भारति भी ती नाइ-युजी। विवाहणी बालिक लागे, चारक सपायुजी ॥३९। घरपर्या चेर पळीने, मळी मंदळी वॉर्चाजी। शाचा मरखुं रोषु दने, सर्वे والمارات واستهاما وتمامتها وتمامتها ويتامان والمتعامية والمتعامية والمتعامل واستهاما والمتعامل والمتعامل والما وا

والأمر المراكم المراكم

रावज सांधीजी ॥४०॥ चलती चान्य चांकारो नहते, जोचे सरस्रे नावजी । नवारी नदकां द्वा करे, रोधामाई नावजी ॥४१ । एक नारी करें हे एके, जबको लेको माय हो। बीही करे म बोल्य बाई, होये होचे होचे जी शहरत कड़ी वीटी कारतो वांते, होकी हाले हाचे और। वाव प्रवच के बीचों बाजी, नेनो काव्यों साधेती ॥३१ । नई बाब हताची विधी, कांनी भूमां दाल्याजी । जोग्योरे जे बामक होन, सरकाओं हो व्याहरोजी शरदा नाम नगम पर प्रवेशी, पन्नी रचा परावादेती। मान लाजीना जन्मा जान्यं, नीतं वादे वादे जी ॥४५॥ बाजी बाजी राजी काया, यो कोई आव्या परानी। उता-रीने भेरपो बनधी, कोई न पूछ पंत्रती ॥४६॥ हाली आच्यो ने सुन्तो : नयो, बायो ने बगुनोजी। जो अयेर कमाणी कीथी, जमने गावे सुनी-भी ॥ र अ। बार दिवस ए बेटां जोष्, जे जे की पूं के बारी । लाख सवासे वृद्ध बळले, बुक्त भराष्ट्रं सेवे जो ॥४८॥ वर श्रीटा ममानमांदी, दिव हात्वा त्यांजी । वर्त नियांची एव नेत्मे, जमनी साथ गयोजी ।।। पूर्व पार लोगे लोगे होते, जमने पूर्व जोनेजी। मारे पार राख्यों बाजी, बहु रू ले बकोरेजी ॥४०॥ कापर रोवन करे कु बुद्धि, कोइ न सुने कार्नजी। मना संबंधी सीनो रहियो, पहियो प्रधन पाने प्रधा-रहा कियर करे पहिलो पापी, करे कीम सहायशी। विष्कृतानंद के नाव भारता विना, वहि अवर स्वायती ॥६६। पूर्वतानी-प्रवास वधी भा जीवने, बनु भारता विना की। पेर । जन्म मर्थनुं जीन्यम मार्थेथी, महे नहि समबेर ॥१३। यहि यदिये यह आवरदा, आयुष्य ओर्षु भाष । एव बु:व्यव घटा हवा, करवी सबुदे प्रवास ॥ ४४॥ वर्ष दुः व जे ते भाषका, बळी नधी कार्यकार । नधी प्रचारी पवनी, तन मुक्तां के तैयार ॥५५॥ मध्यं सुन्य जातो सरी, आवतो उत्तरी दुःच । बारे भाषान्य केनीने, श्रीहरि समस्या मुख्य ॥५६॥ जायुं जोईश जसपुरीय, जीव जाणी लेक्यो जहर । निमित्र निमित्र निकर आवे. देखीलये सभी एह हर १४-आ करपूरे ॥६॥

न्तंत्रको—आयुं सांकठी अवलं, रले वर विचारमा एम । श्रीय वस्तुए जडे वहि, तो दृष्ण भोगवशे केम ॥१॥ वळी कोई केशा श्रीय शीको, क्योमकी अनि विशेष । अक्षेप अभेग अवस एए,

41-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1

बचे सहे सके पति लेका ॥२॥ वळी कोहक गम कहेको, कको और ले वासम्बद्ध । कर्स साया कण्यिम हे, कच्छी भागमा एक अन्य । है। एव जनजल बन्दे जुजदू, जो परती करको बचाल । नेह उपर कहें मांभको, तम सर्वे जन सुजान ॥ ता विविध माने वर्णनी, वर्ड जीवती सर्वे बात । बाध्य सहय सत्त्व कथो, जीव तुठी वृद्धि कांग्र ॥५॥ जीव जोतां जो तब जहें, तो साधव वर्षे व्यर्थ है । वेध्यासूत्रने बचाने बगोबे, एमा जिल्हों अर्थ हो । ॥ शहरामुखननी अजमाद, अनि जायह कोज करे। ककार्युगनी विश्वीकाये, बेटे व बेटे द्वां सरे ? ॥ आ जर नप तीर्थ जोग जज्ञ, दान पुष्प बनविधि सदी । रंजे अरवे करवं, वामनारो स मखे बळी ॥८॥ वृष्य वाब वर वोनामां, समझ्या-मां हो सार है ! । स्थापे अस्याये व करवं, एक्क अठी निस्पार है ॥ प्रम जागम असन्य वर्गा, बजी बन्धा व समझ्या वात । एनी मन हे मुरन्तनो, जीव भाषों हे सम्हान ॥१०॥ वेश्ती वर्णमञ्जूते करे, प्रका हती ने जीव बची । एवन मोटी बाब आध्यो, नेयल वर्न वय हक्ती ॥११॥ अरोध अभेग अर्थेड एड. अक्षरतात के बायसे । तेमांथी जा जीव क्षयों, ए कहेवानी काई स्वाय से ! ॥ १६। बळी अक्षको जीव क्यारे ब्रक्समां, त्यारे कोइक दिन करको लगा । करवा लकाय प्रकाश विकत, त्यारे एवं गांक गाने करो 📑 आ वसी इब शीवर्षा अवनर्धों, स्वां सुन्व बहि दुःच अति । जर सुकर आज समया, एवी केम आसी मनि ॥१८॥ सम्य नजीने गुण्य लेखे, एखे अज्ञानी पण इच्छे नहि। एपण बान असन्य छे, जीव सन्य से मानो सहि।।१५॥ वळी परस्पर पंच भूतने, मधी वैरचुद्धि वपुषारीने। आस्मा भारमा एक छे, त्यारे जालंखे केस केने मारीने । १६॥ अरि भित्र ती असन्ब छे. उपारे आध्या तो छे एक । एतो वाणीनो विकास छे. वह हवे तेनी विवेक ॥१ आ जेम वर आकाशमा, अति वंकी करे मनका। नेने आकार अवनिनना, नजरे व आबे देखा ॥१८॥ वज अव-नियर ए हो लगा, अभी असम्य जाकार एक । बोलाबोला बजरे, आदेषे एक् अनेक १९९॥ तेम निर्श्विकम्य समाविमां, तथी आयतां बजरे जोच । चन जीव ईश्वर माना बळी, ए साचा हे सह कोच ॥२०॥ भाषा ईमार सम्ब हे, जानो सत्त हे जीव जेता। अहेच असेच ما ها المرابعة من المرابعة المرابعة من المرابعة المرابعة المرابعة المرابعة المرابعة المرابعة المرابعة المرابعة

अजनमा, निख निरंश के बाप लेह ॥२१॥ नेने जल बारीर जन अवस्था, जने जन वरे जिल्लान । जन विधिये संधियोः तेइ आणो जीव निदाय ॥१६॥ इरण शोधने ने भोगवे, बासनाय लुक्त ए जीव। जन्ममस्य सुन्यमुख्यमां, रहे संस्थि सांच सदेव ॥२३॥ वाध्य स्वयो क्य राग सथ, सम पुद्धि विका आईकार । एवं बारीर वय लक्ष्यतुं, काफो जीयनं निरुवार ॥२४॥ व्यवसां जे जाय भावे, मृत्तिमान कारीर । सुच्यु:च्ये ले घोगवे, यन बावज्यो सहा-भीर ॥६५॥ जैस बहनि क्यारे होहमां, जुदायन जलाये नहि। तेम जीव जबन्या वारीरमां, लद्दारमक रखो वहि ॥२६॥ यज एरक्यन वर्षे आदी, लोइ जेम परापश्चे । तेम जीव कारीर संबन्धे, मानो मार बहु सायके ॥२७ ॥ जनेक नन शाध्यां गर्या, बळी जहां आ-वयो अनेक । देवी नहि वेह विना, एव समझी नेज्यो विवेक ॥२८॥ जेम भोषंग श्रंगधी बनरे, कांचत्रियो कहं कोट। नोय अ-हिनमें जाने नहि, जोने मान्य प्रमातनां लोड ॥२९॥ एम जीवन जानक्यों, जो तजे तन अनंत । तोटो तोष आवे बहि, बने मान-च्यो दुद्धिनंत ॥३०॥ एकी रीते आसममां, जोइ कचो जीव अलं-च । तेने सामी जायके, दिवेके गुण्यर ग्रंड ॥३१॥ आ तम तजने अंगुप्रमात्र, बाय क्रम तश्वनुं तन । आकाश बायु ने अगति, ते-नुं रूप प्यापके जब ॥३२॥ वटी तेने यह देतां, बळी बीनेके दश दन । तेले करीने भागके, एक मुद्दा दाधनुं तब 🕪 । वडी दिन लगियारमे, वर अर्थि व्यापे शरीर । द्वादश दिव सुधी रहिने, वाले लेरमे दिन अचीर ॥३४॥ समा सबंधी सबँ मेटी, जान्यो एकी हो। आप । संग न चानी सपत्ति, चान्यां भेळां पुष्य ने पर्य ॥१०॥ भारपुर ने अधरण रहां, वर्ष वयमां विवालं बारमुं । अवसुनी मनमा रक्षी, यर्थ बालवामं कारमं ॥३६। तथ ठाने ने मंद्रे शने. जीव चान्यो असपुर बारमे । अचनांक्यां मुख्य अस्थियां, कही कही कविये क्यां लगे ॥३आ सन्दर्यलोक्तरी ब्याची सहस्र, जो-जन बचनो बच। इक्षिण देशमां संपक्षितो पृति, बर्धर बहुधा वर्षे परण ॥६८॥ नियां जावानं ययं जीवने, भेर्न्नं भन्तं भन्तं भानं छदि। जाना लीपी संग जरबी, जेमां सुचनो छवनेक नहि॥१९॥

बार बमधी बिकर बळी, जियां भोळणाण बढि आपणी। स्थाम तुन्तर्तुं कोच पुढे, दिये बार वह सनु चनी ॥४०॥ एव बारनवां जे भाष के, नेनों से कहूं इसे बाम । मोळ पूर के दहनां, जने बीतां ने अनेक गाम ११४१॥ वयम चमपुर बाम है, पुर मौरी बीजूं जा-न । वरिवयुर जी मुं करिये, नांधवं कांचुं बन्तान ॥३२। वीशामक पुर गांचमुं, कृतपुर जाणा ए वह । कींक्यूर ए समयुं, विवित्र प्र ए अस ॥४३॥ नवसुं पूर बाद्धापन, ब्यायु पूरव्यद् जे नाम । नाना-चंद दश एक है, सुनम द्वादश दाम ॥४४॥ रोहपुर ए नेरमूं, चयो-वर्षम दश ने भार । बीताकापुर ए बक्तरमुं, बहु बीति बोच्छा कि बार ॥४५॥ य मोख पुर है वंदनों, एक एकवरी कठोर । यंद्रजानी ए मारने चान्यों, जेने कीयां कर्य अति योर ॥ दश्य केले दृष्य भोगवती, सहेको जारीरे बार । अवन वर्ष सी मां बळा, वर्ड करी विस्तार ॥४आ वाणे व कर्षा पाप करनां, कर्षा अप अनि अग्रजि-माने जीव चाल्पो जसप्रीय, मुख प्यासे मुंबी रीन ॥४८॥ जय-पूर्व जोरे सालीने, नाली कड़शां कासपाश । आधुन उगाम भार-या, बहुबहु देखादे जाम । ह्या उंथे ने माथे नाजीया, नेवे प्राणी क रेंग्रे बोकार । आध्येनची ए समे, क्यो करे कोण पार १८०० करना वह कुकर्मने, पाएं बाटी वेनम् नहि । अन् श्रंतं पहले सागवर्, एवं जाक्ये तो देवयु वक्षि॥५१॥ अंब पंचे आयुष्य लोहे, बरी कमा-भी जो रापनी । अ लागीने ए मारगे, सर्वे पई के मनापनी त'न्या जेत अर्थे अर मनुष्य देश, नेट कारण बीचूं बहि । अवस्त आवश्य आपयों, नेव कक नेतां कतेती यहि। की। अन्य सुम्बर्ग आशारी, करी भणी भणी धान। एवं। पापी माजियो, ने चानियां जन संपान ॥५८॥ पूरण हू लगां जे पहले, जेनो केनां व आप पार । निष्कुलानद निभाग करे. सहा मानवर्गी नरनार ॥५५॥ करवं ॥आ

वृत्ताको—संस्थित वर्ष वाक्षियों, मार्गन सीधों मी है। इसस इसने हैं वृत्त्व पर्णु, निह लेवा सुन्य वाहें होते ॥ वसे में सहनादीका जो हैं जन, जम बसावे से नीन। तेयां जनां कमें से हैं, सेवी ने देहनी रीन ॥ वि प्रमानकों मारे पर्णु, नेण वादी करें वीकात । पूज्य हीजा प्राणीनणी, वि समें करें कोण सार ॥ है। को भी सम्य करीर भी, नियां मारे दिया है जिल्लास्त्रा स्वास्थ्य स्वास्थ्य

सन समती। दंड देवानी रीतने, आगेष्ठे असन्त अति ॥तः शासके क्याओं की किये, मोठले बार दिये वणी। इच्टी सन्य है दे नेजी, बाय बीका असि नेमणी ॥५॥ बाकी आसी सब बाके, पश्चिमे असरे हाच । कष्ट महेवाय केटलुं, असि वास वीवा समस्य ॥६। जेम मर वाम-र्ज, बडे बजे बांपछे बंद । तेय जाये क्यां जीव वाकी, वहियो जमन कंड मध्य केने वीटे वृत्त्व उपले, बन्दी व्यक्तं लाख क्राम । यह लेकी वाणी बहे, एवा भूंदा जमराण ॥८। बालं-नेत्रे झाथे वानियो अवापरे, चर्चपर्य प्रमानी शायरे । यह आरती सवसां पहरे, सारी जारी करे जल सहरे ॥९॥ वह माथे मुदगर माररे, करे हापहाय ला वेकाररे । वर्षवर्ष पाचवां वर्षांकरे, दिवे स्था वर्ष अवसम्बरे ॥१०॥ जेद समे क्या बाब जंबारे, कर एकांच माहन एवारे। लारे मांसरे सर्व वानरे, एक जाय जमने संयानरे १३३३ बाहनो बानना वो र करते. वाकी बावेडे बीका अकारते । हारी बाबी धरोडे हंराकरे, वनि नीटावे पार्थोछे आवरे ॥१५॥ पटी राज्य आवर्ष निर्धा गायरे, आने जीव करीया आसमरे। त्याना आवेड नामवा वामीरे, नाय कांग क्षित्यां क्यामीरे ॥१३॥ हाथे कार्ना करा ने कुटलरे, कापी वार्थानो करे आहाररे । व्याद्रव्याह भराव जम स्थारेटे, वह बनाम करे छे त्यारेचे ॥१४॥ असे व्यापुं जांस बहुनगुरे, क्य सीपी जात् नार्द चणुरे। जाद जाहं तीलुं तमनमुरे, जमनी न् वह सनगरमूरे (१९०)। भवत बीक्ष हे नवेन नारकी, क्यार्त प्रार्थ वनवाय्यरे। शुद्राशुद्ध लाया वर रमते, तेले करी तार्व मान सरमरे ॥१६॥ वस करी कारी-कापी लायरे, लेज पू ले करे हाय हायरे। करी केकार वह अलेजरे, बची भमानो मार में जिन्हों ॥ १ आ न्दार किकर करे सुच्य वासीरे, ने भा बाटने केम व जातीरे। पानी कोइ कोइनुत्र वर्धीरे, जम कहिये भूने हाँ क्वीरे ॥१८॥ यम कहीने आयेशे बाररे, मेन र ले करते वाकारश वादी साधर पाप पोतालार, ले कांश कर्या के बगर हानरि ॥१९॥ करें सन्दर्भ दरने वासीरे, मारी शुभ वनि सर्वे वासीरे । वासपी नहि से पनिय धर्मरे, क्या विकस भा विकारे ॥२०॥ सुरुवाह मुकी सदाचारर, सेना कोई व कर्षो विचाररे। वा'र वार्धार । वाख्यो महि मे पविष्य धर्मरे, क्या विकस भा विकास भितर अपस्थित रच्छोरे, सन्य पृष्यको गुण स प्रचारे ॥२१॥ अस पन الإيمارية والمراسة مناسلية ومناسلية والمراسة والمارية والمراسة والمراسة والمراسة والمراسة والمراسة والمراسة وا وا

ते आनुष्य मार्थर, जोयं सल्यमारंथी से कांदरे। जाया नहि आने अनवन है, सेच्या वृद्धि साचा सहगुद्ध धनहें तकता आवी क्वी बुझवे इन्दिरे, सुन्यो जन्मधी सरक सुधिरे। आज कोण करे मारी मा'-वरे, यस कही करे रायशायरे ११६३॥ त्यारे किंकर करेंग्रे वाणीरे, ने का बादने बहानी हां जाणीरे। जाबूं जो के अवपूरी बांचरे, जियां मधी सामां कोई सा परे ॥ व्या महि सके त्यां वर्ण क्यावरे, वहि करे कोह एंस्को कारते। यांनी कर्म कर्य जेने जेपूरे, भोगवर्ष वर्ष है जो नेकुरे ॥६६॥ जेजे जेजें लाइयों में आयुरे, नेजु बाबी देखा-दिवं जान्हे । योग्यो सम्यायं समन्त देवहे, क्यों समन्त समाध् वेहरे ॥१६॥ नेतो रचाते नियांनां नियरि, कोच समु वाय नार्व ईपरि । सम्बद्ध व संख्या क्याविरे, आहे जा बादे जाय्याची वार्वारे ॥२ ॥ करता पाप व करती नगार है, पारपो अब समने समारहे। में ती बीक शंकर समझांचरे, करनो परच अन्य इच्छाचरे ४२८॥ नेनो सभद्रीने व आणीरे, लेश सुनीते बीच म जाजीरे। जो मूं अमधी विंत अना-नीरे, भरे में कारकृद्धि देन मारनीरे तक्ष्मा आरे अवने व गक्या शवा-तरे, एम बड़ी दिये वह मारदे। दिये बार अपार से सहरे, बसी मुखे कियर एम करेरे 100 शा प्राथम भूजपा ने नरहया जारेरे, आफ्न जानाने वीवा का वार्त । नेनो जोईंडो क्यारे जरूरे, लागी तुल ने अपूर्व हुरहे ॥३१॥ आच्य जाना नहिनो तुने नाहाँहे, खारे गुकड़ों भी स्थारे पराश्चीरे । पछी के है निर्म होय कांचरे, आम कल वहेंचेके लाकरे ॥ भा एक भाग जसर्व नियरे, बीजो बेनवा सकते दियरे। बीजा भाग ने पान क्रमेरे, एव दिन भारत जिनमेरे ॥३३। हादक मी रेग व्य अवाररे, मजी मान थाय विस्पाररे । रान दिवस पाने इहि होटरे, चहचा जसना रूपनी चोटेर १३४० मुख ध्यामे वीराणोधे अ-निरे, बहायु ले मुकालीं सिनिरे। बयो क्योपी कीम म रहिरे, जिला भार बांक कम कविरे ॥१५॥ बाही मो भी करी विशा दनरे, अनि बचे कर्या प्रद्रियनरे । नेथे साध्ये यमपुर जेक्ट्रे, निया पहोदयोज शांकियो एक्ट ॥६६॥ नेवर्र बेन वसके जो बचारे, बहु बनदार विमा-बनारे। नियां पूर्वपश्चा वर्शनररे, एक अनि विकारे के बररे ॥३०॥ नियां केटांग्रे बंगमां बाजरे, बंगी लीव आवे मनका करे। बाबीकावी

المنظمة المنظمة المنظمة والمنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظ

कर्ष ह ] स्टि कर्षः ३३० ४४६ क्षेत्र लापरे. वक्षाण क्षाण क्षाण न वापरे (, ) द्वाण कर्ष लहुणे पूर्व कर्ष्यहें , प्रधी मारे लीर करी बेहरे । दिखं बुल क्षाण सि करी पूर्व कर्ष्यहें , प्रधी मारे लीर करी बेहरे । दिखं बुल क्षाण सि करी ले लाग विवासे, जनवका क्षाण सकरे । जीव कोण ए वर्ष्यहें, प्रधी बेहना करी ली वृत्रहें । कारी कार्याण विवासे, लावा लाप क्षेत्र विवासे । कारी कार्याण वृत्रहें दें वाले क्षेत्रहें, लंग क्षाण हिला हों । कार्यों कार्याण हें विवासे हें, लंग क्षाण हों हों कार्याण हों विवास है । कार्याण कार्यहें । कार्याण कार्यहें । कार्याण कार्यहें । कार्याण कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्याण कार्यहें । कार्यहें कार्यहें । कार्याण कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें कार्यहें । कार्यहें का

المراميان والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية والمرامية

प्रथम अन्य कार्या कार् अधर्म आहु जाम। नेनो त्यांनां त्यां रखां, सारे कोई व आध्यां काम ॥५॥ मान नान भाई भगिकी, सुन कल्पने काल। कर्या कर्म विकर्म कर्त, ने भोगवर्षा पत्नी आज ॥६॥ एवं अर्थ आयुष्य लोई, जोई नहि विकारी वाम । संबंधीना सुम्ब कारणे, कर्या करर इता यात ॥ आ श्रीच आणसनी संगयं, कर्या अस असीय अवार । कुशस्त्र रहेशानुं क्यांथकी, व्यति व्याचा रही बार ॥८। कंकार्-नेने किंदर दहें है आहें, एवं संभारे हां बाय आई। दर्ग दर्ग में वर्ण-वे लागी, बेटी स्व रूप्त लीपूं बागी ॥ भाष्युं सर्वे बदी ना है आथे, जेले क्यूंबे में तारे हाथे। मेली के बूं पहले का बारे, की-ई भोगान नहि केन सार ॥१०॥ मुं जानानी महोती सन नारे, जानुं थाको आ मारते मारे। निया करकी व्यापान काल, सरवी वर्ग में केम समाज ॥११। हमीहभी कीपां जे पाप, रोईरोई घोगवो ने आप । एम कहीने आपेक्षे बार, नेपी प्राणी करेक्षे पंकार ॥१९॥ कृष्य इतियासम्बद्धाः, सुन्दशांनि तो सरवे मन्यो। करे किंकर कडे बाजी, बोली व बाके मुलभी बाजी। यंत्री आंख्य रहे निर्धा वधी त्यांथी कान निरुवार, दक्षिण द्वारंथी निमरे वार । मंग दिन الوالية الماسانية والماسانية والماسانية والماسانية والماسانية والماسانية والمليمانية والماسانية والماسانية والما و

कर करे मंत्राय, तरे उपर आयंत्र ताच ॥२२। वाटे आवेडे विकट दम, तेने कारे करी कारे तन। असिएक यन एनुं नाम, नेणे बी-अपूर्व वर्तिह गाम ॥२३॥ नियां जमना कृत पराण, एह कांटापर बामीने लाणे। आंकशियाका ने अति अणी, नेकं त्यचा कार्र तन-तणी ॥६४॥ तेमां निमरे दशिरधाद, देखी आवे त्यां वंशी हजाद । होइ क्षिपाका पंची हालूं, तेनो तोशी चाय तब आर्म् ॥२५॥ लगे किंकर ने जाय कापी, नेजी रीष्टामां पीषाम पापी। बंका पा-लगारतुं ए आतुं, पाने कह कहां नदी जातुं ॥३६॥ यने कारी साथ जममान, पाठा माजो करे करी दाव। एम न करे जो जमरान, नो न पो'चे पंड निरवाण ॥२आ एक भोगवंछे इन्य भारी, पडी आपके पृथ्वीए पारी । एस एसेश बाय देशक, परंपर वीदे असरा-ण ॥२८॥ बीजे मामे आयेष्ठे ए हो'र, जेना राजा बजाने नहि भेर । मोमो जान सामर्टा लह भगे, बळवाने हे बाजीने जंगे ॥२९॥ काडी व्यापक्षे वापीनुं तन, तने दुःवे करेके शेवन । तने करेके ज बना किकर, पापी नांनी तुने केना हर ॥१०॥ कर्यु पाप पट अरी पुरं, कोई रीने राज्यं बढि अपुर । एम कही दिये कटकार, पछी आपेके बहुबहु मार ॥११॥ लई लाग ने कारके बार, पुन हुई बालेके ने बार। मेनो पुन सदा रहे माथे, जेने बाधी कीयों के वे कार्य ॥ १२॥ कहे इस भूज्या क्या वह, आया व्याक्ष मो काइण सह। त्यारे जीव कहे क्यांधकी दियुं, आर्य होय तो आ बाहे नियु ॥६३॥ मधी जमाच्या में दिव जन, मधी आध्युं से सनने जहा। सार जापू में जुने संबर्ध, इने क्यांची मने अप आई। देश पड़ी जमदन तेने जोई, लाव प्राप्त ने विवेधे खोई। लाइ पराव चक्रपुर पई, बहु चलापेसे सार हुई ।।३५० पालनां पालनां दिनरान, पासे हुन्य में के बाय बात। असे विकर ने काला कर, जेने नहि द्या मन में है ॥३६॥ आरूपे आरूपे उगामे आयुप, बहु पुती बापते वेदाद्व । स्वारे जीव कहे जसकृत, चानि ठान्यु करो तस नृत ॥३०॥ केदि भाग कर्म में में आयु, जेल करी जिल्ह मार न्यापू । त्यारे जन-कृत कह जीव जाने, कहिये पाप कर्या जेले शांचे । हैटा। इना पा-सळे पण क्षेत्रमा, मेनो सरवे आबीने कहता। मेनी मणी राष्ट्रीहे

क्षांची, करिय के बरावे के मुं माणी ॥६०॥ मारा पापने प्रमाणे पा-बी, मधी कावना इंड अमें आपी। बहु रीका वहेंडे तुंपर, बच मा-विभारी पाच्या दर ॥४०॥ एम कहीने साम्योधे नमें, सारी पुरीने कर्षी जामश्री। एव जनावेडे चींचे करी, वडे लडवडे वह मारे करी ॥४१॥ एम करनां जरी मान भाष, लारे लाववं प्रकां जाय । नेता । दरवाणीने लाग वर्ड, पत्नी जाप राजापासे लई ॥४२॥ जब समनी वर्ष राज्ञा दश, पत्री कापेले पापीनुं पंत्र । राज्ञा ने राज्ञामा द्वर-बीर, ज्याय बाम ने पीचे कवित ॥४३॥ लेकां वाचे केने बने बेर, एषुं अति विर्वय ए को र। हेनो लाग जाग सर्वे आपी, बन्दी पंक-सर भाव भावी ॥४४॥ समे विकर वह संनावे, जिल्हाने वर्षा हु:स वाचे। अति चनावेते वनावयो, आपी बारने करे आकसी ॥४५॥ वालीवामी वन माम जाने, खारे बीलागम पर आने। निर्मा वापके कामानी कही, यह वाकी तका नकामदी ॥ देश मेने आगे है हरह हुंच है यूं, वामे हुन्य ने व जाय के यूं। अंगो अंग जाती शुक्रो धाय, करे कोण ए कष्टमां मा'य ॥४आ आध्यं होय एक पर छाय, मो बाय ए गु:सपाहि मा व। बजी केंद्रे आज कीर्थ होत, साह बालेंद्रे बार में साथ ॥४८॥ भाष भोषी बास पूरी श्यादे, क्रमूदे ने ने बा-भी लारे। कृतपुरमां कथ करका, नियं मोदी मान एक सक ॥४९॥ तेमां ओएं व विये कतार, आंध्या दिना व जवाच करें। आहा करी आप्यू होय अस, जाने जवाच्या होय प्रकार ॥५०॥ तेह पुरव-लगा अब भाग, परी जाये हे हुत्रचा लाग। के हे रहे लेप पीन जाई, वर्षी चाले हे त्याचकी आई॥५१॥ चालीवाली वाच चक्रपुर, बाबी वो व कोंबन्त । नियां इंड दियं छे अवार, जियां आय नियां भारोमार ॥६६॥ वांग लावा वीवा कोही वांछ, वजे वनने करी व-वाम । मारोबारो काओ सबू मदी, वाको अजगर जाय को बदी ॥६१॥ एवं वहें सर्वायांकी सबू, तेने करी प्राणी की बहु। अति अतिको बममूं नागे, जेजे आब ते काको मार्ग ८५४॥ तेनो आर-ध्यं होय काई बामे, लावा देवानुं एटलुं बासे । एवी विश्वति हे एह बाँट, यहे नियद्वणानक् ने बारे ॥६५॥ यहचूं ॥५॥

पूर्वक्रको-सुको कथा सङ् शुभमनि, जीव वशि वर ने बार । जे

जेवां कर्नव्य करे. न भोगवे जावे बार ॥१॥ एक र व्य भोगवनां, ला-का पांच माम पान । विचित्र नामे पूर हो, लेमा ने बाकी जान ॥२॥ विविश्व परे बळीबळी, पूछ पूरवा रहेकार । सनुष्य हेड बाधी हराधी, नंबे बर करकार । १॥ इच इच्छे के देव वे, ने वास्पी इना मूं नारिया । एक क्षेत्रे पर्म उपापी, अपने अनिको बापीया ॥ ता स्वाय मनी सन्याप कीपो, पाल्यो सहा अप मार्ग । दूर्मनि अनि अंप वर्द, दीई वहि कार्ष क्षेत्र माना क्या मेनीने कारियो, मुक्की सर्वाद सकाराजनी । पर-होक्यां सूच्य परवरी, करी व्यक्ती वृष्य समाजनी । ६॥ कोव्य मोरी नाथी नहीं, वर्शन तुने क्यां मने । मोदा कुन्य हि क्यो, आयो काईपे का मारने ॥ श्री जान वाची लक्षाचीचा, निमर प्रधी वा'र । भाग वर्ती भागानिया, भागूं करीया भा कार्य बार ॥८॥ कार्यः--नई कान कोडी मांगरको, बरेबे अनि इंटान वर्का । जिला नियांची परे हे जाना, जाई पराई पदी दियो जाना 📭 बाहरी पारे परे जिए सार, जेम लेहने यह लहार । आधी सुरका पहियो भीत, बची देशक म रही काम ॥१०॥ वर्णी यमरदी यांची करी, प्रशासीय आवे बार करी । कहन है के पहली जाय, जिल्ह बार केटनी कवाय ॥११॥ जारी कुटीने मारिज कीची, क्षेत्र कारवाने लीवा। वही एकमी हिंदा के पर्यु, यदि ब्रमाण परनवासम् ॥१२॥ एव कुले बीले पर ब्रास, आये बहायदगुर पाना । ने ने पानर के बैनरभी, मुजाबाधी ने व जाय बरकी ॥१३॥ वान लोजनमां परिवाद, यह पाने पूरण वहि बाह। नेमां सर्व विकि अंतु वका, कर्वे आहारी लोकि मांगनका ॥१४॥ बन्दी क्यर वह सामा ते. होत चांचवाचां वंची आहे। अवकार लां अवहा बजे, नवे बेह नेमां पन बजे ॥१५॥ नवे सुरक्ष पचर शीओ, जाने प्रमचना करना महिन्छ। । क्यो ब्रेनी सर्वे सामान, जीव करे प्राहि वादि मान ॥ १६॥ त्वादे वहेचे उत्तरनार, गाय वापी होय तो संबार। आये जान में प्रमारे सुम्ब, बहिनी प्रमाणि प्रमे हु से गर्भा नेना क्यांची आती होत आके, बड़ी नेमां नाकेंडे बगके। यह सुब ने निमहे वारि, बळने अगर्धा जंद जवार ॥१८५ वाचे होई चान अवावद. आपी पहें बंबी अचानक। भौगी अंची माधानी निवेधे, क्वी बोर ए बेची दियं ।। १९॥ देव नियं काम माक नोक्षी, केव मान्येके

व्यांनचोर्न कोषी । यम नव व्याच कार्यस्थावी, नियां पृत्य वामे वस् कारी ११७३। जन्म समञ्जनाकृते असि, नेमा बरावेके एवं गनि । नाक्न श्वामी भारत तन प्रान्य, बार्ट नमार्थ करमूं पुष्प ॥२२॥ सहि बृच्य कामे भाग बाम, लार आवं कुलह पुर पाम । नेतुं कुल जाप वहि कर्यु, मेनो सर्वे ए प्राक्तिय सम् ॥ १२॥ सोटामोटा वाच वद स्वास, नेनो काच्या नियां ननकाळ। माबी बळगाच्या एवं वाहीर, जाय सांस वे विचे बिंबर ॥भा॥ मोटा तांत्र के काबंत्र मुख्य, काप तब नोबी दिये हुत्य। निर्मा शकीयो पात्रे शेकार, आधि कोच करो मारी बार ॥ १४॥ । वधी समानुं वित्वन् हु:स, कही केम वामुं इवे शुम्ब। सारे बिकर कड़ के नेवार, को कय सुव्यवस्थित लगार ॥२५॥ वाच करना वार्षु वच कोर्युं, बोटा सुक्तमां अधिक कोर्यु । इवे सुक्तनी वानव खागी, कर्या कर्व क्षेत्रक्व अवासी ॥६६॥ एस पू:ल दई जो अवार, वर्ण कारे हे पुरशी बा'र। लांधी नाबाकर पूर का'वे, नेनी आह माम बीने आबे (१९अ) तेना वंड के शुज्रवी जाने, जीव भोगवे के बहु भाने। वाचे तम नकीनकी काय, क्की मुखे करेडे बाइवाय तप्टा आये साम कोईनुं व दीतुं, जम के छे लामछ जो कीतुं। बाम वापीनुं क्यावकी शक, एम बनावयुं अस सचने ॥२९॥ एम जीवने कुल क्रियेत, जान सोषी मांमनो निर्वेछ । बानायकारमा ६४ वर्ष, जससिंदर चाने छे सर्व ॥६ भा नेत्रो तेल कार्य क्षेत्राच, सुकृतिते सुन्यवर वाय । वान पुण्य पाक्यो सम्पर्म, क्यां होय महिमादि कर्म ॥११॥ नेने ए पारमाँ वहि हुन्त, हुन्त पास प्रमुवा विमुख । एम जसपुरीनी पार जाकी, कर्याणे पुरार्थ ने बमाशो ॥१२॥ पडी वय मान विश्वार, वी'व सुनम कोरेट मोलार । सुनमर्था नपानीने छोडू, बाई हाच वर्ग अस कों हुं ॥६३॥ एम सर्वे अस एकां बाले, पुरुष विका शासि कोण बाले । धन्न बन्न ओहा पाणिकाम, चंन्या चह्न घर विभाग ।। देशा चंद्रका आदि आरे तो शन, तेचे सुन्य पासे ए निकार। नेना व आरम् वे म आपारमुं, कारे ए कृष्य भी भौगवारमुं ॥३५॥ दई कृष्य कामा पुर-कार, आचे वरेश मुद्रगर बार । कांधी बचामे मान जहर, आवेते ए प्राची रोजपुर ॥१६॥ नेनो अनिकाय अयसार, आधी जाचेते स्वी-था रहेनार । माध्य असने मार्चु काई माथा, तो गुने असे आपिये 

जाना ॥३ आ क्यांथी आये आय्युं नहि के हे, सुनया दुन यटी असी वीहे । माई पराईन काहे जारे, नवी बाटमां सूच लगार गोटा संख्या श्रीय कोटा गुढ लेवा, जसक्य वही आवे क्या । देले इस्त्री आक्ना एवं, जीव जोई राजी धाय नेने ॥११॥ जमदूनने करेड वाणी, आष्या वार्र सुर मुख्याणी। अंत्रेन असी ए अंत्रती सुरी, करको नमारी गनि को भूरी ॥३०॥ एम मनमां आवत् आणी, भनि वकुद्धिन धारा भागी । जाने इथनां स्कारको सूत्रे, त्यांनी आकी व्यापाने बहुने ॥४१॥ मेने हुन्ये हुन्दी जीव धाय, करे भरवाओं हु भेजमांच । स्वारे अमगुर करण प्राची, अमगुरवी एपाणी व जाणी ॥४२॥ जानी विश्वतां शक्यांनां केन, बळी व्यक्तिशारी वे क्टलेन। करता कोटो प्रमुनी आकार, निद्ता धर्म निय सदाकार १४४॥ इतां एवां प्रसिद्ध एथाण, नेती व पत्री तृते ओळवाण । लोघो जन्म में मोराने संगे, एम कही बनावेडे मंगे ॥५४॥ एम पीने बाम । अशियार, आवे प्रयोक्षण श्रीतार । तियां जीवने जावनी जोई. बाद राजी जम सह काई धरना भने आदयो मुं भागवा भुन्न, तुन जोइ चलकेले मुख । जायुं इवकां जाय नुने चादी, रण लाह्य ने-ने नवराधी ॥४६॥ नियां नारां जन्न हिससरकां, नेती वरसावते माथे करवा। नेजे भीजी भूजे जीव वस्ती, उरे नार माथी होय कामसी ।१८आ पछी लांधी बलावर्ड मने, माम माहाअधिकार लगे। देखेरे दूरभी बादेर सार्व, यन मांडी हे तम इजाब अटत जोई स्था है जीवती बार, जाबा मांस धीन। लोही मार । आबे छ सह उडीबे समा, है के असे तारा काका मामा ॥ व्या अवले मारग चटाव्यो तुने, नेनो ज्यानामार आ सहते। आस्य व्याना जाना ईये जाना, यम करेंग्रे सह जमराण ॥५०॥ वर्णी अंगे चोळी मरचू मरी, बीटूं सुत्री न्याय न्यान करी। यन नाम शीनास्य नगर, स्याप शीन अंत भरपर १६६॥ गोव्हां गावटां करवा साय, आंछार आंशिकां आध्या होय। मेले सुन्य वाने यह भाषी, सादे दान देखें वर्ष जाणी ॥५३॥ ने जो मा 'रपु हाप विज्ञहाथे, मार संवारें हे समा साथे। ने ने क्यांची आपे एहं के को, पड़ी करे बाफी एहं पीको (१४३) खाँची जमहून वह बार, चलायते वालीने अवार। यह कुले वीले साम बार, जावे المالية المالية والمالية والم وأ बहु बीति पूर ने बार ॥५४॥ नियां जमना हं हने जोई. अय पामी भाषी दिये रोई। कहे छे आ रातां साव छे छानां, नथी के हुं के सर बंगानां। ५६॥ उचां नीयां इटे छे पबने, जाणुं इमणां अवको छाने। तेने जमकिकर एम करे छे, नथी छाच ए लोडी उटे छे ॥५६॥ तुं जे-बानो करे छे नथाम, मार्चे लोडी उटे छे आकाश। ते सां नदी जीव कहके छे, कंत्र काळज छानी धवने छे ॥६ आ एवा मेनना भवार मां-भकी, तेना माने छे पोनाने बळी। कहे कियां जाउं के ह कई, भा मारथी हुं के म उनमें ॥५८॥ म कर्यु दान पुष्य मंत्रमेवा, सेक्या ने जमकिकर जेवा। आपी पापीए भवळी भनि, कराबी भा मारगमां गति ॥५६॥ कर्यु मोटा कमाइनु काम, मोदन्यों मुने जमने थाम। एम कोचे माणी सुणो सहु, कहे निय्कुलानंत् शुं कहुं ॥६०॥ कर्यु ॥१०॥

पूर्वकारो-संकट कचा सीखे वाहरता, सक्षेत्रे करी में मुख । एक रुष्याची हे लालवर्ष, भार दंवनणुं त्यां शुःच ॥१॥ साचा सन्गुद संगती, आमे लाग्यो वहि इपदेश । यापे प्रण पापिया, लिये सुन्त क्यांथी तक्तेश ॥६॥ एम अमन्ते ओरे करी, यंच करावियो बहुके र। वर्ष बीम्युं एक कारमां, त्यारे यां वयो समझिनी बाहर ॥३॥ बान भा संयभिनी बाहरती, बसी कति चलुं हे अनुव । तहत वापी मा-बीने, देन्दर्भ वाचे कुल्क्स ॥४॥ केक्ट्र-पुरुषधान होव कोई मा-नी, देले संप्रतिनी शोभाव्याची । तेषु पुरमणुं परिमान, कर्षु सुज-को सह सुजान ॥'-॥ बात कोजन लंबाह मैठ, पहोळी बन सा जो-जन कै वे। किछी करकरो निया राजे, को ने बार सुंदर दरवाजे ॥६॥ एक सोनानो चीतो बपानो, श्रीजो द्वार लांपानो हे मानो । बोधो लोबानो दरवालो हैये, द्वार बार ए पुरीलो कैये ॥ आ तियां जेनां अंदां कर्म होय, तेने बारे जाय जीन साय। रक्तर द्वा-र अनुषम अति, तियां पुण्यवात्र करे शति ॥८॥ जियां राजवार्ग चौटा बोरी, वह बोकायं बोके पर्वरी। मेदी मांल इवेटीयो बो-थे, ओह पुरुष्टाहर सब सोचे ॥९॥ भीठी वाणीए कर पंची रच, को ने मूक्ति त्यां वह वैभव । स्वामा पनाका त्यां वहपर, तेशी वां-ध्यां ध्यां घरोघर ॥१ आ राज दुर्गद्वार स्काटिक मणि, कनक क-

Printer states

कर्तु ११] लोह वाचाः देवेच १६१ १११ कर्तु ११] लोह वाचाः देवेच १६१ १११ वितृत्रका से स्वारंत पूज से बार, अपन देवना देश है हार ॥११॥ वितृत्रका से स्वारंत पूज से बार, अपन देवना देश है । लेके आपी सारिणों से इची, लेके आपी लोह क्या निर्मा ॥१९॥ निर्मा पृथ्यवासी जीव जाय, देले विष्णुसम अमराया । इसे कहें लावभीनी रिन, देले च पूरी सहा अपनीत । १६॥ वने हहें आपे लोहजार, सारे करे कापर योकार । जयों लोह मोजबर मान्या, लेक पूज संदान पा ॥१८॥ सोटा लाव मार्ग सिंह पणा, करे प्रतु वाचा सोटा लाव सिंह पणा, क्या कार्य कार्य कार्य कार्य सिंह पणा, क्या कार्य कार्य कार्य कार्य सिंह पणा, क्या कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य सिंह पणा, क्या कार्य कार्य कार्य कार्य सिंह पणा, क्या कार्य कार्य कार्य कार्य सिंह पणा, क्या कार्य कार्य कार्य कार्य सिंह पणा, कार्य कार्य हार्य कार्य हार्य कार्य कार्य सिंह सिंह पणा, कार्य कार्य हार्य कार्य हार्य कार्य हार्य कार्य कार्य हार्य कार्य कार्य हार्य कार्य हार्य कार्य हार्य कार्य हार्य कार्य कार्य हार्य कार्य कार्य हार्य हार्य कार्य हार्य कार्य हार्य कार्य हार्य हार हार्य हार हार्य हार हार्य हार हार्य हार हार्य हार हार्य हा

المنافعة من المنافعة المنافعة وقد

424 11

च्यो सनुष्यको अपनार। सागे देव अनुष्यको देव, बाध्यो अभागि-वा तम लेख ॥२८॥ अरतवाद अंबुद्वीय मांच, रहे बगर श्रीवरि क्यांच । एकी जुलियां बरणव बाधी, प्रवादे बची नुं जुलकराधी ॥ ६०॥ करी कारयो में अनि अनर्थ, यक्ष गुन्हा असे नहि समर्थ। योजया राय करी अनि कोप, पापी करी में जासन्यालीय ॥३०॥ डोच संबंध काश्रि सुरुत, ईश अमरेका वसी अज । तेनो व लोव आगन्या लेका, लेथी क्ल न् भयो सरेका ॥११॥ जे ने व नकता हकती हरिने, आरयो वर्ष में काम वरीने । तथी जीया जेर्च नार्व मुन्य, जन्ता वरी प्रमुका विमुख ॥ भा लई आओ किंकर पांधी वा'र, दियो वंड बचड श-बार । १ में सुवर्ष कियर समझे, चानक जीवने कामीने वन्छे ॥३३॥ क्यों मारजानावामां पत्रो, जानी क्षतियो वापी अञ्चली। वसी अनेक आयुष लाव्यां, तर्ने अगनि सांवे तकाव्यां ॥१४। तेले वाले-हे वाबीनं तन, जेले लोच्यां वृशियां बचन । दईदई राजनां एकाक, चिंदर करेंछे बहु हराज ॥३५॥ वटी सब सके सेन आंच, सेने दुःसं करे हायशाय । इत्य इपेसीमां लिला जोते, यम पुरीय वर्णमां लोते ॥३६॥ आंक्यमां नत्र पाने संस्थाना, शुंबा शान करेशे मोदामा । तोंचे जीन नांगरिंगये लागी, जे कांच बांग्योंनी समन्त वाशी uton बालेकान किया वंगां बाली, केन विश्ववान लागी वा'ली। वधी बंबनो बीजो बचाय, करेखं विचारी समर्थात ॥३८॥ करे छोड़नकी बर बार, नेने तब नकाने अचार । कड़ी किंकर कहे क्यजियारो, भरो वाच हो मने विचारो ॥१६। जेले वाच भरी एक बार, नेजी भरावे बार बजार । वस्युक्त ने बरजारी, बाबे विवय शुले पुष्प भारी ॥४०॥ एम पुष्प दियेशे अनंत, परेनां मुले नावे लेबी अल। जिएं पर्व हजी बिएं पात्रो, जीव बरकता कंडमां जा-को ।।५१॥ न्यांनी नपाणी नपाणी पाप, करती जमना इन संनाप। हिन्दिनिया हेर्लु मेक्ने, ने बसाले तेली इस देक्ने ॥३५। प्रजयक्षत्री बाब मंत्रारी, कांस किकर ने मारीमारी। बाकी जाकी जमकृत क्या-रे, वर्णी पुराको वाधीने लारे ॥४१॥ भाई असे का'वा नं न का'वी. भारी मार भाषार हैं जायों । एन कहि विचारेंगे जब, इवे करिये कीहरू प्रथम ॥४४॥ भी हे मारे दृश्य वर्षु बाय, पूर्व भीती काहिये

والمرابعة والمناورة والمراورة والمراورة والمؤورة والمؤولة والمرابعة والمؤورة والمؤورة والمرابعة والمرابعة والم

वर्ष १६ ] १९ वर्षः ११० १६३

उवाय । नियं वोस्यो एक जुनी जम, सर्वे मार नी मुने ये तम ॥४०॥
नाजु क्यारे साथन करे, मूल आंक्यमां मरणां असे। त्ययमां वारो लोह साथन करे, मूल आंक्यमां मरणां असे। त्ययमां वारो लोह साथन करे, मूल आंक्यमां मरणां असे। त्रृ श्वायो वे वर्षाया, नेने वामके हुन्ज जनार । यांनीमांच मारो बोटा चल, मारी क्या वास । वृत्री पूरी निर्मा करें। वाहरे, मण विश्व वर्षी त्राची करें। वालो वृत्रण विश्व वर्षी त्राची करें। वालो वृत्रण वर्षी त्राची वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो वर्षो करें। १४८०। यह दियो हाव योंमी हुन्ज, नो हमणां प् का से विकृत्य । वर्षी निया वर्षो हुने असे हुन्ज ना क्यां प्राची ममरू , नेने विपा मारी कर्यो पूरे ॥२०॥ भारे सह विवारणो मारू , लेने वेशानी करको कर्षो मारा । मह साथ वेशानी करको से पान । मह साथ वेशानी करको साथ विदा मारा विदा मारा । व्यव विदा मारा । व्यव मारा विदा मारा । व्यव मारा

YEV

भेषु, तमे सांभग्रको सह दोष ॥११॥ तामिय अधनामिय, ही-रव भहारीरच ते । कुंबियाच वे काळसूच, असिश्वयन दू न्यन्य ते ॥१५॥ शुक्रसमुच्य अधक्य कविये, कृषिभोत्रम ने संद्वा । ससमुर्धि वज्ञवरक, कारम्यमी आशो सर्वादकाः १३॥ वेनरकी पृष्ठीय प्राचराच. वैशासन नरक पृथ्य पत्नी। नामा सभ्य सारसेपादन, अविधि जपः-पान मधी । ११।। एकवीचा नाक ए कका, आरक्ष्य रक्षांगण और जन। शुक्रवीत दंदशुक, वक्षी अवस्तोपन ॥१५॥ वर्णावर्गन स्थिमक, क् भवें बुक्तानों स्थक्ष से । नाम आहानीया नाम कर्या, व पार्थ ने बावनुं क्रम है ॥ १६॥ जेने जेवां कर्म कर्या, मेहने नेहने हंड । बावी जीवन वीष्टवा, करिया अह।विचा कुंच ॥१ आ जेने वाने ए जीव वहे. नरकार्य वर मार। भाषण वर्ष वर्ष मा नियो, कहं मरक ने निर्धारण देशा नायन नाजारा वाणी, हरे नाजां वळी वाळ। एवं वाचे एवं जीवने, माणे नामिकमां नवकाया। १०। अनिक्रमानक मुद्दी हेते, जेमां जेन् अति अंचार । क्रमहते शसे बसे बांधी, बावयो तहनी मोधार ॥१०॥ आहे बीवुं न देवुं के बू, इने जो को बारी नाग हान। का कड़ीने नावे बछाड, बार्ड राष्ट्राशक्त कंगान ॥ इ.१॥ कह कियां आई केम करे, क्रेम वाभीचा हु लानी पार । वीवामांडी प्राणियो, करे कायर सावे बोकार ॥ रूम। वर्ण कईक कलवे काहियो, यह नरक्री वा'र । वाव लवाकी वे वापीयो, जाने अंपनामित्र मोसार ४२३॥ क्वर विकर बरनो भरतो, वापी वापमां वत । भोका पुश्चनं छक्षी बसी, लेती चन जिया तेनुं इस ६२४॥ यह कार्य वास्थिया, तेह अववासिय कोई। यमन्त्रमा मारधी, जनी मन्ति गरते मुझाई ॥२५॥ महा अभाद जेमी भोरा, अनु भनिता भनन । रोसरोधे तन नोही लाए, नेनी व आबे अन ॥ महा। अपनकी जेम कायना, वसी क्ष्मी वह नद सेम । नेम वर्षे ए वाणियाँ, पृथवी उपर एम॥५आ निराधार विराक वर, बोटी व कार सुखा। विश्व पटी जवानमूं, केटलुक खमाव मृत्य ॥२८॥ में दे में कार्य मार्टिं, यमन निरद्धा और । लने हाच बच्चा पाणिकी, कारे कह पू को बनोर ॥६०॥ पूरण पूम्ल वह लई, कारियो कोटक काछ । केम मचार्था नेहनी, भागपो रोरवे नमकास ॥३०॥ अपर्ये हैपों कर सेवी, केप्यूं निजकुळ निजहेंड । आव सारव साव आरी, والمناور والمناور والمناور والمناور والمناورة والمناورة والمناورة والمناورة والمناورة والمناورة والمناورة والمناورة

والمأمة والمال إليال فيارق الراب الراب المامة والمامة والمامة والمامة والمامة

411

परंत्रको-परिजनहोती विश्वविरोधी, गुरुदेवनो गुरुहेगार । एवी जे अभावियों, ने बच्चो नरक महमार ((१) जे लेबा कर्ष करें, अर्थ नेनेज नेको रह । पत्नी पाप नपासी वालियो, काळमूच नरकने कुर ॥२॥ पिता वित्र वेद होती, पहा वेशी करे से बाव। मेह वाचे काळतू-लमां, वादी वामेके मंत्राच ॥१॥ ने कृष उड़ी मुंडी चली, कने उपमा केनी ढईवे। वाची बार्काने वीचवा, सर्वे रूप्यतो सिंधु कविये ॥३॥ द्धा इजार जीजन करती, नांबावरणी छे नेह। इपर हेडे अधि अर्थे, विशास नवाको एड (५॥ वेक्सं- मुख प्यास वीड लां अवार, व दे देव अंतर ने वा'र। मार्था पड़ा वार्शन्ता बाब, तेने लेके नवकाता ॥६॥ वहनां वजार वर्षमुधी, बारेग्रे ए वरकमां ६थी। मुने बेले होटे बच्चे बाय, पंत्रे पर गोटिकमां लाग ॥ आ सरकार करक है चलु, आरुष् वाच करेल आवर्ष । लीवो वेटी बेटियन वर्षो, भारो मारो कर कुन्य दियो ॥८॥ ज्ञं विश्वारी स्थाएं। मनमां, करो बहार अनि एता ननमां। वधी नेयत्र दिपछे रूप्त, वामे वीहा प्रमुनी विमुख ॥९॥ वर्षी रिते वीने कंड इत, पछी बाहतो अस्तिपत्र यह। लाँक जेवी केंद्र करेरे पार, एका लावनां क्या आपार ॥१०॥ निक्र वर्त वर्त कथा जेत, आपन्याळ विना नजे नेत्र । परनी जे पाधक बारम, अरे अवजो ने माहि वस १,१२॥ बीक्पर्ममंहि बांधी बेह, नेमां बरकाचे निजर्द । करे जहान आहार अभागी, कुलपर्स केनानी : त्यामी ॥१२॥ यह वाचे अस्तियत्र वने, यहे बाकी सहे गुण्य सने। वांचे चाने करानके वह, दिने दन उपस्थी बंद ॥१३। नेले करी करे हायहाय, भूगोमुका आवी मृत्छाय। प्रज पालह पर्मन् वह, भागवी वर निसरे लेड ((१४)) एका सरकता कुकर्ता हुन्य, नेनी कच्छा आप केम मुखा। केता केता काने जेना अन, एवा अशोनिक पूज्य अस्पन ॥१५॥ वळी आ लोकमांडि अभागी, करे अन्याय न्यायने लागी। राजा राजाना भाषर जेत. खुँदे बनवाके लोड नेह ॥१६० दिये अन वित्र ज्ञित इष्ट, म्यूट घर गाम कोर स्टंड । वजवांके करे अन्तरम्य, वधी वृत्र ने क्षता भृत्व ॥१ ॥। वरं सुद्रशमुखने परी, वीने जेन वी-चुंमां केलडी। एम पीलेड पार्थानु तन, नेले धरे सायर रोजन ॥१८॥ वनवांक रेवनने कथी, शीधो दह मधी मुवासूपी। यांबी में र ननी

सम्मान, पर्ताक्षत व आणी काम । ३६ । अति दृष्ट द्या नहि लेका, एका कुमनीयर बरेका । एका राजा में राजाना भूता, यह सुकरमुख नामी मृत्य । १२०॥ सहे पू'ण कास कर जान, नारे ए पूजापी मुखाय । सुकरमुलानुं कुर्यर कुला, ने जोगवे प्रतिया विभूत्व ॥६१। कर्य बर स्वं जिल्हा करें, ज्या बर्शक है। वर्ती आ हो। कर्मा जे विमुख्य, दिये अलय जीवने तृत्व ॥२२। यांचव बांकव हु जुवा जह, बगा बाली बीबी आदि तह । यहा बली व्यासादिक बदी, चना सामाँ जेनु बसू मदी ॥२३॥ चन नार पर अंपकृष, जेमाँ अनि सम रूप्यान । बजी सेरवासा जेन् वर्, अभी बजने अंतर्मा लहु ॥ १४॥ नावे बिहा वहि सूच परी, यो हे अवजाये जाय वही । भाग विना जनाय प्रारीत, चान जानयमां चीपारां नीत ॥२५॥ प्राय नुवंत्रियों करें जुन, जायों वधी सकात् आ दृष्य। या भीवद दृष्य अचार, केन करू बीने कार वार प्रान्धा वती क्यां कर नेप्रवर्ते, वापी कृतिकाजनमां वह । जेले लाएं वहि व'वी शह, बसी व वर्षा क्य जगन ॥ न्त्रा मार्थ्य असिवित अस काई, काबु एकमां मुखे संबाई । ए को काले जैसे पराण, कृष्यियोजन करवेनी लागे । १८३। कान सरक जोजन जेमां जेन, भया कृतिया जर्मा अन्यन । नेमां जानी कीट जबरावे, दुई बार मुखे अवरावे 1.50 ॥ कहे पाप करती ने वाजी, जयना बुदने जुड़ा जाजी। नेनो साथां पर्या पुष्य पाय, हम मुन्ते कोमध्य में जान । ३०॥ सुन्य सरव मयुवे बटी, आध्यं एक व हु ल क्यादी। राम दिवस रोमाने रोमां, दिन जाते वह हु:व्य दोमां ॥३१। एम दई दून दूरण भारे, केस वर्ष दंति कार करि। व्यक्ति वाल अद्ञा अक्षार, जमां बुल्बनमां अहि बार धारेश जेह कार्य वहे वर्मा जीय, नेह बान कहं मनलेया। यरे मक्यांना काम कीपा, जेने नने इ.च्य बह शीपां 633। जेले आ लंद विश्वनां पन, चौर्या सुवर्णा-दियानन। वजी कार्यको आपनकारा, चौर हेन की जानुं वदाळ ॥ १४॥ अने नेने लेखें अवीक्षीरी, मही नरकर नजर मोटी। पापी पीनाना सुमान काल, करे दगा यह दशायाल ५३%। मेने भायते सन्ता नरके, अना वृष्ट कुले प्राची धरके। लाव लोडमार्कामची मानी, नेपे नों हे लावा कर सादी ॥३६॥ काई तबनवी स्मी नाबी, रूपे बोस्ता 

तृ दु ए जाणी। सर्वे ऋषि मुनियो ए सन्, तेनो केदि व धाप जसन (12 अ) मोटा मोटा गया गय कथी, लागवारी है बोटी ए नथी। एव मोगची तृत्व विकशी, त्यांपी कारी वाचे नससुशी ॥३८॥ जे वावे व नरकर्मा वटे, कर्या कर्म ने केम न नहें। कामनता धईने कुकर्मी, करे अवर्थ वर अपर्मी ।।३९॥ आ लोकं अगस्य एवी बार, पापी लेहा करे व्यक्तिकार। अथवा अगव्य वर्षा पुरुष, करे बारीसम कामका ॥३०॥ तेर पुरुष वे तेर भार, वामे अरक्षमां कुम्ब आपार। निर्मा जिया करे होरालकी, अभि नपावेछे नेह वजी ॥४१॥ नेहां का देवारे बहुबार, एकबारकी बार हजार। नेम होहानो पुरुष नवाबी, बच कर राचे मारीने लागी ॥४२॥ बारी निरमें चित्रने ने स्परको, ने बर मरी करम उपां बरको । नियां पामको नेवनुं कस, वरो कवार बाको नर लक ॥४३॥ अंगे ओई नवने परवारी, धई कामानुर सुर भारी। ते बर जनमोजन्म आंपस्टो, याच जाय जनम सच्छो ॥४४॥ बसी जे जब चिंतवे नारी, विषयसुन्ते व मेले विमारी। ने वर श्रयरोगमां नवाय, वर्षु विनयपानुं कक्ष वाच । तथा जे वर स्वर्धे परवारी जन, बाय कोहियों मेंने बसग । यह अन्योजन्य रूच बाही, बोडो आब रताने हराबी ॥४६॥ ए प्रमाणे धाविनानुं जानो, भन्ने कम सम पर-भाषो । भागी वर्षोद् भदाप्रमुक्ती, नेने क्यांथी मने सुन्य केरी ॥४०॥ भेकां लीपांत्र पूरण भानां, तेनो सुदक्षे वति सार्वासानां। करी आ-क्यों के पूरी कमाणी, जनपुरनुं वृष्ण जुडुं जानी ॥४८॥ यस वर वारी भाग हेराल, जेवा विकय साथे कांच्या प्राच । एव शु:म्ब कामे होय आप, अंके कर्यांके पूरण पाप ॥४०॥ मेनी पान करी पह विष, केली एम पुराणे प्रसिद्ध । कही निष्कुलानंदे ए दशी, सन्य मानस्यो सुढी ए सभी ॥५०त कवर्ष गरका

वृत्तिको-एड मरक्रभी निमर्था, बहु बरव रही बा'र । त्यारवणी दु'न्य पामची, ने कहं करी विकार ॥१॥ वहरूटक शास्त्रकी, नामे बरक विदान । जेह रापे पापी पर, कहूं भी सुगी दई कान । २०। पापी परित्रच पशुआदि, करे कामनवा प्रमा। एक पाप परलोक्सां, वामे ने दुःच अक्षा ॥ शा स्पर्धाता भी सुचनार, क्यों वर्धनी ते हा. प । मेनी प्रपर कृत अधना, करेडे अनिकाय कोच ॥४॥ सम् कहेनां الله المراعات المراعات المراعات المراء المراء المراعات المراعات المراعات المراعات المراعات المراعات المراعات ا \*

बम्मं, समझनो वर स्रोप । बज्रबंटके बिमयो, ज्यां सा'व व बरे कोच ॥१४॥ वज्र सर्विके कार्ट करिये, ज्ञानमनीयाँ साथ । नेव वचर बाली लाने, पांडे ला राष्ट्रीराड ॥६॥ इंतां इंड प्रमप्त हारे, लारे-व वाचे वन । चाननी पडीवर वियमित्रों, सन वानन्त्री पुढियं-ल ॥%। एक वाली भोगने, जिल्हाले हु:ल अपन । त्यांची पने वैत-कितिया, आई क्यों नेजूं परनंत BCB क्यां-आ मोदे एव स्वया जबरे, समञ्ज्ञको थया चरपत्रहे । यस प्रमेशपादाने सांगीरे, वर्ने अपर्वे वर जनागीरे ॥९॥ एका राजा ने राजाना मृत्यरे, यह बैन-क्लीए वामी कुनरे। जेवां विका कुन वद लाहि, केवा वन अधिक हेंद्र मोर्डर हरेला बांक बमाए जही बैनरजीरे, दु:चहाच के वे शू वरणीरे । बरक काईकव छे ए वर्दारे, अंबां बक्र मंतु रचा नदीरे ॥११॥ जियां नियांची नोत्रीने व्यापरे, मेने दुःचे करे द्वायदायरे। कर्ण कर्ण सन्तारेके आवरे, के के क्यांकी कर्ण आवां वाचरे ॥१२॥ वासे वीडा आज व विसरेरे, इत्य मुक्तेमुक्ते एव करेरे। एम राजा राजामा पदानिरे, पामे पापे पूष्ण दिन रानिरे ॥१३॥ एवी वैनरणी शहाबिकररे, जेमां दू:च अवि दूरपररे । मधुं न माय पारीरे सोय-रे, नवे लाजकार्यो सबुकोयरे ॥१ ॥ वजी कई कुंचनी रीनरे, जे-मा पूरम्य कांत्र जामकिनरे। वक्षवर्ष प्रत्यं पूरम्य वाचारि, एक प्रवाप-की कति कोकारे ॥१५॥ जंके अंवां कर्या होत नावरे, तेवो ले बाजी पाचे सनापरे। कर्ष कर्म कानानुं ले क बुरे, जेले जेर्च कर्ष होत लेक्ट्रे ॥१६॥ वळी जा मोके दातीया मधीरे, श्री वाचार विवय क्षुंचीरे । वर क्युपेडे समा लागीरे, सवक्स वर्नेत आजामीरे nº आ लेलो मही करलाक जायरे, वर्ष पुरोद सरकती सांबरे । पर भूत्र विका शीर लाखरे, लेगो अर्थी समूत्र दशकरे ॥१८॥ नेभा वरे विवे काय नेहरे। वर बुदर्जानिक क्या लेहरे, एव विकास कि कल म थापूर, पहले जबर जमपुर अध्यूरे ॥१९॥ नियां रंगीनायणु वहि रहेरे, शन प्रमेशका लड्ड कहरे । मरब हरड मटाइके मारी-रे, करज्या कर्म विकास कर मासिरे ॥२०॥ वर्जी वापीओं वाच श्रमा-करे, माले प्राणरीय बरच लाजेरे । प्राणरी रहा वर्षे वावीरे, सुन्नी बात राष्ट्र कान आवीर ॥११॥ छ। लोके आध्यमदिक के परे, जरा 

लार सरित्या ने सिपेरे। मारे कृपने करे सकाअरे, जेनी सन्यवाली पाची बाजरे ॥६२॥ लंड भरी जमपुर जापरे, वर्ड बाजरोप बरक मांपरे। तेनुं किंवर करी निकाणरे, रोमरोम वेथे मारी वाणरे ॥६३॥ वेदी बालंबे वापिश्री कानीते, वासे वीटा कही नथी जानी-रे। ओईओई बारीरमा शासरे, वडी दवं कृषण दंगालरे ॥१४॥ वसी आ लोके पुरुष मुँ वेरे, ब्रंभमप जगन आरवेरे । मारे पशु ए जगन मांगरे, ने मरी वैद्यालय अध्यह ॥१८॥ साने असहन गर्क ओररे, मार्गा बहायेडे ले बबोरेरे। बाडे काळीगाक ने कुकमारे, में काई हैं वर्ष बयाना अपनीरे ॥१६॥ बोरा मुख्यमार दृ:व्य मोहुरे, बांशी वि-थी अंबी कार पोहरे। तेनी भौगरे आवशे काररे, सह निश्चे जा-को निरुपाररे ॥१आ बसी बोमाना बाब धनावरे, वर्ष लामानका मांच आपरे। लालाभक्षतुं मृत्य भाषास्ते, कहं काईक ने निरपाररे ॥२८॥ आ हो के अने बर्णका पुनवरे, आवि वाची वह कामकारे। रोताना वर्णनी के नाररे, वासी नेह्यं करे व्यक्तिवाररे ॥१९॥ नेह क वे जमनून त्यांहरे, बाकंडे बीपंती बदी बांहरे । मारी मृदगर मन्त-क मांचर, कावी जीवन कीचे त्या पायरे ॥३०॥ आवे उकता अनि ओकारीरे, लोच विषयाचे मारीमारिरे । दिवे ब्रंड एम दिनरालरे, वाले बीडा बाजी बहुमानरे ॥११॥ बली अन्य बावे वाबी जनरे, बहे-हे ने मारमेपाइनरे। मारमेपाइननुं जे रू बरे, नेनी कर्ष जाप क हि मुल्दे ॥१०॥ जेड् पारे पडे एड बाईरे, नेर् बर्ग बक्कापा कई आ-हर। करे चोटी मुद्ध बळी आरगरे, बार्क गाम पूर वन जारगरे ॥३३॥ दिये झेर लुटे गाम माधरे, वना करते वाली अनुधरे। वना कुकर्मना करनावरे, होय राजा के राजाना काकररे ॥१४॥ में भरी अन अपुरियां जायरे, नेने जमना पून नोडी लायरे। लाग सामसी ने विद्या बळीरे, चुंधी व्यायधे पार्थान सळीरे । १६॥ बसामरीव्यी हे ले-नी दालारे, मोडे नव पाडे नेले राल्योरे। काल मुकाने महादृत्व मांधीर, तेणे माणी काम मानी नधीर ॥३६॥ शोप साधी पानना के नारारे, तेनी एने लाग्या महि मारारे। वटी पापीनी करी ल-पामके, माने अविची अरकमां नामरे ॥३ आ अविचीनुं दुःन हे अलेखेरे, तनो भोगवडी हाई रेखेरे । तेमां करकी वहि काइ मायरे,

वेशे पुष्प और जेवां वापरे ॥३८॥ जेह पूरे भूती सामय जनरे, बोले असल तेलां देलां चवरे । जापी दास ने बोले जमत्वरे, वर्षा पापमच अभी भाषारे 11% वसी एवं अविकीपी वालोरे, वापीने कोल पक-तो राजेरे । अविजी बासे पर्यन जानारे, एवा बरक मीन बमाओरे ॥४०॥ नेमा वंचा वन बीचुं कीशहे, एम माने किंग्रर करी रीक्ष-रे। कान ओजन वंची के एहरे, नेने सायंथी जालके नेहरे ॥४१॥ दिने नरंग वर्ति अस जेमरि, चर्चा एकरम बाजा नेमरि । बाय ल-ननल करका नवरे, नोच अरे बढ़ि धापी जबरे ॥४६॥ एव सम्बन् वा बोमवाररे, सहे दू:व्य अपरमचाररे । बजी विश्व विश्ववी जे पक-शीरे, करे बचादे पान कावजीरे ॥ तमा वसी विश्व विना वर्ण श-स्परे, करे अनदिने सुरायात्ररे । क्षत्री वेदयादि समादे समीहे, जे पियंके मोमबक्ति मनीरे ॥ उता. ने कार्य ए जीव निवासरे, क्रके नरक नामे अपायन्तरे । एवारे विश्वजादि सणे वर्णरे, जाय जनपूरी क्रमी मणेरे ॥४५३ नेनी जमपूर्य काती द्वाबीरे, बाव मोहरस नेने साबी है। नेव कुलं करे बायबस्य है, मुख व्यान्ते करी बाल जायहै ॥४६॥ बजी हैंगो अवम वर छोटोरे, यानेकती मानेले हें मोटोरे। जे कोड़ जन्म नव विचा वर्षी, मोटा जाभव वर्ष जावर्णहे ॥४आ नेती गणनी वहि कहं कांद्रेरे, एवा जिल्लानी बनमांद्रेरे । सहची जाने पानाने सरमरे। बीजाने तो जाणें वरमरे ।(४८॥ तेन करे ध-पमान अनिरे, ने करे शास्त्रवं गनिरे। देई मार्च ने पंचा थे पन-रे, बाव बार पत्नी नेमां हमरे १४९॥ एवा समयुरीयां से पुष्परे, वामें प्राणी प्रभूषी विमुखरे । साचा संतर्भ क्षील व मानीरे, क्यो असन सम अभिमानीरे ॥५०॥ वदी अभागी नरनी रीनरे, कोटा-मांथ के लगि प्रतीनरे । जेतुं जुड़े अन्यमां पेसेरे, नेयूं माणामां मन व वेसरे 15-2 । कही केम बाय यह सुलीरे, मानी बाल य माने मन-मुर्मारे । जे जीवजा परम मजेरीरे, काण्या क्षत्र मारित्या नेरीरे १६०॥ लेह कार्च वहें नहक मांचरे, में मन्त्र उपाय करा वर्ष कांचरे । शोध स-बाह्य हो। सबके सम्हेर, माने अजनवाहने बद्दारे ॥५३॥ बाम हेनजी के राज्ये हैयरे, बादेवारे केरलूंब के परे । कहे जिल्ह्यानंद केरलूरे,

T w t

प्रकार)—शब्दी असामी जीवने, सुक्रेज अवद्यां काम । अवस्थार्थ वाननां, क्यांची सुव्य ने विकास ॥१॥ डोडा मुंडा व्यापा वटा, वांचे करी चंत्रानका। कको केच नेनी किनने, कहा को रहे सका है। आ भुको लड्ड का लोकमा, करे वर मारी मधी पाप। कासी भैरव देव नामती, जेजे वर पशु मारी भाष मां। मांस जाई पशु मनुष्यन्ं, बाय वर नारी प्रमक्त । नेइ जाच जनपूरीए, वर्ष रक्षीमणजीवन अक्षा कार्यो वर कहा अवनरी, त्यां राक्षणवा कवा काय । जेव व्यापूर्व वांच पहर्तु, तेय तेर्नु पहत्र साथ शाम जेव ए बरवारीए, कर्नु इन् कृष्ण ने मान । मेमनुं तेम राक्षम करे, वर्ण गरंग करी मोडीपान त्रका कंतरं-चन्नी भार लोकमां अवरार्थ हे, करे पाव स करे बाराधी-है। जारे बारण जीववाने प्रतहे, जाणी जिला विकास सबहे ॥ आ एवा वय गामवा जीव जेहरे, आवे जीववा भाषारे नेहरे। नेने शुक्र के शुजनी कोवारि, तेले करीने बार्पी विश्वासीरे ॥८॥ वर्षी स्वी अस-पुर जापरे, लेने जनपून प्रीविने नापरे। जाने पूरण नाने अस नानी-है, जाने जुरता क्याच कार्याहे ॥ वह कृष्टि प्रवर कार्यरे, माहे संबारे रोतामां भवरे। भागो क्यांची कर्म भागां की बारे, क्यांची जेन लेने हु:व्य बीचांदे ॥१०॥ च्या कही बोकारेखे बेकरे, वही वर्ष वृक्षिए जर्मनरे। पत्नो जाधी आवे पनी झटरे, लोह चाचवार्या दश बटरे ॥११॥ नेतो नोडीनोडी तन जायरे, पापी शिक्षाय अस्य व जायरे। यस वह आने हु:मा भोगवंदे, भोमा कलकृष क्याक्षेदे ॥१२। माथ अन अध्यय गुल्लनोरे, बढि लबलेका त्यां सुल्बनोरे। बढी जा लोकं वर जे तीलारे, व्यासाय हे सर्पना सरिवारे ॥१३॥ जनते दिव बहु रू वरे, जेपी व होत कोईने गुन्दरे। वडी मरी जमपुर जातने, वने हरशह वरक मांचरे ॥ है ता। भूगो। भाई ए मरकवी बावरे, मूच मेनूवां वांच था मान्तर । अनि वरक्रमां कराव्यरे, प्राणुं पापी प्राणीतचा कासरे ॥१५॥ लाप लाप लाप एव करते, यस वपूर वहलको भरते । तीली वादी दिन्ते कु व्यक्ताईके, भवा जन् ए बरवानी महिते ॥१६॥ उस व्य-भावकाळात एट्ट, तल तळी जाय जन् नेटरे । पामे पीवा अनि नियां भार्तिरे, मारे करणां क्यां विकारित ॥१ आ वजी आ नोकर्मा जे अधार्मारे, दिये परने पूज्य दया लागीर। भाषा कोडला गुका

अंपारीरे, बीन भोग जेम्बं तम अधीरे ॥१८॥ वर दृश्यादि जीव क्रीरे, मुद्र आगय प्रमानां क्रवृद्धिरे। प्रधी न पापी परलोक पामीरे, वर्षे अवररोपने परासीरे ॥१९॥ कर सहित श्रीत प्रकारेते, होची एवं काले रोक्त वार्षरे । हैमां जीवं कर्या वाव जेमरे, दिये देव का नेमनो नेमरे ॥२०॥ मधी अधिक ओई करनारे, रहे हे प्रभूना परची बरनारे । नथी बरनो ए वर आधार्यारे, कृष्य नियंग्रे कृषयी जो भागीरे ॥ ११॥ वर्जी का लोके कवानी बरते. बांची बेठा के शासक वरते। जावे जांगले वानिधि सराते, जभ्यानन अस जल कराजरे ॥१२॥ नहीं योग क्रम ननकाबरे, करे करबी रशि करावने। वस जन अराय व आवरे, मार्ग कांच करीय मनादरे ॥२१॥ वर्णी स्वारे वाले भारी सुन्दरे, वह बर के बाब वर्षातनरे। नियां बज्र जेवी कांकवासारे, नीय कंद वर जे रिमामारे ॥ १४॥ मानी वसे मारी वांची वांची रे. कारी नियेश पारीती आंख्योरे। शंका कारी निये दिये मार रे. लेखे वाने हे अधिरवाररे ॥५६॥ नेके जिलाच पुत्र शारिरे, एवं पूर्व रहे केंद्र वीररे। एम दियंहे दंद अचाररे, सहे एका का कामानी ॥६६॥ सार्व सहरू महत्रम वार्यहरे, कर्या वाच राजी महि आसीरे । भाष्या शक्त लेना सामराहे, जेम जाने पन कही पराहे ॥ स्था बसी जा लोके करी अवर्षरे, यह काचे करी केवर्च नर्धरे । काचे वय वाचे अभिमानरे, जाने वहि कोच क्य समानरे ॥३८॥ धनमहे बोले वांको वेचरे, वर्षा दुर्वक ने दुःलदेकरे। यह नरचना अरुकशे प्रवेहें। रा के अब राजा भौरतकोरे ॥ १०॥ वेदन् पत्र जक्षता समावरे, बार्क् नेमांशी कोडी दानरे । अध्यामन निवनं कनोईरे, नेने अर्थे बादमा बाम कोरि ॥३०॥ मेक्ष्रं धन केवल करी वाचरे, ने व न्यावयुं म मार्थ आपरे। पढी पत नज नजी नंदरे, जाय अमगुरीमांदि न्हरे 118 देश लेके वार्ष्य शाविताच्य मार्थ हे, वार्थ द्राव्य वादी वह बहते है। अस्य न तरामिती पर्कार, एनं सन प्रतिनी पह संबंधरे ॥३५॥ चीती चाचरी सीए व्यक्तिते, जुना सरिको प्रतिविदेश सर्व बोचको नाम रेकारीरे, एक क्षीबे बीजी बाले कार्रीरे ॥३३। यस बहुविधि आपेंछे दु:ब्बरे, नेह व करेवाय माई मूचरे । शुक्री सर्वे पुराणे क्यो-परे, कवा गरक एम अक्रविधारे ॥६४॥ एड विजा बीजा के अवाररे, 

सोणमी ने इकारे इकारते। वापी जीवने पीटवा काजेरे, वर्मरापने शबया महारा हेरे ॥१८॥ जेने जेनी करीते कवानीरे, तेने भोगवाने तेची जाकीरे। संपक्षितीने दक्षिण हाररे, नरक अगणिन के अचाररे ॥३६॥ जेले जेवां क्यां होच पापरे, तेब अरक पह वाली आपरे। वर्षे अर्थे नरके अधर्मीर, शोध नर वा नारी विकर्मीरे ॥३ आ नपी बान मुठी एइ जाणांहे। सर्व साबी पुराने प्रमानांहे, तेने प्रवे करे के क्यायरे, दान पुरुष वल कहेबायरे ॥३८॥ एक पु:कने टाळवा काजरे, करे प्रयास रख ने राजरे। एक कारीको सम बरंधेरे, तेले कती नरकमां वर्षक्षेत्रे ॥ १०॥ लोटी विकास बेलावनारहे, के जा जनमार्ग अपारते। तेना मंगने नभी नजनारे, हाउ धई नभी हरि जानारे ॥४०॥ जान काने करी नरक छहरे, भागवंछे अनुकर्त तेररे। तेम वर्ष अनुक्रमे जीवरे, जाय व्यादि हो के सदैवरे ॥४१॥ केटलाक नरकेशी निसरेरे, केटलाक नरकमांच गरेरे। एम केक कर-र्मधी पहें छेते, केन व्यमादि लोकं पहेंग्रेरे ॥४२॥ नम करना वर्षे क-क्य बापरे, तंत्र करे बोराजीमां आपरे। एम रची रचांचे अन्याची-है, बमु भारता विका के प्रवाहों है ॥ अभी हिंद सभी बीजी वा-नरे, तो दर्ज माथेथी जनवातरे । अनु भारता विना एनी पारते, ब-थी आवली आणी निश्वाररे । ४४॥ माचा संसनी संग करीनरे, मजो आये करीने प्रिनेटें। जो कीए एको ए टाकवा रूमरे, रही श्रीहरित सतमुखरे ॥ इन्॥ ज ए हुन्य कथा क्रशिक्यारे, तना हरिन जनपर नर्धारे। मारे इरिजन सङ्घ पाओरे, धीर अमपुरीमांहि जाओर ॥उदा मारे मोटामोटा जो विचारीरे, पणा भक्त प्रभुजीवा जारीहे। राज भाज सुम ने सर्पतिरे, नजी भाज्या प्रमु प्राथपतिरे ।१४आ नेती ए दृश्य राखवा काजरे, अस्यो सर्व सुखनी समाजरे। सुक्ष मुकीने पू:कार्न सेवृदे, तेली म मने कोईन पव्य ॥४८॥ एक ल-मपुरीओं पू:म्ब जाणीरे, खरी प्रशीत पत्रमां आर्जार । तेव मेली दी-थों ए भारगरे, पत्नी सुलवारचे अया पगरे ॥ देश मादे सहते जोते मपादिश्चे, नभी आगता लग ने इंडिंग्डिं। यह निष्द्रतानद निर्धाः ररे, करवी सबुने एवी विचाररे ॥५०॥ कशबु ॥१५॥

पूर्ववानी—इवे सुन्तो सङ्ग शुभामति, कर्षु कथा शुद्र सार। वगड

प्रमु आहण विज्ञा, पांधे प्राणी वृत्त्व अपार (,१) तर्ह वृत्त्व ली के प्राहरणां, भोग दे जरक अवर्णिन ! पांधी पांत पोरादित्य, स्वां सक्ष्य कर्त्व तेरीत (१) पोरास्थी राजी बुल्ली, के लिन जर्मा जमा के प्राहरणां राजी बुल्ली, के लिन जर्मा जमा । जेने क्षां यह पृत्व के , ले न्यी सुली लगर । केल वाक्षा भोजा करिये, केल गुलवन ने गमर (१)। केल रंक राजा करिये, केल श्रीमन ने जाहुकार । जेने साथे जन्म मरल के, लेनों लों जला जालिये, केल मनी ने ग्रामी जिल करिये, कोण लागी जिलों केल जालिये, केल मनी ने ग्रामी हिंदी केल करिये, कोल लागी जिलों केल जालिये, केल मनी ने ग्रामी हिंदी केल करिये, कोल लागी हिंदी केल करिये क 

लाम परे देह, त्यारे अंडजभी मुकाय एक। समियार इक यह कथा, भवी एकविका लाम धया। १००॥ एक अंबज माज्यमा जाली, सम दान सब परमाणी। पश्चिममा वरे जवनार, कहं मानको ने निर्वार शर्दा कर्रा कांच्य वारेना के दृष्य, कामे प्रभूषी है के विमुक्त । धाली जान नानप्रमाने, नामे स्वायरमा देश आने ॥२२॥ आह ना ह-वां परे वारीर, केक कन्यजारी रहे ज्यिर । बजे सके कुठारे कवाय, मिच्या विजा समुखां सुकाय ॥२३॥ कीन वच्या सुन्य दुःन्य सहे, आचे जाय नहि स्पर रहे। एवं वेनी तुष्छ गिरि तृण, वाच अग्निवी श्राचित् श्रदण ॥९४॥ एव एकवीचा लाण चार, चामे विक्रियां जन-तार । एम तेनां जन्म पूरा भाष, सारे स्वापर देवथी मुकाय ॥१८॥ वणी लेहज व्याच्ये पारीर, वरे अमाशी जीव अविर । कर्या कर्म वर्ष तेने बका, वरे तक कृति कीर अवदा ॥२६॥ वांचव लांकव स श्ववा सचा, विगावी ईनावने कंववा । को लो सदछर बनांबादनियां, एक्यो बाक्यो पुरादि समिन्यि ॥१आ एइ देहमाहि सहि सुन्य, वास धीवा अञ्चल विमुन्त, । मुकापणी श्रूष्ट करके जाय, एती जीवनां हे बरक्तमांच ॥१८॥ एम मधनां सुन्त बु:न्य जिला, बीने जन्म लान एक बीका। त्यां सुधी रहे दूर्णन अपार, वधी से दूसधी कारे वा'र ॥२९॥ वसी जरायुज मान्यमा जेव, जीव परंछे सुजुवी देव। विजयमें क्षे वंपाणो, पर पशुना जन्मने जाणो ॥६०॥ शुन्त वहि वे सदर पणी, बच्चो न आय मुख्यी नेत्रणो । यह परवदा ने परदाय, वर्ड गर्क वांपी वाले माथ ॥११॥ ओडे छोडे वाले लेख बले, सगावे लगावे वाय सपने । जान जाना रीवाने तो जाय, नहिनो बांध्यो बांध्यो ते सुन काय ॥१६॥ पर भगधी भागनी करे, पाली भ विवे जारी वस बरे । के का भी ने रक्षा है। वंचाई, अहो निया की चनिक आई शक्ता एम नहनी मोर्टा पद्म माणी, सर्व पु:च्य सुन्य नियो जाणी। सनर नाम्य पत्र तब कारे, पूर कहानां अन्यभी त्यारे ॥६४॥ एक मृत्य अराग्जनां कथां, कहं की जो ज करेवाओं रखां। जारे जाक्यमां मुक्त कहं जबी, के के जीन आख्यों हैं जोगनी ॥१५॥ नहीं कर्म अनुमारे एए, नामे भी द साम्य अनुष्यमा देह । मेक्स पण आह प्रकार, सुनो सह दहुँ निरवार ॥१६॥ वर्ष मोळ सिसकोटां करिये, रींव ने जनमाणमां

44

क्षिये । एकल्ट्रेमां प्रमुखां वर्ष्, अध्य भन्ने अनुस्थान् ॥३७० नेमां रण हे यह बकार, सर्व गरना वहि अचनार । जान बीन बनार बनार, पाराधि काजिया बद्यीमर ॥३८॥ बहा ब्लेब्य मीचना जे हेड, अनि पापसय नव नेहा। एड स्रोपन्दे आहर एक नव, नेले ब भाष मोक्षत्रं जनन ॥३० । कवि आदि कर्या सन सान, नेमानी नहि मोक्षारी बात । अष्टमुं देव सन्दर्भनं का वे, तेष्ट क्या को कार्यान आवे ॥५०॥ व सरे अर्थ व धरव कल्याक, बाधी बोराकी ने बार बाज । भाषा जाने जो क्लाब नव, बजे कुलंग नो मुख्यादव १७७१॥ देश कास किया क्यान जेव, काम्ब दीक्षा मंत्र लग लेव । एव अवन्तां होप जो अब, आपे आ लोक परलोक कब ॥३३॥ होप अवस्री ती सहे काम, बाजी पांचे ऑहरिब्रूं बाव । एह अवसा ने जनमग, एह अवका ने कहिये कुलंग ॥४३। सन्तरमे करी सरे काल, कुलग करी बरक समाज । जेने र न्य पर्या बाहो अंगे, इसका र न्या नपक हमने ॥४४॥ जेते इन्य दयां सर्वे दशी, तेनो सी वायके हमगशी। कुमम के कारण कुणनुं, सनसंग के कारण सुणनुं ॥४%। प्रमंगनी सन सह साथी, सर्वे हरिने जातो सुभागी । बुसगनी परधी माँ कोई, जनपुरीनां कुन्छने अहें। ॥४६३ कुमगना करथी नो वर्गा, ना वरं अवसर् ने बरपू । जन्म अरणनी दृःल के जह, तेना घटा सन जारवां में तह ॥४७॥ नेह सर्वन्य मीए संबर, वेन्यु आप वहि हे विकट । में समायां कीने के प्राचीने, ननी धनमां रहे के आणीन प्रदेश बहेबा जेथी करी एड समा, गर्म नवां द वा आवी इसी। नेनी प्राफेडी बोनाओं जीव, को जाकड़े बरव हेन भाष ॥४९॥ वह समा छ अनि आकरो, अक्यरे व जाय के महामही। एवं कृष्ण दावश उपाय, दरवो समझी सहने सदाप ॥५०॥ नती हुमन सम्मन दर्शन, ना करी अबकेश म करिये । कहिये बारेबारे श्री केरायुं, कार्यु सहने योगार्नु आयुं ॥६१॥ सष्ट अने आ दशा सांबन्ती, दरवा सरमग स-वैने बन्ही। कहे निरयुक्तानंत्र निरपार, यहां सर्व पाननु जा सार ।(६६)। क्याचे ।(१६)।

प्रांतिक भागे वर्णनी, बचा बच जीवनां जेर्। तेर् सानवनां सवने, सहनां ने क्वे देव ॥१॥ जन्म आगुष्यमां एक

थी, पीटा पामेले माणी अपार । एइ दू व्यक्ती आगळे, सुन्य स्थाना जेवी समार 🖂 । मनुष्य देवने मुक्तनी, मुन्न नरन छे ए नैयार । नेजो च्याच अजातिया, कार करो नहि वर कार 1.10 माथे वगा-र्रा भोतनां, बाज्छ पर्यापकेषके रीत पन्तरे, पेनी मुबाने प्रसिन द्व । ता काम अवारण वे गर्या, बृहपण वससमु जाय । आज का-त्यमां उठी चालपुं, सह विकासे भनमांच ॥६॥ यांधी अकामक चालनां, सार् वस्तु आवश साथ। वणसमझये विपलिनी, कीई भरी रचाछी बाप (50) साथा समामम कोपीने, हाओ माथेपी ए बा-स । बरसे मने वहि मटे, यरण वे न भेवास ॥३८ में कर्यु जा जी-वने, कुमंग के पू:मक्तव । कुमग किये जेएने, कहें तहने हवे सा-इत ॥८॥ चंच्यां—बाटो दुसंग ने जिजदेश, जेमां जीवे बांख्यों हे सनेह । एक अर्थ करनां अवर्थ, जीव लुवेछे जनम व्यर्थ ॥९॥ क्रम कपर दगा ने पान, भाष देहमाद सर्वे पान । एक पोरी हिंमा क-री इसे, आप नारचे पाप म गर्ने ।११०॥ एवं पाप मधी जनमांच, जे कोई करीरमाह व भाषा क्यारे विवस्तान सामुं वेला, खारे हो-वसात्रने व देखे ॥११॥ परिवय परचन लेवुं, तनसुख साद करे ए-हुं। देवमाथे सनेह के जेने, यहि वर्ष नियम साज लेने ॥१२॥ देह-अभियानी वर वारी, धाय एपी अनरच आरी। जेने देवसांहि स-ल मान्यां, करे पाप के मगर छातां ॥१३॥ पानाना पिंडना सम्बन् साद, करे पात्र इजारे इजार। अंगे करी असपुर जवाय, लेनो व करे विचार कांच शर्या। व लावा सरित्तुं तेह लाव, व वीवा स-रिखुं वीये पाय। तेमा देहना सुखने अर्थ, पाय जिंत घणा ने अन्धे ॥१५॥ जे अवर्षे जमपुरी जराय, बारे मोटो कुसग ए कहेबाय । नेइसाद लजवो भनेह, जाणी कुसंगहत जा वेड् ॥१६॥ देड् मान्ये माने माई बाप, देह मान्ये माने पर आप। देह मान्ये माने अति-भी चान, देह मा-पे माने मान जान ॥१ आ देह मान्य माने भृत् मेरी, वेड् मान्ये माने वा'लां वेरी । देड् मान्ये माने माद लाद, दे-इ मान्ये ममन इजाह ॥१८॥ इंइसाइ शुनाशुन वाय, तेनी दाव देले वहि कांच। अंघपंच वह कर बाप, तेतरे देहमाद सबू जाप ॥१९॥ सर्वे नरके जावानी सामान, कर जैने देह सनिमान । मारे

भोटी कुर्मण आ देह, लड्ड नजनो जीने मनेह ॥२०॥ तह विना कुमन हे अन्य, कह नयन भाभको जन। कुमन ने कथ्याननी केर, अनुस बाबरे प्रभूदी कर ॥ भाग वृति के वृतिका अवनार, पाणी सके प्रमारी ऐवार । श्रीकृष्ण जे गोलोक्षपति, जनसूच दापक सुर्गत ॥२२॥ परे जुनोजुनमां अनुनार, केन्द्र जीवनो करवा ४ द्वार । वस्त वादिक बयुने चारी, रहे जुआर हरवा बुरारी गन्देग वह दरक वर-वार्त दान, हरे केय जीवन अज्ञान। तेने तालीने अञ्चानी जन, करे अन्यदंशनं अजन । भरा। कान्द्री भेरव जन ने बीर, वापी मान वा-बनिया पीर । नेने बळिडान देवा बहुपर, सारी जीवने करे असर प्रतिभा एका वाधिनी प्रतीति आहे, लोचकल जसप्रीमी आहे। अंके धन्ष्यदेव आपी आपी, लेनो पाच माने नवि पापी ॥१६॥ कोईक कर्व करी क्यान, माने मोक्षे जानानुं हेदान। कर्वे करी माने वाक-है, एम कर्मना गुम गायहें ॥२३॥ परमंभारती बेटा वादी काल, बा-मिन एवा बर के पंडाधा। एवी संग ने कुमंत कहेवाय, लेके सर्व जनपुर जनाय ॥२८। कोइक अद्भेषती ओक्य हा, करे कुक्स बेठाये वहैं। मेली बारण श्रीकृष्णतणुं, करे सन जेम बादे आवर्षु ॥२९। एक प्रथा कही समाव लोक, कह कर्म वर्म सर्व कीय। कर पाप प प्यथकी बाबे, लेमां निर्दोषकतुं बेलावे ॥३०॥ एका वर जे होत आ-भागी, आश्री क्रमंग मुक्तवा त्यागी। एवी संग व देवी सागवा, व हे अभवतीया आगवा ॥३१॥ कलियांच हे कुसंग धर्च, सच्छे अव आचरण नेहनमुं । मन्य शाना मर्पादने मेली, बनमने बरतेसे केली ॥१२॥ पापी तजी निज कुळपर्म, विषयमाद करेंग्रे विकर्म । पटी पेट भरका परणंती, करे अधर्ष पर्मने छंती ॥ ३॥ भा आजानी नह चंचाय, करे कराचे जानिविद्यक्ष । कोईक निज माना सुना संग, दरे अगिनी साथे हराभग ॥ इसा एका कंच दक्षिमां हे वह, नेमां मानी वेठा मोध्र सह। मेलो सत्वकाना जुड़ी बाको, त्यारे एको छ-त्यान के वाका शर्थन बाटे एवी लंग ने कुर्मन, नेजी व देवी ला-गया रंग । दोन वर्ष जनमना बाद, मजे दको मंत्र ने बनाव ॥६६॥ मने बाय नाम विव जार, रच इसमयकी सी माद। एथी एड जनम जाय जायप, कुमगधी कोटिकोरि शायप ॥१ आ आहे कुमंत

कर्ने वसरका श्रीक

[ क्यनु १८

केने न करतो, परपक्ष काणी परहरतो । एवा कुसंगने संगे रखा, नेनो सन्तर्भाराक्षीयाँ गया। ३८त विषविष सच्या अमर्थन, वटी बरवो भी लाज्यमां वंद। वर्षा कीन में वो नव नाय, नेनी कुसंसवे अनाय ॥३९॥ करको अरको चारे ए ज्यावत, बरको स्यावत जंगस तम आवय । महाकृष्यमंत्री कोठ्य मोटी, जेले अन्य लेका कोटिकोटी ॥४०॥ तहसाद ने ओयुं नपासी, वधी आगळ खेल ने हांसी। त्यां-तो सरे सामाधी जो काल, विकेश क्यरीनी लाज । वर्ग वेद-बासक इति ना दाम, नेनी राज्यों नहि विश्वाम । एने समें लोट्य वर मापे, साथा सन होय निया जाये ॥४२। पशुपेट व रहेचें के वाई, सन्त असन्त ओजनवं भाई। एवं कडी कुसंगती रीत, तेवां केरि व बरधी प्रीत ॥४३। साल नाम अधिनी से आई, सन दारा कुछा सर्गा सर्थ । इति भजनां नाचे जे भंग, तेनो कविये सर्वे क्रमंग ॥४४॥ देव गुरु अध्याद वर्षण, असदाना मित्र सुन्दरेण। एवं देवि भक्तनाँ को बारे, समझी बादु तकी देवा लारे ॥८०॥ सनियाँ वंधि-यां बरवची, बेठा अभक्त भागवी रची। बीरा कवीरा प्रमुता होती, वह आचे वदा बीजा बोटी। ४६॥ मेजो राखको वहि किलास, जेन थी रसी जावं एरिदास । कुर्जापनि प्रधान करेन, लेवन होच हु-समें भरेन ॥४आ दई कारों ने दवाबी राजे, वृदि अजनां विवन माने। तेनो देश गाम नजी देयूं, जाणी जासुर सनमां एवं । ४८३ जेम नेस बरको निभाव, वन एनी बरवी अधाव। एवी कुलेग क्यांकशी कर्त, के निर्दे कर्ना ने पार म लई ॥४९॥ एकां क्यां क्र-सम हेकाणो, रक्षां प्रणां ने भोषां क्रमणां । अमपूरे ने आबा अ-मान, यह सह रहे हे सावधान ॥५०॥ माटे सचेन रहतुं सदाय, वहि-नो पो'पाट जमपूरी भाष । इस्मिनिस्स प्रदावे भग, कहे निष्कु-लानेंद्र ए कुर्मग (१५१)। करूप (११ आ

प्रशेषि—सद्मित सह सांगली, में कर्य दुर्मगर्न कर । भ्रमण वर्षी एमां अण्, से नेमल ने नक्ष्य ॥१॥ विष व्यास वेशिषती, वर्षो सुन्य वर्षो कुण । अनेक जुम बील्या वीनको, नोय नेमां तेना ने गुण ॥२॥ नेम कृतपनी वर्षी, प्राची वासे बु:न्य अपार । नेतुं आश्रय महि कहां, निभय जाको विर्धार ॥६॥ वसी कहां से सन-

समाधी, मटी आपके महारूचा वर्ष कर हुने नेहने, जेथी जीवने भाषके सुम्य ॥४॥ चांकर्ष-सुका सर्व इव वर बार, वर्ष सन्संगत् क्षत्र सार । अनि महिमा जेना छे अचार, कहेनां कोई पाने महि वार ॥५॥ क्षेत्र महेवा ने सरावती, गुल गाय जेवा शकवती। बळी भीवृति भीनुमें करी, साथ सनवा जका भीवति तथा बोधी जीनां संतनी समान, नधी जिल्हें बन्तु जिल्हान। बन्दनर कामधेनु जे-ह, शहर पारसचिमायिक तेह ॥ अ। यह निधि मिक्रि सर्वे स्थी. एड अध्दे समृद्धि सम्ब्री। गोधी जीता ए सर्वेत्रं सार, सुन्य अन्य ने दु:ण अपार ॥८॥ नेती मनसय लीन वार्च, जेवा जहा विग-व नित्य नावे। एवा संत सहता सुलकारी, अंता हदामाँ त्या तुरारि ॥९॥ शु:व गुजना सदय अंत, तेनो महिमा मोटो के अन्त-ल । परमारथी पुष्य पवित्र, नहि कापुना सकता निज ॥१०॥ कति-वे दिखना ब्याङ्क एते, श्रमा करवानी व्यक्ताव प्रेते । सर्वे जीवता के बिलकारी, क्रीन क्ष्म सहे हु: मा आरी १ देश केवर गुणका अ-बबुज म गांते, शांत ज्ञानवादा है वाते। मधी पार जेन जनमा-य, बाकी बलेंक्के बचा रिकाय ॥१२॥ बधी केने प्रवर अने बेर, आने रहित अने अति मेंद्र। प्रत्यर नहि सहुतुं सहेर्यू, परे बीजान तेय बाब बेचुं ॥१३॥ सन्वयम भीने माने ध्यारी, एवी बाबी बोलेके बि-बारी। काम कोच हो व मोइ जीति, बची कोच बर्पर वीति ॥१४॥ वसी देहमाहि भइंदुद्धि, पदारच में देहना समंगी। नेवांपी अहंक-बननी खान, अवर्षमां दह अनुगत ॥१५॥ वृत्रे रहिन इवाना भंदार, सबा पवित्र वितर ने कर । बनी वेद इहिया द्वानार, सरम मनाव अधि बदार ॥१६। अधिको इहिया सर्वे आणा, बस्रो बबाद रहित बसायो । सुन्यः रूप्त मान अपनान, रूपं प्रोपः लाज बजी प्रयास ॥१ आ लेकं करी पराजय पामी, धीरजनामां स जाने भामी। कर्म इद्वियानं अवक्यण, रामपुढं ज्ञान। प्रियोक्ष्ये ॥१८॥ निजयमें अनुमारे आये, नेणे करीने यह निज्ञा है। ने विना अन्यक बदारक, म सबसे जाणी अभग्य ॥१९॥ बद्धी बीजाने क्षेत्र बरका, कति चतुर अञ्चान हरवा । याने पाताने आवमारूप, नेयां निष्ठा है अधिको अञ्च ॥ १०॥ धनायोग्य अधिकी एपर, यह प्रवसार बहुन्त । 

कोष प्रकारनो भय नथी, बधी सरमा कोईना सरथी ॥२१॥ अवेश्वा बदारच कोयनी, अधी हच्चा सुम्बद सांगनी। गुनादिक व्यसने रहिन न, सदा वर्तके अदावित ॥ १८॥ अति १ दार व्यक्तवे युक्त, नव करवा निष्ठा एका मुक्त। व करे कोई प्रकारने वाप, त्यामे वान प्रा-क्ष्यकथा जान ॥६३ । क्य विकथनी आमन्ति रसी, आमिक सनि-वाका के बळी। सन्यासन्यना विवेद पुनंद, सन्य सांसादि केरि व भुंक्ते ॥ १४॥ सनदाम्य मुंचवा व्यवस्य, इर तन पार्या जेने सन्। चाडी चोरी के दिये व करे, इंडचणुं परं चरहरे ॥२५॥ छाती बाल कोईनी जो क्षेप, बीजा भागक म कहे सोय। जीनी जिंहा ने जी-लोरे आहार, एका संन सदाय प्रदार । ६६॥ जेवूं मन्द्र प्रदारच प्रपारे, मदा सनीच रहेके त्यारे । निजयमंदिचे पुढि हेरी, हिमारहिन पू-क्ति लेक्करी ॥२आ पदारपत्री मृच्या ने टाटी, बाग पोनाने सुन्य कृष्ण बळी। तेम पारकुं सुन्य कृष्ण आणे, वीमाने थाय ने परमाणे ॥९८॥ सनजान्त्र पाडे जेनी नाज, ने न बाप आवे अनि नाज। म करे पीने पीनानां बनाम, म करे बीजानी निंदा सुजाम ॥ १९॥ मन्यवास्त्रं कथा निरकाम, ब्रह्मवर्यवनधारी नाम। अम् प्रकारे पा-के छे एड, जधारध जाणी नियों नेष ८३०॥ यह नियम जुल्ह के प जन, जेंगे जीत्वाधे सर्वे भागन। प्राणवायुने जीत्वीके लेंगे, दीन भीइरि बांच के लेके ॥११॥ भीइरिनां जे चरणसमळ, नेनो इह भा-शय अवसः। श्रीकृष्यानी अस्तिवरायम, सदा रहेसे द्विमारयम ॥१२॥ करे कृष्ण अर्थे किया सर्व, तजी मान मोटाई वे गर्व । भी-कृष्णअवनारचरित्र, हरचं सुणे अवणे पवित्र ॥११॥ अवनारचरित्रनुं गान, करे कीर्यनने ने निवान । कृष्णमूर्तिनुं करेछे स्थान, ने पराय-ण के जेतुं तान ॥३४॥ इत्मिक्ति विना कोई काळ, नधी कोता ए-वा से दयान । जिला मारायणने भजेते, अन्य वासना सर्वे तलेसे ॥३५॥ एकां लक्षणे युक्त जे संत, सतपुरव के बाय सहत। एइजा-दि श्राम गुण जेह, होप माचा सनमाहि नेह ॥३६॥ एवा सदगुणे जे सरम, मेरे कविये साचा संगजन। एवा माचा संग्र होए निया, होष मगर भीहरि जियां ॥३आ हरि होष नियां हरिजन, सदसंग-ती रीत पावन। कांनी मने इसि भरी तन, कांनी सने तना सनवा والمناسل المناسل والمناسل والمناسل

Web

महे, क्लिंड बामन परश्राक्षेत्र ॥६॥ राम कृष्ण पृष्ट ने क्लिकरे, एड अर्थि के तब अलाबिरे। मन्त्र बच्छ बारियां विचयारे, बाराह क्षित वनमां क्यारे ॥ आ बामन काञ्चराम कहं वर्णीरे, सम कृष्णनी अलीकिक वर्णारे। पुत्र हात्र बोधना दानाररे, कन्दी पुनिवास भारते । ८॥ किया एकण्कती व शक्षते, एम समग्रे प्राच सचकेते । वन करतुं श्रीकोनुं कन्यानरे, वर्ष वाची वादी नेवा प्रानदे। है। जुनो-जुन प्रस्ट नार्यारे, करे अध्यमें धर्म प्रधारीरे । द्वित राज बसी बेच पार्शित, जेने वर्ष वर्ग वर्ण पार्शित । १०॥ वर्षा आपी रहेके अपसेरे, नेद करावे सीने कुछ मरे। संन अन्य नवसी वे त्यागीरे, वीदे रंक कविने अनागीरे ॥११॥ सरवान्त अवने व सुनेरे, नोटां वात्रा वांच वेत्री लुगेरे। जेलां बच बांस व्यक्तिवाररे, जानिविराख ने अजानाररे ॥१५॥ एवा शामा सहते सुनावरे, वादीने नेती वतीन लावेरे । वही सनने गमे ने वानेरे, विने नदि अञ्चल जावानेरे ॥१३॥ वांची प्रशासनुष सरजादरे, नेने आले कुकर्ति क्रम्यादरे । नेने देखी व कार्क हमान्तरे, आदे गर्व अर्थे नगरान्तरे 🕑 या पर्मरका करवाने ाजरे, जुगोजुग प्रगरे घरत्याजरे । नेमां दरिजनना कृष्य दृरेरे. जेवें घरे नेव नज घोरे ५१५॥ मामवर्ष ए सर्वतं एकरे, बद्ध विचारी करी विवेकत् । जेव बाधू माधूनाये अनिरे, नेव कृषण कन्याणमूर-निरे ॥१६। यस एथी व शोध अकालरे, से ए कन्यालवृद्धि बहारा-अरे। ओने कामनाने बजी मोपीरे, कुन नेद मर्पादाने मोपीरे ॥१ आ भव भक्तिया कंस भूपासरे, कोप नावे भागा विद्यालयारे । संबं बाबुद्व के देवनीरे, र्ष्ट्रवाचे करी भारी वर्गारे ॥१८॥ समामाने वादव प्रमाणरे, दामानांदे पद्भव सुजाणरे। एइअस्टि सुची चया बहुरे, बगर बभुने स्वरकी सहुरे ॥ १९॥ मानो न करे वह एथांकरे. प्रभु सक्षये और कम्याभरे। बळी अफ्रिन पर्यु आ अबरे, नेने जिनाने ए अगवनरे ॥२०॥ वह वयांत्र लेवा औरवर्णारे, वया विशा भी म होत अरुशिरे । वह मर्स में कथो अनुपरे, सन्य एम के वनुं सक्यरे ॥६१॥ कुवासियु के कृष्य मुरारीरे, नेना अवनारना अवनारीरे । जे के जनगर कथा में क्योरे, तेना सर्वे श्रीकृष्ण मांपरीरे ॥१२॥ सर्वेत्रं के श्रीकृष्ण कारणरे, अवभवदारी अन्तरारणरे। बाद इच्छाए

बगरे बहाराजरे, निजजनती हकाने काजरे 1,530 स्वारे कार्यु होय जेर्च कायरे, तम तेर्च परे परद्याधरे । पण सहन् कारण कृष्णरे, लेतुं दर्भन सर्वते एकारे ॥१४॥ तेनो स्वयम् आंवरिदेवरे, लेनो जाएगोड़े विरने भेवरे। जे कोई यम वाणीने अगमरे, तेनो प्रपाड़े सबूते सुनगरे ॥६६॥ बरवा कोटि जीवर्या कन्यांगरे, बाज आवे जगह बमागरे । देवा दर्ज स्वर्ण व्यवस्थानरे, रक्या अवस्थ अग-बाबरे ॥२६॥ नेने जापी बाबे जन जेवरे, जबदरकी मुखाय नेहरे। हके सर्वे लंकर खारेरे, बसे लंग के श्रीहरि श्यारेरे ॥१३॥ सुम्बारी बाजावारी होवरे, साचा संग के श्रीकृष्ण सोवरे। जेने कई हे श्रीकृष्ण अमेरे, लेज श्रीहरि समझो नमेरे ॥१८॥ एवं सर्वे सम्बन्धे हे पामरे, सम्बद्धायी श्रीयनस्थायरे। जन इच्छे सुन्ती बाबा अंदरे, अच्छ एक हेकार्च के एवरे ११९॥ तेश दिना नवी सुन्य वाचारे, जन्म महन जबाद:व्य जावारे । कांनी ने बस का नेवा अवरे, सुनी पाया बाय बाबो अबरे ॥) •॥ वची एक विजा बीजो ब्लायरे, सन्व बानी लेक्यो मनमायहे। जेह समे जेनू होय राजदे, तह मने सरे तेवी काजदे ॥३१॥ भारे भा समे एवं भगवनरे, निश्चे मानी लेज्यों सह जनरे। ते बढ़पा है जेने बहाराजरे, तेमां सर्पा है सर्वे काजरे ॥३६॥ वधी रहां तेने बांच बरवंदे, जन्म भरण अववेदा बरवंदे । हेल्लो अन्त हे भार काणी संप्रयोदे, एव आशी भागंदमां दे अयोदे ॥३१॥ अवादे आपदो भा नव अनरे, नेनुं सह जागोछो काननरे । विश्वय आवेशे ने बचा जापरे, जिज्ञसंग अच्या लई साधरे ॥३४॥ अन्य रच बहेण्य विमानरे, राज नगर गाहियो निदायरे। आवे एक वे क्रम दिव आगरि, हुई दर्शनने कुल आगरि 1.5%। लेने अन्ती कई एम नाचरे, नुने तेरी आहां भग भाषरे। पार्य मानदो कही सहनेरे, कहेरवे आखाडे तंत्रवा मनेरे १६६॥ करण्ये बायबी विश्वास तानीरे, तेत्री जाड़ों ने सबे असे आसीरे। बति पत्रे तेमां केर कांग्रे, विजय है उसे ल अनमारि ॥६ आ एव आगेथी करे अविनाकरे, नेचे वन सगन रहे हामरे । तह समे नेहवाने आबरे, मगे मात्र अमीदिक लावेरे ॥३८३ सर्वे सुन्वमय ने समाजरे, यम आये नेवश अवाराजरे । वजी नि ते विवा बीजी के रीनरे, सह मांजकी लेक्यों वर्ष विनरे ॥३९॥

ed Printerior for the land of the forther to the forther to be an interior for the forther than the first of the forther

अयारे त्यामयुं होच सर्वनरे, त्यारे मो रे जलाय प्रवदेरे । वटी बीजा जनने एक कहेरे, मारो हेंह हवे अहि रहेरे । इन्हें आजवादी वांच इका इतते, विका जिस्सा नागीका ननते। जेने साम्युं होत सारे लंबरे, नेने लंदी आउं हूं बसगेरे ॥४१॥ करपू होय जो सामीन केनरे, हरियासमा यो बाहु लेनरे। जे याममां सनाय हे सुनरे, क्यी कोई वानमुं जिलां पृथ्वते ॥४६॥ ने बाम सीमोक के बायरे, जेने भोडा मोटा क्षत्रे चा'यरे। नेइ अध्ये करी रही बासरे, जियां काम माणानी वृद्धि पासरे ।। हो। एवी हियम ओम हरिजनरे, एव कड़ीने स्थाने छे ननरे। ल्डी निम सनसम सांगरे, नेष्ट विना बीते क्यी क्यांपरे । इत। एक बोटा क्यापने सानारे, नथी ए ब्याप काई छानोरे। अर्थे यामनना तंत्र पार्मीरे, ने आय्याचे सहजार्वद्वार्यादे ॥४०॥ आणी काको देसार्थे नवस्त्रे, असि अनुपन त अवसरे। सर्वे जीवनका खुन्य का जेरे, वही रीम चनवी महारा जेरे ॥४६॥ भूजी हरिक्रम है'-श्या मनगरे, मने मानी लेश्यो पत्रपत्यरे। कथा जसपुरीनां ले द लहे, नेना भोगपनाम विमुख्ये ॥४५: जेले वत्तर प्रभुने त्यागीहे, : बाजी काने बळाला अजातीरे। नेको प्रधानीका जाहारे, निया सनगमना मार लाडोरे ॥ बटम करी विकासी मार्च वानरे, सुन्त पृथ्य कथा माक्षानरे । मधी क'वा केलं काई राक्ष्यरे, अली रीत प् लरने भारपुरे। हो। अर्थु कसूर्यु महारा लेखुकर, लेखुकरी समझाध्ये सहतेरे। यह छोटो धयो उपकारते, जुली मरतो सनु वर बारते हिन्छ। वाशी की जा करवां ने बावरे, सूची आ ग्रंथ अवने आपरे। बारे रह थएं जाको जबरे, सुकी सह बाझ बाबबरे हिर्म कर्य सर्वे स्ववीसम्बद्दे तेषु दरिण प्रकारम् धुनेरे। भा त जमदद धव गाउँ।हे, सुकी जमदद्वी मुक्तकोरे॥५२। तुंदा मा नकी विमन दावरे, अस धन बनार्शि सन्मानरे । नेनी सुन्ती बाडी माबाररे, बजी सहसे तरकी लगारक १६६३ । करी लुख पू व्यक्ती से विकित, अधी बहाराओं आहार की दिर। अयु से मी सनि समाधार, जनार्थ में। सराप्रमु जानारे ॥५५५ ह आं में अधि है कहा होय काहरे, लेको नाव्यं होय जावया आहेरे । कहे निरुक्तानव विकासीर, सामुक्तन लेक्या हैय प्रारीते तकता करने प्रदेशी

१० वर्ग-भूजनी शिले जीवने, कच्चां जसप्रीतां दृष्ण । इतिजन

जगव रहेल्यो, क्यो योगवदी विमुख तथा प्रमु विमुख प्राणियो, जो करे कोटि प्रयाप । गुल्म माथेथी मटे महि, जबर जमपुर जाप ॥२॥ भूजी दिवा भगवानती, अने जीपी कीती कारव । देवां केटलूं चापे चानवा, तेरही बोठ्य नहि चाठ्य ॥३॥ समर्थना वारच दिना, कुताळ क्यांबरी होता। आयवळ जब प्रवरं, जल लिए नरवी सीच BBN जे जन्म मन्त्र जीवने, गुण्यनी अर्थी वृतिवास । के ही पेठे अर्थ क्रवित, १९वे सहज्ञ सभाव ।.५॥ जनम सरक उपांटती, व्यांतती अमनुं और । जब अभे नियां आकार्यों, कवां दृष्य में केरामी'र ॥६॥ जेने माध्ये मरचू, लोच म परवूं निरधार । नेरक मृत्य शह-सनि, सनि गाफन वहिये गमार ॥ आ हां चपुं जियाणी वये, हां थयं थयो चनुर। वाचा समझुए शूंचय्, जो दरिव राज्या दर BAII असु विस्था कर बराकसे, जो होच जम जानिम । अनेक ग्रामे आबारे, यन जमपूरे जाया रीन ॥९॥ जम आवे जेने नेवका, कहें नेवा तमनी रीत । अवेन घरे असाय्यमां, तेने प्रमु माथे वहि पीत ॥१०॥ पापा - जेने बाबे केवा जमरावारे, नेना ओळवावे हे एपा-गरे। जब जोरे कार पना प्राचित्रे, सर्व बाही अनाहीनी नामिरे ॥११॥ लारे समय पाप कारीररे, लोक्नाध्य सरावं अधीररे। अब व बजे मुक्त लक्ष्यरे, एम संग बायके अक्ष्यरे ॥ १६॥ लेली जमनून जोरे करीरे, नियं पार्थानका पान वर्गार । वडी हाथ पन अंत होयरे, वाक्या वर्क नहि वक्षी सोपरे ॥ १३० आंग्य मुख काट्य रहि जायरे, पार्च बीवनां ने व बीवायरे । माबी नवाई सरवे दुरुर, गुरा जिल्ल-भवा वंश पुरेर ॥१४॥ बाद सक मुख ने समनरे, एक बरको दगई लगरे । बायबाय करती ने मरेरे, यह बगाकुळ यनचां करेरे ॥१५॥ सुन वारा मार्थ हां करकोरे, मूल विजा पःभी धई वरकोरे। एव भाक्यपंपाळमां भार, जेवा जब और प्राप्त हरेहे । १६॥ आये अस लंडचा अंतरे, भाष अंग कर्य नेम नेतर। वटी होय बोह पासना-बानरे, बादे जसने हाथ किदानरे ॥१ आ वर्त भूग प्रेम वन परेरे, ले-पण नरकःशी नरस्तं अरेते। नदी कवा बाध्य नलांबरे, नियां अञ्च पीयाने जा आवर ॥१८॥ व दिये पीया वदणनी चोद्धीर, बरे च्याने राष्या यार रोबीरे। वर्धी आहात अन्यने गीनरे, नेह विना न पी-

MATERIAL PROPERTY OF THE PROPE

काक मुनेरे ॥१९। विने गुद्रानुं कोवानुं काकीरे, अनिकास अञ्चल ए आजीरे। जांनी किंग जम घोष् नोपरे, जून बेनने पीवार्न सोपरे ॥१०॥ वरवायकी वहसुं के लेकारे, जाको अस मुक्ती शिये नेसारे। एम प्रतिविज्ञान कुमारे, जियां जाय नियां वह सुमारे ॥११॥ एक जुन जेन वर नागरे, अधु विमुखनां सुवां आध्यरे । कांनी व्यक्ति-वापी तम वासीरे, करे वाप राज्ये विक व्यामीरे ३६०३ माज जीता कमाई कलाररे, पाराधि कांशिया मच्छीभाररे। महास्थेक्छ छ पापनुं मुक्तरे, मारे और अवांतिका अनुवारे । एका नेता गरी जमपुर जा-वरे, वड़ी सदा रहे वरक्षमांचरे । कोई काळे व निमारे वा'ररे, खंने कर्वा के बाब अचाररे ॥ मा अवावे अजारवे अनुवर्ग वारंग्रे, नावे शीयली गर्नथी वा'रारे । कांनी गसीत्राय गर्नमांधरे, कांनी संब-हक्षां जावी जावते ॥१६॥ कांनरे कांत्र वत्रकी वार्वारे, वाचे नार्वकी श्रीवनरे पार्थारे। एस अन्तरेत्रास बेरेबेरेर, अुबे सनुष्यश्रामुख्य ए वेरेरे ॥ ६६॥ वन अनुष्य देवमुं जे सुन्धरे, कामे विदे तनुवा विद्युक्तरे । वनी अनि अपनेती रीतरे, कहुं बीजी सुनी हुई विकरे ॥ रूआ नाम। बोटा होत नामपारीहे, जेनी वय खब नामना पार्शि । यह जा त्रमें होत्व जाक्तिके, वक क्षत्रंत्रणी एक रीमरे ॥२८॥ विचा युक्त वेच पराभावरे, वां'च बीओ काई एइ समरे । सर्व वानमुं कही देखा-बेरे, क्या जमभागे एक कारदे ॥२९॥ एक स्तांभक्ष्युं शामा समस्तेरे, एवं गुने जमजास व रखेरे । इरि विता बृश्युने व नरेरे, आपी बान सावक्यों प करेरे ॥३०॥ कोई पहें सर्वे पुराचार, कार्वे को को कार्य सुजाचारे । करा पान कोलावे ब्रक्तंबरे, पण रख वृक्ति असन्बारे ॥६१॥ बाई करे जनम ने जागरे, आपे कर्ने अमरने आगर। होने मनपदा करी पंडरे, पण दक्ष मांद् जमहंदरे ॥१२॥ कोई प्रत्यरंथी पहरे, क्यारे क्ये वेने अन चडेरे । मने सुन दिन राज्य त्वरे, क्या हते नहि अमर्ड है । १३॥ कोई करे भीरच सपनेर रहे जिला नवे अनी क्य-केरे। जह जनमां पन्नाको पंतरे, पन रच गहि जमहंतरे ॥१४॥ कोई करे जन उपवासरे, जाम क्यारे वह बदासर। जह गासे विमासामां इंडरे, एक दले बहि जमदंदरे ॥३६॥ कोई चारे कोरे लगि वासीरे, वेसे वयमां आमन वासीरे। माथे नवाबे ओ वानंदरे, पण हते

विक अवस्थिते ॥१६॥ कोई अञ्चलियोजने आधरे, एक आल्याकर जाराचेरे । होके बाज अचान प्रचंत्रहे, युक्त रखे यहि समन्तरे ॥३३ कोई जने नेदांन जनुषरे, जाने जीवेन्यरमाचार्य कपरे। जेने सामो रोचे तह करते, पण रखे नहि समझंडरे ॥१८॥ कोई पढेरे ज्याप-रुववानरे, मुजी सह धरे बसायरे । बोने मृत्यपी शह बंधवरे, का हता विशे कामबंधरे ॥३९॥ कोई कथि वर्ष काव्य जावरे, कोई करे क्षान मचोदे हैं। जाने नेदी जाने था क्षांत्र है, एन रखे नहि जन-हंदरे ॥४०॥ कोई लड़नी वह बद्दानीरे, लिये करवन वई कावीरे। करे कर्के पुत्री जाने अपने, एक इसे वहि अववंतरे ॥४१॥ कोई समी वनिकंदे बाचरे, कोई शीवनां बुवां सवाचरे । एव पराणे करे प्राय-संबर्त, क्या हके वृद्धि अध्यक्षिते ॥४२॥ बोई व्यागी का बने व्यते, कृदे बराव म जाय ज़करे । सबे बील बच्च बीका बंबरे, क्य बच्चे विह जासदेवरे ॥४३॥ कोई का'ल करे सिक्षि अच्चरे, बावे निवि करी वद कबरे । जाय कुन्ते से लोकनी बहरे, नम रक्ते वहि अनवंतरे प्रश्ना कोई अब संसने बनानेरे, यह बारक केटक आकरे। आसे यह क र्थन पालंकरे, पन रके वृक्ति जमसंदरे ॥४५॥ चंद्री जाने सर्वेण दा-वरे, वाचे वीर्ति वर्ण समानरे । पडे व्यवस्थाने कहरे, पक बसे नहि जनवंडरे ॥४६॥ कोई धारा परा संवामेरे, बचा वेरीकी बार व का मेरे। करे कर संवाने विकंतरे, पण हमे विवि अवर्थरे ॥४०॥ कर्न कृत्य पानाकमां अवंदरे, व्यापी रखो सङ्घी सरमरे। होच वर वारी या पंचरे, यम रखे वहि जमदंबरे ॥४८॥ एवी रीम कियां सभी कर्यु-रे, के'लों के लो ने पार म लहरे। अंते पत्रे ने बरक्षे केंदरे, पत्र इसे कहि अधवहरे ॥४९॥ एम कहे है सर्वे पुराणो, सुन्ती समझी केल्यो सुजालरे । तथी मुखनी बान में नवीरे, तो'व कल्याच क भूजी क्वीरे ॥ का जो आक्वों मिंधू तरायरे, वाच कोपका तो किन्दु आधरे। होत वोने बार बाध सुन्तीरे, दे! व बल्यान मसुन्नी वनीरे १८-१॥ जेव वर्क विशा अधावते, करे राजवा ग्याय समावते। वर्तेचर्ता तम वाच कृष्टीरे, मांच करवाच प्रमुत्री स्वीरे ॥५९॥ सर अरिना सागर संघरे, यम विमा खुपर्या सह कोपरे । एव एपान तेर्व आंध्वकीरे, वो'य करवाण प्रमुखी क्वीरे ४५३॥ एव सो पानवी 

क्षेत्रं वास्त्रकः कृतक

बान एकरे, समझ होच समझी विवेकरे। समने न बाबू सनमू-भीरे, मो'य कम्पान प्रमुत्री वर्नारे ॥५४॥ यमदर मामे से आ पं-वरे, लेक्स चरचं चरचं ए अधेरे। तंतु प्रकर प्रमुत् बारणारे, त्यारे इसे जनम ने भरणरे ॥६४॥ जनम मरण नियां जम जानारे, जम आने ए हुन्य बमाजोरे। जाको हुन्य रखी सुन्य भावुरे, न्यारे बनर बनु पास जापूरे |, ६६। बन्धों छेद्धा में यह प्रशायरे, हाय हरि जुनी-शुन व्यापरे। तम वानचे र जे वहायु:कारे, बाव वार्ति वामे शीव सुक्ते। ५ आ आ यो अने मध्ये गढ़ बानरे, मह समझी ल्यो साक्षा-नरे। बसु सक्या विजा के कांपछारे, नाजी नवे आधीने टांपछारे ||'-८॥ करो अगर प्रमुखाचे दीतिहै, तो जाजो जगवांदि जीतिहै। वधी कठक वाम ए काईरे, सन्नु समझो एवी सुव्यवस्थि ॥५९॥ साचा बोरामां सरको अमरे, शांद वर्षी जानना ए वर्षर। जेस दिशा नुवारे मारगरे, चाने सांसधी सवार लगेरे ॥६०॥ जेमजेस चांपेशी चनायरे, नेमनेस छेडू चार्नु आयरे । नेम प्रभूतीने पुरुष दृष्टि, जीव करते भगति काँदे । ६१॥ सेना नधी आपनी जो नधरे, उत्तरे जन्म मुखेडे व्यर्थर । बनासश्चर वेडेडे दू करे, जे बोई इश्यंकी है बियु वार ॥६२॥ मदी विमुख सन्मुख पाओरे, जाबी जोड़ को जमपुर आधारे । यान योगानुं करतुं कालरे, व्यति श्रीयनद्वाम महाराजरे ॥६३॥ अच्छ एक आकारी एहरे, एव बानमा वधी सदेवहे । नेह विना न होत भवताररे, यह निरकुलानन् निरधाररे हैता कहते ॥६०॥

कामन क्षेत्र--कारमा काश्मारं अकलक्षकार, श्रीवरि संग मन्ती। बारमां बारमारे वृत्व समारः भीव (१)। वास्मां वास्मारे क्रिया सम् बाय: भी।। जाम्पां जाम्यारे भूक उत्माय: भी। अना सर्वा सरार मर्व काल; श्रीका भवी भवारे भागरे भाग श्रीका करवी हवारे श्रामी सुलदाम: श्रीका कर्या कर्या है कुरलकाम: श्रीकाता बारयो बारयो है भवतो भय: भी । असी जागारे भई जिल्लाम, भी । १८० त्यामा त्या-गोर भवती नाण: भीव। मागो मागार पर जिल्लाक भीव॥६॥ लीको क्षीबोदे पूरण लाप; भीका दीबो देखोदे समझ्य पाप; भीकाला कीयों कीयारे अन्य सकता; श्रीका वीयों कीयारे स्म अमन्त; श्रीक ॥८॥ वहं वहंद जनमांच जीत, श्री०। गई गईरे अन्वती प्रतीत: श्री०।

॥ तन्त्री रहीरे अञ्चली लाज, भीका सहै सहैर कान कहे जाज, भीक ॥१०॥ भाष्या भाष्यार भाग भाष्य, भी । कृष्यो कृष्यार केश कारवा कंत, बीर 1 रेड्स आय्यो आय्यो साम्यो सन्मन: श्री० ( नाव्यो बाव्योरे क बाच कम: औ॰। १२। चर्चा वर्षार वर्ष संबाप: श्रीका लगी नगीर जनजन जान; श्रीक ॥१३॥ वर्षा कपारे सर्वनी माम: श्रीका वर्षा वयादे पर देशक, श्रीक ॥१४॥ जोष जोष्दे ज-मर्था प्रकर; शीर । जोर्यु जोपुरे दू जातु पूर; शीर ॥१६॥ बाखु बाखुरे वन जोई नाय; श्रीका प्रोप गायुर विज एत शाय; श्रीकार्या दीपू की हरे दर्शन दान; शीर । की है की पूरे समृतकान; शीर ॥ आ शीपु मी पूरे मुख्य अचार, श्रीका मीध्य मीध्य है ब्रारण आ बार; श्रीक ॥१८४ नारको नारकोरे व सन रंग, और । अधको आरको अस्वकी क्रमा: श्री • ॥१९॥ बरायो बारवीरे श्रीक्यो श्रेष, श्री • । वाला व्यामीरे हुडी जनकार, श्री ।। १० । जीपी जीपीर इतामके बारी मार; श्री । श्रीपी की पीरे बाले मानी बारे, भी बारे दीपी दीपीर मोज अनुप: आ० । मीधी मीधारे वाम सम्बन्ध, धीर्वाट- ॥३६। सनी सर्वारे सरामुख मीत्र, भी । दर्जी दर्जा दे जमहत्रकात्र; भी : ॥२३। दर्जी दर्जी दे सर्व मध्यः, श्रीका वर्षा वर्षाते भवत वीजी भाषा, श्रीकार ता वजी वर्जाते रंगकानी देवन: भी । कबी प्रजीत सुक्रात प्रवण, भी । ॥५५ । दनी ह-सीरे इकी गया दाया, भी - । वसी वर्जारे गयां क्वाया, भी - ॥ व्या रक्षे रक्षेत्रे अवना काल, श्रीका प्रदेशे प्रवर्श म नेवास, श्रीक ॥५ अ। महत्रोधवर्षात सामा सनसम, श्री० । प्रकारकार दिन रक्षी रम; भी । १२८॥ हुनी हुनेररे जब जबकार; भी । जुना जुनारे सुन्न अकार; श्री : १३२॥ सुकी सुबोरे सुखरी सजाय; श्री : । हुवी पूजारे कामनुष्याय: भी : 1,3 न्य भागा भागार परन्या भागार, भा : । काण का नहें सुधी का ह्यों कहा भी । 12 व नाज नाजरे रही मारी भाज: भी - । मात्र मालरे मायब भारताल, भी - ॥३ - । रहे रहरे सूच्या भारता; जीका वह वहते काम जब बार, जीका। में मने सहर काम ह न्यु द, भीका यह यहर विषयुक्तावतः भीति सन वर्षाः । ता वा । - भिन गतम्बो को अधिकार, करक क्की बादम दर्गा । वयदस्त्री विस्तार, मुख्ये एक लाकाय सुन्ति ॥ १८ इति मा नामुन्तान्य मुन्ति वर्शन न वस्तर । भागायः ।

البراهايي والمالمالها والملحات والمالي بالوائر المامة مناما والمالية والمالية والمالو المالي أجالها والماليا



भीसायिनारायको विजयकेतराम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत—

काञ्यसङ्ग्रहे

## वृत्तिविवाहः।

न्यान शेव । 'इंदनपुर विना' रच्नों र दाव हे—लागुं पाये परज्ञकाने, सोचे सदपुद इपाम । संनवेचे श्रीवृदि, एक रूप ने जप नाम ॥१॥ मंनव्य इच्छे जो अनमां, तो सोचे सरको शिक्ष । जव्य हु जाने पाय-वा, नार्च गुण इरिना इमिश्रा ॥२॥ विद्या' ने नामे वधामणुं, शिक्ष वर कत्यानी वान । वृत्ति ने नाम विन्ता, वर श्रीवृदि सरकाल ॥१॥ वरे वर्षानी इच्छा करी, सोंध्युं श्रीफल वृद्द वैरान्य । ओडीचे ज्ञाव्य वादवी, भारा लाधिनणो जे सुवान ॥४॥ लागाण पहचे सुंद्री, वामी जवंब एवानण । जाबो सली सरवे मळी, नाह्ये गोविंद्रिजीना गुण ॥६॥ वन्य पन्य जनम आवेरो, ध्रुं सनपण इथामने साथ । इच्छा ते वर मुजने अवयो, नियक्त सावंदनो नाथ ॥६॥ पद ॥१॥ वर्षा प्राप्त क्ष्यों, नियक्त सावंदनो नाथ ॥६॥ पद ॥१॥ वर्षा प्राप्त क्ष्यों स्वयंद्रनो नाथ ॥६॥ पद ॥१॥

बर्गन पेट ! 'सबनीने सुपन श्रेट आपुरे' एतात है इचाधा आलवेलों बर मिलिए में भारती अवसागरमा टक्कियारे ! अति एक अनुस्य धाटबीरे, नेतो आमने अलवेले जो ओडाबीरे !! रे!! घाटबी तो घणी सुली के'बायरे, तेतो अबका विना नव ओडावरे ! घाटबी तो शुक्त हैं बो मार्टीरे, ओडीने अबमादेवे देकाशीरे !! रे!! घाटबीनो ओडी.

> काशिकत वृत्तितियाह मानवो अंच के द्वी सन्तुति चासनी हतो हेती हेते वह स्वके क्या क्यों दव अर्थ जान्यों कहि. क्षेत्रते तेलवां स्थानको वही तवानतो आ विश्व वही सन्ति क्यों का पही का श्री का स्थान का तिया। वृद्ध का माने के के के ने पूर्व का पढ़ी वर्षत 'विद्या' ते बाध क्या कर्ते, साहि कर करवानी चात । वृत्ति से बाब विता, वर श्री इरि लाकाता आ पढ़ते श्री का पहां के वृत्र क्या कर्ते के व्या वर्षते के व्या वर्णते के व्या व्या व्या व्या व्या व्या व्

के महादेरे, जोती बीजे अनेव जने आने है। बारडी नो जोतीके गोपीचवेरे, बारडी नो जोरीके बादा बाजदेरे 114 बारडी नो अर-वरिने वजी जाबीरे, बारडी नो बदरजे शोजाबीरे। बंहक नो कस जोको करे पुल्कारे, निक्कुनानद कहे नेनो शुक्कारे १४॥ वह 1181

न्यान केंग। जनका बाज अभी का करे कान' व तक के—बोर् केंग्ने नारी द्यान जनुना बरनी चुद्दारे, चुंद्रती रके दिलेके स्थानीरे; कोन। देख। चुद्रवी रंगे ने बोचा बोदा मुनिरे, बेली खंद खनीकि अनुनरे; कोंन। चुंद्रवी जब अचाने जाबि कचुरे, चुंद्रही सराचे चुर नर मुन्दे; कोंन ॥१॥ चुंद्रवी नवलां जरीने निरम्भी बार बेरे, स-नकादिके कचों सनकाररे; बोंन। चुद्रवी बहुन बजी के क्यासनेरे, वामिने बचाजी वारमवाररे; बोंन॥ भूद्रवी बोद बचाजे बार-वारे, तम वाने ने बोननो चार रे; बोंन। चुद्रवी खनर बीने से बोद-बोरे, तम बाने ने बोननो चार रे; बोंन। चुद्रवी खनर बीने से बोद-बोरे, तम बाने के बोन से स्वार रे; बोंन। श्रव्या मारी सोवाक-वीरे, कमों अनेक अनमां को काम रे; बोंन। सक्या निरम्भावकारे वाधकीरे, वमा करीने जापी अमने आजरे; बोंन। ॥५॥ चु ॥३॥

वस्तान केवा वस्ताविते जान्य नेतन महाय के — वस्त वस्त वित्त विक्त वासको, क्रम अवसर आसरे। सन्य नावीली बोचने, वे'ला अवसे महाराजरे ॥१॥ वा'लाजी विक्रम व किजीकरे, दिने वस्तान दानरे। पूजर लमने केरलां, वसे अवारा वानरे ॥२॥ वनरे १७वे के सम्रका, वचार जोवाने नावरे। अवसा इच्छेट सुन्या, वा'ला नुन्यती वानरे ११॥ वर्षे वंगे व्यामी तसन, १९६का शावन कररे। विद्युती के लगा वचार क्यों, आयों अवस्त अवसे ॥४॥ अवनुष्य मारा व्यवक है, इन्के ने बालुं जोतारे। अवस्त हारण विद्युत्त, रूके ने नमे व्यामारे ॥६॥ विद्युत्त वांचु वांच स्वामान हारण विद्युत्त, रूके ने नमे व्यामारे ॥६॥ विद्युत्त वांचु वांच स्वामान हारण विद्युत्त, रूके ने नमे व्यामारे ॥६॥ विद्युत्तावंद्र वांचु हो जीव कांचा नेन आवश्यों, हिने तमारों वादुरे ॥३॥ व्यामारे केद हुरो वांच, ने केद वांचा व्याराजरे। विद्युत्तावंद्रमा वांचुनी, वांच कवानी नामरे ॥८॥ वर्ष ॥४॥

परयम क्षेत्र । भीती क्षेत्रो सेती क्षेत्रो विकासकीर र सक है—शुद्ध कि भारपी सामचा भाजोरे, भनी भानीने विकासकाति आजोरे ।

जियरि वसेछे जदूपनि बाधरे, के प्रयो जह विजति जोरी वेड बाधरे ॥१॥ वेंता वधारे हो विश्वाचाररे, बाट होड़ शुबे के बिरहवती ता-रदे। सर्वे सम्माने ते तंदक्यो माधरे, भोवे आंगणीयुं समादं हो नाथरे ॥२॥ मारां कुटुंबी बो'कां के बहुरे, शांसी जो करवा आवशे सहरे । तेनो नमधकी पामको हाररे, सबसब करनां रहेवी नरकाररे 🖂 ॥ एक असे तसे अंकज्ञ भरशुरे, सनवा सनोरप पुरा करशुरे। सुणनो समाज संगे लाक्ष्योरे, निष्कुलारंदना आसी जाबस्योरे ।(४)। वह ॥५॥

पर्याण मोळ । 'सारी सार लेक्बो अविजासीरे' र डाळ के--जह कही कि-नित विचारेरे, सुंगी सर्व संदर वर ने वारेरे। कीपूं के कांद्र जादव कुखर्या जानरे, बाजेंग्रे अनद्द बाद नियानरे । १॥ मानिती ने मन कीने संगय गायरे, उपरंग आजंद अंगे व मायरे। आवि सर्वे सक्यो सन्तानों जो सापरे, आक्रा तेने आपे अवायनो नापरे ॥६॥ सक्र सर्वे वाची ते सन्ता सहितरे, जावुं हे जानमां करवी हे जितरे। कोइ जो म आवधारे कायर कायारे, दूः विया दुर्वज बजारयो पाछारे ॥३॥ युदा ने वासक रहेरयों वेसीरे, दुर्मन दंबीने करवा हांसीरे । जन बीजा अनेक मछीने जोशारे, पुरमनि बणवांके बगोशारे ॥४॥ आपण सह आनंद महि रहेश्योरे, क्यन ते कोइने कह महें-उपोरे। आवज्यो अजिन सर्वे अंगरे, निष्कुलानंदना सामिन सं-गेरे ।।६॥ पद ॥६॥

वदराय भोजा । कारी सार केम्बो जनिवादिर्ध है सक है — सुंगी अपने असी बेराम, जेने तन सब धननो हे त्याम । आव्यो संतोष महा शुरुवीर, जेथी परे मुनियर धीर ॥१॥ आच्यो शील मदा जो सुभर, जेथी पळाच कामना कोट। साम धई क्षमा अहिमांन, जेथी कोच न करे आरंब ॥२॥ द्या विसंधे दलती द्याळ, सर्वे जीवनणी प्रतिपास । भक्ति बदीनवा घरी घीर, भांती ज्ञान विकास गंभीर ॥३॥ सम-रश्चि सदा सुम्बकारी, एक आस्मा रहे आब धारी । शुभ गुण विवेक विचार, एवां के 'तां ते मा'वे चार ॥४॥ एक एकचकी के अनुष, सर्वे संतर्न हे सुकारण। सर्वे मधीने बोरेमें क्रे जान, माहि वर दिसे देशिको कान ॥ भा वती आव्याके पुरने वास, देवी दुर्मति वाव्याके जास । 

एक कंग्रे वृद्याने बार, वर आवगाने पूर मोझार ॥६॥ त्यारे कृतृति करेंग्रे विवार, भागी निमरो पृत्ती वा'र । इस्पि आवी कपाने मु-काम, सर्वे शक्यों अविचानों ठाम ॥आ दावों अवंकार वहने दार, त्यारे वरे साम्यो वालगार । वर सुद्र वर वनमानी, कहे निरकृता-वंद निद्या ॥८॥ वद ॥ ॥

पहराम बीजा । 'हिवा केंगी अध्य पुरस्त केरी पंत विकाकेंगी अब के बर कारी वज्यारे' व तक के-वर जिरमुकारे बचा अगुक अप, आवियं अजुब सूची शिर मूच। जोइ जन कप के निरम्ब नाथनेरे॥ वर दिसंके दिलना इपाल, हीवपनिवाल भूपना मुपाल। काळशिर काळ सुन्वदावी साथ मेरे धर्म वरे वे'यों के सुदर सुरवाछ, सने जामा बाद्ध करे बानीमाछ। दिसेतं विशास के जलरा भाषतीरे ।। वरे वे वी ते जामा जरकारी, क्ष्मर तह कमी मुखे तथा हमी। जनमन कमी के मुतनि मामनीरे ॥भा परने करे को नेवंद बीटरे, कीवी वेरी दीडी कहे जाना कोटी। हीची कोचा लुंदी के नोक अनवीरे ॥ सोना मर्वकर्ता कोचे सुचंग, बांवे बाजुबब कुंडक रचना। अनि शोजा संग के सहारण शारणतीरे ॥1॥ वरने शिरपर स्रोतिरी पान, श्रं करे शेषनाम के वा वहिलाम । अमारा जो जाग्य के हेने अवया हरिरे । केवार निजक भावने वय, पायतीने वेच प्रांत्वे शिरक्षा नगरी है नामच के कर्मां के की परिदेशाशा मनकिन को ना में कही व माय, कवि कंड नाम ने बाब व बाय । बोटों के महिमाय के सक्ता ए नापचेरे 🛭 वरे करमां नीपी लाख छड़ी, पाये जो मोजडी मोनीए ने जड़ी। यर यो वे अबी के संसे सच्चा माथ छेरे।। वरमहंस प्रकारमना भोगी, सरो सांस्थयोगी अन्दे अरोगी। जे सन सर्वागी के सने सहजा-र्वत्ते हे ॥ तिरमु लार्वत्वा व्याधित जोड़, सन रह सोड़ हैये सुन्य हरह । मधदुःम्य स्त्रोत् के बाध्या आनंदनरे हिंगा वद हिटा।

वरमान पोत्र । 'वीडी नोजी नीडी कोडी विनामी:' व शक है — मुंदर वर मोरको क्यायाँदे, जनमन नवला नेह क्यायाँदे (वार्डिज वाजे के कहांकि वरे, विद्यु मारो बचारिया यसिंद है । रा। बोक्क लड़ने आ ने बनोलाहे, वर बोकी बनी क्याबेंग्रे मोनीहे । भोपदियां सुख दु:बनो भोग्यांद, विकलिया ने वाच पु:धर्मा साम्याँदे ॥ सा कंतर वर वह सह सीपूरे, इया करी एयाओं इडीन दीभूरे। वश्री विश्व वेदे ववार्या है बाररे, बहासुन्य मुजने आववा बारर 630 वन्य क्षत्र आवसर आवयो है जातरे, बेर वजी करी वधायां पहाराजरे। श्रम वचर आज अरख इरि विश्वयारे, निवकुनानदमी आसिजी अस्तियारे 630 वद 1150

नापरे वेटाछे देव मोगाररे, संदरीए सहयो के सवसाररे। वहेंगी कामद्रमा क्रमप्रदे, अभिन अवन वे अमदरे ॥१॥ क्रांकर ग्रेम-वां वेमवां का वरे, क्यारी कर हरि एक आवरे । आसा मान्किया सांच्यी कारते, काम इस आदि विवेच विचारते गया वे'यों से सम्बद्ध क्रमो चुनेरे, सुदरी खदर कर पानी कहोरे। बांब ने वे'ले निर्मकां कोनीरे, कक यह वियुवे वक्का प्रवेतीरे शहत यदिवियो अविवक कानो को कोरे, अवाय ने सर्वे जवर बीजो शोकोरे। बेन्यों हे निकासमी क्रिन कोकरे, देली वाली राजी बचा रणकोकरे ॥४॥ या-हरी वैराज्यमी वणी सारीरे, मनी एवं समगारे समगारीरे । वक-राष्या वर्णी विद्या बामरे, रार्थां हे मोद्यमात्र मक्कासरे ॥ ॥ वदी हे सुपर सरम्बी जोबीरे, बांधीत गांक व हुई छोदीरे। पर बड़े आ-रोपी परमाखरे, अनु असे दीन वसे विविधालरे ॥६॥ वस सक भोष्युं हे हरि नमनेरे, नम सने बों का आवीते अवनेरे। लारे इरिए हेने की मायो हापरे, सन्दी नारे वर्ष जो सनावरे ॥आ निःवाद विजय वह अर्थे अगरे, मुद्रर प्रयामिक्या पर अगरे । सुद्री अर्थे वंगे सुच वाधीरे, विकास विषक्षणानदनो वाधीरे॥८॥ वर् ॥१०॥

वर्तन कोल । 'वारी सार नेतो व्यक्तिकोरे' व वाल हे—थोरी स्तंभ र-क्या निर्धा चाररे, रहे जनमाने वर बाररे । चित्र स्वरंधी प्रदक्षिणा करेरे, तेतो अवमा ते केरा य कररे ॥१॥ धन्य सची सुंदर वर पर-केरे, तब अब ओंदी हरिवारकरे । काम कोवना जब तत वालगारे, सक्तव कोच सने निर्धा राजगारे ॥१॥ चित्र परणीने पावन वयरि, सुख मुखे व जाय ते कवार । हरिवाचे काचा जे बंतररे, तेने सबने व गने संसाररे ॥१॥ फेल क्यांन काच पत्रपारे, सर्व काज बमार्ग ते सपरि । हेम नेत ने मित्र मानेरे, सची चार वजीने वयांचेरे ग्राम वर वथाची वारचे जायरे, नाथ निर्माण तृत न था-वरे । नाथ निर्माने सोभ्यां के बंचरे, सुख जोड़ कन वर्षा केचरे 16) मुख जोइ सेम्यू तम जायो, रहेरयो अलग अलग अवर अवरे। बांक्ष बांक्य आवेस हैयेरे, जाणुं अन आर्कियत केयेरे ॥६। पुः बंधनीरथ मारा मनतारे, ज्या बार्च्य ह जोयका इत्रतारे। मजी पृश्य पुग्ये हुं वामीरे, वर निष्कृतानद्वता जासीरे ॥ आ यद ॥३२॥

परमान पीछ । 'केमरना जिला राम कर हो 4 क्यांने क बाब त-सकिला बाला छोड़ी देवाधिदेव दोरहरेरे, दिसे होरहीये दश गाँउरे: एवि-नाक। रेक्स माडि अनेक जनमनी आवरीरे, नेने नामको नगारेक बाररे; छविना । क्रजे क्रजे करीने छोडायोरे, महिनी नूरी जाता निरपारके; छविला । ॥१। वह देव अधिकाब दोरहोके, यहा विकट 🕏 विपरीनरे; छविनाः। नवे नोडपाने नो नैयार छोरे, कांद्र राज-न्यो प्राप्तानी रीलरे; प्रांबलार ॥२। वही सांव्य युवाह यथा दि-नर्नारे, साहि अनेक रचा हे प्रत्यानरे; एक्टिक । नधी काजिनाय जे मापकोरे, वशी दावायत जे करो वातरे; छविना । 🗎 । वाला आक्रके भरूप सरे महिरे, परी श्रीरण करो विचारते; छविला । बाना गांव्य सोकं नम सुरक्षीरे, आंटी काठी ओहवी आणी बार हे, ए विकार मिशा नेनी नमार पांचे हिंद ग्रहतारे, सभी मधी अमारी कोर दोषरे; प्रविकार । इया करीन धारण्यो दोरहोरे, रखे रांद जानी करो रोकरे: छविना ।।। नमें अनेक जुगति आवृशिरे, वि-रवं विश्वे करोणी विचारते: स्वित्या । जासी विष्युत्वानद्वा स-मर्थ होरे, जो होशे नो सई है बाररे; हक्तिया । आ पन् । १ -॥

वर्गन थेखा। 'क्या वर वर्षन' व हाज हे - आहे। अन्त्र अमारां हो।
भाग्य, अमरणह परियारे। पर स्तृत्र इपाम सुक्राण, निर्म्थाने न
यणां हरियरि ॥१॥ पर निरमुण न निरम्देय, समुक्त धमा आधीरे।
यर अम्बद्ध ने अविनादा, अक्या अन्यक्ताधीरे। २॥ पर अनीसनेर अमाय, थाय न थाय रितरे। पर हरियर अजना आधार, अकृति पृद्यमा पनिरे ॥३॥ पर पन्ने ब्रह्मांसने पार, अक्या न जाय कद्या रे। नेतिनेति यहे अने घर, तेनो आज अस्य द्वयारे ॥४॥ पर मु ब्रह्म पुणने पार, तेनो केय जाय क्यारे। पर अजह हे जो अजित, भीने प्रगट प्रयारे ॥४॥ पाने पर्यु मनुष्य प्रारीर, जन हेन कारणेरे। जेने दश्यो स्पर्यो पाप जाय, यारी जावं पार्योर आपा पुण्य- वर्षो नहि पार, भेट्या जाज भावे हरिरे। सक्या निरमुमानंदनी नाप, मुने समाथ करीरे ११%। पर् ॥१३॥

कराम थोळ । 'बक्बा यो के योबाइरे' र राख के-ल्यारे कोली सम्बद्धिती माहेमीरे, मुचनी सालाइ परिमेमीरे । सारे के पुछे कांड केची, बोमीक बांचा बममा बेकरे ॥१३ मा जो आधर्ष मरबी बामरे, दिसे नामकी जो चणी धानरे । एने जगमां कोई व जानेरे, एनी बीने बोनावे बन्धानेरे । आ एनी जात कान्यती वहि काळारे, जानुस् जान बंदजीनो लालारे। जिल्लो सामन दूसन सांहरे, संख मोरली-मा किन्य गार्ड ॥३। वनो कांगर कुल्यों करेरे, वनो अवसाननां वय हरेरे । एको चरवी के धुनारोरे, एके कोच करेले मारोरे ॥४॥ सबु कोड रचुछे आयों ओहरे, मुख्यर कड़ी अभी बाक्युं कोहरे। कामक मोरलीमां कांद्र कर्युर, नेके सबसानुं कम वर्षुरे ॥६॥ नेके भाग्यो इतित्रीशुं देदोरे, बसी नेनो का'व व मुखे बढ़ारे ! मोती भूनी परमां काजरे, मेनी लोक बुहुवनी नाजरे ॥६॥ आप हच्छाए इतियह वरीरे, इवे वेडी देवाजे हरीर । एवं सबसान्यों पर सकतारे, हको हेन ने पीने घडणोरे ॥ आ एमां अमार्थ कियुं नपुरे, अने सुख जो सम्बंधि वर्षरे । एवं अभाव अयोग्ने समारोरं, विरक्तावद्वी जामी पने भारति ॥८॥ वह ॥१ ता

परमण केल । मर्चु सुणीने कोली सुंबरी, सभी शांकळ नो बहुं वाल; हो केती । एक न कवा एहने, यांळ विचार विना से बोलनुं । नेतां श्रीय ज्ञणांचे आग्य; हो । । १॥ सभी बोलीने केम बगारीम, बोलनुं अन्यवीलनुं केम थाय; हो । से बोह वचन निमरे भुष्यथी, नेता वालुं केम समाप; हो । ॥ ॥ मुं च जार्चामा ने देशीनो साहीनो, ए खे अस्मा भुषनने आधार; हो । सभी कोम सहसाने शहर, वजी केन संह म पासे पार। हो । । । एनो ह्या ने सेन्द्र जाने नहि, वजी केन म पासे थार; हो । । सभी अनेब जाने उद्धारवा, आपी भीषोंचे आ अवसार; हो । । सभी अनेब जाने उद्धारवा, आपी भीषोंचे आ अवसार; हो । । तने वचने ने विकार बासीम, तने केस बसने विकार; हो । ॥ एनो चेनन्य पनस्य सुरुति, एने स्वरूपे नहि वंच मून, हो । एनुं पुरुषकाम जो नाम से, वळी का व अव्यंव ज्ञानुत; हो । ॥६॥ बीन जाणी इयाके इया करी, प्रया निर्मुण समुक्त व्यवः होतः । एके कोटी कल्याणनी स्पृष्टि, य के कोटी इयामं कपः, होतः ॥ आ इत्य ओवीने हरि कामके, वहीए दीन आधीन एमः होतः । सन्ती निष्कु-नानद्वा नाधने, कष्टु व्यव को कैंय कम, होतः ॥८॥ पर् । १५॥

वरण योण। बारा बोल्या वार्यु जीई दयावरे, रीच रचे चरणा ने रामरे। कोई वच करे जो कामके; अरबीन जा अववारे ॥ मोटा जन वरण्यो थीररे, गुलबंग गुलना गर्नीगरे । उनुं नार्चु थाय थोड़ें बीरके; लवाहबे नव्यवारे ॥१॥ भ्रमारा के अवगुलीया अनेकरे, दरि दैये आणातो भी एकरे । अपम उद्धारण जे रेकके; वायण्यो ने बीतर्शुरे ॥ वहाने जब लाने किकाररे, जेनी भ्रम जवरण्यकरों । वब वाय केले निर्धारके; आवेश अजिनशूरे ॥१॥ वजने जेम विद्युं नक जायरे, वेथनण साम् विधायरे । अवक जो करीए प्रयायके, निर्ध विषया करे ॥ वादि जेम कीन्या भागरे, नेने नम नागे निर्माणे विकास विद्यु विधायरे । स्वादो निर्दा पुण्य ने वायक, नाच निरमक करे ॥१॥ दिल्यों के कांत्र दिन् लगा स्थाबारे, दीनवन्य दीनप्रत्यावरे । नरवर वंद गोवानके; निर्माण क्यां विधायरे ॥ विद्यु वायके व्यारे ॥ विद्यु वार्यक्ता व्याप्तरे । अल्बना अनरणा-वीरे । लग्ने निरम्ली सुण्य वाभीक, सर्व कारण स्थारे ॥१॥ पद ।११६॥

क्रम्य भोक । कोबेक्स कानो को कोनले प राज म-सनी आज आनम् चयामणां, मारे हैं हरे सन्ती हरना व सायके। दीन द्याके इस करी, चक्रमेरे मारी महीकेरे वांगके; आ॰ ॥१॥ सन्ती नेह अणावणी नगणमां, जाणी शाल्यारे सुंगी मुलतां नेणके; जार | माली करणा रममय भरति, नाथ निरमीरे कांद्र दिरमां छे नेणके; आर ॥२॥ साली छथी छविलानी जोइने, मन मोनुरे जोइ बालार्नु मुलके; आर । जिल बोरी लीपूं लाग लटके, बण दिटेरे नव थाय जो सुलके; जार ॥३॥ सब्दी नरण पुण्ये ते पामीए, इस्मीरे मारा ईडा मांयके; आर । सब्दी परण पुण्ये ते पामीए, भाग्य मोटरि मुल कर्या व जायके; आर ॥४॥ सब्दी धरुष पुन्य अवसर आजनो, माज प्रयट्योरे अति नवो आनंद्रके; आर । माद जीविश सफल करी जाणियुं, राजी थयारे लामी सहजानंद्रके; आर ॥४॥ सुने विमारी निष्कुलानंद्रना नाथने, जाउं वारणेरे हुनो बे सारके; आर । सबी निष्कुलानंद्रना नाथने, जाउं वारणेरे हुनो वारमवारके; आर ॥६॥ यह ॥१८८॥

पराय भेटा। 'नाजायण व्यक्तित सम जेर' ए साड हे—जेनां पुष्प इसे में ए पर पामकोरे, नेनो बामको नजहाना नापरे; अमंह पर एक छेरे। मन बांछिन महासुन्ध माणकोरे, पळी जाणको से पियुना मनापरे; अमंह० ॥१॥ मन्दी परीप नो अमर ए परनेरे, जेनुं एया-नण सम्बंह अभंगरे; अन्वह०। सभी सुन्य अन्य आ संमारतारे, नेनो समानु न करे केदि सगरे; अन्वह०॥भा सन्दी मूर्व सनुद्यती मंहळीरे, नेनो समारतां सुन्य सरायरे; अन्वह०। सन्दी विवेकी रहेडे नेथी बेगळारे, नेनो न्यानतां संग स पा'यरे; अन्वह०॥॥। सभी सनकादिके, शुक्ते हो कर्युरे, दक्त भरत रच्या हे जेथी दूररे; अन्वह०। सभी निष्कृतानद्ता न्यामी विवारे, बीजुं अन्य भजे जालो सुररे; अन्वह०॥॥। पह ॥१०।

अही पत्य पत्य भाग्य भाग्यभाग्य ति । अही पत्य पत्य मह महिना सि-पते, अलोकि रीन आजनीरे। अही पत्य पत्य मह महिना सि-पूरे, स्पत्ति हरिपद पर्या छे पायनरे; अ०॥१॥ अही पत्य पत्य लग मृग जाननेरे, जेनो आरे ममामा अवनारते, अ०। अही पत्य पत्य अन्य ने पहनेरे, जेने उपर छे हरि अञ्चायस्त्रे, अ०॥भा अही पत्य पत्र सनमगी संननेरे, जे कोई सदाय रहेंछे हरि माथरे; अ०। जेने अरम परम रहे एकनारे, हरि हेने अमेछे जेने हापरे; अ॰ ॥६॥ अही घन्य घन्य सर नर नागनेरे, जे कोइ वसीया आ जन्मां हे वासरे; अ०। तेनो अंतरे इच्छेष्ठे तन धारकारे, थावा च-रण कमळना सासरे; अ॰ ॥४॥नेतो कोण जाणे जे केमे हशेरे, नेनो मर्म जाणेखे भहाराजरे; अ०। शम दम आदि जे आग्ये कहारि, तेतो तन परी रह्यां आजरे; अ०॥५॥ सर्वे समाज सहित पदारि-पारे, संत जनने ते आपवा सुखरे; अ॰ । अही घट्प घट्य सर्वे ए जननेरे, मोटां भारय न जाय कथा मुखरे; अ० ॥६॥ कधुं नधी जातुरे सुल मुखधीरे, जेवुं आप्युं छे अलमेले आजरे; अ०। मारा अंतरमां वेसीने पोलियारे, इतुं के वानुं जेटलुं काजरे; अ० ॥७॥ विवा' वरणव्यो पद छंद विश्वमारे, कश्च संक्षेपे सर्वेतुं रूपरे; अ०। वर नर तो एक नारायण छेरे, विजा सर्व छे सखीने खरूपरे; अ० ॥८॥ एवं निश्चे जाणीरे जन सर्वनेरे, रे'वं सखी खरूपे सर्वे अंगरे; अ॰ । धर निष्कुरुपनंदनो नाथ छेरं, राजो हेन श्रीत खामिने संगरं: अलोकि ।। १।। पद ।। २०।। इति भीनिष्कुलानंत्युनिविरवितो वृत्तिविवाहः संपूर्णः





श्रीसामित्रारायको विजयतेतराम् । श्रीनिष्कुलानन्दमुनिकृत-

काव्यसङ्ग्रहे

## शिक्षापत्रीभाषा.



मंगळकारी स्रानि, श्रीसहजानंद सुख्याम । सक्तिवर्मसुन भावशुं, रहा। अंतरमां घनश्याम ॥१॥ एवा इष्ट एह माहेरा, तेना इष्ट ते अीकृष्ण। जैने वाम राधा वर रमा, वृत्यावन रमण मन प्रसम्न ॥२॥ एवा इष्टने उर धरी, बोल्पा ने सहजानंद । मुज भाश्रित व्यागी गृही, सुणो नर त्रियपृत्व ॥३॥ शिक्षापत्री सुंदर अति, तमे सांभळव्यो सुज जन । लखु बसी बरतालमां, आ छे छेलां भक्त ॥४॥ भोगई--- यह बहु करी में बातरे, ते सांभळी तसे साक्षातरे। हवे छेली बात छे आ मारीरे, तमे सहु लेउयो हैवे चा-रीरे ॥५॥ देवा प्रदेवामां जे रहेनाररे, मारा आश्रिम जे नर नाररे। तम प्रत्ये शीलामण मारीरे, सुम्बदायक छ अति सारीरे ॥६॥ धर्म-पुत्र पवित्र वे भाइरे, मारा बीर जन सुम्बदाइरे। मोटा आह छे राभयतापरे, बाना भाइ इचाराम आपरे ॥अ। तेना पुत्र ने गुणार्ग-भीररे, अवध्यमाद ने रधुवारर । तन दराउन कर विर देवा वहेंचीने आप्पारे हिंद्या कर्षा साधु सनसंगी अमेरे, तना है दह चित्तरे ॥९॥ वर्णी हुकुंद आदि समस्तरे, भट मपाराम आदि गृहस्परे। सथवा विषया नारी सुभागीरे, सुंगो मुक्तानंद आदि खागीरे ॥१०॥ एवा सतसंगी मुनिराजरे, तमारी पर्मरक्षाने का-जरे। शास्त्रप्रमाण अनसुन्व करणरे, जेमां श्रीनारायण स्वरणरे ॥११। एवां आशिषमां ज वचनरे, सनु अंतरे धारज्यो जनरे। दिा-

The state of the s शायत्री महत्त्वानुं कारकारे, कारकारे नकाम सन कारकारे । रूपा सर्व जीवने सं शुलकारीरे, एवी जिल्लानी क्वी समारीरे । श्रीसदानक-नारि जे पन्तरे, सनवारक कथा योक्सकरे ॥११॥ नेने प्रतिवादन कर्म जेहरे, सर्वजीय दिनकारी नेहरे। एका अहिंसादि सदाचार-है, बाद बकाब के बरबाररे 1,7४% ने का नोब बरलोब कांगरे, मांटा शुक्तके पासे सद्भवते । सद्भवार प्रदूषी से वर्तरे, मेनी वर्षा-इ मनने मनेरे ॥१५॥ नेनी कृष्डिवाचा क्षेत्रकरे, लोक परमांके ल हुन्ती भाष है। मारे बात जिल्ला क्यू बीनरे, बर्नी का विकास-चीनी रिवरे ॥१६। इन बर्मानी दिन व लेकरे, अर्थ सन्सनी सूच-क्यों नहते। माना कोटा जेह जीव वाणीरे, नेन मारवा वहि क्यारे जाजीरे ॥१ आ चांचड बांबर स जन सहिरे, मेनी दिला ने करवी नहिरे। देव विन्यम कर्म माध्ये, सून बीव काक ने वाकदरे ॥१८॥ एइ आदि स मारचा प्राणीरे, अहिलादि वर्स मोटी जाजीरे। का सच्चानमाहि करेंग्रेरे, मारी क्या विकास समये ए ग्रेरे ॥२०॥ वास वाम बडे बाब बहीर, मेर्च सन्दर्भ सार्वा बहिरे। नेस नीवेसी हर कोई जनते, आत्मायान व करा काइ दनते ॥ व्या काप करा न न-जब तनर, यह साना शिक्षानां बननर। अयुक्त दर्भ पाय जो दर्ग हरे, तांचे मन्त्रुं वहि मुकाहरे ॥ ११॥ विष कांद्री कृत वही तनरे, वर्षि वरचुं भेरवज्ञके जबरे। यज्ञकाच धमादि सं बासरे, ले व बार्क के वि जारा दासदे १,३३॥ अथ की वृ विच अशियारे, सुरा नेवल प्रज वकारते। देव विकास को बोचरे, मारा अवोग व लेखे लोचरे ॥२३॥ आयो आवधी अववस्य अवस्थित, वह आय कोइ कर्व बोसरे। वाय वास्तादिके करी नगरे, आयो अस्पन्ने व कर्ष्यु केदनरे प्रश्ता पराव करी व करवी दृश्यारे, जिल्लाकरण विद्यानी मातारे। सुन्ती सर्व जिल्ला बान बारीते, वर्ण सामये म करा बोरीत प्रमान काम आदिक क्रम कृत वालीरे, जे की। करन होता विलगानीरे। नेनी वजी आवे लोग ल बीरे, आकारी मी आक्रा के प्रवीर प्रम्या बळी बाहा आधिन वरवाररे, नेलं करनरे वहि व्यक्तिवाररे । चुनादिक व्यवस्ति संबंधरे, लामो कक वार्त्त वृक्षि केवीरे एक जा मात्रा वारक सकर बां अवजेरे, वर्ष केंद्र से लाओ कहाँ जमनेरे । जेना अस असे होय बटायरे, से व व्यापु वीयं कोड कामरे ॥६८॥ इस्प्रिमादि वे वरणायनरे. 

कार्र ॥ देना यह बची है बोटा सन्तर्यरे, मोब सान्या क्या हे यह परे । पालाधारा पर्जा विद्यापानरे, वर्ग करते महि अवधानरे । ते । करमुं कार्य करिन विचाररे, यमें कार्यमां करकी य कारर । अर्थाः विचा अकावनी नजीरे, करकी समध्यामम मजीरे । राज देव गर बरेकानी पासरे, दाने हाच अब यहि दासर । विश्वासपान निज ने बेबार, बोले बोलाओं कता म के बारे उटम श्रील बाल्य बना में कर-नरे, में व बेंदर्ब बेम्याय जैसे भगार, पर्यरहित हरिनी सन्तिरे, में केदि व करवी लक्षिये ॥ हो॥ जुल्बं बन्द्रयभी जिंदा कांजर्वार, कु-रणसंबा म महाबी प्रश्नीर । कर्व प्रयं न मंत्र री राजारे, कांग्रा माहि सेम बाय भारतीर १८००। स्था-प्रमान भारता जिला प्रति, आय कृष्ण महिन महमार । परस्पर आपनुं यदि, महरा अन्य विरुपार ॥ - १ ॥ वर्षसमाधी निमारी, रहेन् याने योनाजी रीत । बळी कह एक बारता, लकु सर्वनको बहु विका १६६॥ वर्धवन्ना मुद्रवदी, श्रीकृष्टवरी दीशाः नहीं । द्वित्र श्रामिय बैदन मनेती, रीन देखाई है करी १५३। कर नुजनीकाया चेवती, लगार हृद्य व हात । करवपुर निवस करिने, महा रहेन समाभ हरता पाणा-मुदर विकस गार्था पदनर, करता श्रमारा आधित अनेरे । अथवा होय श्रीती प्रमादित, प्रकृत क कर चहुन आविरे १८%। सुदर निवद बरद नेत्रे, क्या विद्यम करने छन्दे । कांता करी चांदली कुछमर, एक करा विनय सन त-केर ॥६६॥ ले कुकूल बन्धादि करतर, रापालक्ष्मीजीत परवर। वर्जा बानाजा प्रस्ता रखार, हाह आहु जना अन्य प्रवाह । जा एका सनदाद से सपनारे, कर राज्ये तुर्द्धमीनी मातारे। कर्ष्युर निकत करी चयुरे, प्रथम विवर्णन कहा नहुर १६८॥ नवी प्रवरण जरन ज वर, राज्य बासा काम अ चंदनर। वाधा ववती करूमा सार्रार, परिवस्तादिनी सुम्बकारीस ॥६९॥ कवन महिला करवा मनारा, निर् नव करवा मुक्तवा पाटर। द्वित आदि सुन्ता सह विना, तान्त्र जिनुका समाक्ष जीतर ॥६०॥ किल कुळवकी रीत दावर, मारा जा शिन व नजी कायरे। बारायण श्रेन शिवजी एकरे, एस समस्ता भीने विवेद है ॥६१॥ हरि हर वे प्रयानकार, लेनां द्रव्या है पहला करो । याची पामामांदी कायदर्भर, नेन मानजी नगमने मनर मुक्ति। भोष्टा पुरम्ममाही पण एतर, कह मुख्य म करती केनर। मुख والرفي والمرار المنظم المناطب والمنظم المناطب والمناطب والمناط والمناطب والمناطب المناطب المنظم المنظم المناطب 4+4

प्रदेश के लो सह जातीरे, इति समरो सह सुनार्गाहे ॥६३॥ इति-कृत्वा कृत्वा मुखे माथुरे, पत्नी देशकिया करवा आधुरे । हामण क-रत बंभी एक व्यक्तर, पत्नी तहाद निमंत्र अकेरे ॥६४॥ घोषां बना सुदर के माधरे, एक पहेरी ओसी एक माधरे । शुद्र मामन ने शुद्र आगरे, बेमद जोह बोकडे मागरे। ६०॥ वर्ष के उच्चर मुखेरे, बेमी करने आषान सुनेते। पुरुषमाधनकी क्या तीनते, करेर निवक का-रमा महिनदे। ६६॥ स्वासिती वारी सुनी सी हरे, इंड्य बॉदसी बवाजे की प्रदेश चांदनी अथवा जे निमक्ते, विषयान न बत्ते छ करे ॥ ६ अ। करो सम्मारी सामग्री मे बरे, चहुन पूर्व पूजी करवाई दरे । पठी विश्व की सुरति सारीरे, राधकुरक नशी सुककारीरे ॥६८॥ नेनं आन्दे दर्शन करीरे, करवी मगरकार आव अर्थाहे। असी आ-वनी कालि प्रमाणने, अष्टाक्षर संत्र स्ट्रानने ।,३०॥ कृष्णसन्न जनी बरबाररे, पछी करको बाबानी व्यवसारि । आध्यानिकरी जे लाग जनरे, राजा अवर्शय जेवा पायबरे॥ > । अथम वर्श अनुक्रम जेपूरे, करो बानमीत्रता लगी नेपूरे। वर्ण कृष्णनी प्रतिमा जेहरे, हाप पान् पापाणनी नेश्रे । ५१ । अथवा आख्याम मुम्बसरीहे, सेने पु-जना मेम बनारीरे । निन्य जोड़ एक काम जेबोरे, बान्ति प्रवाले प आयो लेकोरे ॥ असा चन्त्र पुरव इत्य क्रम आदि है, दुली बन्दे नजी प्याधित । पत्नी कृष्णमञ्ज अष्टाभारे, मन अपनी आवद्यारे ॥ ३ ।। वधी करणस्त्रोत्र वात्र करवारे, कानी ग्रंथ वांची विवास्त्रार । श्रं भक्या व होय मीर्वाचरे, ने जया हरियाम सुजावरे ॥५८। करी ह-रिनं नेवेण निवारे, लेबी अलाई ने कन श्रीत्यरे । आध्यनिवेडीय मशाकाळरे, प्रति संबंध कृष्ण श्वाळरे ॥ ५५॥ माधिक गुण रहिन भाक्षणारे, तेना सक्त्यी त्या भग अन्ते । आन्मनियेदी सक्त के नवर, कियामहिन निर्मुण जाल अमेरे ॥ असे असे कास कार्तात् अस्या अंतुरे, कृष्णप्रमार्थ किया संस्तृत । अस्ति असे सेम कृदय-पुर, आरमस्थानमञ्जू दृश्य घणुर १००॥ समा व कार्यर मुर्गन सर्वारे, गार बीजा ने बक्तन वेवीरे। एम मधर्श गर्व मुजायरे, बर्ग बोनावी पराच बमानेरे ॥ ५८॥ करणमृति आयार्थ से आयीर, अववा नेज इस्ते करी स्थापीरे । करा ए वे सक्वनी सेवारे, बीजे वसरकार करी संबारे ॥७९॥ संध्याकाले सह जब मन्दीर, जब हरिमंदिरमां पन्धीरे।

والمراجعة والمتكونة وتاعلها والمناهدة وتلما والمراجا والمراء والمراء والمتاجعة والمتكونة والمتكونة والمتكونة

उचा लाहे करो लाई की बेंब है, इस दरिया बामर्स भारतहै। ८०। कवा बार्या क्या करण नी जिल्हारे, बहेबी सचाबी आहर सहिनरे। नाम है वदमे कृष्णकीनेमहे, मार्चा अन उपस्थाने क्षेत्रहे १८९१ साला अने है बच्च के अ आगेरे, एकी रीले रालों अन्तरागर । आया मीर्याणना वेशी कामने, करी कड़ि प्रमाण अध्यालने ॥८२॥ ज जनशी भाष काम अपूर, कन काम बनावयु नेपूर । नेपक बचम विचारी नेपूर, बादी काम काचा मोधी देवूरे । ८१। जे जे जनमा जे होय बामरे, नेनी रम्पावणी परदासरे । अस पमा क्रान्ति समान्तरे, आपी सुनी राज्या स्वापरे । ८८० जया गुजवान्ते जन जेररे, वर्ष ययन यो-लावको लेहरे । देखा काळ अञ्चलके एजरे, अयोग्य निवेच बेल्डरवर्गा ने बहे ॥८% तुम अप कृष न्यामी होयहे, विकासन नवली प छो-परे। एने भाषतां भारत की तरे, पड़ी कीड़ बोली मान बीजरे ॥८६॥ नुष क्षेत्र स्थला प्रयो अपनिष्ठे, त्यां बस्त्यू स्थानात् अभिष्ठे । धनपर चम म भराववार, पर पर करी व वाधवार १८०० किस भाषायव श्रमुखरपूरे, नेजी स्थल विकाद व करपूर । सर्व पेरपानी कान्ति व-मानारे, पुजवा अस धन पना सुक्राणरे । ८८४ भाषायन आवता वां बर्ळार, जबु बन्ध्य प्रवासन्त बर्जार। यान प्रायणा गामधी प्रपान रहे, अब बळाबना गाम नारिर ।'८'म नह कळनाव होण कमेर, क्ल व होता जो नेमां पर्धर । एवं क्ये नव नजी देवर, पर्धराचना लुकाने लेवते। १०। मार पद्धलाच परी अन्तरे, पर्याच्याचा नहि बाह बनर । पूर्व कोटा कवि मुनिमांहरे, भयो शाम अपने जो का पर । <sup>कर्</sup>श ने अध्योती आक्य न नहीं परे, नजधम कर्या न प्रशिवेरे । शानी बाल भी कमूनी शायर, ननी छनी करशो को कायर । है। जनमारी होय जीव जयारे, नेज नेवा सनमान वेचारे। सर्वयां सम रुष्टि म आगामधीरे, भोटानी मर्याटा म लोगर्य रे । कि.मि.म अधिक चोवासामा पार्शर, समर्थ आकृष्ण देव बोटारीरे । शक्ति व होन नो एक मामरे, राज्ये विषय प्रायणमां दामरे ॥१८॥ विषय प्रविद ं ने स्कृति एडकर, कृष्णकथा स्वासकी करी को । की के महाकृता विश्वर, जावी सन्न क कोन्य उकति के । १५०॥ प्रेसे करी प्रविधना । बीतरे, लेम साष्ट्रीय दरवन कीजर । एट आह नियममानी एकरे, राज्या जन दर्ग भारी देकरा, भारत एकाइडी सुन्दर्शन,

ነግ ዜግል እና የተመሰው የመመስ መመስ ነው የመስከት የ المراجع والمراجع والمراجع المراجع المر

करबं हम जीने मरमारीरे । कृतम जन्मनिम शिवरानेरे, करो चवर्णमा पत्रमण स्थानरे ॥९आ करी सन सुपुत्रकि दिवसरे, सुव तो बन पासे नर्ने भाषारे । आगे बन करे नारीसगरे, तेस दिवसे सुने प्रमुखगरे ॥ १८॥ वैक्यवराज्य बाह्य सामारज्ञारे, लेखा सुन विश्व-लकी महाराज्ये। इन परमय कथा एवं अंगरे, तमे करायो क्षत्र सन्त समये ॥९०॥ जन प्रमाण करणा गयारे, पनी रीने करो कृदकार्मवर्षः । नीर्व शारिका जावि सुलाकारे, करवा विभिन्न वालिह हमाणहे । १००॥ पान पोनानणी शालिस बरने, राज्ये द्या दीनवी उपरदे । बजी विष्णु जिल्ला कार्यनीरे, सूच्ये देव नवा शक्यनिरे ॥१०१॥ एक पन क्षेत्र प्रमाणते, पुली सारा भाष्मित स्त्रापते । प्रवास सावे कोइ अगरे, मून बेन आदि बनगरे ॥१०६॥ लेन इस्छो जो राजवा आपरे, करो जारायणकाच्या आपरे । कांगी इनुमान क्षेत्र अप अपि-जेरे, अंत्र देवसंत्र व प्रतीतिरे ॥१०३॥ भाष कव्या सूर्व सक्त क्या-रेरे, किया मजी हेवी सर्व लाहरे। यह शह सबू अब आपरे, करो श्रीकृष्णक अभी जापरे ॥१०४॥ मह सहना न्यारे अह श्वाबूरे, वन्हे लाहिन नाती शह थापूरे। एइस्वे शाम देवु प्रान्ति अर्थार, न्यातीच् सुन्य लेख कृष्या होतीर ॥१०६॥ यारे यणेना समुख्य के का बेरे, जन्म मरण सुनक तन आवरे। तेनी संबन्धी सहन् पाओरे, सामा-मर्यादा कोह माँ राजारे ॥१०६॥ बाल बाम शमादि सुद्रते, रही शंगीची सह विष वहरे । अधिय वर्ण रे'व अनिपीररे, कामवर्ण भये द्वारतीर है। १० आ गानी कम बेपार मनी क्याजरे, बर्ली बेड्य वरी क्य कालरे। विश्व आदि क्या क्या क्यारे, क्यों जाह करी लेती. मेवारे ॥१०८॥ शतापान आहि संस्काररे, नित्यकर्स भारत निरंपा-रहे । योगाना एकान्य प्रमाणहे, करो जिल जन ने सुलागहे ॥१००॥ जेवी अवसर वे जेवूं पनरे, करतूं शानिक ब्रमाणे ए जनरे। जाने अञाण करीने आपर, धाप मार्नु ओहु की। पापरे ॥११०॥ रेस-तेनी दोष निकारीय, पोतानी शासि प्रमाण । लार वहीनी बारमा, व हे सुको सर्व सुजान ॥१११॥ व्यासमृत्र वेह बसी, श्रीमहास्वत सुन्दरत् । विष्णुसरस्याध भारते, श्रीश्रमपूर्णामा से अनुत्र ॥११२॥ विदर्शानि ने स्वेतपुराणे, वैष्णवनंद्रमां सार । वासुदेवमादास्य कत्, अतिस्वर आव उदार ॥११३॥ चालवाकचक्क व स्वति, वर्ध-ማ ነገ መስመስለ የመፈጠር ተመስከት ያለ መስመስ የሚያስቸው የሚያስቸው የሚያስከት መስመስ የሚያስከት የሚያስከት የሚያስከት የሚያስከት የሚያስከት የሚያስከት የሚያስከት የሚያስ

काम्बर्धारी केट। संबद्धान्य अन्द्र ग कवारे, अमारे हुए हे अनि नह ॥ ११४॥ प्रशास्त्र - झारा शिक्ष सुन्ती कह निकरे, नमे हरती नमाने को दिनहै। सन्दर्शम् आह ए अनुपरे, सह्य स्वीतनयो सुन्दर्शः ॥११५॥ मारा आभित विश्व एवं अणीते, करो क्या ने जान्यनगी-रे। ए अस्टमां वची ते सदानारहे, वे विन्तारण ने व्यवस्थारे ॥११६॥ एवी विर्णय करवा दिनहे, सिनाक्षरा टीकाए सहिनहे। लकी पालवाकपनी ले स्मृतिरे, तेनुं धरण करो महत्मितरे (१११७) वची श्रीमङ्गानन मध्यत, बकाम वसम जे वे स्वपते । कृत्यासाधाः रस्य जानवा एनेरे, सङ्धी अधिक सानवा नेनेरे ॥११८। दशस पचम जे व स्वत्रवारे, पाजवस्यक्ष्मित व प्रकारे। व हे ज्ञास्य अस्ति योग भनेते, तेनो करी रामप्रायु समेरे (१९९॥ द्वासाका भन्ति-) काम कर्रायरे, पश्चमक्षेत्र योगजाम्य लहीयरे । याज्ञवस्थ्यमी स्यू-ति है जेहरे, पर्मशास व जावजो मेहरे ॥१२०॥ बाधीरकश्च सुवी बामरे, जेने कर्य रामान्ते अध्यो । करी अधवतीना जे पृतिनरे, रामान्त्रना भाष्य महिनदे १६२० व वे काम जावना मारहे. अध्यात्मद्यात्र छ ए असारार । सन द्यान्य ए सन् अन्यरे, नेमाँ वयन अ है सुरावपरे। १२३॥ कृष्णालक पान पर्वपर्वारे, असि वैराश्य व कार महार । वनी मोकाव करी है जरते, सह करती मुख्य मानो नेपरे (१६६) कृष्णविद्या करो धर्व सहितरे, व हे प्राप्तानुं सार प्रतिका । धृति रसृतिय कथार सदावाररे, नेती पर्य जालें। निरुपारके। ≯६४। मध्यारक्ष्यकाच सहित क्षेत्र अतिरे, वतु साम जा-नथी अस्तिरे। कृष्ण विना कीत्र तेने आश्यर, वनु नाम जानती वैशास्त्रके १९६६॥ जीव मध्या हेन्यसम् स्पर्वे, जाद जाला ए ज्ञान अनुपरे। इत्ये बस्यो छात्र अनु लेक्ष्ये, इतना धनन्यस्य हे नवी-रे ॥१२६। ज्ञानदाश्यिक वाडी कि बनेहरो, सम्बद्धिमा स्वारकी है से दरें। अजर अमर में न देवापरे, इत्यादि गुण जीत के बापरे । १२ आ प्रियुक्तात्मक समस्य अववेश, प्रसुनी अकि सामा प्रमाणी-रे। जीव देश ने दलना स्था हिरे, जब अन्यानने राज्या बर्धाई । १२८१ वर अणा से भागानें स्परे, एवं १ व है-बहने स्वस्परे। लेख इत्यमां जीव रचारे, सेच जीवमा ईमार र अने तर्राता अनवीतीः स्वयंत्र आधारते, जीवना वर्षकळ देनार । सेने ईन्वर श्रीकृष्ण at the state of a section of a section of

प्रमाओरे, परमचा पुरुषोत्तव जाकोरे ॥१३०॥ वे सीकृष्य है आ-पचा रष्टरे, सदा बनासना योग्य आजीप्टरे । संदर गुरनि अनि कारीके, कर्व अवनारका अवनारीहे ॥१३१ । एवा रे राया क्रमित ए रहरे, त्यारे रायामुख्या धर्म कहरे । विकासी सक्तित कोशायेरे, त्यारे लक्ष्मीवासम्बद्ध काचिरे ५१% । श्यारे आहेन स दिन रहे द्वामरे, लारे जानारायण नामरे। स्वारे रहे वसनदावि लगेरे, बाग के बाच ले ले असंदेर ॥१३३॥ क्यारेक राधा अस्तिक इतिज्ञानरे, पाय प्रकृते होत पायनरे । क्यारेक रापादि श्रीकृष्ण मांहरे, जानि लाहे रहेते लगाहरे ॥१३३॥ लारे कृष्ण के पापते ए-करे, एक अवसी लेको विकार । बार क्रयनमां स्टब्स मांचरे, सेव समझायो वृद्धि सदायदे ॥ ११-७ वार मुझ आह मुझ जेरहे, सहना-वि सूत्र का व नेवरे । लेली विश्वतामूर्ति के श्रीकृष्णरे, नेवजी इच्छान ए आणातो जबहे ॥१५६॥ एका एका देव जे मुराशहे, मेनी मन्त्रि शक्षा सुलकारी । पृथ्वीयां तथा जे सन्दर्भरे, ने सर्वत करवी अव इसरे ॥११ आ अस्तियी बीज कल्याणकारीर, वर्षी सापन लेगे वि-चारीरे। विचापान गुणियन बरो, नेना गुणने दान फल लहरे ॥१३८॥ करकी कृष्णकी भाषा अवगरे, जिला शालका संगने सग है। य होय सरमा व होय प्रक्रिते, एको पहिन नोच अधानितिहै हर्ष्या कृष्ण में कृष्णभावनाररे, आध्या कृष्णप्रतिमा साररे। प्रवास करका योग्य के एक्ट्रे, परी प्रवास करी नहीं खंडरे । १४०॥ में विका प्रभूषणानि संपनारे, प्रथमभन्त होन प्रवानेनारे । नाय व बरचूं तर्न प्रवासरे, एव समझचे युद्धियातर ५१४१॥ स्वय सुप्त कारण दहरे, नेवीवर वित्र भारमा जेहरे । नेमा प्रकास आसी असिरे, करा अवर्तिका कृष्णभक्तिरे ॥१४२॥ दशमध्यम आगवन वायरे, तेनुं करो अवल सदायरे । कांनी वर्ष वर्ष वर्ष करते, वर्ष-भक्तो सम कवित विवेदारे प्रदेश्या शक्ति वांचवा नित्वे छा।रेरे. वहिलो वर्षमां एककाररे । बांची कांबळो पुरच मीतरे, माग जा श्चिम आहर सहिनेरे ॥१०२॥ दशमनो पाउ श्व म्यजंर, करको निक्र सामार्थि वर्धेहै। विष्णुमहस्त्रनाम आहि प्रतीवर, अपना प्रव 🖟 कराची कक जीजेरे प्रश्वन्त्र बजुरव देवशी कार्यक आवरे, अववा होगादि वीका बकावरे । तेमां पर पोलानं रक्षणरे, काण्यावर करो والمراقب وال

शनकाभारे ॥१४६। एमाँ जनव भाग ने की जेरे, पण वर्ता वृक्ति वीन बीजेरे । एक अरकार बीजो व्यवहारते, जीजा पाप राजपा दिया-ररे धरेडआ लेलो देवा काम वय देवीतो. आमर्शि हरण जातिये के-र्वारे। एरकाने प्राणी अनुसरवृते, जेने जेस घरे सम करवृरे गरेप्रशा मन आमारी विशिष्ठा हैनरे, बाम लोगोक न्याह पुरिनर। क्रूप्य लेको अञ्चलक पहुरे, व्यक्ति कन्न साजी बीजी गरंग । १४९० जनक वर्ग कथा असे लेटरे, सह जबने साधारण नेटर । भारा आधिन रवानी के गुरुवारे, जाई आह सरसंगी समस्तर १४५०न कथा एसे महत्रा मामान्यर, पान्नो मान्या वह सावधानरे । रचे विजेषपर्ध छ जेवरे, कहं जुडा जुड़ा करी सबसे ॥१५०॥ वर्षवदी आवार्ष पू. विनारे, नेजी प्रशीपी बने प्रतिस्वारे । नेजा पर्न कहार विशेषरे, अब इतिवर्णन अञ्चल्दे ॥१५२॥ सोटा माना वे भार जमाराने, तेवा तुन भूदर केर मारारे। अवपत्रमाद के रपुत्रीतरे, नमे सांबजा केर सुपीरदे ॥१५३॥ विज्ञ संबन्ध दिला बाहचा तनरे, सब उपदेश स रेची केनेरे। कड़ी व भारतें कोइ इनरे, लेडां बोलवें नहि चदनरे ॥१५८। कोर उपर न रहत् प्रशं, व राम्बनी पापन जन्मर। कारना व्यवकारका अवस्तरे, म वयु लांकको पुढिवन्तरे । १५५॥ परे आः पनकान जो नवारेर, जिल्ला बाती व्यापु ले पारेरे । एम आपनकान उनस्पृदे, चल काइनुं करण व करनुदे ॥१५६॥ शियने आय्युं धर्म अर्थ असरे, नेने क्यानुं बहि कोड़ बनरे। भाष अर्थ तो सह पर्य लेयुरे, लेली अस वेच्यू मच के बुर ॥१५ आ आहामूदि निधी चनु-रधीर, नेदि गणपनि वजी बेमधीरे । आक्री बांद च दवा आवर, नेदि पत्रो हनुमान प्रावरे । १५८। पत्नी मन्मगी माना प्राधिनरे, नेना पर्य रच्यावया दिनहे। नेना जुरुषदे स्थाप्या बेहनेर, आधी हु-कानी बीक्स नेहनरे ॥१५९॥ ने कारा आधित के कंपायो, राज्यो भार भारका पर्ववायर। यानी सनने हरी शु उद्घानरे, हरी सन शामानी अञ्चासरे ॥१६०॥ सत्त-सोटो सदिर करी में स्वाच्या, मध्यीनारायक शादि देव। नेत क्रम्कक्षक वनी, यथार्थिय करण्यो संग । १६१। प्रशासिद्ध सोटी आहे. मुख्या जा कार जदा आपी सबसाब आदर, देवे शानिर क्षमाणे अस ॥१६६॥ विधानी माद विधानामा, करी राज्य विदेश क्रिज आहे। महिचा मुनियर արարանարդում ավանդար անական անականականականանական անանական անանական անական հանական անականական անականական հանակա Մա Str

विकारे, ए के पूच्य अनि अपार । १६३॥ अवध्यसम्ब स्पूबीरजी, व्यापि ने वर्णानपान। निजयनित्री आजा वरी, को कुरवर्षण जिय करने ॥१६ इस भागत-तम वर्त गढ़ अहानिकार, नहने न कर-वो प्रपदेशारे । संशोध संबक्ष्मी विज्ञा कर सगर, वृद्धि व बोली क आदी अगरे १८९६। वृत्ति बेलाएन बदमरे, वृत्ती रीत रही निवाद-वहें। जनभगनाह व रचनीतरे, मेनी पश्चियो परव सर्वारहे ॥१६६॥ बचा विश्ववर्ष एवं रहत्योरे, बारी आधा कभी एक नेत्यारे । युक्त कर अमारा आधिको, खुंगो विकायवर्षती रीतरे ॥१६ आ सभीप सम्बन्ध निमा ज विश्वार, मधी आज्ञा वन अहवारे । माना सुना भगिती वृतानरे, नेते समे व रहेव वृद्धियानर ॥१६८। आप-न्यास्त्र विज्ञा नकानर, न रे'व् सरवे ए स्वातर । तम वीतरवी जा-तिने पासरे, म करवे कोहने निन्दासर (d) ६६ । वजी जि सारीना कोह रीयरे, श्रीय बुक्झे स्थवरार जिल्हार । म जाराना प्रमाग व करीयरेड लवे हकार मनदारी प्रशिवरे ११ ५००। आहे अनिकी पात आगणार, कृती अवार्ताक कार्यक व्यापार । क्षेत्रकार्य क्षेत्रक करते, वित्र-क्य आहारिक नवर ॥ १०१३ प्रान्तित्रमाणे । या । सहितर, जस घर तम करा बीतर । बजी मान विना गुरू रोपर, जवना रागान्त अन को यहे। १५२० मनी सना सदाय सुजानार करा पानानी प्रान्ति-बमानरे । जिल्ला पर्यात्मा परित्र साहर, करो उन्नय आपकानिह लो-हरे । १७६ । अप नाम भगवासा होतर, रल बटन मयारना कायरे । सामाध्य समय जोड श्वर, वर पद्मन वर्ष राय लेहरे। १५४) ले ब्रमाणे अब्र पत्र पारवर, बारा जन स्टब्स करा सारार । राज्ये ए-हम् । पद्म आस्ति है, पार्टी पार्थ सूच्य अन्त मुख्य ॥१ ५०३ सम्य ४० ळ द्भारों आ का बाजार, क्रक्स राम्बंद्रम्थीन करा जार्थार। दुव विश्वादि मान्य विद्यारर, भरा प्रत्या करा त्र व्यावधर (१००)। मान्ती सरित लगा है ने भी औ, गार ममाना व व्यवहार की जरे । वीताना कान नारका विवाहनार,परकार होय ज उपन व कानार ? ५५॥ ने वोत्रामा अन्य गारणा विवादमार,परण्या होय ज दाय व आगार रेज्ञा में बरो लेख गार्का र स्टाटनर, कवज पायमी गांद प्रश्तीनर । पोयामी ने उपज प्रधाव र, करवृत्वस्य सहुत् सुप्राणर १८०८ व वर्ती प्रया महत्व बहुरे, अ कर स दुन्ती बाय सहर । प्रश्नेत व महत्व बाय जेन हरे. हा इ अभूर मन्त्र किया तहरे ॥१ अमा पर पान्याति ह जे बन 

आहरे, बोनानी पूर्ण प्रथम शहरे। नेमांची दशमी भाग करह-बोरे, में श्रीकृष्ण ने अर्थन करबोरे ॥१८०॥ बोध पूर्वत दाम जो कोचरे, आरं भाग ने विश्वामी सीचरे । एकाइजी आहि वन जेहरे. केने बारमध्यमान के नेवरे ॥१८१॥ लेने अजनवर्ग कान्ति अमानेरे. जेस कर्त के काम्य प्राणेरे । एवं प्रजन्मार्थ क्या अनिरे, पाच सब-वाधिन वापनिरे ॥१८२॥ आवन मासमा शिवप्रतरे, विलीपना-दिके करो जनदे । करबूं योने अनि प्रद्वासेरे, नहिनो करावर्ष कोइ वासेरे ॥१८३। जावार्य वे श्रीकृष्ण सहित्यीरे, व लेवुं बरज कई क्यीरे। जामार्थ ने कृष्णमुचनरे, न्यांभी क्या वरेणां वासनरे ॥१८४३ व आदि योगाना काम साधरे, व सागर् य वचन अमार्क रे। अफ़िल्म गुरु मायुनी पासरे, स्यारे आओ एवाने रामरे ॥१८५॥ लारे कोइनुं अस व वान्दुरे, एवं रीने एकाँने आयुरे । इरि सुद संत के सदयरे, त्यां व लेचुं से पारकुं अक्षरे ॥१८६॥ वरे पुण्यमे पारकुं बचरे, बारे गांउने जाएं त्यां जनरे। यज्ञानी बजुरी निवानरे, बेचा क्षां होण वन चान्यरे ॥१८३॥ कथा प्रमाणे आवर्ष वसरे, आपीये वहि के वे अध्यक्ष । अध्यक्ष कराज वे चया जापनारे, नेस पीर्श्व कृत्यादाय गणोरे । १८८॥ सबै वंबमां करबुं दिसदरे, शाबुं राज्यतुं अबि कोष्ट विधारे । इन्तामने व्यवसार अब की जरे, आरा इस्त सन् मुक्ती लीजेरे ॥१८९॥ होय पोताने रहेवानुं स्वयरे, त्यां वाने करण कोड़ बसरे । कायु राजाधी ववज्रव भागरे, लाज पन कांनी जान जायरे ॥१९०८ एका माम नराज्यने स्वामीरे, की जा देवामाँ व्येषे सुभागीरे। नहीं नर्ने अर्थ की जे देवारे, मुन्वे वरि भागवा वसवारे ॥१९१॥ धनवान सुणो यह विकारे, वर्मार्थ वन वावर्णनी रीनारे। हिंसारहित विष्णुमधार्थारे, करो यह यात वही विषिरे ॥१९०॥ बळी मीर्च के ब्राइफी माहिरे, होय पर्वणी दिव हमादिरे। नेमा जमानो श्राक्षण मनरे, एव पुण्य करो बुद्धिकारे ॥१९६। बळी च-बबाब जब सबरे, करा कृष्णमदिरे उत्सवरे। कांनी सुपाय प्राधाण कोहरे, आया बहुविधि दाव सोहरे ॥१९६। मारा माधिन राजा लुजाकरे, वर्णा पर्यजामा प्रयानरे। विजयुत्रमध प्रजा पाडोरे, स्या-को वर्ष बरामां काव राजाहै ॥१९५॥ बजी राजा ने अंग राज्यनारे. सान है समझवा काजनारे। चार प्रचाप ह तुल जेंदरे आजवा 

वधार्षपणे तेहरे ॥१९६॥ चार सुक्यानां जे कोइ स्थानरे, तेने जागवां जोइ निदानरे । वळी व्यवहारना जाणनाररे, जोइये समासद निर-धाररे ॥१९७॥ जोवं मनुष्य दंबवा जेवंदे, जाणो मनुष्य न दंबाय एवंदे । एक सर्व लक्षणे जाणवंदे, यथार्थपणे प्रमाणवंदे ॥१९८॥ ए हे सर्व राजाओनी रीतरे. राखो राजा जे मारा आश्रितरे । रही हे सर्व राजाओनी रीतरे, राखो राजा के मारा आश्रितरे। रही सुवासिनी नारी सी प्रीतेरे, निजविद्यापवर्मनी रीतेरे ॥१९९॥ जाणी पति ईश्वर समागरे, तेनुं करतुं नहि अपमागरे। अन्य रोगी दरिज होय वातिरे, होच गयुंसक निजयतिरे ॥२००॥ तेने ईमार जाणी सेवबुंरे, केबि कडण वचन न के'बुंरे। बीजो प्रक्ष स्पान्तो युवा-नरे, सारा शुणवाळी ने शुजागरे ॥२०१॥ तेनो प्रसंग सहज स्वान-बेरे, न करे पतिवता जे का'बेरे। परपुरुषने व देखाबोरे, वर नानि साथळ संताडोरे ॥२०२॥ ओख्या विना ववाई न रहेंग्रेरे, भांड भवाइ नहि जोवा जबुरे। निर्फेल वारीनो संग व करीयरे, नीच वारीना संगधी दरीयेरे ॥२०३॥ सौरिणी कामिनी ने पुंचालीरे, तेनो संग म करवी वळीरे। निजयति जाय परवेशारे, वस परेणां व धरवो वेदारे ॥५०४॥ परघर तह व वेसपुरे, विश्रोद विलासे न इसतुरे । सुणी विश्रोपधर्म विधवारे, पतिभावे कुरणने सेववारे ॥२०५॥ पिता पुत्रादि सर्गा सुमतिरे, एनी आज्ञा-मां रहेतुं अतिरे। केदि न रहेतुं पोताने वहपरे, एव वर्ततुं अहो-निष्ठारे ॥२०६॥ वळी संबन्धी विमा जे पुरुषरे, तेनो व करवी केवि हैं स्ववारे । होय पोते अंगे युवाबतीरे, वळी युवान पुरुष संगतीरे ॥२०७॥ अवदय कार्य विना तहहारे, न बोलयुं बीजा वर मेहहारे। शोळे पानतो बाळक नानोरे, तेने अख्वानो दोष न मानोरे ॥२०८॥ जेवो पद्मनो स्पर्ध प्रमाणोरे, तेवो नाना बाळकतो लाणोरे। अबद्य कार्यमां पृद्ध पर साधरे, मधी सोच बोल्पे असे हायरे ॥२०२॥ निकट संबन्धी विना नर पासरे, न करवी विधानी कन्यासरे। वस वयवास करी निज तनरे, करबुं वारमवार दमनरे ॥११०॥ रोहा-धन जो तननिर्वाहधी, होय अधिक पोतानी पास । शक्ति प्रमाणे वायरो, वर्ममां करी व्हास ॥५११॥ यह वचन मानी विषवा, वळी है आहार करवो एकवार । सवाय सुबुं भूमिये, करी मनवांति वि-चार ॥२१शा मैलुन वृक्त दादा खुगादि, जोवां नहि माणीजन । सं-The state of the s

न्यासिनी बेरागिनी सुवांसिनी, तेनो वेच म घरवो तन ॥९१३॥ जेवो व होय विज कुळमां, वळी देवामां एव वेदा । तेवो व परवो वेदा विषया, मानी भारो उपदेदा ॥२१४॥ चेतार-गर्नवातकी पा-लकी नारीरे, तेनो स्पर्श व करवी विचारीरे । वर रस हांगारनी वा-जीरे, व कहेवी व संजवी संयाजीरे ॥२१६॥ होय विश्वा पुषान तनरे, होय वर निज संबन्धी जोबबरे। आपश्चि विवा एकांत स्व-करे, व रहेबुं विषवाए कोय पळरे ॥११६॥ आपत्काळमां होय व जा-णोरे, एम विचवा सह प्रनाणोरे। होळी खेल खुबी महि करोरे, अंगे आमृत्रण वहि घरोरे ॥२१७॥ शीणां जरियानी जे वसवरे, विववाय न पहेरचां तनरे। सथवा विषया संगी छेबुरे, वस पहेर्षा विना न म्हासुरे ॥२१८॥ म संलाडो मिज रज कोहरे, घरे वर्गशंका जम जोहरे । सथवा विषवा रजलळारे, खुंणो रीत सर्वे अवकारे ॥२१९॥ न करो मनुष्य ने वस्त्रनो स्पर्धारे, रही अणअबे अण दिवसरे। चीधे दियस नाही शुद्ध घरूरे, वर्तो संदु सङ्घनी रीतबाहरे ॥२२०॥ नारी नर जान्नित अमारारे, कचा विद्योपधर्म तमारारे। कर्त आचार्य ने तेनी पत्नीरे, एव जाणजो रीत आपनीरे ॥१९१॥ कांजे बहस्य छो मादे तमेरे, रहेज्यो एम जेम कर्झ अमेरे । इवे मारा आखित ब्रह्म-चारीरे, पर्म विद्याप रीत तमारीरे ॥२२२॥ तजो नारीने अष्ठ मका-रेरे, न अडो न घोलो एडा क्यारेरे। जाशी नारी न जोवी न कुळ-बीरे, एनी बात व कहेबी सांबळवीरे ॥२२३॥ जे खळे नारीको चगकररे, वर्जी म जाबुं त्यां कोड् बेश्रे। देव प्रतिमा विमा पुलळीरे, विश्व काष्ट पापाचादिनी वळीरे ॥२२४॥ स्वर्ध दर्शने तेने परहर-वीरे, नारी प्रतिमा वर्णीए व करवीरे। नारी पहेरेल वस न छोर्डरे, मैशुनपुक्त ज्ञाणीने न जोखंरे ॥१२५॥ नारीवेषधारी वर होयरे, लेके न जुवो म अडो कोयरे। नारीने संनळाववा जाणीरे, वधा कीर्तन म कहेवी वाणीरे ॥२२६॥ धाय अक्रवर्ण बतनो पातरे, एवी गुरुनी पण न मानो पातरे। रहेशुं वर्णीय पीरव्यवानरे, राखो संतोष ने जिरमागरे ॥२२७॥ गारी आये समीप कोड् जोर्रे, करी तिरस्कार करवी पूररे। कोइ एवी आपत्काळ आवेरे, त्रियना वा पोतामा प्राण जावेरे ॥२२८॥ लारे अने बोले जो नगरोरे, थाय जीवनी रक्षा एम करोरे । वळी तेल मर्बन न करवंदे, वर्णीने आयम न घरमंदे

\*

एकादश हादशतं अवरे, प्रेतभाद कहे सह जनरे। ते व साधे 

वर्णी संत कोचेरे, आपत विजा विवसे न सुचेरे ॥२४६॥ बाम्य-वार्ता केदि न करीयेरे, कोइ कर तो कावे व घरीयेरे। ह्यागीय वण-रोगे व सुबुं वांचेरे, साधु जागळ वर्तो मन साचेरे ॥२४०॥ वळी मारे कोय गाळ जांखेरे, कोय कुमति अपवाद वांखेरे। तेतो छा-नीए सर्व सहीजेरे, तेतुं सार्व थाय तेम कीजेरे ॥२४८॥ वृतकर्म केतुं न करीयेरे, हेर चाडीयापणुं परहरीयेरे । निज देहमां अहंता न धारीरे, कुडुंच निमल ममत विसारीरे ॥२४९॥ एम संक्षेपे सर्वना वर्मरे, कथा लागी गृहस्पना वर्मरे। इच्छो धर्म संख्या विस्तारेरे, तो है संप्रवाय ग्रंथे अमारेरे ॥२५०॥ सतकाल सहुतं वा है सार-रे, बुद्धिमांही में करी विचाररे। पणी विकापत्री हसी सारीरे, म-नवांकित फळ देमारीरे ॥२५१॥ रहो ए रीते सह मारा जनरे, मन-शमतुं न करो कोइ इनरे। एम रहो पुरुष ने बामरे, पामी धर्म अर्थ मोश कामरे ॥२५२॥ चारे पुरुषार्धनी पाय सिद्धिरे, लागी गृहस्य रहो एह विधिरे। एम व रहे जे नरनाररे, लेलो जमारा संप्रदाय वा'ररे ॥२५३॥ एव समझी बारा आश्रितरे, करो शिक्षापत्रीपाठ निलरे। भण्या व हो तो भावे सुलजोरे, यांचनार व होच तो वूजजोरे ॥२५४॥ मारी वाजी ते मार्च सहपरे, मानो आवरे सह अमूपरे। देवी संपत्तिपाळा जे नररे, तेने देजो आ पत्री संदररे ॥६५५॥ शासुरी संपत्तिबाळा जे जनरे, तेने देवी नहि कोइ दनरे। संवत अवार वर्ष व्यासीरे, बहा शुद्धि पंचमी सुखरावीरे ॥२५६॥ तेदि पत्री लखी प्रवाणरे, जेथी थाय सहुतुं कल्याणरे। आजितनी पीडा टाळमाररे, धर्मसहित भक्ति पाळमारदे ॥२५%। निजभक्त-बांधित सुखदेणरे, एवा श्रीकृष्ण कमळ नेणरे । करो सर्वे जनारां ते पाजरे, मंगळ मूरति श्रीमहाराजरे ॥२५८॥ सहजानंद गुरुए ए विधिरे, दिक्सापत्री अनुपम कीभीरे। यत्री गीर्वाण ए कहेवातीरे, तेपर भाषा करी गुजराशीरे ॥१५९॥ पत्नी चोवाइ वसें में साहरे, कहे रहे सुंचे करे वाठरे। तेह वामे अखंड आनंदरे, वशुं शुं निष्कुलानंबरे ॥२६०॥ इतिभीनिष्कुलानंब्युनिविर्विता शिक्षानत्रीभाषा समाता ॥

